सर्वकर्म अनुष्ठान प्रकाश (भाग-2)
तंत्रोक्त देव पूजा रहस्य

संस्कर्ता एवं प्रकाशक : पं. रमेश चन्द्र शर्मा (मिश्र)

मयूरेश प्रकाशन - मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)

सर्वकर्म अनुष्ठान प्रकाशः भाग (2)

"देवखण्ड"

तंत्रोक्त देव पूजा रहस्य

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

१. इस पुस्तक में गणेश, विष्णु, शिव, रुद्र मृत्युञ्जय शिव, शरभ, हनुमान एवं भैरवादि प्रमुख देवों का विस्तृत विधान है।
२. सभी देवों के यंत्र प्रयोग- विविध कामना मंत्र, स्तोत्र एवं सहस्त्रनाम दिये गये हैं।
३. शत्रु संहार हेतु भगवान शिव के उग्र अवतार शरभराज के प्रयोगों का विस्तृत विधान है। श्री शरभराज के प्रहार के कारण श्रीनृसिंह का गर्व नष्ट हो गया फलतः नृसिंह ने अपने शरीर का परित्याग किया। उक्त प्रयोग प्रबल संहारक है।
४. विवाह कामना हेतु गंधर्वराज प्रयोग कवच सहित है।
५. पति-पत्नि विरह निवारण हेतु, एवं सर्वसंकट नाश हेतु कई प्रयोग है।
६. सुदर्शन चक्रावतार कार्तवीर्यार्जुन के मंत्र यंत्र कवच दीपदान प्रयोग। इसका प्रयोग नष्ट हुये धन व गये हुये व्यक्ति को बुलाने हेतु किया जाता है।
७. सर्वकामना सिद्धि हेतु वाञ्छाकल्पलता प्रयोग व अन्य प्रयोग दिये गये है।
८. राज्य व भूमि लाभ हेतु परशुराम प्रयोग।
९. प्रेतादि विघ्न निवारण हेतु प्रयोग व अन्य कामना प्रयोगों का वर्णन है।

संस्कर्ता एवं प्रकाशक : पं रमेश चन्द्र शर्मा 'मिश्र' मदनगंज-किशनगढ़

मयूरेश प्रकाशनः- छाबडा कालोनी मदनगंज किशनगढ (राज)

✱ प्रकाशक :-
पं. रमेशचन्द्र शर्मा
मयूरेश प्रकाशन
छाबड़ा कॉलोनी, मदनगंज
किशनगढ़, जिला – अजमेर
पिन : (राज.) 305801
✆ : (01463) 244198,
9829144050

प्रथम संस्करण : –
२० जनवरी, २००२
✱ तृतीय संस्करण : –
नवम्बर २००७

✱ मूल्य :- २६०/-
(दो सौ साठ रुपये मात्र)

✱ लेजर टाईप सेटिंग :
माँ दधीमथि कम्प्युटर्स
छाबड़ा कॉलोनी , मदनगंज–
किशनगढ़, अजमेर (राज.)
✆ : 9214511897
9214512223

✤ मुख्य प्राप्ति स्थल ✤

१. सरस्वती प्रकाशन, अजमेर ✆ 2425505
२. ईश्वरलाल बुकसेलर, जयपुर ✆ 2575532
३. सुधिर एण्ड ब्रदर्स, जयपुर ✆ 2573655
४. किताब घर, जोधपुर ✆ 2637334
५. अचलेश्वर पुस्तक भण्डार, जोधपुर ✆ 5103642
६. रत्नेश्वर पुस्तक भण्डार, बीकानेर ✆ 2549712
७. आनन्द प्रकाशन, दिल्ली ✆ 23923021
८. नाथ पुस्तकभण्डार, दिल्ली ✆ 23275344
९. D.P.B पब्लिकेशन, दिल्ली ✆ 23273220
१०. सरदार करमसिंह अमरसिंह बुकसेलर, हरिद्वार ✆ 225619
११. रणधीर बुक स्टॉल, हरिद्वार ✆ 228510
१२. सरदार सोहनसिंह बुकसेलर, इन्दौर ✆ 2532344
१३. कुल्लुका ज्योतिष केन्द्र, उज्जैन ✆ 4013150
१४. श्रीबुक डिपो, उज्जैन
१५. प्रसाद बुक एजेन्सी, पटना ✆ 9234797825
१६. खण्डेलवाल एण्ड सन्स, वृन्दावन ✆ 2443101
१७. केशव पुस्तकालय, मथुरा ✆ 2401130
१८. सीताराम पुस्तकालय, मथुरा ✆ 9837654007
१९. सुरेन्द्र बुक डिपो, गया

कोटा, भीलवाडा, उदयपुर, चित्तोड, सीकर, हैदराबाद अहमदाबाद, माधव बाग, होशंगाबाद, नीमच, मन्दसौर, रतलाम, ओंकारेश्वर, बडौदा, लखनऊ, शिमला, ईत्यादि कई स्थानो पर उपलब्ध।

विषय सूची

शिव तन्त्रम् १९२–३२७

शरभ तन्त्रम् ३२८–३८१

समर्पित, श्रद्धेय गुरुदेव श्री १०८ श्री नथमलजी दाधीच 'कौलाचार्य'
शक्तिपीठ लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राज.

प्रस्तावना

ईश्वर को प्राप्त करने के माध्यम में मन्त्रात्मक शक्ति का बहुत महत्व है। मन्त्र विज्ञान की उत्पत्ति भगवान शिव के द्वारा की गई है एवं हमारे ऋषि मुनियों ने उस पर सतत् अनुसंधान करके प्राणियों के कल्याण हेतु आगम शास्त्रों में प्रतिपादित किया है।

उनमें यामलग्रन्थों में ब्रह्मयामल, विष्णुयामल, कृष्णयामल, रुद्रयामल, मुख्य है। डामरग्रन्थों में भी मन्त्रों का विशेष साहित्य है। अश्वक्रान्ता, विष्णुक्रान्ता, रथक्रान्ता आदि तन्त्रों में १९२ ग्रन्थों का निरूपण है। इसके अलावा अन्य तन्त्र ग्रन्थ दत्तात्रेयतन्त्र, विश्वसार तन्त्र, गारुडीतन्त्र, शारदातिलक, सांख्यायनतन्त्र, शाबरतन्त्र, इत्यादि अनेकानेक ग्रन्थों का प्रतिपादन विभिन्न संप्रदाय के आचार्यों व मनीषियों के द्वारा किया गया है।

तन्त्रग्रन्थों के सारभूत प्रयोगों को आचार्यों ने अपने ग्रन्थों में संगृहीत किया है। श्रीविद्यार्णव तन्त्र की रचना में करीब १५० ग्रन्थों का रससार है।

श्रीमन्महीधरभट्ट ने सन् १६४५ में मन्त्रमहोदधि ग्रन्थ की रचना की उसके लिये उन्होने बहुत से ग्रथों का अवलोकन कर विद्वानों के हितार्थ प्रस्तुत किया। मन्त्रमहार्णव के रचनाकार ने भी सिद्धीश्वरतन्त्र, महातन्त्र, कालीतन्त्र, फेत्कारीतन्त्र, वाराहीतन्त्र, चामुण्डातन्त्र, कुलार्णवतन्त्र, वाराहीतन्त्र, निरुत्तरतन्त्र, ज्ञानार्णवतन्त्र, नीलतन्त्र, देव्यागमतन्त्र, मालिनी विजयतन्त्र, समयाचारतन्त्र, कुलोड्डीशतन्त्र, भूतडामरतन्त्र, कुब्जातन्त्र, यन्त्रचिन्तामणितन्त्र, इत्यादि ९४ तन्त्रों व कालीविलासादि अश्वक्रांतादि ग्रन्थों का सारभूत जनहितार्थाय रचकर साधकों का मार्गप्रदर्शन किया है।

लेखक ने भी आज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर मंत्रमहार्णव, मन्त्रमहोदधि, श्रीविद्यार्णवतन्त्र, कुलार्णवतन्त्र, शरभतन्त्र, भैरव सर्वस्व, शारदातिलक, प्राणतोषणीतन्त्र, हिन्दीतन्त्रसार, मन्त्रकोष इत्यादि कई तन्त्रग्रन्थों व प्रचलित प्रयोग मालाओं से संकलन कर सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः, काम्यअनुष्ठान प्रयोग पुस्तक का संपादन जनहितार्थ करना चाहा है।

ग्रन्थ की विशालता के कारण सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः (भाग २) 'देवखण्ड', एवं सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः (भाग ३) 'देवीखण्ड' नाम से प्रकाशन करना पड़ा है।

लेखक ने अपने अनुभवों के आधार पर जटिल क्रियाओं को सरलीकरण करने की कोशीश की है। यद्यपि तन्त्रों में मन्त्रादि में जोड़-तोड़ कर निरूपण करने का अधिकार किसी को नहीं है परन्तु जहां भ्रांति है उसे स्पष्ट किया गया है।

आशा है साधकवृन्द मेरे इस प्रयास से लाभ उठावेंगे यदा कदा कहीं प्रिंटिग में त्रुटि हो तो क्षमा करावेंगे एवं संशोधन हेतु अवगत कराने का कष्ट करेगें।

मेरे गुरुदेव की सन् १९७० से ही प्रेरणा व इच्छा रही कि मैं तन्त्र साहित्य पर लेखन कार्य प्रारंभ करुं लेकिन विलंब से इस विषय में सन् १९९६ में प्रथम पुस्तक 'सुबोध दुर्गा सप्तशती एवं याग विधानम् ' का प्रकाशन कार्य हुआ। पश्चात् यह सप्तम् पुष्प श्री चरणों में समर्पित है।

आपका

[पं. रमेशचन्द्र शर्मा 'मिश्र']

प्रकाशक एवं लेखक

भूमिका

परब्रह्म ने '**एकोऽहं बहु स्याम**' अर्थात् मैं अकेला हूं बहुत हो जाऊं ऐसी कल्पना मात्र से विश्व की रचना की। परमशिव ही अपनी सर्वज्ञता और सर्वकर्तृताशक्ति का संककुचित करके मनुष्य देह का आश्रयण करते है। '**मनुष्यदेहमाश्रित्य छन्नास्ते परमेश्वराः**'।

वेदान्त का सिद्धान्त है कि '**जीवो ब्रह्मैव नापरः**' अर्थात् जीव ही ब्रह्म है दूसरा नहीं है।

जीव वस्तुतः उसी परब्रह्म का एक सूक्ष्मअंश है जिस पर माया का आवरण चढ़ा हुआ है। माया के वशीभूत होकर सत्, रज, तम गुणात्मक सुख दुःख की अनुभूति प्राणी करता है। माया का आवरण हटते ही जीव का ब्रह्म से साक्षात्कार हो जाता है इस के लिये मन्त्र, तन्त्र योग व स्वाध्याय की आवश्यकता है।

परमशिव ने प्राणियों के कल्याण के लिये ७ करोड़ मन्त्रों की रचना की परन्तु व्यक्ति उसका दुरुपयोग नहीं कर सके इसके लिये उनको कीलित व श्रापित कर दिया गया। आगम ग्रन्थों में अलग-अलग देवताओं के मन्त्रों के शापोद्धार व उत्कीलन प्रयोग दिये गये हैं।

वैसे अपना सर्वस्व प्रभु के अर्पण कर सुख दुःख को प्रभु का प्रसाद मानकर भोगना चाहिये। निष्कामभाव से प्रभु के शरणापन्न होना ही उत्कीलन व शापोद्धार है।

एक साधक उग्रमन्त्रों का उपासक है अभिमानी है एवं दूसरा सात्विक व पूर्णरूपेण प्रभु को समर्पित जीवन वाला है अगर दोनों में युद्ध की परिस्थिति बनती है तो प्रभु तो भक्त की मर्यादा रखेगें। अर्थात् मन्त्र ही बड़ा नहीं होता भक्ति व त्याग बड़ा होता है। उसी के अनुरूप प्रभु साधक की मर्यादा रखते हैं।

वेदान्त कहता है कि '**अण्डे सो पिण्ड़े**' अर्थात् जो ब्रह्माण्ड में है वही सब रचना शरीर में विद्यमान है। अतः ईश्वरी सत्ता की अनुभूति इसी जीवात्मा सत्ता में हो सकती है।

अलग-अलग ब्रह्माण्डों के शक्तिकेन्द्रों का स्थान हमारे शरीर में चक्रों के

केन्द्ररूप में स्थित है। हमारा मन सत्ताकेन्द्रों का आधार है मन पर अपने अधिपत्य के द्वारा हम अपने इच्छित केन्द्र पर पहुंच सकते हैं।

मन की गति अधोमुखी एवं उर्ध्वमुखी दोनों ही है अत: यह हमारे उत्थान व पतन का कारण है।

मन व इन्द्रियों की भाषा सांकेतिक होती है सांकेतिक भाषा जीव जन्तुओं व प्राणियों के व्यवहार को संचालित करती है। अलग अलग प्रान्तों, देशों की भाषा अलग अलग हो सकती है। परन्तु सांकेतिक भाषा एक ही है। अत: यह नहीं कहा जा सकता कि कोई मन्त्र किसी प्रान्त में किसी भाषा में हो वह दूसरे प्रान्त में काम नहीं करेगा।

हमारा ईश्वर हमारे अन्दर है वह हमारे मन की भावना व भाषा को अच्छी तरह जानता है अत: मनोयोग द्वारा जीवात्मा का परमशिव से साक्षात्कार किया जा सकता है।

मन के उद्गार वैखरी भाषा में हमारी लीपि द्वारा बाहर आते हैं एवं काम्य प्रयोग के अनुसार मन्त्र की रचना का चुनाव होता है।

वर्णमाला के 'अ' से लेकर 'क्ष' पचास अक्षरों को मातृका कहते हैं। इन मातृका वर्णों से ही मन्त्रों का निर्माण हुआ है।

शिव कहते हैं - '**शक्तिस्तु मातृका ज्ञेया सा च ज्ञेया शिवात्मिका**'।

एक अक्षर वाले मन्त्र को '**पिण्ड**' संज्ञा कही गई है एवं दो अक्षर को '**कर्तरी**', तीन अक्षर से नौ अक्षर तक के मन्त्रों को '**बीज**' मन्त्र कहा जाता है, दस अक्षर से बीस अक्षर तक का '**मन्त्र**' नाम होता है, एवं बीस अक्षर से अधिक अक्षर संख्या वाले मन्त्रों को '**माला मन्त्र**' कहा गया है।

मन्त्र के तीन भाग होते हैं -

१. **मूलमन्त्र** के प्रारंभ बीज मन्त्रादि जो होते हैं (यथा ॐ, ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं, भू र्भुव: स्व: इत्यादि) **उन्हें मन्त्र का शिर कहा गया है।** शिर के आधार पर ही मन्त्र की कामना का फल बनता है।

२. **मध्यभाग** - व्याहृति या बीजाक्षर के बाद का श्लोक (मन्त्र का मध्य भाग) देवता से संबंधित व कार्य से संबंधित रहता है।

३. पल्लव: - मन्त्र के अंत में नम:, स्वाहा, स्वधा, फट्, ठ: ठ: इत्यादि जो बोले जाते हैं उसी अनुसार मन्त्र जागृति का फल रहता है।

कहा है कि '**मन्त्राणां पल्लवो वासः**'।

मन्त्र की संज्ञायें - मन्त्र की तीन तरह की संज्ञायें है -

१. **पुरुष** - पुरुष देवताओं के मन्त्र पुरुष संज्ञक तो होते ही हैं, परन्तु जिन मन्त्रों के **अंत में हुं, फट्, हूं हूं, ठः ठः** इत्यादि होते हैं वे पुरुष संज्ञक है।

२. **स्त्री** - स्त्री देवताओं के मन्त्र स्त्री संज्ञक तो कहलाते हैं परन्तु जिस के अन्त में **स्वाहा, स्वधा** का प्रयोग होता है वह भी स्त्री संज्ञक हो जाता है।

३. **नपुंसक** - जिस मन्त्र के अंत या आदि में **नमः** का प्रयोग होता है वह मध्यम संज्ञक अर्थात् नपुंसक कहलाता है। ये मन्त्र अनिष्टकारक कम होते हैं परन्तु निरर्थक नहीं होते हैं। इनमें शरणापन्न भाव अधिक होता है।

उभयात्मक स्वरूप व पुरुष देवता के साथ स्त्री देवता का पल्लव एवं स्त्री देवता के साथ पुरुष प्रधान पल्लव होता है। परन्तु इनका प्रभाव शिर एवं पल्लव के आधार पर होता है।

मन्त्रों का चुनाव - अपने नाम व वर्ग तथा मन्त्र के नामाक्षर के आधार पर मन्त्र का अरि, मित्र, साध्य, सुसाध्य आदि सब देखकर मन्त्र व देवता का चुनाव करना चाहिये। अरि मन्त्र साधक का नाश करता है एवं विघ्न देता है।

दस महाविद्याओं, नवदुर्गा, महादुर्गा, आदि सिद्धविद्याओं के विषय में अरि मित्र, सिद्ध असिद्ध का विचार नहीं करना चाहियें।

मन्त्रजागृति - मन्त्र अगर फलित नहीं हो रहा है तो मन्त्र जागृति हेतु ताड़न, दीपन, संदीपन इत्यादि संस्कार करने चाहियें। मन्त्र गुरु, एवं देव में जितना दृढ़ श्रद्धा व विश्वास होगा उतना ही मन्त्र फलदायी होगा।

मन्त्रों के बीजाक्षरों को गूढ़ रहस्यों में लिखा गया है, ताकि हर व्यक्ति उसका दुरुपयोग नहीं कर सके। अतः मन्त्र संकेतों को समझना चाहियें।

मन्त्र के अन्य तत्त्व -

ऋषि - शिवमुख से जिस ऋषि ने मन्त्र को सुनकर सिद्ध किया वही उसका प्रणेता है। उस मन्त्र का आदिगुरु उस ऋषि को मानकर जप करने से फल प्राप्त होगा। अतः विनियोग में ऋषि का उल्लेख जरुरी है।

देवता - मन्त्र की शक्ति के अधिष्ठाता देव का ज्ञान होना जरुरी है।

छन्दः - संसार की उत्पत्ति हेतु ब्रह्म की शक्ति का छन्दोमय आवरण माना है अतः मन्त्र की शक्ति का विभाग, प्रकार जानने हेतु छन्द का ज्ञान विनियोग हेतु जरुरी है।

बीज - मन्त्र जो बीज है उसी अनुरूप मन्त्र का फल व दिशा होती है अत: इसका स्मरण अवश्य किया जाना चाहियें। बीज मन्त्र का गर्भ होता है।

शक्ति - जिसकी सहायता से बीज मन्त्र बन जाता है वह शक्ति कहलाती है।

विनियोग - ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति एवं कीलक का उल्लेख करते हुये अपनी कामना का उल्लेख करके (सकाम अथवा निष्काम) विनियोग करने से मन्त्र के फल की दिशा एवं मार्ग तथा प्रतिफल का स्वरूप निर्धारित होता है।

ऋषिन्यास - विनियोग के बाद मन्त्र के ऋष्यादिन्यास करने से ऋषि, देवता , छन्द, बीजादि आपके अङ्गीभूत होकर आपके शरीर को मन्त्रमय बनाते हैं।

पञ्चाङ्ग एवं षडङ्गन्यास - मन्त्र के ५ या ६ विभाग करके उनसे करन्यास एवं हृदयादि न्यास करके मन्त्र के देवता की अङ्गों की कल्पना आपके शरीर में की जाती है। जहाँ पञ्चाङ्ग न्यास कहा है वहां नेत्र को छोड़कर अन्य अङ्गों में न्यास करना चाहिये।

॥ साधना एवं संकेत ॥

साधक सद्गुरु से मन्त्र को प्राप्तकर उसकी आराधना प्रारंभ करें। जरुरी नहीं है कि गुरु दीक्षा समय ही आपकी कुण्ड़लनी शक्ति को जागृति करें। आपके लक्षणों को देखकर आपको आगे बढ़ायेगा। परन्तु गुरु के द्वारा किया गया शक्तिपात व्यर्थ नहीं होता उसकी कुछ अनुभूति बनती है।

१. आपको महसूस होगा की इस व्यक्ति (गुरु) से चिरकाल में कहीं मिले हैं। कुछ स्मृतियाँ सी तैरनी लगेगी।

२. आपका हृदय उनकी तरफ खिंचा हुआ रहेगा अलग होने का मन नहीं करेगा।

३. गुरु भले ही आपसे व्यवहारिक बातें करें परन्तु उनकी किरण बहिर्गत होकर आपको आच्छादित करेगी। आपको लगेगा कि किसी कूलर के पास या ए.सी. वाले कमरे में बैठे हैं।

४. कभी लगेगा आपके आसपास का तापक्रम कुछ बढ़ रहा है सर्दि में गर्मी प्राप्त होने जैसे सुखद आनन्द का अनुभव करेगें।

५. गुरु का चेहरा ओजमय या लालिमा अथवा स्वर्णिमा आभा जैसा होने लगे भले ही वे आपसे सामान्य बातें कर रहें हो तो समझें वे अपनी शक्ति को एकाग्रकर आपकी ओर प्रवाहित कर रहें है।

६. गुरु से [illegible] का सा अनुभव होने लगे एवं मदहोशी

सी आने लगे तो समझे गुरु द्वारा शक्तिपात् हो रहा है।

७. आपका मस्तिष्क किसी अलौकिक स्वप्नलोक की ओर बढ़ रहा है एवं कुछ अनुभूतियां बनती है तो गुरु कृपा बन रही है।

८. आपके शरीर में स्फूर्ति एवं यौवनता का अहसास हो तो भी शुभलक्षण हैं।

९. यदि दीक्षा ग्रहण करने के बाद आप पर अचानक बेहद विपत्तियां आती है तो समझिये कि गुरु का प्रहार आपके पूर्वजन्म के पापों पर हो रहा है। ऐसे साधक अधिक उन्नति करते हुये देखे गये हैं।

१०. जिन साधकों का दीक्षा के बाद धन वैभव शीघ्र बढ़ता है उनका उत्तरार्ध आगे जाकर दैविक सुख में न्यून हो जाता है।

१, दीक्षा लेने के बाद या गुरु के संपर्क के बाद कई बार ऐसा शक्तिपात रहता है कि १०-१५ दिन तक थोड़ी थोड़ी देर में मदहोशी एवं मन्त्र का गुंजन चलता रहता है।

१२. आपको अपना शरीर व मस्तिष्क हल्का महसूस होवें।

१३. मस्तिष्क का झुकाव अचेतन मन की ओर होने लगे तथा वार्तालाप करते करते आपका मन कहीं ओर उड़ने लगे सामने वाले की बातें आपको कम सुनाई देने लगे। आप उल्टा यह महसूस करने लगें कि कहीं मेरी यादाश्त तो कम नहीं हो रही है। क्यों कि मन की उडान अन्यत्र रहती है।

ये साधारण लक्षण है, अलग अलग साधकों की सैंकड़ों अनुभूतियां रही है।

मन्त्र एवं मनोयोग - मन्त्र ही शब्द ब्रह्म है। मूल में मन्त्र एक सांकेतिक एवं भावनात्मक भाषा है, जिसका संबंध आपकी भावना एवं ईश्वर से रहता है।

नाभिकेन्द्र को शब्द की उत्पत्ति का मूल स्थान माना है, यहां जो अप्रकटरूप में वाणी का प्रवाह रहता है उसे '**परावाणी**' कहते हैं।

ये विचार जब आपके मनोकेन्द्र के पास आते हैं तो हृदय में उनका प्राकट्य महसूस होता है। हृदय में जो भाव, विचार पैदा होते हैं वह वाणी का '**पश्यन्ति**' भाव होता है।

हृदय के विचार आपकी बुद्धि का आश्रय ले जब किसी को कहने की स्थिति प्रकट करते हैं। आप कुछ कहने को होते हैं मन के संशय के कारण कुछ कहते-कहते रुक जाये, बात जैसे गले में आकर अटक जाये। कण्ठ स्थित वाणी का स्वरूप '**मध्यमा**' कहलाता है।

हृदय के उद्‌गम विचार जब मुँह से बाहर प्रकट होते हैं तो **'वैखरी भाषा'** कहलाती है।

वैखरी भाषा अलग अलग देशों व प्रान्तों की अलग अलग होती है। परन्तु मन्त्र का भावनात्मक अर्थ एक ही होता है।

अत: शब्द ब्रह्म तक संबंध बनाने के लिये प्रारंभ में वाचिक या उपांशु जप करते करते मन्त्र को हृदय स्थल पर जप करते हुये नाभिकेन्द्र तक मन केन्द्रित होने लगता है।

॥ हमारे शक्ति केन्द्र ॥

ब्रह्माण्ड की रचना का शक्ति केन्द्र हमारे मस्तिष्क में सहस्त्रार एक दिव्य तेजवान प्रकाश बिन्दु की तरह है। यहाँ एक हजार दल का कमल पुष्प है। ५०-५० कमल दलों की (वर्णाक्षर स्वरूपों के समान) २० आवृतियाँ है, इनके योग से सहस्त्र दल की रचना हुई है। इस सहस्त्रार के अन्दर उर्ध्वभाग में गुप्त दिव्यलोको की परतें प्रकाश स्वरूप में है। यहाँ हंस कमल गुरु पादुका का ध्यान करना चाहिये। मणिद्वीप या गोलोक भी यहीं है जिसकी दिव्य अनुभूति साधक को विशेष समाधि अवस्था में होती है।

यहीं परम शिव का निवास है, परम शिव की महाशक्ति यहाँ कुण्डलनी स्वरूप में शिव के साथ स्थित है। जो ब्रह्माण्डो व संसार की रचना करते हुये मूलाधार में आकर निवास करती है अनंत में से अनंत बाकी निकाले तो अनंत ही शेष रहेगा। यदि १ से ९ अंक ब्रह्मस्वरूप हैं तो शून्य उसकी शक्ति है। किसी भी अंक के साथ शून्य लगाने से उसकी शक्ति कई गुना (१०, २०, ३०,.......९०) बढ़ जाती है। अत: ब्रह्म के साथ शक्ति उपासना बहुत जरुरी है।

शून्य में से शून्य बाकी निकालें तो शून्य ही बचेगा। अत: ब्रह्मरंध्र की शक्ति नीचे जो शेष शक्ति है वह भी पूर्णशून्य है जो सर्पाकार रूप धारण करके शिवलिंग के साढे तीन आवृत्ति लगाकर बैठी है।

शिवलिंग पर लगाने वाले त्रिपुण्ड़ का भी यही आशय है। सहस्त्रार से नीचे उतरते हुये आज्ञाचक्र, विशुद्धचक्र, अनाहतचक्र मणिपूरचक्र, स्वाधिष्ठानचक्र एवं मूलाधारचक्र तक अन्य शक्ति केन्द्रों का निर्माण कुण्ड़लनी शक्ति ही करती है।

अत: कुण्डलनी शक्ति ही दिव्यरूपा है वहीं हमें परमशिव से साक्षात्कार करा सकती है। इसी कारण तन्त्रशास्त्रों में कुण्ड़लनी जागरण की कई विधियाँ है।

शरीर की अवस्था व भूमिकायें

१. अन्नमय शरीर - हमारा स्थूल शरीर अन्नमय शरीर है जिसके जीने-मरने का आधार अन्न ही है। व्रतोपवास द्वारा इस शरीर को सात्विक बनाया जाता है।

इस समय साधक साधारण ज्ञानसीमा में रहकर प्रभु आश्रित होता है।

२. प्राणमयशरीर - प्राणमय शरीर की शक्ति के आधारकेन्द्र मूलाधार से नाभिपर्यन्त तक के लोक आते हैं। साधक इस शरीर को वश म कर लेवें तो वायु जल आदि तत्त्वों के सहारे अपने शरीर को जीवित रख सकता है।

प्राण अपानादि वायु का शमन करके साधक समाधि की अवस्था की ओर अग्रसर होता है। प्रेतादि दिव्य अंतरिक्ष शक्तियां इस शरीर को धारण कर विचरण करती है।

३. मनोमय शरीर - मनोमय शरीर का मुख्य आधार हमारा मन ही है। इस शरीर पर हमारा अधिकार होने पर शरीर देव शक्तियों का धनी होकर देवताओं के समान हो जाता है। देवलोक में गमन की शक्ति प्राप्त होती है मन की कल्पना मात्र से सब कार्य होने लगते हैं। क्षुधा, तृषादि दोष शांत हो जाते हैं। भक्तिभाव से विह्वलित होकर एक आनन्द की अनुभूति होने लगती है। अनाहतचक्र इसका मुख्य केन्द्र है। सूक्ष्म शरीर का आभास होता है।

४. ज्ञानमयशरीर - हमारा चित्त मनोमय शरीर से हटकर विशुद्धचक्र में प्रवेश करता है तो हमें ज्ञान की अनुभूति होने लगती है। जीवात्मा पर लगे माया के आवरण छंटने लगते हैं, एवं ज्ञानमय कोष का आनन्द प्राप्त होता है। विशुद्धचक्र से आज्ञाचक्र तक सूक्ष्मशरीर की गतियों का आभास होता है। उनके अनुभव व शक्ति प्राप्त करता है। सगुण सृष्टि का अधिक आभास होता है निर्गुण का कम होता है।

५. विज्ञानमयशरीर - आज्ञाचक्र एवं उनके आगे 'सूक्ष्मशरीर' अब 'कारणशरीर' में प्रवेश परमात्मा के विशुद्धज्ञान को अनुभव करने लगता है। शिव के तेज की अनुभूति करता है। समाधि में '**कारणशरीर**' एवं '**महाकारणशरीर**' की अनुभूति व भेद मालूम होने लगता हैं। शब्द ब्रह्म एवं ईश्वर के निर्गुण स्वरूप से साक्षात्कार होता है। सहस्रारचक्र के अनुभव प्राप्त होते हैं।

अनेक तरह के नाद सुनाई देते हैं। दिव्यात्माओं से साकार रूप में या समाधि में संपर्क होने लगता है। प्रभु की प्रतीति मालूम होने लगती है।

६. **आनन्दमय शरीर** - सहस्रारचक्र में महाकारणशरीर अपने को प्रभु के सामीप्य का अनुभव करने लगता है। गुण-अवगुण से परे होकर विचित्र आनन्द का अनुभव होता है। समाधि अवस्था में भेद होने लगता है। समना समाधि तक कर्ता को कुछ बोध रहता है। पश्चात् **'उन्मना'** एवं उन्मनातीत समाधि अवस्था को प्राप्त कर जीव ब्रह्मलोक में प्रवेश कर अनेकानेक अनुभव प्राप्त करता है। कर्ता व ध्याता का भान मिट जाता हैं। यहां न मन्त्र का ज्ञान रहता है और न किसी अन्य अवस्था का ज्ञान रहता है। विचित्र आनन्द को प्राप्त करने के लिये ब्रह्मानन्द रस को प्राप्त करने की लालसा बनी रहती है। इस अवस्था में रहकर ऋषिमुनि अपनी काया को हजारों वर्ष तक जीवित रखते थे।

इस ब्रह्मानन्दरस का पान जागृत अवस्था में भी होता रहे इसके लिये साधक को प्रयास करते रहना चाहिये। इससे प्राप्त आनन्द को सहजानन्द कहते है एवं प्राप्त अवस्था को सहज समाधि कहते हैं।

॥ तन्त्र एवं भ्रांतियां ॥

तन्त्र विषय में विशेष धारणा यह है कि तन्त्र का उद्देश्य किसी को मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण से प्रभावित करना है। यह धारणा गलत है।

वस्तुतः ब्रह्म से जीव पर्यन्त जो आत्मा की अवस्थायें हैं उनका ज्ञान बोध कराना एवं जीव की मोक्षप्राप्ति का उपाय बता कर ब्रह्म से साक्षात्कार कराना ही तन्त्र का उद्देश्य है।

साधारणतः यंत्रों में त्रिकोण, षट्कोण एवं वृत्त का निरूपण सर्वत्र होता है। त्रिकोण के मध्य में बिन्दु होता है वह ब्रह्म का मूल स्थान है। त्रिकोण की तीनों रेखायें वामा, ज्येष्ठा, रौद्री इत्यादि रूप में सत्, रज, तम की द्योतक है। त्रिगुणों के संयोजन से ही सृष्टि का निर्माण होता है। **षट्कोण जीव की छः अवस्थाओं का द्योतक है। १. सृष्टि २. स्थिति ३. संहार ४. निग्रह ५. अनुग्रह ६. निग्रह-अनुग्रह।**

सृष्टि, स्थिति एवं संहार की अवस्थाऐं संसार में नित्य देखी जाती है।

मृत्यु के बाद जीव अंतरिक्ष में विचरण करता है यह निग्रह अवस्था है। जीव जब अपने तपोबल के आधार पर प्रभु के समीप पहुँचता है तो अनुग्रह अवस्था को प्राप्त करता है।

जीव जब प्रभु के सालोक व सामीप्य को त्याग कर जब ब्रह्म में लीन होकर ब्रह्मसमान अवस्था को प्राप्त कर स्वेच्छा से सृष्टिसृजन करने जब चाहे जब अपना

अंशावतार लेकर पुन: स्वेच्छा से अपने ब्रह्म भाव को प्राप्त करें यही निग्रह अनुग्रह अवस्था है।

अत: तंत्र का मुख्य उद्देश्य जीव को ब्रह्ममय बनाने के मार्ग का निर्देशन है। तंत्रों में जो यंत्रार्चन पद्धति है वह उस देवता के अंगदेवताओं सहित उसकी पराशक्तियो का बोध कराती है। जैसे की किसी टी.वी., रेडियो, में एक कागज में नक्शा होता है जो उसमें लगे हुए घटको का सम्पर्क सूत्र है वैसे ही तंत्र मंत्र यंत्र विज्ञान आपके इष्ट की आराधना के द्वारा इष्ट कृपा से देवोमय शरीर की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

॥ साधना सिद्धि एवं सावधानियाँ ॥

साधक कैसे साधना करें, उसकी क्या-क्या अनुभूतियाँ होगी, उस समय आचार विचार में क्या सावधानी करनी होगी उसका सामान्य परिचय यहाँ दे रहे है।

तंत्र साधना में तीन मुख्य मार्ग व विधियाँ है।

(१) तंत्रो के अनुसार मूलाधार स्थित **कुण्ड़लनी शक्ति ही ब्राह्मी शक्ति है** इसको जागृत करके सुषुम्रा नाड़ी में प्रवेश कराकर स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्धचक्र एवं आज्ञाचक्र मे ले जाते हुए सहस्त्रार पहुँचाकर समाधी अवस्था को प्राप्त कर ब्रह्म तत्त्व का बोध कराया जाता है। शाक्त ग्रंथों के अनुसार जीव से ब्रह्मपर्यन्त ३६ तत्त्व है एवं वैष्णवों के अनुसार २५ तत्त्व है।

इस तंत्र साधना में मंत्र यंत्र तंत्र भक्ति भावना सगुण व निर्गुण साधना द्वारा ब्रह्मभाव की प्राप्ति करायी जाती है।

साधना के समय में साधक वीरभाव रखें **''शिवोऽहं परिचिन्तये''** इस क्रिया हेतु योग्य गुरु से शक्तिपात द्वारा शक्ति प्राप्त करें वहीं आगे के मार्ग खोलती है। मूलाधार से आज्ञाचक्र आने तक काफी समय लगता है। इसलिये बहुत से साधक बीच में मार्ग छोड़ देते है। आज्ञाचक्र के बाद आगे बढ़ने में समय कम लगता है।

(२) नाद साधना- मस्तिष्क को चेतना शून्य व निष्क्रिय बनाने से हल्की समाधि अवस्था का भान होता है। चिणि चिणि, झिणि झिणि, नाद, तेज आवाजे, घण्टी, नगारे, बंशी, ढोल, एवं मेघनाद गर्जना की आवाजें सुनता है।

नाद नादान्त, कला, अमाकला, चित्कला, कलातीत इत्यादि अवस्थाओं के

कारण महाकारण शरीर अनुभव करता हुआ आगे बढ़ता है।

इस क्रिया के अंतर्गत ओष्ठ, मुँह, नाक, कान, आँखें, अंगुलियों से बंद कर आज्ञाचक्र पर ध्यान कराया जाता है। इन्द्रियों पर दबाव पड़ने पर हमको ध्यान में कई तरह के रंग (जो की ५ तत्त्वो के है) उनकी आकृतियाँ एवं स्वर गुंजन होने लगता है। साधक सोचता है मैने अच्छा मार्ग अपनाया है नहीं तो नीचे के चक्रो के अभ्यास में जिन्दगी यों ही निकल जाती।

इसमें कल्पना शक्ति विशेष बढ़ जाती है इष्ट मंत्र व इष्टदेव की काल्पनिक आकृति शीघ्र समाने आने लगती है। इस साधना के साधक को कहा जाता है तुमने वर्षो अन्य मार्ग से तपस्या की कुछ नहीं मिला हमने आपको ५-७ दिन में इष्ट के दर्शन करा दियें। वस्तुत: यह भ्रांति है परिपक्व अवस्था और ही हैं अत: गुरु का मार्गदर्शन प्राप्त करता रहे। इसमें भी पतन का मार्ग शीघ्र चालू हो सकता है।

(३) ब्रह्मरंध्र से मूलाधार तक गमन- तंत्र ग्रंथों में सर्वप्रथम गुरु का ध्यान सहस्रार में करने को कहा है पश्चात् मूलाधार से सहस्रार गमन हेतु कुण्ड़लनी साधना मंत्र तंत्र साधना बतायी जाती है।

परन्तु इस पद्धति में गुरु मूलाधार से कुण्ड़लनी उठाने के बजाय कुण्ड़लनी के आदि मूलस्थान सहस्रार के मध्य स्थित ब्रह्मस्थान से प्रारंभ करते हैं।

इस क्रिया को समर्थ गुरु ही करा सकते है। वे अपनी शक्ति से सहस्रार को भेदकर वहाँ से कुण्डलनी को चेतनकर ब्रह्मरस का पान कराते है। साधक आनंदमय अनुभूति करता है। कुण्डलनी शक्ति को धीरे धीरे उतार कर आज्ञाचक्र, विशुद्धचक्र, अनाहत, मणिपूर, एवं स्वाधिष्ठान चक्र से लाते हुए मूलाधार में स्थापित करते है।

गुरु को सावधानी रखनीं पड़ती है की साधक को इन मार्गो की सिद्धियों का भान न होने पाये क्योंकि सिद्धियों के उपयोग से साधक का पतन होने लगता है।

हमने भी इस विधि को आजमाया परन्तु हमारी गति उर्ध्वगमन साधना में अधिक होने से बड़ा अजीबपन लगने लगा। नीचे के केन्द्रो में अलग स्मृतियाँ होने लगी। मध्य मार्ग अपनाते हुए स्थिति को अनुकूल बनायें।

॥ साधना की प्रगति ॥

व्यक्ति जब साधना की ओर अग्रसर होवें तो सर्वप्रथम ब्रह्मरंध्र सहस्त्रार में गुरु का ध्यान व गुरु पादुका मंत्र का जप करें। इस प्रक्रिया को बाद में मूलाधार से प्रारंभ कर अभ्यास किया जायें। गुरु का ध्यान सहस्त्रार में, इष्टदेवता का ध्यान हृदय में तथा मूलमंत्र का जप मूलाधार से प्रारंभ कर आज्ञाचक्र तक जप करें।

इस प्रक्रिया से शरीर के तीन विशेष चक्र जागृत होकर अन्य केन्द्रो को भी जागृत करेगें।

सहस्त्रार में जप का अपना अलग आनंद है। हृदय स्थल पर जप करने से वहाँ अजीब सी सरसरी होने लगेगी मन जैसे डूबने लगेगा एवं धीरे धीरे मस्तिष्क शून्य होकर ध्यान समाधि बनने लगेगी।

जिन व्यक्तियों का शरीर स्थूल है पेट बढ़ा हुआ है वह हृदय स्थल में अधिक ध्यान करें उन्हे सुविधा अधिक होगी।

हमारे ६ केन्द्रों पर वर्णमाला के अक्षरो की छवि है अतः इन केन्द्रों पर वर्णमाला अक्षरों पर जप करते हुये साधना करे तो मंत्र शीघ्र जागृत होगा। यथा-

आज्ञाचक्र में- हं लं क्षं सहित जप करें अर्थात् तीनो नेत्रों में हं मूल मंत्र। लं-मूलमंत्र। क्षं-मूलमंत्र।

विशुद्धचक्र- (कण्ठस्थल) में १६ कमलदल है। अं आं इं ईं......अं अः सोलह स्वर है। प्रत्येक दल में अं मूलमंत्र। आं मूलमंत्र। इं-मूलमंत्र। ईं-मूलमंत्र। इस तरह प्रत्येक कमल में मंत्र के प्रारंभ में एक-एक स्वराक्षर बोलते हुये मंत्र का सोलह बार जप करें।

अनाहत चक्र-(हृदय स्थल) में १२ दल का कमल है इसमें प्रत्येक दल में कं खं गं......टं ठं तक के अक्षर है। प्रत्येक मंत्र जप के प्रारंभ में कं खं गं इत्यादि वर्णाक्षरों को जपें।

मणिपूरचक्र-(नाभिकेन्द्र) में डं ढं णं .....पं फं तक के अक्षर दस दल के कमल में है। प्रत्येक दल में एक एक वर्णाक्षर के साथ जप करें।

स्वाधिष्ठान चक्र-(लिंगमूल से १ अंगुल ऊपर) में बं भं मं यं रं लं ये षडक्षर है प्रत्येक कमल बं-मूलमंत्र। भं-मूलमंत्र। इस तरह से जप करें।

मूलाधारचक्र-(गुदाद्वार से ऊपर रीढ़ की हड्डी के निचले भाग के पास) इसमें वं शं षं सं इन वर्णो से युत चतुर्दल है। प्रत्येक दल में मूलमंत्र का जप

एक-एक वर्णाक्षर सहित करें।

अब आप पुनः मूलाधार में कुण्ड़लनी शक्ति का ध्यान करें उसके सर्पाकार स्वरूप को चतुर्दल में घुमावें वर्णाक्षरों के साथ जप करें। पश्चात् सर्पणीकुण्ड़लनी को स्वाधिष्ठान मणिपूर चक्र में वर्णाक्षरों सहित जप करें। इसके बाद अनाहत-विशुद्धचक्र व आज्ञाचक्र के प्रत्येक दल में वर्णाक्षर जप करें। पुनः आज्ञाचक्र से जप करते हुए सब चक्रो के दलों में कुण्ड़लनी को घुमाते हुए कुण्ड़लनी को मूलाधार में स्थापित करें कुण्डली के इस तरह आरोहण अवरोहण से मूलमंत्र की १ माला की आवृति करें।

इस तरह २-३ बार आवृति करने पर आपका गहरा ध्यान लगेगा। आप बाहर की किसी यात्रा पर जाकर आये है ऐसी थकान व चक्रो पर दबाव रीढ़ की हड्डी में तनाव महसूस करेगें। परन्तु एक अजीब सा नशा भी आपको रहेगा। थकान की अनुभूति में आप कुछ समय लेट जाए एवं योग निद्रा का अभ्यास करे तो आपकी थकान भी दूर होगी तथा ध्यान समाधि का मार्ग खुलने लगेगा।

कुण्डलनी चेतना-कुछ अनुभूतियाँ ऐसी होगी की आपको तत्त्वो के रंग दिखाई देंगें व आवाजें सुनायी देगी। प्राणवायु अपान से संबंध करके ध्यान को बढ़ायेगी। चित्त जब ऊपर से अधिक चला जाये तो उसे धीरे-धीरे उतारना चाहिये। चित्त नीचे उतारते समय कभी ऐसा लगेगा की गहरे कुए में उतर रहे है। गुदाद्वार पर वायु का दबाव बनेगा और ऐसा लगेगा की गुदाद्वार फट जायेगा। परिपक्व होने पर सब ठीक होने लगेगा।

उर्ध्वगमन के समय आपके केन्द्र सिकुड़ने लगेगें। लिंगमूल व गुदाद्वार के ऊपर बंध लगकर शरीर अंदर की तरफ घुसने लगेगा तब ही वहाँ की वायु आगे बढ़ेगी।

बंध लगने के साथ ही वायु का उर्ध्वगमन होकर ध्यान लगेगा। ध्यान में वीरभाव की अनुभूति होती है उस समय साधक हूँ हूँ, सिंहनाद करता है अथवा विचित्र आवाजे पैदा करता है।

शरीर डोलने लगता है अथवा मेंढक की तरह फुदकने लगता है आप किसी असमंजस में नहीं पड़े कि इसमें किसी आत्मा का प्रवेश तो नहीं हो गया है। यह लक्षण कुण्डलनी जागरण के लक्षणों में है। अगर सहायक लोग यह महसूस करें कि इस अवस्था में रहते हुये काफी देर हो गयी है तो चित्त को नीचे उतारने की कोशीश करें। रीढ़ की हड्डी में उपर से नीचे की ओर मालिश करें, कान के पास

की नसों को धीरे धीरे नीचे की ओर सहलावें। कान में हल्की सी या जोर से आवाज देवें घण्टा बजायें।

इस अवस्था में साधक के हाथ पाँव वैसे निष्क्रिय रहते है आँखो की पलकों को आप खोलकर देखना चाहे तो लगेगा की आँखों कि पुतलियाँ अन्तरमुखी हो गयी है काला बिन्दु जो सामने रहना चाहियें वह ऊपर की ओर हो गया है।

इस अवस्था में साधक को धीरे धीरे नीचे उतारे यदि आप अचानक किसी आवाज से चौकन्ना कर भ्रमित करने की कोशीश करोगे तो हृदय पर दबाव आयेगा अत: धैर्य से काम लेना चाहिये वैसे साधना के अंतर्गत बगलामुखी की उपासना निष्काम भाव से की जायें तो प्राणवायु व मन की चंचलता का स्तंभन होकर मूल में बंध लगने लगते है एवं ध्यान लगने लगता है।

जब **स्वाधिष्ठानचक्र एवं मणिपूरचक्र** खुलने लगते है तो इन स्थानो पर दबाव बनने लगता है। कामोत्तेजना बढ़ती है, पेट अंदर की ओर जाने लगता है अत: पेट को हल्का रखना चाहिये। भोग में योग को भाव प्रकट होने लगता है। साधक का स्खलन विलम्ब से अपनी ईच्छा से होता है। तत्त्वो के रंग व उनकी गंध का भान होने लगता है। कभी किसी इत्र की, कभी अगरबत्ती या भस्म, कभी किसी नैवेद्य की खुशबु महसूस होती है।

मणिपूरचक्र के अधिकार के बाद **अनाहतचक्र** खुलने लगता है। साधक के हृदय में प्रेम का सागर लहराने लगता है। विश्व को अपना मित्र समझने लगता है द्वेषता टूटने लगेती है शरीर बहुत हल्का महसूस होने लगता है। इष्ट की अनुभूति में प्रेमाश्रु आने लगते है।

इस अवस्था के नजदीक होने से योग निद्रा का अभ्यास करना चाहिये। परन्तु समय १ १$\frac{1}{2}$ घण्टे का होना चाहियें क्यों कि मन निद्रा व स्वप्नलोक के भीतर भटकता रहता है उसको वापस आने में समय चाहियें।

यदि साधक को अच्छा अभ्यास है तो उसे निद्रा से अचानक नहीं उठाये। साधक को अपना चित्त धीरे-धीरे ५ -७ मिनिट में उतारना चाहियें वर्ना हृदय पर दबाव पड़ेगा घबराहट होगी, पसीने आयेगें। मेरुदण्ड भी ध्यानवस्था में सीधा व कड़क हो जाता है अत: २-४ मिनिट में शनै:-शनै: उठना चाहियें।

बुखार(ज्वर) हो उस समय चित्त अधिक ऊँचा नहीं चढ़ावें वर्ना बुखार (ज्वर)कपाल में रह जाती है।

अनाहत चक्र के बाद विशुद्ध चक्र व आज्ञाचक्र के प्रवेश द्वार खुलने लगते है।

नीचे के केन्द्रों पर दबाव बढ़ेगा, आपकी ठोडी हंसली के पास लगकर झुकने लगेगी व इतना दबाव बनायेगी की मानो हंसली टूट जायेगी परन्तु आप जप करते रहें। कुछ समय बाद जिह्वा भी अपने आप उलट कर तालु में लग जायेगी इसे खेचरी मुद्रा कहते है। आप सहस्रार से गिरने वाले ब्रह्मरस का पान करने लगेगें प्रारंभ में थोड़ा-थोड़ा अभ्यास करें।

आपका अधिकार सूक्ष्म शरीर पर होने लगता है। अब आपकी मंत्र साधना के विभाग होने लगते है पहले आप जप करते थे अब आपको लगेगा की मंत्र ब्रह्माण्ड में गूंज रहा है एवं आप श्रोता है। कर्णेन्द्रियों के बंद लगने लगेगें नाद का अभ्यास चालू होगा। आज्ञाचक्र पर दबाव के फलस्वरूप आप दीवार के उस पार या भूमिगत वस्तु को ध्यान में देखने लगेगें। कौन व्यक्ति क्या कहना चाहता है उसके विचार आपके हृदय में पैदा हो जायेगें। आवेश में आकर भ्रकुटी तनने पर किसी को कुछ कहें वह सत्य घटित होगा परन्तु आप कृपया इन सिद्धियों को काम में नहीं लेवें अगर आपको आगें बढना है। १५-२० दिन में ये सिद्धिया वापस अंतरमुखी हो जायेगी।

आपके मस्तिष्क के पिछले भाग में भी एक दिव्य केन्द्र है। उसका संबध आपके नेत्रों व ब्रह्म कपाल से किरणों द्वारा अंतरमुखी अवस्था में महसूस करोगें।

आपका अथर्वा व सूक्ष्म शरीर परिपुष्ट होने लगेगा। दूर दराज के व्यक्ति संदेश प्राप्त कर सकते है एवं अपने सूक्ष्मशरीर को आदेश भी दे सकते है जो बाहर की दुनिया से सम्पर्क कर सकते है।

आपकी मानसिक पूजा इस समय बलवती होने लगेगी तथा साकार पूजा जैसा भाव स्वरूप अपने सूक्ष्मशरीर के माध्यम से देख सकते हैं।

आज्ञाचक्र के ऊपर कनपटी के पास में रोधनी नाड़ी है कई बार प्राण यहाँ आकर अटक जाता है यहाँ गरुड़, शरभराज या छिन्नमस्ता की उपासना करनी चाहियें।

अब आपको आपका मंत्र और भी सूक्ष्म गति से सुनाई देने लगेगा। नाद एवं नादान्त, कला अमाकला, कलातीत आदि कई अवस्थायें ध्यान समाधि के द्वारा प्राप्त होगी।

मंत्र की गति में इतनी तीव्रता हो जाती है कि मंत्र केवल स्मृति कि तरह ही मानस पटल से गुजरने लगता है। इष्ट का साकार (निराकार) स्वरूप ही नजर आता है मंत्र स्मृति रूप में भी नष्ट हो जाता है। आपकी साधना का प्रयोजन, लक्ष्य, लुप्त

हो जाते है। कर्ता व ध्येय का अंतर नष्ट हो जाता है आनंदमयकोश में पहुँचकर ब्रह्मानन्द के रस का पान करता है।

ऐसे विशिष्ट साधक अपने दुश्मनों के नाश हेतु भी कोई प्रयोग नहीं कर सकते। कारण कैसा ही उग्रमंत्र करें थोड़ी ही देर में उनका चित्त ब्रह्मलोक में जाकर शून्य हो जायेगा किस के प्रति क्या विचार है वह भूल जायेगा।

अत: तंत्र में रक्षा व सकाम प्रयोग हेतु पंचाङ्ग साधना आवश्यक मानी है। **(१) कवच** - स्वयं व परिवार की रक्षा **व पञ्जर**- किले के समान रक्षा करता है। **(२) हृदय स्तोत्र**- यह मित्र के समान रक्षा करता है **(३) शतनाम**- यह अंगरक्षक के समान कार्य करता है **(४) सहस्त्रनाम**- सेना की तरह कार्य व रक्षा करता है **(५) स्तोत्र**- इष्टदेवता की प्रसन्नता हेतु प्रार्थना। ये सभी आवश्यक है।

नित्य साधना का समय निश्चित होना चाहिये। देवता के अंगदेवता भी उसी समय आते है जो दैनिक समय हो। ऐसे में कभी-कभी देखने में आता है कि आपकी जगह और कोई पूजा कर गया है। चंदन, पात्र, घण्टा, गंडूष इत्यादि किसी के द्वारा प्रयोग में लाये गयें है ऐसा आप अनुभव करोगें।

एक मंत्र विशेष की साधाना के बाद आप दूसरे मंत्र को प्रयोग करोगें तो आप महसूस करोगे कि टी वी एण्टीना की तरह आपके मस्तिष्क में तरंगो व खिंचाव की दिशा बदल रही है। इसी दिशा के आधार पर मंत्रों के आम्नायो का वर्णन है

साधना काल में आपको सर्वप्रथम अपना शरीर हल्का महसूस होना चाहियें। कभी आपको अपने शरीर का आभास ही नहीं होगा। आपका शरीर देवमय हो गया है अर्थात् ध्यानावस्था ऐसी लगेगी कि मानो आपकी जगह आपका इष्ट बैठा है। अपने चारों और लाल, नीला, पीला, केसरिया रंग का वृत्त अनुभव करोगें। ये मंत्र जागृति के लक्षण है।

धीरे-धीरे जिस ध्यानावस्था को कठोर प्रयास के द्वारा आप महसूस करें वह आपको काल्पनिक चित्र की तरह आँखों के सामने महसूस करोगें। बैठे-बैठे जागृत अवस्था में भी ध्यान धारणा के लक्षणो से परिपूर्ण होने के भाव आपको सदैव प्राप्त रहें, इसी सहज साधना का अभ्यास करते रहना चाहिये।

कभी-कभी नाद दिन रात में अचानक खुल जाता है कभी आपके नियमित समय पर। जैसे नित्य रात्रि १० बजे आप साधना करते हो एवं १० बजे किसी दिन यात्रा में हो या कहीं वार्त्ता में बैठे है आपका सूक्ष्म शरीर नाद श्रवण करेगा एवं स्थूलशरीर संसारिक क्रिया-कलापो में व्यस्त रहेगा।

अतः सदैव अपने सूक्ष्म व कारण शरीर के माध्यम से ईश्वर साधना में लिप्त रहें एवं स्थूल शरीर अपना कार्य करता रहें। ऐसा सतत् प्रयत्न करते रहना चाहियें।

हमारे गुरु श्रीनथमलजी दाधीच लक्ष्मणगढ़ (सीकर) जब पञ्चाग्नि तपस्या करते उन दिनों कपाल २-३ अंगुल ऊँचा हो जाता था। श्वांस साधारण व्यक्ति के १ मिनिट में १२-१३ बार आता है उनके श्वांस की गति करीबन ५, एवं नाड़ी की गति १७० से २२० तथा हृदय की धड़कन १ मिनिट में ५० करीब रहती थी।

सतत् व उच्च साधना से आप सदैव संकट मुक्त रहेगें यह जरूरी नहीं है आप साधारण मनुष्यो से भी अधिक संकट ग्रस्त समय भोगने को भी मजबूर हो सकते है। अनेक संकट आना, अनेक शत्रु होना, विशेष अपमान होना ये बातें भी हो सकती है एवं व्यक्ति को साधना के उच्चकेन्द्रों से नीचा गिरा देती है परन्तु सतत् अभ्यास जारी रखें आप भोगवाद के समाप्त होते ही पुनः अवस्था में आ जायेगें अतः सुख-दुःख को प्रभु का प्रसाद मानकर भोगना चाहियें। अपने इष्ट के प्रति अश्रद्धाभाव प्रकट नहीं होने चाहियें।

अतः मेरा निवेदन है कि इस पुस्तक में जो इष्ट आराधना की विधि मंत्रो व प्रयोगों का वर्णन किया है उसे केवल सकाम भाव से नहीं लेवें निष्काम भाव से आराधना करें।

लेखन का ज्ञान सीमित है अतः साधारण ज्ञानवश जो प्रकाशित किया गया है उसी से संतोष करें। किसी योग्य गुरु के सानिध्य में साधना करें।

लेखन व संकलन में त्रुटिया हो तो उसे क्षमा करावें।

निवेदक

पं. रमेशचन्द्र शर्मा 'मिश्र'

॥ वर्ण संकेत सूची ॥

अक्रूर	अं	एकनेत्र	छ
अक्षि	इ	कपोल	लृ
अग्नि	र	कमण्डलू	ठ
अग्निबीज	रं	कमला	श्रीं
अर्घीश	ऊ	कर्ण	उ
अतिथीश	ॠ	कवच	हुं
अमरेश	उ	काम(बीज)	क्लीं
अजपा	हंस:	कामिका	त
अन्तिम	क्षं	कूर्च	हूँ
अत्रि	द	कूर्म	च
अधर	ए	कृष्ण	थ
अर्धनारीश	ढ्	क्लीब (वर्ण)	ऋ ॠ लृ लॄ
अनन्त	अ:	क्रोधबीज	हुँ
अनल:	रं	क्रोधीश	क
अनलान्तिम	ल	क्रिया	ल:
अनुग्रह	औ	खड्गीश	ब
अमृतबीज	वं	खेचर	खं
अम्भ	ब	खम्	हं
अस्त्र (मंत्र)	अस्त्राय फट्	गणपतिबीज	गं
आकाशबीज	हं	गणनायक(बीज)	गं
आत्मभू:	क्लीं	गोविन्द	ई
आप्यायनी	ॐ	गदी	ख:
आषाढी	त	गजमुख	गं
अंकुश	क्रों	गगन	ह
औरस	औ	गिरिसुता(बीज)	ह्रीं
इन्दु	अनुस्वार	गिरिजा	ह्रीं
इन्धिका	उ	चक्री	कं
उमाकान्त	ण	चतुरानन	क
उषर्बुधप्रिया	स्वाहा	चन्द्र	अनुस्वार

चन्द्रमा	अनुस्वार	नृसिंहाङ्ग	औ
जनार्दन	फ	पञ्चान्तक	ग
जरासन	ट	पद्मनाभ	ए
जल	व	पद्मा	श्रीं
झिण्टीश	ए	परा	ह्रीं
ठद्वयं	स्वाहा	पावक	र
णान्त	त	पावक कामिनि	स्वाहा
तन्द्री	म	पावकमो (गे) हिनी	स्वाहा
तरल	त	पाश	आं
तर्जनी	न	पाशबीज	आं
तार	प्रणव(ॐ)	पिनाकी	ल
तीव्र	त	पुरुषोत्तम	य
तोयं	वः	प्राण	ह
त्रपा	ह्रीं	प्रीती	ध
त्रिध्रुव	प्रणव(ॐ)	फान्त	ब
त्रिपुरान्तक	ॠ	बलानुज	ब
त्रिमूर्ति	ईकारं	बिन्दु	अनुस्वार
दक्षपापांगुलीमूल	ढ	ब्रह्मा	कः
दण्डी	तृ	भग	ए
दहनाङ्गना	स्वाहा	भक्षण	खं
दारक	ड	भगी	ए
दीर्घत्रय	आ ई ऊ	भानु	म
दीर्घनन्दी	ड़ा	भुवनेश्वरी	ह्रीं
दीपिका	ऊ	भूबीज	ग्लौं, लं
द्युतिसनयना	च्छि	भृगु	स
ध्रुव	प्रणव(ॐ)	भौतिक	ए
नकुल	ह	मनु	औ
नन्दी	ड	मनोजन्मा	क्लीं
नभ	हं	मन्मथ	क्लीं
नभबीज	हं	मातृकाद्य	अ
नील	त	माधव	इ

माया	ह्रीं	वाणी	ऐं
मारुत	य	वामकर्ण	ऊ
मीनेश	ध	वामकूर्पर	छ
मुरारी	औ	वामनासिका	ॠ
मुसली	छ	वामनेत्र	ई
मेघ	घ	वामाक्षि	ई
मेरु:	क्षः	वाल	व
मेष	न	वायु	य
मृत्यु:	श	वायुबीज	यं
मांस	ल	विष	म
युग्वसु	र	विधु	अनुस्वार
रमा	श्रीं	विमल	लं
रति	ण	वियत्	ह
रात्रीश	अनुस्वार	विशालाक्ष	थ
लकुली	ह	वेदादि	ॐ
लक्ष्मी	च	वैकुण्ठ	म
लक्ष्मी(बीज)	श्रीं	व्याघ्रपाद	ड
लज्जा	ह्रीं	व्यापिनी	औ
लांगलीश	ठ	व्योम	ह
लोहित	प	शक्ति	ह्रीं
वक	श	शक्तिबीज	ह्रीं
वर्म	हुं	शशिशेखर	अनुस्वार
वज्र	लं	शार्ङ्गी	ग
वराह	ह	शान्ति:	ई
वहन्यासन	र	शिखी	फ:
वह्नि	र	शिर:	क
वह्निकामिनि	स्वाहा	शिव	ल
वह्निबीज	रं	शिवा	ह्रीं
वह्निवधू	स्वाहा	शिवोत्तम	घ
वाक्	ऐं	शुचिप्रिया	स्वाहा
वागीश	ऐं	शूर	प

शौरी	ध
श्वेत	ष
सत्यः	द
सदागति	य
सदाशिव	ह
सदृक्	इ
सद्य	ओ
समीरणः	यः
सर्ग	विसर्ग
सर्गिनन्दज	ठः
सात्वत	ध
सुधाबीज	वं
सूर्यः	मः
सृष्टिः	कः
सृणि	क्रौं
संकर्षण	औ
संवर्तक	क्ष
स्थिरा	ज
स्मृति	ग
स्वर्गरितसवल्लभा	स्वाहा
हयानन	ह
हरिः	त
हाटकरेतस	वह्नि
हिमाद्रिजा	ह्रीं
हुताशन	र
हंसः	सः
हृत्	नमः
हृदय	नमः
हल्लेखा	ह्रीं

संख्या संकेत सूची

अक्षि	दो
अधर	एक
अद्रि	सात
अर्क	बारह
आदित्य	बारह
इषु	पाँच
क्ष्मा	एक
गुण	तीन
चन्द्र	एक
तिथि	पन्द्रह
दिक्	दस
धरा	एक
नक्षत्र	सत्ताइस
नन्द	नौ
नन्दा	नौ
नेत्र	दो
बाहु	दो
भुजा	दो
भू	एक
मनु	चौदह
मुनि	सात
रवि	बारह
रस	छः
राम	तीन
रुद्र	एकादश
वह्नयः	तीन
वसु	आठ
वेद	चार
शिव	एकादश
सागर	चार
सायक	पाँच
सूर्य	बारह

॥ मंत्र सिद्धि के उपाय ॥

॥ कुलाकुल चक्र ॥

वायु	अग्नि	भूमि	जल	आकाश
अ आ	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ	लृ ॡ
ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	क्ष	व	स	ह

जिस मंत्र का पाला शत्रु तत्त्व में पड़े उसे साधक न ग्रहण करें जल भूमि का और वायु अग्नि का मित्र हैं। वायु भूमि का और अग्नि जल और भूमि का शत्रु है। आकाश सभी का मित्र है।

॥ राशी चक्र ॥

अपनी राशी से मंत्र की राशी तक गिनकर फलाफल जाने।

४/८/१२ घातक, १/५/९ मित्र, ३/७/११ पुष्टिकारक, २/१० मित्र ६ **मध्यम।**

॥ नक्षत्र चक्र एवं तारा चक्र ॥

गण - अपने व मंत्र का गण देखना चाहियें। मनुष्य यदि साधक का गण है तो मनुष्य ही मंत्र का श्रेष्ठ है देवता उत्तम है देवगण के लियें मनुष्य गण का मंत्र माध्यम है राक्षस शत्रु है। राक्षस गणो के लिये राक्षस गण ही उत्तम है।

अश्विनी अ आ	भरणी इ	कृत्तिका ई उ ऊ	रोहिणी ऋ ॠ ऌ ॡ	मृगशिरा ए	आर्द्रा ऐ	पुर्नवसु ओ औ	पुष्य क	आश्लेषा ख ग
मघा घ ङ राक्षस	पू. फा. च नर	उ. फा छ ज नर	हस्त झ ञ देव	चित्रा ट ठ राक्षस	स्वाति ड देव	विशाखा ढ ण राक्षस	अनुराधा त थ द देव	ज्येष्ठा ध राक्षस
मूल न प फ राक्षस	पू. षा. ब नर	उ.षा भ नर	श्रवण म देव	धनिष्ठा य र राक्षस	शतभिषा ल राक्षस	पू.भा. व श नर	उ.भा. षसह नर	रेवती ळक्षअअ देव

तारा - अपने नक्षत्र से मंत्र के नक्षत्र तक गिने फल इस प्रकार है-

१. जन्म २. संपत ३. विपत ४. क्षेम ५. प्रत्यरि ६. साधक ७. वध ८. मित्र ९. परम मित्र।

१-३-५-७ वें पड़ने वाले मंत्र ताज्य है।

॥ अकथह चक्र ॥

मंत्र लेने वाले के नाम के पहले अक्षर से प्रारम्भकर मंत्र के आदि अक्षर तक दक्षिणावर्त से गणना करें। १. सिद्ध २. साध्य ३. सुसिद्ध ४. अरि।

१ अ क थ ह ङ प	२ उ ख द	३ आ च फ	४ ऊ
५ ओ ड ब	६ ऌ झ म	७ औ ढ श	८ ॡ ञ य
९ ई घ न	१० ॠ ज भ	११ इ ग ध	१२ ऋ छ व
१३ अः त स	१४ ऐ ठ ल	१५ अं ण ष	१६ ए ट र

सुसिद्ध मंत्र तुरन्त सिद्धिदायी है और अरिमंत्र से वंशनाश होता है।

अरि मंत्र ग्रहण न करें। भ्रमवश किसी ने अरि मंत्र ग्रहण कर लिया हो तो उसके छोड़ने की विधि यह है कि एक द्रोण गो दुग्ध के उपर एक सौ आठ बार उसी मंत्र (अरि मंत्र) का जप कर उस दूध को पान कर जायें। उस मंत्र को फिर एक सौ आठ बार जप कर मंत्रोच्चारण पूर्वक उद्धार कर उस दूध का परित्याग करें। इस प्रकार उस मंत्र को छोड़कर उसी देवता के दूसरे मंत्र को ग्रहण करें।

रुद्रयामल में लिखा है कि वटपत्र में मंत्र लिखकर उसे स्त्रोत जल में डालकर अरि मंत्र का परित्याग करें।

॥ अकडम चक्र ॥

इस चक्र में मंत्र लेने वाले के पहले अक्षर से लेकर मंत्र के आदि वर्ण तक सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध और अरि दक्षिणावर्त से गणना करें। अरि मंत्र ग्रहण न करें।

॥ ऋणि–धनि चक्र ॥

इस चक्र के उपरिभाग में ६, ६, ९, ०, ३ आदि जो अंक है वे साध्याङ्क है और निम्न भाग में २,२, ५,०,० आदि अंक साधकांक है।

मन्त्राङ्क										
६	६	६	०	३	४	४	०	०	०	३
अ आ	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ	ल लृ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
साधकाङ्क										
२	२	५	०	०	२	१	०	४	४	१

इस चक्र से विचार करने के लिये मंत्र के स्वर और व्यंजन वर्ण अलग अलग कर उनमें से प्रत्येक के अंक चक्र से जानकर जोड़ ले। इसी प्रकार मंत्र लेने वाले के नाम से स्वर और व्यंजन वर्णो के अंक जानकर उन्हे जोड़ लेवे। अब इन दोनों के योगफलों में अलग-अलग ८ का भाग देवें। यदि मंत्र का शेष अधिक होतो वह ऋणी माना जाता है। यदि कम होतो धनी माना जाता है। ऋणीमंत्र से बहुत शीघ्र सिद्धि मिलती है। दोनों का शेष बराबर होतो भी मंत्र उत्तम होता है। धनी मंत्र से सिद्धि देर से मिलती है। यदि शेष में शून्य रहे तो उस मंत्र को मृत्युकारी समझना चाहियें।

अतः विशेष विचार - सिद्धविद्या, नवदुर्गा, अग्नि, शिव, विष्णु के प्रधान मन्त्रों में मन्त्र संबंध में अरि-मित्र एवं राशि षडाष्टक का विचार नहीं करना चाहिये। कामना परक मन्त्रों में मन्त्र के प्रारंभ के अक्षर की राशि पर विचार कर सकते हैं। प्रारंभ में बीजाक्षरों के परिवर्तन से मन्त्र को अनुकूल बनाया जा सकता है ऐसी भी तन्त्र में व्यवस्था है।

॥ दीक्षामुहूर्त निर्णयः ॥

१. मास - मंत्र की दीक्षा, वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्त्तिक, फाल्गुन या मार्गशीर्ष मास में देनी चाहिये। सिद्धान्तशेखर में कहा गया है कि शरत्काल में मंत्र की दीक्षा श्रेष्ठ फल देने वाली होती है। फाल्गुन, मार्गशीर्ष तथा ज्येष्ठ में दी जाने वाली दीक्षा मध्यम फल देने वाली होती है। आषाढ़ व श्रावण मास में दी जाने वाली दीक्षा कनिष्ठ फल देने वाली होती है। अधिक मास के सभी महिने तथा पौष और भाद्रपद दीक्षा के लिए निन्दित कहे गये है।

२. दीक्षापक्ष - शुक्लपक्ष की दीक्षा शुभ होती है और कृष्णपक्ष में पंचमी तक दीक्षा दी जाती है। कालोत्तर में लिखा है कि सम्पति कामी के लिये शुक्लपक्ष और मुक्तिकामी के लिये कृष्ण पक्ष प्रशस्त है।

३. दीक्षादिवस - रविवार को दीक्षा लेने से धन लाभ, सोमवार में शांति, मंगलवार में आयु नाश, बुध में सौन्दर्य लाभ, गुरु में ज्ञान लाभ, शुक्र में सौभाग्य लाभ और शनिवार को दीक्षा लेने से यश की हानि होती है।

४. दीक्षा तिथि - आगम कल्पद्रुम में लिखा है कि प्रतिप्रदा में ज्ञान नाश, द्वितीया में ज्ञान लाभ, तृतीया में पवित्रता, चतुर्थी में धन नाश, पंचमी में बुद्धि वृद्धि, षष्ठी में ज्ञान क्षय, सप्तमी में सुख, अष्टमी में बुद्धि नाश, नवमी में देह क्षय,

दशमी में राज सौभाग्य, एकादशी में पवित्रता लाभ, द्वादशी में सर्वशुद्धि, त्रयोदशी में दरिद्रता, चतुर्दशी में तर्यग्योनित्व प्राप्ति और अमावस्या में दीक्षा लेने से अनिष्ट होता है। पूर्णिमा में धर्म वृद्धि होती है।

परन्तु संध्या गर्जन, जलद गर्जन, भूकम्प, उल्कापात जिस दिन हो और जो दिन श्रृति में निषेध है दीक्षा ग्रहण न करें।

रामार्चन चन्द्रिका में लिखा है कि पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, द्वितीया, पूर्णिमा, त्रयोदशी और सभी कामप्रद है। इनमें केवल विष्णु मंत्र ले।

सनत्कुमार तंत्र के अनुसार- षष्ठी में शिव मंत्र ग्रहण करने में दोष नहीं शैवागम में लिखा है कि शुक्लपक्ष की द्वादशी, सप्तमी और षष्ठी निन्दनीय है।

५. दीक्षा नक्षत्र- अश्वनी में सुख, भरणी में मृत्यु, कृत्तिका में दु:ख, रोहिणी में वाक्पतित्व, मृगशीर्ष में सुख प्राप्ति, आर्द्रा में बन्धु नाश, पुनर्वसु में धन सम्पत्ति, पुष्य में शत्रु नाश, आश्लेषा में मृत्यु, मघा में दु:ख नाश, और पूर्व फाल्गुनी में सौन्दर्य लाभ, उत्तर फाल्गुनी में ज्ञान, हस्त में धन, चित्रा में ज्ञानवृद्धि, स्वाति में शत्रुनाश, विशाखा में सुख, अनुराधा में बंधु वृद्धि, जेष्ठा में सुतहानि, मूल में कीर्ति वृद्धि, पूर्वाषाढा व उत्तराषाढा में कीर्ति, श्रवण में दु:ख, धनिष्ठा में दारिद्रय, शतभिषा में ज्ञान, पूर्वभाद्रपद में सुख, रेवती में कीर्ति लाभ होता है। किन्तु शिव व वह्नि मंत्र लेने में आर्द्रा व कृत्तिका में दोष नहीं है। जिस मंत्र में **"र" आता है वह वह्नि मंत्र कहलाता है जैसे ह्रीं श्रीं आदि।**

अगस्त्य संहिता के अनुसार उ.भा., जेष्ठा और भरणी शुभ है। जेष्ठा और भरणी में केवल राम मंत्र ग्रहण करें।

६. दीक्षा योग- रत्नावली में लिखा है कि प्रीति, आयुष्मान, सौभाग्य, शोभन, धृति, वृद्धि, ध्रुव, सुकर्मा, साध्य, शुक्ल, हर्षण, वरीयान, शिव, ब्रह्म, सिद्ध और इन्द्र ये १६ योग ही दीक्षा के लिये प्रशस्त है।

७. दीक्षा करण- वव, कौलव, तैतिल, और वणिज शुभ है।

८. दीक्षा लग्न- विष्णु मंत्र के संबन्ध में स्थिर लग्न, शिव मंत्र में चर लग्न, और शक्ति मंत्र में द्विस्वभाव लग्न शुभ है। अगस्त्य संहिता में लिखा है कि लग्न के तृतीय, षष्ठ और एकादश स्थान में पाप ग्रह, लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम, नवम और पंचम में शुभग्रह होने पर मंत्र लेना प्रशस्त है। किन्तु वक्र ग्रह दीक्षा के लिये अनिष्ट कारक है।

९. दीक्षा काल में विशेष निर्णय- रत्नावली में लिखा है कि भाद्रमास की षष्ठी, आश्विन की कृष्णा चतुर्दशी, कार्त्तिक की शुक्ल नवमी, मार्गशीर्ष की तृतीया, पोष की शुक्ला नवमी, माघ की शुक्ला चतुर्थी, फाल्गुन की शुक्ल नवमी, चैत्र की काम चतुर्दशी, वैशाख की अक्षय तृतीया, जेष्ठ का दशहरा, आषाढ की शुक्ला पंचमी, श्रावण की कृष्ण पंचमी मंत्र लेना तीर्थ स्थान की दीक्षा सामान्य से कोटि गुणा फलदायी है। इनमें कोई विचार नहीं करना चाहिए।

योगनी तंत्र में लिखा है कि उत्तरायण, दक्षिणायण, संक्रांति, चन्द्र, सूर्य ग्रहण यदि होतो उस समय दीक्षा लेनी चाहिये तथा पूजा दिनों में दीक्षा कार्य प्रशस्त है। निन्दित मास में भी सूर्यग्रहण यदि होतो उस समय दीक्षा लेना चाहिये। सूर्य और चन्द्र ग्रहण के समय दीक्षा लेने में लग्नादि का कोई विचार नहीं करना पड़ता है। रुद्रयामल में लिखा है कि सूर्यग्रहण काल में शक्ति दीक्षा और चन्द्रग्रहण में विष्णु दिक्षा निषिद्ध है। यह निषेध श्रीविद्या और गोपाल को छोड़कर अन्य देवताओं के संबन्ध में समझना चाहियें। नीलतंत्र में तारा मंत्र के लिये अनुराधा और रेवती नक्षत्र तथा आश्विन और कार्त्तिक मास में विशेष रूप से प्रशस्त है। यामल में लिखा है कि सूर्यग्रहण के समय " श्रीं, ह्रीं, क्रीं मंत्र " लोपा मुद्रा मंत्र और दुर्गा मंत्र ग्रहण करने से मुक्ति लाभ होता है। कुलार्णव तंत्र में लिखा है कि रविवार में सप्तमी, सोमवार में अमावस्या, मंगलवार में चतुर्थी, और बृहस्पति में अष्टमी तिथि देव पर्व के समान होती है। अतः इनमें दीक्षा ग्रहण करें। विष्णुयामल में लिखा है कि देवि बोधन तिथि से महानवमी तक की किसी भी तिथि में दीक्षा लेना अभीष्ट फलदायी होता है।

मुण्डमाला तंत्र में लिखा है कि महाविद्याओं का मंत्र ग्रहण करने में कालादि और अरि मित्रादि दोषों का विचार न करें।

१०. मालामणि फलम् - बाह्य पूजा में पद्म बीजादि की मालायें प्रशस्त मानी गयी है। रुद्राक्ष, शंख, पद्मबीज, जीव पुत्रिका, मुक्ता, स्फटिकामणि, रत्न, सुर्वण, प्रवाल, रोप्य और कुश मूल इनमें से किसी एक की माला से गृहस्थ को जप करना चाहियें।

११. माला फल- अंगुलियों में गणना करने से एक गुणा, अंगुली पर्व में आठ गुणा, जीव पुत्रिका में दस गुणा, शंखमाला में सौ गुणा, प्रवालमाला में सहस्त्रगुणा, मणि, रत्न व स्फटिक माला में दस सहस्त्र गुणा, मुक्ता माला में लाख गुणा पद्ममाला में दस लाख गुणा, वर्णमाला में करोड गुणा, कुशमूल में सौ करोड गुणा और रुद्राक्ष माला में जप करने से अनंत फल प्राप्त होता है।

विभिन्न कामनाओं के लिये- वाराही तंत्र में भैरवी विद्या के विषय में, सुवर्ण, मणि, स्फटिक, शंख, और प्रवाल माला विहित बतायी गई है तथा जो पुत्रिका माला को त्याज्य बताया गया है।

त्रिपुरसुंदरी के जप में रक्तचंदन, विष्णु में तुलसी, गणेश में गजदन्त, और त्रिपुरा मंत्र में रुद्राक्ष व रक्त चंदन माला विहित है।

१२. आसन भेद - ज्ञान सिद्धि में कृष्णाजिन, मोक्ष व श्री कामना में व्याघ्रमार्चन और मंत्र सिद्धि में कुशासन प्रशस्त है। योगनी तंत्र में लिखा है कि कृष्णाजिन पर अदीक्षित गृहस्थ को नहीं बैठना चाहियें। इस पर केवल ब्रह्मचारी, वनवासी, और भिक्षुक को ही बैठना चाहियें।

१३. मालासंस्कार- शान्ति कार्य में श्वेत वर्ण, वश्यादि कार्य में लोहित वर्ण और मारण में कृष्ण वर्ण से सूत्र से गृथें। सूत्र को त्रिगुण कर उसे पुनः त्रिगुण करें तब उससे शास्त्रानुसार गृंथे। जैसी मणि हो उसी के अनुरुप सूत्र भी होना चाहियें। प्रणव और अकारादि एक एक वर्ण का उच्चारण कर (ॐ ॐ ॐ आं इत्यादि) माला गृंथे। बीच-बीच में ब्रह्मग्रंथि देता जाये। मेरुस्थल के भी ग्रंथि बद्ध करना चाहियें।

॥ कूर्मचक्र विधानम् ॥

(शारदा तिलके)

इस चक्र में जिस कोष्ठ में साध्य स्थान के ग्राम नगर के नाम का पहला अक्षर हो उसे कूर्म का मुख समझें। मुख के दोनों कोष्ठ उसके हाथ, हाथों के नीचे वाले दो कोष्ठ उसके कुक्षियां, कुक्षियों के नीचे वाले दो कोष्ठ उसके पैर और शेष कोष्ठ उसकी पूंछ जानना चाहिये।

मण्डप के जिस भाग में कूर्म का मुख हो वहीं बैठकर जप पूजादि कार्य करने से मन्त्र सिद्ध होता है। हाथ वाले भाग में करने से साधक अल्पजीवी, कुक्षि में उदासीन, पैर में दुःखी, पूंछ में करने से बंधन तथा उच्चाटनादि से पीड़ित होता है।

कूर्मचक्र का विधान मंत्र सिद्धि हेतु विचारा जाता है। इसको जानने के लिये पूजा स्थल (मण्ड़प) या दीप प्रदेश को कूर्माकार रूप में कल्पना करें या तो उसे आयताकार चौकोर मानकर ९ भाग की इस तरह कल्पना करें जैसा कि चित्र में बताया गया है।

ईशान पूर्व आग्नेय

उत्तर (बायें) — दक्षिण (दायें)

<table>
<tr><td>क्ष त्र ज्ञ
८</td><td colspan="3">क ख ग घ ङ
१</td><td>च छ ज झ ञ
२</td></tr>
<tr><td rowspan="3">श ष स ह
७</td><td>अं अः</td><td>अ आ</td><td>इ ई</td><td rowspan="3">ट ठ ड ढ ण
३</td></tr>
<tr><td>ओ औ</td><td>९</td><td>उ ऊ</td></tr>
<tr><td>ए ऐ</td><td>ऌ ॡ</td><td>ऋ ॠ</td></tr>
<tr><td>य र ल व
६</td><td colspan="3">प फ ब भ म
५</td><td>त थ द घ न
४</td></tr>
</table>

वायव्य पश्चिम नैर्ऋत्य

पूर्वादि क्रम से (१ से ८ अंक तक) ८ अंको मे "क" वर्ग आदि क्रम से लिखें मध्य में "अ" वर्ग (९) लिखें।

जिस स्थान कोष्ठक में भाग देश व साधक के मंत्र का प्रथम अक्षर या नाम आता हो (तीनो में किसी एक को इष्ट माने) उस कोष्ठक में साधक दीप स्थापित करें या उस स्थान पर बैठकर साधक मंत्र सिद्ध करें। जिस कोष्ठक में ग्रामाक्षर आवें व कूर्म का मुँह हुआ बगल के भाग दो हाथ पीछें का भाग पृष्ठ हुआ, अन्तिम भाग पुच्छ हुआ।

जैसे कि १. नं. में ग्रामाक्षर आया तो १. नं. में मुँह, ९. नं. पीठ, ५. नं. पुच्छ, ७,३ कुक्षी का भाग शेष ८,२,६,४ पैरों के भाग हुये। अगर २. नं. में ग्रामाक्षर या मंत्राक्षर है तो २ नं. शिर, ९ पृष्ठ, ६ पुच्छ, ४,८ कुक्षि तथा शेष १,३ हाथ, ७,५ पैर के भाग हुये।

यदि मध्य भाग ९ में ग्रामाक्षर आता है तो ९नं. शिर, ५ नं. पृष्ठ. १ नं. पुच्छ हुआ। ४ व ६ कुक्षिभाग, शेष ३,७ हाथ २,८ पैर के भाग हुये।

॥ कूर्मफलम् ॥

मुखस्थो लभते सिद्धिं करस्थः स्वल्पभोगभाक् ।
कुक्षिस्थित उदासीनः पादस्थो दुःखमाप्नुयात् ॥
पुच्छस्थः पीड्यते मंत्री बंधनोच्चाटनादिभिः ।
कूर्मचक्रमिदं प्रोक्ता मन्त्राणां सिद्धि साधनम् ॥

॥ मन्त्रजागृति संस्कार:॥

गौतमीय तन्त्र में मन्त्र के दस संस्कार बताये गये हैं

१. जनन २. जीवन ३. ताड़न ४. बोधन ५. अभिषेक ६. विमलीकरण ७. आप्यायन ८. तर्पण ९. दीपन १०. गुप्तिसंस्कार।

१. जनन -

जनन संस्कार के लिये मातृका यंत्र बनायें। यह यन्त्र स्वर्णादि पात्र में कुंकुम चन्दन या भस्म से अंकित करना चाहिये। शक्ति मन्त्र के संस्कार में कुंकम से, विष्णु मन्त्र में चन्दन से और शिव मन्त्र में भस्म से लिखें। इस मातृका यन्त्र से मन्त्र वर्णो का पर्याय क्रम से उद्धार करना जनन कहलाता है।

२. जीवन -

उद्धृत सभी मन्त्र वर्णो को पंक्तिक्रम से प्रवण **ॐ** द्वारा पुटित कर एक-एक वर्ण का सौ बार जप करना जीवन है। विश्वसार तन्त्र के अनुसार प्रत्येक मन्त्रवर्ण का सौ या दस बार जप करना चाहियें।

३. ताड़न -

मन्त्र के सभी वर्णो को अलग अलग लिखकर यं मन्त्र का उच्चारण करते हुये चंदन जल से प्रत्येक को सौ बार या दस बार ताड़ित करें यही ताड़न है।

४. बोधन -

मन्त्र की वर्ण संख्या के अनुसार करवीर कुसुमों से 'रं' मन्त्र का उच्चारण करते हुये उसे हनन करना बोधन कहलाता है।

५. अभिषेक -

सभी मन्त्र वर्णों को लिखकर वर्ण संख्यक रक्त करवीर पुष्पों द्वारा रं मन्त्र से एक एक बार सभी वर्णों को अभिमन्त्रित कर अश्वत्थ या पीपल के पत्ते द्वारा तन्त्र मन्त्रोक्त विधान से सभी मन्त्रवर्णो का सिंचन करें यही अभिषेक है।

६. विमलीकरण -

सुषुम्ना के मूल और मध्य भाग में देव मन्त्र का चिंतन कर ज्योर्तिमन्त्र '**ॐ हौं**' से मलत्रय को दग्ध करना चाहिये। यही विमलीकरण है।

७. आप्यायन -

मन्त्र के सभी वर्णों को कुशोदय या पुष्पोदक द्वारा **ज्योतिर्मन्त्र** से आप्यायित करने का नाम आप्यायन है।

८. तर्पण -

इसी ज्योतिर्मन्त्र द्वारा देय मन्त्र की वर्ण संख्यानुसार जल से तर्पण करना मन्त्र तर्पण कहलाता है। शक्तिमन्त्र में मधु से, विष्णुमन्त्र में कर्पूर मिश्रित जल से और शिव मन्त्र में घी दूध से तर्पण किया जाता है।

९. दीपन -

ॐ ह्रीं और श्रीं इन तीनों मन्त्रों द्वारा देय मन्त्र को पुटित कर १०८ बार जप करने से दीपन होता है।

१०. गुप्तिसंस्कार - अप्रकट रखने से गुप्ति संस्कार होता है।

मन्त्र के इन दस संस्कारों के करने के बाद मन्त्रग्रहण करने से अभीष्ट फल देवता है। उपर्युक्त मलत्रय ये हैं **१. आणव्य २. मायिक ३. कार्मण।**

प्रपंचसार में लिखा है कि स्त्री से जो मल उत्पन्न होता है वह मायिकमल, पुरुष से उत्पन्न मल को कार्मण और उभयविध मल को आणव्य कहते हैं।

॥ अथ भूतशुद्धि प्रयोगः॥

सर्वप्रथम भू शुद्धि करें। यथा -

तन्त्रों के रचियता भगवान शिव का स्मरण करें। शिव मन्त्र अथवा इष्ट मन्त्र से आचमन प्राणायाम का संकल्प करें।

विनियोगः - **ॐ नमो भगवते रुद्राय इति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः रुद्रो देवता विराट् छन्दः आचमने प्राणायामे विनियोगः।**

इष्ट मन्त्र से तीन बार आचमन कर, हस्तशुद्धि कर प्रणायाम करें। आसन पूजा भूमिपूजा करें।

विनियोगः - **ॐ भूरसीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः मातृका देवताः प्रस्तारपंक्ति छन्दः भू शुद्धौ विनियोगः।**

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्यभुवनस्वधर्त्री पृथिवीयच्छ पृथिवीन्दृ ठँ ह पृथिवीम्माहि ठ सीः।

शिखा बन्धन करें। गुरु नमस्कार कर स्मरण करें।

स्वदक्षिणे - **ॐ गुरुभ्यो नमः, सरस्वत्यै नमः, शङ्खनिधये नम।** स्ववामे - **गंगणेशाय नमः, दुं दुर्गायै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ पद्मनिधये नमः,** हृदये-**इष्टदेवताभ्यो नमः।**

भैरव को नमस्कार करें –

विनियोगः – **यो भूतानामित्यस्य कौण्डिन्य ऋषिः नारायणो देवता अनुष्टुप्छन्दः भैरव नमस्कारे विनियोगः।**

ॐ यो भूतानामधिपतिर्यस्मिल्लोका अधिश्रिताः। यऽदशे महतो महाँस्तेन गृह्णामित्त्वामहम्मयि गृह्णामि त्वामहम्॥ भैरवाय नमः।

॥ भूतशुद्धिः॥

भूतशुद्धि प्रयोग हेतु शरीर में छः स्थित चक्रों का तथा कुण्डली शक्ति एवं ब्रह्मरंध्र स्थित सहस्त्रदल का ज्ञान होना जरुरी है।

मूलाधार से आज्ञा चक्र कौन कौन से चक्र हैं, उनका क्या वर्ण है एवं कौन कौन सी मातृकायें किस किस दल में है इनका वर्णन अन्तर्मातृकान्यास में दिया गया है।

परब्रह्म की दिव्य चेतना शक्ति मूलाधारचक्र में सर्पिणी रूप में शिवलिङ्ग के साढे तीन आवृत्ति कर लिपटी हुई है। साधक उसको जागृत कर सुषुम्ना मार्ग से ले जाते हुये ब्रह्मरंध्र में परब्रह्म से मिलावें तथा '**ॐ हंसः सोहं**' इस मन्त्र को स्मरण करते हुये हृदयकमल से **जीवतत्व** को उठाकर ब्रह्मरंध्र में परब्रह्म से संयोजन कर जीव को ब्रह्ममय बनायें। **इस तरह जीव का शोधन हुआ जाने।**

मातृकोपसंहारः – शब्दब्रह्म के मातृकावर्णों की ब्रह्म में समष्टि करने से मातृका तत्त्व का शोधन होगा। मातृका के अन्तिम वर्ण को अपने पूर्व तत्व से संयोजन करते हुये **ॐ** तत्व तक संयोजन करें। इस तरह से समस्त मातृकावर्णो का **ॐ कार** में उपशमन होगा। यथा –

ॐ क्ष कारं हकारे उपसंहरामि। ॐ हकारं सकारे उपसंहरामि। ॐ सकारं षकारे उप०। ॐ षकारं शकारे उप०। ॐ शकारं वकारे उप०। ॐ वकारं लकारे उप०। ॐ लकारं रकारे उप०। ॐ रकारं यकारे उप०। ॐ यकारं मकारे उप०। ॐ मकारं भकारे उप०। ॐ भकारं बकारे उप०। ॐ बकारं फकारे उप०। ॐ फकारं पकारे उप०। ॐ पकारं नकारे उप०। ॐ नकारं धकारे उप०। ॐ धकारं दकारे उप०। ॐ दकारं थकारे उप०। ॐ थकारं तकारे उप०। ॐ तकारं णकारे उप०। ॐ णकारं ढकारे उप०। ॐ ढकारं डकारे उप०। ॐ डकारं ठकारे उप०। ॐ ठकारं टकारे उप०। ॐ टकारं ञकारे उप०। ॐ ञकारं झकारे उप०। ॐ झकारं जकारे उप०। ॐ जकारं

छकारे उप०। ॐ छकारं चकारे उप०। ॐ चकारं ङकारे उप०। ॐ ङकारं घकारे उप०। ॐ घकारं गकारे उप०। ॐ गकारं खकारे उप०। ॐ खकारं ककारे उप०। ॐ ककारं अःकारे उप०। ॐ अःकारं अंकारे उप०। ॐ अंकारं औकारे उप०। ॐ औकारं ओकारे उप०। ॐ ओकारं एकारे उप०। ॐ ऐकारं एकारे उप०। ॐ एकारं लृकारे उप०। ॐ लृकारं लृकारे उप०। ॐ लृकारं ॠकारे उप०। ॐ ॠकारं ऋकारे उप०। ॐ ऋकारं ऊकारे उप०। ॐ ऊकारं उकारे उप०। ॐ उकारं ईकारे उप०। ॐ ईकारं इकारे उप०। ॐ इकारं आकारे उप०। ॐ आकारं अकारे उप०। ॐ अकारं सहस्त्रदलाम्बुजाकारे ब्रह्मरन्ध्रे परमात्मनि लयं गत इति भावयेत्।

इसके बाद पञ्चतत्वों का शरीर में ध्यान कर उनका एक दूसरे में प्रविलाय करें।

विनियोगः - शरीरस्यात्मा ऋषिः, प्रकृतिश्छन्दः, परमात्मा देवता , शरीरभूतशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

[शरीराकारभूतानां भूतानां यद्विशोधनम्। अव्यक्त ब्रह्मसंपर्काद्भूत शुद्धिरियं मता॥ भूतशुद्धिं विना कर्म क्रियते यज्जपादिकम्। तत्सर्वं निष्फलं यस्मात्तस्मात्तां पूर्वमाचरेत्॥] ॐ पृथ्वीबीजमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीश्छन्दः पृथ्वी देवता पृथ्वीभूतशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

पादादिजानु पर्यन्तं पृथ्वीस्थानं चतुरस्त्रं पीतवर्णं सबिन्दुकं लँ बीज सहितं ध्यायेत्।

विनियोगः - ॐ वरुण बीजमन्त्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः वरुणो देवता वारुणि भूतशुद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

जानु से नाभिपर्यन्त धनुषाकार शुभ्रवर्ण बिन्दू वँ बीज का ध्यान करें।

विनियोगः - ॐ वह्नि बीजमन्त्रस्य कश्यप ऋषिः जगतिछन्दः जातवेदोऽग्निर्देवता आग्नेय भूतशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

नाभि से हृदय पर्यन्त रक्तवर्ण के त्रिकोण अग्निमण्डल का ध्यान कर रँ बीज का स्मरण करें।

विनियोगः - ॐ वायुबीजमन्त्रस्य किष्किन्ध ऋषिः बृहति छन्दः वायुर्देवता वायव्याख्य भूतशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

हृदय से भ्रूमध्य पर्यन्त धूम्रवर्ण के वर्तुलाकार वायुमण्डल का यँ बीज सहित

ध्यान करें।

विनियोग: ॐ आकाशबीजमन्त्रस्य रुद्र ऋषि: त्रिष्टुप् छन्द: परमात्मादेवता आकाशाख्य भूतशुद्धयर्थे जपे विनियोग:।

भ्रूमध्य से ललाट पर्यन्त आकाशमण्डल का हँ बीज युक्त ध्यान करें।

ततो वायु सम्यङ्ग निरुध्य पृथिवीं अप्सु लयं नयेत्।

इसके बाद पृथ्वितत्व की जल में लय की भावना करें।

मन्त्र - **ॐ लँ ह्रां ह्रूं फट् भुवं जले प्रविलापयामि।**

ततो जलं अग्नौ संहरेत - **ॐ वँ ह्रीं ह्र: फट् जलं शुचौ प्रविलापयामि।**

तत: अग्नि: वायौ संहरेत् - **ॐ रँ ह्रूँ ह्र: फट् अग्निं वायौ प्रविलापयामि।**

वायु आकाशे लयं नयेत् - **ॐ यँ ह्रै: ह्रुं ह्र: फट् वायुं आकाशे प्रविलापयामि।**

आकाशं अहंकारे संहरेत् **ॐ हँ ह्रौं ह्र: फट् आकाशं अहंकारे प्रविलापयामि।**

ॐ अहंकारं प्रकृतौ प्रविलापयामि। ॐ प्रकृतिं परमात्मनि प्रविलापयामि।

तत्पश्चात् शिर में कर्णिका व केसर युक्त अष्टदल की भावना करें, वहां चित्प्रकाशवान् चन्द्रमा के समान शीतल स्वरूप भगवान शिव का ध्यान करें।

(यदि भूतशुद्धि करने में असमर्थ हो तो **ॐ हौं** इस मन्त्र का १०८ बार जप कर अपने शरीर को शुद्ध करें)

इसके पश्चात् अपने शरीर में स्थित पापपुरुष का दहन कर स्वशरीर की प्राण प्रतिष्ठा कर मातृका न्यास करें।

तदनन्तर बाईं कोख में **पाप पुरुष का ध्यान** इस प्रकार करें -

वामकुक्षि स्थितं कृष्णामंगुष्ठ परिमाणांकं।
विप्रहत्या शिरोयुक्तं कनकस्तेय बाहुकम्॥
मदिरापान हृदयं गुरु तल्प कटीयुतम्।
तत्संयोगि पदद्वन्द्वमुपपातक रोमकम्॥
खड्ग चर्मधरं दुष्टमधोवक्त्रं च दु:सहम्।

इसके बाद यं बीज को १६ बार जपते हुये बायीं नासिका से वायु को भीतर खींचे और बाँयी कोख में ले जाकर वहाँ पर स्थित पाप पुरुष का उससे शोषण करें। इस समय दाहिनी नासिका को दाहिने अंगुष्ठ से बन्द किये रहें। इसके बाद रं अग्नि बीज को ६४ बार जपते हुये उस वायु को भीतर भरे रहें और यह समझें

कि उस वायु मे पाप पुरुष सहित सारी देह जल गई है। तदनन्तर **यं** वायु बीज को ३२ बार जपते हुये उस वायु को दाहिनी नासिका से बाहर निकाल दें और यह समझें कि जले हुये पाप पुरुष की देह की सारी राख उसके साथ बाहर निकल गई है। इस समय बायीं नासिका को अनामा और कनिष्ठा से बन्द किये रहें। **वं** सुधा बीज को सोलह बार जपते हुए ललाट में स्थित चन्द्रमा कि अमृत वृष्टि करावें और यह समझें कि उस अमृतवृष्टि से यह भस्मीभूत शरीर पुनः सावयव होकर पहले जैसे ही अस्तित्व में आ गया है। अत **लं** पृथ्वी बीज को १६ बार जपे और यह समझें कि वह देह पहले के समान सुदृढ़ हो गई है। इसके बाद **सोऽहं** इस बीज मन्त्र का उच्चारण कर परमात्मा से युक्त जीवात्मा और कुण्डलनी को उसी मार्ग से ले जाकर हृदयकमल में जीवात्मा को और कुण्ड नी को मूलाधारचक्र में स्थापित करें। इस प्रकार अपनी आत्मा को प्रपञ्चों से परे समझें।

इस प्रकार देह की शुद्धि कर लेलिहानीमुद्रा से अपने हृदय के दशदल के कमल में अपने इष्ट देवता की प्राणप्रतिष्ठा करें। पहले स्वयं की **मम प्राणा** इत्यादि बोलकर प्रतिष्ठा करें। फिर **अमुक देवताया इष्टदेवनाया प्राणा** इत्यादि मन्त्र पढ़ें। यथा -

॥ स्वप्राणप्रतिष्ठा ॥

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं सोहं हंसः मम प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं सोहं हंसः मम जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं सोहं हंसः मम सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं सोहं हंसः मम वाङ्मनो चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणपदानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इस मन्त्र को तीन बार पढ़े और यह समझें कि मेरा शरीर दिव्यप्राणमय हो गया है। पश्चात् **मम प्राणा** की जगह इष्टदेवता का अपने हृदय में आवाहन **अमुक देवताया प्राणा इह प्राणा** सहित उपरोक्त मन्त्र जपें एवं समझें कि देवता अपने साकार रूप में उसके हृदय में स्थित होगया है।

करशुद्धिन्यासः - इसके बाद न्यासक्रिया के लिये अंगुलियों की शुद्धि के लिए करशुद्धि न्यास करें। यथा -

ॐ अं नमः दक्ष करतले। ॐ आं नमः वाम करतले। ॐ इं नमः दक्ष करपृष्ठे। ॐ ईं नमः वाम करपृष्ठे। ॐ उं नमः दक्ष करतले। ॐ ऊं नमः वाम करतले। ॐ ऋं नमः दक्ष अंगुष्ठे। ॐ ॠं नमः दक्ष तर्जन्यां। ॐ लृं नमः दक्ष

मध्यमायाम्। ॐ लृं नमः दक्ष अनामायाम्। ॐ एं नमः दक्ष कनिष्ठायाम्। ॐ ऐं नमः वाम कनिष्ठायाम्। ॐ ओं नमः वामअनामायाम्। ॐ औं नमः वाममध्यमायाम्। ॐ अं नमः वामतर्जन्याम्। ॐ अः नमः वामअंगुष्ठे।

ॐ कं नमः वामतर्जनीप्रथम पर्वे। ॐ खं नमः वामतर्जनीमध्यपर्वे। ॐ गं नमः वामतर्जनीतृतीयपर्वे। ॐ घं नमः वामतर्जनीअग्रे। ॐ ङं नमः वाममध्यमाप्रथम पर्वे। ॐ चं नमः वाममध्यमा द्वितीयपर्वे। ॐ छं नमः वाममध्यमा तृतीयपर्वे। ॐ जं नमः वाम मध्यमाअग्रे। ॐ झँ नमः वामअनामा प्रथमपर्वे। ॐ ञं नमः वामअनामा द्वितीयपर्वे। ॐ टं नमः वामअनामा तृतीयपर्वे। ॐ ठं नमः वामअनामाअग्रे।

ॐ डं नमः वामकनिष्ठा प्रथमपर्वे। ॐ ढं नमः वामकनिष्ठा द्वितीयपर्वे। ॐ णं नमः वामकनिष्ठा तृतीयपर्वे। ॐ तं नमः वामकनिष्ठाअग्रे। ॐ थं नमः दक्षकनिष्ठा प्रथमपर्वे। ॐ दं नमः दक्षकनिष्ठा द्वितीयपर्वे। ॐ धं नमः दक्षकनिष्ठा तृतीयपर्वे। ॐ नं नमः दक्षकनिष्ठाअग्रे। ॐ पं नमः दक्षअनामा प्रथमपर्वे। ॐ फं नमः दक्षअनामा द्वितीयपर्वे। ॐ बं नमः दक्षअनामा तृतीयपर्वे। ॐ भं नमः दक्षअनामाअग्रे। ॐ मं नमः दक्षमध्यमाप्रथम पर्वे। ॐ यं नमः दक्षमध्यमा द्वितीयपर्वे। ॐ रं नमः दक्षमध्यमा तृतीयपर्वे। ॐ लं नमः दक्षमध्यमाअग्रे। ॐ वं नमः दक्षतर्जनीप्रथम पर्वे। ॐ शं नमः दक्षतर्जनीद्वितीयपर्वे। ॐ षं नमः दक्षतर्जनीतृतीयपर्वे। ॐ सं नमः दक्षतर्जनीअग्रे। ॐ हं नमः दक्ष अंगुष्ठे। ॐ लं नमः वाम अंगुष्ठे। ॐ क्षं नमः सर्वाङ्गे।

॥ अन्तर्मातृकान्यासः ॥

इसके बाद मातृकान्यास करें। पहले अन्तर्मातृकान्यास करें। यथा -

विनियोगः - **अस्य अन्तर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं अमुकदेवताया पूजाङ्गत्वेन (श्रीबालात्रिपुरापूजाङ्गत्वेन) देवभावाप्तये अन्तर्मातृकान्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि। इं गायत्री छन्दसे नमः ईं मुखे। उं सरस्वती देवतायै नमः ऊं हृदये। एं हलेभ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये। ओं स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः। अं अव्यक्तकीलकाय नमः

अः ना। श्री बालात्रिपुरा पूजांगत्वेन देवभावाप्तये अन्तर्मातृकान्या से विनियोगाय नमः अंजलौ।

प्राणायाम् अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः इन स्वरों से पूरक। कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं इन व्यंजनों से कुम्भक और यं रं लं वं शं षं सं हं इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करें।

करन्यासः अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः। उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः। एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्गन्यास अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट। एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुम्। ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ध्यानम्—

आधारे लिङ्गनाभौ प्रकटित हृदये तालुमूले ललाटे।
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश दशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के॥
वासान्ते वालमध्ये डफकठ सहिते कण्ठदेशे स्वराणाम्।
हक्षौ तत्त्वार्थचिन्त्यं सकल दलगतं वर्णरूपं नमामि॥
शारत्पूर्णेन्दु शुभ्रां सकललिपि-मयीं लोल रक्तत्रिनेत्राम्।
शुक्लालंकारभासां शशिमुकुट जटाभार हार प्रदीप्ताम्॥
विद्यास्त्रक् पूर्ण कुम्भान् वरमपि दधतीं शुद्ध पट्टाभिराढ्याम।
वागृदेवी पद्मपत्रां कुचभर नमितां चिन्तयेत् साधकेन्द्रः॥

यह अन्तर्मातृकान्यास मेरुदण्ड में स्थित छहों चक्रों में करें। यथा

॥न्यासः॥

कठे धूम्रवर्णे षोडशदले विशुद्धे - ॐ अं नमः। ॐ आं नमः। ॐ इं नमः। ॐ ईं नमः। ॐ उं नमः। ॐ ऊं नमः। ॐ ऋं नमः। ॐ ॠं नमः। ॐ लृं नमः। ॐ लॄं नमः। ॐ एं नमः। ॐ ऐं नमः। ॐ ओं नमः। ॐ औं नमः। ॐ अं नमः। ॐ अः नमः।

हृदये रक्तवर्णे द्वादशदले अनाहते **ॐ कं नमः। ॐ खं नमः। ॐ गं नमः। ॐ घं नमः। ॐ ङं नमः। ॐ चं नमः। ॐ छं नमः। ॐ जं नमः। ॐ झं नमः। ॐ ञं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ठं नमः।**

नाभौ मेघवर्णे दशदले मणिपूरे **ॐ डं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः। ॐ थं नमः। ॐ दं नमः। ॐ धं नमः। ॐ नं नमः। ॐ पं नमः। ॐ फं नमः।**

लिङ्गमूले विद्युद्वर्णे षट्दले स्वाधिष्ठाने - **ॐ बं नमः। ॐ भं नमः। ॐ मं नमः। ॐ यं नमः। ॐ रं नमः। ॐ लं नमः।**

सुवर्णवर्णे चतुर्दले मूलाधारे **ॐ वं नमः। ॐ शं नमः। ॐ षं नमः। ॐ सं नमः।**

भ्रूमध्ये श्वेतवर्णे द्विदले आज्ञाचक्रे - **ॐ हं नमः। ॐ क्षं नमः।**

॥ बहिर्मातृकान्यास ॥

इसके बाद बहिर्मातृकान्यास करें। पहले सृष्टिमातृका न्यास करें।

मतान्तरे सृष्टिन्यास स्त्री को एवं स्थितिन्यास पुरुष को करना चाहिये। बहिर्मातृकान्यास सृष्टि, स्थिति और संहार के क्रम से तीन प्रकार का होता है। यह किसी मत से यह ब्रह्मचारी सृष्टिन्यास से प्रारंभ करते हैं परन्तु गृहस्थ संहारक्रम से न्यास करते हैं। परन्तु सृष्टिन्यास सर्वत्र प्रचलित है।

विनियोगः - **अस्य बहिर्मातृकान्यासे सृष्टिमातृकान्यास मन्त्रस्य ब्रह्मऋषिः गायत्री छन्दः सृष्टिमातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं अमुकदेवताया (श्रीबालात्रिपुरा) पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये सृष्टिमातृकान्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - **ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। सृष्टिमातृका सरस्वती देवतायै नमः हृदि। हलेभ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये। स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयोः। अव्यक्तकीलकाय नमः नाभौ। श्रीबालात्रिपुरा पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये सृष्टिमातृकान्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।**

प्राणायाम - **अं.......अः इन स्वरों से पूरक। कं.......मं इन व्यंजनों से कुम्भक और यं......क्षं इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करें।**

करन्यासः - **अं कं......ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं....ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः। उं टं....णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः। एं तं....नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः।**

ओं पं....मं औं कनिष्ठाकाभ्यां नमः। अं यं....क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास - अं कं....ङं आं हृदयाय नमः। इं चं....ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं....णं ऊं शिखायै वषट्। एं तं....नं ऐं कवचाय हुम्। ओं पं....मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। अं यं....क्षं अः अस्त्राय फट्।

ध्यानम् –

अर्द्धोन्मुक्त शशांक कोटिसदृशीमापीन-तुङ्गातनीम्।
चन्द्रार्द्धाङ्कितशेखरां मधुदलैरालोलनेत्रत्रयाम् ॥
विभ्राणामनिशं वरं जपवटीं शूलं कपालं करैः।
आद्यां यौवनगर्वितां लिपितनुं वागीश्वरीमाश्रये ॥

॥न्यासः ॥

अं नमः ललाटे-मध्यमा+अनामिका
आं मुखवृत्ते-तर्जनी+मध्यमा+अनामिका
इं नमः दक्षनेत्रे- अंगुष्ठा (तर्जनी या)+अनामिका
ईं नमः वामनेत्रे- अंगुष्ठा (तर्जनी या)+अनामिका
उं नमः दक्षकर्णे- अंगुष्ठा (तर्जनी या)+अनामिका
ऊं नमः वामकर्णे- अंगुष्ठा (तर्जनी या)+अनामिका
ऋं नमः दक्षनासायाम्-अंगुष्ठा+कनिष्ठा
ॠं नमः वामनासायाम्-अंगुष्ठा+कनिष्ठा
लृं नमः दक्षगण्डे-तर्जनी+मध्यमा+अनामिका
लॄं नमः वामगण्डे-तर्जनी+मध्यमा+अनामिका
एं नमः ऊर्ध्वओष्ठे-मध्यमा
ऐं नमः अधोओष्ठे-मध्यमा
ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ-अनामिका
औं नमः अधो दन्तपंक्तौ-अनामिका
अं नमः शिरसि-मध्यमा
अः नमः मुखे-अनामिका (अनामिका+मध्यमा)
कं नमः दक्षबाहुमूले-मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
खं नमः दक्षकूर्परे--मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
गं नमः दक्षमणिबन्धे-मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
घं नमः दक्षकरतले-मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा

ङं नमः दक्षकराग्रे मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
चं नमः वामबाहुमूले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
छं नमः वामकूर्पर-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
जं नमः वाममणिबन्धे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
झं नमः वामकरतले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
ञं नमः वामकराग्रे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
टं नमः दक्षोरुमूले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
ठं नमः दक्षजानुनि-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
डं नमः दक्षगुल्फे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
ढं नमः दक्षपादतले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
णं नमः दक्षपादाग्रे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
तं नमः वामोरुमूले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
थं नमः वामजानुनि कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
दं नमः वामगुल्फे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
धं नमः वामपादतले-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
नं नमः वामपादाग्रे--कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
पं नमः दक्षपार्श्वे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
फं नमः वामपार्श्वे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
बं नमः पृष्ठे-कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
भं नमः नाभौ -अंगुष्ठ+कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
मं नमः जठरे-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
यं त्वगात्मने नमः हृदि-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
रं असृगात्मने नमः दक्षांशे-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
लं मांसात्मने नमः ककुदि-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
वं मेदात्मने नमः वामांशे-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्ष करांगुल्यन्तम्।
षं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम करांगुल्यन्तम्।
सं शुक्रात्मने नमः नाभ्यादि दक्ष पादान्तम्।
हं जीवात्मने नमः नाभ्यादि वाम पादान्तम्।
लं परमात्मने नमः हृदयादि कुक्षौ।
क्षं ज्ञानात्मने नमः हृदयादि मुखे।

अब स्थितिमातृकान्यास करें। यथा

॥ स्थितिमातृकान्यास ॥

विनियोगः - अस्य बहिर्मातृकान्यासे स्थितिमातृकान्यासमन्त्रस्य विष्णु ऋषिः गायत्रीछन्दः स्थितिमातृकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं अमुक देवताया (श्रीबालात्रिपुरा) पृजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये स्थितिमातृकान्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - विष्णवे ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। स्थितिमातृका सरस्वती देवतायै नमः हृदि। हलो बीजाय नमः गुह्ये। स्वराः शक्तये नमः पादयोः। अव्यक्तकीलकाय नमः नाभौ। श्रीबालात्रिपुरापृजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये स्थितिमातृकान्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ

प्राणायाम - अं.......अः इन स्वरों से पूरक। कं.......मं इन व्यंजनों से कुम्भक और यं......क्षं इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करें।

करन्यासः अं कं......ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं....ञं ईं तर्जनीभ्यां स्वाहाः। उं टं....णं ऊं मध्यमाभ्यां वषट्। एं तं....नं ऐं अनामिकाभ्यां हुं। ओं पं....मं औं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। अं यं....क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्गन्यास अं कं....ङं आं हृदयाय नमः। इं चं....ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं....णं ऊं शिखायै वषट्। एं तं....नं ऐं कवचाय हुं। ओं पं....मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। अं यं....क्षं अः अस्त्राय फट्।

ध्यानम् —

पक्षीन्द्रासनसंस्थितां भगवतीं श्यामां पिशंगावृताम् ।
शखं चक्रगदाब्जपाशसृणिभिर्मालां दधानां पराम् ॥
विद्याभीतिवरप्रदां त्रिनयनामापीनतुङ्गस्तनीम् ।
देवीं विष्णुमयीं समस्तजननीं ध्यायामि तामम्बिकाम् ॥

॥ न्यासः ॥

डं नमः दक्षगुल्फे। ढं नमः दक्षपादांगुलिमूले। णं नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे। तं नमः वामोरु मूले। थं नमः वामजानुनि। दं नमः वामगुल्फे। धं नमः वाम पादांगुलिमूले। नं नमः वाम पादांगुल्यग्रे। पं नमः दक्षपार्श्वे। फं नमः वामपार्श्वे। बं नमः पृष्ठे। भं नमः नाभौ। मं नमः जठरे। यं त्वगात्मने नमः हृदि। रं असृगात्मने नमः दक्षांशे। लं मांसात्मने नमः ककुदि। वं मेदात्मने नमः वामांशे।

शं अस्थ्यात्मने नमः हृदादि दक्षकरान्तम्। षं मज्जात्मने नमः हृदादि वाम करान्तम्। सं शुक्रात्मने नमः नाभ्यादि दक्षं पादान्तम्। हं जीवात्मने नमः नाभ्यादि वामपादान्तम्। लं परमात्मने नमः हृदादि कुक्षौ। क्षं ज्ञानात्मने नमः हृदादिमुखे। अं नमः ललाटे। आं नमः मुखवृत्ते। इं नमः दक्ष नेत्रे। ईं नमः वाम नेत्रे। उं नमः दक्ष कर्णे। ऊं नमः वामकर्णे। ऋं नमः दक्षनासायाम्। ॠं नमः वाम नासायाम्। लृं नमः दक्षगण्डे। लॄं नमः वामगण्डे। एं नमः ऊर्ध्व ओष्ठे। ऐं नमः अधो ओष्ठे। ओं नमः उर्ध्व दंतपंक्तौ। औं नमः अधो दंतपंक्तौ। अं नमः शिरसि। अः नमः मुखे। कं नमः दक्षबाहुमूले। खं नमः दक्ष कूर्परे। गं नमः दक्ष मणिबन्धे। घं नमः दक्ष करांगुलिमूले। ङंनमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे। चं नमः वाम बाहुमूले। छं नमः वाम कूर्परे। जं नमः वाम मणिबन्धे। झं नमः वाम करतले। ञं नमः वाम करांगुल्यग्रे। टं नमः दक्षोरुमूले। ठं नमः दक्ष जानुनि।

इसके बाद संहारमातृकान्यास करें। यथा-

॥ संहारमातृकान्यास ॥

विनियोग: अस्य बहिर्मातृकान्यासे संहारमातृकान्यासमन्त्रस्य रुद्र ऋषिः गायत्रीछन्दः संहारमातृकासरस्वती देवता, मं इत्यारभ्य कं इति अन्तं हलानि बीजानि, अः आरम्भ अं इति अंतं स्वराः शक्तयः क्षं इति आरभ्य यं इति पर्यन्तः व्यंजनानि कीलकं अमुकदेवताया (श्रीबालात्रिपुरा) पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये संहारमातृकान्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - रुद्र ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। संहार मातृकासरस्वती देवतायै नमः हृदि। मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं बीजाय नमः गुह्ये। अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं शक्तये नमः पादयो। क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं कीलकाय नमः नाभौ। श्रीबालात्रिपुरापूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये संहारमातृकान्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ

प्राणायाम अं.......अः इन स्वरों से पूरक। कं.......मं इन व्यंजनों से कुम्भक और यं......क्षं इन वर्णो से रेचक प्राणयाम करें।

षडङ्गन्यास - अः क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं अं अस्त्राय फट्। औं मं भं बं फं पं ओं नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं नं धं दं थं तं एं कवचाय हुं। ऊं णं ढं डं ठं टं उं शिखायै वषट्। ईं ञं झं जं छं चं इं शिरसे स्वाहा। आं ङं घं गं खं चं अं

हृदयाय नमः।

करन्यास - अः क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं अं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। औं मं भं बं फं पं ओं नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं नं धं दं थं तं एं अनामिकाभ्यां हुँ। ऊं णं ढं डं ठं टं उं मध्यमाभ्यां वषट्। ईं ञं झं जं छं चं इं तर्जनीभ्यां स्वाहा। आं ङं घं गं खं कं अं अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ध्यानम् --

धूम्रांगीं मुक्तकेशीं शशिमलिनमुखीं घोररूपां त्रिनेत्राम् ।
व्यस्तैर्हस्तैर्दधानां व्यजनकरधृतां दीप्तमग्निं वहाहाम् ।
हाहाकाराट्टहासामभयवरकरां ज्वालयन्तीं दिशाश्च ।
भक्तेभ्यः प्रेमबद्धां दिशतु प्रतिदिनं भारतीं तां नमामि ॥

॥ न्यास ॥

क्षं ज्ञानात्मने नमः ललाटे। लं परमात्मने नमः मुखवृत्ते। हं जीवात्मने नमः दक्ष नेत्रे। सं शुक्रात्मने नमः वामनेत्रे। षं मज्जात्मने नमः दक्षकर्णे। शं अस्थ्यात्मने नमः वामकर्णे। वं मेदात्मने नमः दक्ष नासायाम्। लं मांसात्मने नमः वाम नासायाम्। रं असृगात्मने नमः दक्ष गंडे। यं त्वगात्मने नमः वामगण्डे। मं नमः ऊर्ध्वओष्ठे। भं नमः अधा ओष्ठे। बं नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ। फं नमः अधो दंतपंक्तौ। पं नमः शिरसि। नं नमः मुखे। धं नमः दक्ष बाहुमूले। दं नमः दक्ष कूर्परे। थं नमः दक्ष मणिबन्धे। तं नमः दक्ष करांगुलिमूले। णं नमः दक्ष करांगुल्यग्रे। ढं नमः वामबाहुमूले। डं नमः वाम कूर्परे। ठं नमः वाममणिबन्धे। टं नमः वामकरांगुलिमूले। ञं नमः वामकरांगुल्यग्रे। झं नमः वामोरु मूले। जं नमः वामजानुनि। छं नमः दक्षगुल्फे। चं नमः दक्ष पादांगुलिमूले। ङं नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे। घं नमः वामोरुमूले। गं नमः वामजानुनि। खं नमः वाम गुल्फे। कं नमः वामपादांगुलिमूले। अः नमः वामपादांगुल्यग्रे। अं नमः दक्ष पार्श्वे। औं नमः वाम पार्श्वे। ओं नमः पृष्ठे। ऐं नमः नाभौ। एं नमः जठरे। लृं नमः हृदये। लृं नमः दक्षांशे। ॠं नमः ककुदि। ॠं नमः वामांशे। ऊं नमः हृदयादि दक्ष करान्तम्। उं नमः हृदयादि वाम करान्तम्। ईं नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम्। इं नमः नाभ्यादि वाम पादान्तम्। आं नमः हृदयादि कुक्षौ। अं नमः हृदयादि मुखे।

॥इति॥

॥ भूतलिपि प्रयोग:॥

मन्त्र जागृति हेतु वर्णात्मिका वागेश्वरी देवी का भूतलिपी सिद्धि हेतु प्रयोग करना चाहियें। शारदा तिलक में इसका विधान है **प्राणतोषणी ग्रन्थ व अन्य ग्रन्थों** में भी विधान है कहीं कहीं मतान्तर भिन्नता भी है।

भगवान शिव ने कहा है कि जो साधक योनिमुद्रा नहीं कर सकते उन्हें **भूतलिपि का प्रयोग** करना चाहियें। योनिमुद्रा से तात्पर्य रतिसाधना की अंतरंग पूजा से है।

पाँचह्रस्व **अ इ उ ऋ लृ यह प्रथम वर्ग है।**

संधिवर्ण - **ए ऐ ओ औ यह द्वितीय वर्ग है। य र ल व ह यह तीसरा वर्ग है। क....ङ । च....ञ। ट....ण। त....न। प....म। ये पाँच अन्य वर्ग है। नवां वर्ग श ष स का हुआ। इस तरह ४२ अक्षर की यह भूतलिपि है।**

ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, अश्वि, प्रजापति, इन्द्र, यम, वरुण एवं सोम इन नौ वर्गों के देवता है।

ऋष्यादिन्यास: **ॐ श्रीभूतलिपि मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषि: गायत्रीछन्द: श्रीवर्णेश्वरी देवता मन्त्रोर्जाग्रति हेतवे न्यासे जपे विनियोग:।**

क, च, ट, त, प वर्ग एवं श ष स इन छ: वर्गों से हृदयादि षडङ्गन्यास करें।

भूतलिपि वर्णाक्षरों की एक वृक्षरूप में कल्पना करें, परसंवित् जिसका महाबीज है। बिन्दुनाद जिसकी महाशिफा है एवं पृथ्वीरूपी अक्षरों की शाखाओं से सभी दिशायें आच्छादित है।

भूतलिपि वर्णाक्षरों को भोजपत्र या ताम्रादिपात्र पर लिखें। सभी वर्ण बिन्दु अनुस्वार युक्त हों यथा **कं खं गं घं....**। भूतलिपि की प्राणप्रतिष्ठा कर देवी का ध्यान करें

अङ्कोन्मुक्त शशाङ्क-कोटिसदृशीमापीन तुङ्गस्तनीम् ।
चन्द्रार्द्धाङ्कितमस्तकां मधुमदादालोल नेत्रत्रयाम् ।
बिभ्राणामनिशं वरं जपवटीं विद्यां कपालं करैराद्यां ।
योवनगर्वितां लिपितनुं वागीश्वरीमाश्रये ॥

नववर्गों से आचार्य मूलाधार, स्वाधिष्ठान, नाभि, हृदय, कण्ठ, बिन्दु, नाद, [illegible]न्त एवं शक्ति इन नवाधारों में न्यास करें। क, च, ट, त, प, इन पाँचों वर्गों के वर्णों में बाहुओं एवं पादों में न्यास करें।

अग्रमूल, उपमूलाग्र, और मध्य देश के क्रम से समाहित होकर जठर, में दोनों पार्श्वों में, नाभि में, पृष्ठ में न्यास करें।

र ल च इन तीनों वर्णों से गुह्य हृदय एवं भ्रूमध्य में न्यास करें। वर्णाक्षरों का सृष्टि स्थिति तथा संहार क्रम से यथा प्रयोगानुसार न्यास करेना चाहिये।

सृष्ट्यां सर्गावसानां स्यात् स्थितौ वह्निर्मरुत् प्रियः । वियद्भूमि क्रमान्न्यस्येद् बिन्दुसर्गावसानिकाम्। संहृतौ प्रतिलोमेन विन्यसेद् विन्दुभूषिताम्। सृष्ट्यामिति सर्गावसानिका भूतलिपिरितिशेषः। स्थितौ विन्दुसर्गावसानिकां तां क्रमान्न्यसेद् इत्यर्थः।

तत्रायं क्रमः - ऊंः ईंः ॠंः अंः लृंः ओंः औंः ऐंः एंः रंः यंः वंः हंः लंः। खंः कंः घंः गंः ङंः छंः चंः झंः जंः ञंः ठंः टः ढंः डंः णंः थंः तंः धंः दंः नंः फंः पंः भंः बंः मंः संः षंः शंः।

कश्चित् तु वह्नि वर्ग वर्णान् प्रथमं विन्यस्य पश्चान्मरुद् वर्णान् ततोजलान्तान् एतान् सविन्दून् ततो वियद्भूमि वर्णान् सविसर्गान् न्यस्येदित्याहस्म नौ वर्गों के प्रथमादि वर्ण व्योमादि नामों वाले होते हैं। यथा क आदि ५ वर्णों वाले में आकाश, वायु, अग्नि, जल और भूमि होते हैं। द्वितीयवर्ग ए ऐ ओ औ में भू तत्व नहीं है। नवम वर्ग श ष स में जल एवं पृथ्वी तत्व नहीं है।

॥ भूतलिपि यन्त्रपूजनम् ॥

बिन्दु, षट्कोण, अष्टदल, षोडशदल, बत्तीसदल एवं उसके बाहर चौसठदल का कमल बनायें उनके बाहर चारद्वार युक्त भूपूर (परिधि) बनायें। नववर्गो के मातृका वर्णो को आसन प्रदान करें। मूर्ति की कल्पना कर पूर्वोक्त ध्यान करें।

प्रथमावरणम् - (षट्कोणे) **कं....ङं हृदयाय नमः। चं....ञं शिरसे स्वाहा। टं....णं शिखायै वषट्। तं....नं कवचाय हुम्। पं....मं नेत्रत्रयाय वौषट। शं षं सं अस्त्राय फट्। भगवती वर्णेश्वरी अंबिका वाग्भवी, दुर्गा श्रीशक्ति स्वरूपा सभी लक्षणों से युक्त है ऐसा ध्यान करें।**

द्वितीयावरणम् - (अष्टदले) अष्टदल में चतुर्थी लगाकर ब्राह्मी आदि अष्टमातृकाओं का पूजन करें। यथा **ॐ ब्राह्मयै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ नारसिंह्यै नमः। ॐ ऐन्द्रयै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः।**

तृतीयावरणम् - (षोडशदले) **काली, विकराली, उमा, सरस्वती, श्री, दुर्गा, उषा, लक्ष्मी, श्रुति, स्मृति, धृति, श्रद्धा, मेधा, मति, क्रीन्ति और आर्या** इन सोहल शक्तियों का चतुर्थी से आवाहन प्रथमा से स्थापन करें। ये सभी खड्ग और खेटक धारण किये हुये श्याम आभा वाली हैं।

चतुर्थावरणम् (द्वित्रिंशद्दले) - **विद्या, ह्री, पुष्टि, प्रज्ञा, सिनीवाली, कूहू,**

रुद्रवीर्या प्रभा, नन्दा, योषा, ऋद्धिदा, शुभा, कालरात्रि, महारात्रि, भद्रकाली, कपर्दिनी, विकृति, दण्डी, मुण्डिनी, इन्दुखण्डा, शिखण्डिनी, निशुंभशुंभ मथनी, महिषासुरमर्दिनी, इन्द्राणी, रुद्राणी, शंकरार्धशरीरिणी, नारी, नारायणी, त्रिशूलनी, पालिनी, अंबिका एवं ह्लादिनी का पूजन करें।

ये सभी पिशाचमुण्ड एवं उरुभूषण युक्त हैं तथा हाथों में चक्र धारण किये हैं।

पंचमावरणम् - (चतुष्षष्टिदले) सभी ६४ शक्तियों का चतुर्थी से आवाहन, प्रथमा से स्थापन करें। सभी शक्तियाँ चाप व वाण धारण किये हुये है। उर्ध्वकेशी एवं तीखी दाढों वाली युद्धोन्मुखी है।

पिङ्गलाक्षी, विशालाक्षी, समृद्धि, वृद्धि, श्रद्धा, स्वाहा, स्वधा, माया, वसुन्धरा, संज्ञा, त्रिलोकधात्री, सावित्री, गायत्री, त्रिदशेश्वरी, सुरूपा, बहुरूपा, स्कन्दमाता, अनुच्युतप्रिया, विमला, अमला, अरुणी, आरुणी, प्रकृति, विकृति, सृष्टि, स्थिति, संहृति, संध्या, माता, सती, हंसी, मर्दिका, कुब्जिका, अपरा, देवमाता, भगवती, देवकी, कमलासना, त्रिमुखी, सप्तमुखी, अन्या, सुरासुरविमर्दिनी, लंबोष्ठा, उर्ध्वकेशी, बहुशीर्षा, वृकोदरी, रथरेखा, शशिरेखा, अपरा, गगनवेगा, पवनवेगा, भुवनमाला, मदनातुरी, अनङ्गामदना, अनङ्ग-मेखला, अनङ्गकुसुमा, विश्वरूपा, असुरभयंकरी, अक्षोभ्या, सत्यवादिनी, वज्ररूपा, शुचिव्रता, वरदा एवं वागीशा ये चौसठ शक्तियाँ है। इनका पूजन करें।

षष्ठावरणम् - (भूपूर में दशों दिशाओं में) - इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा एवं अनन्त का पूजन करें।

सप्तमावरणम् - (भूपूरे) - लोकपालों के आयुधों का पूजन करें। वज्र, शक्ति, दण्ड, खड्ग, पाश, अङ्कुश, गदा, त्रिशूल, पद्म, एवं चक्र का आवाहन पूजन करें।

इस तरह यन्त्रावरण पूजन कर भूतलिपि वर्णमाला का जप करें। दस हजार कमलपुष्पों के होम से राज्य लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। ढाक के पुष्पों के हवन से वाणी सिद्धि होवे कवित्व प्राप्त होवें। राई, नमक के होम से वनिता को भी वश कर सके।

भूतलिपि (वर्णमाला) के संपुट से अपने मूल मन्त्र को १०० बार जपे तो मन्त्र सिद्ध होवे।

भूतलिपि के पूजन से अन्य मन्त्रों की सिद्धि भी शीघ्र होती है।

॥ श्रीगुरु मण्डल पूजनम् ॥

तंत्र साधना में गुरुमंडल पूजन का विशेष महत्व है। श्रीनाथादि गुरुत्रयं श्लोक का ध्यान तो सभी करते है परन्तु पूजान्तर में कौन-कौनसे देवता है उनका ध्यान पूजन विशेष फलदायी होता है इसके २-३ प्रकारान्तर पूजन प्रयोग है। प्रस्तुत प्रयोग श्रीगुप्तावतार बाबा की लेखमाला के अन्तर्गत है।

॥ गुरुमण्डल यंत्र का पूजन विधानम् ॥

गुरु मंडल यंत्र बनाना हो तो मूल में बिन्दु, वृत्त, त्रिकोण षट्कोण, अष्टदल द्वादशदल बनायें। द्वादशदल के ऊपर षोडशदल पुनः अष्टदल पश्चात् अष्टकोण के बाद भूपूर बनायें। बिन्दुः विश्वव्यापिनी, महाचिच्छक्ति भगवती मालिनी। वृतः मंत्रराजः। त्रिकोणः गुरुत्रय। षटकोणः ऊपर के दो कोणो में गणपति, नीचे के तीनो कोणो में पीठत्रय और सबसे ऊपर शीर्षकोण में, भैरव ईशान। अष्टदलः पत्र के अग्रभाग में सिद्धि सहित दुर्गाम्बा आदि और दल के दोनों और सनकानन्दनाथादि सिद्धौघ। द्वादशदलः दिव्योघाः ११ और परमौघ पुरुषाः १-१२। षोडशदलः दसदूती, बटुकत्रय पदयुगं १६ दल। अष्टदलः वीरानष्ट भैरव। योगिनीः ६४। मण्डलं-चतुष्षष्टि योगिनी पश्चात् अन्तिम वृत्त में। नवकं अष्टकोण में ८ और अष्टकोण के ऊपर के कोण में नीचे एक। वीरावली पंचकः भूपूर के चार द्वारो में ४ और ईशान कोण में भगवान ईशान।

श्रीनाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं,
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ।
वीरानष्ट-चतुष्कषष्टि-नवकं वीरावली पञ्चकम्,
श्रीमन्मालिनि मंत्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

पाठान्तर भेद में कहीं-कहीं वीरावली सप्तकम् भी है।

१.श्रीनाथादि गुरुत्रयं

गुरु नाम	दिव्य दैवत	गुरु परम्परा	शक्ति
१. श्रीनाथ	महाविष्णु (कृष्ण)	स्वगुरु	ज्ञान(पोषिणि)
२. दुर्गनाथ	महादुर्गा	परमगुरु	इच्छा(जननी)
३. आदिनाथ	महाशिव(रुद्र)	परात्परा	क्रिया(लयात्मिका)

गुरु नाम	बीज,स्वर	गुण	क्रिया	लक्ष्य
१. श्रीनाथ	उ, ई	सत्त्व	धारणा	उपदेश
२. दुर्गनाथ	अ, ह,र	रज	गति	साधना

३. आदिनाथ म, म् तम काल सिद्धि

श्रीविश्वगुरु महाशताक्षरी मंत्र- ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं श्रीं, क्रीं क्रीं क्रीं, ऐं क्लीं सौः, हंसः सोऽहं, नमो भगवते जगन्नाथाय, आं आं आं, ईं ईं ई, सर्वकारणकारणाय, हं ग्लौं, ह्रीं ॐ ह्रों महामंत्रराज रूपाय, श्रीमहाभैरवी-चक्राधीश्वराय, हसक्षमलवरयूं, सहसक्षमलवर ई, क्षों क्षों क्षों, कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं, सकल ह्रीं, हसकरीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं, हंसः सोऽहं, ॐ महाज्वालामालिने त्रिगुणात्मकाय, परमगुरवे महापुरुषाय नमः ॥

२. गणपतिं

प्रत्येक साधक को प्रथम वन्द्यनीय। दर्शन शक्तिः गं बीजम् ॥ महागणपति मन्त्र से भी पूजन कर सकते हैं।

३. पीठ त्रयं

आधारत्रय में जालंधर, पूर्णगिरि एवं कामपीठ का बीज मंत्र ऐं से पूजन करें। मूलाधार-जालन्धरपीठमूलाकर्षण-अण्डाकर्षण। पत्राधार- पूर्णगिरिपीठ गत्याकर्षण-अण्वाकर्षण। कारणाधार - कामपीठ-बीजाकर्पण-स्थानाकर्षण स्वरूपा है।

४.भैरवं

ईशान भैरवः प्रधान है। ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें फट्। कालचक्र शक्ति है। अन्यत्र ग्रंथो में अष्टभैरवों का वर्णन है।

५ सिद्धौघं

तत्त्वशक्ति। अष्टसिद्धिस्वामिनि महाशक्तियाँ है। महादुर्गाम्बा ईशित्वसिद्धि सहिताय नमः। सुन्दर्यम्बा महिमासिद्धिसहिताय नमः। कालिकाम्बा अणिमासिद्धिसहिताय नमः। पञ्चवाणाम्बा लघिमासिद्धिसहिताय नमः। तारिण्यम्बा प्राप्तिसिद्धिसहिताय नमः। शुकचन्द्रिकाम्बा प्राकाम्यसिद्धिसहिताय नमः। विशालिन्यम्बा गरिमासिद्धिसहिताय नमः। स्वराम्बा वशित्व सिद्धिसहिताय नमः।

सनकानन्दनाथ, सनन्दनानन्दनाथ, सनातनानन्दनाथ, सनत्कुमारा-नन्दनाथ, सनत्सुजातानन्दनाथ, यामदग्न्यानन्दनाथ, व्यासानन्दनाथ, शुकानन्दनाथ, वशिष्ठानन्दनाथ, वामदेवानन्दनाथ, कौशिकानन्दनाथ, परापरानन्दनाथ आदि का नाम पूर्वक पूजन करें।

६. दिव्यौघं

ज्येष्ठानन्दनाथ, श्रेष्ठानन्दनाथ, बालानन्दनाथ, सद्योजातानन्दनाथ, वटुकानन्दनाथ। नन्द्यानन्दनाथ, अघोरानन्दनाथ, ईशानानन्दनाथ, वामदेवानन्दनाथ, तत्पुरुषानन्दनाथ।

परमौघाः महापुरुषाः- दत्तात्रेय महापुरुषानन्दनाथ, शिवानन्दनाथ, श्रीनाथानन्दनाथ, दुर्गनाथानन्दनाथ।

७. बटुकत्रयं

त्रिगुणात्मक शक्तियो के भैरव का पृजन करें।

मंत्र· **ह्रीं क्लीं श्रीं हुं फट्**। मूलाग्नि **तमोगुणीरूप काली (भैरव) स्कन्धवटुक**। गत्यग्नि **सत्त्वगुणीरूप भुवनेशी (भैरव)** विचित्र वटुक। तरलाग्नि **रजोगुणीरूप भैरवी** (भैरव) चित्र वटुक (आनन्द भैरव)

कुछ साधक भुवनेशीभैरव के स्थान पर पीताम्बरा वटुक का पृजन करते हैं।

८. पदयुगं

त्रिपुरसुन्दरी के ३ कूटो के स्वरूपो का वर्णन है। क ए ई ल ह्रीं। ॥१॥ **हसकहल ह्रीं** प्रकृतिपदः गति पदः, पुरुषपदः स्थिरपद अर्द्धनारीनटेश्वर ॥२॥ **सकल ह्रीं**- अम्बपद, गुरुपद।

कुछ साधक '**पदयुगं**' से मात्र प्रकृति पुरुष को ग्रहण करते है।

९. दूतीक्रमं

प्रपंचभय से मन को चेतानेवाली सदसद् विवेकबुद्धि। **अं आं ऐं क्लीं सौः ह्रीं श्रीं इं ई द्रां द्रीं क्लीं ब्लुं सः** मंत्र से १० देवीयों का पूजन करें। **श्रीयोन्यम्बा। चित्रयोन्यम्बा, महायोन्यम्बा, दिव्ययोन्यम्बा, विश्वयोन्यम्बा, शंखयोन्यम्बा, हस्तियोन्यम्बा, महाभूतियोन्यम्बा, कामयोन्यम्बा, पद्मयोन्यम्बा।**

१०. मण्डलं

१. ऐं ह्रीं श्रीं, रं रमा दशकलात्मने अग्निमण्डलाय श्रीवैश्वानर श्रीपादुकां पूजयामि। २. श्रीं ह्रीं ऐं, अं, नमो द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय श्रीआदित्य श्रीपादुकां पूजयामि। ३. ह्रीं क्लीं सौः मं, नमो षोडशकलात्मने सोममण्डलाय श्रीसोम श्रीपादुकां पूजयामि।

११.वीरानष्ट

कालचक्रशक्तिः। मंत्रो से ८ भैरवो का पूजन करें। **श्रीं ह्रीं फट् एं एं। १. असिताङ्गभैरव श्रीपादुकां पूजयामि। २. रुरुभैरव श्रीपादुकां पूजयामि। ३. चण्डभैरव श्रीपादुकां पूजयामि। ४. क्रोधभैरव श्रीपादुकां पूजयामि। ५. उन्मत्तभैरव श्रीपादुकां पूजयामि। ६. कपालभैरव श्रीपादुकां पूजयामि। ७. भीषणभैरव श्रीपादुकां पूजयामि। ८. संहारभैरव श्रीपादुकां पूजयामि।**

१२. चतुष्क–षष्टि

कालचक्र के अष्टवीरों में, प्रत्येक की अष्ट·अष्ट क्रिया शक्तियाँ ६४ योगनियाँ कहलाती है। **ह्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीं श्रीं** मंत्र से पृजन करें।

कुलेशी कुलनन्दा च वागीशी भैरवी तथा ।
उमा श्रीः शान्तया चण्डी धूम्रा काली करालिनी ॥
महालक्ष्मीश्च कङ्काली रुद्रकाली सरस्वती ।
वाग्-वादिनी च नकुली भद्रकाली शशिप्रभा ॥
प्रत्यङ्गिरा सिद्धलक्ष्मीरमृतेशी च चण्डिका ।
खेचरी भूचरी सिद्धा कामाक्षी हिंगुला बला ॥
जया च विजया चाप्यजिता नित्याऽपराजिता ।
विलासिनी तथा घोरा चित्रा मुग्धा घनेश्वरी ॥
सोमेश्वरी महाचण्डा विद्या हंसी विनायका ।
वेदगर्भा तथा भीमा उग्रा वैद्या च सद्मतिः ॥
उग्रेश्वरी चन्द्रगर्भा ज्योत्सना सत्या यशोवती ।
कुलिका कामिनि काम्या ज्ञानवत्यथ डाकिनी ॥
राकिनी लाकिनी चाथ काकिनी शाकिनीत्यपि ।
डाकिनीति / चतुष्षष्टी शक्तयः सिद्धिदायिकाः ॥

१३. नवकं

हठसिद्ध नवनाथो का पूजन करें। १. **मत्स्येन्द्रनाथ**, संक्षोभिणी मुद्रासिद्ध। २. **जालन्धरनाथ** विद्राविणी मुद्रासिद्ध। ३. **गोरक्षनाथ**, आकर्षिणी मुद्रासिद्ध। ४. **कौण्डिन्यनाथ**, उन्मादिनी मुद्रासिद्ध। ५. **भर्तृहरिनाथ** खेचरीमुद्रासिद्ध। ६. **देवनाथ**, वशीकरिणीमुद्रासिद्ध। ७. **सिद्धनाथ**, अंकुशामुद्रासिद्ध। ८. **दिव्यनाथ**, धेनुमुद्रासिद्ध। ९. **कलानाथ** योनिमुद्रासिद्ध।

१४. वीरावली-पंचकं

पंचदेवताओं के उनको बीज मंत्रो से पूजन करें यथा- १. लं, इन्द्र, भक्त। २. ह्रीं ईशान, अघोर। ३. हं, **ब्रह्मा** (चिच्छक्ति), शाम्भवी मुद्रासिद्ध। ४. हौं, रुद्र, योगी। ५. **क्लीं**, विष्णु ज्ञानी।

१५.श्रीमन्मालिनि-मंत्रराज

मालिनी मंत्र यह भगवती श्रीमालिनी परा विद्या अनेक कोटि ब्रह्माण्ड नायिका भगवती आद्या महाचिच्छक्ति का नामान्तर है। अर्थात् ॐ ह्रीं ॐ ह्रों सहित वर्णमाला के ५० वर्णाक्षर। मंत्रराज में यहाँ अघोर मंत्र लिखा है परन्तु अन्यत्र नृसिंह मंत्र का भी उल्लेख है। **मालिनी मंत्र**- ह्रीं ॐ ह्रों अं आं इं ईं......शं षं सं लं क्षं **पंचाशल्लिपि-वर्णाः। मंत्रराज अघोरमंत्रः।**

॥ सर्व यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रोत्कीलन स्तोत्रम् ॥

जिन मन्त्रों की उत्कीलन विधि ज्ञात नहीं हो उन मन्त्रों को इस स्तोत्र के पठन से उत्कीलित किया जा सकता है।

॥ पार्वत्युवाच ॥

देवेश परमानन्द भक्तानामभयं प्रद !
आगमाः निगमाश्चैव, वीजं वीजोदयस्तथा ॥
समुदायेन वीजानां, मन्त्रो मन्त्रस्य संहिता ।
ऋषिच्छन्दादिकं भेदो वैदिकं यामलादिकम् ॥
धर्मोऽधर्मस्तथा ज्ञानं विज्ञानं च विकल्पन ।
निर्विकल्प विभागेन तथा षट्कर्म सिद्धये ॥
भुक्ति-मुक्ति-प्रकारश्च सर्वं प्राप्तं प्रसादतः ।
कीलनं सर्वमन्त्राणां शंसयद् हृदये वचः ॥
इति श्रुत्वा शिवानाथः, पार्वत्यावचनं शुभं ।
उवाच परया प्रीत्या मन्त्रोत्कीलनकं शिवां ॥

॥ शिव उवाच ॥

वरानने! हि सर्वस्य व्यक्ताव्यक्तस्य व स्तुनः ।
साक्षी भूय त्वमेवासि जगतस्तु मनोस्तथा ॥
त्वया पृष्टं वरारोहे! तद् वक्ष्याम्युत्कीलनं ।
उद्दीपनं हि मन्त्रस्य सर्वस्योत्कीलनं भवेत् ॥
पुरा तव मया भद्रे! समाकर्षण वश्यजा ।
मन्त्राणां कीलिता सिद्धिः सर्वे ते सप्तकोटयः ॥
तवानुग्रह प्रीतस्त्वात् सिद्धिस्तेषां फलप्रदा ।
येनोपायेन भवति तं स्तोत्रं कथयाम्यहम् ॥
शृणु भद्रेऽत्र सततमावाभ्यामखिल जगत् ।
तस्य सिद्धिभवेत् तिष्ठे माया येषां प्रभावकम् ॥
अन्नं पानं हि सौभाग्यं दत्तं तुभ्यं मया शिवे!
सञ्जीवनं च मन्त्राणां तथा दत्तुं पुनर्ध्रुवम् ॥

यस्य स्मरण मात्रेण पाठेन जपतोऽपि वा ।
अकीला अखिला मन्त्राः सत्यं सत्यं न संशयः ॥

विनियोगः - ॐ अस्य सर्व यन्त्र-मन्त्र-तन्त्राणामुत्कीलन मन्त्र स्तोत्रस्य मूल प्रकृतिः ऋषिः, जगतीच्छन्दः, निरञ्जनो देवता, क्लीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ह्रः सौं कीलकं, सप्तकोटि मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र कीलकानां सञ्जीवन सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - ॐ मूल प्रकृति ऋषये नमः शिरसि। ॐ जगतीच्छन्दसे नमः मुखे। ॐ निरञ्जन देवतायै नमः हृदि। ॐ क्लीं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयो। ॐ ह्रः सौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। ॐ मंत्राणां सञ्जीवन सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग न्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रुं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
ॐ ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रः	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

ध्यानम् :-

ॐ ब्रह्मस्वरूपममलं च निरञ्जनं तं ज्योतिः प्रकाशमनिशं महतो महान्तम् ।
कारुण्यरूपमति बोधकरं प्रसन्नं दिव्यं स्मरामि सततं मनु जीवनाय ॥
एवं ध्यात्वा स्मरेन्नित्यं, तस्य सिद्धिस्तु सर्वदा ।
वाञ्छितं फलमाप्नोति, मन्त्र संजीवनं ध्रुवम् ॥

मन्त्र :- ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्व मन्त्र यन्त्र तन्त्रादीनामुत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा। (जपं कुर्यात्) ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं षट्पञ्चाक्षराणामुत्कीलय उत्कीलय स्वाहा। ॐ जूं सर्वमन्त्र यन्त्र तन्त्राणां सञ्जीवनं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं जूं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः, कं खं गं घं ङं, चं छं जं झं ञं, टं ठं डं ढं णं, तं थं दं धं नं, पं फं बं भं मं, यं रं लं वं, शं षं सं हं ळं क्षं। मात्राऽक्षराणां सर्व उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।

मंत्र के बाद ११ लिखा है अर्थात् उस बीज मंत्र की ११ बार आवृति करें।

ॐ सोऽहं हंसोऽहं ११, ॐ जूं सोहं हंसः ॐ ॐ ११, हं जूं हं सं गं ११, सोऽहं हंसो यं ११, लं ११, ॐ ११, यं ११, ॐ ह्रीं जृं सर्वमन्त्र यन्त्र तन्त्र स्तोत्र कवचादीनां सञ्जीवय सञ्जीवय कुरु कुरु स्वाहा। ॐ सोऽहं हंसः ॐ सञ्जीवनं स्वाहा। ॐ ह्रीं मन्त्राक्षराणामुत्कीलय, उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ॐ प्रणव रूपाय, अं आं परम रूपि णे। इं ईं शक्ति स्वरूपाय, उं ऊं तेजोमयाय च ॥ ऋं ॠं रंजितदीप्ताय, लृं लॄं स्थूल स्वरूपिणे । एं ऐं वाचां विलासाय, ओं औं अं अः शिवाय च ॥ कं खं कमल नेत्राय, गं घं गरुड़ गामिने । ङं, चं श्री चन्द्रभालाय, छं जं जयकराय च ॥ झं ञं टं ठं जयकर्त्रे, डं ढं णं तं पराय च । थं दं धं नं नमस्तस्मै, पं फं ब्रह्ममयाय च ॥ बं भं मं बलवीर्याय, यं रं लं यशसे नमः । वं शं षं बहुवादाय, सं हं ळं क्षं स्वरूपिणे ॥ दिशामादित्य रूपाय, तेजसे रूपधारिणे । अनन्ताय अनन्ताय नमस्तस्मै नमो नमः ॥ मातृकायाः प्रकाशायै तुभ्यं तस्यै नमो नमः। प्राणेशायै क्षीणदायै सं सञ्जीव नमो नमः ॥ निरञ्जनस्य देवस्य, नामकर्म विधानतः। त्वया ध्यानं च शक्त्या च तेन सञ्जायते जगत् ॥ स्तुतामहमचिरं ध्यात्वा, मायाया ध्वंस हेतवे। सन्तुष्टा भार्गवायाहं यशस्वी जायते हि सः ॥

ब्रह्माणं चेतयन्ती विविध सुर नरास्तर्पयन्ती प्रमोदाद् ।
ध्यानेनोद्दीपयन्ती निगम जप मनुं षट्पदं प्रेरयन्ती ॥
सर्वान् देवान् जयन्ती दितिसुत दमनी साऽप्यहङ्कारमूर्ति ।
स्तुभ्यं तस्मै च जाप्यं स्मर रचित मनुं मोचये शाप जालात् ॥
इदं श्रीत्रिपुरा स्तोत्रं पठेद् भक्त्या तु यो नरः ।
सर्वान् कामानवाप्नोति सर्व-शापाद् विमुच्यते ॥

॥ अथ श्रीगणेश तन्त्रम् ॥

सर्वत्र सर्वप्रथम पूजा एवं मांगलीक कार्यों में गणपति का स्मरण विघ्न नाश हेतु किया जाता है। काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, अभिमान इत्यादि अप्रकट शत्रु है जो व्यक्ति के यश व पराक्रम में बाधक है और अंततः विनाश की ओर ले जाते हैं इनके संतुलित व शमन होने पर व्यक्ति बल एवं बुद्धि के सहारे उत्तरोत्तर उन्नति करता रहता है। भगवान गजानन के असंख्य अवतार है, मुद्गल पुराण में आठ मुख्य अवतारों का वर्णन है। यथा-

१. वक्रतुण्ड २. एकदंत ३.महोदर ४. गजानन ५.लंबोदर ६.विकट ७.विघ्नराज ८. धूम्रवर्ण

''वक्रतुण्डावतार'' धनुर्धर एवं सिंहवाहन वाला है इन्होंने ''मत्सरासुर'' का संहार किया। ''एकदंतावतार'' मूषक वाहन वाला है और ''मदासुर'' का संहार किया। ''महोदरावतार'' मोहासुर का नाश करने हेतु, इनका वाहन मूषक है। ''गजाननावतार'' ''लोभासुर'' का मारक है और आपका प्रिय वाहन मूषक है। ''लंबोदरावतार'' में मूषक पर सवार होकर ''क्रोधासुर'' का नाश किया है। ''विकटावतार'' मयूर वाहन वाला है इन्होंने कामासुर का संहार किया। ''विघ्नराजावतार'' शेषनाग वाहन वाला है जिसने ममतासुर का वध किया। ''धूम्रवर्णावतार'' गणपति ने अभिमानासुर का वध किया तथा मूषक वाहन है। परब्रह्म स्वरूप गणेशजी की इन अवतारों में अलग अलग ब्रह्म संज्ञा है।

वक्रतुण्ड - देहब्रह्म। एकदन्त - देहिब्रह्म। महोदर- ज्ञानब्रह्म। गजानन - सांख्यब्रह्म। लंबोदर - शक्तिब्रह्म। विकटावतार - सौरब्रह्म। विघ्नराज - विष्णुब्रह्म। धूम्रवर्ण - शिवब्रह्म।

गणेश उपासना से ही विष्णु ने मधुकैटभ का वध किया। गणेश के वर से त्रिपुरासुर बली हुआ और गणेशजी की आराधना से ही शिव ने त्रिपुरासुर पर विजय प्राप्त की। भगवती ने भी गणेश वंदना करके महिषासुर का वध किया। गणेशजी ने ही जंभासुर का वधकर ब्रह्म, विष्णु, महेश की सहायता की। माता अदिति के यहां ''महोत्कट'' नाम से अवतीर्ण होकर नरान्तक, देवान्तक का वध कर काशी में ढुण्ढिराज कहलाये। सिन्दुरासुर ने जब पार्वती का हरण कर लिया तो ''मयूरेश गणपति'' ने अवतार लेकर संकट हरा तथा असुर का वध किया। ऐसी अनेकानेक लीलायें करने वाले श्रीगणेशजी को प्रथम स्मरण करना चाहिये।

श्रीगणेशजी के चार मुख्य वर्ण है। यथा

१. श्वेतवर्णगणेश २. पीतवर्णगणेश ३. सिन्दूरवर्णगणेश ४. नीलवर्णगणेश

सिन्दूर वर्ण गणेश सर्वत्र पूजे जाते है, नीलवर्ण **''उच्छिष्टगणपति''** स्वरूप तथा नैऋत्य आम्नाय से संबंधित है। श्वेतवर्ण शांति, पुष्टिकर्ता तथा पीतवर्ण वाले **''हरिद्रागणपति''** शत्रु सेना व विघ्न के स्तंभन (बांधने) हेतु आराध्य है।

एक समय जब भण्डासुर दैत्य (कामदेव की भस्मी से उत्पन्न दैत्य) जिसने नये लोकों की रचना की तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि सभी देवताओं को परास्त कर दिया तथा भगवती ललितात्रिपुरसुन्दरी से युद्ध के समय देवी एवं सेना को अपने मायातंत्र से संमोहित कर दिया तथा अग्नि ज्वाला के परकोटे से अपना सुरक्षा कवच बना लिया, उस समय भगवती के स्मरण करने पर हरिद्रा गणपति प्रकट हुये एवं उस यंत्र को दैत्य की सेना में फेंककर उसी पर यंत्र का प्रहार करते हुये दैत्य का वध कर दिया।

अतः गणेशोपासना के मुख्य पूजा-प्रयोग, स्तोत्रादि विशेष रूप से दिये जा रहे हैं।

॥ गणेशमातृका न्यासः ॥

गणेशमातृकान्यास करने से मंत्र शीघ्र जाग्रत होता है।

विनियोगः **ॐ अस्य श्रीगणेश मातृका मंत्रस्य गणक ऋषिः, निचृद गायत्री छन्दः, शक्ति विनायक देवता, सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

षडङ्गन्यासः **ॐ गां हृदयाय नमः, ॐ गीं शिरसे स्वाहा, ॐ गूं शिखायै वषट्, ॐ गैं कवचाय हुम्, ॐ गौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ गः अस्त्राय फट्।**

ध्यानम् –

गुणांकुश वराभीतिपाणिं रक्ताब्जहस्तया ।
प्रिययालिंगितं रक्तं त्रिनेत्रं गणपं भजे ॥

॥ न्यासः॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अं क्लीं श्रीं ह्रीं केशवकीर्तिभ्यां नमः, ललाटे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं आं क्लीं श्रीं ह्रीं नारायणकान्तिभ्यां नमः, मुखवृते। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं इं क्लीं श्रीं ह्रीं माधवतुष्टिभ्यां नमः, दक्ष नेत्रे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ईं क्लीं श्रीं ह्रीं गोविन्दपुष्टिभ्यां नमः, वामनेत्रे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं उं क्लीं श्रीं ह्रीं विष्णुधृतिभ्यां नमः, दक्षकर्णे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऊं क्लीं श्रीं ह्रीं मधुसूदनशान्तिभ्यां नमः

वामकर्णे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॠं क्लीं श्रीं ह्रीं त्रिविक्रमक्रियाभ्यां नमः, दक्षनासायाम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॠं क्लीं श्रीं ह्रीं वामनदयाभ्यां नमः, वामनासायाम् नमः।ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं लृं क्लीं श्रीं ह्रीं श्रीधरमेधाभ्यां नमः दक्षगण्डे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं लॄं क्लीं श्रीं ह्रीं हृषीकेशहर्षाभ्यां नमः, वामगण्डे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं पद्मनाभश्रद्धाभ्यां नमः ओष्ठे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं दामोदरलज्जाभ्यां नमः, अधरे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ओं क्लीं श्रीं ह्रीं वासुदेवलक्ष्मीभ्यां नमः, ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं औं क्लीं श्रीं ह्रीं संकर्षणसरस्वतीभ्यां नमः, अधोदन्तपंक्तौ। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अं क्लीं श्रीं ह्रीं प्रद्युम्नप्रीतिभ्यां नमः, मस्तके। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अः क्लीं श्रीं ह्रीं अनिरुद्धरतिभ्यां नमः, मुखे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कं क्लीं श्रीं ह्रीं चक्रीजयाभ्यां नमः, दक्षबाहुमूले। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं खं क्लीं श्रीं ह्रीं गदीदुर्गाभ्यां नमः, दक्षकूर्परे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं गं क्लीं श्रीं ह्रीं शार्ङ्गीप्रभाभ्यां नमः, दक्षमणिबन्धे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घं क्लीं श्रीं ह्रीं खड्गीसत्याभ्यां नमः, दक्षाङ्गुलिमूले। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ङं क्लीं श्रीं ह्रीं शंखीचण्डाभ्यां नमः, दक्षाङ्गुल्यग्रे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चं क्लीं श्रीं ह्रीं हलीवाणीभ्यां नमः, वामबाहुमूले। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं छं क्लीं श्रीं ह्रीं मुसलीविलासिनीभ्यां नमः, वामकूर्परे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं जं क्लीं श्रीं ह्रीं शूलीविजयाभ्यां नमः, वाममणिबन्धे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं झं क्लीं श्रीं ह्रीं पाशीविरजाभ्यां नमः, वामाङ्गुलिमूले।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ञं क्लीं श्रीं ह्रीं अंकुशीविश्वाभ्यां नमः, वामाङ्गुल्यग्रे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं टं क्लीं श्रीं ह्रीं मुकुन्दविनदाभ्यां नमः, दक्षपादमूले। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ठं क्लीं श्रीं ह्रीं नन्दजसुनदाभ्यां नमः, दक्षजानुनि। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं डं क्लीं श्रीं ह्रीं नन्दीसत्याभ्यां नमः, दक्षगुल्फे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ढं क्लीं श्रीं ह्रीं नरऋद्धिभ्यां नमः, दक्षपादाङ्गुलिमूले। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं णं क्लीं श्रीं ह्रीं नरकजित्समृद्धिभ्यां नमः, दक्षपादाङ्गुल्यग्रे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं तं क्लीं श्रीं ह्रीं हरशुद्धिभ्यां नमः, वामपादमूले। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं थं क्लीं श्रीं ह्रीं कृष्णबुद्धिभ्यां नमः, वामजानुनि। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दं क्लीं श्रीं ह्रीं सत्यमुक्तिभ्यां नमः, वामगुल्फे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं धं क्लीं श्रीं ह्रीं सात्वतमतिभ्यां नमः, वामपादाङ्गुलिमूले। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नं क्लीं श्रीं ह्रीं सौरिक्षमाभ्यां नमः, वामपादाङ्गुल्यग्रे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पं क्लीं श्रीं ह्रीं शूररमाभ्यां नमः, दक्षपार्श्वे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं फं क्लीं श्रीं ह्रीं जनार्दनोमाभ्यां नमः, वामपार्श्वे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं बं क्लीं श्रीं ह्रीं भूधरक्लेदिनीभ्यां नमः, पृष्ठे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भं क्लीं श्रीं ह्रीं विश्वमूर्तिक्लिन्नाभ्यां नमः, नाभौ। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मं क्लीं श्रीं ह्रीं वैकुण्ठवसुधाभ्यां नमः, उदरे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं यं क्लीं श्रीं ह्रीं त्वगात्मभ्यां पुरुषोत्तमवसुदाभ्यां नमः, हृदि। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं रं क्लीं श्रीं ह्रीं असृगात्मभ्यां बलीपराभ्यां नमः, दक्षांसे। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं लं क्लीं श्रीं ह्रीं मांसात्मभ्यां बालानुजपरायणाभ्यां नमः, कुकुदि। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वं क्लीं श्रीं ह्रीं मेदसात्मभ्यां बालसूक्ष्माभ्यां नमः, वामांसे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं शं क्लीं श्रीं ह्रीं अस्थ्यात्मभ्यां वृषघ्नसन्ध्याभ्यां नमः, हृदयादिदक्षकरान्तम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं षं क्लीं श्रीं ह्रीं मज्जात्मभ्यां वृषप्रज्ञाभ्यां नमः, हृदयादिवामकरान्तम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सं क्लीं श्रीं ह्रीं शुक्रात्मभ्यां हंसप्रभाभ्यां नमः, हृदयादिदक्षपादान्तम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं हं क्लीं श्रीं ह्रीं प्राणात्मभ्यां वराहनिशाभ्यां नमः, हृदयादिवामपादान्तम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ळं क्लीं श्रीं ह्रीं शक्त्यात्मभ्यां विमलमेघाभ्यां नमः, हृदयादिउदरान्तम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्षं क्लीं श्रीं ह्रीं क्रोधात्मभ्यां नृसिंहविद्युताभ्यां नमः, हृदयादिमुखपर्यन्तम्।

॥ वक्रतुण्डगणेश विधानम् ॥

यद्यपि गणपति का एकाक्षर बीज मंत्र "गं" है परन्तु अधिकतर प्रयोग में षडक्षर मंत्र आता है, अतः उसी का प्रयोग प्रथम दिया गया है।

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीवक्रतुण्डगणेश मंत्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, विघ्नेशो देवता, वं बीजं, यं शक्तिरात्मनोऽभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - ॐ भार्गव ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे, विघ्नेश देवता नमः हृदि, वं बीजाय नमः, गुह्ये यं शक्त्यै नमः नाभौ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः	हृदयादि षडङ्गन्यासः
ॐ वं नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः	ॐ वं नमः हृदयाय नमः
ॐ क्रं नमः तर्जनीभ्यां नमः	ॐ क्रं नमः शिरसे स्वाहा

ॐ तुं नमः मध्यमाभ्यां नमः ॐ तुं नमः शिखायै वषट्
ॐ डां नमः अनामिकाभ्यां नमः ॐ डां नमः कवचाय हुँ
ॐ यं नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ यं नमः नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ हुँ नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॐ हुँ नमः अस्त्राय फट्

ॐ वं नमः भ्रूमध्ये, ॐ क्रं नमः कंठे, ॐ तुं नमः हृदये, ॐ डां नमः नाभौ, ॐ यं नमः लिङ्गे, ॐ हुम् नमः पादयोः, ॐ वक्रतुण्डाय हुम् नमः सर्वाङ्गे।

ध्यानम् :–

उद्यद्दिनेश्वर रुचिं निजहस्तपद्मैः
पाशांङ्कुशाऽभयवरान् दधतं गजास्याम्।
रक्ताम्बरं सकलदुःखहरं गणेशं
ध्यायेत् प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम्॥

मंत्रः – **ॐ वक्रतुण्डाय हुम्।**

पुरश्चरण विधि :- षडाक्षर मंत्र का पुरश्चरण ६ लाख मंत्र जप का होता है।

१. ईख २. सत्तू ३. केला ४. चिपटान्न (चिउड़ा) ५. तिल ६. मोदक ७. नारिकेल ८. धान का लावा इन अष्ट द्रव्यों से गणेश को प्रसन्न करें।

घृतान्न आदि की आहुतियाँ देने से धन समृद्धि होती है। चिउड़ा अथवा नारियल अथवा मरिच से प्रतिदिन १००० आहुतियाँ देने से १ महिने में बड़ी संपत्ति का लाभ होवे। जीरा, सैंधानमक, तथा काली मिर्च से मिश्रित अष्टद्रव्यों (अतिसामान्य मात्रा में) से प्रतिदिन १०० आहुतियाँ देने से एक पक्ष में महाधनी होवे। मूल मंत्र से प्रतिदिन ४४४ बार तर्पण करने पर अपने अभीष्ट को प्राप्त करें।

॥ वक्रतुण्डगणेश यन्त्रम् ॥

यंत्रोद्धारम् :- वक्रतुण्ड गणेश यंत्र में मध्य में बिन्दु उसके ऊपर षट्कोण, उसके ऊपर अष्टदल तथा उसके बाहर चारों ओर भूपूर चार द्वार युक्त वक्रतुण्ड यंत्र होता है।

यन्त्र पूजनम् :- यंत्र के मध्य में एक एक क्रम को प्रति आवरण कहा गया है। स्वर्णादि निर्मित यंत्र व मूर्ति को ताम्रपत्र में भद्रमण्डल पर स्थापित करें। मूर्ति का घृत से अभ्यजन करें दुग्धधारा या जलधारा से अग्न्युत्तारण कर शुद्ध वस्त्र से पोंछन कर मंडल या यंत्र के मध्य में स्थापित कर आवरण पूजा की आज्ञा मांगे।

हाथ में अक्षत पुष्प लेकर प्रार्थना करें -

ॐ सच्चिन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ।
अनुज्ञां देहि गणप परिवारार्चनाय मे ॥

पुष्पाञ्जलिमादाय।

पीठशक्ति पूजनम् :- पूर्वादि क्रम से गणपति की पीठ शक्तियों का पूजन करें।
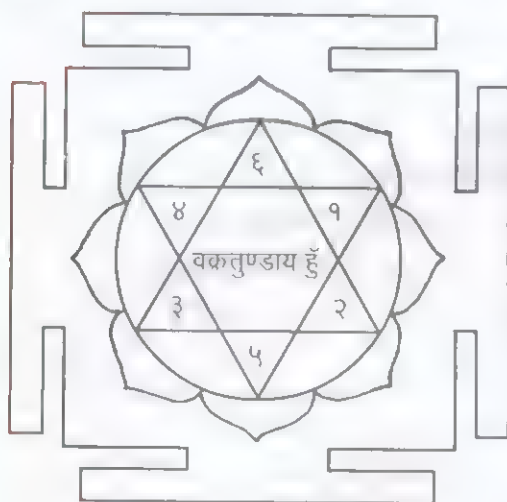
वक्रतुण्ड गणेश यंत्रम्

१. पूर्वे - **ॐ तीव्रायै नमः।** २. आग्नये - **ॐ चालिन्यै नमः।** ३. दक्षिणे - **ॐ नन्दायै नमः।** ४. नैर्ऋत्यां - **ॐ भोगदायै नमः।** ५. पश्चिमे - **ॐ कामरूपिण्यै नमः।** ६. वायवे - **ॐ उग्रायै नमः।** ७. उत्तरे - **ॐ तेजोवत्यै नमः।** ८. ऐशान्ये - **ॐ सत्यायै नमः।** ८. मध्ये - **ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः।**

प्रति नाम मंत्र से अक्षत पुष्प सहित गंधार्चन करें तथा तर्पण पात्र से तर्पण कर पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि कहें।

प्रथमावरणार्चनम् (षट्कोणमध्ये) : १. अग्निकोणे **ॐ वं नमः हृदयाय नमः हृदय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** २. नैर्ऋत्यकोणे **ॐ क्रं नमः शिरसे स्वाहा शिरसि श्रीपा० पृ० त० नमः।** ३. वायव्यकोणे **ॐ तुं नमः शिखायै वषट् शिखायां श्रीपा० पू० त० नमः।** ४. ऐशान्ये - **ॐ डां नमः कवचाय हुं कवच श्रीपा० पू० त० नमः।** ५. मध्याग्रे - **ॐ यं नमः नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्र श्रीपा० पू० त० नमः।** ६. दिक्षु **ॐ हुं नमः अस्त्राय फट् अस्त्र श्रीपा० पू० त० नमः।**

प्रत्येक आवरण पूजा के बाद पुष्पांजलि प्रदान कर अर्घ पात्र से जल छोड़कर कहें "**पूजिताः तर्पिताः सन्तु**"। यथा

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

द्वितीयावरणम् :- अष्टदल मध्ये पूर्वादिक्रमेण केसरेषु (पत्र के नीचे के भाग में जहां से सूक्ष्म तंतु निकलते है, उन्हें केसर कहते है।) । दाहिने हाथ से अंगुष्ठ तर्जनी संयोग से गंधार्चन सहित अक्षत पुष्प प्रति नामावलि छोड़ते हुये कहें '**श्रीपादुकां पूजयामि नमः**' तथा तर्पण पात्र से अनामिका अंगुष्ठ संयोग से जल छोडते हुये कहें '**तर्पयामि**'। यदि स्वयं अकेला व्यक्ति तर्पण करें तो वाम हाथ से कर सकता है। यह नियम व विधि तंत्र प्रयोगों में सभी आवरण पूजाओं में प्रायोगिक है। पत्र दल के अग्र भाग को कर्णिका कहते है।

पूर्वोदिक्रमेण - **१. ॐ विद्यायै नमः श्री पा० पृ० त०। २. ॐ विधात्रे नमः श्री पा० पू० त०। ३. ॐ भोगदायै नमः श्री पा० पृ० त०। ४. ॐ विघ्नघातिन्यै नमः श्री पा० पू० त०। ५. ॐ निधिप्रदायै नमः श्री पा० पू० त०। ६. ॐ पापहन्यै नमः श्री पा० पू० त०। ७. ॐ पुण्यायै नमः श्री पा० पू० त०। ८. ॐ शशिप्रभायै नमः श्री पा० पू० त०।**

पुष्पाञ्जलि - ॐ अभीष्ट सिद्धिं ....द्वितीयावरणार्चम्॥ **पूजिता तर्पिताः सन्तु** कहकर जल छोड़ें।

तृतीयावरणम् :- अष्टदलाग्रे कर्णिकायां पूर्वादिक्रमेण **१. ॐ वक्रतुण्डाय नमः श्री पा० पू० त०। २. ॐ एकदंष्ट्राय नमः श्री पा० पू० त०। ३. ॐ महोदराय नमः श्री पा० पू० त०। ४. ॐ हस्तिमुखाय नमः श्री पा० पू० त०। ५. ॐ लंबोदराय नमः श्री पा० पृ० त०। ६. ॐ विकटाय नमः श्री पा० पू० त०। ७. ॐ विघ्नराजाय नमः श्री पा० पू० त०। ८. ॐ धूम्रवर्णाय नमः श्री पा० पू० त०।**

पुष्पाञ्जलि - ॐ अभीष्ट सिद्धिं..........तृतीयावरणार्चम्॥ **पूजिता तर्पिताः सन्तु** कहकर जल छोड़ें।

चतुर्थावरणम् :- भूपूरे पूर्वादिक्रमेण सर्वत्र नामावलि पहिले ॐ तथा नामावलि के पश्चात् **नमः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि** कहें।

पूर्वे - **१. इन्द्राय नमः। २. अग्नेयां आग्नये नमः।** दक्षिणे **३. यमाय नमः।** नैऋत्ये **४. निऋतये नमः।** पश्चिमे - **५. वरुणाय नमः। ६. वायवे नमः।** उत्तरे **७. सोमाय नमः।** ईशान्ये **८. ईशानाय नमः।** इन्द्रईशानयोर्मध्ये **९.**

ब्रह्मणे नमः। वरुणनैर्ऋतिमध्ये - **१०. अनंताय नमः।**

पुष्पाञ्जलि - ॐ अभीष्ट सिद्धिं..........चतुर्थावरणम्॥ **पूजिता तर्पिताः सन्तु** कहकर जल छोड़ें।

पञ्चमावरणम् :- भूपूरे इन्द्रादि लोकपाल समीपे - **१. ॐ वज्राय नमः। २. ॐ शक्त्यै नमः। ३. ॐ दण्डाय नमः। ४. ॐ खड्गाय नमः। ५. ॐ पाशाय नमः। ६. ॐ अंकुशाय नमः। ७. ॐ गदायै नमः। ८. ॐ त्रिशूलाय नमः। ९. ॐ पद्माय नमः। १०. ॐ चक्राय नमः।**

पुष्पाञ्जलि - ॐ अभिष्ट सिद्धिं..........पञ्चमावरणार्चनम्॥ **पूजता तर्पिताः सन्तु** से जल छोड़ें।

॥ इति वक्रतुण्डगणेश यंत्रार्चनम्॥

॥ अथ द्वितीयप्रकारा : गणपति षड्क्षर मंत्रः ॥

मंत्रः– 'मेघोल्काय स्वाहा।'

इस मंत्र के ऋषिछंदादि देवता वक्रतुण्ड गणेशवत् ही है।

नोट मंत्रमहोदधी व मंत्रमहार्णव में मेधोल्काय छपा है जो अशुद्ध है शारदा तिलक के अनुसार मेघोल्काय शुद्ध है।

॥ अथ वक्रतुण्डस्य निधिप्रद एकत्रिंशदक्षर मंत्रः॥

यह मंत्र शत्रु द्वारा की गई दुष्कृत्या को नष्ट करता है, तथा निधिप्रद भी है।

मंत्रः-

रायस्पोषस्य दयिता निधिदो रत्न धातुमान्।
रक्षोहणो वलगहनो वक्रतुण्डाय हुँ॥

(मंत्रमहोदधि तथा मंत्रमहार्णव में '**दयिता**' के स्थान पर '**ददिता**' मुद्रित है, जो अन्य टीकाकारों के मत से अशुद्ध रूप में है।)

मंत्र के ऋषि छंद देवता व ध्यान मंत्र वक्रतुण्ड के ही है।

अथन्यास	**करन्यास**	**अङ्गन्यास**
ॐ रायस्पोषस्य	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ दयिता	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ निधिदो रत्नधातुमान्	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वौषट्
ॐ रक्षोहणो	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुँ

ॐ वल्गहनो	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ वक्रतुण्डाय हुम्	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

॥ अथ उच्छिष्ट गणपति प्रयोगः ॥

उच्छिष्ट गणपति का प्रयोग अत्यंत सरल है तथा इसकी साधना में अशुचि शुचि आदि बंधन नहीं हैं तथा मंत्र शीघ्रफल प्रद है। यह अक्षय भण्डार का देवता है। प्राचीन समय में यति जाति के साधक उच्छिष्ट गणपति या उच्छिष्ट चाण्डालिनी (मातङ्गी) की साधना व सिद्धि द्वारा थोड़े से भोजन प्रसाद से नगर व ग्राम का भण्डारा कर देते थे।

इसकी साधना करते समय मुँह उच्छिष्ट होना चाहिये। मुँह में गुड़, पताशा, सुपारी, लौंग, इलायची ताम्बूल आदि कोई एक पदार्थ होना चाहिये। पृथक पृथक कामना हेतु पृथक पृथक पदार्थ है। यथा - लौंग, इलायची वशीकरण हेतु। सुपारी फल प्राप्ति व वशीकरण हेतु। गुडौदक अन्नधनवृद्धि हेतु तथा सर्व सिद्धि हेतु ताम्बूल का प्रयोग करें।

॥ अथ नवाक्षर उच्छिष्टगणपति मंत्रः॥

मंत्र - **हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा।**

विनियोगः **ॐ अस्य श्रीउच्छिष्ट गणपति मन्त्रस्य कंकोल ऋषिः, विराट् छन्दः, उच्छिष्टगणपति देवता, सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - **ॐ अस्य श्री उच्छिष्ट गणपति मंत्रस्य कंकोल ऋषिः नमः शिरसि, विराट् छन्दसे नमः मुखे, उच्छिष्ट गणपति देवता नमः हृदये, सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

अगर साधक पर तामसी कृत्या प्रयोग किया हुआ है, तो उच्छिष्ट गणपति शत्रु की गन्दी क्रियाओं को नष्ट कर साधक की रक्षा करते हैं।

षडङ्गन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ हस्ति	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ पिशाचि	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ लिखे	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ स्वाहा	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ हस्ति पिशाचिलिखे	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्

ॐ हस्ति पिशाचिलिखे स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः अस्त्राय फट् स्वाहा

ध्यानम् :–

चतुर्भुजं रक्ततनुं त्रिनेत्रं पाशाङ्कुशौ मोदकपात्रदन्तौ ।
करैर्दधानं सरसीरुहस्थमुन्मत्त गणेश मीडे ॥

(क्वचिद् पाशाङ्कुशौ कल्पलतां स्वदन्तं करैवहन्तं कनकाद्रि कान्ति)

अथ दशाक्षर उच्छिष्ट गणेश मंत्र :- गं हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा।

अथ द्वादशाक्षर उच्छिष्ट गणेश मंत्र – ॐ ह्रीं गं हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा।

अथ त्रिंशदक्षर उच्छिष्टगणेश मंत्र – ॐ नमो हस्तिमुखाय लंबोदराय उच्छिष्ट महात्मने क्रां क्रीं ह्रीं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा।

विनियोगः अस्योच्छिष्ट गणपति मंत्रस्य गणक ऋषिः, गायत्री छन्दः, उच्छिष्ट गणपतिर्देवता, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ सप्तत्रिंदक्षर उच्छिष्टमहागणपति मंत्रः – ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्तिमुखाय लंबोदराय उच्छिष्ट महात्मने आँ क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीउच्छिष्ट महागणपति मंत्रस्य मतंग भगवान ऋषिः, गायत्री छन्दः, उच्छिष्टमहागणपतिर्देवता, गं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, ह्रीं कीलकं, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। (रुद्रयामले)

(मंत्रमहोदधि में गणक ऋषि कहा है)

ध्यानम्

शरान्धनुः पाशसृणी स्वहस्तै र्दधानमारक्त सरोरुहस्थम् ।
विवस्त्र पत्न्यां सुरतप्रवृत्तमुच्छिष्टमम्बासुतमाश्रयेऽहम् ॥

बायें हाथों में धनुष एवं पाश दाहिने हाथों में शर एवं अङ्कुश धारण किये हुये लालकमल पर आसीन अपनी विवस्त्र पत्नियों से रति में निरत पार्वती पुत्र उच्छिष्ट महागणपति का मैं आश्रय लेता हुँ ।

॥ अथ उच्छिष्टगणपति यंत्रार्चनम् ॥

मंडल मध्य में गणपति की नौ पीठ शक्तियों का पूजन करें।

पूर्वादिक्रमेण – ॐ तीव्रायै नमः। ॐ चालिन्यै नमः। ॐ नन्दायै नमः।

ॐ भोगदायै नमः। ॐ कामरूपिण्यै नमः। ॐ उग्रायै नमः। ॐ तेजोवत्यै नमः। ॐ सत्यायै नमः। मध्ये- ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः।
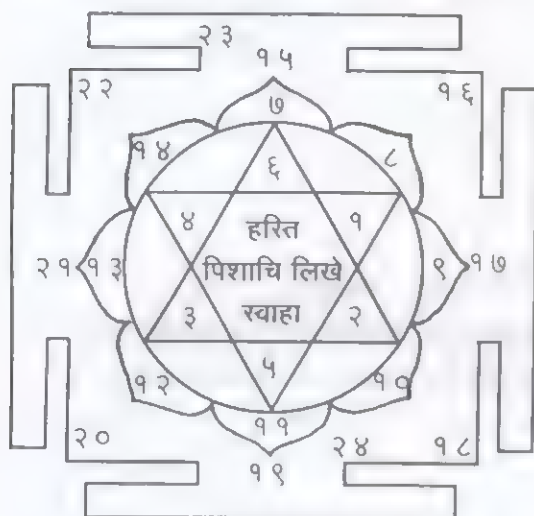
उच्छिष्टगणपति यन्त्र

गणपति की मूर्ति को घृत से अभ्यजन करके दुग्धधारा व जलधारा से अग्न्युत्तारण करके शुभ्र वस्त्र से पोंछन करके यंत्र के मध्य में रखें। देव की गंधार्चन से पूजा करके, यंत्र के प्रत्येक आवरण की पूजा करें। यंत्रस्थ देवताओं की नामावलि के साथ **"नमः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि"** कहते हुये अंगुष्ठ तर्जनी से गंधपुष्पाक्षत छोड़ें तथा अर्घपात्र के जल से तर्पण करे (स्वयं करे तो वाम हाथ से अनामिका व अंगुष्ठ के सहयोग से तर्पण करे) देव से आज्ञा ग्रहण करें।

सचिन्मयः परोदेव परामृतरस प्रिय । अनुज्ञां देहि गणेश परिवारार्चनाय मे ॥

प्रथमावरणम् :- षट्कोण मध्ये अग्निकोणे - **ॐ गं हस्ति हृदयाय नमः हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** ॥१॥ नैर्ऋत्ये - **ॐ गीं पिशाचि शिरसि स्वाहा, पिशाचि श्री पा०** ॥२॥ वायव्ये - **ॐ गूं लिखे शिखायै वषट्, शिखा श्री पा०** ॥३॥ ऐशान्ये - **ॐ गें स्वाहा कवचाय हुं कवच श्री पा०** ॥४॥ मध्याग्रे - **ॐ ग्रौं हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्रत्रयाय श्रीपा०** ॥५॥ दिक्षु **ॐ गः हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा। अस्त्राय फट् अस्त्र श्री पा०** ॥६॥

पुष्पाञ्जलि मादाय :-

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

पूजिताः तर्पिताः सन्तु कहकर विशेषार्घ से जल छोड़ें।

द्वितीयावरणम् :- अष्टदले पूर्वादि क्रमेण - **ॐ ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मी श्री**

पा० पू० त० नमः ॥१॥ ॐ महेश्वर्यै नमः, माहेश्वरी श्री पा० ॥२॥ ॐ कौमार्यै नमः, कौमारी श्री पा० पू० त० ॥३॥ ॐ वैष्णव्यै नमः, वैष्णवी श्री पा० ॥४॥ ॐ वाराह्यै नमः, वाराहीं श्री पा० ॥५॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणी श्रीपा० ॥६॥ ॐ चामुण्डायै नमः, चामुण्डा श्री पा० ॥७॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः, महालक्ष्मी श्री पा० पू० त० ॥८॥

पुष्पाञ्जलि - ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥ **पूजिता तर्पिताः सन्तु** से जल छोडें।

तृतीयावरणम् :- अष्टदल के बाहर कर्णिका समीपे भूपूर मध्ये। दशो दिशाओं में - पूर्वे - **ॐ वक्रतुण्डाय नमः, वक्रतुण्ड श्री०पा० त० नमः ॥१॥** आग्नेये ॐ **एकदंष्ट्राय नमः श्री० पा० ॥२॥** दक्षिणे - **लंबोदराय नमः श्री०पा० ॥३॥** नैर्ऋत्ये ॐ **विकटाय नमः श्रीपा० ॥४॥** पश्चिमे - ॐ **धूम्रवर्णाय नमः श्री०पा० ॥५॥** वायव्ये ॐ **विघ्नराजाय नमः श्री०पा० ॥६॥** उत्तरे - ॐ **गजाननाय नमः श्री०पा० ॥७॥** ऐशान्ये - ॐ **विनायकाय नमः श्री०पा० ॥८॥** प्राच्येशानयोर्मध्ये ॐ **गणपतये नमः श्री०पा० ॥९॥** पश्चिमनिर्ऋतियोर्मध्ये - **ॐ हस्तिदंताय नमः, हस्तिदंत श्री०पा० त० नमः ॥१०॥**

पुष्पाञ्जलि - ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥ पूजिताः तर्पिताः सन्तु से जल छोड़ें।

चतुर्थावरणम् :- भुपूरे दशदिक्षु - पूर्वे - **ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्र श्री पा० पू० त० नमः ॥१॥ ॐ अग्नये नमः श्री पा० ॥२॥ ॐ यमाय नमः श्री पा० ॥३॥ ॐ निर्ऋतये नमः श्री पा० ॥४॥ ॐ वरुणाय नमः श्री पा० ॥४॥ ॐ वायवे नमः श्री पा० ॥५॥ ॐ कुबेराय नमः श्री पा० ॥६॥** ऐशान्ये - **ॐ ईशानाय नम० श्री पा० ॥७॥** इन्द्रेईशानयोर्मध्ये - **ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मा श्री पा० ॥८॥** वरुणनैर्ऋतयोर्मध्ये - **ॐ अनंताय नमः अनन्त श्री पा०पू०त० ॥९॥**

पुष्पाञ्जलि - ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥ पूजिताः तर्पिताः सन्तु से जल छोड़ें।

पंचमावरणम् - भुपूरे इन्द्रादि लोकपाल समीपे **ॐ वज्राय नमः श्री पा० ॥१॥ ॐ शक्त्यै नमः श्री० पा० ॥२॥ ॐ दण्डाय नमः श्री पा० ॥३॥ ॐ खड्गाय नमः श्री० पा० ॥४॥ ॐ पाशाय नमः श्री० पा० ॥५॥ ॐ अंकुशाय नमः श्री० पा० ॥६॥ ॐ गदायै नमः श्री० पा० ॥७॥ ॐ त्रिशूलाय नमः श्री**

पा० ॥८॥ ॐ पद्माय नमः श्री पा० ॥९॥ ॐ चं चक्राय नमः, चक्र श्री पा० पू० त० नमः ॥१०॥

पुष्पाञ्जलि - ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥ 'पूजिताः तर्पिताः सन्तु' से जल छोड़ें।

॥ पुरश्चरण विधिः ॥

वीरभद्र, उड्डीश, तंत्र मंत्रमहार्णव, मंत्रमहोदधि के अनुसार रक्तचंदन (कपि) अथवा श्वेतार्द्रक (श्वेतआक) की प्रतिमा अपने अंगुष्ठ परिमाण की पुष्य नक्षत्र में बनायें। अन्य ग्रन्थों में प्रतिमा को हाथी के ऊपर बैठकर बनाने को कहा है। अभाव में पत्थर या मिट्टी से बने हाथी पर बैठकर बनायें। यह भी नहीं हो सके तो हाथी के चित्रासन पर बैठकर बनाये। मूर्ति को गल्ले में रखने से धन वृद्धि होवे।

शत्रुनाश के लिये निम्बकाष्ठ की प्रतिमा बनाये अथवा लवण की प्रतिमा बनायें। गुड़ से निर्मित प्रतिमा सौभाग्य को देने वाली तथा बाँबी की मिट्टी से बनी प्रतिमा अभीष्ट की सिद्धि करती है।

साधक एकलक्ष जप संख्या पूरी करके हवनादि कर्म करें। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी से शुक्लपक्ष की चतुर्दशी पर्यन्त गुड़ तथा पायसमात्र निवेदित करें। कृष्णपक्ष की अष्टमी से चतुर्दशी पर्यन्त नित्य साढ़े आठ हजार जप करे ८५० आहुतियाँ देकर तर्पणादि करें। इससे अभीष्ट सिद्धि को प्राप्त करें।

कुबेर ने इस मंत्र के प्रभाव से नौ निधियों को प्राप्त किया तथा सुग्रीव एवं विभीषण ने भी गणपति के वर से राज्य को प्राप्त किया। मधुमिश्रित लाजा होम करने से संसार को वशीभूत करने की शक्ति प्राप्त होवे, कन्या यदि करे तो शीघ्र वर को प्राप्त करें।

भोजन से पूर्व गणपति के निमित्त ग्रासान्न निकाल देवे तथा भोजन करते समय भी जप करने से मंत्र सिद्ध होता है।

शय्या पर सोये हुये उच्छिष्टावस्था में जप करने से शत्रु भी वश में हो जाता है। कटुतैल से मिश्रित राजीपुष्पों के हवन से शत्रुओं में विद्वेषण पैदा होवे। वाद विवाद में यह मंत्र विजय प्रदान करता है। नदी के जल से २७ बार अभिमंत्रित कर मुँह धोये तो वाक् सिद्धि होवें।

साधक लाल वस्त्र पहन कर लाल चंदन लगाकर ताम्बूल खाते हुये या नैवेद्य के मोदकादि को खाते हुये रक्तचंदन की माला पर जप करे, तुलसी की माला ग्रहण नहीं करें।

पूजित मूर्ति को मद्यपात्र में रखकर एकहाथ नीचे भूमि में गाड़ें और उस पर बैठकर अहर्निश जप करे तो एक सप्ताह के अन्दर सभी उपद्रव शांत होकर धन वैभव की प्राप्ति होवे। यह तामस प्रयोग है अतः नियम व्रत व सावधानी से करना चाहिये।

बलि विधानम् :- मधु, मांस माषान्न, पायसान्न अथवा फलादि से बलि प्रदान करें।

मंत्र:- **गं हं क्लौं ग्लौं उच्छिष्ट गणेशाय महायक्षायायं बलिः।**

॥ इति उच्छिष्ट गणपति यंत्रार्चनम् ॥

॥ अथ उच्छिष्टगणेश कवचम् ॥

॥ देव्युवाच ॥

देवदेव जगन्नाथ सृष्टि स्थिति लयात्मक ।
विना ध्यानं विना मंत्रं विना होमं विना जपम् ॥१॥
येन स्मरण मात्रेण लभ्यते चाशु चिंतितम् ।
तदेव श्रोतुमिच्छामि कथयस्व जगत्प्रभो ॥२॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

श्रृणु देवि! प्रवक्ष्यामि गुह्याद्गह्यतरं महत् ।
उच्छिष्ट गणनाथस्य कवचं सर्वसिद्धिदम् ॥३॥
अल्पायासैर्विना कष्टैर्जपमात्रेण सिद्धिदम् ।
एकांते निर्जनेऽरण्ये गह्वरे च रणांगणे ॥४॥
सिंधुतीरे च गंगायाः कूले वृक्षतले जले ।
सर्वदेवालये तीर्थे लब्ध्वा सम्यग् जपं चरेत् ॥५॥
स्नान शौचादिकं नास्ति नास्ति निर्बन्धनं प्रिये ।
दारिद्यांतकरं शीघ्रं सर्वतत्त्वं जनप्रिये ॥६॥
सहस्त्र शपथं कृत्वा यदि स्नेहोऽस्ति मां प्रति ।
निंदकाय कुशिष्याय खलाय कुटिलाय च ॥७॥
दुष्टाय परशिष्याय घातकाय शठाय च ।
वंचकाय वरघ्नाय ब्राह्मणीगमनाय च ॥८॥

अशक्ताय च क्रूराय गुरुदोहरताय च ।
न दातव्यं न दातव्यं न दातव्यं कदाचन ॥९॥
गुरुभक्ताय दातव्यं सच्छिष्याय विशेषतः ।
तेषां सिध्यंति शीघ्रण ह्यन्यथा न च सिध्यति ॥१०॥
गुरु संतुष्टि मात्रेण कलौ प्रत्यक्षसिद्धिदम् ।
देहोच्छिष्टै प्रजप्तव्यं तथोच्छिष्टैर्महामनुः ॥११॥
आकाशे च फलं प्राप्तं नान्यथा वचनं मम ।
एषा राजवती विद्या विना पुण्यं न लभ्यते ॥१२॥
अथ वक्ष्यामि देवेशि कवचं मंत्र पूर्वकम् ।
येन विज्ञात मात्रेण राजभोगफल प्रदम् ॥१३॥

विनियोगः - अस्य श्री उच्छिष्टगणेश कवचस्य गणक ऋषिः, गायत्री छन्दः, उच्छिष्ट गणेश देवता, गं बीजं, स्वाहा शक्तिं, क्लीं कीलकं सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

॥ कवचम् ॥

ऋषिर्मे गणकः पातु शिरसि च निरंतरम् ।
त्राहि मां देवि गायत्री छन्द ऋषिः सदा मुखे ॥१४॥
हृदये पातु मां नित्यमुच्छिष्टगणदेवता ।
गुह्ये रक्षतु तद्बीजं स्वाहा शक्तिश्च पादयोः ॥१५॥
काम कीलक सर्वाङ्गे विनियोगश्च सर्वदा ।
पार्श्वद्वयो सदा पातु स्वशक्तिं गणनायकः ॥१६॥
शिखायां पातु तद्बीजं भ्रूमध्ये तारबीजकम् ।
हस्तिवक्रश्च शिरसि लंबोदरो ललाटके ॥१७॥
उच्छिष्टो नेत्रयोः पातु कर्णौ पातु महात्मने ।
पाशांकुश महाबीजं नासिकायां च रक्षतु ॥१८॥
भूतीश्वरः परः पातु आस्यं जिह्वां स्वयं वपुः ।
तद्बीजं पातु मां नित्यं ग्रीवायां कंठदेशके ॥१९॥
गं बीजं च तथा रक्षेत्तथा त्वग्रे च पृष्ठके ।
सर्वकामश्च हृत् पातु पातु मां च करद्वये ॥२०॥
उच्छिष्टाय च हृदये वह्निबीजं तथोदरे ।

मायाबीजं च तथा कट्यां द्वा ऊरू सिद्धिदायकः ॥२१॥
जंघायां गणनाथश्च पादौ पातु विनायकः ।
शिरसः पादपर्यन्तमुच्छिष्टगण-नायकः ॥२२॥
आपादमस्तकान्तं च उमापुत्रश्च पातु माम् ।
दिशोऽष्टौ च तथाऽऽकाशे पाताले विदिशाऽष्टके ॥२३॥
अहर्निशं च मां पातु मदचंचल-लोचनः ।
जलेऽनले च संग्रामे दुष्टकारागृहे वने ॥२४॥
राजद्वारे घोरपथे पातु मां गणनायकः ।
इदं तु कवचं गुह्यं मम वक्त्राद्विनिर्गतम् ॥२५॥
त्रैलोक्ये सततं पातु द्विभुजश्च चतुर्भुजः ।
वाह्यमाभ्यंतरं पातु सिद्धि बुद्धिर्विनायकः ॥२६॥
सर्वसिद्धिप्रदं देवि कवचमृद्धि सिद्धिदम् ।
एकांते प्रजपेन्मंत्रं कवचं युक्ति संयुतम् ॥२७॥
इदं रहस्यं कवचमुच्छिष्ट-गणनायकम् ।
सर्ववर्मसु देवेशि इदं कवच नायकम् ॥२८॥
एतत् कवच माहात्म्यं वर्णितु नैव शक्यते ।
धर्मार्थ काम मोक्षं च नानाफलप्रदं नृणाम् ॥२९॥
शिवपुत्रः सदा पातु पातु मां सुरार्चितः ।
गजाननः सदापातु गणराजश्च पातुमाम् ॥३०॥
सदा शक्तिरतः पातु पातु मां काम विह्वलः ।
सर्वाभरणभूषाढ्यः पातु मां सिंदूरार्चितः ॥३१॥
पंचमोदकरः पातु पातु मां पार्वतीसुतः ।
पाशांकुशधरः पातु पातु मां च धनेश्वरः ॥३२॥
गदाधरः सदा पातु पातु मां काममोहितः ।
नग्ननारीरतः पातु पातु मां च गणेश्वरः ॥३३॥
अक्षयं वरदः पातु शक्ति युक्तः सदाऽवतु ।
भालचन्दः सदा पातु नानारत्न विभूषितः ॥३४॥
उच्छिष्टगणनाथश्च मदाघूर्णित लोचनः ।

नारीयोनिरसास्वादः पातु मां गजकर्णकः ॥३५॥
प्रसन्नवदनः पातु पातु मां भगवल्लभः ।
जटाधरः सदा पातु पातु मां च किरीटिकः ॥३६॥
पद्मासनस्थितः पातु रक्तवर्णश्चपातु माम् ।
नग्नसाम मदोन्मत्तः पातु मां गणदैवतः ॥३७॥
वामांगे सुन्दरीयुक्तः पातु मां मन्मथप्रभुः ।
क्षेत्रयः पिशितं पातु पातु मां श्रुतिपाठकः ॥३८॥
भूषाढ्यस्तु मां पातु नानाभोग समन्वितः ।
स्मिताननः सदापातु श्रीगणेश कुलान्वितः ॥३९॥
श्रीरक्तचन्दनमयः सुलक्षण गणेश्वरः ।
श्वेताऽर्क गणनाथश्च हरिद्रागणनायकः ॥४०॥
पारभद्र गणेशश्च पातु सप्तगणेश्वरः ।
प्रवालक गणाध्यक्षो गजदंतो गणेश्वरः ॥४१॥
हरबीज गणेशश्च भद्राक्षगणनायकः ।
दिव्यौषधि समुद्भूतो गणेशाश्चिंतित प्रदः ॥४२॥
लवणस्य गणाध्यक्षो मृत्तिकागणनायकः ।
तंडुलाक्षगणाध्यक्षो गोमयश्च गणेश्वरः ॥४३॥
स्फटिकागणाध्यक्षो रुद्राक्षगण दैवतः ।
नवरत्न गणेशश्च आदिदेवो गणेश्वरः ॥४४॥
पंचाननश्चतुर्वक्त्रः षडाननगणेश्वरः ।
मयूरवाहनः पातु पातु मां मूषकासनः ॥४५॥
पातु मां देवदेवेशः पातुमामृषिपूजितः ।
पातु मां सर्वदा देवो देव दानव पूजितः ॥४६॥
त्रैलोक्य पूजितो देवः पातु मां च विभुः प्रभुः ।
रंगस्थं च सदापातु सागरस्थं सदाऽवतु ॥४७॥
भूमिस्थं च सदा पातु पातालस्थं च पातुमाम् ।
अंतरिक्षे सदा पातु आकाशस्थं सदाऽवतु ॥४८॥
चतुष्पथे सदा पातु त्रिपथस्थं च पातु माम् ।

बिल्वस्थं च वनस्थं च पातु मां सर्वतस्तनुम् ॥४९॥
राजद्वारस्थितं पातु पातु मां शीघ्रसिद्धिदः ।
भवानी पूजितः पातु ब्रह्मविष्णु शिवार्चितः ॥५०॥

॥ फलश्रुति ॥

इदं तु कवचं देवि पठनात्सर्वसिद्धिदम् ।
उच्छिष्टगणनाथश्च समंत्रं कवचं परम् ॥५१॥
स्मरणाद्भूभुजत्वं च लभते सांगतां ध्रुवम् ।
वाचः सिद्धिकरं शीघ्रं परसैन्य विदारणम् ॥५२॥
प्रातर्मध्याह्न सायाह्ने दिवा रात्रौ पठेन्नरः ।
चतुर्थ्यां दिवसे रात्रौ पूजने मानदायकम् ॥५३॥
सर्व सौभाग्यदं शीघ्रं दारिद्यार्णवघातकम् ।
सुदार सुप्रजा सौख्यं सर्वसिद्धि करं नृणाम् ॥५४॥
जलेऽथवाऽनलेऽरण्ये सिंधुतीरे सरित्तटे ।
श्मशाने दूरदेशे च रणे पर्वतगह्वरे ॥५५॥
राजद्वारे भये घोरे निर्भयो जायते ध्रुवम् ।
सागरे च महाशीते दुर्भिक्षे दुष्टसंकटे ॥५६॥
भूत प्रेत पिशाचादि यक्षराक्षसजे भये ।
राक्षसी यक्षिणी क्रूरा शाकिनी डाकिनीगणाः ॥५७॥
राजमृत्युहरं देवि कवचं कामधेनुवत् ।
अनंत फलदं सति मोक्षं च पार्वति ॥५८॥
कवचेन विना मंत्रं यो जपेद्गणनायकम् ।
इह जन्मनि पापिष्ठो जन्मांते मूषको भवेत् ॥५९॥

इति परमरहस्यं देवदेवार्चनं च कवच परम दिव्यं पार्वती पुत्र रूपम्। पठति परमभोगैश्वर्य मोक्षप्रदं च लभति सकल सौख्यं शक्तिपुत्र प्रसादात् ॥६०॥

॥ इति रुद्रयामल तंत्रे उमामहेश्वर संवादे उच्छिष्टगणेश कवचं समाप्तं ॥

॥ अथ दशाक्षर क्षिप्रप्रसादगणपति (विघ्नराज) मंत्र ॥

मन्त्र – गं क्षिप्रप्रसादनाय नमः।

क्षिप्र प्रसाद गणपति का पूजन श्रीविद्या ललिता सुन्दरी उपासना में मुख्य है। इस मंत्र की उपासना से आलस्य, विघ्न, कलह दूर होकर धन प्राप्ति होवें।

विनियोगः - **ॐ अस्य श्री क्षिप्र प्रसाद गणपति मंत्रस्य गणक ऋषिः, विराट् छन्दः, क्षिप्र प्रसादनाय देवता, गं बीजं, आं शक्तिं, सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ध्यानम्

पाशांकुशौ कल्पलतां विषाणं दधत् स्वशुण्डाहित बीजपूरः ।
रक्तस्त्रिनेत्रस्तरुणेन्दु मौलिर्हारोज्ज्वलो हस्तिमुखोऽवताद् वः ॥

यंत्रार्चनम् :- यंत्र देवता वक्रतुण्ड गणेश के ही है,

क्षिप्रप्रसाद गणेश यंत्रम्

प्रथमावरणम् - षट्कोण में **हृदयशक्ति, शिरशक्ति, शिखाशक्ति, कवचशक्ति, नेत्रशक्ति एवं अस्त्रशक्ति का** पूजन करें।

द्वितीयावरणम् - अष्ट दलों में निम्न स्वरूपों का पूजन करे - **ॐ विघ्नाय नमः ॥१॥ ॐ विनायकाय नमः ॥२॥ ॐ शूराय नमः ॥३॥ ॐ वीराय नमः ॥४॥ ॐ वरदाय नमः ॥५॥ ॐ इभवक्त्राय नमः ॥६॥ ॐ एकरदाय नमः ॥७॥ ॐ लंबोदराय नमः ॥८॥**

तृतीय व चतुर्थावरण में इसके बाद भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों व आयुधों की पूर्व यंत्रार्चन विधि अनुसार करें।

॥ विरिगणपति ॥

इस देवता की वीरभाव से उपासना करे, पात्रासादन तथा शक्त्यार्चन कर पूजा करें तो अधिक लाभ रहे। **इस मंत्र के गणक ऋषि, गायत्री छन्द तथा विरिगणपति देवता है।**

मंत्र : **ॐ ह्रीं विरि विरिगणपति वर वरद सर्वलोकं मे वशमानय**

स्वाहा।

ध्यानम् :–

सिन्दूराभमिभाननं त्रिनयनं हस्तेषु पाशाङ्कुशौ
बिभ्राणं मधुमत् कपालमनिशं सार्धेन्दु मौलिं भजे ।
पुष्ट्याश्लिष्ट तनुं ध्वजाग्रकरया पद्मोलसद्धस्तया
तद् योन्याहित पाणिं मात्र वसुमत् पात्रोल्लसत् पुष्करम् ॥

यंत्रपूजा उच्छिष्टगणपति के समान करें।

॥ महागणपति मंत्रः॥

मंत्र - ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

यह मन्त्र संसार का वशीकरण कर सर्वसिद्धि देने वाला है।

विनियोगः - ॐ अस्य श्री महागणपति मंत्रस्य गणक ऋषिः (शिरसि), निवृद गायत्री छन्दः (मुखे), महागणपतये देवताये (हृदि), सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम् :–

हस्तीन्द्रा चूडमरुणच्छायं त्रिनेत्रं रसा
दाश्लिष्टं प्रियया स पद्मकरया साङ्कस्थया सङ्गतम् ।
बीजापूर गदा धनुस्त्रिशिख युक् चक्राब्ज पाशोत्पलम्
व्रीह्यग्र स्व विषाण रत्न कलशान् हस्तैर्वहन्तं भजे ॥

कराङ्गन्यासः - श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गां अंगुष्ठाभ्यां नमः। श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गूं मध्यमाभ्यां वषट्। श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गैं अनामिकाभ्यां हुं। श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गः करतल करपृष्ठाभ्यां फट्।

इसी तरह से हृदयादि न्यास करें।

अथ यंत्रार्चनम् - यंत्रार्चन विधियां पूर्व में दी जा चुकी है, उसी तरह से करें।

यंत्रोद्धार - त्रिकोण के बाहर षट्कोण उसके बाहर अष्टदल, उसके बाहर भूपूर की रचना करें।

` गणपति तर्पण एवं गुरुमण्डल पूजन पृष्ठ संख्या ७०६ पर दिया गया है।

महागणपति यंत्रम्

पश्चात् त्रिकोण के बाहर १. पूर्वे - **श्रियै सह श्रीपतये नमः**। २. दक्षिणे - **गौर्ये सह गौरीपतये नमः**। ३. पश्चिमे - **रत्यै सह रतिपतये नमः**। ४. उत्तरे - **ॐ मह्यै नमः ॐ वराहाय नमः**।५. देवताग्रे - **ॐ लक्ष्मी सहित गणनायकाय नमः**। गंधार्चन से पूजन तर्पण करें।

प्रत्येक आवरण के अंत में

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अमुकावरणार्चनम् ॥

से पुष्पाञ्जलि देवें तथा बाद में **पूजिताः तर्पिताः सन्तु** कहकर अर्घपात्र से जल छोड़ें।

द्वितीयावरणम् - (षटकोणे - अग्रे) पूर्वे **ॐ सिद्धि सहिता मोदाय नमः श्री पा०** ॥१॥ अग्निकोणे **ॐ समृद्धि सहित प्रमोदाय नमः श्री पा०** ॥२॥ नैर्ऋत्ये - **ॐ मदद्रवा सहित विघ्नाय नमः श्री पा०** ॥३॥ वायुकोणे - **ॐ द्राविणी सहित विघ्नकर्त्रे नमः श्री पा०** ॥४॥ ईशाने - **ॐ कांति सहिताय सुमुखाय नमः श्री पा०** ॥५॥ पश्चिमे **ॐ मदनावती सहिताय दुर्मुखाय नमः श्री पा०** ॥६॥ षट्कोण के दोनों ओर **ॐ वसुधा सहित शङ्खनिधये नमः, वसुमती सहित पद्मनिधये नमः**।

आवरण देवताओं के गंधार्चन तर्पण, '**ॐ अभीष्ट सिद्धिं .... द्वितीयावरणार्चनम्**' से पुष्पाञ्जलि देवें तथा बाद में **पूजिताः तर्पिताः सन्तु** कहकर अर्घपात्र से जल छोड़ें।

तृतीयावरणम् - (षट्कोण में अङ्गन्यास की तरह) "**ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गां हृदयाय नमः**"। **श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गीं शिरसे स्वाहा। श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गूं शिखायै वषट्। श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गैं कवचाय हुं। श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गौं नेत्रत्रयाय वौषट्। श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गः अस्त्राय फट्**।

शेष देवताओं का पूजन अष्टदल व भुपूर की उच्छिष्ट गणपति यंत्र पूजा विधि के समान षडङ्ग पूजा कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें '**ॐ अभीष्ट सिद्धिं ...... तृतीयावरणार्चनम्**'। बाद में **पूजिताः तर्पिताः सन्तु** कहकर अर्घपात्र से जल

छोडें।

चतुर्थावरणम् :- अष्टदल में ब्राह्मी आदि शक्तियों का पूजन उच्छिष्ट गणपति यंत्र की तरह से करें।

पंचम तथा षष्टम् आवरणपूजा में इन्द्रादि लोकपालों व आयुधों का पूजन तर्पण उच्छिष्ट गणपति यंत्रार्चन जैसे करें।

॥ श्री महागणपति वज्रपञ्जर–कवचम् ॥

महादेवि! गणेशस्य, वरदस्यः महात्मनः ।
कवचं ते प्रवक्ष्यामि, वज्र–पञ्जरकाभिधम् ॥

विनियोगः- **ॐ अस्य श्रीमहागणपति वज्रपञ्जर कवचस्य श्रीभैरव ऋषिः, गायत्र्यं छन्दः, श्रीमहागणपतिः देवता, गं बीजं, ह्रीं शक्तिः, कुरु कुरु कीलकं, वज्रविद्यादि-सिद्ध्यर्थे महागणपति-वज्रपञ्जर कवच पाठे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - **श्रीभैरव ऋषये नमः शिरसि, गायत्र्यं छन्दसे नमः मुखे, श्रीमहागणपतिः देवतायै नमः हृदि, गं बीजाय नमः गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः नाभौ, कुरु कुरु कीलकाय नमः पादयोः, वज्रविद्यादि सिद्ध्यर्थे महागणपति वज्रपञ्जर कवचपाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
गां	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
गीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
गूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
गैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुँ
गौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नैत्र-त्रयाय वौषट्
गः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

विघ्नेशं विश्ववन्द्यं सुविपुल–यशसं लोकरक्षा–प्रदक्षं,
साक्षात्सर्वापदासु प्रशमनसुमतिं पार्वतीप्राण–सूनुम् ।
प्रायः सर्वासुरेन्द्रैः ससुरमुनिगणैः साधकैः पुज्यमानं,
कारुण्येनान्तरायामित भयशमनं विघ्नराजं नमामि ॥

मानस पूजन कर **कवच पाठ** करें। यथा-

॥ कवच पाठ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं गं शिरः पातु, महागणपतिः प्रभुः ।
विनायको ललाटं मे, विघ्नराजो भ्रुवौ मम ॥१॥
पातु नेत्रे गणाध्यक्षो, नासिकां मे गजाननः ।
श्रुती मेऽवतु हेरम्बो, गण्डौ मे मोदकाशनः ॥२॥
द्वै-मातुरो मुखं पातु, चाधरौ पात्वरिन्दमः ।
दन्तान् ममैकदन्तोऽव्याद्, वक्रतुण्डोऽवताद् रसाम् ॥३॥
गाङ्गेयो मे गलं पातु, स्कन्धौ सिंहासनोऽवतु ।
विघ्नान्तको भुजौ पातु, हस्तौ मूषकवाहनः ॥४॥
ऊरू ममावतान्नित्यं, देवस्त्रिपुरघातनः ।
हृदयं मे कुमारोऽव्याज्जयन्तः पार्श्वयुग्मकम् ॥५॥
प्रद्युम्नो मेऽवतात् पृष्ठं, नाभिं शंकरनंदनः ।
कटिं नन्दिगणः पातु, शिश्नं वीरेश्वरोऽवतु ॥६॥
मेढ्रे मेऽवतु सौभाग्यो, भृङ्गिरीटी च गुह्यकम् ।
विराटकोऽवतादूरू, जानू मे पुष्पदन्तकः ॥७॥
जङ्घे मम विकर्तोऽव्याद्, गुल्फावन्त्य-गणोऽवतु ।
पादौ चित्तगणः पातु, पादाधो लोहितोऽवतु ॥८॥
पादपृष्ठं सुन्दरोऽव्याद्, नूपुराढ्यो वपुर्मम ।
विचारो जठरं पातु, भूतानि चोग्ररूपकः ॥९॥
शिरसः पादपर्यन्तं, वपुः सुप्तगणोऽवतु ।
पादादि-मूर्ध-पर्यन्तं, वपुः पातु विनर्तकः ॥१०॥
विस्मारितं तु यत् स्थानं, गणेशस्तत् सदाऽवतु ।
पूर्वे मां ह्रीं करालोऽव्यादाग्नेये विकरालकः ॥११॥
दक्षिणे पातु संहारो, नैर्ऋते रुरुभैरवः ।
पश्चिमे मां महाकालो, वायौ कालाग्निभैरवः ॥१२॥
उत्तरे मां सितास्योऽव्यादैशान्यामसितात्मकः ।
प्रभाते शतपत्रोऽव्यात्, सहस्रारस्तु मध्यमे ॥१३॥
दन्तमाला दिनान्तेऽव्यान्निशि पात्रं सदाऽवतु ।

कलशो मां निशीथेऽव्यान्निशान्ते परशुस्तथा ॥
सर्वत्र सर्वदा पातु शङ्ख-युग्मं च मद्-वपुः ॥१४॥
ॐ ॐ राजकुले हौं हौं रणभये ह्रीं ह्रीं कुद्यूतेऽवतात्,
श्रीं श्रीं शत्रुगृहे शशौं जलभये क्लीं क्लीं वनान्तेऽवतु ।
ग्लौं ग्लूं ग्लैं ग्लं गुं सत्त्वभीतिषु महाव्याध्यार्तिषु ग्लौं गं गौं,
नित्यं यक्ष-पिशाच-भूत-फणिषु ग्लौं गं गणेशोऽवतु ॥१५॥

॥ फलश्रुति ॥

इतीदं कवचं गुह्यं, सर्वतंत्रेषु गोपितम् ।
वज्रपञ्जर-नामानं, गणेशस्य महात्मनः ॥१॥
अङ्गभूतं मनुमयं, सर्वाचारैक-साधनम् ।
विनानेन न सिद्धिः स्यात् पूजनस्य जपस्य च ॥२॥
तस्मात् तु कवचं पुण्यं, पठेद्वा धारयेत् सदा ।
तस्य सिद्धिर्महादेवी! करस्था पारलौकिकी ॥३॥
यं यं कामयते कामं, तं तं प्राप्नोति पाठतः ।
अर्धरात्रे पठेन्नित्यं, सर्वाभीष्टफलं लभेत् ॥४॥
इति गुह्यं सुकवचं, महागणपतेः प्रियम् ।
सर्वसिद्धिमयंदिव्यं, गोपयेत् परमेश्वरि ॥५॥

॥ श्रीरुद्रयामले तन्त्रे महागणपति कवचं संपूर्णम् ॥

॥ हेरम्ब गणपति॥

हेरम्ब गणपति की उपासना से विघ्न दूर होकर आत्मबल व धन की वृद्धि होवे।

चतुरक्षर मंत्र - ॐ गूं नमः।

प्रधान मंत्र :- ॐ नमो हेरम्ब मदमोहित मम सङ्कटान् निवारय निवारय स्वाहा।

विनियोगः - अस्य श्री हेरम्ब गणपति मंत्रस्य गणक ऋषिः, गायत्री छन्दः, हेरम्ब गणपति देवता, गकारो बीजं, बिन्दुः शक्तिं, चतुर्वर्ग सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

विनियोग: अस्य श्री हेरम्ब गणपति मंत्रस्य गणक ऋषिः, गायत्री छन्दः, हेरम्ब गणपति देवता, गकारो बीजं, बिन्दुः शक्तिं, चतुर्वर्ग सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

गां, गीं, गूं, गैं, गौं गः से षडङ्गन्यास करें।

ध्यानम् :–

मुक्ता कांचन नीलकुन्द घुसृणच्छायैस्त्रिनेत्रान्वितै
र्नागास्यैर्हरि वाहनं शशिधरं हेरम्बमर्कप्रभम् ।
दृप्तं दानमभीति मोदक रदान् टंकंशिरोऽक्षात्मिकाम्
मालां मुद्गरमंकुशं त्रिशिखकं दोर्भिर्दधानं भजे ॥

यंत्रार्चन क्षिप्र प्रसादनाय गणपति की तरह करें।

॥ लक्ष्मी–विनायक ॥

विनियोग ॐ अस्य श्रीलक्ष्मीविनायक मंत्रस्य अंतर्यामी ऋषिः (शिरसि) गायत्री छन्दः (मुखे) लक्ष्मीविनायक देवता (हृदये) श्रीं बीजम् (गुह्ये) स्वाहा शक्तिं (पादयोः) ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः (सर्वाङ्गे)।

मंत्र: ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

न्यासः	करन्याय	अङ्गन्यास
ॐ श्रां गां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ श्रीं गीं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा
ॐ श्रृं गूं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्
ॐ श्रैं गैं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ
ॐ श्रौं गौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ श्रः गः	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्

ध्यानम् :–

दन्ताभये चक्रवरौ दधानं कराग्रगं स्वर्णघटं त्रिनेत्रम् ।
धृताब्जयालिङ्गितमाब्धि पुत्र्या-लक्ष्मी गणेशं कनकाभमीडे ॥

(मन्त्रमहोदधि में चक्रदरौ अशुद्ध रूप में मुद्रित है, मंत्रमहार्णव व मंत्रकोष के

अनुसार शुद्ध चक्रवर्ती है।)

इस देवता के साथ लक्ष्मी का पूजन करने से श्रेष्ठफल मिलता है।
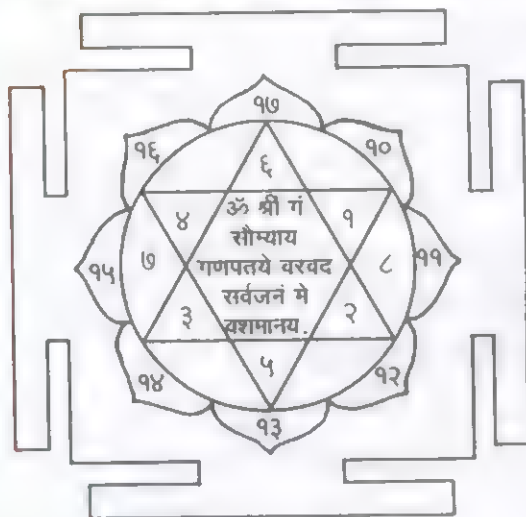
लक्ष्मी–विनायक यन्त्र

अथयंत्रार्चनम् :- आवरण पूजा विधि वक्रतुण्ड व उच्छिष्ट गणेश यंत्र की तरह के समान है। षट्कोण व अष्टदल पूजा में कुछ भेद है। यथा -

पीठ पूजन हेतु **'तीव्रा, चालिनी आदि'** नौ पीठ शक्तियों का पूजन करें।

प्रथमावरणम् - षट्कोण में पूजा करें - अग्निकोणे - **ॐ श्रां गां हृदयाय नमः** ॥१॥ नैर्ऋत्ये - **ॐ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा** ॥२॥ **ॐ श्रूं गूं शिखायै वषट्** ॥३॥ **ॐ श्रैं गैं कवचाय हुं** ॥४॥ **ॐ श्रौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट्** ॥५॥ **ॐ श्रः गः अस्त्राय फट्** ॥६॥

पुष्पाञ्जलि - ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥ **पूजिताः तर्पिताः सन्तु** से जल छोड़ें।

द्वितीयावरणम् :- देव के दक्षिण पार्श्व में - **ॐ शङ्खनिधये नमः शङ्खनिधि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः**। देव के वामपार्श्व में - **ॐ पद्म निधये नमः पद्मनिधि श्री पा० पू० त० नम॥**

अष्टदल मध्ये (पूर्वादि क्रमेण) **ॐ बलायै नमः बला श्री पा० पू० त० नमः** ॥१॥ **ॐ विमलायै नमः श्री पा० पू० त० नमः** ॥२॥ **ॐ कमलायै नमः श्री पा० पू० त० नमः** ॥३॥ **ॐ वनमालिकायै नमः श्री पा० पू० त० नमः** ॥४॥ **ॐ विभीषिकायै नमः श्री पा० पू० त० नमः** ॥५॥ **ॐ मालिकायै नमः श्री पा० पू० त० नमः** ॥६॥ **ॐ शांकर्यै नमः शांकरी श्री पा० पू० त० नमः** ॥७॥ **ॐ वसुबालिकायै नमः वसुबालिका श्री पा० पू० त० नमः** ॥८॥

पुष्पाञ्जलि - ॐ अभीष्ट... द्वितीयावरणार्चनम्॥ **पूजिताः तर्पिताः सन्तु** से

जल छोड़ें।

तृतीयावरणम् एवं चतुर्थावरणम् - भुपूर में इन्द्रादि दशलोकपालों व उनके आयुधों का पूजन तर्पण करें। विधि वक्रतुण्ड व उच्छिष्ट गणेश यंत्र के अनुसार है।

पुरश्चरण प्रयोग :- हृदय पर्यन्त जल में खड़े होकर सूर्य मण्डल में लक्ष्मी विनायक का ध्यान कर ३ लाख जप करे तो धन वृद्धि होवें। बिल्ववृक्ष के मूल भाग में बैठकर इतने ही जप करे तो धन वृद्धि होवें। अशोक की लकड़ी से प्रज्ज्वलित अग्नि में घृताक्त चावलों के होम से सारा विश्व वशीभूत होवें। खादिर की लकड़ी से प्रज्वलित अग्नि में अर्क समिधा के होम से राजा वश में होवें, पायस होम से महालक्ष्मी प्रसन्न होवें।

॥ इति लक्ष्मी-विनायक प्रयोगः ॥

॥ अथ त्रैलोक्यमोहन गणेश विधानम् ॥

इस मन्त्र की उपासना से विवाह दोष विघ्न दूर होवें। वर प्राप्ति एवं धन प्राप्ति होवे।

मंत्र : **वक्रतुण्डैकदंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपते वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहः।**

विनियोगः - **अस्य श्रीत्रैलोक्यमोहन कर गणेश मंत्रस्य गणक ऋषिः, गायत्री छन्दः, त्रैलोक्य मोहनकरो गणेशो देवता, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः गणक ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छंद से नमः मुखे। त्रैलोक्यमोहनकरो गणेश देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

मंत्रन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ वक्रतुण्डैकदंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ गं गणपते	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा
ॐ वरवरद	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्
ॐ सर्वजनम्	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ
ॐ मे वशमानय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ स्वाहा	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यानम् :–

गदाबीजपूरे धनुः शूल चक्रे सरोजत्पले पाशधान्यग्र दंतान ।
करै सन्दधानं स्वशुण्डाग्र राजन् मणी कुंभमङ्काधिरूढं स्वपत्न्या ॥१॥
सरोजन्मना भूषणाम्भरेणो ज्वलद्धस्त तन्व्या समालिङ्गताङ्गम् ।
करीन्द्राननं चन्द्रचूडं त्रिनेत्रं जगन्मोहनं रक्तकान्तिं भजेत्तम् ॥२॥

यंत्रार्चनम् – षट्कोण उसके बाहर अष्टदल तथा उसके बाहर भुपूर युक्त गणेश यंत्र होता है। मूर्ति का घृत से अभ्यजन करे दुग्धधारा या जलधारा से अग्न्युत्तारण करके मंडल मध्य में रखें, गंधार्चन करें।

पीठपूजा :- तीव्रा चालिनी आदि नौ शक्ति का पूजन करें।

देव से अर्चन की आज्ञा प्राप्त करें –

ॐ सचिन्मयः परेश त्वं परामृतरस प्रिय ।
अनुज्ञां देहि गणप परिवारार्चनाय मे ॥

प्रथमावरणम् :- षट्कोण मध्ये केसरेषु अग्निकोणे **ॐ वक्रतुण्डैक दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं हृदयाय नमः ॥१॥** नैर्ऋते – **ॐ गणपते शिरसे स्वाहा ॥२॥** वायवे – **ॐ वरवरद शिखायै वषट् ॥३॥** ऐशान्यें – **ॐ सर्वजनं कवचाय हुं ॥४॥** मध्याग्रे – **ॐ मे वशमानय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥** दिक्षु – **ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ॥६॥** (गंधार्चन करें)
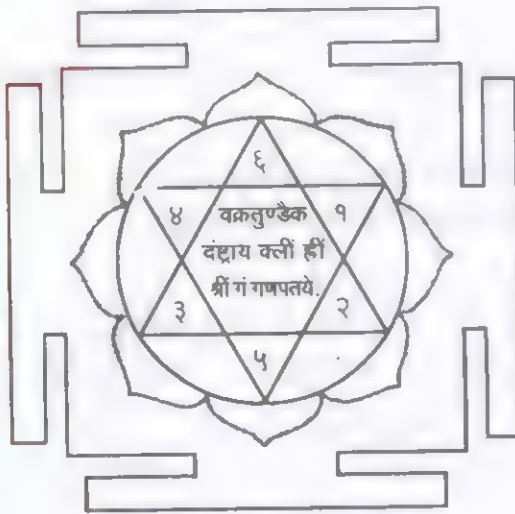
त्रैलोक्यमोहन गणपति यन्त्रम्

पुष्पाञ्जलि – 'ॐ अभीष्ट सिद्धिं .... प्रथमावरणार्चनम्'। बाद में पूजिताः तर्पिताः सन्तु कहकर अर्घपात्र से जल छोड़ें।

द्वितीयावरणम् :- अष्टदले पूर्वादिक्रमेण – **ॐ वामाये नमः, वामा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः, ज्येष्ठ श्री पा० ॥२॥ ॐ रौद्रायै नमः, रौद्री श्री पा० ॥३॥ ॐ काल्यै नमः, काली श्री**

पा० ॥४॥ ॐ कलपदादिकायै नमः, कलपदादिका श्री पा० ॥५॥ ॐ विकरिण्यै नमः, विकरिणी श्री पा० ॥६॥ ॐ बलायै नमः, बला श्री पा० ॥७॥ ॐ प्रमथिन्यै नमः, प्रमथिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥८॥

देवस्याग्रे - ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः, सर्वभूतदमनी श्री पा०। ॐ मनोन्मन्यै नमः, मनोन्मनी श्री पा०॥ देवस्य चतुर्षु दिक्षु - ॐ प्रमोदाय नमः, प्रमोद श्री पा० ॥१॥ ॐ सुमुखाय नमः, सुमुख श्री पा० ॥२॥ ॐ दुर्मुखाय नमः, दुर्मुख श्री पा० ॥३॥ ॐ विघ्ननाशाय नमः, विघ्ननाश श्री पा० ॥४॥

पुष्पाञ्जलि :- ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥ पूजिताः तर्पिताः सन्तु से जल छोड़ें।

तृतीयावरणम् :- अष्टदलाग्रे पूर्वादिक्रमेण - **ॐ आं ब्राह्मयै नमः, ब्राह्मी श्री पा० ॥१॥ ॐ ईं माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरी श्री पा० ॥२॥ ॐ ऊं कौमार्यै नमः, कौमारी श्री पा० ॥३॥ ॐ ॠं वैष्णव्यै नमः, वैष्णवी श्री पा० ॥४॥ ॐ लृं वाराह्यै नमः, वाराही श्री पा० ॥५॥ ॐ ऐं इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणी श्री पा० ॥६॥ ॐ औं चामुण्डायै नमः, चामुण्डा श्री पा० ॥७॥ ॐ अः महालक्ष्म्यै नमः, महालक्ष्मी श्री पा० ॥८॥**

पुष्पाञ्जलि :- ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥ पूजिताः तर्पिताः सन्तु से जल छोड़ें।

चतुर्थावरणम् तथा पंचमावरणम् में इन्द्रादि दशदिक्पालों का अर्चन करें। विधि उच्छिष्ट गणपति यंत्रार्चन में देखें।

अस्यपुरश्चरण प्रयोग : ४ लाख जप पूरे करके हवन तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन करायें।

कमल के पुष्प से हवन करने से राजा तथा कुमुद पुष्पों के हवन से मंत्री को वश में किया जा सकता है। समिध होम में पीपल से ब्राह्मणों को, उदुम्बर होम से क्षत्रियों को, प्लक्ष होम से वैश्यों को तथा वृक्ष समिध होम से शूद्रों का वशीकरण होता है। (शूद्र का अर्थ नीच कर्म के विचार वालों से भी है चाहे वह सवर्ण होवें)।

मुनक्का के होम से सुवर्ण, गो दुग्ध के हवन से गोधन की वृद्धि होवे। दधि मिश्रित चरु होम से ऋद्धि तथा घी व घृतान्न के होम से अन्न-धन की वृद्धि होवे तथा वेतस के होम से सुवृष्टि होवे। लाजा होम से अभीष्ट को प्राप्त करे विघ्नों का नाश होवे, कन्या को वर की प्राप्ति होवें।

॥ अथ हरिद्रा गणेश प्रयोगः ॥

हरिद्रा गणेश का प्रयोग बगलामुखी उपासना में विशेष रूप से करना चाहिये। विवाहादि मंगल कार्यों में हरिद्रा पिष्ठी का लेप विघ्ननाश कर्ता है, सौंदर्य व सुखसौभाग्य का देने वाला माना जाता है। त्रिपुरसुन्दरी श्रीदेवी के स्मरण करने पर हरिद्रा गणपति ने प्रकट होकर भण्डासुर दैत्यकृत अभिचार यंत्र को नष्ट किया था। हरिद्रागणेश के प्रयोग से शत्रु का हृदयद्रवीभूत होकर वश में हो जाता है।

विनियोग :- ॐ **अस्य श्रीहरिद्रा गणेश मन्त्रस्य मदन ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, हरिद्रा गणेश देवता, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - ॐ मदन ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छंदसे नमः मुखे। हरिद्रागणेश देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

न्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ हुँ गं ग्लौं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः।
हरिद्रा गणपतये	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
वरवरद	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
सर्वजन हृदयम्	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
स्तंभय स्तंभय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
स्वाहा	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

मंत्र : ॐ हुँ गं ग्लौं हरिद्रागणपतये वर वरद सर्वजनहृदयं स्तंभय स्तंभय स्वाहा।

ध्यानम् :—

पाशाङ्कुशौ मोदकमेकदन्तं करैदधानं कनकासनस्थम्।
हरिद्राखण्ड प्रतिमं त्रिनेत्रं पीतांशुकं रात्रिगणेशमीडे ॥

यंत्रार्चनम् :- संपूर्ण विधि तथा देवता त्रैलोक्य मोहन गणपति के समान है। केवल षडङ्ग देवताओं के पूजन में भिन्नता है।

प्रथमावरणम् - (षट्कोणेषु) यथा :- अग्निकोणे **ॐ हुँ गं ग्लौं हृदयाय नमः हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** ॥१॥ नैर्ऋत्ये - **ॐ हरिद्रा गणपतये शिरसे स्वाहा। शिरसि श्री पा०** ॥२॥ वायवे - **ॐ वर वरद शिखायै वषट्, शिखायां श्री पा०** ॥३॥ ऐशान्ये - **ॐ सर्वजन हृदयं कवचाय हुं, कवचे** श्री पा० ॥४॥ मध्याग्रे - **ॐ स्तंभय स्तंभय नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्र**

श्री पा० ॥५॥ दिक्षु ॐ स्वाह अस्त्राय फट्, अस्त्रे श्री पा० ॥६॥

पुष्पाञ्जलि :- ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥ पूजिताः तर्पिताः सन्तु कहकर अर्घ पात्र से जल छोड़ें।
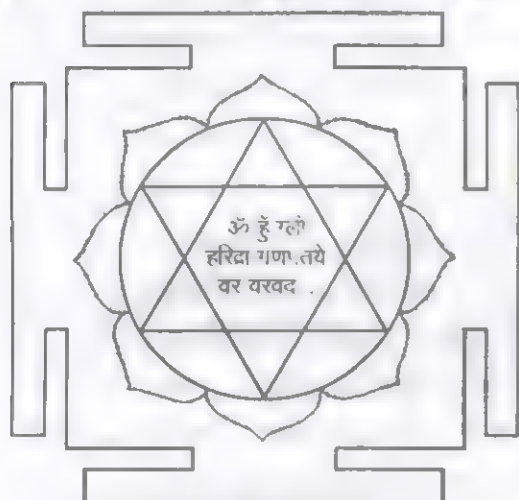
हरिद्रागणपति यन्त्रम्

द्वितीयावरण में अष्टदल में वामा, ज्येष्ठा आदि शक्तियों का, **तृतीयावरण** में ब्राह्मी आदि मातृकाओं का, **चतुर्थ-पंचम** आवरण में इन्द्रादि लोकपालों व आयुधों का पूजन त्रैलोक्य मोहन गणपति के समान करें।

पुरश्चरण प्रयोग :- गुड़ व हरिद्रा पिष्ठी से अथवा हरिद्रा से गणेशजी की प्रतिमा बनाकर पूजन करें।

८ लाख जप करके हल्दी मिश्रित चावलों से दशांश होम करें। काम्य प्रयोग हेतु शुक्ला चतुर्थी को कन्या द्वारा पीली हल्दी का लेपकर तीर्थजल से स्नान कर गणेश पूजन करें।

गणेशजी के सामने तर्पण कर १००८ जप करें। घी व पुए से १०० आहुतियाँ देकर बटुकों को भोजन करायें, कन्याओं को तथा गुरु को भोजनादि से संतुष्ट करें तो सभी मनोकामनाऐं पूर्ण होती है।

लाजा होम से कन्या को वर की प्राप्ति तथा पुरुष को उत्तम कन्या की प्राप्ति होती है।

वन्ध्या (सन्तान हीन स्त्री) ऋतु स्नान कर गणेश पूजन पूर्वक ४ तोले गोमूत्र से दूधिया बच (दूध में भिगोयी) और हल्दी पीसकर उसे १०० बार अभिमंत्रित करें फिर कन्या एवं वटुकों को लड्डू खिलाकर उक्त औषधि का पान करे तो उसे पुत्र लाभ होवें।

शत्रु के वशीकरण हेतु हल्दी मिश्रित चांवलों का होम करें।

॥ इति हरिद्रागणपति विधानम्॥

॥ अथ हरिद्रागणेश कवचम् ॥

॥ ईश्वरउवाच ॥

श्रृणु वक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिकरं प्रिये ।
पठित्वा पाठयित्वा च मुच्यते सर्व संकटात् ॥१॥
अज्ञात्वा कवचं देवि गणेशस्य मनुं जपेत् ।
सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥२॥
ॐ आमोदश्च शिरः पातु प्रमोदश्च शिखोपरि ।
संमोदो भ्रूयुगे पातु भ्रूमध्ये च गणाधिपः ॥३॥
गणक्रीडश्चाक्षियुगं नासायां गणनायकः ।
गणक्रीडाचितः पातु वदने सर्वसिद्धये ॥४॥
जिह्वायां सुमुखः पातु ग्रीवायां दुर्मुखः सदा ।
विघ्नेशो हृदये पातु विघ्ननाशश्च वक्षसि ॥५॥
गणानां नायकः पातु बाहुयुग्मं सदा मम ।
विघ्नकर्त्ता च उदरे विघ्नहर्ता च लिङ्गके ॥६॥
गजवक्त्रः कटौ देशे एकदन्तो नितम्बके ।
लम्बोदरः सदा पातु गुह्यदेशे ममारुणः ॥७॥
व्यालयज्ञोपवीती मां पातु पादयुगे सदा ।
जापकः सर्वदा पातु जानुजङ्घे गणाधिपः ॥८॥
हारिद्रः सर्वदा पातु सर्वाङ्गे गणनायकः ।
य इदं प्रपठेन्नित्यं गणेशस्य महेश्वरि ॥९॥
कवचं सर्वसिद्धाख्यं सर्वविघ्नविनाशनम् ।
सर्वसिद्धिकरं साक्षात्सर्वपापविमोचनम् ॥१०॥
सर्वसंपत्प्रदं साक्षात्सर्वपापविमोक्षणम् ।
सर्वसंपतिप्रदं साक्षात्सर्वशत्रुक्षयंकरम् ॥११॥
ग्रहपीड़ा ज्वरा रोगा ये चान्ये गुह्यकादयः ।
पठनाद्धारणा देवि नाशमायान्ति तत्क्षणात् ॥१२॥
धनधान्यकरं देवि कवचं सुरपूजितम् ।
समो नास्ति महेशानि त्रैलोक्ये कवचस्य च ॥१३॥

हारिद्रस्य महेशानि कवचस्य च भूतले ।
किमन्यैरसदालापैर्यत्रायुर्व्ययमाप्नुयात् ॥१४॥

॥ इति विश्वसारतन्त्रे हरिद्रागणेश कवचम् समाप्तं ॥

॥ पार्थिवगणेश ॥

जिस तरह पार्वतीजी को अपने मल की पिष्ठी से गणेश प्रतिमा बनाकर प्राण संस्कार करने पर प्रसन्नता हुई थी, उसी तरह साधक यदि गणेशजी की पार्थिव प्रतिमा बनाकर प्राणप्रतिष्ठा मंत्र पूर्वक पूजा आराधना करे तो प्रसन्नता व लाभ प्राप्त करता है। पुत्र लाभ हेतु यह प्रयोग करें।

गणेश प्रतिमा बाँबी या नदी तट की मिट्टी की बनाने से अर्थ सिद्धि, हो गुड़ की प्रतिमा वाञ्छित लाभ देवें, हरिद्रा गोधूमान्न, चिपट (चिउड़ा) आदि की प्रतिमा बनाने से कार्य सिद्धि होवें। पार्थिव शिव की तरह ही यह विधान है।

तिथि वार नक्षत्रादि का उल्लेख कर कामना का संङ्कल्प कर प्रतिदिन १, ११, २१, ५१, १०८ या १००८ प्रतिमायें बनायें। गणेश, महागणपति उच्छिष्ट गणपति आदि स्वरूपों में से इष्ट नाम से आराधना करे। सहस्त्र नामावलि से अक्षत पुष्प गंध भी १००८ १००८ बार चढ़ावें या पुष्पों की पंखुड़ियाँ कर अक्षत पुष्पगंधार्चन करके शामिल करके एक साथ चढ़ावें। शर्करा तथा नुकति के दानें विशेष मात्रा में चढ़ाकर १००८ बार नैवेद्य की कल्पना करें। प्रतिमा नित्य विर्सजन करे दूसरे दिन पुन: इसी क्रम से करके यथा संख्या जप या प्रतिमा संख्या पूरी कर हवनादि कार्य कर कन्या वटुक ब्राह्मण भोजन करने पर अपुत्र भी पुत्र लाभ प्राप्त करे तथा धन वैभव प्राप्त करें।

॥ अथ चौरगणपति प्रयोग:॥

तंत्र शास्त्र में चौर विद्या का उल्लेख भी है। साबर मंत्रों व तामसी क्रियाओं द्वारा साधक दूसरे के तप तेज व सिद्धि का हरण कर स्वयं उसका अधिपति हो जाता है। वानराज बालि ने भी इसी प्रकार की सिद्धि प्राप्त कर रखी थी जिसके कारण शत्रु का आधा बल उसमें आ जाता और शत्रु नि:स्तेज हो जाता था। परद्रव्य हरण पर विद्या हरण के प्रयोग भी इस विद्या के अर्न्तगत आते है।

दूसरे व्यक्ति की शक्ति को दृष्टिमात्र से अथवा स्पर्श द्वारा खींची जा सकती है।

ऐसे तामसी तांत्रिकों से बचने के लिये दो साधारण उपाय है।

१. ऐसी अवस्था में यह धारणा करें कि यह शरीर मेरा नहीं है, मेरी जगह मेरे गुरु बैठे है, हृदय में इष्ट देवता का ध्यान करें तथा भावना करें कि इष्ट का तेज मेरे चारों ओर कवच रूप मे रक्षा कर रहा है।

२. चौर गणपति की सात्त्विक उपासना से रक्षा कवच प्राप्त करें।

जिस तरह जब आत्मा शरीर छोड़ती है तो शरीर के दश द्वारों में से कहीं से भी प्राण निकल जाते हैं उसी तरह तेज का हरण भी इन्हीं दश द्वारों से होता है। अतः दस द्वारों की रक्षा करनी चाहियें।

इस मन्त्र को जपने से अपने इष्ट मन्त्र की सिद्धि हानि नहीं होगी।

प्राणतोषणी तन्त्र में भी विलास तंत्र से उल्लेखित कर कहा है। (गणेशतन्त्रे)

गणेश उवाच –

अधुनाहं प्रवक्ष्यामि चौर मंत्रमतः शृणु। चौर मन्त्र परिज्ञानं बिना हि ब्राह्मणीश्वरि! पुराणं प्रपठेत् यस्तु स एव मूर्तिमान् कलिः। परजन्मनि पापिष्ठःस भवेच्चौर कुक्कुरः। शिवपूजा विष्णुपूजा शक्तिपूजा तथैव च। सर्व पूजासु यत् तेजो हरते गणपः स्वयं। पञ्चाशद् गणदेवानां ज्योतिषिं मुनि पुङ्गवाः। प्रतिद्वारपथे गत्वा प्रतिपद्मेषु जृंभते। हरन्ति जप तेजांसि प्रतिपद्मेषु संस्थिताः। जपपूजासु यत् तेजस्तत्र चौर गणाधिपः। तस्माच्चौर प्रबोधार्थं चौर मन्त्रान् जपेद् दश। ततस्तु पूजयेद् धीमान् यस्य या इष्ट देवताः। ततः फलमवाप्नोति ब्रह्मादिभिर्दिवौकसः। चौरमन्त्रं महामंत्रं पञ्चाशद् गणतोषणं। चौर मन्त्रं विना भद्रे! शांति स्वस्त्ययनं कुतः?

षट्दलों में मूलाधारादि केन्द्रों में तथा शरीर के नेत्र कर्णादि दश द्वारों में चौर गणपति का मंत्र जप करना चाहिये यह "**कपाट**" के समान रक्षा करता है। अंतर्मातृका न्यास की तरह ५० वर्णात्मिका सहित शरीर में न्यास करना चाहिये। यथा –

रहस्यं ते प्रवक्ष्यामि पञ्चाशद् गणतोषणं। अंकुशं पचमं (क्रौं) बीजं प्रथमे दशधाजपेत्। प्रजप्य सुभगे मात! कवाटं निक्षिपेत् ततः।

अन्यथा अंकुशैर्बीजैः कवाटं भेदिरे गणाः। चन्द्रिकान्तर्गता नित्यं शङ्करं वरसुन्दरं। चन्द्रिका सुषमा सीता शिञ्जनी अणिमागुणा। चन्द्रविन्द्वात्मिका नित्या गणेशपरिपूजिता।

अजपामंत्र जपकाल कथनम् - शृणु चापि प्रवक्ष्यामि मंत्रप जपनिर्णयं। प्रातः काले च शय्यायां मुक्तस्वापः स्वदेहके। पूर्ववत् मातृका न्यासं विन्यसे मातृकास्थले। तथा एकदश द्वारे चौर मंत्राणि विन्यसेत्। चौर मन्त्र जपात् तुष्टिर्गणेशस्य तदा भवेत्। यमस्य नाधिकारोऽपि चौर मंत्र जपात् प्रिये! सर्वमन्त्र जपातृ तेजः सर्व स्मात् समुपस्थितं। तत् तेजोहरणे शक्तिगेणशस्य न चैव हि।

॥ अस्य प्रयोगः॥

एकादश द्वारों में सर्वत्र दश दशवार जप करें। ॥१॥ हृदये - क्रों दश बार जपे ॥२॥ दक्षिण नेत्रे - ह्रीं ह्रीं दश बार जपे ॥३॥ वाम नेत्रे - ह्रीं ह्रीं दश बार जपे ॥४॥ दक्षिण कर्णे - ह्रीं ह्रीं दश बार जपे ॥५॥ वाम कर्णे - ह्रीं ह्रीं दशधा जपेत् ॥६॥ दक्षिणनासापुटे - हूं हूं दशवारं ॥७॥ वामनासापुटे - हूं हूं दशवारं ॥८॥ मुखे - स्त्रीं स्त्रीं दशवारं ॥९॥ नाभौ - क्लीं क्लीं दशवारं ॥१०॥ लिंगे - हसौः दशवारं ॥॥११ गुह्ये - ब्लुं दशवारं ॥१२॥ भ्रूमध्ये - हूं दशधा जपेत् ।

मतान्तर में भ्रूमध्य में ॐ तथा मनस्थान में भी ॐ का दशवार जप करना कहा गया है।

अथ मंत्राः - १. क्रों ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं क्लीं क्लीं हसौः ब्लुं हूं ॐ।

२. क्रों ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं क्लीं क्लीं हसौः ब्लुं हूं ॐ

मूलाधारादि षट्चक्रों में इन मंत्रों का जाप करें। अन्तर्मातृका न्यास के जो स्थान बतायें है उनमें इन मंत्रों से न्यास करें।

अशक्ति व समयाभाव में "क्रों ह्रीं हूं स्त्रीं क्लीं हसौः ब्लुं हूं ॐ" से अथवा "क्रों हूं स्त्रीं क्लीं हसौः" से मातृका न्यास करें।

॥इति चौर गणपति प्रयोग समाप्तम् ॥

॥ ऋणहर्तागणपति प्रयोगः ॥

इस मन्त्र का प्रयोग कर मधुत्रय से होम करें।

विनियोगः - ॐ अस्य श्री ऋणहरणकर्तृगणपति स्तोत्र मन्त्रस्य, सदाशिव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्री ऋणहरणकर्तृगणपति देवता। ग्लौं बीजम्। गः शक्तिः। गौं कीलकम्, मम सकल ऋण नाशने जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - ॐ सदाशिव ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्री ऋणहर्तृगणेश देवतायै नमः हृदि। ग्लौं बीजाय नमः गुह्ये। गः शक्तये नमः पादयोः। गौं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ गणेश अंगुष्ठाभ्यां नमः। ऋणं छिन्धि तर्जनीभ्यां नमः। वरेण्यम् मध्यमाभ्यां नमः। हुम् अनामिकाभ्यां नमः। नमः कनिष्ठकाभ्यां नमः। फट् करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः - ॐ गणेश हृदयाय नमः। ऋणं छिंधि शिरसे स्वाहा। वरेण्यम् शिखायै वषट्। हुं कवचाय हुम्। नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। फट् अस्त्राय फट्।

ध्यानम् –

सिन्दूरवर्ण द्विभुजं गणेशं लम्बोदरं पद्मदले निविष्टम् ।
ब्रह्मादि देवैः परिसेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम् ॥

मन्त्रः - ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट्।

इस मन्त्र के १ लाख जप करके मधुत्रय से होम करें तो सुख-समृद्धि प्राप्त होवें।

॥ स्तोत्रम् ॥

सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजितः फलसिद्धये ।
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥
त्रिपुरस्य वधात् पूर्व शम्भुना सम्यगर्चितः ।
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥
हिरण्यकश्यपादीनां वधार्थे विष्णुनार्चितः ।
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥
महिषस्य वधे देव्या गणनाथः प्रपूजितः ।
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥
तारकस्य वधात् पूर्व कुमारेण प्रपूजितः ।
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥
भास्करेण गणेशस्तु पूजितश्छवि सिद्धये ।
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥
शशिना कान्तिसिद्ध्यर्थे पूजितो गणनायकः ।

सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥
पालनाय च तपसा विश्वामित्रेण पूजितः ।
सदैव पार्वती पुत्र ऋणनाशं करोतु मे ॥
इदं त्वृणहरण स्तोत्रं तीव्रदारिद्र्य नाशनम् ।
एक वारं पठेन्नित्यं वर्षमेकं समाहितः ॥
दारिद्रं दारुण त्यक्त्वा कुबेर समतां व्रजेत् ।
फडन्तोऽयं महामन्त्रः सार्धपञ्चदशाक्षरः ॥

॥ वक्रतुण्ड स्तोत्रम् ॥

ॐ ॐ ॐ कार रूपं हिमकर रुचिरं यत्स्वरूपं तुरीयं
त्रैगुण्या तीतलीलं कलयति मनसा तेजसोदारवृत्तिः ।
योगीन्द्रा ब्रह्मरन्ध्रे सहजगुणमयं श्रीहरेन्द्रं स्वसज्ञं
गं गं गं गणेशं गजमुखमनिशं व्यापकं चिंतयति ॥१॥
वं वं वं विघ्नराजं भजति निजभुजे दक्षिणे पाणि शुण्डं
क्रों क्रों क्रों क्रोधमुद्रा दलितरिपुकुलं कल्पवृक्षस्य मूले ।
दं दं दं दंतमेकं दधतमभिमुखं कामधेन्वादिसेव्यं
धं धं धं धारयंतं दधतमतिशयं सिद्धि बुद्धिर्ददंतम् ॥२॥
तुं तुं तुं तुंगरूपं गगनमुपगतं व्याप्नुवन्तं दिगंतं
क्लींक्लीं क्लीं कामनाथं गलितमद दल लोलमत्तालिमालम्।
ह्रीं ह्रीं ह्रींकाररूपं सकलमुनिजनध्येंय मुद्दिक्षु दंडं
श्रीं श्रीं श्रीं संश्रयंतं निखिलनिधिकलं नौमि हेरम्बलंबम् ॥३॥
ग्लौं ग्लौं ग्लौंकारमाद्यं प्रणवमय महामंत्र मुक्तावलीनां सिद्धं
विघ्नेश बीजं शशिकर सदृशं योगिनां ध्यानगम्यम् ।
डां डां डां डामरूपं दलितभवभयं सूर्यकोटि प्रकाशं
यं यं यं यक्षराजं जपति मुनिजनो ब्राह्यमाभ्यंतरं च ॥४॥
हुं हुं हुं हेमवर्णं श्रुतिगणितगुणं शूपकर्णं कृपालं
ध्येयं यं सूर्यबिम्बे उरसि च विलसत्सर्प यज्ञोपवितम् ।
स्वाहा हुं फट् समेतैष्ठ ठ ठ ठ सहितैः पल्लवैः
सेव्यमानैर्मंत्राणां सप्तकोटि प्रगुणितमहि मध्यानमीशं प्रपद्ये ॥५॥

पूर्व पीठं त्रिकोणं तदुपरि रुचिरं षड्दलं सूपपत्रं तस्योर्द्धे
बद्धरेखा वसुदलकमलं बाह्यतोऽधश्च तस्य ।
मध्ये हुंकारबीजं तदनु भगवतो बीज षट्कं पुरारेरष्टौ
शुक्लेश सिन्धौ बहुलगणपते र्विष्टरं वाष्टकं च ॥६॥

धर्माद्यष्टौ प्रसिद्धा दिशि विदिशि गणा बाह्यतो लोकपालान्
मध्ये क्षेत्राधिनाथं मुनिजनतिलकं मंत्रमुद्रापदेशम् ।
एवं यो भक्ति युक्तो जपति गणपतिं पुष्प धूपाक्षताद्यै
नैवेद्यैर्मोदकानां स्तुति नटविलसद्गीत वादित्रनादैः ॥७॥

राजानस्तस्य भृत्या इव युवतिकुलं दासवत्सर्वदाऽऽस्ते
लक्ष्मीः सर्वाङ्ग युक्तां त्यजति न सदनं किंकराः सर्वलोकाः ।
पुत्राः प्रौत्राः प्रपौत्रा रणभुवि विजयो द्यूतवादे प्रवीणो
यस्येशो विघ्नराजो निवसति हृदये भक्ति भाजां स देवः ॥८॥

॥ इति शंकराचार्य विरचितं वक्रतुण्ड स्तोत्रम् ॥

॥ सन्तानगणपति स्तोत्रम् ॥

नमोऽस्तु गणनाथाय सिद्धिबुद्धियुताय च ।
सर्व प्रदाय देवाय पुत्रवृद्धिप्रदाय च ॥

गुरुदराय गुरवे गोप्त्रे गुह्यासिताय ते ।
गोप्याय गोप्ताशेषभुवनाय चिदात्मने ॥

विश्वमूलाय भव्याय विश्वसृष्टि करायते ।
नमो नमस्ते सत्याय सत्यपूर्णाय शुण्डिने ॥

एकदन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः ।
प्रपन्नजनपालाय प्रणतार्तिविनाशिने ॥

शरणं भव देवेश संततिं सुदृढ़ां कुरु ।
भविष्यन्ति च ये पुत्रा मत्कुले गणनायक ॥

ते सर्वे तव पूजार्थं निरताः स्युर्वरो मतः ।
पुत्रप्रदमिदं स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥

॥ इति श्री संतान गणपति स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री एवं पुत्र प्राप्ति हेतु–श्रीगणाधिपस्तोत्रम् ॥

सरागिलोक दुर्लभं विरागिलोक पूजितं
सुरासुरैर्नमस्कृतं जरादिमृत्यु नाशकम् ।
गिरा गुरु श्रिया हरिं जयन्ति यत्पादार्चका
नमामितं गणाधिपं कृपापयः पयोनिधिम् ॥१॥

गिरीन्द्रजा मुखाम्बुज प्रमोद दान भास्करं
करीन्द्रवक्त्रमानताघसंघवारणोद्यतम् ।
सरीसृपेश–बद्धकुक्षिमाश्रयामि संततं
शरीरकान्ति निर्जिताब्जबन्धुबालसंततिम् ॥२॥

शुकादिमौनिबन्दितं गकारवाच्यमक्षरं
प्रकाममिष्टदायिनं सकामनम्र पंक्तये ।
चकासनं चतुर्भुजैर्विकासिपद्म पूजितं
प्रकाशितात्मतत्त्वकं नमाम्यहं गणाधिपं ॥३॥

नराधिपत्वदायकं स्वरादिलोकदायकम्
जगदिरोगवारकं निराकृतासुरव्रजम् ।
कराम्बुजैर्धरन् सृणिान् विकारशून्यमानसै-
र्हृदासदाविभावितं मुदा नमामि विघ्नपम् ॥४॥

श्रमापनोदनक्षमं समाहितान्तरात्मना
समाधिभिः सदार्चितं क्षमानिधि गणाधिपम् ।
रमाधवादि पूजितं यमान्तकात्म सम्भवं
शमादिषड्गुणप्रदं नमामि तं विभूतये ॥५॥

गणाधिपस्य पञ्चकं नृणामभीष्ट दायकं
प्रणाम पूर्वकं जनाः पठन्ति यः मुदायुताः ।
भवन्ति ते विदाम्पुरः प्रगीतवैभवाः
जनाश्चिरायुषोऽधिकश्रियः सुसूनवो न संशयः ॥६॥

॥ इति श्री मद्शंकराचार्य विरचित गणाधिपस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ एकदन्तनामाष्टक स्तोत्रम् ॥

ज्ञानार्थ वाचको गश्चणश्च निर्वाण वाचकः ।
तयोरीशं परं ब्रह्म गणेशं प्रणमाम्यहम् ॥
एक शब्दः प्रधानार्थो दन्तश्च बल वाचकः ।
बलं प्रधानं सर्वस्मादेकदन्तं नमाम्यहम् ॥
दीनार्थ वाचको हेश्चरम्बः पालक वाचकः ।
दीनानां परिपालकं हेरम्बं प्रणमाम्यहम् ॥
विपत्ति वाचको विघ्नो नायकः खण्डनार्थकः ।
विपत्खण्डन कारकं नमामि विघ्न नायकम् ॥
विष्णुदत्तैश्च नैवेद्यैर्यस्य लम्बोदरं पुरा ।
पित्रा दत्तैश्च विविधैर्वन्दे लम्बोदरं च तम् ॥
शूर्पाकारौ च यत्कर्णौ विघ्नवारणकारणौ ।
सम्पदौ ज्ञानरूपौ च शूर्पकर्णं नमाम्यहम् ॥
विष्णुप्रसाद पुष्पं च यन्मूर्ध्नि मुनिदत्तकम् ।
तद् गजेन्द्रवक्त्रं युक्तं गजवक्त्रं नमाम्यहम् ॥
गुहस्याग्रे च जातोऽयमाविर्भूतो हरालये ।
वन्दे गुहाग्रजं देवं सर्वदेवाग्रपूजितम् ॥
एतन्नामाष्टकं दुर्गे नामभिः संयुतं परम् ।
पुत्रस्य पश्य वेदे च तदा कोपं यथा कुरू ॥
एतन्नामाष्टकं स्तोत्रं नानार्थ संयुतं शुभम् ।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं स सुखी सर्वतोजयी ॥
ततो विघ्ना पलायन्ते वैनतेयाद् यथोरगः ।
गणेश्वर प्रसादेन महाज्ञानी भवेद ध्रुवम् ॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रं भार्यार्थी विपुलं स्त्रियम् ।
महाजड़ः कविन्द्रश्च विद्यावांश्च भवदे ध्रुवम् ॥

॥ इति ब्रह्मवैवर्त पुराणान्तर्गत श्री एकदन्तनामाष्टक स्तोत्र संपूर्णम् ॥

॥ शक्ति–शिवकृतं गणाधीश स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीशक्ति शिवावुसतुः ॥

नमस्ते गणनाथाय गणानां पतये नमः ।
भक्ति प्रियाय देवेश भक्ते भयः सुखदायकः ॥
स्वानन्द वासिने तुभ्यं सिद्धि-बुद्धि वराय च ।
नाभिशेषाय देवाय ढुण्ढिराजाय ते नमः ॥
वरदऽभय हस्ताय नमः परशु धारिणे ।
नमस्ते सृणिहस्ताय नाभिशेषाय ते नमः ॥
अनामयाय सर्वाय सर्व पूज्याय ते नमः ।
सगुणाय नमस्तुभ्यं ब्रह्मणे निर्गुणाय च ॥
ब्रह्मभ्यो ब्रह्मदात्रे च गजानन नमोऽस्तुते ।
आदि पूज्याय ज्येष्ठाय ज्येष्ठराजाय ते नमः ॥
मात्रे पित्रे च सर्वेषां हेरम्बाय नमो नमः ।
अनादये च विघ्नेश विघ्नकर्त्रे नमो नमः ॥
विघ्नहर्त्रे स्वभक्तानां लम्बोदर नमोऽस्तुते ।
त.दीय भक्ति योगेन योगीशाः शान्तिमागताः ॥
किं स्तुवो योगरूपं तं प्रणमावश्च विघ्नपम् ।
तेन तुष्टोभव स्वामिन्नित्युक्त्वा तं प्रणेमतुः ॥
तावुत्थाप्य गणाधीश उवाच तौ महेश्वरो ॥

॥ श्रीगणेश उवाच ॥

भवदकृतमिदं स्तोत्रं मम भक्ति विवर्धनम् ।
भविष्यति च सौख्यस्य पठते श्रृण्वते प्रदम् ॥
भुक्ति मुक्ति प्रवं चैव पुत्रपौत्रादिकं तथा ।
धन धान्यादिकं सर्व लभते तेन निश्चितम् ॥

॥ इति श्रीशक्ति-शिवकृतं गणाधीश स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ सर्वसंपत्प्रद गणपति स्तोत्रम् ॥

ध्यानम्—

दन्ताभये चक्रवरौ दधानं कराग्रगं स्वर्ण घटं त्रिनेत्रम् ।
धृताब्जयालिंगितमब्धिपुत्र्या लक्ष्मी गणेशं कनकाभमीडे ॥

ॐ नमो विघ्नराजाय सर्व सौख्य प्रदायिने ।
दुष्टारिष्ट विनाशाय पराय परमात्मने ॥
लम्बोदरं महावीर्य नागयज्ञाप शोभितम् ।
अर्धचन्द्रधरं देवं विघ्न व्यूह विनाशनम् ॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रें ह्रौं ह्रः हेरम्बाय नमो नमः ।
सर्व सिद्धिप्रदो सित्वं सिद्धि-बुद्धि प्रदोभव ॥
चिन्तितार्थ प्रदस्त्व हि सततं मोदक प्रियः ।
सिन्दुरारूणत्रस्त्रेश्च पूजितो वरदायकः ॥
इदं गणपति स्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान् नरः ।
तस्य देहं च देहं च स्वयं लक्ष्मीर्न मुंचति ॥

॥ इति श्रीसर्व संपत्प्रद गणपति स्तोत्रम् ॥

॥ संसारमोहन गणेश कवचम् ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्री गणेश कवच मंत्रस्य, प्रजापतिः ऋषिः, वृहती छन्दः, श्रीगजमुख विनायको देवता, गं बीजं, गीं शक्तिः, गः कीलकम्, धर्मकामार्थमोक्षेषु, श्री गणपति प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

॥ कवचम् ॥

ॐ गं हुं श्रीगणेशाय स्वाहा मे पातु मस्तकम् ।
द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रो ललाटो मे सदाऽवतु ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं गमिति वै सततं पातु लोचनम् ।
तालुकं पातु विघ्नेशः सततं धरणीतले ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीमिति परं सततं पातु नासिकाम् ।
ॐ गौं गं शूपकर्णाय स्वाहा पात्वधरं मम ॥

दन्ताश्च तालुकां जिह्वा पातु मे षोडशाक्षरः ।
ॐ लं श्री लम्बोदरायेति स्वाहा गण्डं सदाऽवतु ॥
ॐ क्लीं ह्रीं विघ्ननाशाय स्वाहा कर्णं सदाऽवतु ।
ॐ श्रीं गं गजाननायेति स्वाहा स्कंधं सदाऽवतु ॥
ॐ ह्रीं विनायकायेति स्वाहा पृष्ठं सदाऽवतु ।
ॐ क्लीं ह्रीमिति कंकालं पातु वक्षःस्थलं च गम् ॥
करौ पादौ सदा पातु सर्वाङ्गं विघ्ननिघ्नकृत ।
प्राच्यां लम्बोदरः पातु चाग्नेय्यां विघ्ननायकः ॥
दक्षिणे पातु विघ्नेशो नैर्ऋत्यां तु गजाननः ।
पश्चिमे पार्वती पुत्रो वायव्यां शंकरात्मजः ॥
कृष्णस्यांशश्चोत्तरे च परिपूर्णतमस्य च ।
ऐशान्यामेकदन्तश्च हेरम्बः पातु चोर्ध्वतः ॥
अधो गणाधिपः पातु सर्वपूज्यश्च सर्वतः ।
स्वप्ने जागरणे चैव पातु मां योगिनां गुरुः ॥
इति ते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघविग्रहम् ।
संसार मोहनं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥

॥ ब्रह्मवैवर्तान्तर्गते श्रीसंसार मोहन कवच सम्पूर्णम् ॥

॥ गणेश कवचम् ॥

॥ गौर्युवाच ॥

एकोऽति चपलो दैत्यान्बाल्येपि नाशयत्यहो ।
अग्रे किं कर्म कर्तेति न जाने मुनि सत्तम ॥
दैत्या नानाविधा दुष्टा साधुदेवद्रुहः खलाः ।
अतोऽस्य कण्ठे किंचित्त्वं रक्षार्थ वद्द्युमर्हसि ॥

॥ मुनिरुवाच ॥

ध्यायेत् सिंहगतं विनायकममुं दिग्बाहुमाद्ये युगे ।
त्रेतायां तु मयूरवाहनममुं षड्बाहुकं सिद्धिदम् ॥
द्वापरके तु गजाननं युगभुजं रक्तांग रागं विभुं ।

तुर्ये तु द्विभुजं सितांगरुचिरं सर्वार्थदं सर्वदा ॥
विनायकः शिखां पातु परमात्मा परात्परः ।
अति सुन्दरकायस्तु मस्तकं सुमहोत्कटः ॥
ललाटं कश्यपः पातु भ्रूयुगं तु महोदरः ।
नयने भालचन्द्रस्तु गजासयस्त्वोष्ठपल्लवौ ॥
जिह्वां पातु गणाक्रीडश्चिबुकं गिरिजासुतः ।
वाचं विनायकः पातु दन्तान् रक्षतु दुर्मुखः ॥
श्रवणौ पाशपाणिरस्तु नासिकां चिंतितार्थदः ।
गणेशस्तु मुखं कण्ठं पातु देवो गणञ्जः ॥
स्कन्धौ पातु गजस्कंधः स्तनौ विघ्न विनाशनः ।
हृदयं गणनाथस्तु हेरंबो जठरं महान् ॥
धराधरः पातु पार्श्वौ पृष्ठं विघ्नहरः शुभः ।
लिङ्गं गुह्यं सदा पातु वक्रतुण्डो महाबलः ॥
गणक्रीडो जानु जंघे ऊरु मंगलमूर्तिमान् ।
एकदन्तो महाबुद्धिः पादौ गुल्फौ सदाऽवतु ॥
क्षिप्रप्रसादनो बाहु पाणी आशाप्रपूरकः ।
अंगुलीश्च नखान्पातु पद्महस्तोरिनाशनः ॥
सर्वाङ्गाणि मयूरेशो विश्वव्यापि सदाऽवतु ।
अनुक्तमपि यत्स्थानं धुम्रकेतुः सदाऽवतु ॥
आमोदस्त्वग्रतः पातु प्रमोदः पृष्ठतोऽवतु ।
प्राच्यां रक्षतु बुद्धीश आग्नेयां सिद्धिदायकः ॥
दक्षिणस्यामुमापुत्रो नैऋत्यां तु गणेश्वरः ।
प्रतीच्यां विघ्नहर्ताऽव्याद्वायव्यां गजकर्णकः ॥
कौबेर्या निधिपः पायादीशान्यामीशनन्दनः ।
दिवोऽव्यादेकदन्तस्तु रात्रौ संध्यासु विघ्नहृत् ॥
राक्षसासुर वेताल ग्रह भूत पिशाचतः ।
पाशांकुशधरः पातु रजः सत्वतमः स्मृतीः ॥
ज्ञानं धर्मं च लक्ष्मीं च लज्जां कीर्तिं तथा कुलम् ।

वपुर्धनं च धान्यं च गृह दारान्सुतान्सखीन् ॥
सर्वायुधधरः क्षेत्रं मयूरेशोऽवतात्सदा ।
कपिलाऽजाविकं पातु गजाश्वान् विकटोऽवतु ॥
भुर्जपत्रे लिखित्वेदं यः कण्ठे धारयेत्सुधीः ।
न भयं जायते तस्य यक्ष रक्षः पिशाचतः ॥
त्रिसंध्यं जपते यस्तु वज्रसार तनुर्भवेत् ।
यात्रा काले पठेद्यस्तु निर्विघ्नेन फलं लभेत् ॥
युद्धकाले पठेद्यस्तु विजयं चाप्युयाद ध्रुवम् ।
मारणोच्चाटनाकर्ष स्तंभं मोहन कर्मणि ॥
सप्तवारं जपेदेतद्दिनानामेकविंशतिम् ।
तत्तत्फलमवाप्नोति साधको नात्र संशयः ॥
एकविंशतिवारं च पठेत्तावद्दिनानि यः ।
कारागृह गतं सद्यो राज्ञावध्यं च मोचयेत् ॥
राजदर्शन वेलयां पठेदेत त्रिवारतः ।
स राजानं वशं नीत्वा प्रकृतिञ्च सभां जयेत् ॥
इदं गणेश कवचं कश्यपेनसमीरितम् ।
मुद्गलाय च तेनाथ माण्डव्याय महर्षये ॥
मह्यं स प्राह कृपया कवचं सर्वसिद्धिदम् ।
न देयं भक्ति हीनाय देयं श्रद्धावते शुभम् ॥
अनेनास्य कृता रक्षा न बाधाऽस्य भवेत्क्वचित् ।
राक्षसा सुरवेताल दैत्य दानव संभवा ॥

॥ इति श्रीगणेश पुराणे गणेश कवचम् संपूर्णम् ॥

॥ मयूरेश स्तोत्रम् ॥

यह स्तोत्र शोक निवारण तथा रोगोपद्रव को शान्त करने वाला है। ४१०० संख्या में जपकर, मधुत्रय व लाजा से होम करें।

॥ ब्रह्मोवाच ॥

पुराण पुरुषं देवं नाना क्रीडाकरं मुदा ।
मायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
परात्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम् ।
गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सृजन्तं पालयन्तं च संहरन्तं निजेच्छया ।
सर्वविघ्न हरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
नानादैत्य निहन्तारं नाना रूपाणि बिभ्रतम् ।
नानाऽयुधहारं भक्त्या मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
इन्द्रादि देवतावृन्दैरभिष्टुतमहर्निशम् ।
सदसद्व्यक्तमव्यक्तं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सर्व शक्तिमयं देवं सर्वरूपधरं विभूम् ।
सर्व विद्या प्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
पार्वतीनन्दनं शम्भोरानन्दपरिवर्धनम् ।
भक्तानन्द करं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
मुनिध्येयं मुनिनुतं मुनिकाम परिपूरकम् ।
समिष्टव्यष्टिरूपं त्वां मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
सर्वाज्ञाननिहन्यारं सर्वज्ञान करं शुचिम् ।
सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥
अनेक कोटि ब्रह्माण्ड नायकं जगदीश्वरम् ।
अनन्त विभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम् ॥

॥ मयूरेश उवाच ॥

इदं ब्रह्मकरं-स्तोत्रं सर्वपापप्रणाशनम् ।
सर्वक[illegible] नृणां सर्वोपद्रव नाशनम् ॥
काराग[illegible] च मोचनं दिन सप्तकान् ।
आ[illegible]त्र भक्ति मुक्ति प्र[illegible] शुभम् ॥

॥ श्रीगणपति सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

विनियोग: अस्य श्रीमहागणपति सहस्रनाम स्तोत्र मन्त्रस्य महागणपतिर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, महागणपतिर्देवता, गं बीजम्, हुं शक्तिः, स्वाहा कीलकम् चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे जपे: विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास: ॐ महागणपतये ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे, महागणपतिर्देवतायै नमः हृदि, गं बीजाय नमः गुह्ये, हुं शक्तये नमः पादयो, स्वाहा कीलकाय नमः नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ध्यानम् :—

गण्डपाली गलद्दान पूरलाल समानसान् ।
द्विरेफान् कर्णतालाभ्यां वारयन्तं मुहुर्मुहुः ॥१॥
कराग्रधृत माणिक्यकुम्भ वक्त्र-विनिर्गतैः ।
रत्नवर्षैः प्रीणयन्तं साधकान् मदविह्वलम् ।
माणिक्य मुकुटोपेतं सर्वाभ[illegible]ण भूषितम् ॥२॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ गणेश्वरो गणक्रीडो गणनाथो गणाधिपः ।
एकदंष्ट्रो वक्रतुण्डो गजवक्त्रो महोदरः ॥१॥
लम्बोदरो धूम्रवर्णो विकटो विघ्ननायक ।
सुमुखो दुर्मुखो बुद्धो विघ्न राजोगजाननः ॥२॥
भीमः प्रमोद आमोदः सुरानन्दो महोत्कटः ।
हेरम्बः शम्बरः शम्भर्लम्बकर्णो महाबलः ॥३॥
नन्दनोऽलम्पटोऽभीरूर्मेघनादो गणंजयः ।
विनायको विरूपाक्षो धीर शूरो वरप्रदः ॥४॥
महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः ।
रुद्रप्रियो गणाध्यक्षः उमापुत्रोऽघनाशनः ॥५॥
कुमार गुरुरीशानपुत्रो [illegible]षकवाहनः ।
सिद्धिप्रियः सिद्धिपतिः सि[illegible]द्रविनायकः ॥६॥
अविघ्नस्तुम्बुरः सिंहवाहनो [illegible]नी प्रियः ।
कंकटो गजपुत्रः शा[illegible] [illegible]म्मितोऽमितः ॥७॥

कुष्माण्डसाम सम्भूतिर्दुर्जयो धुर्जयो जयः ।
भूपतिर्भुवनपतिर्भूतानां - पतिर्व्यय ॥८॥
विश्वकर्ता विश्वमुखो विश्वरूपो निधिर्घृणिः ।
कविः कविनामृषभो ब्रह्मण्यो ब्रह्मणस्पतिः ॥९॥
ज्येष्ठराजो निधिपति निधिप्रियपति प्रियः ।
हिरण्मय पुरान्तः स्थः सूर्यमण्डल मध्यमः ॥१०॥
कराहतिध्वस्तसिन्धुसलिलः पूषदन्तभित् ।
उमाङ्ककेलिकुतकी मुक्तिदः कुल पालनः ॥११॥
किरीटी कुण्डलीहारी वनमाली मनोमयः ।
वैमुख्यहतदैत्यश्रीः पादाहतिजितक्षितिः ॥१२॥
सद्योजातस्वर्णमुंजमेखली दुर्निमित्तहृत ।
दुःस्वप्नहृत प्रसहनो गुणी नादप्रतिष्ठितः ॥१३॥
सुरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः ।
पीताम्बरः खण्डरदः खण्डेन्दुकृतशेखरः ॥१४॥
चित्राङ्कश्यामदशनो भालचन्द्रश्चतुर्भुजः ।
योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः ॥१५॥
गणाधिराजो विजयस्थिरो गजपतिध्वजी ।
देवदेवः स्मरप्राणदीपको वायुकीलकः ॥१६॥
विपश्चिद्दूरदो नादोन्नादभिन्नबलाहकः ।
वराहरदनो मृत्युञ्जयो व्याघ्राजिनाम्बरः ॥१७॥
इच्छाशक्तिधरो देवत्राता दैत्यविमर्दनः ।
शम्भुवक्त्रोद्भवः शम्भुकोपहा शम्भुहास्यभूः ॥१८॥
शम्भुतेजाः शिवाशोकहारी गौरीसुखावहः ।
उमाङ्गमलजो गौरीतेजोभूः स्वर्धुनीभवः ॥१९॥
यज्ञकायो महानादो गिरिवर्ष्मा शुभाननः ।
सर्वात्मा सर्वदेवात्मा ब्रह्ममूर्धा ककुप्श्रुतिः ॥२०॥
ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्व्योमभालः सत्यशिरोरुहः ।
[illegible]ज्जनमलयोन्मेषऽग्न्यर्क सोमदक् ॥२१॥
[illegible] धर्माधर्मोष्ठः सामबृंहितः ।

ग्रहर्क्षदशनो वाणीजिह्वो वासवनासिकः ॥२२॥
कुलाचलांसः सोमार्कघण्टो रुद्रशिरोधरः ।
नदीनदभुजः सर्पाङ्गलीकस्तारकानखः ॥२३॥
भ्रूमध्यसंस्थितकरो ब्रह्मविद्यामदोत्कटः ।
व्योमनाभिः श्रीहृदयो मेरूपृष्ठोऽर्णवोदरः ॥२४॥
कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वरक्षः किंनरमानुषः ।
पृथ्वीकटिः सृष्टिलिङ्ग शैलोरुर्दस्त्रजानुकः ॥२५॥
पाताल जङ्घो मुनिपात्कालाङ्गुष्ठस्त्रयी तनुः ।
ज्योतिर्मण्डललाङ्गलो हृदयालाननिश्चलः ॥२६॥
हृत्पद्मकर्णिकाशालिवियत्केलि सरोवरः ।
सद्भक्त ध्यान निगडः पूजा वारी निवारितः ॥२७॥
प्रतापी कश्यपसुतो गणपो विष्टपी बली ।
यशवी धार्मिकः स्वोजा प्रथमः प्रथमेश्वरः ॥२८॥
चिन्तामणिद्वीपपतिः कल्पद्रुमवनालयः ।
रत्नमण्डपमध्यस्थो रत्नसिंहासनाश्रयः ॥२९॥
तीव्रशिरोद्धृतपदो ज्वालिनी मौलि लालितः ।
नन्दानन्दित पीठ श्री भोगदा भूषितासनः ॥३०॥
सकामदायिनीपीठः स्फुरदुग्रासनाश्रयः ।
तेजोवतीशिरोरत्नं सत्यानित्यावतंसितः ॥३१॥
सविघ्ननाशिनीपीठः सर्वशक्त्यम्बुजाश्रयः ।
लिपिपद्मासनधारो वह्निधामत्रयाश्रयः ॥३२॥
उन्नतप्रपदो गूढगुल्फः संवृतपार्ष्णिकः ।
पीनजङ्घे श्लिष्टजानुः स्थूलोरूः प्रोन्नमत्कटिः ॥३३॥
निम्ननाभिः स्थूल कुक्षिः पीनवक्षा वृहद्भुजः ।
पीनस्कन्धः कम्बूकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः ॥३४॥
भग्नवामरदस्तुङ्गसव्यदन्तौ महाहनुः ।
ह्रस्वनेत्रत्रयः शर्पकर्णों निबिडमस्तकः ॥३५॥
स्तवकाकारकुम्भाग्रो रत्नमौलिर्निरङ्कुशः ।
सर्पाहारकटिसूत्रः सर्पयज्ञोपवीतवान् ॥३६॥

सर्पकोटीरकटकः सर्पग्रैवेयकाङ्गदः ।
सर्पकक्ष्योदारबन्धः सर्पराजोत्तरीयकः ॥३७॥
रक्तोरक्ताम्बरधरो रक्तमाल्य विभूषणः ।
रक्तेक्षणो रक्तकरो रक्तताल्वोष्ठ पल्लवः ॥३८॥
श्वेत : श्वेताम्बरधरः श्वेतमाल्यविभूषणः ।
श्वेतातपत्ररुचिरः श्वेतचामर वीजितः ॥३९॥
सर्वावयव सम्पूर्ण सर्व लक्षण लक्षितः ।
सर्वाभरणशोभाढ्यः सर्वशोभा समन्वितः ॥४०॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यः सर्वकारणकारणम् ।
सर्वदैककरः शार्ङ्गी बीजापूरी गदाधरः ॥४१॥
इक्षुचापधरः शूली चक्रपाणि सरोजभृत ।
पाशी भृतोत्पलः शालीमञ्जरी स्वदन्तभृत् ॥४२॥
कल्पवल्लीधरो विश्वाभयदैककरो-वशी ।
अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान् मुद्गरायुधः ॥४३॥
पूर्णपात्री कम्बूधरो विधृतालिसमुद्गकः ।
मातुलिङ्गधरश्चूतकलिकाभृत् कुठारवान् ॥४४॥
पुस्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकः ।
भारती सुन्दरीनाथो विनायकरति प्रियः ॥४५॥
महालक्ष्मीप्रियतमः सिद्धलक्ष्मी मनोरमः ।
रमारमेश पूर्वाङ्गो दक्षिणोमामहेश्वरः ॥४६॥
महीवराहवामाङ्गो रतिकंदर्पपश्चिमः ।
आमोदमोदजननः सप्रमोद प्रमोदनः ॥४७॥
समेधितसमृद्धि श्री ऋद्धि सिद्धि प्रवर्तकः ।
दत्त सौमुख्य सुमुखः कान्तिकंदालिताश्रयः ॥४८॥
मदनावत्याश्रिताङ्घ्रिः कृत्तदौर्मुख्यदुर्मुखः ।
विघ्नसम्पल्लवोपघ्नः सेवोन्निद्रमदद्रवः ॥४९॥
विघ्नकृन्निघ्न चरणे द्राविणी शक्ति सत्कृतः ।
तीव्रा प्रसन्ननयनो ज्वालिनीपालितैक दृक् ॥५०॥

मोहिनी मोहिनो भोगदायिनी कान्तिमण्डितः ।
कामिनीकान्तवक्त्र श्रीराधिष्ठितवसन्धरः ॥५१॥
वसुन्धरामदोन्नद्ध महाशङ्ख निधि प्रभो ।
नमद्वसुमती मौलि महापद्मनिधि प्रभुः ॥५२॥
सर्वसद्गुरुसंसेव्य शोचिष्केशहृदाश्रयः ।
ईशानमूर्धा देवेन्द्रशिखा पवननन्दनः ॥५३॥
अग्रप्रत्यग्रनयनो दिव्यास्त्राणां प्रयोगवित् ।
ऐरावतादिसर्वाशावारणा वरणप्रियः ॥५४॥
वज्राद्यस्त्रपरीवारो गजचण्डसमाश्रयः ।
जयाजयपरीवारो विजयाविजयावहः ॥५५॥
अजितार्चितापादाब्जो नित्यानित्यावतंसितः ।
विलासिनीकृतोल्लासः शौण्डी सौन्दर्यमण्डितः ॥५६॥
अनन्तानन्तः सुखदः सुमङ्गलसुमङ्गलः ।
इच्छाशक्ति ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति निषेवितः ॥५७॥
सुभगासंश्रितपदो ललिता ललिताश्रयः ।
कामिनी कामनः काममालिनी केलि लालितः ॥५८॥
सरस्वत्याश्रयो गौरीनन्दनः श्रीनिकेतनः ।
गुरुगुप्तपदो वाचासिद्धो वागीश्वरीपतिः ॥५९॥
नालिनी कामुको वामारामो ज्येष्ठा मनोरमः ।
रौद्रीमुद्रित पादाब्जो हुम्बीजस्तुङ्ग शिक्तकः ॥६०॥
विश्वादि जननत्राणः स्वाहा शक्ति सकीलकः ।
अमृताब्धिकृतावासो मदघुर्णितलोचनः ॥६१॥
उच्छिष्टगण उच्छिष्टगणेशो गणनायकः ।
सार्वकालिक ससिद्धिर्नित्यशैवो दिगम्बरः ॥६२॥
अनपायोऽनन्त दृष्टिरप्रमेयोऽजरामरः ।
अनाविलोऽप्रतिरथो ह्यच्युतोऽमृतमक्षरम् ॥६३॥
अप्रतर्क्योऽक्षयोऽजय्यो - ऽनाधारोऽनामयोऽमलः ।
अमोघसिद्धिरद्वैतमघोरो - ऽप्रमिताननः ॥६४॥

अनाकारोऽब्धि भूम्यग्निबलाघ्नोऽव्यक्त लक्षणः ।
आधारपीठः आधारः आधाराधेयवर्जितः ॥६५॥
आखुकेतन आशापूरक आखूमहारथः ।
इक्षु सागरमध्यस्थ इक्षुभक्षणलालसः ॥६६॥
इक्षुचापातिरेक श्रीरिक्षुचाप निषेवितः ।
इन्द्रगोपसमान श्रीरिन्द्रनील समद्युतिः ॥६७॥
इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डल निर्मलः ।
इध्मप्रिय इडाभाग इराधामेन्दिरा प्रियः ॥६८॥
इक्षवाकुविघ्नविध्वंसी इतिकर्त्तव्यतेप्सितः ।
ईशानमौलिरोशान ईशानसुत ईतिहा ॥६९॥
ईषणात्रयकल्पान्त ईहामात्रविवर्जितः ।
उपेन्द्र उडुभृन्मौलिरुण्डेरकबलिप्रियः ॥७०॥
उन्नतानन उतुङ्ग उदारत्रिदशाग्रणीः ।
ऊर्जस्वानूष्मलमद ऊहापोहदुरासदः ॥७१॥
ऋग्यजुः सामसम्भुतिर्ऋद्धि सिद्धि प्रवर्तकः ।
ऋजुचितैक सुलभ ऋणत्रय विमोचकः ॥७२॥
लुप्तविघ्नः स्वभक्तानां लुप्तशक्तिः सुरद्विषाम् ।
लुप्तश्रीर्विमुखार्चानां लूताविस्फोटनाशनः ॥७३॥
एकार पीठ मध्यस्थ एकपादकृतासनः ।
एजिताखिल दैत्य श्रीरेधिताखिलसंश्रयः ॥७४॥
ऐश्वर्य निधिरैश्वर्य मैहिकामुष्मिक प्रदः ।
ऐरम्मदसमोन्मेष ऐरावत निभाननः ॥७५॥
ओंकारवाच्य ओंकार ओजस्वानोषधीपतिः ।
औदार्यनिधिरौद्धत्यधुर्य औन्नत्यनिरस्वनः ॥७६॥
अंकुशः सुरनागानामंकुशः सुरविद्विषाम् ।
अः समस्तविसर्गान्तपदेषु परिकीर्तित ॥७७॥
कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी कलभाननः ।
कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्म फलप्रदः ॥७८॥

कदम्बगोलकाकारः कूष्माण्ड गणनायकः ।
कारुण्यदेहः कपिलः कथकः कटिसूत्रभृत् ॥७९॥
खर्वे खड्गप्रिय खड्गखान्तान्तस्थः खनिर्मलः ।
खल्वाट श्रृंगनिलयः खट्वाङ्गो खदुरासदः ॥८०॥
गुणाढ्यो गहनो गस्थो गद्य पद्य सुधार्णवः ।
गद्यगानप्रियो गर्जो गीतगीर्वाण पूर्वजः ॥८१॥
गुह्याचारतो गुह्यो गुह्यागम निरूपितः ।
गुहाशयो गुहाऽधिस्थो गुरुगम्यो गुरोर्गुरुः ॥८२॥
घण्टाघर्घरिकामाली घटकुम्भो घटोदरः ।
चण्डश्चडेश्वर सुहृच्चण्डीशश्चण्ड विक्रमः ॥८३॥
चराचरपतिश्चिन्तामणि - चर्वणलालसः ।
छन्दश्छन्दोवपुश्छन्दो दुर्लक्ष्यश्छन्दविग्रहः ॥८४॥
जगद्योनिर्जगत्साक्षी जगदीशो जगन्मयः ।
जपो जपपरो जप्यो जिह्वासिंहासनप्रभुः ॥८५॥
झलञ्झलोल्लसद्दानझङ्कारि भ्रमरा कुलः ।
टंकारस्फारसंरावष्टंकारि मणिनूपुरः ॥८६॥
ठद्वयीपल्लवान्तः स्थसर्वमन्त्रैक सिद्धिदः ।
डिण्डिमुण्डो डाकिनीशो डामरो डिण्डिम प्रियः ॥८७॥
ढक्कानिनादमुदितौ ढौंको ढुण्ढि विनायकः ।
तत्त्वानां परं तत्त्वं तत्त्वं पद निरूपितः ॥८८॥
तारकान्तर संस्थानस्तारकस्तारकान्तकः ।
स्थाणुः स्थाणुप्रियः स्थाता स्थावरं जङ्गमं जगत् ॥८९॥
दक्षयज्ञप्रमथनो दाता दानवमोहनः ।
दयावान् दिव्यविभवो दण्डभृद्दण्डनायकः ॥९०॥
दन्तप्रभिन्नाभ्रमालो दैत्यवारणदारणः ।
दंष्ट्रालग्नद्विपघटो देवार्थनृगजाकृतिः ॥९१॥
धनधान्यपतिर्धन्यो धनदो धरीणीधरः ।
ध्यानैक प्रकटो ध्येयो ध्यानं ध्यानपरायणः ॥९२॥

नन्द्यो नन्दिप्रियो नादो नादमध्य प्रतिष्ठितः ।
निष्कलो निर्मलो नित्यो नित्यानित्यो निरामयः ॥९३॥
परं व्योम परं धाम परमात्मा परं पदम् ।
परात्परः पशुपतिः पशुपाश विमोचकः ॥९४॥
पूर्णानन्दः परानन्दः पुराणपुरुषोत्तमः ।
पद्मप्रसन्ननयनः प्रणताज्ञान मोचनः ॥९५॥
प्रमाण प्रत्यातीतः प्रणतार्तिनिवारणः ।
फलहस्तः फणिपतिः फेत्कारः फाणितः प्रियः ॥९६॥
बाणार्चिताङ्घ्रियुगलो बालकेलिकुतूहली ।
ब्रह्म ब्रह्मार्चितपदो ब्रह्मचारी बृहस्पतिः ॥९७॥
ब्रह्मत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः ।
ब्रह्मन्नादाग्रयचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः ॥९८॥
भ्रूक्षेपदत्त लक्ष्मीको भर्गो भद्रो भयापहः ।
भगवान भक्तिसुलभो भूतिदो भूतिभूषणः ॥९९॥
भव्यो भूतालयो भोगदाता भ्रूमध्य गोचरः ।
मन्त्रो मन्त्रपतिर्मंत्री मदमत्तमनोरमः ॥१००॥
मेखलावान् मन्दगतिर्मतिमत्कमलेक्षणः ।
महाबलो महावीर्यो महाप्राणो महामनाः ॥१०१॥
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्ञगोप्ता यज्ञफलप्रदः ।
यशस्करो योगगम्यो याज्ञिको याजकः प्रियः ॥१०२॥
रसो रसप्रियो रस्यो रञ्जको रावाणार्चितः ।
रक्षोरक्षाकरो रत्नगर्भो राजसुखप्रदः ॥१०३॥
लक्ष्यं लक्ष्यप्रदो लक्ष्यो लयस्थो लड्डूकप्रियः ।
लानप्रियो लास्यपरो लाभकृल्लोकविश्रुतः ॥१०४॥
वरेण्यो वह्निवदनो वन्द्यो वेदान्तगोचरः ।
विकर्ता विश्वतश्चक्षुर्विधाता विश्वतोमुखः ॥१०५॥
वामदेवो विश्वनेता वज्रिवज्रनिवारणः ।
विश्व बन्धनविष्कम्भाधारो विश्वेश्वरप्रभुः ॥१०६॥

शब्दब्रह्म शमप्राप्यः शम्भुशक्ति गणेश्वरः ।
शास्ता शिखाग्रनिलयः शरण्यः शिखरीश्वरः ॥१०७॥
षड्ऋतुकुसुमस्त्रग्वी षडाधारः षडक्षरः ।
संसार वैद्यः सर्वज्ञः सर्वभेषजभेषजम् ॥१०८॥
सृष्टिस्थितिलयक्रीडः सुरकुञ्जरभेदनः ।
सिन्दूरितमहाकुम्भः सदसद्व्यक्तिदायकः ॥१०९॥
साक्षी समुद्रमथनः स्वसंवेद्यः स्वदक्षिणः ।
स्वतन्त्रः सत्यसंकल्प सामगानरतः सुखी ॥११०॥
हंसो हस्तिपिशाचिशो हवनं हव्यकण्यभुक् ।
हव्यो हुतप्रियो हर्षो हृल्लेखामन्त्रमध्यगः ॥१११॥
क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता क्षमापरपरायणः ।
क्षिप्र क्षेमकरः क्षोमानंदः क्षोणी सुरद्रुमः ॥११२॥
धर्मप्रदोऽर्थदः कामदाता सौभाग्य वर्द्धनः ।
विद्याप्रदो विभवदो भुक्ति मुक्ति फलप्रदः ॥११३॥
आभिरूप्यकरो वीर श्रीप्रदो विजयप्रदः ।
सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्र पौत्रदः ॥११४॥
मेघादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्य नाशनः ।
प्रतिवादी मुखस्तम्भो रुष्टचित्तप्रसादनः ॥११५॥
पराभिचारशमनो दुःखभञ्जन कारकः ।
लवस्त्रुटिः कलाकाष्ठा निमेषस्तत्परः क्षणः ॥११६॥
घटी मुहूर्त्त प्रहरो दिवा नक्समहनिशम् ।
पक्षो मासोऽयनं वर्ष युगं कल्पो महालयः ॥११७॥
राशिस्तारा तिथिर्योगो वारः करणमंशकम् ।
लग्नं होरा कालचक्रं मेरू सप्तर्षयो ध्रुवः ॥११८॥
राहुर्मन्दः कविर्जीवो बुधो भौमः शशि रविः ।
कालः सृष्टिः स्थितिर्विश्वं स्थावरं जङ्गमंचयत् ॥११९॥
भूरापोऽग्निमरुद्व्योमाहंकृतिः प्रकृतिः पुमान् ।
ब्रह्मा विष्णुः शिवो रुद्रः ईशः शक्तिः सदाशिवः ॥१२०॥

त्रिदशाः पितरः सिद्धा यक्षा रक्षासि किंनराः ।
साध्या विद्याधरा भूता मनुष्यः पशवः खगाः ॥१२१॥
समुद्राः सरितः शैला भूतं भव्यं भवोद्भवः ।
सांख्यं पातंजलंयोगः पुराणानि श्रुतिः स्मृतिः ॥१२२॥
वेदाङ्गानि सदाचारो मीसांसा न्याय विस्तरः ।
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गन्धर्वं काव्यनाटकम् ॥१२३॥
वैखनसं भागवतं सात्वतं पाञ्चरात्रकम् ।
शैवं पाशुपतं कालामुखं भैरवशासनम् ॥१२४॥
शाक्तं वैनायकं सौरं जैनमार्हतसहिता ।
सदसद्व्यक्तमव्यक्तं सचेतनमचेतनम् ॥१२५॥
बन्धो मोक्षः सुखं भोगोऽयोगः सत्यमणुर्महान् ।
स्वास्ति हुं फट् स्वधा स्वाहा श्रौषड्वौषड्वषण्णमः ॥१२६॥
ज्ञानंविज्ञानमानन्दो बोधः संविच्छमो यमः ।
एक एकाक्षराधरा एकाक्षरपरायणः ॥१२७॥
एकाग्रधीरेकवीर एकानेक स्वरूपधृक् ।
द्विरूपो द्विभुजो द्वयक्षो द्विरदो दीपरक्षकः ॥१२८॥
द्वैमातुरो द्विवदनो द्वंद्वातीतो द्वयातिगः ।
त्रिधामा त्रिकरस्त्रेता त्रिवर्ग फलदायकः ॥१२९॥
त्रिगुणात्मा त्रिलोकादिस्त्रिशक्तिश त्रिलोचनः ।
चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुरात्मा चतुर्मुखः ॥१३०॥
चतुर्विधोपायमपपायश्चतुर्वर्णाश्रमाश्रयः ।
चतुर्विधवचोवृत्तिपरिवृत्तिप्रवर्तकः ॥१३१॥
चतुर्थी पूजनप्रीतश्चतुर्थीतिथि सम्भवः ।
पञ्चाक्षरात्मा पञ्चात्मा पञ्चास्यः पञ्चकृत्यकृत् ॥१३२॥
पञ्चाधारः पञ्चवर्णः पञ्चाक्षर परायणः ।
पञ्चतालः पञ्चकरः पञ्चप्रणवभावितः ॥१३३॥
पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तिः पञ्चावर्णवारितः ।
पञ्चभक्ष्यप्रियः पञ्चवाणः पञ्चशिवात्मकः ॥१३४॥

षट्कोणपीठः षट्चक्रधामा षड्ग्रन्थिभेदकः ।
षड्ध्वध्वान्तविध्वंसी षडङ्गुलमहाह्रदः ॥१३५॥
षण्मुखः षण्मुखभ्राताः षट्शक्तिपरिवारितः ।
षड्वैरिवर्गविध्वंसी षड्र्भिभयभञ्जनः ॥१३६॥
षट्तर्कदूरः षट्कर्मनिरतः षड्साश्रयः ।
सप्तपातालचरणः सप्तद्वीपोरुमण्डलः ॥१३७॥
सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तसप्तिवरप्रदः ।
सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तर्षिगणमण्डितः ॥१३८॥
सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तहोता सप्तस्वराश्रयः ।
सप्ताब्धिकेलिकासारः सप्तमातृनिषेवितः ॥१३९॥
सप्तच्छन्दोमोदमदः सप्तच्छन्दोमखप्रभुः ।
अष्टमूर्ति ध्येयमूर्तिरष्टप्रकृतिकारणम् ॥१४०॥
अष्टाङ्गयोगफल भूरष्टपत्राम्बुजासनः ।
अष्टशक्तिसमृद्ध श्रीरष्टैश्वर्यप्रदायकः ॥१४१॥
अष्टपीठोपपीठ श्रीरष्टमातृ समावृतः ।
अष्टभैरवसेव्यो ऽष्टवसुवन्द्यो ऽष्टमूर्तिभृत् ॥१४२॥
अष्टचक्र स्फुरन्मूर्तिश्ष्ट-द्रव्य हविः प्रियः ।
नवनागासनाध्यासी नवनिध्यनुशासिता ॥१४३॥
नवद्वारपुराधारो नवाधारनिकेतनः ।
नवनारायण स्तुत्यो नवदुर्गानिषेवितः ॥१४४॥
नवनाथ महानाथो नवनागविभूषणः ।
नवरत्नविचाङ्गो नवशक्तिशिरोधृतः ॥१४५॥
दशात्मको दशभुजो दशदिक्पति वन्दितः ।
दशाध्यायो दशप्राणो दशेन्द्रियनियामकः ॥१४६॥
दशाक्षरमहामन्त्रो दशाशाव्यापिविग्रहः ।
एकादशादिभीरुद्रैः स्तुत एकादशाक्षरः ॥१४७॥
द्वादशोद्दण्डदोर्दण्डो द्वादशान्तनिकेतनः ।
त्रयोदशभिदाभिन्न विश्वदेवाधिदैवतम् ॥१४८॥

चतुर्दशेन्द्रवरदश्चतुर्दशमनु प्रभुः ।
चतुर्दशादिविद्याढ्यश्चतुर्दश- जगत्प्रभुः ॥१४९॥
सामपञ्चदशः पञ्चदशीशीतांशुनिर्मलः ।
षोडशाधारनिलयः षोडशस्वरमातृकः ॥१५०॥
षोडशान्तपदावासः षोडशेन्दुकलात्मकः ।
कला सप्तदशी सप्तदशः सप्तदशाक्षरः ॥१५१॥
अष्टादशद्वीपपतिरष्टादश - पुराणकृत् ।
अष्टादशौषधिसृष्टिरष्टादशविधिः स्मृतः ॥१५२॥
अष्टादशलिपिव्याष्टि समष्टिज्ञान कोविदः ।
एकविंशः पुमानेक विंशत्यङ्गुलि पल्लवः ॥१५३॥
चतुर्विंशतितत्त्वात्मा पञ्चविंशाख्य पुरुषः ।
सप्तविंशतितारेशः सप्तविंशति योगकृत् ॥१५४॥
द्वात्रिंशद्भैरवाधीशश्चतुस्त्रिंशन्महाह्रदः ।
षट्त्रिंशतत्त्वसम्भूतिरष्टात्रिंशत्कलातनुः ॥१५५॥
नमदेकोनपञ्चाशन्मरुद्वर्गनिरर्गलः ।
पञ्चाशदक्षरश्रेणी पञ्चाशद्रुद्रविग्रहः ॥१५६॥
पञ्चाशद्विष्णुशक्तिशः पञ्चाशन्मातृकालयः ।
द्विपञ्चाशद्वपुः श्रेणी त्रिषष्ट्यक्षर संश्रयः ॥१५७॥
चतुःषष्ट्यर्णनिर्णेता चतुःषष्टि कलानिधिः ।
चतुःषष्टि . महासिद्धियोगिनीवृन्दवन्दितः ॥१५८॥
अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्र भैरव भावनः ।
चतुर्नवतिमन्त्रात्मा षण्णवत्यधिक प्रभुः ॥१५९॥
शतानन्दः शतधृति शतपत्रायतेक्षणः ।
शतनीकः शतमुखः शतधारावरायुधः ॥१६०॥
सहस्रपत्रनिलयः [illegible]स्रफणभूषणः ।
सहस्रशीर्षापुरुष [illegible]स्राक्ष [illegible]हस्रपात् ॥१६१॥
सहस्रनामसंस्तुत्यः सहस्राक्षबलापहः ।
दशसाहस्रफणभृत् फणिराजकृतासनः ॥१६२॥
अष्टाशीतिसहस्राद्य महर्षिस्तोत्रयन्त्रितः ।
लक्षाधीशप्रियाधारो लक्षाधारमनोमयः ॥१६३॥

चतुर्लक्षजपप्रीतश्चतुर्लक्षप्रकाशित: ।
चतुरशीतिलक्षाणं जीवानां देहसंस्थित: ॥१६४॥
कोटिसूर्यप्रतीकाश: कोटिचन्द्रांशुनिर्मल: ।
शिवाभवाध्युष्टकोटि विनायकधुरंधर: ॥१६५॥
सप्तकोटि महामन्त्रमन्त्रितावयवद्युति: ।
त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणी प्रणत पादुक: ॥१६६॥
अनन्तनामानन्तश्रीरनन्तानन्तसौख्यद: ।
ॐ इति वैनायकं नाम्नां सहस्त्रमिदमीरितम् ॥१६७॥
इदं ब्राह्मे मुहूर्त्ते वै य: पठेत् प्रत्यहं नर: ।
करस्थं तस्य सकलमैहिकामुष्मिकं सुखम् ॥१६८॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं धैर्यं शौर्यं बलं यश: ।
मेधा प्रज्ञा धृति: कान्ति सौभाग्यमति रूपता ॥१६९॥
सत्यं दया क्षमा शांतिर्दाक्षिण्यं धर्म शीलता ।
जगत संयमनं विश्वसंवादो वादपाटवम् ॥१७०॥
सभापाण्डित्यमौदार्यं गाम्भीर्यं ब्रह्मवर्चसम् ।
औन्नत्यं च कुलं शीलं प्रतापो वीर्यमार्यता ॥१७१॥
ज्ञा । विज्ञानमास्तिक्यं स्थैर्यं विश्वातिशायिता ।
धनधान्याभिवृद्धिश्च सकृदस्य जपाद्भवेत् ॥१७२॥
वश्यं चतुर्विधिं नृणां जपादस्य प्रजायते ।
राज्ञो राजकलत्रस्य राजपुत्रस्य मन्त्रिण: ॥१७३॥
जप्यते यस्य वश्यार्थं स: दासस्तस्य जायते ।
धर्मार्थकाम मोक्षाणमनायासेन साधनम् ॥१७४॥
शाकिनी डाकिनीरक्षो यक्षोरगभयापहम् ।
साम्राज्य सुखदं चैव समस्तरिपुमर्दनम् ॥१७५॥
रामस्त कलह ध्वंसी दग्धबीजप्ररोहणम् ।
दु:स्वप्न शामनं क्रुद्धस्वामीचित्तप्रसादनम् ॥१७६॥
षट्कर्माष्ट महासिद्धि त्रिकालज्ञान-साधनम् ।
परकृत्याप्रशमनं परचक्रविमर्दनम् ॥१७७॥
सङ्ग्रामरङ्गे सर्वेषामिदमेकं जयावहम् ।
सर्ववन्ध्यात्वदोषघ्नं गर्भरक्षैककारणम् ॥१७८॥

पठ्यते प्रत्यहं यत्र स्तोत्रं गणपतिरिदम् ।
देशे तत्र न दुर्भिक्षमीतयो दुरतानि च ॥१७९॥
न तद्गृहं जहाति श्रीर्यत्रायं जप्यते स्तवः ।
क्षयकुष्ट प्रमेहार्शोभगन्दरविषूचिकाः ॥१८०॥
गुल्मं प्लीहानमश्मानमतिसारं महोदरम् ।
कासं श्वासमुदवर्तं शूलं शोफादिसम्भवम् ॥१८१॥
शिरोरोगं वंमि हिक्कां गण्डमालामरोचकम् ।
वातपित्तकफद्वन्द्व त्रिदोषजनितज्वरम् ॥१८२॥
आगुन्तं विषमं शीतमुष्णं चैकाहिकादिकम् ।
इत्याद्युक्तमनुक्तं वा रोगं दोषादिसम्भवम् ॥१८३॥
सर्वं प्रशमयत्याशु स्तोत्रस्यास्य सकृज्जपः ।
सकृतपाठेन् संसिद्धः स्त्रीशूद्रपतिवैरपि ॥१८४॥
सहस्त्रनाममन्त्रोऽयं जपितव्यः शुभासये ।
महागणपतेः स्तोत्रं सकामः प्रजपन्निदम् ॥१८५॥
इच्छितान् सकलान् भोगानुपभुज्येह पार्थिवान् ।
मनोरथफलैर्दिव्यैर्व्योमयानैर्मनोरमैः ॥१८६॥
चन्द्रेन्द्रभास्करोपेन्द्र ब्रह्मशर्वादिसद्मसु ।
कामरूपः कामगतिः कामतो विचरन्निह ॥१८७॥
भुक्त्वा ये थेप्सिनान् भोगानभीष्टान् सहबन्धुभिः ।
गणेशानुचरो भूत्वा महागणपतेः प्रियः ॥१८८॥
नन्दीश्वरादिसान्दी नन्दितः सकलैर्गणः ।
शिवाभ्यां कृपया पुत्रनिर्विशेषं च लालितः ॥१८९॥
शिवभक्तः पूर्णकामो गणेश्वरवरात् पुनः ।
जातिस्मरो धर्मपरः सार्वभौमोऽभिजायते ॥१९०॥
निष्कामस्तु जपन्नित्यं भक्त्या विघ्नेशतत्परः ।
योग सिद्धिं परां प्राप्यं ज्ञानवैराग्य संस्थितः ॥१९१॥
निरन्तरोदितानन्दे परमानन्दसंविदि ।
विश्वोत्तीर्णे परे पारे पुनरावृत्तिवर्जिते ॥१९२॥
लीनो वैनायके धान्ति रमते नित्यनिर्वृत्तः ।
योनाभिर्हुनेदेतैर्स्चयेत् पूज्येन्नरः ॥१९३॥

राजानो वश्यतां यान्ति रिपवो यान्ति दास्ताम् ।
मन्त्रा सिध्यन्ति सर्वेऽपि सुलभास्तस्य सिद्धयः ॥१९४॥
मूलमन्त्रादीप स्तोत्रमिदं प्रियतरं मम् ।
नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्यां मम जन्मनि ॥१९५॥
दुर्वाभिर्नामभिः पूजां तर्पणं विधिवच्चरेत् ।
अष्टद्रव्यैर्विशेषेण जुहुयाद्भक्ति संयुतः ॥१९६॥
तस्येप्सितानि सर्वाणि सिद्धयन्त्यत्र न संशयः ।
इदं प्रजप्तं पठितं पाठितं श्रावितं श्रुतम् ॥१९७॥
व्याकृतं चर्चितं ध्यानं विमृष्टमभिनन्दितम् ।
इहामुत्र च सर्वेषां विश्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥१९८॥
स्वच्छन्दचारिणाप्येव येनायं धार्यते स्तवः ।
सरक्ष्यते शिवोदभूतैर्गणैरध्युष्ट कोटिभिः ॥१९९॥
पुस्तके लिखितं यत्र गृहे स्त्रोत्रं प्रपूजयेत् ।
तत्र सर्वोत्मा लक्ष्मीः संनिधत्ते निरन्तरम् ॥२००॥
दानैरशेषैरखिलैर्व्रतैश्च तीर्थैरशेषैः सकलैर्मखैश्च ।
न तत्फलं विन्दति यद्गणेशसहस्त्रनाम्नां स्मरणेन सद्यः ॥२०१॥
एतन्नाम्नां सहस्त्रं पठति दिनमणौ प्रत्यहंप्रोज्जिहाने,
सायं मध्यंदिने वा त्रिषवणमथवा संततं वाजनो यः ।
स स्यादैश्वर्यधुर्यः प्रभवति च सतां कीर्तिमुच्चैस्तनोति,
प्रत्यूहं हन्ति विश्वं वश्यति सुचिरं वर्धते पुत्र पौत्रैः ॥२०२॥
अकिंचनोऽपि मत्प्राप्तिचिन्तको नियताशनः ।
जपेत्तु चतुरो मासान् गणेशार्चन तत्परः ॥२०३॥
दरिद्रतां समुन्मूल्य सप्तजन्मानुगामपि ।
लभते महती लक्ष्मीमित्याज्ञा परमेश्वरी ॥२०४॥
आयुष्यवीतरोगं कुलमतिविमलं सम्पदश्चार्तदानाः,
कीर्तिर्नित्यावदाता भणितिरभिनवा कान्तिरव्याधिभव्या ।
पुत्राः सन्तः कलत्रं गुणवदभिमतं यद्यदेतश्च सत्यं,
नित्यं यः स्तोत्रमेतत् पठति गणपतेम्तस्यहस्ते समस्तम् ॥२०५॥

॥ इति श्रीगणपति सहस्रनाम स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

卐 इति श्रीगणेश तन्त्रम् सम्पूर्णम् 卐

‖ अथ विष्णुतन्त्रम् ‖

भगवान श्रीविष्णु ने समय समय पर कई अवतार लेकर असुरों का दमन कर धर्म का अभ्युदय किया एवं भक्तों की रक्षा की। कामना प्रयोजन हेतु मुख्य मुख्य प्रयोग दिये जा रहे हैं।

‖ विविध विष्णु मन्त्राः ‖

षडक्षर हरिः :- **श्रीं हरये नमः।** यह मंत्र दारिद्रय नाशक है। **ह्रीं हरये नमः।** यह मन्त्र भक्ति-मुक्ति दायक है। यह मंत्र ज्ञान वृद्धि कारक है। **क्लीं हरये नमः।** यह वंशवृद्धि कारक है। **हूं हरये नमः।** इस मंत्र से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है।

इस मंत्र के ऋषि नारद, छन्द गायत्री और देवता हरि है।

ध्यानम् :–

मेघ श्यामं सुनयनं काकपक्ष विराजितं-
राधिकादि प्रियायुक्तं पर्यटन्तं वने वने ।
विचित्र परिधिं वंशीं दधतं वाम दक्षयोः ॥

‖ अष्टाक्षर नारायण मंत्र प्रयोगः ‖

ॐ अस्य श्रीनारायण मंत्रस्य साध्यनारायण ऋषिः। देवी गायत्री छन्दः विष्णुर्देवता। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋषिन्यासः:- **ॐ साध्यनारायण ऋषये नमः शिरसि१. गायत्रीछन्दसे नमः मुखे २. विष्णुदेवतायै नमः हृदि ३. विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४.। इति ऋष्यादिन्यासः।**

अंगादिन्यास :-

ॐ क्रुद्धोल्काय नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ॐ महोल्काय नमः	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ॐ वीरोल्काय नमः	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ॐ द्युल्काय नमः	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
ॐ महस्रोल्काय नमः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ स्वाहोल्काय नमः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। अस्त्राय फट्।

मेरुतंत्रे : १. कुब्जोल्काय २. महोल्काय ३. अविरक्तोल्काय ४. सहस्त्रोल्काय ५. स्वाहोल्काय इत्यादि षड्न्यास देवता है। इ मंत्रस रत्न मंजूषा में अत्युल्काय तो हिन्दी तन्त्रसार में द्युल्काय है।

मन्त्र – ॐ नमो नारायणाय नमः।

मन्त्र न्यासः :-

ॐ नमः	हृदयाय नमः।	अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ नं नमः	शिरसे स्वाहा।	तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ मों नमः	शिखायै वषट्।	मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ नां नमः	कवचाय हुँ।	अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ रां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्।	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ यं नमः	अस्त्राय फट्।	करतलाय करपृष्ठाभ्यां नमः।
ॐ णां नमः	कुक्षौः।	करपृष्ठाभ्यां नमः।
ॐ यं नमः	पृष्ठे।	मणिबन्धये नमः।

द्वादशमूर्ति पञ्जर न्यास : (ललाटे) **ॐ अं केशवाय धात्रे नमः।** (कुक्षौ) **ॐ नं आं नारायणाय अर्यम्ने नमः।** (हृदि) **ॐ मों इं माधवाय मित्राय नमः।** (कण्ठे) **ॐ भं ईं गोविन्दाय वरुणाय नमः।** (दक्षपार्श्वे) **ॐ गं उं विष्णवे अंशवे नमः।** (दक्षिणांसे) **ॐ वं ऊं मधुसूदनाय भगाय नमः।** (गलदक्षिणभागे) **ॐ तें एं त्रिविक्रमाय विवस्वते नमः।** (वामपार्श्वे) **ॐ वां ऐं वामनाय इन्द्राय नमः।** (वामांसे) **ॐ सुं ओं श्रीधराय पूष्णे नमः।** (गलवामभागे) **ॐ दें औं हृषिकेशाय पर्जण्याय नमः।** (पृष्ठे) **ॐ वां अं पद्मनाभाय त्वष्ट्रे नमः।** (ककुदि) **ॐ यं अः दामोदराय विष्णवे नमः।**

व्यापक न्यासः **ॐ किरीट केयूरहारकुण्डलधर शङ्ख चक्रगदाम्भोज हस्त पीताम्बरधर श्रीवत्साङ्कित वक्षःस्थल श्री भूमिसहित स्वात्मज्योतिर्मय दीप्तकराय सहस्त्रादित्यतेजसे नमः।** इस मंत्र से शरीर में व्यापक न्यास करें।

ध्यानम् :–

उद्यत् कोटि दिवाकराभमनिशं शङ्खं गदां पङ्कजम्
चक्रं बिभ्रितमिन्दिरा वसुमती संशोभि पार्श्वद्वयम् ।
कोटीराङ्गद हार कुण्डलधरं पीताम्बरं कौस्तुभो -
द्दीप्तं विश्वधरं स्ववक्षसि लसत् श्रीवत्सचिन्हं भजे ।।

॥ यंत्रपूजनम् ॥

यंत्र में या यंत्राधार मण्डल में (सर्वतोभद्र में) मण्डूकादि पीठ पूजन करें :
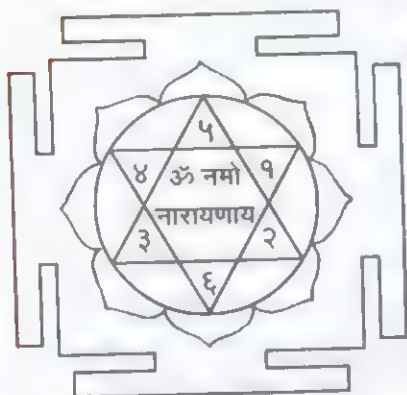
अष्टाक्षर विष्णु पूजन यंत्रम्

यथा - **मं मंडूकाय नमः, कां कालाग्नि रुद्राय नमः, वं वराहाय नमः, कूं कूर्माय नमः, पृं पृथिवे नमः, अं अमृतवार्णाय नमः, नं नंदनोद्यानाय नमः, कं कल्पवृक्षाय नमः, रं रत्नवेदिकायै नमः, रं रत्नसिंहासनाय नमः।**

विष्णु की नवपीठ शक्तियों का पूजन करें :- पूर्वादिक्रमेण - **ॐ विमलायै नमः, ॐ उत्कर्षिण्यै नमः, ॐ ज्ञानाय नमः, ॐ क्रियायै नमः, ॐ योगायै नमः, ॐ प्रह्वयै नमः, ॐ सत्यायै नमः, ॐ ईशानायै नमः।** मध्ये - **ॐ अनुग्रहायै नमः।**

स्वर्णादिनिर्मित यंत्र का अग्न्युत्तारण कर '**ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोग पीठात्मने नमः**' से पुष्पादि द्वारा आसन देकर पीठ पर विराजमान करें। प्राणप्रतिष्ठा करें, मूर्ति को भी प्राणप्रतिष्ठित कर यंत्र मध्य में रखें।

मूर्ति का पूजन कर विष्णुयंत्र के आवरण मण्डल देवताओं के पूजन की आज्ञा मांगे।

ॐ सच्चिन्मयः परोदेवः परामृतरस प्रियः ।
अनुज्ञां देहि मे विष्णो परिवारार्चनाय मे ॥

यंत्र पूजा में प्रत्येक नाम के बाद पादुकां पूजयामि तर्पयामि कहें।

प्रथमावरणम् :- (षट्कोण केसरेषु) अग्निकोणे - **ॐ कुब्द्धोल्काय** (कुब्जोल्काय) **हृदयाय नमः।** नैऋत्ये **ॐ महोल्काय शिरसे स्वाहा। वायव्ये - ॐ वीरोल्काय शिखायै वषट्।** ऐशान्ये - **ॐ द्वयुल्काय नमः कवचाय हुँ।** देवाग्रे - **ॐ सहस्त्रोल्काय नेत्रत्रयाय वौषट्।** (पंचाङ्ग पूजन में **सहस्त्रोल्काय अस्त्राय फट्** है।) स्वाग्रे **ॐ स्वाहोल्काय अस्त्राय फट्।**

द्वितीयावरणम् :- अष्टदलों के मूलभाग में पूर्वादिक्रमेण से - **ॐ ॐ नमः १. ॐ नं नमः २. ॐ मों नमः ३. ॐ नां नमः ४. ॐ रां नमः ५. ॐ यं नमः ६. ॐ णां नमः ७. ॐ यं नमः।**

तृतीयावरणम् :- अष्टदलों के मध्य भाग में पूर्वादिक्रमेण - **ॐ वासुदेवाय नमः, ॐ शांत्यै नमः, ॐ संकर्षणाय नमः, ॐ श्रियै नमः, ॐ प्रद्युम्नाय नमः, ॐ सरस्वत्यै नमः, ॐ अनिरुद्धाय नमः, ॐ रत्यै नमः।**

चतुर्थावरणम् :- (अष्टदलो के अग्रभाग में)- पूर्वे **ॐ चक्राय नमः।** आग्निकोणे- **ॐ कोस्तुभाय नमः।** दक्षिणे- **ॐ शंखाय नमः।** नैऋत्ये- **ॐ मुसलाय नमः।** पश्चिमे- **ॐ गदायै नमः।** वायव्ये **ॐ खड्गाय नमः।** उत्तरे- **ॐ पद्माय नमः।** ऐशान्ये **वनमालायै नमः।**

पंचमावरणम् :- भूपूर में (३१) पूर्वे **ॐ गरुड़ाय नमः।** (३२) दक्षिणे **ॐ शंखनिधये नमः** । (३३) पश्चिमे - **ॐ ध्वजाय नमः।** (३४) उत्तरे- **ॐ पद्मनिधये नमः** । (३५) आग्निकोणे- **ॐ विघ्नाय नमः।** (३६) नैर्ऋत्ये **ॐ आर्याय नमः** । (३७) वायव्ये **ॐ दुर्गायै नमः** । (३८) ऐशान्ये -**ॐ सेनान्यै नमः।**

षष्ठमावरणम् - पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि दिक्पालों व उनके आयुधों का आवाहन करे। पूर्वे **ॐ लं इन्द्राय नमः, रं अग्नये नमः, मं यमाय नमः, क्षं निऋत्ये नमः, वं वरुणाय नमः, यं वायवे नमः, कुं कुबेराय नमः, हं ईशानाय नमः।** इन्द्रेशानमध्ये **आं ब्रह्मणे नमः वरुणनिऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः।**

पुनः पूर्वादिक्रमेण - **वं वज्राय नमः, शं शक्तये नमः, दं दण्डाय नमः। खं खड्गाय नमः, पं पाशाय नमः, अं अंकुशाय नमः, गं गदायै नमः, त्रिं त्रिशूलाय नमः, पं पद्माय नमः, चं चक्राय नमः।**

तत्पश्चात् पूजन करके '**ॐ नमो नारायणाय**' इस मंत्र का जाप करे।

इस मंत्र का पुरश्चरण षोडश लक्ष जप का कहा गया है।

॥ अथ द्वादशाक्षरी विष्णुमंत्र विधानम् ॥

मंत्रो यथा - **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय। (शारदायाम्)**

विनियोगः - **अस्य श्री नमोभगवते वासुदेवाय मंत्रस्य प्रजापति ऋषिः। गायत्री छंदः। वासुदेव परमात्मादेवता। सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यासः - **ॐ प्रजापति ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, वासुदेवपरमात्म देवतायै नमः हृदि, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

अङ्गन्यासः -

ॐ	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
नमो	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
भगवते	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
वासुदेवाय	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

मंत्रवर्णन्यास : - **ॐ ॐ नमः मूर्धि, ॐ नं नमः भाले, ॐ मों नमः नेत्रयोः, ॐ भं नमः मुखे, ॐ गं नमः गले, ॐ वं नमः बाह्वो , ॐ तें नमः हृदये, ॐ वां नमः कुक्षौ, ॐ सुं नमः नाभौ, ॐ दें नमः लिङ्गे, ॐ वां नमः जान्वो, ॐ यं नमः पादयोः।**

ध्यानम् :--

विष्णुं शारदचन्द्रकोटिसदृशं शंङ्खं रथाङ्गं गदामंभोजं
दधतं सिताब्जनिलयं कान्त्या जगन्मोहनम् ।
आबद्धांगदहार कुण्डल महामौलिं स्फुरत्कंकणं
श्रीवत्सांकमुदार कौस्तुभधरं वंदे मुनीन्द्रैः स्तुतम् ॥

- **अन्य न्यासों में** :- विष्णु द्वादशमूर्तिन्यास एवं व्यापक न्यास पूर्ववत करें। केशवमातृका न्यास, विष्णु कृष्ण, राम व अन्य अवतारों की उपासना हेतु किये जाते है जो पुस्तक में आगे दिये हुये हैं।

॥ अथ यंत्रार्चनम् ॥

सर्वतोभद्रपीठ के मण्डूकादिपीठ देवताओं तथा विमलादि नवपीठ शक्तियों का पूजन पूर्व में वर्णित विधान से करें। यंत्र का अग्न्युत्तारण करें एवं पीठ पर स्थापित कर आवरण पूजा हेतु देव से आज्ञा प्राप्त करें।

ॐ सच्चिन्मय परोदेवः परामृतरसप्रियः ।
अनुज्ञां देहि मे विष्णो परिवारार्चनाय मे ॥

यंत्रार्चन में प्रत्येक देवता के नाम के बाद पादुकां पूजयामि तर्पयामि से गंधार्चन एवं तर्पण करें।

प्रथमावरणम् :- षट्कोण के पांच अङ्गों में पूजन करे। अग्निकोणे - **ॐ हृदयाय नमः।** नैर्ऋते - **ॐ नमः शिरसे स्वाहा।** वायव्ये - **ॐ भगवते शिखायै वषट्।** ईशान्ये - **ॐ वासुदेवाय कवचाय हुँ।** देवतार्पाश्चमे - **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अस्त्राय फट्।**
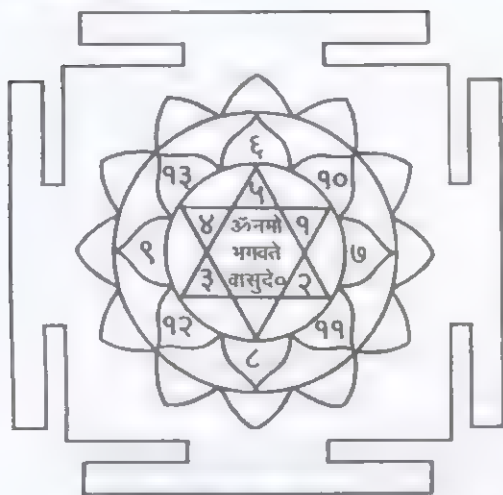
द्वादशाक्षर विष्णु पूजन यंत्रम्

द्वितीयावरणम् :- (अष्टदले) पूर्वे - **ॐ वासुदेवाय नमः**, दक्षिणे - **ॐ संकर्षणाय नमः**, पश्चिमे - **ॐ प्रद्युम्नाय नमः**, उत्तरे - **ॐ अनिरुद्धाय नमः।** अग्निकोणे - **ॐ शांत्यै नमः**, नैऋत्ये - **ॐ श्रियै नमः**, वायव्ये - **ॐ सरस्वत्यै नमः**, ऐशान्ये - **ॐ रत्यै नमः।**

तृतीयावरणम् :- (द्वादशदले) पूर्वादिक्रमेण - **ॐ केशवाय नमः, ॐ नं नारायणाय नमः, ॐ मों माधवाय नमः, ॐ भं गोविन्दाय नमः, ॐ गं विष्णवे नमः, ॐ वं मधुसूदनाय नमः, ॐ तें त्रिविक्रमाय नमः, ॐ वां वामनाय नमः, ॐ सुं श्रीधराय नमः, ॐ दें हृषिकेशाय नमः, ॐ वां पद्मनाभाय नमः, ॐ यं दामोदराय नमः।**

चतुर्थावरणम् एवं पंचमावरणम् :- अष्टाक्षरी मंत्र में भूपूर में गरुड़ादि देवता तथा इन्द्रादि लोकपालों व उनके आयुधों का जो पूजन दिया है उसी क्रम से पूजन करें।

पुरश्चरण - **अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्ष जपः ।**

॥ नारायण हृदयम् ॥

लक्ष्मीनारायण की प्रसन्नता के लिए लक्ष्मीहृदय के साथ इसका पाठ करने से धनधान्य ऐश्वर्य की वृद्धि होती है। अशक्ति में लक्ष्मी मंत्र का जाप ही करें अन्यथा लक्ष्मीरुष्ट हो जाती है।

विनियोग: - **ॐ अस्य श्रीनारायण हृदय स्तोत्रमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीलक्ष्मीनारायणो देवता, ॐ बीजम्, नमः शक्तिं, नारायणायेति कीलकं, श्रीलक्ष्मीनारायण प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।**

ऋषिन्यासः - ॐ भार्गव ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखेः। श्रीलक्ष्मीनारायण देवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमो गुह्ये। नमः शक्तये नमः पादयोः। नारायणायेति कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ नारायणः परं ज्योतिः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नारायणः परं ब्रह्मेति तर्जनीभ्यां नमः। ॐ नारायणः परोदेव इति मध्यमाभ्यां नमः। ॐ नारायणः परो ध्यायेति अनामिकाभ्यां नमः। ॐ नारायणः परं धामेति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ नारायणः परो धर्म इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इसी तरह हृदयादिन्यास करें।

दिग्रक्षणः - ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय हुं फट् बध्नामि नमश्चक्राय स्वाहा। इस मन्त्र से तीन ताली देकर दशों दिशाओं में दिग्बंधन करें।

ध्यानम् -

उद्यदादित्यसंकाशं पीतवास समच्युतम् ।
शङ्खचक्रगदापाणिं ध्यायेल्लक्ष्मीपतिं हरिम् ॥

''ॐ नमो नारायणाय'' इस मंत्र का १०८ बार जप करके स्तोत्र का पाठ करें।

ॐ नारायणः परं ज्योतिरात्मा नारायणः परः ।
नारायणः परंब्रह्म नारायण नमोस्तुते ॥१॥
नारायणः परोदेव दाता नारायणः परः ।
नारायणः परो ध्याता नारायण नमोस्तुते ॥२॥
नारायणः परंधाम ध्यानं नारायणः परः ।
नारायणः परो धर्म्मो नारायण नमोस्तुते ॥३॥
नारायणः परो वेद्यो विद्या नारायणः परः ।
विश्वं नारायणः साक्षान्नारायण नमोस्तुते ॥४॥
नारायणद्विधिर्जातो जातो नारायणाच्छिवः ।
जातो नारायणादिन्द्रो नारायण नमोस्तुते ॥५॥
रविर्नारायणं तेजश्चान्द्रं नारायणं महः ।
वह्निर्नारायणः साक्षान्नारायण नमोस्तुते ॥६॥
नारायण उपास्यः स्याद्गुरुर्नारायणः परः ।
नारायणः परोबोधो नारायण नमोस्तुते ॥७॥

नारायणः फलं मुख्यं सिद्धिर्नारायणः सुखम् ।
सेव्यो नारायणः शुद्धो नारायण नमोस्तुते ॥८॥

॥ इतिमूलाष्टकम् ॥

॥ अथप्रार्थनादशकम् ॥

ॐ नारायणस्त्वमेवासि दहराख्ये हृदि स्थितः ।
प्रेरकः प्रेर्य्यभाणानां त्वया प्रेरितमानसः ॥१॥

त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा जपामि जनपावनम् ।
नानोपासन मार्गाणां भावहृद्भावबोधकः ॥२॥

भावार्थकृद्भावभूतो भावसौख्यप्रदोभव ।
त्वन्मायामोहितं विश्वं त्वयैव परिकल्पितम् ॥३॥

त्वदधिष्ठानमात्रेण सैषा सर्वार्थकारिणी ।
त्वमेव तां पुरस्कृत्य मम कामान्समर्प्पय ॥४॥

न मे त्वदन्यस्त्रातास्ति त्वदन्यन्नहि दैवतम् ।
त्वदन्यं नहि जानामि पालकं पुण्यरूपकम् ॥५॥

यावत्सांसारिको भावो मनःस्थो भावनात्मकः ।
तावत्सिद्धिर्भवेत्साध्या सर्वथा सर्वदा विभो ॥६॥

पापिनामहमेवाग्र्यो दयालूनां त्वमग्रणीः ।
दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये ॥७॥

त्वयाण्यहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता ।
आमयो नैव सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः ॥८॥

पापसंघपरिक्रांतः पापात्मा पापरूपधृक् ।
त्वदन्यः कोऽत्र पापेभ्यस्त्राता मे जगतीतले ॥९॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या च गुरुस्त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

पहले नारायण हृदय फिर लक्ष्मी हृदय पुनः नारायण हृदय का पाठ करें। इस तरह से आधि व्याधि का नाश होवें सभी कामनायें सिद्ध होवें। प्रेतादि उपद्रव नष्ट होवे।

लक्ष्मी हृदयकं प्रोक्तं विधिना साधयेत्सुधीः ।
भृगुवारे च रात्रौ च पूजयेत्पुस्तक द्वयम् ॥१॥

सर्वस्वं सर्वदा सत्यं गोपयेत्साधयेत्सुधीः ।
गोपनात्साधानाल्लोके धन्यो भवति तत्त्वतः ॥२॥

॥ इति अथर्वण रहस्ये उत्तरभागे नारायण हृदयम् ॥

॥ नारायण सूक्तम् ॥

ॐ सहस्त्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्व शंभुवम् ।
विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम् ॥१॥
विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायण ँ हरिम् ।
विश्वमे वेदं पुरुषस्तद् विश्वमुप जीवति ॥२॥
पतिं विश्वस्यात्मेश्वर ँ शाश्वत ँ शिवमच्युतम् ।
नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम् ॥३॥
नारायणं परोज्योतिरात्मा नारायणः परः ।
नारायण परं ब्रह्मतत्त्वं नारायणः परः ॥४॥
नारायण परो ध्याता ध्यानं नारायणः परः ।
यच्च किञ्चिज्जगत् सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपिवा ॥५॥
अन्तर - बहिश्च तत् सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः ।
अनंतमव्ययं कवि ँ समुद्रेन्तं विश्व शंभुवम् ॥६॥
पद्मकोश प्रतीकाश ँ हृदयं चाप्यधोमुखम् ।
अद्यो निष्ठयावित स्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति ॥७॥
ज्वालमालाकुलंभाति विश्वस्यायतनं महत् ।
सन्तत ँ शिलाभिस्तु लम्बत्याकोश सन्निभम् ॥८॥
तस्यान्ते सुषिर ँ सूक्ष्मं तस्मिन् सर्वं प्रतिष्ठितम् ।
तस्य मध्ये महानग्नि - र्विश्वार्चि-र्विश्वतोमुखः ॥९॥
सोग्रभुग्विभजन् तिष्ठन्नाहारमजरः कविः ।
तिर्यगूर्ध्वमधः शायी रश्मयस्तस्य सन्तताः ॥१०॥
संतापयति स्वं देह मा पादतल मस्तकः ।
तस्य मध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थितः ॥११॥
नीलतोयद मध्यस्था विद्युल्लेखेव भास्वरा ।

नीवार शूक वत्तन्वी पीताभास्वत्यणूपमा ॥१२॥
तस्या शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः ।
स ब्रह्मा स शिवः स हरिः सेन्द्र परम स्वराट् ॥१३॥
ऋतु ँ सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिंगलम् ।
उर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमा नमः ॥१४॥
नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥१५॥

॥ इति नारायण सूक्तम् ॥

॥ अथ नारायणास्त्रम् ॥

॥ अथमन्त्रः ॥

हरिः ॐ नमो भगवते श्रीनारायणाय नमो नारायणाय विश्वमूर्तये नमः श्री पुरुषोत्तमाय पुष्पदृष्टिं प्रत्यक्षं वा परोक्षं वा अजीर्णं पञ्चविषूचिकां हन २ ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं ज्वरं नाशय नाशय चतुरशीतिवातान ष्टादशकुष्ठान् अष्टादशक्षय रोगान् हन२ सर्वदोषान् भंजय२ तत्सर्वं नाशय २ शोषय शोषय आकर्षय २ शत्रून् २ मारय २ उच्चाटयोच्चाटय विद्वेषय २ स्तंभय २ निवारय २ विघ्नैर्हन २ दह २ मथ २ विध्वंसय २ चक्रं गृहीत्वा शीघ्रमागच्छागच्छ चक्रेण हत्वा परविद्यां छेदय छेदय भेदय २ चतुःशीतानि विस्फोटय २ अर्शवातशूलदृष्टि सर्पसिंहव्याघ्र द्विपदचतुष्पद पद बाह्यान्दिवि भुव्यन्तरिक्षे अन्येऽपि केचित् तान्द्वेषकान्सर्वान् हन २ विद्युन्मेघनदी पर्वताटवीसर्वस्थान रात्रिदिनपथचौरान् वशं कुरु कुरु हरिः ॐ नमो भगवते ह्रीं हुं फट् स्वाहा ठः ठं ठं ठः नमः ॥

॥ विधानम् ॥

एषा विद्या महानाम्नी पुरा दत्ता मरुत्वते ।
असुराञ्जितवान्सर्वाञ्च्छ क्रस्तु बलदानवान् ॥१॥
यः पुमान्पठते भक्त्या वैष्णवो नियतात्मना ।
तस्य सर्वाणि सिद्ध्यन्ति यच्च दृष्टिगतं विषम् ॥२॥
अन्यदेहविषं चैव न देहे संक्रमेद्ध्रुवम् ।
संग्रामे धारयत्यङ्गे शत्रून्वै जयते क्षणात् ॥३॥

अतः सद्यो जयस्तस्य विघ्नस्तस्य न जायते ।
किमत्र बहुनोक्तेन सर्वसौभाग्यसंपदः ॥४॥
लभते नात्र संदेहो नान्यथा तु भवेदिति ।
गृहीतो यदि वा येन बलिना विविधैरपि ॥५॥
शतिं समुष्णतां याति चोष्णं शीतलतां व्रजेत् ।
अन्यथा न भवेद्विद्यां यः पठेत्कथितां मया ॥६॥
भूर्जपत्रे लिखेन्मंत्रं गोरोचनजलेन च ।
इमां विद्यां स्वके बद्धा सर्वरक्षां करोतु मे ॥७॥
पुरुषस्याथवा स्त्रीणां हस्ते बद्धा विचक्षणः ।
विद्रवंति हि विघ्नाश्च न भवंति कदाचन ॥८॥
न भयं तस्य कुर्वंति गगने भास्करादयः ।
भूतप्रेतपिशाचाश्च ग्रामग्राही तु डाकिनी ॥९॥
शाकिनीषु महाघोरा वेतालाश्च महाबलाः ।
राक्षसाश्च महारौद्रा दानवा बलिनो हि ये ॥१०॥
असुराश्च सुराश्चैव अष्टयोनिश्च देवता ।
सर्वत्र स्तम्भिता तिष्ठेन्मन्त्रोच्चारणमात्रतः ॥११॥
सर्वहत्याः प्रणश्यंति सर्वं फलति नित्यशः ।
सर्वे रोगा विनश्यंति विघ्नस्तस्य न बाधते ॥१२॥
उच्चाटनेऽपराह्ने तु संध्यायां मारणे तथा ।
शान्तिके चार्धरात्रे तु ततोऽर्थः सर्वकामिकः ॥१३॥
इदं मन्त्ररहस्यं च नारायणास्त्रमेव च ।
त्रिकालं जपते नित्यं जयं प्राप्नोति मानवः ॥१४॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ज्ञानं विद्यां पराक्रमम् ।
चिंतितार्थ सुखप्राप्तिं लभते नात्र संशयः ॥१५॥

॥ इति नारायणास्त्रम् ॥

॥ श्रीसुदर्शनकवचम् ॥

॥श्रीमत्प्रणतार्तिहरवरदपरब्रह्मणे नमः॥

॥ श्रीसुदर्शनाय नमः॥

विनियोगः – अस्य श्रीसुदर्शनकवच महामन्त्रस्य भगवानन्तर्यामी नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः। श्रीसुदर्शनरूपी श्रीमन्नारायणो देवता। रं बीजम्। हुं शक्तिः। फट् कीलकम्। श्रीसुदर्शनप्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। शङ्खं चक्रं गदां पद्मं मुसलं खड्गमेव च। धेनुं च यमपाशं च मुद्रा ह्येताः प्रकीर्तिताः॥ पाञ्चजन्याय शङ्खाधिपतये नमः। सुदर्शनाय हेतिराजाय नमः। कौमोदक्यै गदाधिपतये नमः। पं पद्माय नमः। मुं मुसलाय नमः। नं नन्दकाय खड्गाधिपतये नम। सुं सुरम्यै नमः। यं यमपाशाय नमः॥

ध्यानम् :–

शङ्खं शार्ङ्गं सखेटं हलपरशुगदाकुन्तपाशान्दधानं
त्वन्यैवमिश्रै चक्रेष्वसिमुसललसद्वज्र शूलाङ्कुशाग्रीन् ।
ज्वालाकेशं किरीटं ज्वलदनलनिभं वह्निमुग्रस्थ पीठं
प्रत्यालीढं त्रिनेत्रं रिपुगण दमनं भावयेच्चक्रराजम् ॥

अथवा :- ॐ अस्य श्रीसुदर्शनकवचस्तोत्र महामन्त्रस्याहिर्बुध्न्यो भगवानृषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीसुदर्शन महा श्रीनृसिंहो देवता। सहस्त्रारमिति बीजम्॥ सुदर्शनमिति शक्तिः। चक्रमिति कीलकम्। मम सर्वरक्षार्थे श्रीसुदर्शन पुरुष श्रीनृसिंहप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥ ॐ सं अचक्राय स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः॥

करन्यासः - ॐ हं विचक्राय स्वाहा तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐस्त्रां सुचक्राय स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ रं सूर्यचक्राय स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः॥ ॐ सुदर्शनचक्राय स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः। हुं ज्वाला चक्राय स्वाहा। करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥

अङ्गन्यासः - ॐ सं अचक्राय स्वाहा हृदयाय नमः॥ ॐ हं विचक्राय स्वाहा शिरसे स्वाहा॥ ॐ स्त्रां सुचक्राय स्वाहा शिखायै वषट्॥ ॐ रं सूर्य्यचक्राय स्वाहा बलाय कवचाय हुम्॥ ॐ हुं ज्वालाचक्राय स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ फट् सुदर्शनचक्राय स्वाहा अस्त्राय फट्॥ ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः॥

अथ ध्यानम् :—

शङ्खं चक्रं च चापं परशुमिषुमसिं शूलपाशाङ्कुशास्त्रं
बिभ्राणं वज्रखेटं हलमुसलगदाकुंतमत्युग्रदंष्ट्रम् ।
ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिभं हारकेयूरभूषं,
ध्यायेत् षट्कोणसंस्थं सकलरिपुजन प्राण संहारचक्रम् ॥

ॐ नमो भगवते सुदर्शनाय भो भो सुदर्शन दुष्टं दारय दारय दुरितं हन हन पापं दह दह। रोगं मर्दय मर्दय। आरोग्यं कुरु कुरु॥ ॐ ॐ ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं फट् फट् दह दह हन हन भीषय भीषय स्वाहा॥

मस्तकं मे सहस्त्रारः फालं पातु सुदर्शनः ।
भ्रुवौ मे चक्रराट् पातु नेत्रे द्वेऽर्केन्दुलोचनः ॥१॥
कर्णौ वेदस्तुतः पातु घ्राणं मे सुविभीषणः ।
महादीप्तः कपोलौ मे ओष्ठौ रुद्रवरप्रदः ॥२॥
दन्तान्पातु जगद्वन्द्यो रसनां मम सर्वदा ।
सर्वविद्यार्णवः पातु गिरं वागीश्वरो मम ॥३॥
वीरसिंहो मुखं पातु चुबुकं भक्तवत्सलः ।
सर्वदा पातु कण्ठं मे मेघगम्भीरनिस्वनः ॥४॥
मम स्कन्धयुगं पातु धराभारापहारकः ।
बाणासुरभुजारण्यदावाग्निः पातु मे भुजौ ॥५॥
कालनेमिशिरश्छेत्ता पातु मे कूर्परद्वयम् ।
करौ दिव्यायुधः पातु नखान्वज्रनखोपमः ॥६॥
कुक्षिं पातु महाशूरः स्तनौ शत्रुनिषूदनः ।
पातु मे हृदयं भक्तजनानन्दश्च सर्वदा ॥७॥
सर्वशास्त्रार्थसद्भूतिहेतुः पातूदरं मम ।
वक्षः पातु महाधारो दिवि दानवमर्दनः ॥८॥
पार्श्वौ मे पातु दीनार्तः शरणागतवत्सलः ।
सर्वदा पृष्ठदेशं मे देवानामभयप्रदः ॥९॥
नाभिं षट्कोणधामा मे पातु घण्टारवः कटिम् ।
आदिमूलः पुमान् पातु गुह्यदेशं निरन्तरम् ॥१०॥
ऊरू पातु महाशूरो जानुनी भीमविक्रमः ।

जङ्घे पातु महावेगो गुल्फौ पातु महाबलः ॥११॥
पादौ पातु सदा श्रीदो ब्रह्माद्यैरभिवन्दितः ।
पातु पादतलद्वन्द्वं विश्वभारो निरन्तरम् ॥१२॥
सुदर्शननृसिंहो मे शरीरं पातु सर्वदा ।
मम सर्वांगरोमाणि ज्वालाकेशः स रक्षतु ।
मम सर्वाङ्गकान्ति वै कल्पान्ताग्नि समप्रभः ॥१३॥
अन्तर्बहिश्च मे पातु विश्वात्मा विश्वतोमुखः ।
रक्षाहीनं च यत्स्थानं प्रचण्डस्तत्र रक्षतु ॥१४॥
सर्वतो दिक्षु मे पातु ज्वालाशतपरीवृतः ।
त्रिनेमिः पातु मत्प्राणान्भ्रातृ न्पात्वनलद्युतिः ॥१५॥
भार्यां लक्ष्मीसखः पातु पुत्रान्पातु सुदर्शनः ।
श्रीकरो मे श्रियः पातु बन्धून्पातु बलाधिकः ॥१६॥
गोपांश्चैव पशून् पातु सहस्त्रारधरस्सदा ।
क्षेत्रं विश्वम्भरः पातु मित्रं पात्वघनाशनः ॥१७॥
दिवारात्रौ च मां पातु अहिर्बुध्न्यवरप्रदः ।
षोडशोत्तुँगबाहुस्तु पातु मे राजसम्मुखम् ॥१८॥
वैरिविद्वेषसङ्घे तु संग्रामे शत्रुसूदनः ।
अवान्तरा अबाधाश्च त्रासयेत्सार्वकालिकम् ॥१९॥
आधिव्याधिमहाव्याधिमध्ये चोपद्रवे तथा ।
अपमृत्युमहामृत्यु नाशयेच्चक्रनायकः ॥२०॥
परप्रयुक्तमन्त्रांश्च यन्त्रतन्त्रविभञ्जनः ।
सुदर्शनोऽयमस्माकं दुर्दशादुःखनाशनः ॥२१॥
सर्वसम्पत्प्रदाता मां चक्रराजो निरन्तरम् ।
जपं पातु जगद्वन्द्यो मनसामक्षयप्रदः ॥२२॥
प्रमादांश्चास्त्रधामासौ ज्ञानं रक्षतु सर्वदा ।
अणिमादिमहैश्वर्यं पातु साम्राज्यसिद्धिदः ॥२३॥
तिर्यग्ज्वालाग्निरूपश्च नष्टराज्यार्थदो मम ।
राज्यं पातु सहस्त्रारः पादातिं पातु वाऽच्युतः ॥२४॥
चतुरंगबल[illegible]मं रक्ष त्वं चक्रभावन ।

ज्योतिर्मयश्चक्रराजः सर्वान्वरुणरक्षक ॥२५॥
अखण्डमण्डितः पातु परचक्रापहारकः ।
त्रिविक्रमश्चक्रराजः पातु धैर्य्यं सदा मम ॥२६॥
नमो दशदिशव्याप्तिकीर्तिं पातु सुदर्शनः ।
आयुर्बलं धृतिं पातु लोकत्रयभयापहः ॥२७॥
सुधाममण्डलसंविष्टो मायापञ्चसुशीतलः ।
राजद्वारे सभामध्ये पातु मां चण्डविक्रमः ॥२८॥
पूर्वे सुदर्शनः पातु आग्नेये पातु चक्रराट् ।
याम्ये रथांगकः पातु त्रिनेमिः पातु नैर्ऋते ॥२९॥
लोकत्रयप्रभाकारज्वालो रक्षतु पश्चिमे ।
षट्कोणः पातु वायव्ये ह्यस्त्रराजोत्तरां दिशम् ॥३०॥
ऐशान्यां चक्रराट् पातु मध्ये भूचक्रचक्रिणः ।
अनन्तादित्यसंकाशः क्ष्मान्तरिक्षौ च पातु मे ॥३१॥
सर्वतो दिक्षु मे पातु ज्वालासाहस्त्रसंवृतः ।
एवं सर्वत्र संरक्ष सर्वदा सर्वरूपवान् ॥३२॥
सकारः पृथिवी ज्ञेयो हकारो अप उच्यते ।
स्त्राकारो वायुरुक्तश्च रकारोऽम्बर उच्यते ॥३३॥
हुंकारमग्निरित्याहुः फट्कारं सूर्यरूपकम् ।
स्वाहाकारं न्यसेन्मूर्ध्नि पीतरक्तसुवर्णकम् ॥३४॥
सकारं नासिकायां तु हकारं वदने न्यसेत् ।
स्त्राकारं हृदये चैव सृष्टिसंहारकारणम् ॥३५॥
रकारं विन्यसेद् गुह्ये हुंकारं जानुदेशके ।
फकारं गुल्फदेशे तु टकारं पादयोर्न्यसेत् ॥३६॥
सर्वाणि चैव वर्णानि जप्यान्यङ्गुलिपर्वसु ।
क्षिप्रं सौदर्शनं चक्रं ज्वालामालातिभीषणम् ॥३७॥
सर्वदैत्यप्रशमनं कुरु देववराच्युत ।
सुदर्शन महाज्वाल छिन्धि छिन्धि सुवेदनाम् ॥३८॥
परयन्त्रं च तन्त्रं च छिन्धि मन्त्रौषधादिकम् ।
सुदर्शन महाचक्र गोविन्दस्य करायुध ॥३९॥

सूक्ष्माधार महावेग छिन्धि छिन्धि सुभैरव ।
छिन्धि पातं च लूतं च छिन्धि घोरं महद्विषम् ॥४०॥
इति सौदर्शन दिव्यं कवचं सर्वकामदम् ।
सर्वबाधा प्रशमनं सर्वव्याधिविनाशनम् ॥४१॥
सर्वशत्रुक्षयकरं सर्वमंगल दायकम् ।
त्रिसन्ध्यं पठतां नृणां सर्वदा विजयप्रदम् ॥४२॥
सर्वपापप्रशमनं भोगमोक्षेक साधकम् ।
प्रातरुत्थाय यो भक्त्या पठेदेतत्सदा नरः ॥४३॥
तस्य सर्वेषु कालेषु विघ्नः क्वापि न जायते ।
यक्षराक्षसवेतालभैरवाश्च विनायकाः ॥४४॥
शाकिनी डाकिनी ज्येष्ठा निद्रा बालग्रहादयः ।
भूतप्रेतपिशाचाद्या अन्ये दुष्टग्रहा अपि ॥४५॥
कवचस्यास्य जप्तारं दृष्ट मात्रेण तेऽखिलाः ।
पलायन्ते यथा नागाः पक्षिराजस्य दर्शनात् ॥४६॥
अस्यायुतं पुरश्चर्यं दशांशं तिलतर्पणम् ।
हवन तर्पणं चैव तर्पणं गन्धवारिणा ॥४७॥
पुष्पाञ्जलिर्दशांशं च मिष्टान्नं सघृतप्लुतम् ।
चतुर्विंशद्द्विजा भोज्या वैष्णवा वेदपारगा ।
पञ्चसंस्कारसंपन्नास्तत्तत्कार्याणि साधयेत् ॥४८॥
विन्यस्यांगेष्विदं धीरो युद्धार्थं योऽभिगच्छति ।
रणे जित्वाखिलाञ्छत्रून् विजयी भवति ध्रुवम् ॥४९॥
मन्त्रिताम्बु त्रिवारं वा पिबेत्सप्तदिनावधि ।
व्याधयः प्रविनश्यन्ति सकलाः कुक्षिसम्भवाः ॥५०॥
मुखप्रक्षालने नेत्रनासिकारोगनाशनम् ।
भीतानामभिषेकं च महाभयनिवारणम् ॥५१॥
सप्ताभिमन्त्रितानेन तुलसीमूलमृत्तिका ।
लेपान्नश्यन्ति ते रोगाः सद्यः कुष्ठादयोऽखिलाः ॥५२॥
ललाटे तिलकं स्त्रीणां मोहनं सर्ववश्यकृत् ।
परेषां मन्त्रयन्त्राणि तन्त्राण्यपि विनाशकृत् ॥५३॥

व्यालसर्पादि सर्वेषां विषापहरणं परम् ।
सौवर्णे रजते वापि भूर्जे ताम्रादिकेऽपि वा ॥५४॥
लिखित्वा त्वर्चयेद्भक्त्या स श्रीमान् भवति ध्रुवम् ।
बहुना किमिहोक्तेन यद्यद्वाञ्छति यो नरः ॥
सकलं प्राप्नुयादस्य कवचस्य प्रसादतः ॥५५॥
ध्वजे गजानामथ वाजिसायके शरेष्वमोघेष्वथ वीरपट्टके ।
लिखेच्च चक्रं विजयेषु संयुगेष्वमोघवीर्यं जयमाप्नुयाद्ध्रुवम् ॥५६॥
श्रियः प्रवृत्यै परिपूजनीयो ह्यभीष्टसिद्धिं कुरुते सुदर्शनः ।
कन्याश्च भर्ता पुरुषो वधूश्च लभेच्च विद्यां धनधान्ययुक्तम् ॥५७॥

॥इति श्रीविहगेन्द्रसंहितायां तन्त्ररहस्ये सुदर्शनकवचं समाप्तम्॥

॥ श्रीरामचन्द्र मन्त्र प्रयोगः॥

षडक्षरमंत्राः-

	षड्मंत्र स्वरूपम्	ऋषिः	छन्दः	देवता
१	रां रामाय नमः	ब्रह्मा:	गायत्री	श्रीरामः
२	क्लीं रामाय नमः	संमोहन, विश्वामित्र	गायत्री	श्रीरामः
३	ह्रीं रामाय नमः	शक्तिः	गायत्री	श्रीरामः
४	ऐं रामाय नमः	दक्षिणामूर्तिः	गायत्री	श्रीरामः
५	श्रीं रामाय नमः	अगस्तिः	गायत्री	श्रीरामः
६	ॐ रामाय नमः	शिवः	गायत्री	श्रीरामः

हिन्दी तन्त्रसार में अन्य मंत्र भी है यथा - **श्रीं राम श्रीं स्वाहा। श्रीं राम श्रीं हुं फट्। श्रीं राम श्रीं नमः। ह्रीं राम ह्रीं हुं फट्। ह्रीं राम ह्रीं नमः। क्लीं राम क्लीं स्वाहा। क्लीं राम क्लीं हुं फट्। क्लीं राम क्लीं नमः।**

षडक्षर मंत्रस्य प्रयोग यथा - **ॐ रां रामाय नमः मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्रीछन्दः। श्रीरामो देवता। रां बीजम्। नमः शक्तिः। चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्ये जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यासः ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्रीरामदेवतायै नमः हृदि। रां बीजाय नमः गुह्ये। नमः शक्तये नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

मंत्र	करन्यासः	अङ्गन्यासः
ॐ रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ॐ रीं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ॐ रूं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ॐ रैं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
ॐ रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ रः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

ध्यानम् –

नीलाम्भोधरकांति कान्तमनिशं वीरासना-ध्यासनीम्
मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरं हस्ताम्बुजं जानुनि ।
सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभां राधवम्
पश्यन्तं मुकुटाङ्गदादि विविधाकल्पोज्जवलाङ्गं भजे ॥

॥ रामयंत्रपूजनम् ॥
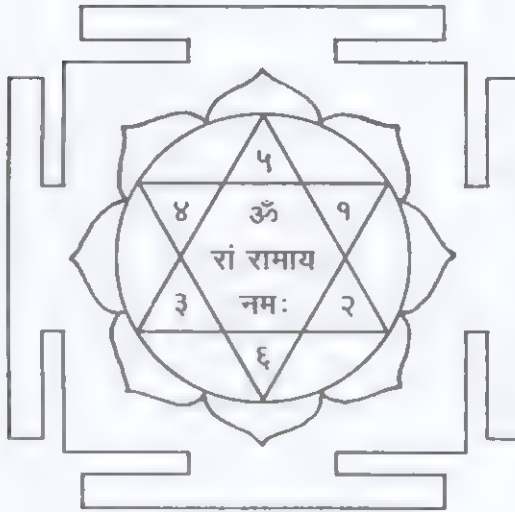
रामषडक्षर मन्त्र पूजन यंत्र

सर्वप्रथम सर्वतोभद्र मण्डल बनायें। उस पर मण्डूकादि पीठदेवताओं का पूजन विष्णु यंत्र की तरह करें।

ॐ मण्डूकादि परतत्वांत पीठदेवताभ्यो नमः। नवपीठ शक्तियों का पूर्वादिक्रम से पूजन करे। **ॐ विमलायै नमः, ॐ उत्कर्षिण्यै नमः, ॐ ज्ञानायै नमः, ॐ क्रियायै नमः, ॐ योगायै नमः, ॐ प्रह्वयै नमः**, ॐ सत्यायै नमः, **ॐ ईशानायै नमः**, मध्ये - ॐ अनुग्रहायै नमः।

स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र मूर्ति का अग्न्युत्तारण प्राणप्रतिष्ठा करके सर्वतोभद्र पर रखें।

ॐ नमो भगवते रामाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्म[illegible]योग

पद्मपीठात्मने नमः। इस मंत्र से पुष्पादि द्वारा आसन प्रदान करें। आवरण पूजा के लिये देव से आज्ञा प्राप्त करें।

ॐ सच्चिन्मयः परोदेवः परामृतरसप्रियः ।
अनुज्ञां देहि मे राम परिवारार्चनाय ते ॥

इस मंत्र से पुष्पाञ्जलि द्वारा आसन प्रदान करे। प्रत्येक नाम मंत्र के साथ **पादुकां पूजयामि तर्पयामि** कहे (गंध पुष्पार्चन करें तथा तर्पण करें)।

प्रथमावरणम् :- देववामपार्श्वे - **श्रीसीतायै नमः। सीता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र।** अग्निकोणे - **ॐ शार्ङ्गाय नमः।** दक्षिणपार्श्वे **ॐ शराय नमः।** वामपार्श्वे - **ॐ चापाय नमः।**

द्वितीयावरणम् :- (षट्कोणे) अग्निकोणे **ॐ रां हृदयाय नमः,** निर्ऋते - **ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा,** वायव्ये - **ॐ शिखायै वषट्,** ऐशान्ये - **ॐ रैं कवचाय हुँ,** स्वाग्रे **ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट्,** देवपश्चिमे - **ॐ रः अस्त्राय फट्।**

तृतीयावरणम् :- (अष्टदले) पूर्वादिक्रमेण - **ॐ हनुमते नमः, ॐ सुग्रीवाय नमः, ॐ भरताय नमः, ॐ विभीषणाय नमः, ॐ लक्ष्मणाय नमः, ॐ अंगदाय नमः, ॐ शत्रुघ्नाय नमः, ॐ जाम्बवते नमः।**

चतुर्थावरणम् :- (अष्टदलाग्रेषु) **ॐ सृष्टाय नमः, ॐ जयन्ताय नमः, ॐ विजयाय नमः, ॐ सुराष्ट्राय नमः, ॐ राष्ट्रवर्धनाय नमः, ॐ अकोपाय नमः, ॐ धर्मपशलाय नमः, ॐ सुमन्ताय नमः।**

पंचमावरणम् :- (भूपूरे) पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि दिक्पाल एवं उनके आयुधों का पूजन करें। यथा - **ॐ इन्द्राय नमः, ॐ अग्नये नमः, ॐ यमाय नमः, ॐ निर्ऋते नमः, ॐ वरुणाय नमः, ॐ वायवे नमः, ॐ कुबेराय नमः, ॐ ईशानाय नमः,** इन्द्रईशानयोर्मध्ये - **ॐ ब्रह्मणे नमः।** वरुणनिऋत्योर्मध्ये - **ॐ अनंताय नमः।**

पुनः भूपूरे - **ॐ वज्राय नमः, ॐ शक्तये नमः, ॐ दण्डाय नमः, ॐ खड्गाय नमः, ॐ पाशाय नमः, ॐ अङ्कुशाय नमः, ॐ गदायै नमः, ॐ त्रिशूलाय नमः, ॐ पद्माय नमः, ॐ चक्राय नमः।**

भगवान श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान कर पूजन करें -

वामेभूमिसुता पुरस्तु हनुमान पश्चात् सुमित्रासुत
शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयो वायव्यादि कोणेषु च ।

सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
मध्ये नील सरोज कोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम् ॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान करें -

श्रीरामचन्द्र रघुपुङ्गव राजवर्य
राजेन्द्रराम रघुनायक राघवेश ।
राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र
दासोऽहं मध्ये भवतः शरणागतोऽस्मि ॥

इस मंत्र का पुरश्चरण ६ लाख मंत्र जप का है। जातीफल चंदन के होम से राजवशीकरण, कमल के होम से धनप्राप्ति, नीलपुष्प से वशीकरण, बिल्वहोम से सुख-समृद्धि, दूर्वा होम से दीर्घायु, पलाश होम से मेधावृद्धि होवे, लालचंदन व लाल पुष्प होम से अभीष्ट की प्राप्ती होवें।

॥ दशाक्षर मंत्र प्रयोगः ॥

मन्त्र - 'हुं जानकी वल्लभाय स्वाहा'

विनियोगः- ॐ अस्य मंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिः। विराट् छंदः। सीतापाणिपरिग्रहे श्रीरामो देवता। हुं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋषिन्यासः - ॐ वशिष्ठ ऋषये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। सीतापाणिपरिग्रहे श्रीरामो देवतायै नमः हृदि। हुं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयो। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ क्लीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास :- इसी तरह हृदयादि का न्यास करें।

मंत्रवर्णन्यासः - ॐ हुं नमः शिरसि। ॐ जां नमः ललाटे। ॐ नं नमः भ्रूमध्ये। ॐ कीं नमः तालुनि। ॐ वं नमः कण्ठे। ॐ ल्लं नमः हृदि। ॐ भां नमः बाह्वोः। ॐ यं नमः नाभौ। ॐ स्वां नमः जान्वोः। ॐ हां नमः पादयोः।

ध्यानम् :-

अयोध्यानगरे रम्ये रत्न - सौंदर्यमण्डपे
मंदारपुष्पैराबद्धवितान तोरणांकिते ।

सिंहासनसमारूढं पुष्पकोपरि राघवम्
रक्षोभिर्हरिभिर्देवै र्दिव्ययानगतैः शुभैः ॥
संस्तूयमानं मुनिभिः सर्वतः परिसेवितम्
सीतालंकृतवाभागं लक्ष्मणेनोपशोभितम् ॥१॥
वैदेहि सहितं सुरद्रुमतले हेमेमहामण्डपे
मध्ये पुष्पकमानसे मणिमये वीरासने संस्थितम् ।
अग्रेवाचयति प्रभञ्जनसुते तत्वं मुनिभ्यपरम्
व्याख्यातं भरतादिभि परिवृतंराम भजे श्यामलम् ॥२॥

षड़क्षरमंत्र के विधान की तरह यंत्रार्चन करें। एवं पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

लोकाऽभिरामं रणरङ्गधीरं
राजीव नेत्रं रघुवंश नाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरन्तं
श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥

अष्टादशाक्षर मंत्रः :- '**ॐ नमः भगवते रामाय महापुरुषाय स्वाहा**'

- यह भरत द्वारा उपासित मंत्र है। इसके **विश्वामित्र ऋषि, गायत्रीछंद, दशास्यदलनो रामभद्र देवता, ॐ बीजं तथा नमः शक्ति है।**

द्वाविंशदक्षर मंत्र :- '**ॐ नमो भगवते रामभद्राय बन्दीविमुक्त शृङ्खले स्वाहा।**' यह इन्द्र द्वारा उपासित मंत्र है जिसके प्रभाव से वे रावण के कारागार से मुक्त हो सकतेथे। इस मंत्र के **विभीषण ऋषि, जगतीछंद, रामभद्रदेवता, ॐ बीजं तथा स्वाहा शक्ति है।**

द्वात्रिंशदक्षर मंत्रः :- (विभीषणोपासितं) '**रामभद्र महष्वास रघुवीर नृपोत्तम दशास्यन्तक रां रक्ष देहि दापय मे श्रियम्**'

यह मोक्षदायक, भक्तों को अभयप्रद राज्य एवं श्री प्रदान करने वाला मंत्र है। **इस मंत्र के विश्वामित्र ऋषि, अनुष्टुप् छंद तथा रामभद्र देवता है।**

अङ्गन्यासः -

रामभद्र	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
महष्वास	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
रघुवीर	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
नृपोत्तम	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।

दशाम्यन्तक रां रक्ष	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
देहि दापय मे श्रियम्	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

रामगायत्रीः - ॐ दाशरथये विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि। तन्नो रामः प्रयोदयात्॥ इस मंत्र के वामदेव ऋषि, गायत्री छंद,जानकीवल्लभ देवता, श्रीराम बीजम्, दाशरथये शक्ति है।

(तंत्रों में दशारथाय नहीं लिखा है, दाशरथाय या दाशरथये लिखा है।)

सीतामंत्रः - 'श्रीसीतायै नमः।' इस मंत्र के जनक ऋषि, गायत्री छंद, सीताभगवती देवता, श्रीं बीजं तथा नमः शक्ति है। श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः से अंगादि न्यास करें।

सीतागायत्री :- ॐ जनकजायै विद्महे रामप्रियायै धीमहि। तन्नः सीता प्रचोदयात्॥

न्यास :- ॐ जनकजायै हृदयाय नमः। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा। ॐ रामप्रियायै शिखायै वषट्। ॐ धीमहि कवचाय हुं। ॐ तन्नः सीता नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट्।

॥ अङ्गदेवता ॥

सीता (षडक्षर) - श्रीं सीतायै स्वाहा।

(शारदा तिलक में ऋषि राम एवं नारदपुराण में वाल्मीकि बताया गया है)

ध्यानम् -

ध्यायेत् सदा महादेवीं सीतां त्रैलोक्य पूजितां
तप्तहाटकवर्णाभां पद्मयुग्मं करद्वये ।
सद्रत्नभूषण-स्फूर्जद दिव्यदेहां शुभात्मिकां
नाना वस्त्रां शशिमुखीं पद्माक्षीं मुदितान्तराम् ॥
पश्यन्तीं राघवं पुण्यं शय्यायां षड्गुणेश्वरीम् ।

लक्ष्मण - लं लक्ष्मणाय नमः। (सप्ताक्षर)

ऋषि अगस्त्य, छन्द गायत्री, देवता लक्ष्मण, बीज लं, शक्ति नमः है। लां लीं लूं लें लौं लः से षडङ्गन्यास करें।

द्विभुजं स्वर्णरुचिरं तनुं पद्मनिभेक्षणम् ।
धनुर्वाणकरं रामसेवा संसक्त मानसम् ॥

भरत – **भं भरताय नमः। भां भीं भूं** से षडङ्गन्यास करें।

शत्रुघ्न – **शं शत्रुघ्नाय नमः। शां शीं शूं** से षडङ्गन्यास करें। ऋष्यादि लक्ष्मण मन्त्र के समान है।

॥ रामकवचम् ॥

आजानुबाहुमरविंददलायता- क्षमा जन्मशुद्धरसहा समुखप्रसादम् ।
श्यामं गृहीत-शरचापमुदाररूपं रामं सराममभिरामं मनुस्मरामि ॥

विनियोगः – अस्य श्रीरामकवचस्य अगस्त्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सीतालक्ष्मणोपेतः, श्रीरामचन्द्रो देवता, वरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम् –

नीलजीमूतसंकाशं विद्युद्वर्णवरावृतम् ।
कोमलाङ्गं विशालाक्षं युवानमतिसुन्दरम् ॥१॥
सीतासौमित्रि सहितं जटामुकुटधारिणम् ।
सासितूण धनुर्बाणपाणिं दावनमर्दनम् ॥२॥
यदा चौरभये राजभये शत्रुभये तथा ।
ध्यात्वा रघुपतिं क्रुद्धं कालानल समप्रभम् ॥३॥
चीरकृष्णाजिनधरं भस्मोद्धूलित विग्रहम् ।
आकर्णाकृष्ट - विशिखकोदण्डभुजमण्डितम् ॥४॥
रणे रिपून् रावणादींस्तीक्ष्णमार्गणवृष्टिभिः ।
संहरंतः - महावीरमुग्रमैन्द्ररथस्थितम् ॥५॥
लक्ष्मणाद्यैर्महावीरैर्वृतं हनुमदादिभिः ।
सुग्रीवाद्यैर्महावीरैः शैलवृक्षक रोद्यतैः ॥६॥
वेगात्कराल हुंकारैर्भुभुक्कारमहारवैः ।
नदद्भिः परिवादाद्भिः समरे रावणं प्रति ॥७॥
श्रीराम शत्रुसंघान्मे हन मर्दय खादय ।
भूतप्रेतपिशाचादीन् श्रीरामाशु विनाशय ॥८॥
एवं ध्यात्वा जपेद्रामकवचं सिद्धिदायकम् ।
सुतीक्ष्ण वज्रकवचं शृणु वक्ष्याम्यनुत्तमम् ॥९॥

॥ कवचम् ॥

श्रीरामः पातु मे मूर्ध्नि पूर्वे च रघुवंशज ।
दक्षिणे मे रघुवरः पश्चिमे पातु पावनः ॥१॥
उत्तरे मे रघुपतिर्भालं दशरथात्मजः ।
भ्रुवोर्दूर्वादलश्यामस्तयोर्मध्ये जनार्दनः ॥२॥
श्रोत्रं मे पातु राजेन्द्रो दृशो राजीव लोचनः ।
घ्राणं मे पातु राजर्षिर्गण्डो मे जानकीपतिः ॥३॥
कर्णमूले खरध्वंसी भालं मे रघुवल्लभः ।
जिह्वां मे वाक्पतिः पातु दंतपंक्तीं रघुत्तम ॥४॥
ओष्ठौ श्रीरामचन्द्रो मे मुखं पातु परात्परः ।
कंठं पातु जगद्वंद्यः स्कंधौ मे रावणांतकः ॥५॥
धनुर्वाणधरः पातु भुजौ मे बालिमर्दनः ।
सर्वाण्यंगुलिपर्वाणि हस्तौ मे राक्षसांतकः ॥६॥
वक्षो मे पातु काकुत्स्थः पातु मे हृदयं हरिः ।
स्तनौ सीतापतिः पातु पार्श्वं मे जगदीश्वरः ॥७॥
मध्य मे पातु लक्ष्मीशो नाभि मे रघुनायकः ।
कौसल्येयः कटी पातु पृष्ठं दुर्गतिनाशनः ॥८॥
गुह्यं पातु ऋषिकेशः सक्थिनी सत्यविक्रमः ।
ऊरू शार्ङ्गधरः पातु जानुनी हनुमत्प्रियः ॥९॥
जङ्घेपातु जगद्व्यापी पादौ मे ताटिकांतकः ।
सर्वाङ्गं पातु मे विष्णुः सर्वसंधीन नामयः ॥१०॥
ज्ञानेन्द्रियाणि प्राणादीन् पातु मे मधुसूदनः ।
पातु श्रीरामभद्रो मे शब्दादीन्विषयानपि ॥११॥
द्विपदादीनि भूतानि मत्संबंधीनि यानि च ।
जामदग्न्यमहादर्पदलनः पातु तानि मे ॥१२॥
सौमित्रपूर्वजः पातु वागादीनीन्द्रियाणि च ।
रोमांकुराण्यशेषाणि पातु सुग्रीवराज्यदः ॥१३॥
वाङ्मनोबुद्ध्यहंकारै ज्ञानाज्ञान कृतानि च ।

जन्मान्तर कृतानीह पापानि विविधानि च ॥१४॥
तानि सर्वाणि दग्ध्वाशु हरदोण्डखण्डनः ।
पातु मां सर्वतो रामः शार्ङ्गबाणधरः सदा ॥१५॥
इति श्रीरामचन्द्रस्य कवचं वज्रसंमितम् ।
गुह्याद्गुह्यतमं दिव्यं सुतीक्ष्ण मुनिसत्तम ॥१६॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि श्रावयेद्वा समाहितः ।
स याति परमं स्थानं रामचन्द्र प्रसादतः ॥१७॥
महापातकयुक्तो वा गोघ्नो वा भ्रूणहा तथा ।
श्रीरामचन्द्र कवचपठनात् शुद्धिमाप्नुयात् ॥१८॥
ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः ।
भो सुतीक्ष्ण यथा पृष्टं त्वया ममपुरा शुभम् ,
तथा श्रीरामकवचं मया ते विनिवेदितम् ॥१९॥

अधिक आवृत्ति करनी हो तो श्लोक १ से १५ पुनरावृत्ति करें।

॥ इति आनन्दरामायणे मनोहरकाण्डे सुतीक्ष्णागस्त्य संवादे श्रीरामकवचं समाप्तं ॥

॥ श्रीरामरक्षास्तोत्रम् ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्र मंत्रस्य बुधकौशिक ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसीता-रामचन्द्रो देवता, सीता शक्तिः, श्रीमद्हनुमान् कीलकं, श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे श्रीरामरक्षास्तोत्र मंत्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- बुधकौशिक ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे, श्रीसीता-रामचन्द्र देवतायै नमः हृदि, सीता शक्तये नमः नाभौ, श्रीमद्हनुमान कीलकाय नमः पादयोः, श्रीरामचन्द्र-प्रीत्यर्थे श्रीरामरक्षास्तोत्र मंत्रजपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ध्यानम्–

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थम्,
पीतं वासोवसानं नवकमलदल-स्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् ।
वामाङ्कारूढ-सीतामुखकमल-मिलल्लोचनं नीरदाभम्,
नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरु-जटामण्डनं रामचन्द्रम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

चरितं रघुनाथस्य शतकोटि-प्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥१॥
ध्यात्वा नीलोत्पल-श्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकी-लक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ॥२॥
सासि-तूण-धनुर्बाण-पाणिं नक्तं चरान्तकम् ।
स्व-लीलया जगत्-त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ॥३॥
रामरक्षां पठेत् प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम् ।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥४॥
कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥५॥
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः ।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेश-कार्मुकः ॥६॥
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥७॥
सुग्रीवेशः कटि पातु सक्थिनि हनुमत्प्रभुः ।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत ॥८॥
जानुनी सेतुकृत् पातु जङ्घे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥९॥
एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
सः चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ॥१०॥
पाताल-भूतल-व्योम चारिणश्छद्म-चारिणः ।
न द्रुष्टमपि शक्तासे रक्षितं राम-नामभिः ॥११॥
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥१२॥
जगज्जैत्रैक-मन्त्रेण राम-नाम्नाऽभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत् तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥१३॥
वज्रपञ्जर नामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥१४॥

आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुध-कौशिकः ॥१५॥
आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः ॥१६॥
तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीक-विशालाक्षौ चीर-कृष्णाजिनाम्बरौ ॥१७॥
फल-मूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥१८॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥१९॥
आत्त-सज्ज-धनुषाविषु-स्पृशावक्षयाशुग-निषङ्गसङ्गिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम् ॥२०॥
सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ।
गच्छन् मनोरथोऽस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः ॥२१॥
रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णा कौसल्येयो रघूत्तमः ॥२२॥
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराण-पुरुषोत्तमः ।
जानकी-वल्लभः श्रीमानप्रमेय-पराक्रमः ॥२३॥
इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयाऽन्वितः ।
अश्वमेघाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥२४॥
रामं दूर्वादल-श्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नरः ॥२५॥
रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरम् ।
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ।
राजेन्द्रं सत्य सन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्त मूर्तम् ।
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥२६॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥२७॥
श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम ।

श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रण कर्कश राम राम ।
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥२८॥

श्रीरामचन्द्र चरणौ मनसा स्मरामि ।
श्रीरामचन्द्र चरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्र चरणौ शिरसा नमामि ।
श्रीरामचन्द्र चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥२९॥

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः ,
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥३०॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ।
लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥३२॥

मनोजवं मारुततुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानर यूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥३३॥

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकि-कोकिलम् ॥३४॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥३५॥

भर्जनं भव-बीजानामर्जनं सुख-सम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ॥३६॥

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे ।
रामेणाभिहता निशाचर-चमू रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं पर-तरं रामस्य दासोऽस्म्यहम् ।
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम! मामुद्धर ॥३७॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने! ॥३८॥

॥ इति श्रीरामरक्षास्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ कृष्णावतार विविध मन्त्राः॥

एकाक्षरी मंत्र :- 'क्लीं' इस मंत्र के मोहन नारद संमोहन ऋषि, गायत्री छंद, संमोहन कृष्ण देवता है।

क्लां क्लीं क्लूं क्लें क्लौं क्लः से षडङ्गन्यास करे।

मेरु तन्त्रके अनुसार नारद ऋषि, जगती छन्द, देवता श्री कृष्ण, गं बीजं, ॐ शक्ति है। गां गीं इत्यादि से न्यास करें।

अष्टाक्षर मंत्राः –

१. श्रीकृष्णः शरणं मम।

ॐ श्री हृदयाय नमः, ॐ कृष्ण शिरसे स्वाहा, ॐ शरणं शिखायै वषट्, ॐ मम कवचाय हुं। ॐ श्रीकृष्णः शरणं मम अस्त्राय फट्।

२. क्लीं हृषिकेशाय नमः। दोनों मंत्रों के ऋषिन्यास एकाक्षरी मंत्रवत् है।

३. श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय स्वाहा। इस मंत्र के नारद ऋषि, अनुष्टुप् छंद एवं श्रीकृष्ण देवता है।

॥ दशाक्षर मन्त्र प्रयोगः ॥

दशाक्षर मन्त्र – गोपीजन बल्लभाय स्वाहा।

विनियोग न्यास – शिरसि नारद ऋषये नमः। मुखे विराट् छन्दसे नमः। हृदि श्रीकृष्णाय देवतायै नमः। गुह्ये क्लीं बीजाय नमः। पादयो स्वाहा शक्तये नमः।

इसके बाद 'मंत्राधिष्ठातृ देवतायै दुर्गायै नमः' से दुर्गा को नमस्कार कर अन्य न्यास करे। (हिन्दीतन्त्रसारे)

दशाक्षरन्यास – गों नमः दक्षांगुष्ठे। पीं नमस्तर्जन्यां। जं नमो मध्यमायां। नं नमोऽनामिकायां। वं नमः कनिष्ठिकायां। ल्लं नमो वामाङ्गुष्ठे। भां नमो वामतर्जन्यां यं नमः वाम मध्यमायां। स्वां नमो वामानामिकायां हां नमो वामकनिष्ठायां।

गों नमः हृदि। पीं नमः शिरसि। जं नमः शिखायां। नं नमः सर्वाङ्गे। वं नमः दिक्षु। ल्लं नमः दक्षपार्श्वे। भां नमः वामपार्श्वे। यं नमः कटिदेशे। स्वां नमः पृष्ठे। हां नमः मूर्ध्नि।

पञ्चाङ्गन्यास -

आचक्राय स्वाहा	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
विचक्राय स्वाहा	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
सुचक्राय स्वाहा	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
त्रैलोक्य रक्षण चक्राय स्वाहा	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
असुरान्तक चक्राय स्वाहा	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

सृष्टिन्यासः - शिरसि - **गों नमो**। नेत्रयो - **पीं नमः**। कर्णयोः - **जं नमः**। घ्राण - **नं नमो**। मुखे - **वं नमः**। हृदि **ल्लं नमो**। नाभौ - **भां नमः**। लिङ्गे - **यं नमो**। जानुनोः - **स्वां नमो**। पादयोः - **हां नमः**।

ध्यानम् -

फुल्लेन्दीवर - कान्तिमिन्दुवदनं वहवितंस प्रियम्
श्रीवत्साङ्कमुदार - कौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ।
गोपीनां नयनोत्पलार्चित - तनुं गो-गोपसङ्घावृतम्
गोविन्दं कलवेणु वादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे ॥

॥ अथ यंत्र आवरण पूजनम् ॥

अष्टदल एवं भूपूर युक्त यंत्र बनायें। अष्टदल के पत्रों के मूलभाग को केशर कहते हैं। बाहर के चतुर्द्वार युक्त परिधि को भूपूर कहते है।
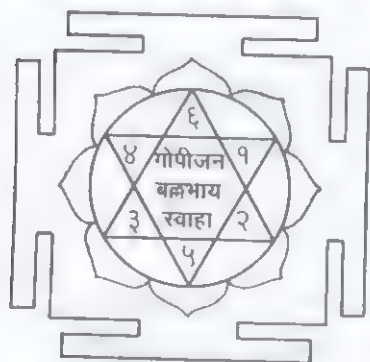
कृष्ण दशाक्षर यंत्रम्

प्रथमावरणम् - यंत्र मध्य में उपर्युक्त ध्यान मन्त्र से देव का आवाहन करें मूर्ति पूजा करें। इसके बाद केशरों में पूजन करें।

पूर्वे - **ॐ दामाय नमः**। दक्षिणे - **ॐ सुदामाय नमः**। पश्चिमे - **ॐ वासुदेवाय नमः**। उत्तरे **ॐ किङ्किण्यै नमः**। आग्नेये **ॐ आचक्राय स्वाहा हृदयाय नमः**। नैऋते **ॐ विचक्राय स्वाहा शिरसे स्वाहा**। वायव्ये **ॐ सुचक्राय स्वाहा शिखायै वषट्**। ईशाने **ॐ त्रैलोक्य रक्षण चक्राय स्वाहा कवचाय हुँ**। चतुर्दिक्षु **ॐ असुरान्तक चक्राय स्वाहा अस्त्राय फट्**।

(चक्रों का पूजन यन्त्र में षट्कोण हो तो उसमें भी किया जा सकता है। अस्त्रायफट् से पूजन अग्रभाग कोण में होगा।)

द्वितीयावरणम् - (पत्रों पूर्वादिक्रम से) अष्टदले - ॐ रुक्मिण्यै नमः। ॐ सत्यभामायै नमः। ॐ नाग्नजित्यै नमः। ॐ सुनन्दायै नमः। ॐ मित्रविन्दायै नमः। ॐ सुलक्षणायै नमः। ॐ जाम्बवत्यै नमः। ॐ सुशीलायै नमः।

तृतीयावरणम् - (पत्रों के अग्रभाग में पूर्वादिक्रम से) अष्टदले - ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ देवक्यै नमः। ॐ नन्दाय नमः। ॐ यशोदायै नमः। ॐ बलभद्राय नमः। ॐ सुभद्रायै नमः। ॐ गोपेभ्य नमः। ॐ गोपीभ्य नमः।

चतुर्थावरणम् -अष्टदले- पत्रों के बाहर पूर्वादि क्रम से - ॐ मन्दराय नमः। ॐ सन्तानकाय नमः। ॐ पारिजाताय नमः। ॐ कल्पवृक्षाय नमः। मध्ये - हरिचन्दनाय नमः।

पञ्चमावरणम् - पूर्वादि दिशाओं में - ॐ श्रीकृष्णाय नमः। ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ देवकीनन्दनाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ यदुश्रेष्ठाय नमः। ॐ वार्ष्णेयाय नमः। ॐ धर्मसंस्थापनाय नमः। ॐ असुराक्रान्त भारहारिण्यै नमः।

षष्ठमावरणम् - भूपुर में दशों दिक्पालों एवं आयुधों का पूजन करें। देव का अर्चन कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। गौतमीय तन्त्र में लिखा है कि देव के अक्षय निर्मल स्वरूप दक्षभाग में श्वेत चन्दन युक्त श्वेत तुलसी एवं रजोगुणमयी नित्यारक्षिणी मूर्ति स्वरूप वामभाग में रक्तचन्दन युक्त रक्ततुलसी समर्पण करें। शिरोदेश पर दो तुलसीपत्र, दो करवीर पुष्प और दो पद्मपुष्प प्रदान करें।

॥ द्वादशाक्षर कृष्णमंत्र प्रयोगः ॥

(१) श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय स्वाहा॥

(२) ह्रीं श्रीं गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ॥

मेरुतन्त्र में ध्यान इस प्रकार है :-

चन्द्र - कुन्द - सुगौराङ्गं रक्तपद्मदलेक्षणं
अरिकम्बु गदा पद्मं बाहुदण्डैश्च विभ्रतम् ।
दिव्यैश्च चन्दनालेपैः पद्मनाना विभूषितं
पीताम्बरलसद्गात्रं तरुणं मुनि सेवितम् ।
विकसत् पद्म मध्यस्थं ध्यात्वा नन्दात्मजं प्रभुं
स्वहृत पद्मगतं देवं पुराणं पुरुषं नवम् ॥

हिन्दी तन्त्रसार में लिखा है कि इसमें सृष्टि स्थिति क्रम से पूजन न करके संहार

क्रम से करें। अर्थात् मातृकान्यास संहार क्रम से करें। देवपूजा नख से शिर पर्यन्त करे। यंत्र पूजा में जो विधान कहा है उसमें कृष्ण की जो पूजा लिखी है उसे विलोम क्रम से करे अर्थात् पहले भूपूर में दिक्पालों की, फिर अष्टदल के देवताओं की, फिर षट्कोण में पूजा करें।

न्यासः- **श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। कृष्णाय अनामिकाभ्यां नम। गोविन्दाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।** इसी तरह से हृदयादिन्यास करे।

॥ षोडशाक्षर मंत्र प्रयोगः ॥

मन्त्र - **ॐ नमो भगवते रुक्मिणीवल्लभाय स्वाहा।**

विनियोगः - **ॐ अस्य मंत्रस्य नारदऋषिः, अनुष्टुप्छंदः, श्रीरुक्मिणीवल्लभ देवता सर्वार्थसिद्धये जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यासः - **नारद ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। रुक्मिणीवल्लभ देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥**

मन्त्रन्यासः - **ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नमः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ भगवते मध्यमाभ्यां नमः। ॐ रुक्मिणी वल्लभाय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ स्वाहा कनिष्ठाभ्यां नमः।** इसी तरह हृदयादिन्यास करें।

ध्यानम् :-

तापिञ्छच्छविरङ्कगां प्रियतमां स्वर्णप्रभामम्बुज-
प्रद्योद्वामभुजां स्ववामभुजयाश्लिष्यन् सचित्तस्मयाम् ।
श्लिष्यन्तीं स्वमन्य हस्त विलसित् सौवर्ण वेत्रश्चिरम्
पायान्नः शणसून पीतवसनो नानाविभूषो हरिः ॥

॥ यंत्रपूजा ॥

सर्वतोभद्रपीठ पर मण्डूकादि पीठदेवताओं का आवाहन करें। विमलादि नवपीठ शक्तियों का आवाहन विष्णु यंत्र की तरह करें।

देव से आवरण पूजा की आज्ञा प्राप्त करे। यंत्र का अग्न्युत्तारण करें। सर्वतोभद्र पर स्थापित करे।

प्रथमावरणम् :- (षट्कोणेषु) - **अग्निकोणे ॐ हृदयाय नमः। निर्ऋतिकोणे - नमः शिरसे स्वाहा।** वायव्ये - **भगवते शिखायै वषट्।** ईशाने -

रुक्मिणीवल्लभाय कवचाय हुँ। देवाग्रे - स्वाहा अस्त्राय फट्।
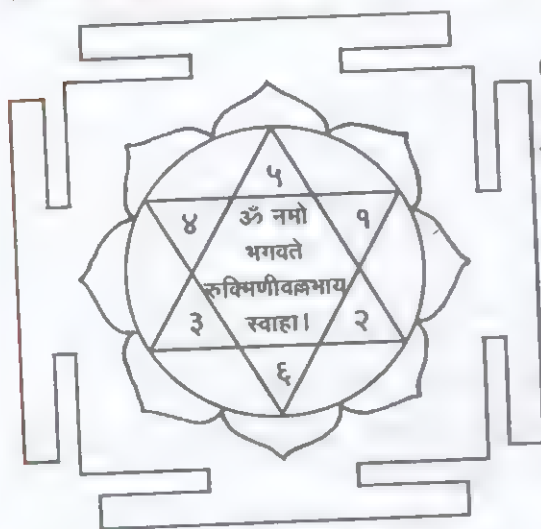
षोडशाक्षर कृष्ण मन्त्र पूजन यंत्रम्

द्वितीयावरणम् :- (अष्टदलेषु) पूर्वादिक्रमेण - **ॐ नारदाय नमः। ॐ पर्वताय नमः। ॐ जिष्णवे नमः। ॐ निशठाय नमः। ॐ उद्धवाय नमः। ॐ विश्वक् सेनाय नमः। ॐ शौनेयाय नमः। ॐ शैलेयाय नमः।**

तृतीयावरणम् - भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों व उनके आयुधो का आवाहन करे।

यंत्र मध्य में प्रधान देवता का आवाहन पूजन करे। एक लक्ष जप करके घृतमधु शर्करा युक्त रक्तपुष्प से होम करे।

॥ अष्टादशाक्षरो मन्त्र विधानम् ॥ (शारदा तिलके)

विनियोगः - **अस्य मन्त्रस्य नारद ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीकृष्णो देवता, क्लीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यासः - **ॐ नारदऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। श्रीकृष्णदेवतायै नमः हृदि। क्लीं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

मन्त्र - **क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा।**

पञ्चाङ्गन्यासः—

क्लीं कृष्णाय	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
गोविन्दाय	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
गोपीजन	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
वल्लभाय	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
स्वाहा	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

ध्यानम् –

स्मरेद् वृदावने रम्ये मोहयन्तमनारतम् ।
गोविन्दं पुण्डरीकाक्षं गोपकन्याः सहस्त्रशः ॥
आत्मनो वदनाम्भोजे प्रेरिताक्षिमधुव्रताः ।
पीडिताः कामवाणेन चिरामाश्लेषणोत्सुकाः ॥
मुक्ताहारलसत् पीनतुङ्गस्तनभरानताः ।
स्त्रस्तधम्मिल्लवसना मदस्खलितभाषणाः ॥
दत्तपङ्क्ति प्रभोद्भासि स्पन्दमानाधराञ्चिताः ।
विलोभयन्तीर्विविधैर्विभ्रमैर्भाव गर्भितैः ॥

॥ अथ यन्त्रावरण पूजनम् ॥

सर्वतोभद्र मण्डल पर मण्डूकादि पीठ देवताओं का पूजन कर देव की नवपीठ शक्तियों का आह्वान करें।

अष्टादशाक्षर कृष्ण पूजन यंत्रम्

पूर्वादिक्रमेण – **ॐ विमलायै नमः। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः। ॐ ज्ञानायै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ योगायै नमः। ॐ प्रह्वयै नमः। ॐ सत्यायै नमः। ॐ ईशानायै नमः।** मध्ये – **अनुग्रहायै नमः।**

यंत्र को घृत से अभ्यज्य कर दुग्ध जलधारा से अग्न्युत्तारण करें। एवं मण्डल पर स्थापित कर आज्ञा मांगे

ॐ सविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ।
अनुज्ञां कृष्ण मे देहि परिवारार्चनाय ते ॥

प्रथमावरणम् – यंत्र मध्ये (षट्कोण के पाँच कोणो में) – अग्निकोणे – **क्लीं कृष्णाय हृदयाय नमः**। नैऋते – **गोविन्दाय शिर से स्वाहा**। वायवे – **गोपीजन शिखायै वषट्**। ईशाने– **वल्लभाय कवचाय हुँ**।

प्रत्येक नामावली के साथ **पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** सर्वत्र उच्चारण करें। प्रत्येक आवरण पूजा के बाद पुष्पाञ्जलि अर्पण करते हुये कहें।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं (अमुक) प्रथमावरणार्चनम् ॥

द्वितीयावरणम् - (अष्टदलो में पूर्वादि क्रमेण से) ॐ कलिंद्यै नमः। ॐ नाग्रजित्यै नमः। ॐ मित्र विन्दायै नमः। ॐ चारुहासिन्यै नमः। ॐ रोहिण्यै नमः। ॐजांबवत्यै नमः। ॐ रक्मिण्यै नमः। ॐ सत्यभामायै नमः।

तृतीयावरणम् - (अष्टदल के पात्राग्रे में) - ॐ ऐरावताय नमः। ॐ पुण्डरीकाय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ कुमुदाय नमः। ॐ अंजनाय नमः। ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ सर्व भौमाय नमः। ॐ सुप्रतीकाय नमः।

चतुर्थावरणम् - भूपूर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालो व आयुधों का पूजन करें।

॥ अथ विंशत्त्यक्षर मंत्र ॥

मंत्र - ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।

ऋषिन्यासः - शिरसि ब्रह्मणऋषये नमः। मुखे गायत्री छन्द से नमः। हृदि श्री कृष्णाय देवतायै नमः। गुह्ये क्लीं बीजाय नमः। पादयोः स्वाहा शक्तये नमः।

ध्यानम् -

रत्नदीपावलीभिश्च प्रदीपितदिगन्तरे ।
उद्यदादित्य सङ्काशमणि - सिंहासनाम्बुजे ॥
समासीनोऽच्युतो ध्येयो द्रुत हाटकसन्निभः ।
समानोदित - चन्द्रार्कतडित् कोटि समद्युतिः ॥

॥ यंत्र पूजा विधानम् ॥

श्री कृष्ण का यंत्र इस प्रकार है- षट्कोण के मध्य में क्लीं साध्यं लिखकर कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा मत्र लिखें। पूर्व नैऋते एवं वायु कोणों में ''श्री'' अवशिष्ट तीन कोणों में ''ह्रीं'' लिखकर छहों संधियों में ''क्लीं, कृ, ष्णा, य, न, मः'' इन छ अक्षरो को लिखे।
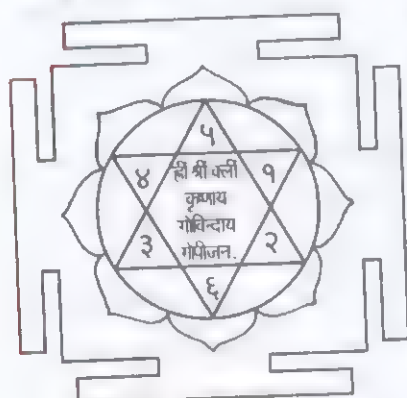
विंशत्यक्षर कृष्ण पूजन यंत्रम्

इसके बाद ''कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि तन्नोऽनंग प्रचोदयात्'' इस कामगायत्री मन्त्र के ३ ३ अक्षरों को एक-एक केशर

(दल का निम्न भाग) में लिखकर अष्टदल के एक एक दल में **नमः कामदेवाय, सर्वजन सम्मोहनाय, ज्वल ज्वल, प्रज्ज्वल, सर्वजनस्य, हृदयं, मम वशं, कुरु कुरु स्वाहा** अक्षरों को लिखे।

सर्वतोभद्रपीठ के मध्य में मण्डूकादिपीठ देवताओं एवं विमलादि नव पीठशक्तियों का पूजन कर यंत्र स्थापित करें। नारायण का पूजन करें **शस्त्राङ्ग** पूजन करें -

ॐ कीरीटाय नमः, कुण्डलाभ्यां नमः, शङ्खाय नमः चक्राय नमः, गदायै नमः, पद्माय नमः, वनमालायै नमः, श्रीवत्साय नमः, कौस्तुभाय नमः।

प्रथमावरणम् - षट्कोण में आग्नेयादि क्रम से पूजन करें - **ह्रीं श्रीं क्लीं हृदयाय नमः। कृष्णाय शिरसे स्वाहा। गोविन्दाय शिखायै वषट्। गोपीजन कवचाय हुँ। वल्लभाय नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां फट्।**

द्वितीयावरणम् - अष्टदल के पत्रो के मूलभाग में पूर्वादिक्रमेण - **ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः।** अग्न्यादि चतुष्कोणों में पत्रों के मूल में - **ॐ शान्त्यै नमः। ॐ श्रियै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ रत्यै नमः।**

तृतीयावरणम् - अष्टदल के मध्यभाग में पूर्वादिक्रमेण - **ॐ रुक्मिण्यै नमः। ॐ सत्यभामायै नमः। ॐ कालिंद्यै नमः। ॐ नाग्नजित्यै नमः। ॐ मित्रविंदाय नमः। ॐ चारुहासिन्यै नमः। ॐ रोहिण्यै नमः। ॐ जाम्बवत्यै नमः।**

चतुर्थावरणम् - अष्टदलाग्रे - **ॐ षोडशसहस्त्र महिषीभ्यो नमः।**

पञ्चमावरणम् - अष्टदल के वहिर्भाग में पूर्वादिक्रमेण - **ॐ इन्द्रनिधियै नमः। ॐ नीलनिधियै नमः। ॐ मुकुन्दनिधियै नमः। ॐ मकरनिधियै नमः। ॐ आनन्दनिधियै नमः। ॐ कच्छपनिधियै नमः। ॐ पद्मनिधियै नमः। ॐ शङ्खनिधियै नमः।**

षष्ठमावरणम् - भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों व आयुधों का पूजन करें। यन्त्र पूजा में प्रत्येक नामावलि के बाद में चतुर्थी से आवाहन व प्रथमा विभक्ति से पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः कहकर पूजन, तर्पण करते हैं।

प्रत्येक आवरण के पूजन, तर्पण के बाद '**ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे .....**' से पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

अथ द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्र - ऐं क्लीं कृष्णाय ह्रीं गोविन्दाय आं गोपीजनवल्लभाय स्वाहा सौं।

अथ त्रयस्त्रिंशदक्षरो मंत्र - क्लीं नमो भगवते नंदपुत्राय बालादिवपुषे श्यामलाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा।

॥ श्री प्राणेश्वर श्रीकृष्ण प्रयोगः॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्री प्राणेश्वर श्रीकृष्ण मन्त्रस्य भगवान् श्रीवेदव्यास ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीकृष्ण परमात्मा देवता। क्लीं बीजं श्रीं शक्तिः ऐं कीलकं। प्रणवो (ॐ) व्यापकः। मम समस्तक्लेश परिहारार्थं चतुर्वर्ग प्राप्तये सौभाग्य वृद्धयर्थं च जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्रीवेदव्यास ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्रीकृष्ण परमात्मा देवतायै नमः हृदि। क्लीं बीजाय नमः गुह्ये। श्रीं शक्तये नमः नाभौ। ऐं कीलकाय नमः पादयोः। ओम् व्यापकाय नमः सर्वाङ्गे। मम समस्तक्लेश परिहार्थं चतुर्वर्ग प्राप्तये सौभाग्य वृद्धयर्थं च जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्गन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ ऐं श्रीं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः
प्राणवल्लभाय	तर्जनीभ्यां स्वाहा।	शिरसे स्वाहा।
सौः	मध्यमाभ्यां वषट्।	शिखायै वषट्।
सौभाग्यदाय	अनामिकाभ्यां हुं।	कवचाय हुँ।
श्रीकृष्णाय	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
स्वाहा	करतल करपृष्ठाभ्यां फट्।	अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

कृष्णं जगन्मोहनरूपवर्णं विलोक्य
लज्जाऽऽकुलितां स्मराढ्याम्।
माध्वीकमालायुत कृष्णदेहं विलोक्य
चालिंग्य हरिं स्मरन्तीम्॥

॥ मानस पूजनम् ॥

१. लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीप्राणेश्वर श्रीकृष्ण श्रीपादुकाभ्यां नमः

अनुकल्पयामि (अधोमुख कनिष्ठांगुष्ठ मुद्रा)।

२. हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीप्राणेश्वर श्रीकृष्ण श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधोमुख तर्जनीअंगुष्ठ मुद्रा)।

३. यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीप्राणेश्वर श्रीकृष्ण श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्वमुख तर्जनी अंगुष्ठ मुद्रा)।

४. रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीप्राणेश्वर श्रीकृष्ण श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्वमुख मध्यमा अंगुष्ठ मुद्रा)।

५. वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीप्राणेश्वर श्रीकृष्ण श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्वमुख अनामा अंगुष्ठ मुद्रा)।

६. शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीप्राणेश्वर श्रीकृष्ण श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्वमुख सर्वांगुलि मुद्रा)।

मन्त्र - ॐ ऐं श्रीं क्लीं प्राणवल्लभाय सौः सौभाग्यदाय श्रीकृष्णाय स्वाहा ॥

इस मन्त्र का ३००००० जप से पुरश्चरण करें।

जल समर्पण -

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम् ।
सिद्धिर्मे भवतु देव! त्वत्प्रसादान्सुरेश्वर! ॥

॥ इति श्री प्राणेश्वर श्रीकृष्ण प्रयोगः ॥

॥ बालगोपाल मन्त्र प्रयोगाः ॥

बालगोपाल के कई मन्त्र है।

१. 'कृः' (हिन्दीतन्त्रसार) 'कृं' (मेरुतन्त्रोक्त)। ऋषि नारद, छन्द गायत्री, देवता बालगोपाल। क्लीं क्लीं से न्यास करे।

ध्यानम् -

कृष्णं पद्मासनं गुञ्जत्-किङ्किणी लसत्कटिं
हस्ताभ्यां नवनीतं च पायसं चापि विभ्रतम् ।
कण्ठदेशे व्याघ्रनखं स्वर्णपट्ट विराजितं
मेघश्यामं च परितो गोप-गोपीजनावृतम् ॥

२. कृष्ण ३. क्लीं कृष्ण - ॐ कृष्ण ४. क्लीं कृष्णाय ५ क्लीं कृष्ण क्लीं ६. कृष्णाय नमः ७. क्लीं कृष्णाय क्लीं ८. गोपालाय स्वाहा ९. क्लीं कृष्णाय नमः।

हिन्दी तन्त्रसार में ऋषि नारद कहा है, तथा मेरुतन्त्र के अनुसार ऋषि 'काम' बताया गया है।

१०. सप्ताक्षर - कृष्णाय गोविन्दाय। श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय क्लीं।

११. अष्टाक्षर - (क) क्लीं हृषिकेशाय नमः। (ख) श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय स्वाहा। (ग) उत्तिष्ठ श्रीकृष्ण स्वाहा।

मेरुतन्त्र के अनुसार वामदेव ऋषि, छन्द पंक्ति, देवता विष्णु है।

न्यास - भीषय-भीषय ह्व हुं हृदयाय नमः। त्रासय-त्रासय हुं शिरसे स्वाहा। प्रमर्दय प्रमर्दय हुं शिखायै वषट्। प्रध्वंसय प्रध्वंसय हुं कवचाय हुं। रक्षय रक्षय हुं नेत्रत्रयाय वौषट्। मूल मन्त्र के बाद ''हुं'' जोड़कर अस्त्राय फट्।

दुग्धाम्भोधौ सितद्वीपं नानामणिगणैर्युतं
वनं संचिन्तयेत् तत्र सकलर्त्तु-समन्वितम् ।
न्यासोक्ताभरणैः शस्त्रैरुपतं दीप्त तेजसं
सुरसुरर्षि प्रमुखैः सेवितं चाप्सरोगणैः ॥

पायस व बिल्व समिधा से हवन करें।

१२. क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय १३. दधिभक्षणाय स्वाहा १४. सुप्रसन्नात्मने नमः १५. क्लीं ग्लौं श्यामलाङ्गाय नमः १६. बालवपुषे कृष्णाय स्वाहा। १७. गोकुलनाथाय नमः १८.क्लीं कृष्णायगोविन्दाय क्लीं १९. श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय क्लीं २०. बालवपुषे क्लीं कृष्णाय स्वाहा।

ऋष्यादिन्यासः - शिरसि नारद ऋषये नमः। मुखे गायत्री छन्दसे नमः। हृदि श्रीकृष्णाय देवतायै नमः।

कराङ्गन्यासः - क्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः, क्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, क्लूं मध्यमाभ्यां वषट्, क्लैं अनामिकाभ्यां हुं, क्लौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्, क्लः करतल करपृष्ठाभ्यां फट्। इसी तरह हृदयादि न्यास करें।

ध्यानम् –

पञ्चवर्षमति - दृप्तमङ्गने धावमानमति चञ्चलेक्षणम् ।
किङ्किणीवलय हार नूपुरैराञ्चितं नमत गोपबालकम् ॥

॥ यन्त्रपूजनम् ॥
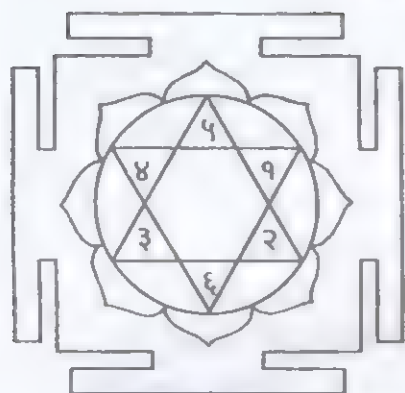
बालगोपाल पूजन यंत्रम्

प्रथमावरणम् - यन्त्र के मध्य में **ॐ हरये नमः** से पूजा करें। फिर षट्कोण में मन्त्र के पञ्चाङ्ग न्यास करे। जैसे मंत्र '**गोकुल नाथाय नमः**' है। आग्नेयादि चारों कोणों में **ॐ गोकु हृदयाय नमः। ॐ लना शिरसे स्वाहा। ॐ थाय शिखायै वषट्। ॐ नमः कवचाय हुँ। ॐ गोकुलनाथाय नमः सर्वदिक्षु:।**

द्वितीयावरणम् - अष्टदल के आग्नेयादि चारों कोणों में - **ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः।** पूर्वादि दिशाओं में **ॐ रुक्मिण्यै नमः। ॐ सत्यभामायै नमः। ॐ लक्ष्मणायै नमः। ॐ जाम्बवत्यै नमः।**

तृतीयावरणम् - भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों का एवं आयुधों का पूजन तर्पण करें। चार लक्ष जप का पुरश्चरण कर घृत, मधु, शर्करा से युक्त रक्तोत्पल द्वारा दशांश होम करें।

॥ अथ संतानगोपाल मन्त्रप्रयोगः॥

(मन्त्रमहोदधौ)

मंत्रोयथा -

ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

विनियोगः - **अस्य मन्त्रस्य नारदऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, कृष्णो देवता, मम पुत्रकामनार्थे जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यासः - ॐ नारदऋषये शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। **कृष्णदेवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

अङ्गन्यासः	करन्यासः	षडङ्गन्यासः
ॐ देवकीसुत	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
गोविन्द	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।

वासुदेव	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
जगत्पते	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
देहि मे तनयं कृष्ण	कनिष्ठाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
त्वामहं शरणं गतः	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

ध्यानम् –

विजयेन सुतो रथस्थितः प्रसभानीय समुद्रमध्यतः ।
प्रददत्तनयनान् द्विजन्मने स्मरणीयो वसुदेवनंदनः ॥

अर्जुन के साथ रथ पर बैठे हुये हठात् समुद्र में प्रविष्ट होकर वहां से ब्राह्मण पुत्र को लाकर उसके ब्राह्मण पिता को समर्पित करते हुये भगवान वासुदेव का ध्यान करें।

॥ यंत्रावरण पूजाविधानम् ॥

सर्वतोभद्र मण्डल पर मण्डूकादि पीठ देवताओं की पूजा कर नवपीठ शक्तियों का पूजन करें **ॐ विमलायै नमः। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ योगाय नमः। ॐ प्रह्वयै नमः। ॐ सत्यायै नमः। ॐ ईशानायै नमः।** मध्ये - **अनुग्रहायै नमः।**

संतानगोपाल यंत्रम्

भगवान की स्वर्ण मूर्ति ताम्रपात्र पर रख, पीठ पर स्थापित करें। स्वर्ण यन्त्र का अग्न्युत्तारण कर भद्रपीठ पर रखकर पुष्पादि का आसन प्रदान करें।

ॐ नमो भगवते श्रीगोपाल सर्वभूतात्मने योगपीठाय नमः। हाथ जोड़कर आवरण पूजा की आज्ञा मांगें।

ॐ संविन्मयः परोदेवः परामृतरसप्रियः ।
अनुज्ञां देहि गोपाल परिवारार्चनाय ते ॥

भगवान की पूजा करें।

आवरण पूजा में प्रत्येक नामावलि में पहिले **ॐ** फिर **नमः** लगाकर तथा अन्त में पादुकां पूजयामि तर्पयामि कहकर गंधपुष्पार्चन कर तर्पण करें।

प्रथमावरणम् - षट्कोण में (केसरेषु) आग्नेय्यादि चतुर्षुदिक्षु, मध्ये दिक्षु

च ॥१ ॥ ॐ देवकीसुत हृदयाय नमः। हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥२॥ ॐ गोविन्दाय शिरसे स्वाहा ॥३॥ ॐ वासुदेव शिखायै वषट् ॥४॥ ॐ जगत्पते कवचाय हुम् ॥५॥ ॐ देहि मे तनयं कृष्ण नेत्रत्रयाय वौषट् ॥६॥ ॐ त्वामहं शरणं गतः अस्त्राय फट्।

पुष्पाञ्जलि - (प्रत्येक आवरण के बाद देवे)

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं (अमुक) प्रथमावरणार्चनम् ॥

द्वितीयावरणम् - अष्टदल में पूर्वादि क्रम से - **ॐ कालिन्द्यै नमः। ॐ नाग्नजित्यै नमः। ॐ मित्रविंदायै नमः। ॐ चारुहासिन्यै नमः। ॐ रोहिण्यै नमः। ॐ जाम्बवत्यै नमः। ॐ रुक्मिण्यै नमः। ॐ सत्यभामायै नमः। (इत्यष्ट महिषीः)**

तृतीयावरणम् - अष्टदल के अग्रभाग में - **ॐ ऐरावताय नमः। ॐ पुण्डरीकाय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ कुमुदाय नमः। ॐ अंजनाय नमः। ॐ पुष्पदंताय नमः। ॐ सर्वाभौमाय नमः। ॐ सुप्रतीकाय नमः।**

चतुर्थावरणम् - चतुर्थ आवरण में भूपूर (परिधि) में **इन्द्रादि दिक्पालों** व **पञ्चमावरण** में उनके आयुधों की पूजा करें।

प्राकारान्तर यन्त्र पूजा (द्वितीय प्रकार)

प्रथमावरण - पूजन पूर्ववत् है।

द्वितीयावरण - (अष्टदले) - **१. ॐ रुक्मिण्यै नमः। २. ॐ सत्यभामायै नमः। ३. ॐ नाग्नजित्यै नमः। ४. ॐ कालिन्द्यै नमः। ५ ॐमित्रविन्दायै नमः। ६. ॐ लक्ष्मणायै नमः। ७. ॐ जाम्बवत्यै नमः। ८. ॐ सत्यायै नमः।**

तृतीयावरणम् - अष्टदल के अग्रभाग में - **ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ देवक्यै नमः। ॐ नंदगोपाय नमः। ॐ यशोदायै नमः। ॐ बलभद्रायै नमः। ॐ सुभद्रायै नमः। ॐ गोपेभ्य नमः। ॐ गोपिकाभ्यो नमः।**

चतुर्थावरणम् - चतुर्थावरण में परिधि (भूपूर) में इन्द्रादि दिक्पालों एवं पञ्चमावरण में उनके आयुधों का पूजन करें।

अस्य पुरश्चरणं लक्षमंत्रात्मकम्। जपान्ते दशांशेन मधुशर्करा घृतमिश्रितै स्तिलैर्होमं कृत्वा तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जन ब्राह्मण भोजनानि कुर्यात्। एवं कृतो सिद्ध मंत्रो भवति।

(ग्रन्थान्तरे सन्तानगोपाल मंत्रप्रयोगः)

मूलमंत्रो यथा – ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं जीं ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॐ स्वः भुवः भूः ॐ जीं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ। इति चतुः पञ्चाशद्वर्णात्मको मन्त्रः।

विनियोगः – ॐ अस्य श्री संतानगोपाल मन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीगोपालो देवता। क्लीं बीजं, श्रीं ह्रीं शक्तिः, जीं कीलकम् संतान कामना सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋषिन्यासः– ॐ नारायण ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्री गोपाल देवतायै नमः हृदि। क्लीं बीजाय नमः गुह्ये। श्रीं ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। श्रीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे

करन्यासः – ॐ देवकीसुत गोविन्द अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वासुदेव जगत्पते तर्जनीभ्यां नमः। ॐ देहि मे तनयं कृष्ण मध्यमाभ्यां नमः। ॐ त्वामहं शरणंगतः अनामिकाभ्यां नमः। ॐ देवकीसुत गोविन्द देव देव जगत्पते कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः॥ इसी विधि से षडङ्गन्यास करें।

ध्यानम् –

ॐ वैकुण्ठतेजसा दीप्तमर्जुनेन समन्वितम् ।
समर्पयन्तं विप्राय नष्टानानीय बालकान् ॥

मंत्र का पुरश्चरण कर मधुत्रय एवं तिलादि से होम करें।

॥ इति संतानगोपाल मन्त्र प्रयोगः॥

॥ वासुदेव॥

अथमंत्र – "**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**" – यह द्वादशाक्षर मंत्र कल्पतरु के समान है।

विनियोगः – ॐ अस्य श्री वासुदेव मंत्रस्य प्रजापतिः ऋषिः, गायत्री छन्दः श्री वासुदेव देवता सर्वार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋषिन्यासः– शिरसि प्रजापतये ऋषये नमः, मुखे गायत्री छन्दसे नमः, हृदि वासुदेवाय देवतायै नमः।

अङ्गन्यासः - ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। हृदयाय नमः। ॐ नमो - तर्जनीभ्यां नमः। शिरसे स्वाहा। भगवते - मध्यमाभ्यां नमः। शिखायै वषट्, वासुदेवाय - अनामिकाभ्यां नमः। कवचाय हुँ। मूल मंत्र से - कनिष्ठाभ्यां नमः। अस्त्राय फट्

मंत्रन्यास :- ॐ नमः मस्तके। नं नमः कपाले। मं नमःचक्षुर्द्वये। भं नमः मुखे। गं नमः कण्ठे। वं नमः बाहुद्वये। तें नमः हृदि। वां नमः उदरे। सुं नमः नाभौ। दें नमः लिङ्गे। वां नमः जानुद्वये। यं नमः पादद्वये।

व्यापकन्यास:- ॐ किरीट केयूरहारं मकरकुण्डलं शंखचक्रगदाऽम्भोज हस्तं पीताम्बरं श्री वत्सं ज्योति स्वात्मज्योतिर्द्वयं दीप्तिकराय आदित्यतेजसे नमः।

ध्यानम् –

विष्णुं शरदचन्द्र- कोटिसदृशं शङ्खंरथाङ्गगदामम्भोजम्
दधतं सिताब्जनिलयं कान्त्या जगन्मोहनम्।
आबद्धाङ्गद- हारकुण्डल- महामौलि स्फुरत् कङ्कणम्
श्री वत्साङ्कमुदार - कौस्तुभधरं वन्दे मुनीन्द्रैः स्तुतम् ॥

॥ यंत्र पूजनम् ॥

वासुदेव यंत्र में प्रथम षट्कोण, उसके बाहर अष्टदल, फिर द्वादश दल बनावें और पश्चात् भूपूर बनावें। (विष्णु द्वादशनामाक्षर मन्त्र विधान एवं इस यंत्र पूजा में कुछ ही भिन्नता है)
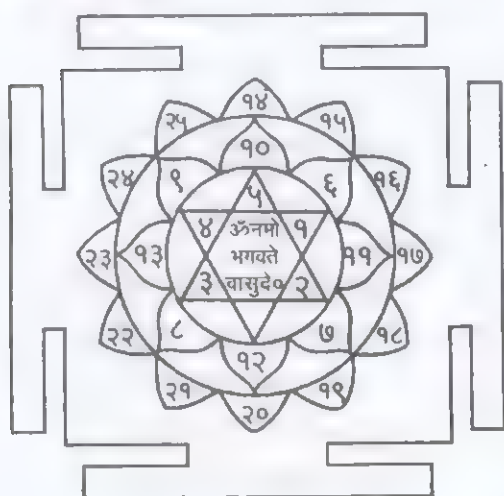
वासुदेव यंत्रम्

प्रथमावरणम् - षट्कोण में अग्नि आदि चार कोणों में - **ॐ हृदयाय नमः, नमः शिरसे स्वाहा, भगवते शिखायै वषट्, वासुदेवाय कवचाय हुँ, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** से देवाग्रे पूजन करें।

द्वितीयावरणम् - अष्टदल में अग्नि आदि चार कोणों में - **ॐ वासुदेवाय नमः, ॐ**

सङ्कर्षणाय नमः, ॐ प्रद्युम्नाय नमः, ॐ अनिरुद्धाय नमः, पूर्वादि आदि चार दिशाओं में – ॐ रुक्मिण्यै नमः, ॐ सत्यभामायै नमः, ॐ लक्ष्णायै नमः, ॐजाम्बवत्यै नमः। अथवा- ॐ शान्त्यै नमः, ॐ श्रियै नमः, ॐ सरस्वत्यै नमः,ॐ रत्यै नमः से अष्टदल के अग्नि आदि चारो कोणों में पूजन करें।

तृतीयावरणम् – द्वादशदल में पूर्वादि क्रम से केशव धातृभ्यां नमः। नारायण अर्यमाभ्यां नमः। मित्र सहिताय माधवाय नमः। गोविन्द वरुणाभ्यां नमः। विष्णु अंशुभ्यां नमः। भग सहिताय मधुसूदनाय नमः। विवस्वान् सहिताय त्रिविक्रमाय नमः। इन्द्र सहिताय वामनाय नमः। श्रीधरपुष्ट्याभ्यां नमः। पर्जन्य सहिताय हृषीकेशवाय नमः। सविता सहिताय पद्मनाभाय नमः। त्वष्टा सहिताय दामोदराय नमः।

अथवा – केशव, नारायण, माधव, गोविन्द, विष्णु, मधुसूदन, त्रिविक्रम,वामन, श्रीधर, हृषीकेश, पद्मनाभ, एवं दामोदर इन विष्णु द्वादश मूर्तियों का पूजन करें।

चतुर्थ – पंचमावरणम् – भूपूर में इन्द्रादि दिक्पालों एवं आयुधों का पूजन करें।

बारह लाख मंत्र जप से पुरश्चरण करके होम करें। दूधवाले वृक्षो की समिधाओं से पायस होम करें।

॥ राधा ॥

राधा (षडक्षर) – (१) रां ओं आं यं स्वाहा।

नारद पञ्चरात्र में विस्तृत विधि दी गई है। (२।३।३८)

(२) "श्री राधायै स्वाहा"

इस मन्त्र के नारायण ऋषि, छन्द् गायत्री, देवता श्रीराधा, स्त्रीं बीज तथा ह्रीं शक्ति है।

ध्यानम् –

श्वेतचम्पक वर्णाभां शरदिन्दु समाननां
कोटिचन्द्र प्रतीकाशं शरदम्भोज लोचनाम्।
सुकुमाराङ्गलतिकां रासमण्डलमध्यगां
वराभयकरां शान्तां शश्वत् सुस्थिरयौवनाम्॥
रत्नसिंहसनासीनां गोपीमण्डल-नायिकां।
कृष्णप्राणाधिकां वेदबोधितां परमेश्वरीम्॥

॥ कामदेव ॥

कामदेव - क्लीं। (एकाक्षर)

ऋषिसंमोहन, छन्द गायत्री, देवता मकरध्वज कं बीजं, ईं शक्तिं है। कां क्लीं इत्यादि से षडङ्गन्यास करें।

अष्टाक्षर मन्त्रः - क्लीं मनमथाय नमः। क्लीं कामदेवाय नमः।

ध्यानम् – (शारदायाम्)

जवारुणं रत्नविभूषणाढ्यं मीनध्वजं चारुकृताङ्गरागं ।
कराम्बुजैरंकुशमिक्षु चापं पुष्पास्त्र पाशौ दधतं भजामि ॥

कामदेव गायत्री - ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पवाणाय धीमहि तन्नोऽनङ्ग प्रचोदयात्।

॥ दधिवामन ॥

दधिवामन की उपासना विशेष लक्ष्मीप्रद मानी गयी है। लक्ष्मी का स्वभाव चंचल है अतः लक्ष्मी की स्थिरता के लिये साथ में पुरुषदेव विष्णु व गणेश उपासना अवश्य करनी चाहियें।

अष्टादशाक्षरो मन्त्रः– (शारदायाम्)

ॐ नमो विष्णवे सुरपतये महाबलाय स्वाहा।

विनियोगः - **ॐ अस्य श्री दधिवामन मन्त्रस्य इन्दुर्ऋषिः, विराट् छन्दः, दधिवामनो देवता, सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यासः– **ॐ इन्दुऋषये नमः शिरसि। विराट छन्दसे नमः मुखे। दधिवामनदेवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

अङ्गन्यास :–

ॐ	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
नमः	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
विष्णवे	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
सुरपतये	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
महाबलाय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
स्वाहा	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

मन्त्रवर्णन्यास :- ॐ नमः मूर्धि। ॐ नं नमः भाले। ॐ मों नमो नेत्रयोः। ॐ विं नमः कर्णयोः। ॐ ष्णं नमः नासिकयो। ॐ वें नमः ओष्ठयोः। ॐ सुं नमः तालुके। ॐ रं नमः कण्ठे। ॐ पं नमः बाहुद्वये। ॐ तं नमः पृष्ठे। ॐ यें नमः हृदये। ॐ मं नमः उदरे। ॐ हां नमः नाभौ। ॐ बं नमः गुह्ये। ॐ लां नमः उरुद्वये। ॐ यं नमः जानुद्वये। ॐ स्वां नमः जंघयो। ॐ हां नमः पादयोः।

ध्यानम् –

मुक्तागौरं नवमणिलसद्भूषणं चन्द्रसंस्थम्
भृंगाकारैरलकनिकरैः शोभिवक्त्रारविन्दम् ।
हस्ताब्जाभ्यां कनककलशं शुद्धतोयाभिपूर्णम्
दध्यन्नाढ्यं कनकचषकं धारयंतं भजामः ॥

अर्थात् भगवान दधिवामन मोती के समान उज्वल वर्ण के हैं, नवीनमणियों से विभूषित अलङ्कार धारण किये है और चन्द्रमण्डल में विराजमान है। भौरों के सदृश्य केशों की लटों द्वारा मुखकमल सुशोभित है। दोनों करकमलों में से एक में शुद्धजल पूर्ण स्वर्ण कलश और अन्य में दधि और अन्न से भरा स्वर्णपात्र लिए है। मैं ऐसे दधिवामन भगवान की वन्दना करता हुँ।

॥ यन्त्र पूजनम् ॥

मण्डल पर मण्डूकादि पीठदेवता तथा विमलादि नव पीठशक्तियों का पूजन करें।
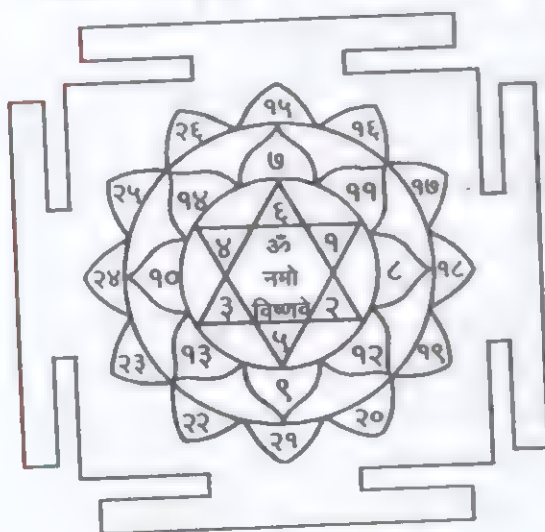
दधिवामन विष्णु पूजन यंत्र

पूर्वादिक्रम से – ॐ विमलायै नमः, ॐ उत्कर्षिण्यै नमः, ॐ ज्ञानायै नमः, ॐ क्रियायै नमः, ॐ योगायै नमः, ॐ प्रह्व्यै नमः, ॐ सत्यायै नमः, ॐ ईशानायै नमः, मध्ये – ॐ अनुग्रहायै नमः।

ताम्र या रजत यन्त्र को घृत से अभ्यजन कर, दुग्ध व जलधारा से अग्न्युत्तारण

कर शुद्धकर मण्डल पर रखें तथा पूजन के लिये भगवान से आज्ञा माँगे।

ॐ नमो भगवते दधिवामनाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्म संयोग पद्म पीठात्मने नमः।

इस मन्त्र द्वारा यंत्र को पुष्पों का आसन देकर विराजमान करें, यन्त्र में मूर्ति की कल्पना करें, स्वर्णमूर्ति होवे तो यन्त्र मध्य में विराजमान कर पूजन करें फिर आवरण पूजन की आज्ञा माँगें। प्रत्येक नामावलि के साथ **पादुकां पूजयामि तर्पयामि** बोलकर प्रथमा से गंधार्चन से पूजन एवं तर्पण करें।

ॐ सविन्मयः परोदेवः परामृतरसप्रियः ।
अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनायमे ॥

प्रथमावरणम् - षट्कोण में केसरों में अग्नि आदि चारकोणों में - १. ॐ **हृदयाय नमः हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। २. नमः शिरसे स्वाहा। शिरः श्री. पा. पू. त.। ३. ॐ विष्णवे शिखायै वषट्। शिखा श्री.पा. पू. त.। ४. ॐ सुरपतये कवचाय हुँ। कवच श्री. पा. पू. त.। ५. ॐ महाबलाय नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्र श्री. पा. पू. त.। ६. ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्। अस्त्र श्री. पा. पू. त.।**

पुष्पाञ्जलि प्रदान करें -

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

इस तरह प्रत्येक आवरण पूजन में आवरण का नाम लेते हुये पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

द्वितीयावरणम् - अष्टदल में पूर्वादिक्रम से चार दिशाओं में - **ॐ वासुदेवाय नमः । ॐ संकर्षणाय नमः । ॐ प्रद्युम्नाय नमः । ॐ अनिरुद्धाय नमः ।** आग्नेयादि चारों कोणों के पत्रो में - **ॐ शान्त्यै नमः । ॐ श्रियै नमः । ॐ सरस्वत्यै नमः । ॐ रत्यै नमः ।**

तृतीयावरणम् - अष्टदल के पत्राग्रों में पूर्वादिक्रम से चारों दिशाओं में - **ॐ ध्वजाय नमः । ॐ वैनतेयाय नमः । ॐ कौस्तुभाय नमः । ॐ वनमालिकायै नमः । आग्नेयादि चार कोणों के पत्राग्रों में - ॐ शंखाय नमः । ॐ चक्राय नमः । ॐ गदायै नमः । ॐ शार्ङ्गाय नमः ।**

चतुर्थावरणम् - द्वादशदल में पूर्वादिक्रम से - **ॐ केशवाय नमः। ॐ**

नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ मधुसूदनायै नमः। ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः । ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ पद्मनाभाय नमः। ॐ दामोदराय नमः।

पञ्चमावरणम् - भूपूर में पूर्वादि दिशाओं में इन्द्रादि दशदिक्पालों का पूजन करें।

षष्ठमावरणम् - भूपूर में लोकपालो के वज्रादि आयुधों का पूजन करें।

सप्तमावरणम् - भूपूर में अष्टदिशाओं में अष्टगजों का पूजन करें- ॐ ऐरावताय नमः। ॐ पुण्डरीकाय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ कुमुदाय नमः। ॐ अंजनाय नमः। ॐ पुष्पदंताय नमः। ॐ सर्वभौमाय नमः। ॐ सुप्रतीकाय नमः।

मन्त्र के तीन लाख जप करके पुरश्चरण करें।

विधानमेतद्देवस्य कीर्तितं सुरपूजितं पायसाज्येन ।
जुहुयात्सहस्त्रं श्रियमाप्नुयात् ॥१॥
धान्य होमेन धान्याप्तिलः शतपुष्पासमुद्भवैः ।
बीजैः सहस्त्रसंख्याकैर्होमो भयविनाशनः ॥२॥
दध्योदनेन शुद्धेन हुत्वा मुच्येत दुर्गतेः ।
स्मृत्वा त्रैविक्रमं रूपं जपेन्मंत्रमनन्यधीः ॥३॥
मुक्तो बंधाद्भवेत्सद्यो नात्र कार्या विचारणा ।

यंत्र प्रयोग के लिये साध्य (देव) और साधक के कर्म सहित ॐ लिखें। अष्टदल के प्रत्येक दल में **अ आ इ ई उ ऊ** इस तरह से स्वर मातृका **अं अः** तक लिखें। इसको "**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**" से संवेष्टित कर द्वादश दल में एक एक अक्षर लिखें।

उसके बाहर **कं खं गं ...... हं लं क्षं** इत्यादि वर्ण लिखकर पूजन करें।

॥ इति दधिवामन प्रयोग ॥

॥ लक्ष्मीनारायण (लक्ष्मीवासुदेव)॥

शारदातिलके –

चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः – **ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीवासुदेवाय नमः।**

विनियोगः – **अस्य मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः। गायत्री छन्दः। वासुदेवो देवता। धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यास :– **प्रजापतिर्ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। वासुदेव देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

कराङ्गन्यास :–

ॐ ह्रीं ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ॐ श्रीं श्रीं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ॐ लक्ष्मी	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ॐ वासुदेवाय	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
ॐ नमः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

ध्यानम् –

विद्युच्चंद्रनिभे वपुः कमलजावैकुण्ठयोरेकताम्
प्राप्तं स्नेहवशेन रत्नविलसद्भूषाभरालंकृतम् ।
विद्यापंकज दर्पणान्मणिमयं कुम्भं सरोज गदाम्
शङ्खं चक्रममूनि विभ्रदमितां दिश्याच्छ्रियं वः सदा ॥

सर्वतोभद्रपीठ पर मण्डूकादि पीठ पूजन कर विमलादि नवपीठ शक्तियों का पूजन करें यन्त्र को शुद्ध करके पुष्पासन देकर स्थापित करें।

यन्त्रोद्धार – षट्कोण उसके बाहर अष्टदल उसके ऊपर बारह दल बनाकर उसके बाहर भूपूर (परिधि चार द्वारयुक्त) की कल्पना से यन्त्र बनायें।

देव के यन्त्रावरण देवताओं के पूजन की आज्ञा मांगें।

ॐ संविन्मयः परोदेवः परामृतरसप्रियः ।अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनायमे ॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

प्रथमावरणम् – षट्कोण के पञ्चकोणों में पूजन करें। **आग्नेयादि चार कोणों में – ॐ ह्रीं ह्रीं हृदयाय नमः। हृदय श्री पादुकां पूजयामि** तर्प[illegible] इस तरह **यंत्र में सभी नामावलियों के साथ पूजन तर्पण करें। ॐ** [illegible] **शिरसे**

स्वाहा। ॐ लक्ष्मी शिखायै वषट्। ॐ वासुदेवाय कवचाय हुं। सर्वदिक्षु - **ॐ नमः अस्त्राय फट्।**

प्रत्येक आवरण की पूजन समाप्ति पर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अमुकावरणार्चनम् ॥
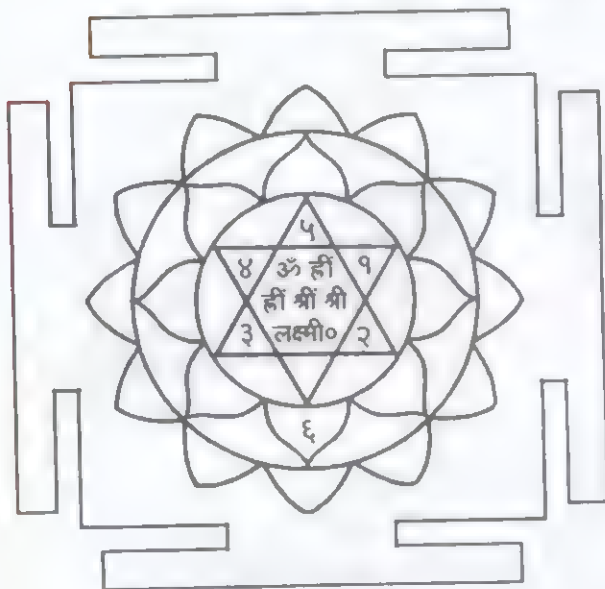
लक्ष्मीनारायण यंत्रम्

द्वितीयावरणम् - अष्टदल में पूर्वादि चार दिशाओं में - **ॐ वासुदेवाय नमः। वासुदेव श्री पा. पू त.। ॐ संकर्षणाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः।** आग्नेयादि चतुष्कोणे - **ॐ शान्त्यै नमः। ॐ श्रियै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ रत्यै नमः।**

तृतीयावरणम् - द्वादशदल में पूर्वादि क्रम से - **ॐ केशवाय नमः। केशव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ मधुसूदनाय नमः। ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ पद्मनाभाय नमः। ॐ दामोदराय नमः।**

विष्णु की द्वादशमूर्ति का पूजन तर्पण करें।

चतुर्थावरणम् - चतुर्थावरणम् में भूपूर में इन्द्रादि दिक्पालों का पूजन पूर्वादि क्रम से एवं **पञ्चमावरणम्** में उनके **आयुधों का पूजन तर्पण करें।**

प्रत्येक आवरण की पूजन समाप्ति पर **ॐ अभीष्ट....** से पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

पुरश्चरण - इस मन्त्र का १४ लक्ष जप का पुरश्चरण है। पुरश्चरण पश्चात् दशांश

हवन करें। मधुत्रय से होम करें।

पायसेन कृतो होमो लक्ष्मीवश्य प्रदायकः ।
मधुराक्तैस्तिलै हुत्वा सर्वकार्याणि साधयेत् ॥

॥ इति लक्ष्मीनारायण मन्त्रप्रयोगः ॥

॥ लक्ष्मीनारायण वज्रपञ्जर कवचम् ॥

॥ श्रीभैरवउवाच ॥

अधुना देवी! वक्ष्यामि लक्ष्मीनारायणस्य ते ।
कवचं मंत्रगर्भं च वज्रपञ्जरकाख्यया ॥१॥
श्रीवज्रपञ्जरं नाम कवचं परमाद्भुतम् ।
रहस्यं सर्वदेवानां साधकानां विशेषतः ॥२॥
यं धृत्वा भगवान् देवः प्रसीदति परः पुमान् ।
यस्य धारण मात्रेण ब्रह्मालोक पितामहः ॥३॥
ईश्वरोऽहं शिवो भीमो वासवोऽपि दिवस्पतिः ।
सूर्यस्तेजोनिधिर्देवि! चन्द्रमास्तारकेश्वरः ॥४॥
वायुश्च बलवांल्लोके वरुणो यादसांपतिः ।
कुबेरोऽपि धनाध्यक्षो धर्मराजो यमः स्मृतः ॥५॥
यं धृत्वा सहसा विष्णुः संहरिष्यति दानवान् ।
जघान रावणादींश्च किं वक्ष्येऽहमतः परम् ॥६॥
कवचस्यास्य सुभगे! कथितोऽयं मुनिः शिवः ।
त्रिष्टुप् छन्दो देवता च लक्ष्मीनारायणो मतः ॥७॥
रमा बीजं परा शक्तिस्तारं कीलकमीश्वरि! ।
भोगापवर्ग सिद्ध्यर्थं विनियोग इति स्मृतः ॥८॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीलक्ष्मीनारायणकवचस्य शिवऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीलक्ष्मीनारायण देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, भोगापवर्ग-सिद्ध्यर्थं कवच पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- श्रीशिव ऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे, श्रीलक्ष्मी-नारायण देवतायै नमः हृदि, श्रीं बीजाय नमःगुह्ये, ह्रीं शक्तये

नमः नाभौ, ॐ कीलकाय नमः पादयोः, भोगापवर्ग-सिद्ध्यर्थं कवच-पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

॥ ध्यानम् ॥

पूर्णेन्दु-वदनं पीतवसनं कमलासनम् ।
लक्ष्म्याश्रितं चतुर्बाहुं लक्ष्मीनारायणं भजे ॥

॥ कवचम् ॥

ॐ वासुदेवोऽवतु मे मस्तकं सशिरोरुहम् ।
ह्रीं ललाटं सदा पातु लक्ष्मीविष्णुः समन्ततः ॥१॥
हसौः नेत्रेऽवताल्लक्ष्मी-गोविन्दो जगतां पतिः ।
ह्रीं नासां सर्वदा पातु लक्ष्मीदामोदरः प्रभुः ॥२॥
श्रीं मुखं सततं पातु देवो लक्ष्मीत्रिविक्रमः ।
लक्ष्मी कण्ठं सदापातु देवो लक्ष्मीजनार्दनः ॥३॥
नारायणाय बाहू मे पातु लक्ष्मीगदाग्रजः ।
नमः पार्श्वौ सदा पातु लक्ष्मीनन्दैकनन्दनः ॥४॥
अं आं इं ईं पातु वक्षो ॐ लक्ष्मीत्रिपुरेश्वरः ।
उं ऊं ऋं ॠं पातु कुक्षिं ह्रीं लक्ष्मीगरुड़ध्वजः ॥५॥
लृं लॄं एं ऐं पातु पृष्ठं हसौः लक्ष्मीनृसिंहकः ।
ॐ ॐ अं अः पातु नाभिं ह्रीं लक्ष्मीविष्टरश्रवः ॥६॥
कं खं गं घं गुदं पातु श्रीं लक्ष्मीकैटमान्तकः ।
चं छं जं झं पातु शिश्नं लक्ष्मी लक्ष्मीश्वरः प्रभुः ॥७॥
टं ठं डं ढं कटिं पातु नारायणाय नायकः ।
तं थं दं धं पातु चोरू नमो लक्ष्मीजगत्पतिः ॥८॥
पं फं बं भं पातु जानू ॐ ह्रीं लक्ष्मीचतुर्भुजः ।
यं रं लं वं पातु जङ्घे हसौः लक्ष्मीगदाधरः ॥९॥
शं षं सं हं पातु गुल्फौ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीरथाङ्गभृत् ।
ळं क्षः पादौ सदा पातु मूलं लक्ष्मीसहस्रपात् ॥१०॥
ङं ञं णं नं मं मे पातु लक्ष्मीशः सकलं वपुः ।
इन्द्रो मां पूर्वतः पातु वह्निर्वह्नौ सदाऽवतु ॥११॥
यमो मां दक्षिणे पातु नैर्ऋत्यां निर्ऋतिश्च माम् ।

वरुणः पश्चिमेऽव्यान्मां वायव्येऽवतु मां मरुत् ॥१२॥
उत्तरे धनद पायादैशान्यामीश्वरोऽवतु ।
वज्र-शक्ति-दण्ड-खड्ग-पाश-यष्टि-ध्वजाङ्किताः ॥१३॥
सशूलाः सर्वदा पान्तु दिगीशाः परमार्थदाः ।
अनन्तः पात्वधो नित्यमूर्ध्वे ब्रह्मावताच्च माम् ॥१४॥
दशदिक्षु सदा पातु लक्ष्मीनारायणः प्रभुः ।
प्रभाते पातु मां विष्णुर्मध्याह्ने वासुदेवकः ॥१५॥
दामोदरोऽवतात् सायं निशादौ नरसिंहकः ।
सङ्कर्षणोऽर्धरात्रेऽव्यात् प्रभातेऽव्यात् त्रिविक्रमः ॥१६॥
अनिरुद्धः सर्वकालं विश्वक्सेनश्च सर्वतः ।
रणे राजकुले द्यूते विवादे शत्रुसङ्कटे ।
ॐ ह्रीं हसौः ह्रीं श्रीं मूलं लक्ष्मीनारायणोऽवतु ॥१७॥
ॐ ॐ ॐ रण-राज-चौर-रिपुतः पायाच्च मां केशवः,
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह ह हा हसौः ह स ह सौ वह्नेर्वतान्माधवः ।
ह्रीं ह्रीं ह्रीं जल-पर्वताग्र-भयतः पायादनन्तो विभुः,
श्रीं श्रीं श्रीं श श शा ल लं प्रतिदिनं लक्ष्मीधवः पातु माम् ॥१८॥

॥ फलश्रुति ॥

इतीदं कवचंदिव्यं वज्रपञ्जरकाभिधम् ।
लक्ष्मीनारायणस्येष्टं चतुवर्ग-फलप्रदम् ॥१॥
सर्वसौभाग्य निलयं सर्वसारस्वतप्रदम् ।
लक्ष्मीसंवननं तत्त्वं परमार्थ रसायनम् ॥२॥
मन्त्रगर्भं जगत्सारं रहस्यं त्रिदिवौकसाम् ।
दशवारं पठेद्रात्रौ रतान्ते वैष्णवोत्तमः ॥३॥
स्वप्ने वरप्रदं पश्येल्लक्ष्मीनारायणं सुधीः ।
त्रिसन्ध्यं यः पठन्नित्यं कवचं मन्मुखोदितम् ॥४॥
स याति परमंधाम वैष्णवं वैष्णवोत्तमः ।
महाचीन-पदस्थोऽपि यः पठेदात्म-चिन्तकः ॥५॥
आनन्दपूरितस्तूर्णं लभेद् मोक्षं स साधकः ।
गन्धाष्टकेन विलिखेद्रवौ भूर्जे जपन्मनुम् ॥६॥

पीतसूत्रेण संवेष्ट्य सौवर्णेनाथ वेष्टयेत् ।
धारयेद्-गुटिकां मूर्ध्नि लक्ष्मीनारायणं स्मरन् ॥७॥
रणे रिपून् विजित्याशु कल्याणी गृहमाविशेत् ।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना ॥८॥
सा बध्नीयात् कण्ठदेशे लभेत् पुत्रांश्चिरायुषः ।
गुरुपदेशतो धृत्वा गुरुं ध्यात्वा मनुं जपन् ॥९॥
वर्णलक्ष पुरश्चर्या फलमाप्नोति साधकः ।
बहुनोक्तेन किं देवि! कवचस्यास्य पार्वति! ॥१०॥
विनानेन न सिद्धिः स्यान्मन्त्रस्यास्य महेश्वरि! ।
सर्वागम रहस्याढ्यं तत्त्वात् तत्त्वं परात् परम् ॥११॥
अभक्ताय न दातव्यं कुचैलाय दुरात्मने ।
दीक्षिताय कुलीनाय स्वशिष्याय महात्मने ॥१२॥
महाचीन पदस्थाय दातव्यं कवचोत्तमम् ।
गुह्यं गोप्यं महादेवी! लक्ष्मीनारायण-प्रियम् ।
वज्रपञ्जरकं वर्म गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥१३॥

॥ श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीलक्ष्मी नारायण-कवचं ॥

॥ परमात्मा (परमब्रह्म) मन्त्र प्रयोगः ॥

एकादशाक्षर मन्त्र- 'अच्युतान्त गोविन्देभ्यो नमः'।

मेरु तन्त्र के अनुसार - **ऋषिशौनक, छन्द विराट् एवं देवता परमात्मा है।** षडङ्गन्यास हेतु मन्त्र के प्रत्येक पद का दो-दो बार प्रयोग होगा।

द्विशताक्षर मन्त्र - ॐ क्लीं श्रीं नमः पुरुषोत्तम! अप्रतिरूप! लक्ष्मी-निवास! सकल जगत संक्षोभणः सर्वस्त्रीहृदयविदारण त्रिभुवन मदोन्मादकर सुरासुर-मनुज सुन्दरीजनमनांसि तापय तापय दीपय दीपय शोषय शोषय मारय मारय स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय द्रावय द्रावय आकर्षय आकर्षय समस्तपरम सुभग सर्वसौभाग्यकर सर्वकामप्रद अमुकं हन हन चक्रेण गदया खड्गेन सर्ववाणैः भिन्द भिन्द पाशेन कट्ट कट्ट अङ्कुशेन ताडय ताडय कुरु कुरु किं तिष्ठसि तावत् यावत् समीहित मे सिद्धिं भवति हुं फट् नमः।

शारदा तिलके ऋषि जैमिनि, छन्द अमित, देवता पुरुषोत्तम है।

ॐ पुरुषोत्तम! त्रिभुवनमदोन्मादकर पुरुषोत्तम जगतक्षोभण लक्ष्मीदयति मन्मथोत्तमांगजे कामदायिनि परमसुभग सर्वसौभाग्यदायक हुं फट् नमः॥

षड्ङ्गन्यास हेतु इस मन्त्र के छः विभाग इस प्रकार है

॥१॥ ॐ पुरुषोत्तम! त्रिभुवनमदोन्मादकर हुं फट् नमः। (हृदयाय नमः)॥ २॥ ॐ पुरुषोत्तम जगतक्षोभण लक्ष्मीदयति हुं फट् नमः (शिरसे स्वाहा)॥३॥ ॐ मन्मथोत्तमांगजे कामदायिनि हुं फट् नमः (शिखायै वषट्)॥४॥ ॐ परमसुभग सर्वसौभाग्यदायक हुं फट् नमः (कवचाय हुँ)

इससे अस्त्रन्यास करें **॥५॥ ॐ त्रिभुवनेश्वर सर्वजनमनांसि हन हन दारय दारय में वशमानय हुं फट् नमः (अस्त्राय फट्)॥६॥** इससे नेत्रत्रयाय न्यास करें - **ॐ सुरासुर मनुजसुन्दरी हृदय विदारण! सर्वप्रहरणधर! सर्वकामिक! हन हन हृदयं बंधनानि आकर्षय आकर्षय महाबल हुं फट् नमः (नेत्रत्रयाय वौषट्)॥**

प्रथम माला मन्त्र में अमुकं शब्द की जगह साध्य या रोगादि का नाम जोड़ लेवें तो साध्य व्यक्ति अनुकूल होवे तथा रोग का शमन होवे।

ध्यानम् –

देवं पुरुषोत्तमं कमलालया स्वाङ्कस्थया पङ्कजम्
विभ्रत्या परिबद्धमम्बुजरुचा तस्यां निबद्धेक्षणम्।
ध्यायेच्चेतसि शङ्ख पाशमूशलांश्चापेषु खड्गान् गदान्
हस्तैरंकुशमुद्वहन्तमरुणं स्मेरारविन्दननम्॥

पुरश्चरण - पुरश्चरण में चार लाख जप कर अर्द्धचन्द्राकार कुण्ड में पद्म जातिपुष्पों और यवादि से दशांश होम करें।

॥ इति परमात्मा मंत्र प्रयोग ॥

॥ भगवान नृसिंह मन्त्र प्रयोगः॥

॥ अथ षडक्षर नृसिंह मन्त्रः॥

मन्त्र : - **आं ह्रीं क्ष्रौं क्रौं हुं फट्।**

विनियोगः - **अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पंक्ति छन्दः, नरसिंहो देवता,**

सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

मेरुतन्त्र में मन्त्र - **आं ह्रीं ज्रों क्रों ह्रां फट् है।**

ऋषिन्यासः - **ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। ॐ पंक्ति छन्दसे नमः** मुखे। **ॐ नरसिंह देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

कराङ्गन्यासः	करन्यासः	षडाङ्गन्यासः
आं	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
क्षौं (क्ष्रौं)	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
क्रौं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
हुं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
फट्	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

कोपादालोलजिह्वं विवृतनिजमुखं सोमसूर्याग्निनेत्रम्
पादादानाभिरक्त प्रभमुपरि सितं भिन्नदैत्येंद्रगात्रम् ।
शङ्खं चक्रासिपाशाङ्कुश कुलिशगदादारुणान्युद्वहंतम्
भीमं तीक्ष्णोग्रदंष्ट्रं मणिमयविविधाकल्पमीडे नृसिंहम् ॥

॥ यंत्रावरण पूजनम् ॥

विष्णु पीठ का पूजन करें। यन्त्र मध्य में प्रधान देव की मूर्ति स्थापित कर या कल्पना कर यंत्र पूजा करें। इसके बाद प्रथम आवरण की पूजा करें।

प्रथमावरणम् - षट्कोणे आग्नेयादि केसरेषु मध्ये एवं दिक्षु च। **आं हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। क्ष्रौं शिखायै वषट्। क्रौं कवचाय हुं। हुं नेत्रत्रयाय वौषट्। फट् अस्त्राय फट्।**
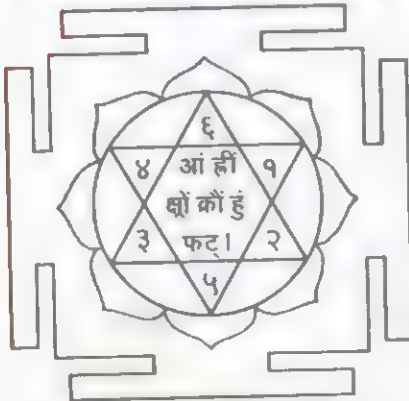
षडक्षर नृसिंह यंत्रम्

द्वितीयावरणम् - तद्बहि अष्टदलेषु पूर्वादिक्रमेण - **ॐ चक्राय नमः। ॐ शङ्खाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अङ्कुशाय नमः। ॐ वज्राय नमः। ॐ कौमदक्यै नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ खेटकाय नमः।**

तृतीय आवरणम् – इस आवरण में इन्द्रादि दिक्पालों व चतुर्थावरण में उनके आयुधों का पूजन तर्पण कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

मधुत्रय, रक्तपुष्प व कमल के होम से भूमि धन धान्य का लाभ होवे। लाजा मधुत्रय से प्रातःकाल हवन करें तो कन्या अपने अभीष्ट वर को प्राप्त करें। पायस व अपामार्ग के होम से रोग एवं शत्रु का नाश होवे।

॥ इति षडक्षरनृसिंह मन्त्रप्रयोगः॥

॥ द्वात्रिंशद्वर्णात्मको मन्त्रः ॥

ॐ उग्रंवीरं महाविष्णुं ज्वलंतं सर्वतोमुखम् ।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्यं नमाम्यहम् ॥

मृत्युमृत्युं का अर्थ है मृत्यु की मृत्यु करने वाले आप काल के भी काल हैं। अर्थात् कालमृत्यु आपके वश में हैं, मन्त्र में ऐसी भावना रखें।

विनियोग :- **ॐ अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मात्रऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीनरसिंहो देवता, हं बीजम्, ईं शक्तिः सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

विष्णु के इस स्वरूप को काल का काल स्वरूप माना है। मेरु तन्त्र में भद्रं की जगह रुद्रं है।

ऋषिन्यास :- **ॐ ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टप् छन्दसे नमः मुखे । ॐ नृसिंह देवतायै हृदि। हं बीजाय नमः गुह्ये। ईं शक्त्ये नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

कराङ्गन्यासः	करन्यासः	षडाङ्गन्यासः
ॐ उग्रंवीरं	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
महाविष्णुं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ज्वलंतं सर्वतोमुखं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
नृसिंहं भीषणं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुं।
भद्रंमृत्युमृत्युं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
नमाम्यहम्	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

मन्त्रन्यास :- **ॐ उं नमः शिरसि।** इस तरह प्रत्येक अक्षर के पहले **ॐ** तथा बाद में **नमः** कहकर सर्वत्र न्यास करें।

ग्रं ललाटे। वीं नेत्रयो। रं मुखे। मं दक्षिणबाहुमूले। हां दक्षंकर्पूरे। विं

दक्षिणमणिबन्धे। ष्णुं दक्षहस्तांगुलि मूले। ज्वं दक्षहस्तांगुल्यग्रे। लं वामबाहुमूले। तं वामकर्पूरे। सं वाममणिबंधे। वं वामहस्तांगुलि मूले। तों वाम हस्तांगुल्यग्रे। मुं दक्षपादमूले। खं दक्षजानुनि। नृं दक्षगुल्फे। सिं दक्षपादांगुलिमूले। हं दक्षपादांगुल्यग्रे। भीं वामपादमूले। षं वामजानुनि। णं वामगुल्फे। भं वामपादांगुलिमूले। द्रं वामपादांगुल्यग्रे। मृं दक्षिणकुक्षौ। त्युं वामकुक्षौ। मृं हृदि। त्युं गले। नं दक्षपार्श्वे। मां वामपार्श्वे। म्यं लिङ्गे। ॐ हं नमः ककुदि।

ध्यानम् –

माणिक्याद्रिसमप्रभं निजरुचा संत्रस्तरक्षोगणम्
जानुन्यस्तकराम्बुजं त्रिनयनं रत्नोल्लसद्भूषणम् ।
बाहुभ्यां धृतशङ्खचक्रमनिशं दंष्ट्राग्रवक्त्रोल्लसत्
ज्वालाजिह्वमुदग्रकेशनिचयं वन्दे नृसिंहं विभुम् ॥

भगवान से आज्ञा मांगें –

ॐ संविन्मयः परोदेवः परामृतरसप्रियः ।
अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनाय ते ॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

॥ अथ यन्त्रपूजनम्॥
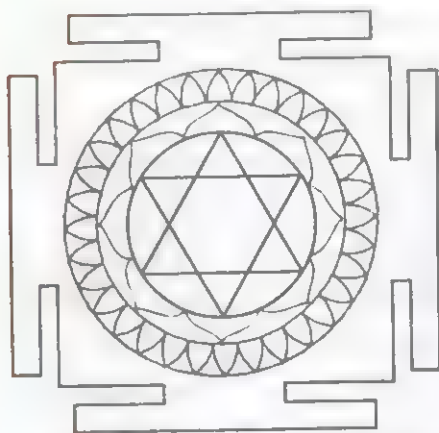
प्रथमावरणम् – षट्कोण के अग्निआदि चार कोणों में (केसरों में) – ॐ उग्रवीरं हृदयाय नमः। ॐ महाविष्णु शिरसे स्वाहा। ॐ ज्वलन्तं सर्वतोमुखमं शिखायै वषट्। ॐ नृसिंहं भीषणं कवचाय हुं। मध्ये – ॐ भद्रं मृत्युमृत्यं नेत्रत्रयाय वौषट्। दिक्षु – नमाम्यहं अस्त्राय फट्।

द्वितीयावरणम् – अष्टदले पूर्वादिदिशाओं में ॐ पक्षीन्द्राय गरुडाय नमः। ॐ शङ्कराय नमः। ॐ शेषाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। अग्निआदि चारों दलों में – ॐ श्रियै नमः। ॐ ह्रियै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ पुष्ट्यै नमः।

शारदातिलक के अनुसार अष्टदल के बाद भुपूर में इन्द्रादि लोकपालों की पूजा

है। परन्तु मन्त्रमहोदधि के अनुसार अष्टदल के बाहर ३२ दल यंत्र में।

तृतीयावरणम् कृष्णाय नमः, रुद्राय नमः, महाघोराय नमः, भीमाय नमः, भीषणाय नमः, उज्ज्वलाय नमः, करालाय नमः, विकरालाय नमः, दैत्यान्तकाय नमः, मधुसूदनाय नमः, रक्ताक्षाय नमः, पिङ्गलाक्षाय नमः, अञ्जनाय नमः, दीप्ततेजसे नमः, सुघोणाय नमः, हनवे नमः, विश्वाक्षाय नमः, राक्षसान्ताय नमः, विशालाय नमः, धूम्रकेशवाय नमः, हयग्रीवाय नमः, घनस्वराय नमः, मेघनादाय नमः, मेघवर्णाय नमः, कुंभकर्णाय नमः, कृतान्तकाय नमः, तीव्रतेजसे नमः, अग्निवर्णाय नमः, महोग्राय नमः, विश्वभूषणाय नमः, विघ्नक्षमाय नमः, महासेनाय नमः।

चतुर्थवरणम् – में भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों का पूजन करें और **पञ्चमावरणं में उनके आयुधों का पूजन** करें।

प्रत्येक नामावलि के बाद **पादुकां पूजयामि तर्पयामि** कहें। प्रत्येक आवरण पूजा के बाद पुष्पाञ्जलि प्रदान कर प्रार्थना करें –

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अमुकावरणार्चनम् ॥

पूर्णपुरश्चरण – पुरश्चरण ३२ लाख जप का होता है। पायस होम से मन्त्र सिद्धि होवे। लक्ष्मी प्राप्ति हेतु बिल्वकाष्ठ से होम करें। मंत्र जप कर श्वेत वचा का चर्वण करे तो वाक् सिद्धि होवे। दूर्वा होम से आयुवृद्धि, मरीचि व सर्षप होम से शत्रुनाश होवे। मंत्र जाप करके कुशा व दुर्वा से मार्जन करने पर रोग शांत होवे।

शत्रुनाश हेतु मंत्र में **मृत्युमृत्युं** की जगह **'साध्य (शत्रु का नाम) मृत्युं'** उच्चारण करें नखों व दाँत के टुकड़ों से रात्रि हवन करें। इससे राजा व सेनापति के दंभ का दमन होकर दास बन जाते है।

॥ नृसिंह लक्ष्मी ॥

एकत्रिंशद्वर्णो मन्त्रः – **ॐ श्रीं ह्रीं जयलक्ष्मीप्रियाय नित्यप्रमुदितचेतसे लक्ष्मीश्रितार्ध -देहाय श्रीं ह्रीं नमः।**

विनियोगः – **ॐ अस्य मन्त्रस्य पद्मोभव ऋषिः। अतिजगती छन्दः। श्रीनरकेसरी देवता। श्रीं बीजम्। ह्रीं शक्तिः ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यासः – **ॐ पद्मोभव ऋषये नमः शिरसि। अति जगती छन्दसे नमः**

मुखे। श्री नरकेसरी देवतायै नमः हृदि। श्रीं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कराङ्गन्यासः - श्रां, श्री, श्रूं, श्रैं, श्रौं, श्रः से षड्ङ्गन्यास करें।

ध्यानम् -

क्षीराब्धौ वसुमुख्य देवनिकरैरग्राादि संवेष्टितः
शङ्खं चक्रगदाम्बुजं निजकरैर्बिभ्रस्त्रिनेत्रः सितः ।
सर्पाधीशफणातपत्रलसितः पीताम्बरालंकृतो
लक्ष्म्याश्लिष्ट कलेवरो नरहरिस्तान्नीलकण्ठो मुदे ॥

॥ यन्त्रावरण पूजनम् ॥

विष्णु की नृसिंह मूर्ति का पूजन करें।
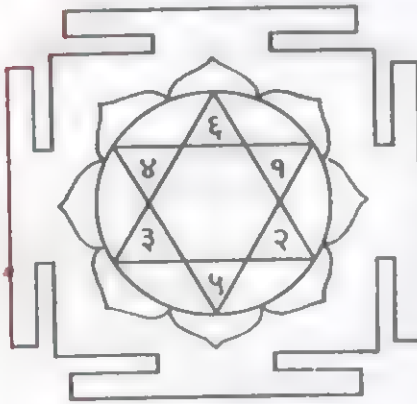
नृसिंह–लक्ष्मी यंत्रम्

अथ प्रथमावरणम् - षट्कोण में अग्नि आदि क्रम से - **ॐ श्रां हृदयाय नमः। ॐ श्रीं शिरसि स्वाहा। ॐ श्रूं शिखायै वषट्। ॐ श्रैं कवचाय हुं।** मध्ये - **ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्।** दिक्षु - **ॐ श्रः अस्त्राय फट्।**

द्वितीयावरणम् - अष्टदल में पूर्वादिक्रम से - **ॐ भास्वत्यै नमः। ॐ भास्कर्यै नमः। ॐ चिन्तायै नमः। ॐ द्युत्यै नमः। ॐ उन्मीलिन्यै नमः। ॐ रमायै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ रुच्यै नमः।**

तृतीयावरणम् - भूपुर में (परिधि में) पूर्वादिक्रम से **इन्द्रादि की पूजा करें।**

चतुर्थावरणम् - भूपुर में इन्द्रादि देवों के **वज्रादि आयुधों का पूजन करें।**

सभी देवों की पादुकां '**पूजयामि तर्पयामि से गंधार्चन**' व तर्पण कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

अस्य पुरश्चरणं षष्टिसहस्राधिक लक्षत्रयम्। तथा च एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षत्रयं षष्टिसहस्रकम्। मध्वक्तैर्मल्लिका पुष्पैर्जुहुयात् जातवेदसि (हवन करें) **मल्लिका कुसुमैर्होमादिष्ट सिद्धिमवाप्नुयात्॥**

॥ इति नृसिंह मन्त्र प्रयोग ॥

॥ त्रैलोक्यमोहननृसिंह कवचम् ॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीनृसिंह कवच मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः गायत्रीश्छन्दः नृसिंह देवता, क्ष्रौं बीजं, मम सर्वारिष्ट च शत्रुक्षयाय पूर्वकं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

॥ नारद उवाच ॥

इन्द्रादि देववृंदेश ईडमेश्वर जगत्पते ।
महाविष्णोर्नृसिंहस्यकवचं ब्रूहि मे प्रभो ।
यस्य प्रपठनाद्विद्वांस्त्रैलोक्ये विजयी भवेत ॥१॥

॥ ब्रह्मोवाच ॥

शृणु नारद! वक्ष्यामि पुत्रश्रेष्ठ तपोधन ।
कवचं नरसिंहस्य त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥२॥
स्त्रष्टाहं जगतां वत्स पाठनाद्धारणाद्यतः ।
लक्ष्मीर्जगत्त्रयपतिं संहर्ता च महेश्वरः ॥३॥
पाठनाद्धारणादेवा बहवश्च दिगीश्वराः ।
ब्रह्ममंत्रमयं वक्ष्ये भ्रांत्यादिनिवारकम् ॥४॥
यस्य प्रसादा दुर्वासास्त्रैलोक्य विजयी भवेत् ।
पाठनाद्धरणाद्यस्य शास्ता च क्रोध भैरवः ॥५॥
त्रैलोक्यविजयस्यापि कवचस्यः प्रजापतिः ।
ऋषिश्छन्दस्तु गायत्री नृसिंहो देवता विभुः ॥६॥
क्ष्रौं बीजं मे शिरः पातु च न्द्रवर्णोमहामनुः ॥७॥
ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलंतं सर्वतोमुखम् ।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्यं नमाम्यहम् ॥८॥
द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रो मंत्रराजः सुरद्रुमः ।
कंठं पातु ध्रुवं क्ष्रौं हृद्भगवते चक्षुषी मम ॥९॥
नरसिंहाय च ज्वालामालिने पातु कर्णकम् ।
दीपदंष्ट्राय च तथा अग्निनेत्राय नासिकाम् ॥१०॥
सर्वरक्षोघ्नाय च तथा सर्वभूतहिताय च ।
सर्वज्वरविनाशाय दह दह पदद्वयम् ॥११॥

रक्ष रक्ष वर्ममन्त्रः स्वाहा पातु मुखं मम ।
तारादि रामचन्द्राय नमः पातु हृदं मम ॥१२॥
क्लीं पायात्पार्श्वयुग्मं च तारो नमः पदं ततः ।
नारायणाय नाभिं च आं ह्रीं क्रौं क्ष्रौं च हुं फट् ॥१३॥
षडक्षरः कटिं पातु ॐ नमो भगवते पदम् ।
वासुदेवाय च पृष्ठं क्लीं कृष्णाय क्लीं उरुद्वयम् ॥१४॥
क्लीं कृष्णाय सदापातु जानुनी च मनुत्तमः ।
क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलांगाय नमः पायात्पदद्वयम् ॥१५॥
क्ष्रौं नृसिंहाय क्ष्रौं च सर्वाङ्गे मे सदावतु ।
इति ते कथितं वत्स सर्वमंत्रोघ विग्रहम् ॥१६॥
तवस्नेहान्मयाख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ।
गुरु पूजां विधायाथ गृहीत्वा कवचं ततः ।
सर्वपुण्ययुतो भूत्वा सर्वसिद्धि युतोभवेत् ।
शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ॥१८॥

इस कवच में षडक्षर एवं ३२ अक्षर के अलावा अन्य मन्त्र का भी उल्लेख है। यथा -

ॐ क्ष्रौं भगवते नरसिंहाय ज्वालामालिने दीपदंष्ट्राय अग्निनेत्राय सर्वरक्षोघ्नाय सर्वरक्षोघ्नाय सर्वभूतहिताय सर्वज्वर विनाशय दह दह रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

जो साधक दशांश हवन के द्वारा कवच को सिद्ध करता है। उस साधक के घर में लक्ष्मी तथा मुख में सरस्वती का वास होता है। हजार वर्ष की पूजा का फल प्राप्त करता है। भोजपत्र पर लिखकर कवच को स्वर्ण में स्त्रीवाम भाग में तथा पुरुष दक्षिण हाथ में अथवा कण्ठ में धारण करे तो रोग, शत्रु भूतपिशाचादि बाधा दूर होवे, त्रैलोक्य में विजय होवे। संतानहानि योग दूर होवे।

॥ इति ब्रह्म संहितायाम् त्रैलोक्य मोहनं नाम नृसिंह कवचं ॥

॥ हयग्रीव पूजनम् ॥

एकाक्षर मन्त्रः - ह्सूं

ऋषिन्यासः - (हिन्दी तन्त्रसार के अनुसार) ब्रह्मण ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। हयग्रीव रूपिणे विष्णवे देवतायै नमः हृदि।

हकाराय बीजाय नमः गुह्ये। सकाराय शक्तये नमः पादयोः। उकाराय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

अन्यमन्त्रः - मेरुतन्त्र के एकाक्षर मन्त्र तीन तरह से दिये हैं।

१. ह्सुं २. ह्सौं ३. ह्सें। छन्द त्रिष्टुप् बताया है।

ध्यानम् –

श्वेत पद्मस्थितं गौरं श्वेतपद्मनुलेपनं ।
भक्तप्रियं हयग्रीवं वन्देऽहं दानवान्तकम् ॥

अष्टाक्षरमन्त्र - ह्सूं हयशिरसे नमः।

ध्यानम् –

हस्तैर्दधानं मालां च पुस्तकं वर-पङ्कजं ।
कर्पूराभं सौम्यरूपं नानाभूषण भूषितम् ॥

त्रयस्त्रिंशदक्षर मन्त्रः - ॐ उद्गिरद् प्रणवोद्गीथ सर्ववागीश्वरेश्वर सर्ववेदमयाचिन्त्य सर्वं बोधय बोधय।

ऋषिन्यासः - शिरसि ब्रह्मणे ऋषये नमः, मुखेऽनुष्टुप् छन्दसे नमः हृदि, श्रीहयग्रीवाय देवतायै नमः।

कराङ्गन्यास - ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। उद्गिरद् प्रणवोद्गीथ तर्जनीभ्यां स्वाहा। सर्ववागीश्वरेश्वर मध्यमाभ्यां वषट्। सर्ववेदमयाचिन्त्य अनामिकाभ्यां हुं। सर्वं बोधय बोधय कनिष्ठाभ्यां फट्।

इसी तरह हृदयादि न्यास करें।

शरच्छशाङ्क प्रभमश्ववक्त्रं मुक्तामयैभरणैः प्रदीप्तम् ।
रथाङ्ग शङ्खार्चित बाहुयुग्मं जानुद्वयन्यस्तकरं भजामः ॥

अन्य मन्त्राः –

१. ॐ उद्गिरत् प्रणवोद्गीथ सर्ववागीश्वर सर्ववेदमयाचिन्त्य सर्वं बोधय बोधय स्वाहा ॐ। २. ह्सूं ॐ उद्गिरत् ...... सर्वं बोधय बोधय स्वाहा। ३. ॐ ह्सूं उद्गिरत् ...... सर्वं बोधय बोधय स्वाहा। ४. विश्वोत्तीर्ण स्वरूपाय चिन्मयानन्द रूपिणे तुभ्यं नमो हयग्रीव विद्याराजाय विष्णवे। ५. हंसः विश्वोत्तीर्ण स्वरूपाय .... विष्णवे स्वाहा हंसः।

॥ यन्त्रपूजनम् ॥
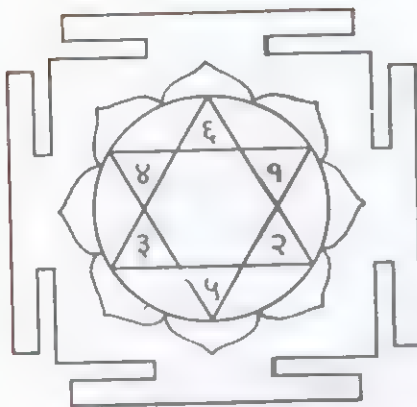
हयग्रीव यंत्रम्

प्रथमावरणम् – षट्कोणेहसां हृदयाय नमः। हसीं शिरसे स्वाहा। हसूं शिखायै वषट्। हसैं कवचाय हुं। हसौं नेत्रत्रयाय वौषट्। हसः अस्त्राय फट्।

द्वितीयावरणम्– (अष्टदल मूले) – ॐ प्रज्ञाहयाय नमः। ॐ मेधाहयाय नमः। ॐ स्मृतिहयाय नमः। ॐ विद्याहयाय नमः। ॐ लक्ष्मीहयाय नमः। ॐ वागीशहयाय नमः। ॐ विद्याविशालहयाय नमः। ॐ नादविमर्दनहयाय नमः।

तृतीयावरणम् – (अष्टदले मध्ये) ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ रत्यै नमः। ॐ प्रीत्यै नमः। ॐ कीर्त्यै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ तुष्ट्यै नमः। ॐ पुष्ट्यै नमः।

चतुर्थावरणम् – (अष्टदलाग्रे) – ॐ ऐरावताय नमः। ॐ पुण्डरीकाय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ कुमुदाय नमः। ॐ अंजनाय नमः। ॐ पुष्पदंताय नमः। ॐ सार्वभौमाय नमः। ॐ सुप्रतीकाय नमः।

पञ्चमावरणम् – पञ्चमावरण में भूपूर (परिधि) में इन्द्रादि दिक्पालों का तथा **षष्टमावरण** में उनके आयुधों का पूजन करें।

॥ वराह मन्त्र प्रयोगः॥

भगवान विष्णु के वराह स्वरूप की आराधना भूमि लाभ हेतु तथा शत्रुनाश हेतु करना शुभ है। यज्ञ स्वरूप भी इनको माना है अतः ज्ञान की वृद्धि होवे।

मन्त्र यथाः – **ॐ नमो भगवते वराहरूपाय भूर्भुवः स्वः पतये (स्वस्पतये) भूपतित्वं मे देहि ददापय स्वाहा।** यह तैंतीस अक्षर का मंत्र है।

ऋषिन्यासः – **शिरसि भार्गव ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुपृछन्दसे नमः। हृदि** आदिवराहाय देवतायै नमः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कराङ्गन्यासः - एकदंष्ट्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः। व्योमोल्काय (व्योमकेशाय) तर्जनीभ्यां स्वाहा। तेजोधिपतये मध्यमाभ्यां वषट्। विश्वरूपाय अनामिकाभ्यां हुं। महादंष्ट्राय कनिष्ठाकाभ्यां नमः।

इसी तरह हृदय, मस्तक, शिखा, कवच और अस्त्र न्यास करें।

ध्यानम् –

आपादं जानुदेशाद् वरकनकनिभं नाभिदेशाद
धस्तान्मुक्ताभंकण्ठ देशात् तरुणरविनिभं मस्तकान्नीलभासम् ।
ईडे हस्तैर्दधानं रथचरणदरौ खड्ग खेटोगदाख्यम्
शक्तिं दानोभये च क्षितिधरण लसद् द्रंष्ट्रमाद्यं वराहम् ॥

यन्त्र मध्य में प्रधान का पूजन कर आवरण पूजा करें।

वराह यंत्रम्
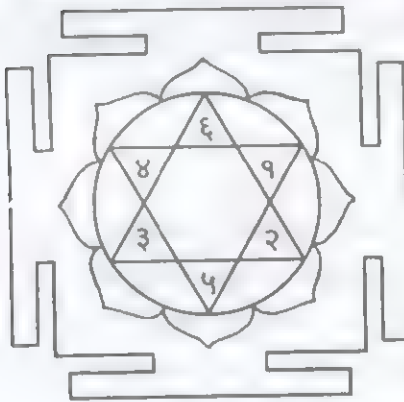
प्रथमावरणम् - षट्कोण में पञ्चांग पूजा करे - एकदंष्ट्राय हृदयाय नमः। व्योमोल्काय शिरसे स्वाहा। तेजोधिपतये शिखायै वषट्। विश्वरूपाय कवचाय हुं। महादंष्ट्राय अस्त्राय फट्।

द्वितीयावरणम् - अष्टदले - (पूर्वादिक्रमेण) ॐ चक्राय नमः। ॐ शङ्खाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ खेटकाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ वराय नमः। ॐ अभयाय नमः।

तृतीयावरणम् - तृतीय आवरण में इन्द्रादि का तथा चतुर्थावरण में उनके वज्रादि आयुधों का पूजन करें।

एक लाख जप का पुरश्चरण करें। घृत, मधु, शर्करा युक्त कमलों से दशांश होम करें। (वैशम्पायन संहिता में विष्णु मन्त्र के जप को रात्रि में निषेध बताया गया है)

॥ इति वराह मन्त्रप्रयोगः ॥

॥ वेदव्यास मन्त्र प्रयोगः ॥

ज्ञानवृद्धि हेतु तथा कथा उपदेशक पद हेतु वेदव्यासजी का जप पूजन करना चाहिये।

अष्टाक्षरो मन्त्रः - **व्यां वेदव्यासाय नमः।**

विनियोगः - **अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सत्यवतीसुतो देवता, व्यां बीजम्, नमः शक्तिः, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यासः - **ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। सत्यवतीसुतो देवता हृदि। व्यां बीजाय नमः गुह्ये। नमः शक्तये नमः पादयो। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यासः - **ॐ व्यां हृदयाय नमः। व्यीं शिरसे स्वाहा। व्यूं शिखायै वषट्। व्यैं कवचाय हुं। व्यौं नेत्रत्रयाय वौषट्। व्यः अस्त्राय फट्।**

इसी तरह से कराङ्गन्यास करें।

ध्यानम् -

व्याख्यामुद्रिकया लसत्करतलं सद्योगपीठस्थितं
वामेजानुतले दधानमपरं हस्तेषु विद्यानिधिम् ।
विप्रव्रातवृतं प्रसन्नमनसं पाथोरुहांगद्युतिं
पाराशर्य्यमतीव पुण्यचरितंव्यासं स्मरेत्सिद्धये ॥

इस तरह ध्यान कर पूजन करें। सर्वतोभद्रमण्डल पर धर्मादिपीठ देवताओं का पूजन करें।
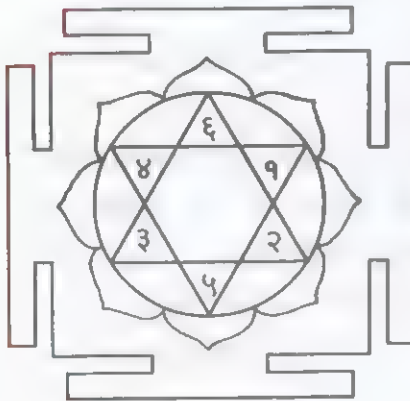
वेदव्यास यंत्रम्

पूर्वादि चार दिशाओं में- **धं धर्माय नमः, ज्ञां ज्ञानाय नमः, वैं वैराग्नाय नमः, ऐं ऐश्वराय नमः।** अग्नि आदि चार कोणों में - **अं अधर्माय नमः, अं अज्ञानाय नमः, अं अवैराग्याय नमः, अं अनैश्वर्याय नमः।**

इसके बाद यंत्र में आवरण पूजन करें। यंत्र मध्य में वेदव्यास जी की पूजा करें।

प्रथमावरणम्- (षट्कोणे) अग्नि आदि चार कोणों में - **व्यां हृदयाय नमः, व्यीं शिरसे स्वाहा, व्यूं शिखायै वषट्, व्यैं कवचाय हुँ, व्यों नेत्रत्रयाय वौषट्, व्यः अस्त्राय फट् चतुर्दिक्षु** (पश्चिमे)

द्वितीयावरणम् - (अष्टदले) पूर्वादि चार दिशाओं में - **ॐ शल्याय** (पैलाय) **नमः। ॐ वैशम्पायनाय नमः। ॐ जैमिन्यै नमः। ॐ सुन्मताय नमः।**

अग्नि आदि चार कोणों में - **ॐ श्री शुकाय नमः। ॐ उग्रश्रवसे नमः। ॐ समन्याय नमः। ॐ चिमनाय नमः।** (मतान्तरे) **ॐ शुकाय नमः। ॐ रोम हर्षणाय नमः। ॐ उग्रश्रवसे नमः। ॐ अन्यमुनीन्द्रेभ्यो नमः।**

तृतीयावरणम् - में **इन्द्रादि की भूपूर (परिधि) में** तथा उनके बाहर **आयुधों की चतुर्थावरण में पूजा करें।** पुरश्चरण करके पायसान्न से दशांश होम करें कवित्व को प्राप्त करें। कीर्ति लाभ सम्पदा मिले।

मृत्युञ्जय पुटित व्यास मंत्रः - **ॐ जूं सः व्यां वेदव्यासाय नमः।** सर्वोपद्रव शान्त होकर विजय प्राप्त करें।

॥ इति व्यास विधानम् ॥

॥ परशुराम मन्त्र प्रयोगः॥

भगवान परशुराम का प्रयोग दरिद्रतादोहन, धनलाभ, भूमि प्राप्ति, शत्रुनाश, ज्ञानवृद्धि, राजबंधन मुक्ति हेतु तथा अभीष्ट लाभ हेतु किया जाता है।

पंचदशाक्षर मंत्र - **ॐ राँ राँ ॐ राँ राँ ॐ परशु हस्ताय नमः।**

षडङ्गन्यास - **ॐ हृदयाय नमः। राँ राँ शिरसे स्वाहा। ॐ राँ राँ शिखायै वषट्। ॐ परशुहस्ताय कवचाय हुँ। ॐ नमः अस्त्राय फट्। इसी तरह से करन्यास करें।**

॥ यन्त्र पूजनम् ॥

यन्त्रमध्य में भगवान परशुराम का ध्यान करें।

सम्पूर्णा विलसन्ति सोपनिषदो वेदोपवेदाः पुरः
पृष्ठे मार्गण पूर्णतूर्ण विलसत् कोदण्ड-दण्डो महान् ।
बर्हिष्टेम-कमण्डलु च परशुं पाण्योर्वहन् शास्त्रवित्
शापे शस्त्र वरे च पेशलकरः श्रीभार्गवो भ्राजते ॥

प्रथमावरणम् – षट्कोण में हृदयादिन्यास के मन्त्रों से पूजन करें।
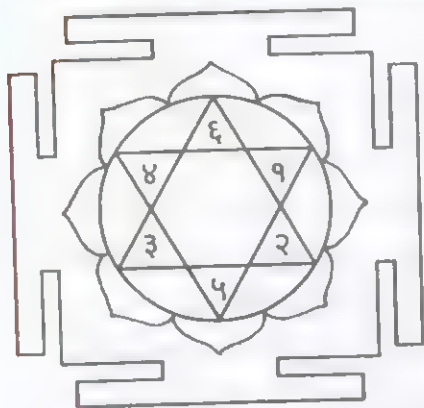
परशुराम यंत्रम्

द्वितीयावरणम् – (अष्टदले) – पूर्वादिक्रमेण – **ॐ जामदग्न्ये नमः, ॐ शबरीयै नमः, ॐ भीष्माय नमः, ॐ कार्तवीर्याय नमः। अग्निआदि चारों कोणों में – ॐ द्रां दत्तात्रेयाय नमः, ॐ गणेशाय नमः, ॐ रामाय नमः, ॐ शिवाय नमः।**

तृतीयावरणम् – (भूपूरे) – इन्द्रादि देवों तथा चतुर्थावरण में उनके आयुधों का पूजन करें।

परशुराम गायत्री मंत्रः – ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि। तन्नः परशुरामः प्रचोदयात्॥

षडङ्गन्यासः – **ॐ जामदग्न्याय हृदयाय नमः, ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा, ॐ महावीराय मध्यमाभ्यां नमः, ॐ धीमहि कवचाय हुं, ॐ तन्नः परशुरामो नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।** इसी तरह करन्यास करें।

परशुरामगायत्री – (मन्त्रकोषोक्त) – **ॐ ब्रह्मक्षत्राय विद्महे क्षत्रियान्ताय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।**

इस मन्त्र के भारद्वाज ऋषि, गायत्रीछन्द, तथा देवता परशुराम है।

षडङ्गन्यास हेतु विभाग इस प्रकार से है। – **१. ॐ ब्रह्मक्षत्राय विद्महे २. क्षत्रियान्ताय ३. धीमहि ४. तन्नो ५. रामः ६. प्रचोदयात्।**

सात्विक प्रयोग –

सात्विकं श्वेतवर्णं च भस्मोद्धूलित विग्रहं
किरीटिनं कुण्डलिनं वरं स्वक्षवराभयान्।
करैर्दधानं तरलं विप्रं क्षत्रवधोद्यतं
पीताम्बधरं कामरूपं बाला-निरीक्षितम्॥

विशेष पुरश्चरण २४ लाख जप का है, दशांश होम सिताढ्य घृत पायस से करें। सात्विक ध्यान कर वैदिकगायत्री के प्रथमपाद का जप कर बाद में परशुरामगायत्री

का जप करें तो संतान, विवाह, कृषि हेतु वर्षा, धन संपत्ति वाक्सिद्धि आदि अभिलाषा पूर्ण होती है।

राजसीध्यानम् –

ध्यायेच्च्यतामसं क्षत्ररुधिराक्त परश्वधं ।
आरक्तनेत्रं कर्णस्थ ब्रह्मसूत्रं यमप्रभम् ॥

वैदिक गायत्री के मध्य पाद को प्रथम जपकर बाद में मन्त्र को जपे या मध्यपाद से युक्त कर परशुरामगायत्री का पुरश्चरण करें तो देश ग्राम पुर में बालकों व गायों की रक्षा होवे, महामारी, शीतला आदि की शांति होवें।

तामसध्यानम् –

धनुष्टङ्कार-निर्घोष सन्त्रस्त भुवनत्रयं ।
चतुर्बाहुं मुसलिनं राजसं क्रुद्धमेव च ॥

वैदिक गायत्री के अन्तिम पाद से युक्त कर सर्षप होम करें तो रोगक्षय व शत्रुनाश होवें।

परशुरामनाम मन्त्रः – आद्यो रामो जामदग्न्यः क्षत्रियाणां कुलान्तकः। परश्वध धरो दाता मातृहा मातृजीवकः। समुद्रतीरनिलयो महेशपठिताखिलः। गोत्राणकृद् गोप्रदाता विप्रक्षत्रिय-कर्मकृत्। द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पटेन्नरः। नाऽपमृत्युर्न-दारिद्र्यं न च वंशक्षयो भवेत्॥

(दोनों मन्त्रों का विशेष विधान परशुराम तन्त्र में है।)

॥ परशुराम स्तोत्रम् ॥

(आचार्य श्रीमदमृतवाग्भव प्रणीत)

विक्रम सम्वत् १९८९ वैशाख शुक्ला तृतीया रविवार के दिन श्री मार्तण्डक्षेत्र में (मटन, कश्मीर) इस स्तोत्र की विद्वान् श्रीमदमृतवाग्भव ने रचना की। परशुरामजी के बल की प्रसंशा करते हुये कहा कि सहस्रबाहु के रक्त से पितरों का तर्पण करने वाले, २१ बार पृथ्वी को जीतकर कश्यप मुनि को दान करने वाले परमवीर आपके हाथ में परशु को देखकर महाराज दशरथ भी स्त्री भेष में छिपकर भाग गये थे। जिनको इन्द्र ने अपने आधे सिंहासन पर बिठाकर सम्मानित किया था। निश्चय ही यह स्तोत्र प्रभावशाली है।

श्रीपरशुराम-मंत्रो यथा मंत्र-महार्णवे प्रतिपादितः – '' **ॐ राँ राँ ॐ राँ राँ**

ॐ परशु-हस्ताय नमः "।

श्रीपरशुरामगायत्री- "ॐ जामदग्नाय विद्महे महा-वीराय धीमहि। तन्नः परशुरामः प्रचोदयात् "।

करन्यास/अङ्गन्यास- ॐ जामदग्नाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः), ॐमहावीराय मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्), ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हुँ), ॐ तन्नः परशुरामो कनिष्ठकाभ्यां नमः (नैत्र-त्रयाय वौषट्), ॐ प्रचोदयात् करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्)।

ध्यानम्-

सम्पूर्णा विलसन्ति सोपनिषदो वेदोपवेदोः पुरः ।
पृष्ठे मार्गण-पूर्ण-तूर्ण-विलसत्-कोदण्ड-दण्डो महान् ॥
बर्हिष्ठेम-कमण्डलू व परशुं पाण्योर्वहन् शास्त्रवित् ।
शापे शस्त्र-वरे च पेशल-करः श्रीभार्गवो भ्राजते ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

मत्तक्षत्रियकृत्तकण्ठ-विगलद् रक्तौघ सम्प्लावितम्
भक्तानुग्रहणं कठोरपरशुं धृत्वावतीर्याधुना ।
दृप्तोदृण्ड दुरीह दुष्टदमनो दीनावलीपालको
धर्मोद्धार धुरन्धरो भृगुवरो रामः समुज्जृम्भताम् ॥१ ॥

श्रीमद्-रेणुकया धृतं स्वजठरे भूभारनाशाय यत्
श्रीमद्भार्गव जामदग्न्यमतुलं रामाभिधानं महः ।
दृप्यत्-पार्थिव वृन्दकानन ललज्ज्वालाढ्य -
वैश्वानरश्चण्डीप्राणपति प्रियस्य परशोदारायि तत्संस्तुमः ॥२ ॥

लक्ष्मीपतेरुरसि रोषकषायिताक्षः
पाद प्रहारमकरोन्मुनि - पुङ्गवो यः ।
ब्रह्मर्षिवृन्द परिचुम्बित-पादपद्म
स श्रीभृगुर्जयति विप्रकुलप्रकाशः ॥३ ॥

श्रीमानुदारचरितो जयतादजस्त्रं
ब्रह्मर्षि - सोम - जमदग्निरिति प्रसिद्धः ।
दृप्यन्नृपान्त करणं तनयं प्रसूय
येनाऽखिलं जगदिदं परितो व्यरक्षि ॥४ ॥

संपूर्ण भूमिगतवीर महीपतीनां
अन्यायमाश्रितवतां प्रमदोद्धतानाम्
साकालरात्रिरिव नाशकरी समन्तात्
श्रीरेणुकाभगवती विजयाय भूयात् ॥५॥

देवेन येन ततमस्ति समस्तमेतद् विश्वं
स्वशक्तिखचितं स्वविलासरूपम् ।
तं त्वां महर्षिगणपूजितपाद पद्मं
सर्वात्मना भृगुवरं शरणं भजामः ॥६॥

धर्मद्विषां नियमनाय गृहीतदीक्षं
श्रीरेणुकाभगवतीजठरात् प्रसूतम् ।
श्रीभार्गवस्य जमदग्निमुनेः सुपुत्रं,
रामं लसत् परशुपाणितलं नमामः ॥७॥

स्फूर्जन्मदोद्धत - नृपावलि - काननाली-
र्दग्ध्वा महीसुरगणान् परिरक्ष्य बन्धून् ।
त्रातं भुवस्तलमिदं भवता समस्त,
सम्प्राप्य खण्डपरशोः परशुं प्रसन्नात् ॥८॥

लोकत्रयातुलपराक्रम जन्मभूमे,
शीर्षनिकृत्य कृतवीरसुतार्जुनस्य ।
त्रिः सप्तवारमकरोर्वसुधा समस्तां,
निः क्षत्रियां स्वपितृतर्पणकामनायाः ॥९॥

दुर्नीतपार्थिवकदम्ब - निकृत्तशीर्ष,
ग्रावद्रवद रुधिर - सिद्धधुनीजलौघैः ।
आकण्ठतो निजपितृन् परितर्प्य,
पश्चात् प्रादाद् धरां वसुमतीं किल कश्यपाय ॥१०॥

पाणौ विलोक्य परशुं भगवंस्त्वदीये,
स्त्रीवेषभाग् - दशरथोऽपि पलायितोऽभूत् ।
यः स्वासनार्ध - उपवेश्यपुरन्दरेण,
सम्मानितोऽभवदमोघबलेन शश्वत् ॥११॥

श्रीराम! भार्गव! भवच्चरणारविन्द,

मूलं शरण्यमधुना वयमागताः स्मः
कारुण्यपूर्ण सुदृशा किल नोऽनुगृह्य,
शक्तिं निजामनयनाशकरीं प्रदेहि ॥१२॥

वाक् - चातुरी चलति नो चतुराननस्य यच्छक्ति
वर्णनविधौ खलु तत्र केयम् ।
अस्माकमल्पविदुषां नृगिरा वराकी,
शक्ता भवेत् तदपि नाथ वरं प्रदेहि ॥१३॥

वीर - श्रीजामदग्न्यस्य पुण्यं स्तोत्रमिदं नराः ।
पठन्त्यनन्य मनसो येऽर्थ बोधपुरस्मरम् ॥१४॥
दुःशासनान्त करणी भीमा धर्म प्रबोधिनी ।
तेषां करगता शक्ति श्चकास्त्येव न संशयः ॥१५॥

अङ्काष्टनन्द पृथिवीमिति वैक्रामाब्दे वैशाखशुक्ल
गिरिजा दिवसे ग्रहेशे ।
मार्तण्डतीर्थभवने जमदग्निपुत्र स्तोत्रं
व्यधायि विदुषामृतवाग्भवेन ॥१६॥

॥ इति परशुराम प्रयोगः ॥

॥ गरुड मन्त्र प्रयोगः ॥

गरुड के मन्त्र विष निवारण के अलावा मारण मोहन षट्कर्मों के कार्यों में भी विशेष रूप से काम में आते हैं अतः षट्कर्मो को गारुड़ी विद्या के नाम से जाना जाता है।

पञ्चाक्षरी मन्त्रः - ''क्षिप ॐ स्वाहा'' (मन्त्र महोदधौक्त)

इस मन्त्र के अनन्त ऋषि, छन्द पंक्ति, देवता पक्षीन्द्र, ॐ बीज तथा स्वाहा शक्ति है।

अङ्गन्यासः - ॐ ज्वल ज्वल महामते स्वाहा हृदये। ॐ गरुड चूडानने स्वाहा शिरसि। ॐ गरुड शिखे शिखायै वषट्। ॐ गरुड़ प्रभञ्जय प्रभञ्जय प्रभेदय प्रभेदय त्रासय त्रासय विमर्दय विमर्दय स्वाहा कवचाय हुँ। ॐ उग्ररूपधर सर्वविषहर भीषय भीषय सर्वं दह दह भस्मी कुरु कुरु स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अप्रतिहतबलाप्रतिहतशासन हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्।

इसी तरह कराङ्गन्यास करें।

वर्णन्यासः ॐ क्षिं नमः पादयोः। ॐ पं नमः कट्योः। ॐ ॐ नमः हृदि। ॐ स्वां नमः वक्रे। ॐ हां नमः मूर्ध्नि।

ध्यानम् –

तमस्वर्णनिभं फणीन्द्रनिकरैः क्लृप्तागंभूषं प्रभुम्
स्मर्तृणां शमयं तमुग्रमखिलं नृणां विषं तत्क्षणात् ।
चंच्वग्रप्रचलद्भुजङ्गमभयं पाण्योर्वरं बिभ्रतम्
पक्षोच्चारित सामगीतममलं श्रीपक्षिराजं भजे ॥

यन्त्रपीठ पूजनम् – पक्षिराजाय स्वाहा से पीठ पूजा करें।

गरुड यंत्रम्
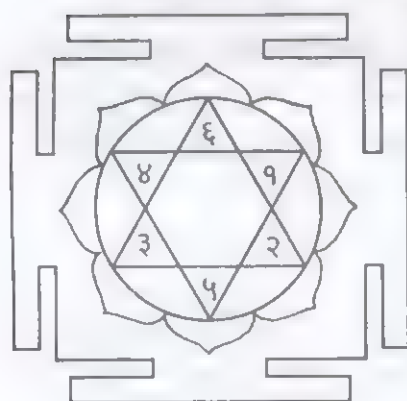
प्रथमावरणम् – षट्कोण में – हृदयादि अङ्ग पूजन हेतु हृदयादि न्यास पूर्वानुसार करें।

द्वितीयावरणम् – (अष्टदले) – ॐ अनन्ताय नमः। ॐ वासुकये नमः। ॐ तक्षकाय नमः। ॐ कर्कोटकाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ महापद्माय नमः। ॐ शङ्खपालाय नमः। ॐ कुलिकाय नमः।

तृतीयावरणम् – भूपूर (४ द्वारयुक्त परिधि) में इन्द्रादि दिक्पालों का तथा चतुर्थावरणं में उनके आयुधों का पूजन करें।

५ लाख जप का पुरश्चरण करें फिर तिलादि से दशांश होम करें।

॥ गरुड यन्त्र प्रयोगः विधि ॥

(आशुगरुडयन्त्रकल्पे)

(१) षट्कोण बनाये उसके मध्य में साध्य व्यक्ति का नाम लिखें। षट्कोण में रं, यं, ह्रीं, रं, यं, ह्रीं लिखें। उसके चारों ओर ॐ विष्णु वाहनाय लिखें। पुनः चारों ओर ''ह्रीं'' बीज लिखकर वेष्टित करें।

(२) अष्टदल पर पुनः अष्टदल बनाये या षोडशदल बनायें। प्रत्येक में मूलमन्त्र ''ॐ पक्षिराजाय विष्णु वाहनाय'' लिखें। उसके बाहर चार रेखायें

खींचकर चतुरस्त्र बनाये। चतुरस्त्र के चारों कोणों में त्रिशूल बनाकर शूलाग्र के आगे साध्य का नाम लिखे।

(३) त्रिकोण बनायें उसके ऊपर षट्कोण बनायें, उसके बाहर अष्टदल एवं अष्टदल के बाहर चतुरस्त्र (चोकोर) बनायें। त्रिकोण में 'लं' षट्कोणों में 'वं' तथा अष्टदलों में 'रं' यह अग्निबीज लिखें। अष्टदलों में 'ह्रीं' लिखे। भूपूर 'चतुरस्त्र' के चारों कोणों में 'हं' लिखें। पुनः षट्कोण में व भूपूर के चारों कोणों में 'रं, वं' लिखकर उनके आगे साध्य व्यक्ति का नाम लिखें। ऐसा करने से साध्य शत्रु पीड़ित होगा।

॥ गरुड़यन्त्र द्वितीय प्रकारा:॥

प्रथमावरणम् - षट्कोणे - **१. रं हृदयाय नमः, २. लं शिरसे स्वाहा, ३. वं शिखायै वषट्, ४. यं कवचाय हुं, ५. ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ६. ॐ विष्णु वाहनाय अस्त्राय फट्।**

द्वितीयावरणम्- (अष्टदले) - **ॐ सुपर्णाय नमः पूर्वे। ॐ गरुडाय नमः दक्षिणे। ॐ वैनतेयाय नमः पश्चिमे। ॐ ताक्ष्याय नमः उत्तरे। ॐ लक्ष्म्यै नमः अग्निकोणे। ॐ कीर्त्यै नमः नैऋते। ॐ जयायै नमः वायवे। ॐ मायायै नमः ईशाने।**

तृतीयावरणम्- भूपूरे (पूर्वादिक्रमेण) - **ॐ कुमुदायै नमः। ॐ पुण्डरीकाक्षायै नमः। ॐ वामदेवाय नमः। ॐ सनकाय नमः। ॐ सनत्कुमाराय नमः। ॐ शंकुकर्णाय नमः। ॐ सर्वनेत्राय नमः। ॐ सुमुखायै नमः। ॐ सुप्रतिष्ठायै नमः।**

चतुर्थावरणम् - भूपूर में **इन्द्रादि दिक्पलों का आयुधों** सहित पूजन करें।

॥ इति यंत्र आवरण पूजा ॥

॥ आशुगारुड मालामन्त्रा:॥

विनियोगः - **ॐ अस्य श्री आशु गारुड़ स्तोत्रस्य शंख ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री आशुताक्ष्यों देवता, गां बीजं, गों शक्तिः, गूः कीलकं मम आशुगरुडप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।**

गां, गीं, गूं, गें, गौं, गः से षडङ्गन्यास करे।

ध्यानम् –

आजानोस्तप्त हेमप्रभममलहिमं प्रख्यमानं हि तस्मा
दाकर्ण कुङ्कुमाभं भ्रमरकुलमिवश्यामलं मूर्ध्नि केशम् ।
ब्रह्माण्डव्याप्तदेहं भुजमहि प्रवरैर्भूषणैर्भूषिताङ्गम्
पिङ्गाक्षं तार्क्ष्य दंष्ट्रं वरदमभयदं तार्क्ष्यमुग्रं नमामि ॥

(१) ॐ नमो भगवते श्री आशुगरुडाय गरुडाय महागरुडाय समस्ताण्डबहि - स्त्रैलोक्यनायकाय नागशोणिततीर्थाय पक्षिराजाय विष्णुवाहनाय सर्वसर्वान् संहर संहर मर्दय-२ मोटय-२ त्रोटय-२ भ्रमय-२ मुञ्च-२ आगच्छ-२ आवेशय-२ शीघ्रं -२ समस्तभूतवेतालान्नाशय नाशय परमंत्र परहोम परजप परशून्य परक्षुद्रान् छेदय छेदय स्वविद्या मंत्रान् प्रकटय-२ स्वाहा।

(२) ॐ नमो भगवते श्री आशुगरुड़ाय स्वर्णपक्षाय विनतादास्य मोचनाय कश्यपानन्दवर्धनाय सर्पशत्रून्निवारणाय ॐ हन् २ दह२ ॐ पच २ हन२ दहि२ सर्वसर्पान्ति भक्षय२ सर्वविषान्नाशय नाशय हूं फट् स्वाहा।

विनियोगः - अस्य श्री आशुगारुड़ मन्त्रस्य शंकर ऋषिः, जगतीछन्दः, आशुगरुडो देवता, गं बीजं, स्वाहा शक्तिः, सर्वविषहरणे विनियोगः।

(३) ॐ श्री गरुडाय महागरुडाय समस्ताण्डाद् वहिस्त्रैलोक्य नायकाय नागशोणित दिग्धाङ्गाय ॐ पक्षिराजाय विष्णु वाहनाय सर्प सर्प संहर२ मठ२ मर्दय२ मोटय२ लोपय२ त्रौटय२ भ्रामय२ मुञ्चय२ आकर्षय२ आवेशय२ सिद्धय२ शीघ्र२ समस्त भूत वेतालान् नाशय२ सर्वग्रहान् नाशय२ सर्वशत्रून् विद्रावय२ सर्वदष्टान् विनाशय२ सर्वविषं नाशय नाशय स्वाहा।

(४) (तन्त्रसारे) ॐ नमो भगवते गरुडाय कालाग्निवर्णाय एह्येहि कालानल -लोलजिह्वाय पातय२ मोहय२ विद्रावय२ भ्रम२ भ्रामय२ हन२ दह२ पत२ हुं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र का अयुत जप का पुरश्चरण है। घृताक्त कृष्णपुष्पों से दशांश होम करें।

(५) ॐ नमो भगवते गरुडाय महेन्द्रपर्वतशिखराकार रूपाय संहारय२ मोचय२ निर्विष२ विषमप्यमृतं चाहारसदृशरूपमिदं ज्ञापयामि स्वाहा।

(६) गरुडस्तव- (तन्त्रसारे) सुपर्णं वैनतेयं च नागारिं नागभीषणम्। जैवातृकं विषारं च हयजितं विश्वरूपिणम् ॥१॥ गुरुत्मंतं खगश्रेष्ठं तार्क्ष्यं

कश्यपनंदनम् द्वादशैतानि नामानि गरुडस्य महात्मनः ॥२॥ यः पठेत्प्रातरुत्थाय स्थाने वा शयनेऽपि वा। विषं नाक्रमते तस्य न हिंसंति हिंसकाः ॥३॥ संग्रामे व्यवहारे च विजयस्तस्य जायते। बंधनान् मुक्तिमाप्नोति यात्रायां सिद्धिमेव च॥

(७) (हारीतः) नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि। नमोस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहिमां विषसर्पतः ॥१॥ सर्पायसर्व भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष। जन्मेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीक वचनं स्मर ॥२॥ आस्तीक वचनं श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्तते। शतधाभिद्यते मूर्ध्नि शिंशवृक्ष फलं यथा ॥३॥ एतान्गरुडमंत्रांस्तु निशायां पठते यदि। मुच्यते सर्वबाधाभ्यो नात्र कार्या विचारणा।

॥ इति गरुड़ मन्त्रप्रयोग विधानम् ॥

॥ आयुध मंत्राः ॥

१. शङ्ख (नवाक्षर) - ॐ क्लीं जलचराय स्वाहा।

(अष्टादशाक्षर) महाजलचराय हुं फट् स्वाहा। पाञ्चजन्याय नमः।

२. स-शरधनुः (शार्ङ्ग) - महाशार्ङ्गाय सशराय हुं फट् स्वाहा।

३. सुदर्शनचक्र (सप्ताक्षर) - ॐ सहस्त्रार हुं फट्।

इसके ऋषि अहिर्बुध्न्य, छन्द अनुष्टुप् देवता, चक्ररूपहरि बीज सं, शक्ति हुं क्रमशः है।

(षोडशाक्षर) - ॐ नमो भगवते महासुदर्शनाय हुं फट्।

षडाङ्गन्यास - क्रमशः छः मन्त्रों से करें - ॐ आचक्राय स्वाहा। ॐ विचक्राय स्वाहा। ॐ सुचक्राय स्वाहा। ॐ धीचक्राय स्वाहा। ॐ संचक्राय स्वाहा। ॐ ज्वालाचक्राय स्वाहा।

ध्यानम् –

कल्पान्तार्क प्रकाशं त्रिभुवनमखिलं तेजसापूरयन्तं
रक्ताक्षं पिङ्गकेशं रिपुकुलभयदं भीमदंष्ट्राट्टहासम् ।
चक्रं शङ्खं गदाब्जे पृथुतरमूषलं चापपाशाङ्कुशान्
स्वैर्बिभ्राणं दोर्भिराद्यं मनसि मुररिपुं भावयेच्चक्र संज्ञम् ॥

समचत्वारिंशाक्षर मन्त्रः - ॐ नमो भगवते महासुदर्शनाय महाचक्राय

महाज्वालाय दीप्तरूपाय सर्वनाथ रक्ष रक्ष मां महाबलाय हुं फट्।

ऋष्यादि न्यास पूर्ववत् करें। पुरश्चररण में ६४ सहस्र जप करें।

एकसमत्यक्षर – ॐ सुदर्शन महाचक्रराज दह दह सर्वदुष्ट भयं कुरु कुरु छिन्दि२ विदारय२ परमंत्रान् ग्रस२ भक्षय२ भूतानि त्रासय२ हुं फट् स्वाहा सुदर्शनाय नमः।

४. खड्ग ॐ क्लीं खड्ग तीक्ष्ण भिंधि भिंधि हुं फट्।

५. गदा क्लीं कौमोदकि महासर्वबले सर्वासुरान्तिके प्रसीद हुं फट् स्वाहा।

६. अङ्कुश – ॐ क्लीं अङ्कुश! कंचु कंचु हुं फट् स्वाहा।

७. मुसल – काम संवर्तक मुसल! पोथय पोथय हुं फट् स्वाहा।

८. पाश – ॐ क्लीं पाश! वध वध आकर्षयाकर्षय हुं फट् स्वाहा।

९. किरीट ॐ किरीट केयूर हार मकर कुण्डलालंकृत शङ्ख चक्र गदा पद्म हस्त पीताम्बरधर श्रीवत्साङ्कित वक्षःस्थल श्रीभूमिसहित स्वात्मज्योतिर्द्वय दीप्तिकराय सहस्त्रादित्य तेजसे नमः।

१०. छत्र – छं छत्राय नमः। (मेरुतन्त्रे) छन्द गायत्री, देवता हर।

ध्यानम् – स्वर्ण दण्डं सितप्रभं आरक्त कलशं ध्यायेन्मस्तके स्वे च पूजयेत्।

११. चामर – शशांङ्क करसङ्काश क्षीरडिण्डिमपाडुर प्रोत्सरयाशु दुरितं चामर श्री नमोस्तुते।

१२. ध्वज – ॐ शक्रकेतवे महावीर्याय श्यामवर्णायच्छत्रराजाय नमो नारायणध्वज गरुड़ासन रक्ष रक्ष आयुधानि रिपून् दह दह हुं फट् स्वाहा।

१३. पताका – ॐ श्रीं श्रीं श्रीं हिरण्यकशिपोर्युद्धे पूतने दैवतासुरे रणारपति कालन मृत्युकालहन्त्रि दह दह रिपून् सर्वान् पतातिके हुं फट् स्वाहा।

१४. परशु – ॐ क्लीं रामायुधाय श्री पं परशवे नमः।

दण्डगायत्री – ब्रह्मोद्भवाय विद्महे स्वर्णरूपाय धीमहि तन्नो दण्डः प्रचोदयात्।

卐 इति श्रीविष्णु तन्त्रम् सम्पूर्णम् 卐

॥ शिव तन्त्रम् ॥

एकाक्षरीमंत्र - **'हौं'**। हिन्दी तन्त्रसार में ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, देवता सदाशिव कहे गये है। शारदा तिलक में **'हं'** बीज **'औं'** शक्ति कहा है।

एकाक्षर चिंतामणि - **'क्ष्रौं'** शारदा तिलक के अनुसार यह भगवान शिव के उत्तरवक्त्र से सम्बन्धित है। ऋषि काश्यप, छन्द अनुष्टुप्, देवता अर्द्धनारीश्वर **'रं'** बीज **'ॐ'** शक्ति का उल्लेख है।

षड्ङ्गन्यास - रं, **कं, षं, मं, रं, यं** इन छः व्यञ्जनों से करें।

नील प्रवाल रुचिरं विलसत् त्रिनेत्रं पाशारुणोत्पल कपाल-त्रिशूल हस्तम् ।
अर्धाम्बिकेश मनिशं प्रविभक्त भूषं बालेन्दु-बद्धमुकुटं प्रणमामि रूपम् ॥

टीकाकार के अनुसार देवता उमेश है तो **ध्यान** इस प्रकार करें -

अहिशशधर - गङ्गाबद्धतुङ्गासमौलिः
त्रिदशगण नतांघ्रिस्त्रीक्षणः स्त्रीविलासः ।
भुजगपरशु शूलान् खड्ग वह्नी कपालं
शरमपि धनुरीशो विभ्रदव्याच्चिरं वः ॥

इस प्रकार करके जप समय मूलध्यान अर्द्धनारीश्वर स्वरूप का ही करें। पुरश्चरण का दशांश होम मधुयुक्त तिलतण्डुलों से करें।

एकाक्षरतुम्बरु - **'क्ष्म्र्यूँ' ऋषि** आदि शारदातिलकोक्त है।

रक्ताभमिन्दु-शकलाभरणं त्रिनेत्रं खट्वाङ्ग पाशसृणिशुभ्रकपाल हस्तम् ।
वेदाननं चिपिट नासमनर्घभूषं, रक्ताङ्गराग-कुसुमांशुकमीशमीडे ॥

द्वयक्षर दक्षिणामूर्ति - **'हंसः'**। ब्रह्मा ऋषि, छन्द गायत्री, देवता दक्षिणामूर्ति बीज **'हं'** शक्तिः। **ह्सां, ह्सीं** इत्यादि से षडङ्गन्यास करें।

त्र्यक्षर नीलकण्ठ - **'प्रों त्रीं ठः'** हिन्दी तंत्रसार में मन्त्र **'प्रों नू त्रीं ठः'** लिखा है जिसके बारे में मतभेद हैं। ऋषि अरुण, छन्द अनुष्टुप्, देवता नीलकण्ठ लिखा है तो ''मन्त्र मञ्जूषा'' में ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता, नीलकण्ठ एवं स्थावर- जङ्गम विषहरणार्थे विनियोग कहा है। पुनः शारदा तिलक में अरुणा ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द, **'प्र'** बीज एवं **'ठ'** शक्ति बताये है।

मेरुतन्त्रोक्त त्र्यक्षरीमन्त्र - नीलकण्ठमनुं वक्ष्ये समस्त विषनाशनं - **''शं नीं ठः''**।

अरुण ऋषि, छन्द अनुष्टुप्, देवता नीलकण्ठ, बीज शं, शक्ति ठः है।

षडङ्गन्यास - हराय हृदये नमः। कपर्दिने शिरसे स्वाहा। नीलकण्ठाय शिखायै वषट्। कालकूट विषभक्षणाय कवचाय हुं। श्रीकण्ठाय नेत्रत्रयाय वौषट्। शितकण्ठाय अस्त्राय फट्। इसी तरह करन्यास करें।

मन्त्र न्यास करें तो त्र्यक्षर के प्रत्येक अक्षर से दो आवृत्ति में करें।

ध्यानम् –

ध्यायेद्देवं नीलकण्ठं बालार्कयुतवर्चसं,
जटाभूत लसच्चन्द्राकारकैः फणिसत्तमैः ।
कृतकल्प कराम्भोजैर्दधानं जपमालिकां,
शूलं कपालं खट्वाङ्गमक्षमालां च विभ्रतम्
प्रतिवक्त्रं त्रिनयनं व्याघ्रचर्माम्बरावृतं,
पद्ममध्ये समासीनमति सुन्दर विग्रहम् ॥

३ लाख जप करके घृताक्त हविष्य से दशांश होम करें।

पञ्चाक्षर ईशानः मन्त्र - 'नमः शिवाय' हिन्दीतन्त्रसार में **ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, देवता ईशान** आदि हैं तो "मन्त्ररत्न मंजूषा" में देवता '**ईश**' कहा है। मेरुतन्त्र में देवता का नाम **सदाशिव** बताया है।

पञ्चांगन्यासः - मन्त्र के एक-एक अक्षर से अर्थात् **नं हृदयाय नमः, मं शिरसे स्वाहा, शिं शिखायै वषट्, वां कवचाय हुं, यं अस्त्राय फट्,** पञ्चांग न्यास करें।

ध्यानम् –

चारुचन्द्रकलाराजज्जटा - मुकुटमण्डितं,
पञ्चवक्त्रधरं शंभुं प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनम्
शार्दूलचर्मवसनं रत्नाभरणभूषितं,
दक्षोर्ध्वहस्ते टङ्कं च वरं व दधतं करैः ।
वामोर्ध्वहस्ते हरिणं दधानमभये परे,
सुप्रसन्नमुखाम्भोजं निविष्टिं कुशविष्टरे ।
ब्रह्मविष्णुमहेशाद्यैः स्तुतं कृष्णं सुरासुरैः,
विश्वाद्यं विश्ववपुषं भवभीतिहरं भवम् ॥

पुरश्चरण हेतु ५ लाख जपकर घृताक्त तिलादि में दशांश होम करें।

षडक्षर-ईशानमन्त्र - '**ॐ नमः शिवाय**'। हिन्दीतन्त्रसार में ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, देवता ईशान बताया है।

''**हसकहल ह्रीं ॐ, हसकल ह्रीं नमः, सकल ह्रीं शिवाय**''। निम्न देवताओं के बाद **नमः** बोलते हुये षडङ्गन्यास करें।

षडङ्गन्यास : **१. सर्वज्ञाय २. नित्यतृप्तये ३. अनादिबोधाय ४. स्वतन्त्राय ५. नित्यमलुप्त शक्तये ६. नित्यमनन्त शक्तये नमः।**

मन्त्र के ऋषि छन्द पूर्ववत् है देवता ईशान की जगह सदाशिव कहे है।

ध्यानम् –

गोक्षीरफेन धवलं रजताद्रिसमप्रभं,
चारुचन्द्रकला राजज्जटा मुकुट मण्डितम् ।
पञ्चवक्त्रधरं शंभुं प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनम्,
शार्दूलचर्मवसनं रत्नाभरणभूषितम् ॥

षडक्षर दक्षिणामूर्ति मन्त्र - '**महादेवाय हुं**'।

मेरु तन्त्र में ऋषिवामदेव, छन्दविराट्, देवता वामनायक बताये है।

लिङ्गन्यस्त महाकालिं मदिरासक्त मानसं,
लोहदण्ड मांसपिण्डं पानपात्रं त्रिशूलकम् ।
दधतं भर्जितं मत्स्यं चषकं रुधिरस्य च,
स्पृशन्तमेकेन भगमपरेण कुचद्वयम् ॥

आठ लाख से पुरश्चरण करे। विशेपाहुति दधिमांसादि से।

सप्ताक्षर उमापतिः मन्त्र - '**ह्रीं नमः शिवाय ह्रीं**'। मेरुतन्त्र में ऋषि वामदेव, छन्द पंक्ति, देवता उमापति बताये हैं।

अष्टाक्षर उमापतिः मन्त्र - '**ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं**'। ऋषि देवता पूर्ववत्।

ध्यानम् –

बन्धूक कुसुमारक्तं चन्द्रार्धकृत शेखरं,
शूलं कपालमभयं वरं च दधतं करैः ।
वामोरु-संस्थितां देवीं श्लिष्यन्तं वामबाहुना,
स्मेरवक्त्रं त्रिनयनं सर्वाभरण भूषितम् ॥

अष्टाक्षर नीलकण्ठः – '**ॐ नमो नीलकण्ठाय**'। मेरुतन्त्र व तन्त्रसार में ऋषिब्रह्मा, छन्द गायत्री, देवता नीलकण्ठ बताये है।

भिन्नपाद षडक्षर-ईशान मन्त्र – विद्यार्णव तन्त्रोक्त (एकादश श्वासे) '**ॐ हौं हसकल ह्रीं ह्रीं हसकहल ह्रीं नमः सकल ह्रीं शिवाय**'। जो श्रीविद्या में दीक्षित है, बालात्रिपुर सुन्दरी के उपासक है उनको त्रिकूटों से संपूटित मन्त्र जपने से अपने आराध्य का भी आशीर्वाद मिलेगा।

ऋषिवामदेव, छंद पंक्ति, देवता सदाशिव, हं बीज तथा ॐ शक्ति है। हां हीं इत्यादि से षडङ्गन्यास करें।

सिन्दूरपुंज शोणाङ्गं स्मेर वक्त्रं त्रिलोचनम्,
मणिमौलिलसच्चन्द्रकलालंकृत मस्तकम् ।
दक्षिणोर्ध्व करे टङ्कं दधानं दतधो वरं,
वामोर्ध्व हस्ते हरिणं तदधोऽभयमादरात् ।
पीनवृत्तघनोतुङ्ग-स्तनाग्रे विनिवेश्य च,
वामाङ्के सन्निविष्टायाः प्रियाया रक्तपङ्कजे ।
दधत्यां दक्षिणेहस्ते चासीनं रक्तपङ्कजे,
नानाभरण संदीप्तं नित्यगंधस्त्रगम्बरम् ॥

अष्टाक्षर सदाशिवः – '**ॐ ह्रीं ग्लौं नमः शिवाय**'। (मेरुतन्त्रोक्त) **ऋषिवामदेव, छन्द पंक्ति, देवता सदाशिव है।** ज्ञानवृद्धि हेतु उपासना करें।

ध्यायेत् सततं सिन्दूरारुणं शंभुं त्रिलोचनं,
टङ्कं मृगं तथा देवीं चालिङ्गन्तं वरप्रदम् ।
हस्तैश्चतुर्भिरारक्तपद्मं च दधतीं करैः,
पीनवृतघनोत्तुङ्गस्तनीं वामाङ्क संस्थिताम् ।
रक्तपद्मसमासीनं रक्तस्त्रग् गन्धलेपनम् ॥

दशाक्षर रुद्रः – '**ॐ नमो भगवते रुद्राय**'। (मेरुतन्त्रोक्त) ऋषि बोद्धायन, छन्द पंक्ति देवता रुद्र है। ध्यान पञ्चाक्षर मन्त्र की तरह है।

भिन्नपाद दशाक्षर रुद्रः – (विद्यार्णवतन्त्रोक्त) '**ॐ हसकल ह्रीं नमो हसकहल ह्रीं भगवते सकल ह्रीं रुद्राय**'। यह भगवती त्रिपुर सुन्दरी के तीनों कूटों से संपुटित होने से प्रभावशाली है।

इसके ऋषि ब्रह्मा, छन्द विराट् और देवता सदाशिव है।

षडङ्गन्यास - १. ॐ २. नमः ३. भगवते ४. रुद्राय ५. ॐ नमो भगवते रुद्राय ६. रुद्राय अस्त्राय फट्।

आकीर्णं दिव्यभौगैरमरदिति सुतैरर्चितंशैलकन्या देहार्धं, धारयन्तं स्फटिकमणिनिभं व्याघ्रचर्मोत्तरीयम् । द्वैपीं कृत्तिं वसानं हिमकिरण कला शेखरं नीलकण्ठं हृष्टं व्याप्तं कलाभिर्धृत कपिलजटं भावयेऽहं महेशं ॥

यथा शक्ति जप करके दशांश घृतपायस तिलादि से होम करें।

॥ अथ पञ्चाक्षरी मन्त्र प्रयोगः॥

मन्त्र - (शारदायाम्) ''नमः शिवाय एवं षडाक्षरी'' ॐ नमः शिवाय' ऋष्यादि से विनियोग करके न्यास करें

विनियोग - अस्य मन्त्रस्य वामदेव ऋषि, पंक्ति छन्द, ईशान देवता, ॐ बीजाय, नमः शक्तये, शिवायेति कीलकाय, सदाशिव प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - ॐ वामदेवर्षये नमः शिरसि। पंक्ति छन्दसे नमः मुखे। ईशान देवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। नमः शक्तये नमः पादयोः। शिवायेति कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

पञ्चाङ्गन्यास - पञ्चाक्षरी मन्त्र के प्रत्येक अक्षर से न्यास करें। नेत्रन्यास नहीं करें।

षडङ्गन्यास -	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ ॐ	अगुंष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः
ॐ नं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा
ॐ मं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्
ॐ शिं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
ॐ वां	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ यं	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

पञ्चमूर्तिन्यास -

ॐ नं तत्पुरुषाय नमः	तर्जनीभ्यां नमः।	मुखे। पूर्ववक्त्रे।
ॐ मं अघोराय नमः	मध्यमाभ्यां नमः।	हृदये। दक्षिण वक्त्रे।

ॐ शिं सद्योजाताय नमः	अनामिकाभ्यां नमः।	पादयोः। पश्चिम वक्त्रे।
ॐ वां वामदेवाय नमः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	गुह्ये। उत्तर वक्त्रे
ॐ यं ईशानाय नमः	इत्यगुंष्ठयोः नमः।	मूर्ध्नि। उर्द्ध वक्त्रे।

व्यापक न्यास – इस मन्त्र से करें -

ॐ नमोस्तु स्थाणुभूताय ज्योतिंर्लिंगामृतात्मने ।
चतुर्मूर्तिवपुःस्थाय भसितांगाय शंभवे ॥

ध्यानम् –

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रवतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणै व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

शिवयंत्र पूजनम् :- अत्र रुद्राः स्मृता रक्ता धृतशूल कपालका : ।

लिङ्गतोभद्रपीठ पर ''**मंडूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः**'' से पूजन करे ॐ से पीठ शक्तियों का पूजन करें।

शक्तयो रुद्रपीठस्थाः सिंदूरारुण विग्रहाः। रक्तोत्पलक पालाभ्याम-लंकृतकरांबुजा॥ इति ध्यात्वा॥
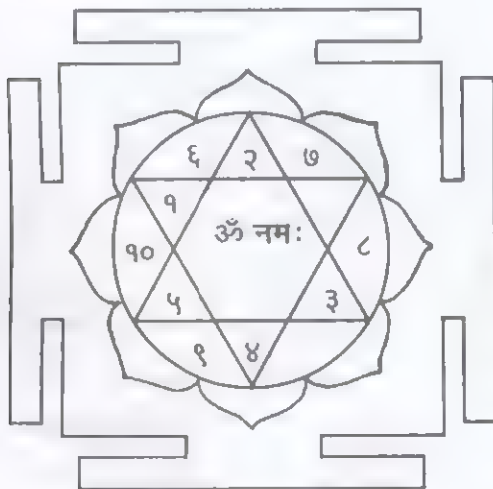
शिव पंचाक्षरी

रुद्र की नौ पीठ शक्तियों का पूर्वादि-क्रम से व मध्य में पूजन करें।

१. ॐ वामायै नमः, २. ॐ ज्येष्ठायै नमः ३. ॐ रौद्रयै नमः ४. ॐ काल्यै नमः ५. ॐ कलविकरिण्यै नमः ६. ॐ बलविकरिण्यै नमः ७. ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ८. ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ९. मध्ये – **ॐ मनोन्मन्यै नमः।**

इसके बाद पीठ पर शिव यंत्र को अग्न्युत्तारण करके दुग्धधारा-जलधारा से

शोधन कर रखें। प्रधान देव से यंत्र के आवरण देवताओं के पूजन की आज्ञा मांगें।

संविन्मयः परोदेवः परामृतरसप्रिय ।
अनुज्ञां शिव मे देहि परिवारार्चनाय मे ॥

प्रथमावरणम् (षट्कोणे) - यंत्रपूजा में सर्वत्र प्रत्येक देवता के बाद प्रथमा से संबोधन करते हुये **पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** से पुष्पगंधार्चन करते हुये तर्पण करें।

१. ऐशान्याम् - **ॐ ईशानाय नमः। ईशान श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः**। २. पूर्वे - **ॐ तत्पुरुषाय नमः**। ३. दक्षिणे **ॐ अघोराय नमः**। ४. पश्चिमे **वामदेवाय नमः**। ५. उत्तरे - **सद्योजाताय नमः**। पूजन के बाद पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणाचर्नम् ॥

इस तरह प्रत्येक आवरण में अमुकावरण कहते हुये पुष्पाञ्जलि देवें।

द्वितीयावरणम् - (षट्कोणाद्बह्ये) ६. ऐशान्याम् **निवृत्त्यै नमः**। ७. पूर्वे - **प्रतिष्ठायै नमः**। ८. दक्षिणे **विद्यायै नमः**। ९. पश्चिमे - **शांत्यै नमः**। १०. उत्तरे **शांत्यतीतायै नमः, शान्त्यतीता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः**।

पुष्पाञ्जलि - ॐ अभीष्टसिद्धिं मे .... द्वितीयावरणाचर्नम्॥

तृतीयावरणम् - (अष्टदले) पूर्वादिक्रमेण - **ॐ अनन्ताय नमः। ॐ सूक्ष्मायै नमः। ॐ शिवोत्तमाय नमः। ॐ एकनेत्राय नमः। ॐ एकरुद्राय नमः। ॐ त्रिमूर्तये नमः। ॐ श्रीकण्ठाय नमः। ॐ शिखण्डिने नमः**। पुष्पाञ्जलि देवें।

चतुर्थावरणम् - (अष्टदले पत्राग्रे) **पूर्वादिक्रमेण - ॐ उमायै नमः। ॐ चण्डेश्वराय नमः। ॐ नन्दिने नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ वृषभाय नमः। ॐ भृंगरिटये नमः। ॐ स्कंदाय नमः।**

पुष्पाञ्जलि ॐ अभीष्टसिद्धिं मे .... चतुर्थावरणाचर्नम्। से पुष्पाञ्जलि देवें।

पञ्चमावरणम् - भूपूरे (परिधौ) पूर्वे **इन्द्राय नमः। इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि**। इसी तरह अग्नि, यम, नैरृति, वरुण, वायव्य, कुबेर, ईशान, ब्रह्म एवं अनन्त सभी दिक्पालों का पूजन करें।

षष्ठमावरणम् - (भूपूरे) इन्द्रादि देवताओं के पास उनके आयुधों का पूजन

करें। ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्त्यै नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशायै नमः। ॐ अङ्कुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।

पुष्पाञ्जलि ॐ अभीष्टसिद्धिं मे .... पष्ठमावरणार्चनम्॥

विशेष पुरश्चरण २४ लाख जप का है। पायस, त्रिमधु (घृत, मधु, शर्करा) एवं पलाश समिध से दशांश हवन करें।

॥इति पञ्चाक्षर शिव मन्त्र प्रयोगः॥

॥ अष्टाक्षरी शिवमन्त्र प्रयोगः ॥

उमापति (शारदायाम्)

मन्त्र - "ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं"।

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीशिवाष्टाक्षर मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्ति छन्दः, उमापतिर्देवता सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋषिन्यासः - ॐ वामदेवर्षये नमः शिरसि, पंक्ति छन्दसे नमः मुखे, उमापतिदेवतायै नमः हृदि, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

अङ्गन्यास	करन्यास	षडङ्गन्यास
ह्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः
नं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा
मं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्
शिं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
वां	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
यं	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

> बंधूकसन्निभं देवं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरं ।
> त्रिशूलधारिणं वंदे चारुहासं सुनिर्मलम् ॥
> कपालधारिणं देवं वरदाभयहस्तकम् ।
> उमयासहितं शम्भुं ध्यायेत्सोमेश्वरं सदा ॥

लिङ्गतोभद्र मण्डल पर मण्डूकादि पीठ देवों का पूजन कर शिव की वामा ज्येष्ठा आदि ९ पीठ शक्तियों का आवाहन करें। (पञ्चाक्षरी विधान में वर्णित हैं)। यंत्र को अग्न्युत्तारण कर दुग्ध-जलधारा से शुद्धकर मण्डलपीठ पर रखें। देव से

आज्ञा मांगें।-

सविन्मय परो देव परामृतरस प्रिय ।
अनुज्ञां शिव मे देहि परिवारार्चनाय च ॥

प्रथमावरणम् - षट्कोणे आग्नेयादि चतुर्दिक्षु (अग्निकोणे) **१. ॐ नं हृदयाय नमः हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** पुष्पगंधार्चन व तर्पण करें।

इस तरह सब जगह पादुका पूजन करें। नैर्ऋत्यां - **ॐ मं शिरसे स्वाहा।** वायवे - **ॐ शिं शिखायै वषट्।** ईशाने - **ॐ वां कवचाय हुं।** मध्ये - **ॐ यं अस्त्राय फट्।**

पुष्पाञ्जलि देवें -

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

इसी तरह सर्वत्र द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ पञ्चमावरणार्चन के बाद आवरण का नाम लेते हुये कहें।

द्वितीयावरणम् - (षट्कोणाद्बाह्ये) **६. ॐ हृल्लेखायै नमः। ७. ॐ गगनायै नमः। ८. ॐ रक्तायै नमः। ९. ॐ कालिकायै नमः। १०. ॐ महोच्छुष्मायै नमः।**
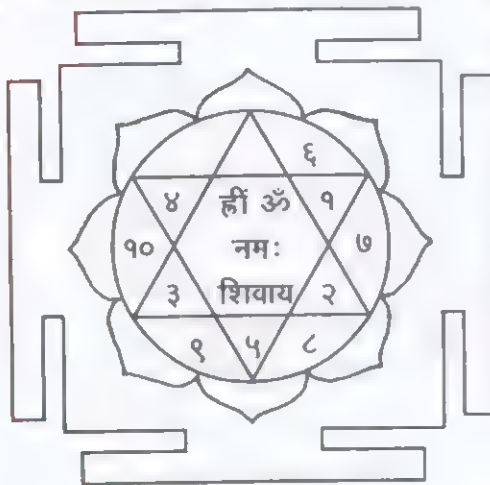
शिव अष्टाक्षरी

ये सभी पाश अंकुश पर अभय धारण किये हुए हैं।

गंधार्चन तर्पण के बाद "ॐ अभीष्ट सिद्धि ...वत्सल" से पुष्पाञ्जलि देवें।

तृतीयावरणम् - (अष्टदले) पूर्वादिक्रमेण - **ॐ वृषभाय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ कार्तिकेयाय नमः। ॐ नंदिने नमः। ॐ विघ्नेशाय नमः। ॐ श्यामाय नमः। ॐ सेनाय नमः।**

गंधार्चन तर्पण के बाद पुष्पाञ्जलि देवें।

चतुर्थावरणम् - (अष्टदलपत्राग्रे) - **ॐ ब्राह्म्यै नमः। ॐ माहेश्वर्य्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।** गंधार्चन करे व पुष्पाञ्जलि देवें।

पञ्चमावरणम् में भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों व **षष्ठमावरण** में उनके आयुधों का पूजन करे व ॐ अभीष्ट सिद्धिं .....वत्सल से पुष्पाञ्जलि देवें।

इस मन्त्र का १४ लाख जप का पुरश्चरण है। दशांश होम करें।

जुहुयान्मधुरासिक्तैरारग्वधसमिद्वरैः।

(इति उमापति मन्त्र प्रयोगः)

॥ अथ दशाक्षररुद्र मन्त्र विधानम् ॥

रुद्रयाग व विशिष्ट साधना में विविध ऋचाओं से न्यास किये जाते है। इसलिये इनका प्रयोग भी यहाँ दिया जा रहा है।

मन्त्र - ॐ नमो भगवते रुद्राय।

विनियोगः - **ॐ अस्य श्री रुद्रमन्त्रस्य बोधायन ऋषिः, पंक्ति छन्दः, रुद्रो देवता ममाभिष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यासः - **ॐ बोधायनर्षये नमः शिरसि, पंक्ति छन्दसे नमः मुखे, रुद्र देवतायै नमः हृदि, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

॥ न्यासः ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तयानस्तन्वा शंतमया गिरिशंताभिचाकशीहि ॥ इति शिखायां ॥१॥ **ॐ अस्मिन्महत्यर्णवेऽतरिक्षे भवा अधि। तेषा ॐ सहस्त्रयोजने०।** इति शिरसि ॥२॥ **सहस्त्राणि सहस्त्रशोबाह्वोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखाकृधि॥** इति ललाटे ॥३॥ **ॐ ह ॐ सः शुचिषद्वसुरंतरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथि-र्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्** ॥ इतिभ्रुवोर्मध्ये ॥४॥ **ॐ त्र्यंबकं यजामहे...** ॥ नेत्रयोः ॥५॥ **नमः स्त्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च नमो नादेयाय च वैशंताय च** ॥ कर्णयोः॥ ६॥ **मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः। मानोवीरान् रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मंतः सदमित्वा हवामहे** ॥ नासिकयोः ॥७॥ **ॐ अवतत्य**

धनुष्ट्व ॐ सहस्राक्षशतेषुधे । निशीर्यशल्यानांमुखोशिवो नः सुमनाभव॥ इतिमुखे ॥८॥ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः। तेषा ॐ सहस्र योजने० ॥ इतिकण्ठे ॥९॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिव ॐ रुद्रा उपश्रिता तेषांॐसहस्र॥ इत्युपकण्ठे ॥१०॥ नमस्ते आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुतते नमो बाहुभ्यां तवधन्वने ॥ इतिस्कंधे॥११॥ यातेहेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूवते धनुः। तया ऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥ इति बाह्वो ॥१२॥ ये तीर्थानि प्रचंरति सृकाहस्तानिषंगिणः। तेषा ॐ सहस्र. ॥ इति हस्तयोः ॥१३॥

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥ इत्यंगुष्ठयोः ॥१४॥ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः बलायनमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥ इति तर्जन्योः ॥१५॥ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ मध्यमायोः ॥१६॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ इत्यनामिकयोः ॥१७॥ ईशान सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति र्ब्रह्मणो ऽधिपतिर्ब्रह्मा। शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ इति कनिष्ठिकयोः ॥१८॥

नमो व किरिकेभ्यो देवानां ॐ हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नमः आनिर्हतेभ्यः ॥ इति हृदये ॥१९॥ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥ इति पृष्ठे ॥२०॥ नमो व हिरण्य बाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतये नमो नमः। सस्पिञ्जरायत्विषीमते पथीनाम्पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमो नमो बभ्लुशाय ॥ इति पार्श्वद्वये ॥२१॥ विज्यंधनुः कपर्द्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥ इति जठरे ॥२२॥ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रेभृतजातस्यजातः पतिरेकआसीत्। सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ इतिनाभौ ॥२३॥ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमेवृक्ष आयुधन्निधायकृत्तिं वसानआचर पिनाकम्बिभ्रदागहि ॥ इति कट्याम् ॥२४॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्द्दिनः। तेषा ॐ सहस्र.॥ इति गुह्ये ॥२५॥ ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ इति गुदे ॥२६॥ मानो महान्त

मुतमानो अभंकंमान उक्षन्तमुतमान उक्षितम्। मानो ऽवधीः पितरंमोतमातरंमानः प्रियास्तन्वोरुद्र रीरिषः ॥ इति ऊर्वो ॥२७॥ एषतेरुद्रभागस्तं जुषस्व तेनावसेन परोमूज वतोतीहि। अवततधन्वा पिनाकहस्तः कृत्तिवासाः॥ इति जानुनो ॥२८॥ ये पंथा परि रक्षय ऐलबृदाऽआयुर्युधः। तेषा ७ सहस्त्र.॥ इति पादयो ॥२९॥ अध्यवोच दधिवक्ता प्रथमोदैव्योभिषक। अहींश्चसर्वाञ्जम्भन्त्सर्वाश्च यातुधान्यो धराचीः परासुव॥ इति कवचम् ॥३०॥ नमो बिल्म्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनत्र्याय च नमो धृष्णवे ॥ इत्युपकवचम् ॥३१॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षायमीढुषे। अथो ये अस्य सत्त्वाना हन्तेभ्यो करन्नमः ॥ इति तृतीय नेत्रं ॥३२॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् । याश्चते हस्त इषवः पराता भगवो वप॥ इत्यस्त्रम् ॥३३॥

(इति प्रथमोन्यासः)

१ दिग्बंधन य एतावन्तश्च भूयाँ सश्चदिशोरुद्रा वितस्थिरे। तेषा ७ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानितन्मसि ॥

२. दशाङ्ग अक्षर न्यास : ॐ नमः मूर्ध्नि। नं नमः नासिकायाम्। मों नमः ललाटे। भं नमः मुखे। गं नमः कण्ठे। वं नमः हृदये। तें नमः दक्षिण हस्ते। रुं नमः वामहस्ते। द्रां नमः नाभौ। यं नमः पादयोः।

३. तृतीय न्यासः ॐ सद्योजातं ...... नमः हंस हंस पादयो। वामदेवाय ...... नमः हंस हंस उर्वोः। अघोरेभ्यो ..... रुद्ररूपेभ्यः हंस हंस हृदि। तत्पुरुषाय ..... प्रचोदयात् हंस हंस मुखे। ईशान ..... शिवोम् हंस हंस मूर्ध्नि। इस प्रकार ५ ऋचाओं से न्यास करें।

न्यासः (सम्पुट) -दशों दिशाओं में लोकपालों के मन्त्रों से न्यास पूर्वादिक्रम से करें। -

त्रातारमिन्द्र० ..... इन्द्राय नमः। त्वंनो अग्ने० ..... अग्नये नमः। सुगन्नः पंथां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्धेह्य जरन्न आयुः। अपैतुमृत्युरमृतं आगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु दक्षिणे यमायः नमः॥ असुन्वन्तम य जमानमिच्छस्तेन स्येत्यामन्विहि त स्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसात इत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ निर्ऋते नमः। तत्वायामि० ..... वरुणाय नमः। आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ७ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवनेमादय स्वयूयं पातस्वस्तिभिः सदानः। वायवे नमः॥ वय ७ सोमव्रते तवमनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि। कुबेराय नमः॥ तमीशानं जगत....। ईशानाय

नमः। अस्मेरुद्रा महेना पर्वता सो वृत्रहत्येभरहूतौ सजोषाः। यः स ठं सतेस्तुवतेधायि वज इन्द्र ज्येष्ठा अस्माँ अवन्तुदेवाः। ब्रह्मणे नमः॥ स्योना पृथिवी.....। धरायै नमः॥

४. चतुर्थ न्यास - मनोजूतिर० .... इति गुह्ये। अबोध्याग्निः समिधाजानानां प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम् । यह्वा इवप्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्त्रतेनाकमच्छ। इति उदरे॥ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कवि ठं सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः। इति हृदये॥ मर्म्माणिते वर्म्मणाछादयामि सोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवामदन्तु। इति मुखे॥ जातवेदा य दिवापाकोसि विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। संबाहुभ्यां धमति संपत त्रैर्द्यावाभूमि जनयन्देव एकः इति शिरसि॥

५. पञ्चमन्यासः - रुद्राष्टाध्यायी के मन्त्रों से इस प्रकार न्यास करे यज्जग्रतो० इत्यादि शिवसंकल्प के ६ सूत्रों का हृदय पर, सहस्त्रशीर्षाः इत्यदि १६ मन्त्रों से शिर पर, अद्भ्यः संभृतं.... इत्यादि ६ मन्त्रों से शिखा पर आशुः शिशानो इत्यादि १२ मन्त्रों से कवच पर, विभ्राट...... इत्यादि १७ मन्त्रों से नेत्रों पर, नमस्ते रुद्रमन्यवे इत्यादि ६६ मन्त्रों से अस्त्राय फट् का न्यास करें।

इसके बाद अष्टऋचाओं से नमस्कार करें। यथा -

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे.। ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं.। यः प्राणतो.। ॐ मही द्यौः पृथिवीचन इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पितृन्नोभरीमभिः। उपश्वासय.। अग्नेनय.। यातेअग्ने.। इमंयम.।

॥ रुद्रयन्त्रम् ॥

रुद्र यन्त्र के मध्य में पञ्चकोण है, उसके बाहर अष्टदल, उसके बाहर षोडशदल, उसके ऊपर चतुर्विंशतिदल, उसके ऊपर द्वात्रिंशदल तथा उसकें बाहर चत्वारिंशदल (कहीं-कहीं पर ४५ दल का भी लेख है।) पश्चात् बाहर भूपूर में (द्वारयुक्त परिधि) बनाकर यन्त्र शोधन करें। यह यन्त्र शिव पूजन व मृत्युञ्जय प्रयोग दोनों में किया जाता है। (मन्त्र. महो.)

कैलासाचल सन्निभं त्रिनयनं पञ्चास्यमम्बायुतं
नीलग्रीव महीश भूषणधरं व्याघ्रत्वचाप्रावृतम् ।
अक्षस्त्रग्वर कुण्डिकाभयकरं चान्द्रीं कलां बिभ्रतं
गङ्गाम्भो विलसज्जटं दशभुजं वन्दे महेशं परम् ॥
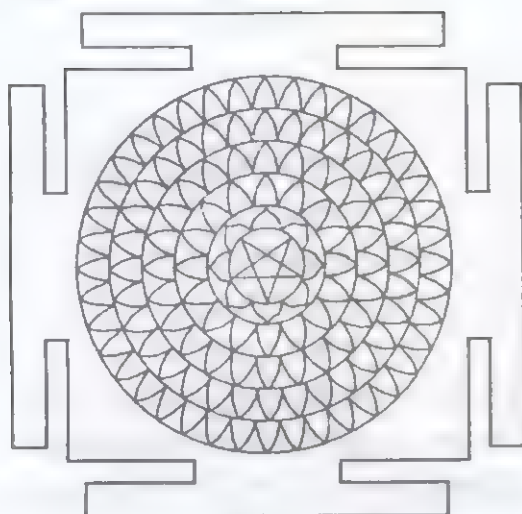
लिङ्गतोभद्र या सर्वतोभद्र पर "**ॐ मण्डूकादि परतत्त्वांत पीठ देवताभ्यो नमः**" से पीठ पूजन करें पश्चात् नवपीठ शक्तियों का पूजन करें-

पूर्वादिक्रमेण - **ॐ वामायै नमः, ज्येष्ठायै नमः, रौद्रयै नमः, काल्यै नमः, कलविकरिण्यै नमः, बलविकरिण्यै नमः, बलप्रमथिन्यै नमः, सर्वभूतदमन्यै नमः,। मध्ये - ॐ मनोन्मन्यै नमः।**

स्वर्णादिनिर्मित यंत्र का **अग्न्युत्तारण कर** दुग्ध व जलधारा से शोधन कर भद्रमण्डल पर पुष्पादि का आसन देकर "**ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मक शक्तियुक्तायानंत योगपीठाय नमः**" से स्थापित करें।

भगवान रुद्र का पृजन करें। यंत्र के आवरण देवताओं के पूजन की रुद्र से आज्ञा मांगें।

ॐ संविन्मयः परोदेव परामृतरस प्रियः ।
अनुज्ञां रुद्र मे देहि परिवारार्चनाय मे ॥

प्रत्येक देवता की नामावलि में संबोधन के पश्चात् प्रथमा से पुष्पगंधार्चन तर्पण करते हुये "**पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः**" कहें। प्रत्येक आवरण की पूजा पश्चात् "**ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं अमुकावरणार्चनम्**" से पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

प्रथमावरणम् - (पञ्चकोणे) **१.ॐ सद्योजाताय नमः। २. वामदेवाय नमः। ३. अघोराय नमः। ४. तत्पुरुषाय नमः। ५. ईशानाय नमः।** पूजनकर पुष्पाञ्जलि देवें।

द्वितीयावरणाम् - (अष्टदले) पूर्वादिक्रमेण **ॐ नंदिने नमः। महाकालाय नमः। गणेश्वराय नमः। वृषभाय नमः। भृंगिरिटये नमः। स्कंदाय नमः। उमायै नमः। चण्डेश्वराय नमः।** पूजन करके पुष्पाञ्जलि देवें।

तृतीयावरणम् - (षोडशदले) **अनंताय नमः। सूक्ष्माय नमः। शिवाय नमः। एकपादाय नमः। एकरुद्राय नमः। त्रिमूर्तये नमः। श्रीकण्ठाय नमः। वामदेवाय नमः। ज्येष्ठायै नमः। श्रेष्ठाय नमः। रुद्राय नमः। कालाय नमः। कलविकरणाय नमः। बलाय नमः। बलविकरणाय नमः। बलप्रमथनाय नमः।** पूजन करके पुष्पाञ्जलि देवें।

चतुर्थावरणम् - (चतुर्विंशति दले) **अणिमायै नमः। महिमायै नमः। लघिमायै नमः। गरिमायै नमः। प्राप्त्यै नमः। प्राकाम्यायै नमः। ईशितायै नमः। वशितायै नमः। ब्राह्म्यै नमः। माहेश्वर्यै नमः। कौमार्यै नमः। वैष्णव्यै नमः। वाराह्यै नमः। इन्द्राण्यै नमः। चामुण्डायै नमः। चण्डिकायै नमः। असितांगभैरवाय नमः। रुरुभैरवाय नमः। चण्डभैरवाय नमः। क्रोधभैरवाय नमः। उन्मत्तभैरवाय नमः। कालभैरवाय नमः। भीषणभैरवाय नमः। संहारभैरवाय नमः।** इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्।

पञ्चमावरणम् - (द्वात्रिंशत्पत्रके पूर्वादिक्रमेण) **ॐ भवाय नमः। शर्वाय नमः। ईशानाय नमः। पशुपतये नमः। रुद्राय नमः। उग्राय नमः। भीमाय नमः। महादेव नमः। अनंताय नमः। वासुकये नमः। तक्षकाय नमः। कुलीरकाय नमः। कर्कोटकाय नमः। शङ्खपालाय नमः। कंबलाय नमः। अश्वतराय नमः। वैन्याय नमः। पृथवे नमः। हैहनाय नमः। अर्जुनाय नमः। शाकुंतेलाय नमः। भरताय नमः। नलाय नमः। रामाय नमः। हिमवते नमः। निषधाय नमः। विंध्याय नमः। माल्यवते नमः। पारियात्राय नमः। मलयाय नमः। हेमकूटाय नमः। ॐ गंधमादनाय नमः।** इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्।

षष्ठमावरणम् - (चत्वारिंशदले) सभी तन्त्र ग्रन्थों में **प्रथम ८ दिक्पाल, पश्चात् उनकी ८ शक्तियां, उनके ८ आयुधों एवं ८ वाहन तथा अष्टदिग्गजो का पूजन क्रम लिखा है।** परन्तु इससे देवता कहीं, उनकी शक्ति व वाहन कहीं, आयुध कहीं इस तरह का क्रम हो जाता है। जब की आवाहन मन्त्रों में आता है कि अमुक देवतायै सांगायै सशक्त्यै सायुधायै सवाहनायै आवाहामि। अतः यहाँ इस आवाहन क्रम से स्थापना व पूजन दिया जा रहा है जो दूसरे मतों से भिन्न हो सकता है।

पूर्वादिक्रमेण - **ॐ इन्द्रायै नमः। ॐ शच्यै नमः। ॐ वज्राय नमः। ॐ ऐरावतायै नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ स्वाहायै नमः। ॐ शक्त्यै नमः। ॐ अजाय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ**

महिषाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ खड्गिन्यै नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ प्रेताय नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वारुण्यै नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ मीनाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ वायव्यै नमः। ॐ अङ्कुशायै नमः। ॐ पृषदे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ कौबेर्यै नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ नराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ईशान्यै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ वृषभाय नमः। ॐ ऐरावताय नमः। ॐ पुण्डरीकाय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ कुमुदाय नमः। ॐ अञ्जनाय नमः। ॐ पुष्पदंताय नमः। ॐ मार्वभौमाय नमः। ॐ सुप्रतीकाय नमः।

सप्तमावरणम् - (भूपूरे) इन्द्रादि देवों का अनन्त पर्यंत १० दिक्पालों का पूजन करें।

अष्टमावरणम् - (भूपूरे आग्नेयादि कोणेषु) **ॐ विरूपाक्षाय नमः। ॐ विश्वरूपाय नमः। ॐ पशुपतये नमः। ॐ उर्ध्वलिङ्गाय नमः ऐशान्ये।**

भूपूर के बाहर पूर्वादि ८ दिशाओं में - **ॐ श्वेताय विप्रवर्णाय सहस्त्रफणाय शेषाय नमः। ॐ नीलाय वैश्यवर्णाय पञ्चशतफणाय तक्षकाय नमः। ॐ कुंकुमाभाय विप्रवर्णाय सहस्त्रफणाय अनन्ताय नमः। ॐ पीताय क्षत्रियवर्णाय सप्तशतफणाय वासुकये नमः। ॐ कृष्णाय वैश्यवर्णाय सप्तशतफणाय शङ्खपालाय नम.। ॐ उज्ज्वलाय शूद्रवर्णाय पञ्चशतफणाय महापद्माय नमः। ॐ उज्ज्वलाय शूद्र वर्णाय त्रिंशदफणाय कंबलाय नमः। ॐ उज्ज्वलाय शूद्रवर्णाय त्रिंशद्फणाय कर्कोटकाय नमः।**

इति अष्टमावरणं पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्। एवमावरणपूजनं कृत्वा धूपादि नीराजनान्तं संपूज्य बद्धांजलि पूर्वकं प्रार्थयेत्।

ॐ नमो विरिंचिविष्णवीशभेदिने परमात्मने। सर्गसंस्थिति संहार व्यापृत-व्यक्तमूर्तये॥१॥ नमश्चतुर्धाप्रोद्भूत भूतभीतात्मनो भुवः। भूरिभारार्ति संहर्त्रे भूतनाथय शूलिने ॥२॥ विश्वग्रासाय विकसत्कालकूट विषाशने। तत्कालां कांकितग्रीव नीलकण्ठाय ते नमः ॥३॥ नमो देहार्द्धकांताय दग्धदक्षाध्वराय च। चतुर्वर्गेष्ट सिद्ध्यर्थदायिने मायिनेऽणवे ॥४॥ स्थूलाय मूलभूताय शूलवारितविद्विषे। कालहंत्रे नमश्चन्द्रखण्डमण्डितमौलये ॥५॥ भस्मासक्ताय भक्ताय भुक्ति-मुक्ति प्रदायिने। सकृद्व्यक्त स्वरूपाय शंकराय नमो नमः ॥६॥ नमो अंधकांतकरिपवेऽसृगद्विषे नमोऽस्तु ते द्विरदवराभवभेदिने। विषोल्लसत्फणिकुलबद्धमूर्तये नमः सदा वृषवरवाहनायते ॥७॥ वियन्मरुद्भूत

वहवायु कुंभनीमखेशख्यमृत मयूखमूर्तये । नमः सदा नरकायावभेदिने भवेह नो भवभयभंगकृद्विभो ॥८॥

इति रुद्रस्वतेन स्तुत्वा साष्टांगं प्रणाम्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं दशलक्षं जपः एवमर्चन्महादेवं पञ्चाङ्गन्यास पूर्वकम्। दशाक्षर जपासक्तो न सीदेत्स्वेष्टसाधने॥ मनोहराणिगेहानि सुंदर्योवामलोचनाः । धनमिच्छापूरणांतं लभते शिवसेवनात् ॥

॥ इति दशाक्षर रुद्रमन्त्र प्रयोगः ॥

॥ अथ त्वरित्रुद्रमन्त्र प्रयोगः॥

(हेमाद्रिशांति रत्नेषु)

इस मन्त्र का प्रयोग सभी कामनाओं की सिद्धि हेतु तथा विघ्ननाश हेतु किया जाता है। औषधोपचार में यदि दवाकाम नहीं कर रही है तो इसके प्रयोग से मार्गदर्शन होकर रोगी को लाभ प्राप्त होगा।

मन्त्रोयथा – ॐ यो रुद्रो ऽग्नौ योऽप्सुय ओषधीषु यो रुद्रो विश्वाभुवनाविवेश तस्मै रुद्राय नमोऽस्तु॥

विनियोगः – अस्य त्वरितरुद्र मन्त्रस्य अथर्वण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, त्वरितरुद्रसंज्ञिका देवता, नमः बीजम्, अस्तु शक्तिः त्वरितरुद्र प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

अङ्गन्यास	करन्यास	षडङ्गन्यास
ॐ यो रुद्रः	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः
अग्नौ	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा
योऽप्सु	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्
ओषधीषु	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
तस्मै रुद्राय नमोऽस्तु	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

पादादिन्यास – ॐ यः पादयोः। ॐ रुद्र जङ्घयोः। ॐ अग्नौ जानुनोः। ॐ यः ऊर्वोः। ॐ अप्सु गुल्फयोः। ॐ यः मेढ्रे। ॐ ओषधीषु नाभौ। ॐ यः उदरे। ॐ रुद्रः हृदये। ॐ विश्वाकण्ठे। ॐ भुवनामुखे। ॐ विवेश नासिकायाम्। ॐ तस्मै नेत्रयोः। ॐ रुद्राय भ्रुवोः। ॐ नमः ललाटे। ॐ अस्तु शिरसि।

मूर्द्धादिन्यास - **ॐ यः शिरसि। ॐ रुद्र ललाटे। ॐ अग्नौ नेत्रयोः। ॐ यः कर्णयो। ॐ अप्सु नासिकायाम्। ॐ यः मुखे। ॐ ओषधीषु बाह्वोः। ॐ यः हृदये। ॐ रुद्रः नाभौ। ॐ विश्वा गुह्ये। ॐ भुवना अपाने। ॐ विवेश ऊर्वोः। ॐ तस्मै जानुनोः। ॐ रुद्राय जङ्घयोः। ॐ नमः गुल्फयोः। ॐ अस्तु चरणयोः।**

इस प्रकार न्यास करके शिवजी को शुभमुद्रा दिखावें - **ॐ एषते रुद्रभागः सहस्वस्राम्बिकया तज्जुषस्व स्वाहैषतेरुद्रभाग आखुस्तेपशुः।** इत्यादि मन्त्रों से मुद्रा दिखाकर ध्यान करें।

ॐ रुद्रं चतुर्भुजं देवं त्रिनेत्रं वरदाभयम् ।
दधानमूर्ध्वं हस्ताभ्यां शूलं डमरूमेव च ॥१॥
अङ्क संस्थामुमां पद्मे दधानं च करद्वये ।
आद्ये करद्वये कुंभं मातुलुंगं च बिभ्रतम् ॥२॥

इस प्रकार ध्यान कर शिव पूजा करें। मन्त्र का पुरश्चरण २० हजार जप का है। विशेष जप २ लाख संख्या में करने चाहिये। दशांश होम, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण भोजन करे। जपकाल में भूमिशयन करे एक समय भोजन करें।

जपेत्त्वरितरुद्रं तु सर्वकामसमृद्धये ।
श्रीकामः शांतिकामो जपेल्लक्षमतंद्रितः ॥१॥
बिल्वसमिद्भिः श्रीकामः शांतिकामः शमीमयैः ।
जुहुयादाज्यसंमिश्रैस्तर्पण मार्जनं ततः ॥२॥
जप्त्वा लक्षं सुपुत्रार्थी पायसं जुहुयात्ततः ।
वित्तार्थी श्रीफलैर्होममायुष्कामस्तु दूर्वया ॥३॥
तिलैराज्येन संमिश्रैस्तेस्कामो घृतेन वै ।
व्रीहिभिः पशुकामस्तु राष्ट्रकामस्तु वै यवैः ॥४॥
पायसं सर्वकामेन होतव्यं शर्करान्वितम् ।
मध्वक्तान्याम्रपत्राणि तीव्रज्वरविनाशिना ॥५॥
हिमभूतज्वरार्थं तु गुडूचीभिर्हुनेद् ध्रुवम् ।
सर्वरोग विनाशाय सूर्यस्याभिमुखो जपेत् ॥६॥
अयुते द्वे जपा होमः कार्योऽर्के समिध [illegible]ः ।
औदुम्बरैरन्नकामस्तेजस्कामस्तु [illegible] खादिरैः ॥७॥

अपामार्ग समिध होमात् भूतबाधा विनश्यति ।
ग्रहबाधा विनाशाय जपेत् अश्वत्थसन्निधौ ॥८॥
लवणान्वित दध्यक्तास्तीक्ष्णाग्राश्वत्थ संभवा ।
हूयंते समिधः शुष्काः स्वाहांतं मन्त्रमुच्चरेत् ॥९॥
लाजाहोमेन कन्यार्थी कन्या प्राप्नोगति रूपिणीम् ।
लाजाश्चमधुसंमिश्राः श्वेतपुष्पाणि वा पुनः ॥१०॥
हूयंते हरिते देशे तस्य विश्वं वशेभवेत् ।
वामाङ्ग मुत्तमं कार्यं स्त्रीवशित्वे विचक्षणैः ॥११॥

होम के स्थान पर जलकुंभ रखें उसको स्पर्श करके १ हजार जप करें उसके जल से अभिषेक द्वारा व शाला को प्रोक्षण करने पर सभी अरिष्ट की शांति होती है।

लाजा होम से पुरुष वाञ्छित पत्नि व कन्या वाञ्छित पति को प्राप्त करे। वृष्टि कामना हेतु तिलों से पलाश समिध से होम करें। वास्तुपूजा, ईशान को बलिद्रव्य आदि प्रदान कर विधिवत् कार्य करें।

॥ इति त्वरितरुद्र प्रयोगः॥

॥ श्रीकण्ठादि कलामातृका न्यासः॥

कोई भी रुद्र प्रयोग हो, मृत्युंजय प्रयोग या शिव के किसी अन्य स्वरूप का यन्त्र का प्रयोग पुरश्चरणादि, होवें तो श्रीकण्ठादि कलामातृका न्यास करने से विशेष सिद्धि प्राप्त होवें।

विनियोगः - **अस्य श्रीकण्ठादिकलान्यासस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, गायत्री छन्दः, अर्द्धनारीश्वरो देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - **ॐ दक्षिणामूर्तये नमः शिरसि। ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे। ॐ अर्द्धनारीश्वर देवतायै नमः हृदये। ॐ हल बीजाय नमः गुह्ये। स्वरशक्तयो नमः पादयोः। ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

हृदयादिन्यास - **ॐ ह्सां, ॐ ह्सीं, ॐ ह्सूं, ॐ ह् सैं, ॐ ह्सौं, ॐ ह्सः** से करन्यास, हृदयादि न्यास करें।

ध्यानम् –

पाशाङ्कुश वराक्षस्त्रकपाणि शीतांशु शेखरम् ।
त्र्यक्षं रक्तसुवर्णाभमर्द्धनारीश्वरं भजे ॥१ ॥

बन्धूक काञ्चननिभं रुचिराक्षमालां ,
पाशाङ्कुशौ च वरदं निजबाहुदण्डैः ।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामः ॥२ ॥

॥ न्यास ॥

सभी नाम मन्त्रों के पहिले ॐ **ह्सौं** और बाद में **नमः** का उच्चारण करते हुये न्यास करे। यथा -

ॐ ह्सौं अं श्रीकण्ठेश पूर्णोदरीभ्यां नमः मस्तके। ॐ ह्सौं आं अनंतेश विरजाभ्यां नमः मुखवृत्ते। ॐ ह्सौं इं सूक्ष्मेश शाल्मलीभ्यां नमः दक्षिण नेत्रे। ई त्रिमूर्ति लोलाक्षीभ्यां वामनेत्रे। उं अमरेश वर्तुलाक्षीभ्यां दक्षिणकर्णे। ॐ अर्धीश दीर्घघोणाभ्यां वामकर्णे। ऋं भारभूतेश दीर्घमुखीभ्यां दक्षनासापुटे। ॠं तिथीश गोमुखीभ्यां वामनासापुटे। लृं स्थाण्वीश दीर्घजिह्वाभ्यां दक्षगण्डे। लॄं हरेश कुण्डोदरीभ्यां वामगण्डे। एं झिण्टीशोर्ध्वकेशीभ्यां उर्ध्वोष्ठे। ऐं भौतिकेश विकृतमुखीभ्यां अधरोष्ठे। ॐ सद्योजातेश ज्वालामुखीभ्यां उर्ध्वदन्त पंक्तौ औं अनुग्राहेशोल्कामुखीभ्यां अधोदन्तपङ्क्तौ। अं अक्रूरेश श्रीमुखीभ्यां कण्ठे शिरसि। अः महासेनेश विद्यामुखीभ्यां मुखमध्ये।

कं क्रोधीश महाकालीभ्यां दक्षस्कंधे। खं चण्डेश सरस्वतीभ्यां दक्षकर्पूरे। गं पञ्चान्तकेश सर्वसिद्धि गौरीभ्यां दक्षमणिबन्धे। घं शिवोत्तमेश त्रैलोक्य विद्याभ्यां दक्षकराङ्गुलिमूले। ङं एकरुद्रेश मंत्रशक्तिभ्यां दक्षकराङ्गुल्यग्रे। चं कूर्मेशात्मशक्तिभ्यां वामस्कंधे। छं एकनेत्रेश मूलमातृकाभ्यां वामकर्पूरे। जं चतुराननेश लम्बोदरीभ्यां वाममणिबंधे। झं अजेश द्राविणीभ्यां वामकराङ्गुलिमूले। ञं सर्वेश नागरीभ्यां वामकराङ्गुल्यग्रे।

टं सोमेश खेचरीभ्यां दक्षोरुमूले। ठं लाङ्गलीश मञ्जरीभ्यां दक्षजानुनि। डं दारुकेश रूपिणीभ्यां दक्षगुल्फे। ढं अर्धनारीश वारिणीभ्यां दक्षपादाङ्गुलिमूले। णं उमाकान्तेश काकोदरीभ्यां दक्षपादाङ्गुल्यग्रे। तं आषाढीष पूतनाभ्यां वामोरुमूले। थं दण्डीश भद्रकालीभ्यां वामजानुनि। दं अत्रीश योगिनीभ्यां वामगुल्फे। धं मीनेश शंखिनीभ्यां वामपादाङ्गुलिमूले। नं मेषेश तर्जनीभ्यां

वामपादाङ्गुल्युग्रे।

पं लोहिते श कालरात्रिभ्यां दक्षपार्श्वे। फं शिखीश कुब्जिनीभ्यां वामपर्श्वे। बं छगलाण्डेश कपर्दिनीभ्यां पृष्ठे। भं द्विरण्डेश वज्राभ्यां नाभौ। मं महाकालेश जयाभ्यां जठरे। यं त्वगात्मभ्यां वालीश सुमुखेश्वरीभ्यां हृदये। रं असृगात्मभ्यां भुजगेश रेवतीभ्यां दक्षांसे। लं मासात्मभ्यां पिनाकीश माधवीभ्यां ककुदि। मेदात्मभ्यां खड्गीश वारुणीभ्यां हृदयादि वामांसे। शं अस्थ्यात्मभ्यां केशवायवीभ्यां हृदयादि दक्षकरान्तं। षं मज्जात्मभ्यां श्वेतेश रक्षोविदारिणीभ्यां हृदयादि वामकरान्तं। सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीश सहजाभ्यां हृदयादि दक्षपादाग्रान्तं। हं प्राणात्मभ्यां लकुलीश लक्ष्मीभ्यां हृदयादि वामपादाग्रान्तं। लं शक्त्यात्मभ्यां शिवेश व्यापिनीभ्यां हृदयादि नाभ्यन्तम्। क्षं परमात्मभ्यां संवर्तकेश मायाभ्यां हृदयादि शिरोन्तम्।

इस प्रकार न्यास करके भगवान शिव का ध्यान करें। न्यास में शिव के स्वरूपों व उनकी की शक्तियों का आवाहन है।

अत्र रुद्राः स्मृता रक्ताधृताशूल कपालकाः ।
शक्तयो रुद्रपीठस्थः सिन्दूरारुण विग्रहाः ॥
रक्तोत्पल कपालाभ्यामलङ्कृत कराम्बुजाः ।
न्यस्तास्तिष्ठन्तु सर्वेऽपि शक्ति सौख्य विवर्धनाः ॥

॥ इति शिव कलामातृकान्यासः ॥

॥ दक्षिणामूर्ति शिव ॥

दक्षिणामूर्ति शिव को तन्त्रों का रचियता माना है। बुद्धि, विवेक व ज्ञान की अभिवृद्धि करने वाले एवं जगद्गुरु है। जिन लोगों को सद्गुरु का आश्रय नहीं मिल पा रहा है वे दक्षिणामूर्ति शिव को गुरु मानकर अपनी साधना को आगे बढ़ा सकते हैं। यदि दीक्षित मन्त्र के अलावा अन्य मन्त्र ग्रहण करना है तो विधि इस प्रकार है।

वटवृक्ष के नीचे जाकर गणेश मातृकादि पूजन कर, प्रधानमण्डल पर दक्षिणामूर्ति यंत्र को स्थापित करें। अगर यन्त्र नहीं हो तो चावलों या रंगोली से वस्त्र पर षड्दल बनायें उसके ऊपर अष्टदल बनायें, उसके बाहर चारद्वार युक्त परिधि का भूपुर बनायें [illegible] पर मन्त्र को लिखकर कलश में रख देवें। यंत्र व [illegible] निकालकर मन्त्र का वाचन कर ग्रहण करें और

भावना करें कि यह मन्त्र मुझे सद्गुरु स्वरूप दक्षिणामूर्ति शिव ने प्रदान किया है।

॥ अथ द्वाविंशत्यक्षर दक्षिणामूर्ति मन्त्र ॥

मन्त्रोयथा – "ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रयच्छ स्वाहा"।

विनियोगः – ॐ अस्य दक्षिणामूर्तिमन्त्रस्य चतुर्मुख ऋषिः गायत्री छन्दः, वेदव्याख्यानतत्पर - दक्षिणामूर्ति देवता, सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋषिन्यासः – ॐ चतुर्मुखर्षये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। दक्षिणामूर्तये देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कराङ्गन्यास – ॐ आं ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ईं ॐ तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ऊं ॐ मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ऐं ॐ अनामिकाभ्यां हुं। ॐ औं ॐ कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ अः ॐ करतल करपृष्ठाभ्यां फट्।

इसी तरह हृदयादि न्यास करें।

ध्यानम् –

वटवृक्षं महोच्छ्रायं पद्मरागफलोज्ज्वलम्
गारुत्मतमयैः पत्रैर्विचित्रैरूप शोभितम् ।
नवरत्न महाकल्पैर्लम्ब - मानैरलंकृतम्
विचिन्त्य वटमूलस्थं चिन्तयेल्लोकनायकम् ॥१॥
स्फटिकरजतवर्णं मौक्तिकी - मक्षमाला -
ममृतकलश विद्याज्ञानमुद्रा कराब्जैः ।
दधतमुरगकक्षं चन्द्रचूडं त्रिनेत्रम्
विधृत विविधभूषं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥२॥
शङ्करं तु शरच्चन्द्र - निभम्भोजमध्यगं
गङ्गाधरं शरच्चन्द्र करोल्लासित शेखरम् ।
प्रसन्नवदनाम्भोजं त्रिनेत्रं सुस्मिताननं
दिव्याम्बरधरं देवं गंधमाल्यैरलंकृतम् ॥३॥
नानारत्नमयाकल्पमनुकल्प विभूषितं
मुक्ताक्षमालां दक्षोर्ध्वे ज्ञानमुद्रामधः करे ।
वामोर्ध्वे च सुधाकुंभं पुस्तकं तदधः करे
दधानं चिंतयेद् देवं मुनिवृन्दनिषेवितम् ॥४॥

॥ अथ चतुर्विंशत्यक्षर दक्षिणामूर्ति मंत्र ॥

मन्त्र - ॐ नमो भगवत दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा।

मेरुतन्त्र में इसके ऋषि ब्रह्मा, छन्दगायत्री, देवता दक्षिणामूर्ति, बीज मेधा, शक्ति स्वाहा एवं विनियोग मेधा समृद्धये कहा है।

मेरुतन्त्र में मेधा का अर्थ वाक्शक्ति एवं प्रज्ञा का अर्थ स्मरण शक्ति बताया है और शारदातिलक मे मेधा का पाठान्तर प्रज्ञा बताया है। (३२ अक्षर वाले मन्त्र में)

ध्यानम् –

व्याख्यापीठेऽतिशुभ्रं च भस्मोद्धलितविग्रहम् ।
ज्ञानमुद्राक्षमालाढ्यं वीणा पुस्तक धारिणम् ॥

॥ अथ षट्त्रिंशदक्षर मन्त्र प्रयोगः ॥

(शारदातिलके)

ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये तुभ्यं वटमूलनिवासिने ।
ध्यानैकनिरतांगाय नमो रुद्राय शंभवे ह्रीं ॐ ॥

विनियोगः - **अस्य श्रीदक्षिणामूर्तिमन्त्रस्य शुकऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, दक्षिणामूर्तिशंभुर्देवता, चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यासः - **शुकऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे, दक्षिणामूर्तिशंभुर्देवता नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

अङ्गन्यास	**करन्यास**	**षडङ्गन्यास**
ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्ति ह्रीं ॐ	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः
ॐ ह्रीं तुभ्यं ह्रीं ॐ	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा
ॐ ह्रीं वटमूलनिवासिने ह्रीं ॐ	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्
ॐ ह्रीं ध्यानैकनिरतांगाय ह्रीं ॐ	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
ॐ ह्रीं नमो रुद्राय ह्रीं ॐ	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रीं शंभवे ह्रीं ॐ	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

मन्त्रवर्णन्यासः - **ॐ नमः मूर्ध्नि। ह्रीं नमः भाले। दं नमः दक्षिणनेत्रे। क्षिं नमः वामनेत्रे। णां नमः दक्षिणकर्णे। मूं नमः वामकर्णे। र्तं नमः दक्षिणगंडे। यें नमः वामगंडे। तुं नमः नासिकयोः। भ्यं नमः मुखे। वं नमः दक्षिण स्कंधे। टं नमः दक्षिणकर्पूरे। मूं नमः दक्षिण मणिबन्धे। लं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले।**

निं नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे। वां नमः वामस्कंधे। सिं नमः वामकर्पूरे। नें नमः वाममणिबन्धे। ध्यां नमः वामहस्तांगुलिमूले। नै नमः वामहस्तांगुल्ग्रे। कं नमः गले। निं नमः स्तनयोः। रं नमः हृदि। तां नमः नाभौ। गां नमः कट्याम्। यं नमः गुह्ये। नं नमः दक्षिणोरु। मों नमः दक्षिण जानुनि। रूं नमः दक्षिण गुल्फे। द्रां नमः दक्षिणपादमूले। यं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे। शं नमः वामोरू। भं नमः वामजानुनि। वें नमः वामगुल्फे। ह्रीं नमः पादांगुलिमूले। ॐ नमः वामपादांगुल्यग्रे।

ध्यानम् –

सजलैः स्थलजैः पुष्पैरामोदिभिरलंकृतम् ।
शृण्वद्भिर्वेदशास्त्राणि शुकवृन्दैर्निषेवितम् ॥
संसारतापविच्छेद कुशलच्छायमद्भुतम् ।
विचिंत्य तस्य मूले रत्नसिंहासने शुभे ॥
आसीनममिताकल्पं शरच्चन्द्रनिभाननम् ।
स्तूयमानं मुनिगणै दिंव्यज्ञानाभिलाषिभिः ॥
संस्मरेज्जगतामाद्यं दक्षिणामूर्तिमव्ययम् ॥१॥
कैलासाद्रिनिभं शशांकशकलस्फूर्जज्जटामंडितं ।
नासालोकनतत्परं त्रिनयनं वीरासनाध्यासितम् ।
मुद्राटंक कुरंग जानु विलसत्पाणिं प्रसन्नाननं ।
कक्षाबद्धभुजंगमं मुनिवृतं वंदे महेशं परम् ॥२॥

॥ यंत्र पूजनम् ॥

यंत्र मध्य में प्रधान देव का पूजन कर यंत्रावरण की पूजा की आज्ञा माँगे -

ॐ संविन्मय परोदेव परामृतरसप्रिय ।
अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनाय ते ॥

प्रथमावरणम् - षट्कोण में आग्नेयादि चारों कोणों में – **ॐ आं ॐ हृदयाय नमः।** ॐ ईं ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ ऊं ॐ शिखायै वषट्। **ॐ ऐं ॐ कवचाय हुँ।**

देवताग्रे ॐ औं ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। देवपश्चिमे – **ॐ अः ॐ अस्त्राय फट्।** षडाङ्ग का पूजन तर्पण कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

द्वितीयावरणम् - (अष्टदले) पूर्वादिक्रमेण - **ॐ सरस्वत्यै नमः। सरस्वति**
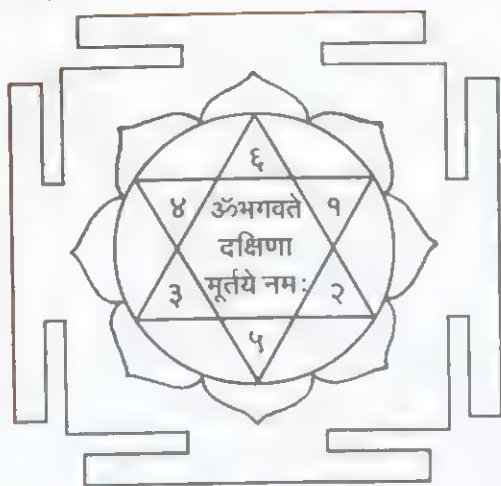
दक्षिणा मूर्ति यंत्रम्

श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (इतिसर्वत्र)। ॐ ब्रह्मणेनमः। ॐ सनकाय नमः। ॐ सनन्दाय नमः। ॐ सनत्कुमाराय नमः। ॐ शुकाय नमः। ॐ व्यासाय नमः। ॐ गणेशाय नमः। पुष्पगंधार्चन तर्पण करके पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं (अमुक) द्वितीयावरणार्चनम् ॥

तृतीयावरणम् - (भूपूरे द्वारदेशे) ॐ सिद्धाय नमः। ॐ गंधर्वाय नमः। ॐ योगीन्द्राय नमः। विद्याधराय नमः।

चतुर्थावरण में (भूपूरे) इन्द्रादि लोकपालों का तथा उनके बाहर पञ्चमावरण में उनके आयुधों की पूजा करें। सबका पूजन तर्पण कर मंत्र ''ॐ अभीष्ट सिद्धिं....'' से पुष्पाञ्जलि देवें।

इसका ३ लाख जप का पुरश्चरण है।

अयुतद्वय संयुक्तं गुणलक्षं जपेन्मनुम्। तद्दशांशं तिलै शुद्धैर्जुहुयात् क्षीरसंयुतैः ॥ नित्यं सहस्त्रमष्टार्द्धं परं विंदति वाङ्मयम्। त्रिवारं जप्तमेतेन मनुनां सलिलं पिबेत ॥ नित्यशो दक्षिणामूर्तिं ध्यायन् साधकसत्तमः। शास्त्रव्याख्यान सामर्थ्यं लभते वत्सरांतरे ॥ ब्राह्मीसैंधवसिद्धार्थ वचाकुष्ठकणौत्पलैः। सुगंधि संयुतैः कल्कैः श्रृतं ब्राह्मीरसेघृतम् ॥ मनुनानेन संजप्तमयुतं साधुसाधितम्। निपीतं कविताकांतिरक्षायुः श्रीधृतिप्रदम्।

॥ अथ मृत्युञ्जय मंत्र विविध प्रयोग: ॥

बहुधा मृत्युञ्जय प्रयोग रोग-पीड़ा निवारण में ही करते हैं। ग्रहपीड़ा शमन में भी शुभ है। शिव प्रतिमा व शिवलिङ्ग पर अलग-अलग कामना के लिये अलग अलग अभिषेक द्रव्य हैं। अभिचार व प्रेतादि दोष में सरसों के तेल का अभिषेक, उष्णज्वर, टाईफाईड में दही की छाछ से, लक्ष्मी प्राप्ति हेतु गन्ने का रस, पुष्टि के लिए आम्ररस, ब्लडप्रेशर में मौसमी संतरा, हृदय पीड़ा में दूर्वा रस के साथ फलों का रस, सर्वशांति हेतु बैल के श्रृंग द्वारा या ताम्र, रजत के श्रृंग द्वारा कामना द्रव्यों से अभिषेक करें। यंत्रार्चन में अधिकांशत: चतुर्लिंगतो या द्वादशलिङ्गतोभद्र मण्डल बनाते है। यंत्र का प्रचलन कम है।

मृत्युञ्जय यन्त्र के अर्चन से पूजा अधिक फलदायी है।

एकाक्षर मन्त्र - ''हौं''। इसका प्रयोग पहले दिया जा चुका है।

त्र्यक्षरी मन्त्र - ''ॐ जूं स:''। इति मन्त्र।

अन्य ऋषिमत से - ''हौं जूं स:''।

विनियोग: - **ॐ अस्य श्रीत्र्यक्षरात्मक मृत्युञ्जय मंत्रस्य कहोल ऋषि:। देवी गायत्री छन्द:। श्रीमृत्युञ्जय देवता जूँ बीजं, स: शक्ति: ॐ कीलकम्। सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।**

ऋषिन्यास: :- **कहोलऋषये नम: शिरसि। देवी गायत्रीछन्दसे नम: मुखे:। मृत्युञ्जयदेवतायै नम: हृदि। जूँ बीजाय नम: गुह्ये। स: शक्तये नम: पादयो:।**

करन्यास: :- **सां अंगुष्ठाभ्यां नम:। सीं तर्जनीभ्यां नम:। सूं मध्यमाभ्यां नम:। सैं अनामिकाभ्यां नम:। सौं कनिष्ठिकाभ्यां नम:। स: करतलपृष्ठाभ्यां नम:।**

हृदियादिन्यास :- **सां हृदयाय नम: । सीं शिरसे स्वाहा । सूं शिखायै वषट्। सैं नेत्रत्रयाय वौषट्। सौं कवचाय हूँ। स: अस्त्राय फट्।**

न्यासं विधाय मृत्युञ्जयं ध्यायेत्-

ॐ चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्त: स्थितं
मुद्रापाशामृगाक्षसूत्र विलसत्पाणि हिमांशुप्रभम्
कोटीरेन्दुगलंत्सुधास्नुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं
कान्त्याविश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत् ॥

ॐ जूँ सः , इति मूलमंत्रं जपेत्।

यन्त्रपूजनम् - यंत्रमध्य में षट्कोण बनायें और उसके बाहर भूपुर बनायें।

यन्त्रमध्य में पूर्वादिक्रम से वामादि नवपीठ शक्तियों का पूजन करें। यथा - **ॐ वामायै नमः, ॐ ज्येष्ठायै नमः, ॐ काल्यै नमः, ॐ कलविकरिण्यै नमः, ॐ बलविकरिण्यै नमः, ॐ बलप्रमथिन्यै नमः, ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः, मध्ये - ॐ मनोन्मन्यै नमः।**

प्रथमावरणम् - षट्कोण में **सां सीं सूं सैं सौं सः** इत्यादि जो षडङ्गन्यास करें। उन्हे पहले आग्नेयादि चार कोणों में पश्चात् देवता के अग्र व पृष्ठभाग में हृदयादि न्यास से पूजा करे।

द्वितीयावरणम् में इन्द्रादिलोकपालों का तथा उनके बाहर उनके आयुधों की तृतीय आवरण की पूजा अर्चन तर्पण कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

चतुरक्षरी मृत्युञ्जय मंत्र - यथा ॐ हौं जूं सः।

चतुरक्षरी अमृतमृत्युञ्जय मन्त्रः यथा - ॐ वं जूं सः। इनके ऋष्यादि पूर्ववत् त्र्यक्षरी मन्त्र के समान है।

नवाक्षरी मृत्युञ्जय - यथा ॐ जूं सः पालय पालय।

दशाक्षरीमृत्युञ्जय मन्त्र यथा - ॐ जूं सः मां पालय पालय।

(मां के स्थान पर रोगी का नाम द्वितीया विभक्ति का एक वचन बनाकर जोड़ देना चाहिये)

द्वादशाक्षरीमृत्युञ्जय मन्त्रः - ॐ जूं सः पालय पालय सः जूं ॐ। इन सभी मंत्रों के ऋष्यादि त्र्यक्षरी मन्त्र के समान है।

चन्द्रार्काग्नि विलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तः स्थितं
मुद्रापाशं मृणालसूत्र विलसत्पाणि हिमांशु प्रभम् ।
कोटीन्दु प्रगलत सुधाप्लुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं
कान्तै विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावये ।

द्वादशाक्षरीमृत्युञ्जय यंत्रम्

अन्य साध्य प्रयोग मन्त्र –
ॐ हौं जूं सः (अमुकं) जीवय-जीवय पालय-पालय सः जूं हौं ॐ।

॥ पौराणिक मृत्युञ्जय मन्त्र ॥

ॐ मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम् ।
जन्ममृत्युजराव्याधिपीड़ितं कर्मबन्धनैः ॥

॥ द्वात्रिंशदक्षर त्र्यम्बक मन्त्र प्रयोगः ॥

(आयु एवं पुष्टिकर्त्ता)

मन्त्रोयथा -

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

द्वितीयप्रकाराः – (पतिसुख प्राप्ति में बाधा निवृत्ति हेतु)

जिन कन्याओं का विवाह नहीं हो पा रहा है अथवा पति से किसी विवाद के कारण मातापिता के घर रह रही है वे इस द्वितीय मन्त्र का जाप कर लाजा होम मधुत्रय से करे तो वाञ्छित पति को प्राप्त करें।

मन्त्रो यथा -

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पतिवेदनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः ॥

अर्थात् हे त्र्यम्बक! शिव आपका पूजन यजन करते हैं, जो कन्यायें विवाह नहीं होने के कारण या अन्य विवाद के कारण पतिवेदना से पीड़ित है वे वाञ्छित वर एवं उच्चकुल में उत्पन्न पुष्ट सुगंधित (यशवान) पति को प्राप्त कर मातापिता

के बंधन से मुक्त हो जाये जैसे पका हुआ खरबूजा बेल से अलग हो जाता है।

विलोमाक्षर त्र्यम्बक मंत्रः -

ॐ तृतामृमायक्षीर्मुत्योमृ न् नान्धब वमिकरुर्वाउ ।
मृनर्धव छिपुन्धिंगसु हेमजाय कंम्बत्र्य ॥

इसके आगे-पीछे लोम विलोम ॐ कार व्याहृति आदि बीजों को लगाकर भी जप किया जा सकता है।

तांत्रिक विधानों में मन्त्रो में विशेष चैतन्यता लाने के विविध उपाय हैं उनमें विलोम मन्त्र का जाप भी है।

जिस प्रकार सीढ़ियों द्वारा छत के ऊपर पहुँच गये परन्तु नीचे आने के लिये पुनः छत से नीचे (विलोम क्रम) आना पड़ेगा इससे ऊपर नीचे के धरातल से पूर्ण सामञ्जस्य होगा। इसे पूर्ण एक आवृत्ति कहते हैं।

जिस तरह कुण्ड़लनी शक्ति को मूलाधार चक्र से उठाकर सहस्रार में ले जाकर पुनः सहस्रार से मूलाधार चक्र में लाना इस तरह आवृत्ति क्रम हुआ इस तरह बार बार अभ्यास करना ही पूर्ण योगाभ्यास साधना है। ऐसा ही क्रम मन्त्र साधना में है।

इस तरह त्र्यम्बक मन्त्र के निम्न भेद हुये -

१. ३२ अक्षर के मंत्र का लोम पाठ किया जाय।

२. ३२ अक्षर के विलोमाक्षर मंत्र का जप किया जाय।

अक्षर सः विलोम करने में बाधा आती है तो विलोम के अन्य साधारण प्रयोग इस प्रकार हैं। -

१. पहले नींचे की पंक्ति उसके बाद उपर वाली पंक्ति पढ़ें।

२. विलोम पाद क्रम से। मन्त्र ३२ अक्षर का है। इससे ८-८ अक्षर का एक-एक पद हुआ। अतः चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय एवं चरण को पढ़ने से पाद विलोम क्रम हुआ। मंत्र यथा -

ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् उर्वारुकमिव बन्धनात् ।
सुगंधिं पुष्टिवर्धनं त्र्यम्बकं यजामहे ॥

३. लोम मन्त्र उसके बाद विलोम मन्त्र सहित पढ़ने से ६४ अक्षर से १ आवृत्ति हुई।

४. लोम मन्त्र उसके बाद विलोम मन्त्र पश्चात् पुनः लोम मन्त्र सहित ९६ अक्षर

पढ़ने पर एक आवृत्ति होगी।

॥ त्रि–त्रिंशदक्षर त्र्यम्बक मन्त्र प्रयोगः ॥

त्र्यम्बकं यजामहे............। ऋचा के पहले ॐ लगायें। आगे व पीछे दोनों ओर ॐ लगाने से ३४ अक्षर का मन्त्र हुआ।

विनियोगः **ॐ अस्य त्र्यम्बक मन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः त्र्यम्बकपार्वतीपतिर्देवता, त्र्यं बीजं, बं शक्तिः, कं कीलकं सर्वेष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यासः – **ॐ वसिष्ठर्षये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छंदसे नमः मुखे। त्र्यंम्बकपार्वतीपतिर्देवतायै नमः हृदि। त्र्यं बीजाय नमः गुह्ये। बं शक्तये नमः पादयोः। कं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

अङ्गन्यास	**करन्यास**	**षडङ्गन्यास**
ॐ त्र्यंबकं	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः
यजामहे	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा
सुगंधिं पुष्टिवर्धनं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्
उर्वारुकमिव बंधनान्	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
मृत्योर्मुक्षीय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
मामृतात्	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

॥ मन्त्रवर्णन्यासः ॥

ॐ त्र्यं नमः पूर्वमुखे। ॐ बं नमः पश्चिममुखे। ॐ कं नमः दक्षिणमुखे। ॐ यं नमः उत्तरमुखे। ॐ जां नमः उरसि। ॐ मं नमः कण्ठे। ॐ हें नमः मुखे। ॐ सु नमः नाभौ। ॐ गं नमः हृदि। ॐ धिं नमः पृष्ठे। ॐ पुं नमः कुक्षौ। ॐ ष्टिं नमः लिङ्गे। ॐ वं नमः गुदे। ॐ र्धं नमः दक्षिणोरुमूले। ॐ नं नमः वामोरुमूले। ॐ उं नमः दक्षिणोरुमध्ये। ॐ र्वां नमः वामोरुमध्ये। ॐ रूं नमः दक्षिणजानुनि। ॐ कं नमः वामजानुनी। ॐ मिं नमः दक्षिणजानुवृत्ते। ॐ वं नमः वामजानुवृत्ते। ॐ बं नमः दक्षिणस्तने। ॐ धं नमः वामस्तने। ॐ नां नमः दक्षिणपार्श्वे। ॐ मृं नमः वामपार्श्वे। ॐ त्यों नमः दक्षिणपादे। ॐ र्मुं नमः वामपादे। ॐ क्षीं नमः दक्षिणकरे। ॐ यं नमः वामकरे। ॐ मां नमः दक्षनासायाम्। ॐ मृं नमः वामनासायम्। ॐ तां नमः मूर्ध्नि।

पदन्यासः – **ॐ त्र्यंबकं शिरसि। यजामहे भ्रुवोः। सुगंधिं नेत्रयोः। पुष्टिवर्धनं**

मुखे। उर्वारुकं गण्डयोः। इव हृदये। बंधनात् जठरे। मृत्योः लिङ्गे। मुक्षीय हृदये। मा जान्वोः। अमृतात् पादयोः।

मूलमन्त्र से व्यापकन्यास करें।

ध्यानम् –

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयंतं शिरो
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहंतं परम्।
अङ्कन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलाशकांतं शिवं
स्वच्छांभोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे ॥

॥ यन्त्रावरण पूजनम् ॥
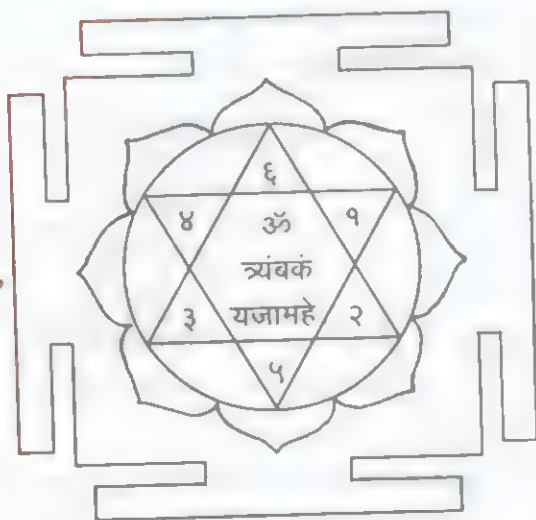
त्र्यंबक पूजन यंत्रम्

लिङ्गतोभद्रमण्डल या सर्वतोभद्रमण्डल पर मण्डूकादि परतत्वांत पीठ देवतायै नमः से पूजन कर शिव की नवपीठशक्तियों का पूजन करें।

पूर्वादिक्रमेण – ॐ वामायै नमः। ॐ ज्येष्ठायै नमः। ॐ रौद्रयै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कलविकरण्यै नमः। ॐ बलविकरण्यै नमः। ॐ बलप्रमथिन्यै नमः। ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः। मध्ये - ॐ मनोन्मन्यै नमः।

स्वर्ण या ताम्र यंत्र का अग्न्युत्तारण करें, दुग्धजल धारा से शोधन का भद्रमण्डल पर - ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताय योगपीठात्मने नमः। इसके बाद प्रधानदेव का पूजन करें।

पुष्पाञ्जलि प्रदान करते हुये विनम्रभाव से आज्ञा मांगें।

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः।
अनुज्ञां शिव मे देहि परिवारार्चनाय च ॥

यंत्र पूजा में प[illegible] देवता की नामावलि में प्रथमा से सम्बोधन करते हुये

'पादुकां पूजयामि तर्पयामि' से पुष्पगंधार्चन व तर्पण करें।

प्रथमावरणम् - (षट्कोणे) अग्निकोणे **ॐ त्र्यंबकं हृदयाय नमः। हृदये श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।** (नैऋत्ये) **यजामहे शिरसे स्वाहा, शिर श्री पा.।** (वायव्ये) **सुगंधि पुष्टिवर्धनं शिखायै वषट् शिखा श्री पा.** (ईशाने) **उर्वारुकमिव बंधनात् कवचाय हुं, कवच श्री पा.।** (देवाग्रे) **मृत्योर्मुक्षीय नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्र श्री पा.।** (मध्ये) **मामृतात् अस्त्राय फट्, अस्त्र श्री पा.।** पुष्पाञ्जलि देवें।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

द्वितीयावरणम् - (अष्टदले पूर्वादिक्रमेण) **ॐ अर्कमूर्तये नमः, अर्कमूर्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।** (इसी तरह सभी जगह कहते हुये गंधार्चन तर्पण करें)। **ॐ इन्द्रमूर्तये नमः। ॐ वसुधामूर्तये नमः। ॐ तोयमूर्तये नमः। ॐ वह्निमूर्तये नमः। ॐ वायुमूर्तये नमः। ॐ आकाश मूर्तये नमः। ॐ यजमान मूर्तये नमः। ॐ इत्यष्टौ मूर्तीः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्।**

अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पयेतुभ्यं (अमुकावरणार्चनम्) **द्वितीयावरणार्चनम्॥**

तृतीयावरणम् - (तद्वाहेऽष्टदले प्राचीक्रमेण) **ॐ रमायै नमः, रमा श्री पादु.। ॐ राकायै नमः, राका श्री पादुका.। ॐ प्रभायै नमः, प्रभाश्री पादु.। ॐ ज्योत्स्नायै नमः, ज्योत्स्नाश्री पादु.। ॐ पूर्णायै नमः, पूर्णाश्री पादु.। ॐ उषायै नमः, उषाश्री पादु.। ॐ पूरण्यै नमः, पूरणीश्री पादु.। ॐ सुधायै नमः, सुधाश्री पादु.। इत्यष्टौ शक्तिः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्।**

अभीष्ट सिद्धिं..................।

चतुर्थावरणम् - (तद्वाहेऽष्टदले प्राचीक्रमेण) · **ॐ विश्वायै नमः, विश्वाश्री पादु.। ॐ विद्यायै नमः, विद्याश्री पादु.। ॐ सितायै नमः, सिताश्री पादु.। ॐ प्रह्लायै नमः, प्रह्लाश्री पादु.। ॐ सारायै (रारायै) नमः, सारा श्रीपादु.। ॐ संध्यायै नमः, संध्या श्रीपादु.। ॐ शिवायै नम, शिवाश्रीपादु.। ॐ निशायैनमः, निशा श्रीपादु.।**

ॐ इत्यष्टौ शक्तिः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् (अभीष्ट सिद्धिं.............।)

पञ्चमावरणम् - (तद्वाहेऽष्टदले प्राचीक्रमेण) - **ॐ आर्यायै नमः, आर्या** श्रीपादु.। ॐ प्रज्ञायै नमः, प्रज्ञाश्रीपादु.। **ॐ प्रभायै नमः, प्रभा श्रीपादु.। ॐ**

मेधायै नमः, मेधा श्रीपादु.। ॐ शान्त्यै नमः, शान्ति श्रीपादु.। ॐ कान्त्यै नमः, कान्ति श्रीपादु.। ॐ धृत्यै नमः, धृति श्रीपादु.। ॐ मृत्यै नमः, (अन्यत्र ॐ सत्यै नमः भी है) मृति श्रीपादु.।

इत्याष्टौ शक्तिः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्। (अभीष्ट सिद्धिं..................।)

षष्ठमावरणम् - (तद्बाहेऽष्टदले प्राचीक्रमेण) - **ॐ धरायै नमः, धरा श्रीपादु.। ॐ मायायै नमः (पाठान्तर उमायै नमः) माया श्रीपादु.। ॐ अवन्यै नमः, (पाठान्तर पावन्यै) अवनि श्रीपादु.। ॐ पद्मायै नमः पद्मा श्रीपादु.। ॐ शान्तायै नमः, शांता श्रीपादु.। ॐ मोघायै नमः (पाठान्तर मोघायै नमः) मोघा श्रीपादु.। ॐ जयायै नमः, जया श्रीपादु.। ॐ अमला नमः, अमलायै श्रीपादु.।**

इत्याष्टौ शक्तिः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्। (अभीष्ट सिद्धिं..................।)

सप्तमावरणम् - भूपुर में इन्द्रादि दिक्पालों की पूजा करें । **ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्र श्रीपादु.। ॐ अग्नये नमः, अग्नि श्रीपादु.। ॐ यमाय नमः, यम श्रीपादु.। ॐ निर्ऋतये नमः, निरुत श्रीपादु.। ॐ वरुणाय नमः, वरुण श्रीपादु.। ॐ वायवे नमः, वायु श्रीपादु.। ॐ कुबेराय नमः, कुबेर श्रीपादु.। ॐ ईशानाय नमः, ईशान श्रीपादु.। ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मा श्रीपादु.। ॐ अनन्ताय नमः, अनन्त श्रीपादु.।**

इत्याष्टौ शक्तिः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्। (अभिष्ट सिद्धिं..................।)

अष्टमावरणम् - इन्द्रादि के समीप भूपूर में उनके आयुधों की पूजा करें । **ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तयै नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अङ्कुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐपद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।**

सभी का गंधाक्षत मिश्रित पुष्पों या पत्तियों से पूजन एवं तर्पण कर पुष्पाञ्जलि देवें।

एक लक्ष जप कर पुरश्चरण करके दशद्रव्यों से होम करें।

बिल्वं पलाशं खदिरं परं च तिल सर्षपौ ।
दुग्धं दधिपुनर्दुर्वा होमे तानि विदुर्बुधाः ॥

बिल्व समिद् से धन प्राप्ति, पलाश से तेजवृद्धि, खदिर से कान्ति, वटवृक्षसमिध से धनायु वृद्धि, तिल के होम से पापों से मुक्ति, सरसों के हवन से शत्रुनाश, पायस

होम मे रक्षा होवे कीर्ति व कांति बढ़े। गोदुग्ध होम से कृत्या का (पिशाचोपद्रव) नाश, दहि के होम में विद्वेष व कलह दूर होवें।

अमान्न से आयुवृद्धि, पायसान्न से धनायु लाभ। दुर्वा के होम से शतायु जम्बूकाष्ठ समिद् (जामुन) मे धनायु लाभ होवे। लाजा होम से कन्या को वर प्राप्ति होवे।

लाजैर्विशुद्धैर्जुहुयात्कन्या सैषा वराप्तये ।
क्षीरद्रुमसमिद्धोमाद्ब्राह्मणा दीन् वशं नयेत् ।
स्नात्वा सहस्त्रं प्रजपेदादित्याभिमुखो मनुम् ।
आधिव्याधि विनिर्मुक्तो दीर्घमायुरवाप्नुयात् ।

सूर्य के सम्मुख जप करने से दीर्घायु होवें।

॥ मृत्युञ्जय के भेद ॥

मृत्युञ्जयस्त्रिधा प्रोक्त आद्यो मृत्युञ्जयः स्मृतः ।
मृतसञ्जीवनी चैव महामृत्युञ्जयस्तथा ॥
मृत्युञ्जयः केवलः स्यात् पुटितो व्याहृतित्रयैः ।
तारं त्रिबीजं व्याहृत्य पुटितो मृतसञ्जीवनी ॥
तारं त्रिबीजं व्याहृत्य पुटितैस्तैस्त्र्यम्बकः ।
महामृत्युञ्जयः प्रोक्तः सर्वमन्त्रविशारदैः ॥

उक्त उद्धार मन्त्रों के अनुसार '**त्र्यम्बक यजामहे..**' ऋचा को आद्य व अन्त में व्याहृति '**भू भुंवः स्वः**' से संपुटित करने पर मन्त्र को '**मृत्युञ्जय**' कहा गया है। त्रिबीज - **हौं जूं सः** एवं व्याहृति त्रय से संपुटित मन्त्र को '**मृतसञ्जीवनी**' मंत्र कहा है।

इस मृतसञ्जीवनी मन्त्र में त्रिबीज और व्याहृति त्रय के प्रत्येक अक्षर के पहले ॐ लगाया जाता है। यही महामृत्युञ्जय मन्त्र कहा है जिसे शुक्राचार्य द्वारा आराधित माना जाता है।

॥ भेद ॥

१. अतः केवल मृत्युञ्जय मन्त्र :- (४८ अक्षरात्मक)

ॐ भूः ॐ भुंवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे .... ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः।

२. मृतसञ्जीवनी मन्त्र :- (५२ अक्षरात्मक)

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे .... ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।

कहीं-कहीं हौं रेफ अर्थात् अग्नि तत्व "र" युक्त है अर्थात् ह्रौं जूं सः भी है।

३. महामृत्युञ्जय मन्त्र :- (६२ अक्षरात्मक) शुक्राराधित

ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे .... (ऋचा)ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ हौं ॐ स्वाहा।

कहीं-कहीं स्वाहा का प्रयोग नहीं लिखा है अतः जि 1 मन्त्र के अन्त में स्वाहा नहीं हो वह ६० अक्षर का होगा।

४. महामृत्युञ्जय मन्त्र :- (५० अक्षरात्मक)

मन्त्र महोदधि में ५० अक्षर का अन्य मन्त्र बताया गया है, उसे ही महामृत्युञ्जय कहा गया है। इस मन्त्र के ऋषि वामदेव कहोल वशिष्ठ ही है।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बंधनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ ॥

५. भिन्नपादमृत्युञ्जय -

आगम शास्त्रों में मन्त्रों के प्रत्येक पाद के बाद ॐ या ऐं, ह्रीं, श्रीं, क्लीं कोई भी बीजाक्षर कामनाभेद से लगाकर जपने से श्रेष्ठफल की प्राप्ति कहा है, अर्थात् प्रत्येक पाद के बाद बीजाक्षर लगाने से उसको स्तम्भ रूपी आधार की प्राप्ति होती है एवं मन्त्र स्फुरित होता है। जैसा कि

भिन्नपादा तु गायत्री ब्रह्महत्यां व्यपोहति ।
अच्छिन्नपादा तु गायत्री ब्रह्महत्यां प्रयच्छति ॥

अर्थात् पादभिन्न बिना गायत्री मन्त्र जपने से ब्रह्महत्या लगती है, वस्तुतः ऐसा अर्थ नहीं समझना चाहिये भावार्थ यह है कि उस साधक (ब्राह्मण) को बहुत न्यून फल मिलता है, परिश्रम व्यर्थ रहता है एवं पादभिन्न करके गायत्री मन्त्र जपने से अधिक फल मिलता है जिससे साधक की कान्ति व ओज बढ़ता है जो ब्रह्म हत्या के प्रभाव को दूर करता है।

ऐसा एक दृष्टांत 'स्वामी मूर्खानन्दजी' का है उनका एक शिष्य १०० माला गायत्री की करता था तो भी उसमें ब्रह्मराक्षस का आवेश रहता था जिस दिन से

भिन्नपाद् गायत्री जप प्रारम्भ कराया ब्रह्मराक्षस का आवेश कम होता चला गया।

भिन्नपाद मृत्युञ्जय एवं मृत्युञ्जय मन्त्र –

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
ॐ उर्वारुकमिव बंधनान् ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ ॥

कामना भेद से ॐ की जगह विद्याप्राप्ति हेतु **ऐं**, लक्ष्मीप्राप्ति हेतु **श्रीं**, सर्वकामना व ऐश्वर्य हेतु **ह्रीं** आकर्षण व शत्रुनाश हेतु **क्लीं** बीजाक्षर लगाये जा सकते है।

श्रीविद्यार्णव तन्त्रोक्त त्रिपुरसुन्दरी मन्त्रेण भिन्नपाद रुद्रमन्त्रा:

१. शिव मन्त्र – (प्रासाद मन्त्र) – ॐ हौं हसकल ह्रीं ह्रीं हसकहल ह्रीं नमः सकल ह्रीं शिवाय।

विनियोग एवं न्यास :– **शिरसि वामदेवाय नमः, मुखे पंक्तिछन्दसे नमः, हृदये श्रीसदाशिवाय देवतायै नमः, गुह्ये हं बीजाय नमः, पादयोः श्रीशक्तये नमः सर्वाङ्गे सर्वाभीष्टसिद्धये विनियोगः।**

ध्यानम् –

सिन्दूरपुञ्जशोणाङ्गं स्मेरवक्त्रं त्रिलोचनम् ।
मणिमौलि लसच्चन्द्रकलालंकृत मस्तकम् ॥
दक्षिणोर्ध्वकरे टङ्कं दधानं तदधोवरम् ।
वामोर्ध्वहस्ते हरिणं तदधोऽभयमादरात् ॥
पीनवृत्तघनोत्तुङ्गस्तनाग्रे विविवेश्य च ।
वामाङ्के सिनिविष्टायाः प्रियाया रक्तपङ्कजे ।
दधत्या दक्षिणे हस्ते वासिनं रक्तपङ्कजे ।
नानाभरणसंदीप्तं दिव्यगन्धस्त्रगम्बरम् ॥

हां, हीं, हूं, हैं, हौं, हः से करांगन्यास करें।

२. भिन्नपाद पाशुपतास्त्रमन्त्रः – ॐ श्लीं हसकलह्रीं पशु हसकहलह्रीं **हुं सकल ह्रीं फट्।**

ध्यानम् –

पञ्चवक्त्रं दशभुजं प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनम् ।
अग्निज्वालानिभश्मश्रुसंयुतं भीमदंष्ट्रकम् ॥
खड्ग–बाणनक्षमृत्रं शक्तिं परशुमेव च ।

दधानं दक्षिणैर्हस्तैरुर्ध्वादिक्रमतो गुरुम् ॥
खेटचापौ कुण्डिकां च त्रिशूलं ब्रह्मदण्डयुक् ।
वामहस्तैश्च बिभ्राणां मध्याह्नार्क समप्रभम् ॥
नानाभरण सन्दीप्तं पन्नगेन्द्रैरलंकृतम् ।
स्फटिकौघनिभं शान्तं सर्वरक्षाकरं स्मरेत् ॥

विनियोग - इस मन्त्र के **वामदेव ऋषि, पंक्तिछन्द** एवं **पशुपति देवता है।**

न्यास - **ॐ हुं फट्, श्लीं हुं फट्, प हुं फट्, शु हुं फट्, हुं हुं फट्, फट् हुं, फट् इन विभागों से करन्यास करें।**

मन्त्र जप में यह भावना रखनी चाहिये कि शिव पशुता (अज्ञानता, जड़ता, भय, अंधकार क्लेश एवं दु:ख) का नाश करने वाले हैं एवं शिवता (कल्याण) के कारक होकर साधक को अभय प्रदान करते है।

इस मन्त्र के प्रयोग से परमन्त्र परतन्त्र प्रयोग एवं महामारी का शमन भी होता है।

३. भिन्नपाद दक्षिणामूर्तिशिव मन्त्र - **ॐ ह्रीं दक्षिणामूर्तये तुभ्यं हसकल ह्रीं वटमूल निवासने हसकहलह्रीं ध्यानैकनिरताङ्गाय सकलह्रीं नमो रुद्राय शंभवे ह्रीं ॐ।**

विनियोगन्यास - **शिरसि शुकाय ऋषये नमः, मुखे गायत्री छन्दसे नमः, हृदये दक्षिणामृर्तये दैवतायै नमः, गुह्ये ॐ बीजाय नमः, पादयोः ह्रीं शक्तये नमः, सर्वाङ्गे ममाभीष्टसिद्धये विनियोगः।**

ध्यानम् -

वटविटपिसमीपे भूमिभागे निषण्णं, सकलमुनिजनानां ज्ञानदातारमारात्।
त्रिभुवनगुरुमीशं दक्षिणामूर्तिरूपं, जननमरणदुःखच्छेददक्षं नमामि ॥

जिस मन्त्र की साधक को दीक्षा प्राप्त नहीं हुई हो वह दक्षिणामूर्तिशिव को सद्गुरु मानकर अपनी तन्त्रसाधना को आगे बढ़ा सकता है।

४. रुद्रमन्त्र - **"ॐ हसकलह्रीं नमो हसकहलह्रीं भगवते सकलह्रीं रुद्राय"।**

विनियोगन्यास - **शिरसि ब्रह्मणे ऋषये नमः, मुखे विराटछन्दसे नमः, हृदये सदाशिव देवतायै नमः, सर्वाङ्गे ममाभीष्टसिद्धये विनियोगः।**

ध्यानम् -

आकीर्णं दिव्यभोगैरमरदितिमुनैरर्चितं शैलकन्या
[illegible] स्फटिकमणि[illegible] व्याघ्रचर्मोत्तरीयम् ।

द्वैपीं कृत्तिं वसानं हिमकिरणकलाशेखरं नीलकण्ठं
हृष्टं व्याप्तं कलाभिर्धृतकपिलजटं भावयेऽहं महेशम् ॥

५. त्र्यक्षरीमृत्युञ्जयमन्त्र - ॐ हसकलह्रीं जूं हसकहलह्रीं सः सकलह्रीं।

विनियोगन्यास - शिरसि कहोलायऋषये नमः, मुखे निचृद्गायत्रीछन्दसे नमः, हृदये श्रीमृत्युञ्जयाय देवतायै नमः, गुह्ये ॐ बीजाय नमः, पादयो सः शक्तये नमः, नाभौ जूं कीलकाय नमः, सर्वाङ्गे ममाभीष्टसिद्धये विनियोगः।

ध्यानम् –

शुद्धस्फटिकसंकाशं शुभ्रपद्मासनस्थितम् ।
कपर्दमौलिविलसच्चन्द्र - खण्डाच्युतामृतैः ॥
अभिषिक्त - समस्ताङ्गमर्केन्द्वनललोचनम् ।
दक्षिणोर्ध्वकरे मुद्रां ज्ञानाख्यं तदधः करे ।
अक्षमालां च वामोर्ध्व पाशं वेदमघः करे ।
दधानं चिन्तये देवं मृत्युरोगभयापहम् ॥

६. त्र्यम्बकमृत्युञ्जयमन्त्र -

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे हसकलह्रीं सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
हसकहलह्रीं उर्वारुकमिव बंधनान् सकलह्रीं मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

विनियोगन्यास - वशिष्ठर्षये नमः शिरसि। अनष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। त्र्यम्बकपार्वतीपतिर्देवतायै नमः हृदि। त्र्यं बीजाय नमः गुह्ये। बं ॐ शक्तये नमः पादयो। कं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कराङ्गन्यास, ध्यान पूर्व में दिये गये है। ३२-३३ अक्षरीय मन्त्र के साथ दिये गये है, वे कर सकते है।

भिन्नपादमन्त्र में कामराजपूजिता त्रिपुरसुन्दरी से संपुटित करे तो मन्त्र इस प्रकार होगा -

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे कएईलह्रीं सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
हसकहलह्रीं उर्वारुकमिव बंधनान् सकलह्रीं मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

गायत्री मन्त्र से भिन्नपाद मन्त्र शुक्रोपासिता मृतसंञ्जीवनी विद्या में बताया गया है, उसे अवलोकन करें।

॥ अथ शताक्षरी मृत्युञ्जय प्रयोगः॥

विनियोगः – **ॐ अस्य श्री शताक्षरी गायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्र मरीचि कश्यप वसिष्ठ ऋषयो गायत्री त्रिष्टुप् अनुष्टुपछन्दासि सवितृ जातवेदस्त्र्यम्बका देवता गायत्र्यक्षराणि बीजानि अनुष्टुबक्षराणि शक्तयस्त्रिष्टुबक्षराणि कीलकानि ममारिष्टशान्तये जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास – **विश्वामित्र मरीचि कश्यप वसिष्ठ ऋषियो नमः शिरसि। गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप छन्दोभ्यो नमः मुखे। सवितृ जातवेदस्त्रम्बकदेवेभ्यो हृदये। गायत्र्यक्षरेभ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये। अनुष्टबक्षरेभ्यो शक्तिभ्यों नमः पादयोः। त्रिष्टुबक्षरेभ्यः कीलकेभ्यो नमः नाभौ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

करन्यास – ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्, तर्जनीभ्यां नमः। ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराभतीयतो निदहाति वेदः, मध्यमाभ्यां नमः। ॐ स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वनावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः, अनामिकाभ्यां नमः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ उर्वारुकमिव बन्धनान् मृर्त्योमुक्षीय मामृतात्, करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास – ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, हृदयाय नमः। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्, शिरसे स्वाहा। ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराभतीयतो निदहाति वेदः, शिखायै वषट्। ॐ स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वनावेन्न सिन्धुं दुरितात्यग्निः, कवचाय हुँ। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्, नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ उर्वारुकमिव बन्धनान् मृर्त्योमुक्षीय मामृतात्, अस्त्राय फट्।

ध्यानम् –

स्मर्तव्या ऽखिलालोकवर्ति सततं यज्जङ्गमस्थावरं
व्याप्तं येन च यत्प्रपञ्चविहितं मुक्तिर्यतः सिद्धयति ।
यद्वास्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यद्गीयते ।
तद्वस्तु स्थितिसिद्धयेस्तु वरदं ज्योतिस्त्रयोत्यं महः ॥

संपूर्णमूलमन्त्र –

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।

स नः पर्षदहि दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बंधनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

इस मन्त्र के पांच प्रकार है - १. गायत्रीत्र्यम्बक जातवेद - पापशांति हेतु। २. त्र्यम्बक, जातवेद, गायत्री। ३. त्र्यम्बकगायत्री एवं जातवेद - दोनों ही आयुष्यवृद्धि हेतु। ४. जातवेद, त्र्यम्बक और गायत्री ५. जातवेद गायत्री और त्र्यम्बक - दोनों ही शत्रुनाश हेतु जप करें।

॥ सहस्राक्षरमृत्युञ्जयमालामन्त्र ॥

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्त्वात्मकाय सर्वमन्त्रस्वरूपाय सर्वयन्त्राधिष्ठिताय सर्वतन्त्रस्वरूपाय सर्वतत्त्वविदूराय ब्रह्मरुद्रावतारिणे नीलकण्ठाय पार्वतीप्रियाय सोमसूर्याग्निलोचनाय भस्मोद्धूलितविग्रहाय महामणिमुकुटधारणाय माणिकभूषणाय सृष्टिस्थितिप्रलयकालरौद्रावताराय दक्षाध्वरसंकाय महाकाल भेदकाय मूलाधारैकनिलयाय तत्त्वातीताय गङ्गाधराय सर्वदेवाधिदेवाय षडाश्रयाय वेदान्तसाराय त्रिवर्गसाधनायानेक - कोटिब्रह्माण्डनायकाय अनन्त वासुकि तक्षक कर्कोटक खङ्ग कुलिक पद्ममहापद्मेत्यष्टनागकुलभृषणाय प्रणवस्वरूपाय चिदाकाशायाकाशादि स्वरूपाय ग्रहनक्षत्रमालिने सकलाय कलङ्करहिताय सकललौकैककर्त्रे सकललोकैकसंहर्त्रे सकललोकैकभर्त्रे सर्वलोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवेदान्तपारगाय सकललोकैकवरप्रदाय सकललौकैकशङ्कराय शशाङ्कशेखराय शाश्वतनिजावासाय निराभासाय निरामयाय निर्मलाय निर्लोभाय निर्मोहाय निर्मदाय निश्चिन्ताय निरहङ्काराय निराकुलाय निष्कलङ्काय निर्गुणाय निष्कामाय निरुपप्लवाय निरवद्याय निरन्तराय निष्कारणाय निरातङ्काय निष्प्रपञ्चाय निस्सङ्गाय निर्द्वन्द्वाय निराधाराय निरोगाय निष्क्रोधाय निर्गमाय निष्पापाय निर्भयाय निर्विकल्पाय निर्भेदाय निष्क्रियाय निस्तुलाय निस्संशयाय निरञ्जनाय निरुपमविभवाय नित्यशुद्धबुद्ध - परिपूर्ण सच्चिदानन्द अदृश्याय परमशान्तस्वरूपाय तेजोरूपाय तेजोमयाय जय जय महारौद्र भद्रावतार महाभैरव कालभैरव कल्पान्तभैरव कपालमालाधर खट्वाङ्ग-खड्ग-पाशाङ्कुश डमरु-त्रिशूलचापवाणगदा-शक्ति-भिन्दिपाल-तोमर मुसलमुद्गर-पट्टिशपरशुपरिध भुशुण्डी शघ्नी चक्राद्यायुध भीषण

करसहस्त्रमुखदंष्ट्रा करालविकटाट्टहास विस्फारित-ब्रह्माण्ड मण्डल नागेन्द्रकुण्डल नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विरूपाक्ष विश्वेश्वर विश्वरूप वृषवाहन विश्वतोमुख सर्वतो मां रक्ष रक्ष। ज्वल ज्वल महामृत्युभयमपमृत्युभयं नाशय नाशय रोगभयमुत्साद योत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चौरान् मारय मारय मम शत्रून् उच्चाटयोच्चाटय त्रिशूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खड्गेन छिन्धि छिन्धि खट्वाङ्गेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय २ बाणैः सन्ताडय २ रक्षांसि भीषय भीषय भूतानि विद्रावय २ कूष्माण्ड वेताल मारीच ब्रह्मराक्षसगणान् संत्रासय २ मामऽभयं कुरु कुरु वित्रस्तं मामाश्वासय नरकभयाद् मामुद्धरोद्धर संजीवय २ क्षुतृड्भ्यां मामाप्याययाप्यायय दुःखातुरं मामनन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय मृत्युञ्जय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा।

॥ वृहद्महामृत्युञ्जयमालामन्त्र ॥

यह मालामन्त्र सूर्य, ब्रह्मा, विष्णु एवं त्र्यम्बक का समष्टि मन्त्र है। एवं इसके साथ चतुष्पाद गायत्री का संयोजन करके प्रभाव को विशेष ओजोमय बना दिया है।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ घृणिः सूर्य आदित्य ॐ तत्सत् ॐ हंसात्मको यो अपामग्रेस्तेजसा दीप्यमानः स नो मृत्योस्त्रायतां नमो ब्रह्मणे विश्वनाभिः हाहि हाहि हाहि हावु हावु हावु ॐ ह्रीं हंसः सोहं स्वाहा ॐ भुवः भर्गो देवस्य धीमहि ॐ नमो नारायणाय ॐ उग्रं वीरं महाविष्णु ज्वलन्तं सर्वतोमुखं नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहं भ्राजा भ्राजा भ्राजा वव्रेववायवों आधारतोरण्याय वर्यो सहस्त्र ज्वालिनी मृत्युनाशिनी स्वाहा। ॐ स्वः धियो यो नः प्रचोदयात् आमद्य ॐ ह्रीं ॐ नमः शिवाय त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ववावं वववं ववं वेवं ववं वस जझ्रदौं झ ह्रीं अरे वं वं मेवरयु धावया दं जं ॐ जूं सः स्वौं हंसः मां पालय पालय ह्लादय ह्लादय मृत्योर्मोचय मोचय सोहं स्वौं ईं हंसः जूं ॐ ईं स्वौ हंसः मां पालय पालय ह्लादय ह्लादय मृत्योर्मोचय मोचय सोहं स्वौं ईं सः जूं ॐ परो रजसे सावदों आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

॥ महामृत्युञ्जय (मृत संजीवनी) मंत्रस्य विधानम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्री मृतसंजीवनी महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेव, कहोल वसिष्ठऋषिः पंक्ति, गायत्री अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवताः, हौं बीजं, जूं शक्ति, सः कीलकं श्रीमृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः :- वामदेव कहोल वसिष्ठ ऋषये नमः शिरसि। पंक्ति गायत्री अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीमहामृत्युञ्जय रुद्रदेवतायै नमः हृदये। हौं बीजाय नमः गुह्ये। जूं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

षडङ्गन्यास - ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यंम्बकं अंगुष्ठाभ्यां नमः। (हदयाय नमः)॥ ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ यजामहे तर्जनीभ्यां नमः। (शिरसे स्वाहा) ॥ ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् मध्यमाभ्यां नमः। (शिखायै वषट्)॥ ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हुँ)॥ ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां नमः (नेत्रत्रयाय वौषट्॥) ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ मामृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्)॥

ध्यानम् –

चन्द्रार्काग्नि विलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तः स्थितं ।
मुद्रापाशमृगाक्षसूत्र विलसत् पाणिं हिमांशुप्रभम् ॥
कोटिरेन्दुगलत् सुधाप्लुत तनुं हारादि भूषोज्ज्वलं ।
कान्त्या विश्व विमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जये भावये ॥

मन्त्र :- ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ ॥

॥ श्रीमहामृत्युञ्जय यन्त्र पूजन ॥

मृत्युञ्जय यन्त्र भिन्न-भिन्न है। सामान्य यन्त्र में पञ्चकोण, अष्टदल, वृत्तचतुष्टय भूपूर होते है। प्रस्तुत यन्त्र विस्तृत है उसमें पञ्चकोण, अष्टदल, वृत्त, चतुष्टय तदोपरि पुनः अष्टदल, वृत्तत्रय, ततोपुनः अष्टदल एवं भूपूर होता है। विस्तृत यंत्र नहीं कर सके तो सामान्य यंत्र में ही पूजा करें। प्रत्येक नामावलि के बाद पादुकां

पृजयामि नमः तर्पयामि से गंधाक्षत पुष्प अर्पण करे व पञ्चामृत अर्घजल मिश्रित जल से तर्पण करें।
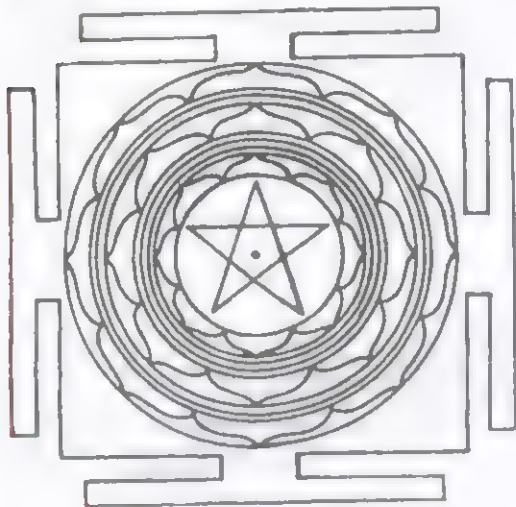
महामृत्युञ्जय यंत्रम्

प्रथमावरणम् - (बिन्दु मध्ये) - मूल मंत्र से **ॐ त्र्यंबकाय श्री पादुकां पूज. नमः तर्पयामि।**

तत्रैव - **ॐ श्रीं ह्रीं मृत्युञ्जये भगवति चैतन्य चन्द्रे हंस संजीवनी स्वाहा। श्री अमृतेश्वरी देव्यै नमः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि** (शिव के वाम भाग में)।

गुरुमण्डल पूजनम् - **ॐ दिव्यौघ गुरुभ्यो श्री पा. पू न. त.। ॐ सिद्धौघ गुरुभ्यो श्री पा. पृ न. त.। ॐ मानवौघगुरुभ्यो श्री पा. पू. न. त.।**

स्वगुरुक्रम **ॐ अमुक स्वगुरुनाथ सशक्तिं श्री पा. पू न. त.। ॐ परमगुरुभ्यो श्री पा. पू न. त.। ॐ परात्परगुरुभ्यो श्री पा. पू न. त.। ॐ परमेष्ठीगुरुभ्यो श्री पा. पू न. त.।**

पुष्पाञ्जलि -

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ द्वितीयावरणम् - (बिन्दु समीपे) **ॐ त्र्यम्बकं हृदयाय नमः श्री पा. पू न. त.। ॐ यजामहे शिरसे स्वाहा श्री पा. पू न. त.। ॐ सुगंधि पुष्टिवर्धनम् शिखायै वषट् श्री पा. पू न. त.। ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् कवचाय हुँ श्री पा. पू न. त.। ॐ मृत्योर्मुक्षीय नेत्रत्रयाय वौषट श्री पा. पू न. त.। ॐ मामृतात् अस्त्रायफट् श्री पा. पू न. त.।**

ॐ अभिष्ट ......द्वितीयावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ तृतीयावरणम् - पञ्चकोणे प्रत्येक नाममंत्रों के बाद श्री पादुकां पूज. नमः तर्पयामि कहें। ईशाने - **सद्योजाताय श्री पादुकां पूज. नमः तर्पयामि**। पूर्वे - **वामदेवाय.**। अग्निकोणे **ईशानाय.**। नैऋत्ये **तत्पुरुषाय.**। वायवे **अघोराय.**।

ॐ अभीष्ट.......ततीयात्ररणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः म्न्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ चतुर्थावरणम् - (अष्टदले) प्रत्येक नाममंत्र के बाद श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि कहकर गंधाक्षत पुष्प अर्पण कर तर्पण करें। **ॐ अर्कमूर्तये श्री पा. पू न. त.। ॐ इन्द्रमूर्तये.। वसुधामूर्तये.। तोयमूर्तये.। वह्निमूर्तये.। वायुमूर्तये.। आकाशमूर्तये.। यजमानमूर्तये.।**

दलाग्रे - **अं आं इं ईं ......अं अः मातृकायै श्री पा. पू न. त.। कं .... ङ मातृकायै.। चं .... ञं मातृकायै.। टं ... डं मातृकायै.। तं ... न. मातृकायै.। पं .... मं मातृकायै.। यं ... वं मातृकायै.। सं ... क्षं मातृकायै श्री पा. पू न. त.।**

ॐ अभीष्ट...... चतुर्थावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ पञ्चमावरणम् - (वृत्तचतुष्कये) **ॐ भवदेव श्री पा. पू न. त.। शर्वदेव.। ईशानदेव.। पशुपतिदेव.। रुद्रदेव.। उग्रदेव.। भीमदेव.। महान्तदेव.।**

ॐ अभीष्ट.......पञ्चमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ षष्ठमावरणम् - (अष्टदले) अगर वृहद यंत्र नहीं बनाया हो तो सामान्य यंत्र के अष्टदल में ही पूजा करें। **ॐ रमायै श्री नमः श्री पा. पू त.। ॐ शकायै.। ॐ प्रभायै.। ॐ ज्योत्स्नायै.। ॐ पूर्णायै.। ॐ उषायै.। ॐ सुधायै.।** (अष्टदलाग्रे) **ॐ विश्वायै नमः श्री पा. पू. त.। विद्यायै.। सितायै.। प्रह्वायै.। सारायै.। संध्यायै.। शिवायै.। निशायै.।**

ॐ अभीष्ट....... षष्ठमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ सप्तमावरणम् :- वृत्तत्रये - (अगर वृहद यंत्र नहीं बनाया हो तो पूर्व के चारों वृत्तों मे से ३ वृत्तों में पूजन करें।) १. **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं ...... प्रचोदयात् श्री सविता देवी श्री पा. पू न. त.।** २. **ॐ जातवेद से सुनवाम सोम मरातीयतो निदहाति वेदः । सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव**

सिन्धु दुरितात्यग्निः श्री दुर्गा देवता श्री पा. पू न. त.। ३. ॐ त्र्यम्बकं यजामहे .... मामृतात्। ॐ त्र्यम्बकं श्री पा. पू न. त.।

ॐ अभीष्ट.......सप्तामावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ अष्टमावरणम् - (द्वितीय अष्टदले) या पूर्व के अष्टदल में ही 'केसरों' में पूजन करें। **ॐ आर्यायै श्री पा. पू न. त.। प्रज्ञायै.। प्रभायै.। मेधायै.। शान्त्यै.। कान्त्यै.। धृत्यै.। सत्यै.।**

ॐ अभिष्ट.......अष्टमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ नवमावरणम् - अष्टदलमध्ये - **ॐ धरायै श्री पा. पू न. त.। मायायै.। अविन्यै.। पद्मायै.। शांतायै.। मोघायै.। जयायै.। अमलायै.।**

ॐ अभीष्ट.......नवमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ दशमावरणम् - अष्टदलाग्रे **ॐ ज्यैष्ठायै नमः श्री पा. पू त.। श्रेष्ठायै.। रूद्रायै.। कालायै.। कलविकरणायै नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय.। सर्वभूतदमनाय.। मनोन्मनाय.। भवोदभवाये.।**

ॐ अभीष्ट.......दशमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ एकादशमावरणम् - अष्टदले कर्णिका समीपे - **अष्टनाग पूजा पूर्वादिक्रमेण। अनन्ताय नमः श्री पा. पू त.। वासुकीये नमः.। शेषाय नमः.। पद्मनाभाय नमः.। कंबलाय नमः.। शंखपालाय नमः.। धृतराष्ट्राय नमः.। तक्षकायनमः.। मध्ये - कालीये नमः।**

ॐ अभीष्ट.......एकादशमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ द्वादशमावरणम् - (अष्टदले कर्णिका वहिः) - **पूर्वादि क्रमेण अष्टभैरवान् सम्पूज्य। ॐ असितांगभैरवाय सशक्तिं श्री पा. पू. न. त.। रुरुवभैरवाय सशक्तिं.। चण्डभैरवाय सशक्तिं.। क्रोधभैरवाय सशक्तिं.। उन्मत्तभैरवाय सशक्तिं.। कपालिभैरवाय सशक्तिं.। भीषणभैरवाय सशक्तिं.। संहारभैरवाय सशक्तिं श्री पा. पू. न. त.।**

ॐ अभीष्ट.......द्वादशमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ त्रयोदयशमावरणम् - भूपूरे - वैसे भूपूर में अष्टसिद्धि, ग्रह, उपग्रह, पीठ, उपपीठ एवं दिक्पालादि का पूजा विधान है। (नरपतिजयचर्या) **अष्टसिद्धिं - अणिमा सिद्धि श्री पा. पू. न. त.। लघिमा.। महिमा.। ईशित्व सिद्धि.। वशित्व सिद्धि.। प्राकाम्य सिद्धि.। भुक्ति सिद्धि.। इच्छा सिद्धि.।**

ॐ अभीष्ट....... त्रयोदशमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ चतुर्दशमावरणम् - (भूपूरे) **इन्द्राय नमः श्री पा. पू. त.। अग्नये नमः.। यमाय नमः.। निर्ऋत्ये नमः.। वरुणाय नमः.। वायवे नमः.। कुबेराय नमः.। ईशानाय नमः.। ब्रह्मणे नमः.। अनन्ताय नमः श्री पा. पू. त.।**

ॐ अभीष्ट....... चतुर्दशावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ पञ्चदशावरणम् - (भूपुरे) **वज्राय नमः श्री पा. पू. त.। शक्तये नमः.। दण्डाय नमः.। खड्गाय नमः.। पाशाय नमः.। अङ्कुशाय नमः.। गदाय नमः.। त्रिशूलाय नमः.। पद्माय नमः.। चक्राय नमः.।**

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चदशावरणार्चनम्॥

पुष्पाञ्जलि देवें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः से अर्घेन संतृप्त। फिर धूप दीप नैवेद्य अर्पण कर नीरांजन करे।

॥ द्वितीय प्रकाराः (५२ अक्षरात्मक)॥

मन्त्र - "ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्॥ उर्वारुकमिव बंधनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ "॥१॥

अन्यत् च **ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः भुवः भू ॐ सः जूं हौं ॐ**

संकल्प करके गुरु गणपति व इष्टदेव का स्मरण करके अङ्गन्यास व अक्षर

न्यास करके जप करे।

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजयमंत्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठा ऋषयः। पंक्तिगायत्र्यनुष्टुभश्छंदांसि। सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रा देवताः। श्रीं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। मम शरीरे ज्वराद्यमुकरोगनिरासनद्वारा सद्यः आरोग्यार्थ ममुककामासिद्ध्यर्थं वा श्रीमहामृत्युंजयदेवता प्रीत्यर्थममुकसंख्यापरिमित-श्रीमहामृत्युंजयजपं करिष्ये।

ऋष्यादिन्यासः - ॐ वामदेवकहोलवसिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ १ ॥ पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छंदोभ्यो नमः मुखे ॥ २ ॥ सदाशिव-महामृत्युंजयरुद्रदेवताभ्यो नमः हृदि ॥ ३ ॥ श्रींबीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥

करन्यासः - ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यंवकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय जीवय तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ हौं ॐ जूसः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बंधनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांतकाय हां हीं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममंत्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥

अङ्गन्यास - ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शुलपाणये हृदयायः नमः ॥ १ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बंधनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांतकाय हां हीं कवचाय हुँ ॥ ४ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्रायत्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममंत्राय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय फट् ॥६ ॥

वर्णन्यास - ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यं नमः पूर्वमुखे ॥ १ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः बं नमः पश्चिममुखे ॥ २ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः कं नमः दक्षिणमुखे ॥ ३ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः यं नमः उत्तरमुखे ॥ ४ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः जां नमः उरसि ॥ ५ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः मं नमः कंठे ॥ ६ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवःस्वः हें नमः मुखे ॥ ७ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः सुं नमः नाभौ ॥ ८ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः गं नमः हृदि ॥ ९ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः हौं ॐ भूर्भुवः स्वः धिं नमः पृष्ठे ॥ १० ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः पुं नमः कुक्षौ ॥ ११ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ष्टिं नमः लिंगे ॥ १२ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः वं नमः गुदे ॥ १३ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः र्धं नमः दक्षिणोरुमूले ॥ १४ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः नं नमः वामोरुमूले ॥ १५ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः उं नमः दक्षिणोरुमध्ये ॥ १६ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः र्वां नमः वामोरुमध्ये ॥ १७ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः रुं नमः दक्षिणजानुनि ॥१८ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः कं नमः वामजानुनि ॥ १९ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः मिं नमः दक्षिणजानुवृत्ते ॥ २० ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वःवं नमः वामजानुवृन्ने ॥ २१ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः बं नमः दक्षिणस्तने ॥ २२ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः धं नमः वामस्तने ॥ २३ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः नों नमः दक्षिणपार्श्वे ॥ २४ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः मृंनमः वामपार्श्वे ॥ २५ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्यों नमः दक्षिणपादे ॥ २६ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः र्मुं नमः वामपादे ॥ २७ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः क्षीं नमः दक्षकरे ॥ २८ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः यं नमः वामकरे ॥ २९ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः मां नमः दक्षनासायाम् ॥ ३० ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः मृं नमः वामनासायाम् ॥ ३१ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः तां नमः मूर्ध्नि ॥ ३२ ॥

पदन्यासः- ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः यजामहे भ्रुवौः ॥ २ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः सुगंधिं नेत्रयौः ॥ ३ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्टिवर्धनं मुखे ॥ ४ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः उर्वारुकं गंडयोः ॥

५॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः इव हृदये ॥ ६॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः बंधनात् जठरे ॥ ७॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्योः लिंगे ॥ ८॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः मुक्षीय ऊर्वोः ॥ ९॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः मां जान्वोः ॥ १०॥ ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः अमृतात् पादयोः ॥११॥

॥ अथ मृत्युञ्जय यंत्रार्चनम् ॥

अथ ध्यानम् :-

हस्तांभोजयुगस्थकुंभयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः सिचंतं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुंभौ करौ ।
अक्षस्त्रङ्मृगहस्तमंबुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्त्रवत्पीयूषोन्नतनुं भजे सगिरिजं मृत्युजयं त्र्यंबकम् ॥

नव पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले लिंगतोभद्रमण्डले वा यन्त्रमध्ये ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ।
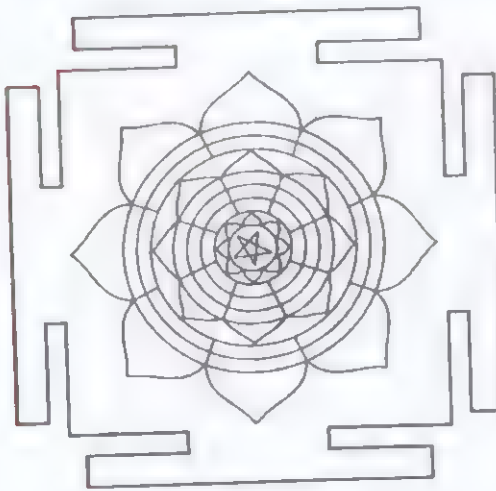
महामृत्युञ्जय पूजन

तद्यथा। पूर्वादिक्रमेण। ॐ वामायै नमः ॥ १॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः ॥ २॥ ॐ रौद्रयै नमः ॥ ३॥ ॐ काल्यै नमः ॥ ४॥ ॐ कलविकरिण्यै नमः ॥ ५॥ ॐ बलविकरिण्यै नमः ॥ ६॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ७॥ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः ॥ ८॥ मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥ ९॥ इति पूजयेत्।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोध्य "ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मकशक्तियुताय अनन्ताय योगपीठात्मने नमः॥" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्ति

प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पां तैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञया आवरणपूजां कुर्य्यात्।

तद्यथा पुष्पांजलिमादाय "**सचिनमयः परो देवः परामृतरसप्रियः॥ अनुज्ञां शिव मे देहि परिवारार्चनाय ते ॥ १॥**" इत्याज्ञां गृहीत्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा आवरणपूजाकुर्य्यात् ॥

पंचकोणे। ऐशान्याम् - "**ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥**" **ॐ ईशानाय नमः। ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्रा ॥ १॥** पूर्वे - "**ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि॥ तन्नो रुद्र प्रचोदयात्**" **ॐ तत्पुरुषाय नमः। तत्पुरुषश्रीपा० ॥ २॥** दक्षिणे - "**ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरभ्यो घोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यः सर्व्वशर्व्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥**' **ॐ अधोराय नमः। अधोरश्रीपा० ॥ ३॥** पश्चिमे -"**ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥**" **ॐ वामदेवाय नमः। वामदेवश्रीपा० ॥ ४॥** उत्तरे - "**ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥**" **ॐ सद्योजाताय नमः। सद्योजातश्रीपा० ॥ ५॥** (इति पंचमूर्तीः पूजयेत्) ॥

ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य '**अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १॥** इतिपठित्वा पुष्पांजलि च दत्त्वा विशेपार्घाद्रिंदुं निःक्षिप्य **पूजितास्तर्पिताः संतु** इति वदेत्। (इति प्रथमावरणम्) ॥ १॥

ततः पंचकोणाग्रेषु ऐशान्यादिक्रमेण। **ॐ निवृत्त्यै नमः। निवृत्तिश्रीपा० ॥ १॥ ॐ प्रतिष्ठायै नमः । प्रतिष्ठाश्रीपा० ॥ २॥ ॐ विद्यायै नमः विद्याश्रीपा० ॥ ३॥ ॐ शांत्यै नमः । शांतिश्रीपा० ॥ ४॥ ॐ शांत्यतीतायै नमः । शांत्यतीताश्रीपा० ॥ ५॥** इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। (इति द्वितीयावरणम्) ॥ २॥

ततोऽष्टदले - **पूज्य पूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण** अन्या दिशः **प्रकल्प्य** प्राचीक्रमेण। **ॐ सूर्य्यमूर्तये नमः। सूर्य्यमूर्तिश्रीपा० ॥ १ ॐ इन्दुमूर्तये नमः इन्दुमूर्तिश्रीपा० ॥ २॥** ॐ क्षितिमूर्तये नमः । क्षितिमूर्तिश्रीपा० ॥ ३॥ ॐ **तोयमूर्तये नमः। तोयमूर्तिश्रीपा० ॥ ४॥** ॐ अग्निमूर्तये नमः। अग्निमूर्तिश्रीपा०

॥ ५ ॥ ॐ **पवनमूर्तये नमः। पवनमूर्तिश्रीपा०** ॥ ६ ॥ ॐ **आकाशमूर्तये नमः। आकाशमूर्तिश्रीपा०** ॥ ७ ॥ ॐ **यज्ञमूर्तये नमः। यज्ञमूर्तिश्रीपा०** ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ मूर्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। (इति तृतीयावरणम्) ॥३॥

तद्बहिरष्टदले - प्राचीक्रमेण ॐ **रमायै नमः। रमाश्रीपा०** ॥१॥ ॐ **राकायै नमः। राकाश्रीपा०** ॥ २ ॥ ॐ **प्रभायै नमः। प्रभाश्रीपा०** ॥ ३ ॥ ॐ **ज्योत्स्नायै नमः। ज्योत्स्तनाश्रीपा०** ॥ ४ ॥ ॐ **पूर्णायै नमः । पूर्णाश्रीपा०** ॥ ५ ॥ ॐ **पूषायैनमः। पूषाश्रीया०** ॥ ६ ॥ ॐ **पूर्ण्यै नमः। पूर्णाश्रीपा०** ॥ ७ ॥ ॐ **सुधायै नमः ॥ सुधाश्रीपा०** ॥ ८ ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्॥ (इति चतुर्थावरणम्) ॥ ४ ॥

तद्बहिरष्टदले - प्राचीक्रमेण। ॐ **विश्वायै नमः। विश्वाश्रीपा०** ॥ १ ॥ ॐ **वंद्यायै नमः। वंद्याश्रीपा०** ॥ २ ॥ ॐ **सितायै नमः । सिताश्रीपा०** ॥ ३ ॥ ॐ **प्रह्लायै नमः। प्रह्लाश्रीपा०** ॥ ४ ॥ ॐ **सारायै नमः। साराश्रीपा०** ॥ ५ ॥ ॐ **संध्यायै नमः। संध्याश्रीपा०** ॥ ६ ॥ ॐ **शिवायै नमः। शिवाश्रीपा०** ॥ ७ ॥ ॐ **निशायै नमः। निशाश्रीपा०** ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ (इति पंचमावरणम्) ॥ ५ ॥

तद्बहिरष्टदलेप्राचीक्रमेण। ॐ **आर्य्यायै नमः । आर्य्याश्रीपा०** ॥ १ ॥ ॐ **प्रज्ञायै नमः। प्रज्ञाश्रीपा०** ॥ २ ॥ ॐ **प्रभायै नमः। प्रभाश्रीपा०** ॥ ३ ॥ ॐ **धृत्यै नमः। धृतिश्रीपा०** ॥ ३ ॥ ॐ **मेधायै नमः। मेधाश्रीपा०** ॥ ४ ॥ ॐ **शांत्यै नमः। शांतिश्रीपा०** ॥ ५ ॥ ॐ **कांत्यै नमः। कांतिश्रीपा०** ॥ ६ ॥ ॐ **धृत्यै नमः । धृतिश्रीपा०** ॥ ७ ॥ ॐ **मत्यै नमः। मतिश्रीपा०** ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। (इति षष्ठावरणम्) ॥ ६ ॥

तद्बहिरष्टदले-प्राचीक्रमेण। ॐ **धरायै नमः। धराश्रीपा०** ॥ १ ॥ ॐ **उमायै नमः। उमाश्रीपा०** ॥ २ ॥ ॐ **पावन्यै नमः। पावनीश्रीपा०** ॥ ३ ॥ ॐ **पद्मायै नमः। पद्माश्रीपा०** ॥ ४ ॥ ॐ **शांतायै नमः। शांताश्रीपा०** ॥ ५ ॥ ॐ **अमोघायै नमः। अमोघाश्रीपा०** ॥ ६ ॥ ॐ **जयायै नमः। जयाश्रीपा०** ॥ ७ ॥ ॐ **अमलायै नमः। अमलाश्रीपा०** ॥ ८ ॥ इत्यष्टो पूजायित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्॥ (इति सप्तमावरणम्) ॥ ७ ॥

तद्बहिरष्टदले प्राचीक्रमेण। ॐ अनंताय नमः। अनंतश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ सूक्ष्मसंज्ञय नमः। सूक्ष्मसंज्ञश्रीपा० ॥२॥ ॐ शिवोत्तमाय नमः शिवोत्तमश्रीपा० ॥ [illegible] नमः। [illegible]श्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ एकरुद्राय नमः।

एकरुद्रश्रीपा० ॥५॥ ॐ त्रिमूर्तये नमः। त्रिमूर्तिश्रीपा० ॥६॥ ॐ श्रीकंठाय नमः । श्रीकंठश्रीपा०॥ ७॥ ॐ शिखंडिने नमः। शिखंडिश्री० ॥ ८॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ॥ (इत्यष्टमावरणम्) ॥ ८॥

तद्बहिरष्टदले उत्तरमारभ्य ॐ उमायै नमः। उमाश्रीपा० ॥ १॥ ॐ चण्डेश्वराय नमः। चण्डेश्वरश्रीपा० ॥ २॥ ॐ नंदिने नमः। नंदिश्रीपा०॥ ३॥ ॐ महाकालाय नमः। महाकालश्रीपा० ॥४॥ ॐ गणेशाय नमः। गणेशश्रीपा० ॥ ५॥ ॐ वृषभाय नमः। वृषभश्रीपा० ॥ ६॥ भृंगिरिटये नमः। भृंगिरिटिश्रीपा० ॥७॥ ॐ स्कंदाय नमः। स्कंदश्रीपा० ॥८॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। (इति नवमावरणम्) ॥ ९॥

तद्बहिरष्टदले प्राचीक्रमेण। ॐ ब्राह्मयै नमः। ब्राह्मीश्रीपा० ॥ १॥ ॐ माहेश्वर्य्यै नमः। माहेश्वरीपा० ॥ २॥ ॐ कौमार्यै नमः। कौमारीश्रीपा० ॥ ३॥ ॐ वैष्णव्यै नमः। वैष्णवीश्रीपा० ॥४॥ ॐ वाराह्यै नमः। वाराहीश्रीपा० ॥ ५॥ ॐ इन्द्राण्यै नमः। इन्द्राणीश्रीपा० ॥ ६॥ ॐ चामुंडायै नमः। चामुण्डाश्रीपा० ॥७॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीश्रीपा० ॥८॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्॥ (इति दशमावरणम्)

तद्बाह्ये भूपुरे पूर्वादिक्रमेण - इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतां संपूज्य कृतांजलिः प्रार्थयेत् -

ॐ मृत्युंजय महारुद्रत्राहिमां शरणागतम् ।
जन्ममृत्यु-जरारोगैः पीडितं कर्मबंधनैः ॥१॥
तावकस्त्वद्गत-प्राणास्त्वच्चित्तोऽहं सदा मृड ।
इति विज्ञाप्य देवेशं जपेनमृत्युंजयं परम् ॥२॥

इति संप्रार्थ्य जपं कुर्य्यात्

अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः। जपांते दशांशतो दशद्रव्यैर्होमः। होमदशांशेन मंत्रांते ॐ मृत्युंजयं तर्पयामीत्युक्त्वा दुग्धमिश्रितजलेन तर्पयेत्। ततस्तर्पणदशांशे मंत्रांते आत्मानमभिषिंचामि नमः इति यजमानमूर्द्धन्यभिषेकः॥ होमतर्पणाभिषेकाशक्तौ तत्स्थाने तत्तद्द्विगुणो जपः कार्यः। ततोऽभिषेकदशांशतोऽष्टोत्तरशतसंख्यातो वा ब्राह्मणभोजनं कुर्य्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति।

दशद्रव्यैः - प्रजुहुयान्नानि बिल्वफलं [illegible] पायसं सर्वर्षं दुग्धं

दधि दूर्वा च सप्तमी ॥ वटात्पलाशात्ख दिरात्समिधो मधुरप्लुताः ॥ २ ॥ एवं कृते प्रयोगार्हो जायतेऽयं महामनुः ॥ जन्मभे दशमे तस्मात्पुनश्चैकोनविंशके ॥ ३ ॥ जुहुयाद्यः सुधावल्याः समिधश्चतुरंगुलाः ॥ स रोगान् सकलाञ्शत्रून् पराभूय श्रिया युतः ॥ ४ ॥ मोदते पुत्रपौत्राद्यैः शतवर्षाणि साधकः ॥ समिद्भिः श्रीफलोत्थाभिर्होमः संपत्तिसिद्ध्ये ॥ ५ ॥ पलाशतरुजाभिस्तु ब्रह्मवर्चस सिद्धये ॥ वटोत्थभिर्धनप्राप्त्यै खादिरीभिस्तु कांतये ॥ ६ ॥ तिलैरधर्मनाशाय सर्षपैः शत्रुनष्टये ॥ पायसेन कृतो होमः कांति श्रीकीर्तिदायकः ॥ ७ ॥ कृत्वा मृत्युक्षयारोग्यं दध्ना संवादसिद्धिदः ॥ होमसंख्या तु सर्वत्रायुतमानेन कीर्तिता ॥ ८ ॥ अष्टोत्तरशतं दूर्वात्रिकहोमाद्रुजां क्षयः ॥ स्वजनमदिउवसे यस्तु प्रायसैर्मधुरान्वितैः ॥ ९ ॥ जुहोति तस्य वर्द्ध । कुलमारोग्यकीर्तयः ॥ गुडूचीबकुलोत्थभिः समिद्भिर्हवनं नृणाम् ॥ १० ॥ जन्मतापत्रयं रोगान् मृत्युं चापि विनाशयेत् ॥ प्रत्यहं जुहुयाद्दूर्वा अपमृत्युविनष्टये ॥ ११ ॥ किं बहूक्तेन सर्वेष्टं प्रयच्छति शिवो नृणाम् ॥ अपामार्गसमिद्भिश्च सिद्धान्नैर्ज्वर नष्टये ॥ दुग्धात्कैरमृताखंडैर्मासं होमोऽखिलामये ।।''

॥ इति महामृत्युजयमंत्रप्रयोगः मंत्रमहोदधि ॥

॥ अथ महामृत्युञ्जय मन्त्र प्रयोगः॥

(शुक्रोपासिता)

विनियोगः - ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य महर्षि भृगु ऋर्षि, पंक्ति गायत्री, अनुष्टुप् छन्दः , सदाशिव महामृत्युञ्जय मन्त्रो देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिं ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

षडाङ्गन्यास - ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः। ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसे स्वाहा। ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ सुगन्धिंम पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा - शिखायै वषट्। ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ उर्वारुकमिव बन्धनान् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय कवचाय हुं। ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साम [illegible] नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हौं

ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष ॐ अघोरास्त्राय नमः अस्त्राय फट्।

इसी तरह करागन्यास करें। ध्यान व यन्त्रार्चन पूर्व में दिये गये पूजन प्रयोगों के अनुसार ही जाने।

॥ शुक्रोपासिता भिन्नपाद मृतसञ्जीवनी विद्या॥

शुक्राचार्य उपासित ६२ अक्षरात्मक महामृत्युञ्जय मन्त्र का उल्लेख पूर्व में किया जा चुका है।

यह मन्त्र भिन्नपाद मृत्युञ्जय मन्त्र है जो कि पूर्व में श्रीविद्याणर्व तंत्र के अनुसार ललिता त्रिपुर सुन्दरी के मन्त्र से पुटित भिन्नपाद मन्त्र बताया जा चुका है।

यह मन्त्र गायत्री मन्त्र से भिन्नपाद मन्त्र बनता है। यथा -

वेदादि-भूरादिपदत्रयं च मध्ये कृतं मृत्युहरं त्रियम्बकम् ।
जपेत् फलार्थी विधिवत् प्रजप्य प्रासादबीजं मृत्युञ्जयसंपुटेत् ॥

मन्त्र - ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे भर्गो देवस्य धीमहि सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् धियो यो नः प्रचोदयात् उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।

अन्यकल्पों में दूसरा मन्त्र भेद स्वरूप में है।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे तत्सवितुर्वरेण्यं सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् भर्गो देवस्य धीमहि उर्वारुकमिव बन्धनान् धियो यो नः प्रचोदयात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।

॥ मृत्युञ्जय श्रीचक्रपूजा ॥

त्रैलोक्य चिन्तामणि, दीक्षावल्लभ में शिवात्मक श्रीचक्र का वर्णन है।

श्रीचक्र में श्रीत्रिपुरसुन्दरी का पूजन अपने शिव कामेश्वर के साथ किया जाता है, उसी तरह मृत्युञ्जय के साथ उनकी शक्ति अमृतेश्वरी का पूजन करना चाहिये।

यंत्रोद्धार –

बिन्दु त्रिकोण षट्कोण वृत्ताष्टदलमण्डितम् ।
वृत्तत्रयं धरासद्म श्रीचक्रं शिवमीरितम् ॥

इसके अनुसार बिन्दु त्रिकोण षट्कोण वृत्त अष्टदल, वृत्तत्रय चक्र और भूपूर से यह यन्त्र बनता है।

इसका यन्त्र श्रीयन्त्र की तरह ही यन्त्रार्चन चक्र पूजा करें। विशेष विधान मृत्युञ्जय पटल में देखें।
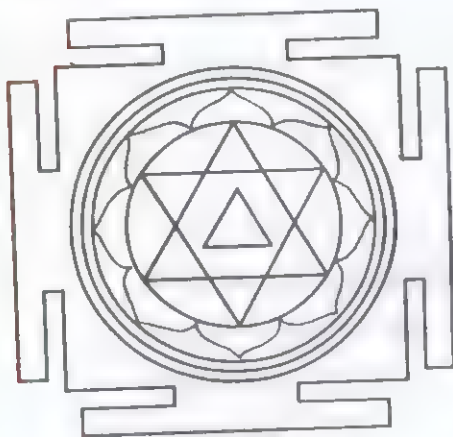
मृत्युञ्जय श्री यंत्रम्

प्रथमावरणम् - बिन्दु में भगवान मृत्युञ्जय का ध्यान करें। उसके वामभाग में उनकी शक्ति अमृतेश्वरी का आवाहन करें।

ॐ ह्रीं श्रीं मृत्युञ्जये भगवति चैतन्य चन्द्रे हंस संजीवनी स्वाहा। इहागच्छ इहतिष्ठ। गुरुचतुष्टय का ध्यान करें। ॐ गुरवे नमः। परम गुरवे नमः। परात्पर गुरवे नमः। परमेष्ठी गुरवे नमः।

द्वितीयावरणम् - (त्रिकोणे) **सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। तद्वाह्वये तत्रैव। वामायै नमः। जेष्ठायै नमः। रौद्रयै नमः।**

तृतीयावरणम् - (षट्कोणे) मृत्युञ्जय मन्त्र के षडाङ्ग न्यास करते हैं, उन मन्त्रों से करें। अथवा सामान्य क्रम में - **ॐ मृत्युञ्जयाय हृदयशक्तये नमः। शिरो शक्तये नमः। शिखा शक्तये नमः। कवच शक्तये नमः। नेत्रत्रयाय शक्तये नमः। अस्त्र शक्तये नमः।**

चतुर्थावरणम् - (अष्टदले) **ॐ अर्कमूर्तये नमः। इन्द्रमूर्तये नमः। वसुधामूर्तये नमः। तोयमूर्तये नमः। वह्निमूर्तय नमः। वायुमूर्तये नमः। आकाशमूर्तये नमः। यजमानमूर्तये नमः।**

पञ्चमावरणम् - (अष्टदले) **ॐ रमायै नमः। राकायै नमः। प्रभायै नमः। ज्योत्स्नायै नमः। पूर्णायै नमः। उषायै नमः। पूरण्यै नमः। सुधायै नमः।**

षष्टमावरणम् - (अष्टदले) **ॐ विश्वायै नमः। विद्यायै नमः। सितायै नमः। प्रह्वायै नमः। सारायै नमः। सन्ध्यायै नमः। शिवायै नमः। निशायै नमः।**

सप्तमावरणम् - (अष्टदले) **ॐ आर्यायै नमः। प्रज्ञायै नमः। प्रभायै नमः। मेधायै नमः। शान्त्यै नमः। कान्त्यै नमः। धृत्यै नमः। सत्यै नमः।**

अष्टमावरणम् - (अष्टदले) **ॐ धरायै नमः। उमायै नमः। पाविन्यै नमः। पद्मायै नमः। शान्तायै नमः। मोघायै नमः। जयायै नमः। अमलायै नमः।**

नवमावरणम् - (अष्टदले) **ॐ भवायै नमः। शर्वायै नमः। पशुपतये नमः। ईशानाय नमः। उग्राय नमः। रुद्राय नमः। भीमाय नमः। महते नमः।**

दशमावरणम् - (अष्टदले) **ॐ भवान्यै नमः। शर्वाण्यै नमः। पशुपत्यै नमः। ईशान्यै नमः। उग्रायै नमः। रुद्राण्यै नमः। भीमायै नमः। महत्यै नमः।**

एकादशावरणम् - प्रथमवृत्त में गायत्री मन्त्र से सविता का आवाहन करे। द्वितीय वृत्त में -

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धु दुरितात्यग्नि ॥
ॐ जातवेदसे दुर्गायै नमः।

तृतीय वृत्त में - **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे.......। त्र्यम्बकायै नमः।**

द्वादशावरणम् - (भूपूरे) पूर्वादिक्रमेण - **ॐ ज्येष्ठायै नमः। श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः। कालायै नमः। कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः। बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः। सर्वभूतदमनाय नमः। मनोन्मनाय नमः। भवोद्भवाय नमः।**

त्रयोदशावरणम् - (भूपूरे) पूर्वादिक्रमेण - **ॐ ब्रह्मयै नमः। माहेश्वर्यै नमः। कौमार्यै नमः। वैष्णाव्यै नमः। वाराह्यै नमः। इन्द्राण्यै नमः। चामुण्डायै नमः। महालक्ष्म्यै नमः।**

चतुर्दशावरणम् - (भूपूरे) इन्द्रादि लोकपालों का आवाहन करें।

पञ्चदशामावरणम् - (भूपूरे) इन्द्रादि दिक्पालों के वज्रादि आयुधों का पूजन करें।

॥ विविध देवस्य आयुष्यकर मृत्युञ्जय मन्त्र ॥

वैरिञ्चकल्प में ब्रह्मा, नृसिंहविष्णु एवं त्र्यम्बकरुद्र के तीन वैदिक मन्त्र दिये हैं। व्यास एवं धर्मराज के भी आयुष्यमन्त्र उपलब्ध है। यथा

॥ ब्रह्मा ॥

ॐ हंसात्मको यो अपामग्रेस्तेजसा दीप्यमानः ।
स नो मृत्योस्त्रायतां नमो ब्रह्मणे विश्वनाभिः ॥

॥ नृसिंहविष्णु ॥

ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् ।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥

त्र्यम्बकं **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे ....॥ (पूर्ण ऋचा)**

॥ व्यासमन्त्र ॥

मन्त्रमहोदधि में कहा गया है कि –

मृत्युञ्जयेन पुटितं यो व्यासस्य मन्त्रं जपेत् ।
सर्वोपद्रव सन्त्यक्तो लभते वाञ्छितं फलम् ॥

प्रायः कई बार ऐसी परिस्थिति बनती है कि विभिन्न वैद्य, डॉक्टरों का इलाज लंबे समय तक चलने पर भी रोग का शमन नहीं होता है तो उस समय मृत्युञ्जय मन्त्र संपुटित व्यासमन्त्र का जप करने से महर्षि वेदव्यास स्वयं सदबुद्धि देकर रोगी की रक्षा के लिये मार्गदर्शन करते है एवं वातावरण अनुकूल बनने लगता है।

मन्त्र – **''ॐ जूं सः व्यां वेदव्यासाय नमः सः जूं ॐ''।**

विनियोग – **ॐ अस्य श्रीव्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, सत्यवती सुतो देवता व्यां बीजं, नमः शक्तिः, मम रोगज्ञान पूर्वकं सर्वारिष्टनिवृत्तये मृत्युञ्जय संपुटित व्यास मन्त्र जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यास – **ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे, सत्यवतीसुतो देवता हृदये, व्यां बीजं नमः गुह्ये, नमः शक्तिं नमः पादयो विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

मन्त्र	**करन्यास**	**अंगन्यास**
व्यां	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः
व्यीं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा
व्यूं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्
व्यैं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
व्यौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
व्यः	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

ध्यानम् –

व्याख्यामुद्रिकया लसत्करतलं सद्योगपीठस्थितं
वामे जानुतले दधानमपरं हस्तं सुविद्यानिधिम् ।

विप्रव्रातवृतं प्रसन्नमनसं पाथोरुहाङ्गद्युतिं
पाराशर्यमतीव पुण्यचरितं व्यासं भजे सिद्धये ॥

॥ व्यासयन्त्र पूजनम् ॥

यन्त्र के मध्य में षट्कोण उसके बाहर अष्टदल उसके बाहर भूपूर (परिधि) युक्त हैं। मध्यबिन्दु में (यन्त्रमध्य) में महर्षि व्यास का आवाहन करे।
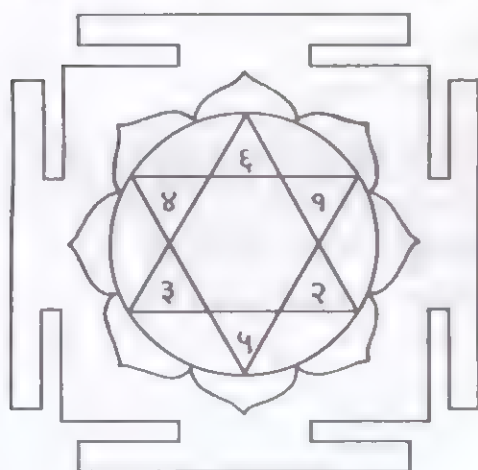
व्यास पूजन यंत्र

प्रथमावरण पूजनम् - (षट्कोणे) **व्यां हृदयाय नमः आग्नेये। व्यीं शिरसे स्वाहा नैर्ऋत्ये। व्यूं शिखायै वषट् वायव्ये। व्यैं कवचाय हुं ऐशान्ये व्यौं नेत्रत्रयाय वौषट् अग्रे। व्यः अस्त्राय फट् सर्व दिक्षु** (पश्चिमे)।

द्वितीयावरण पूजनम् - (अष्टदले) **ॐ पैलाय नमः पूर्वे। ॐ वैशम्पायनाय नमः दक्षिणे। ॐ जैमिन्यै नमः पश्चिमे। ॐ सुमन्तवे नमः दक्षिणे।**

आग्नेयादि चारों कोणों में - (अष्टदले) **ॐ श्री शुकाय नमः आग्नेये। ॐ रोमहर्षणाय नमः नैर्ऋत्ये। ॐ उग्रश्रवसे नमः वायव्ये। ॐ अन्यमुनीन्द्रेभ्यो नमः ऐशान्ये॥**

तृतीयावरणम् - (भूपूरे) **इन्द्रादि दश दिक्पालों का पूजन करें।**

चतुर्थावरणम् - (भूपूरे वाह्ये) **पूर्वादिक्रमेण वज्रादि आयुधों की पूजा करें।**

॥इति व्यास मन्त्र प्रयोगः॥

॥ सर्वरोगनाशक धर्मराज मन्त्र विधानम् ॥

(मन्त्रमहोदधि ग्रन्थ में इसका संक्षिप्त विधान है।)

संकल्प - **मम सकलापदां विनाशनाय सर्वरोगाणां प्रशमनार्थे श्रीधर्मराज मन्त्र जपमहं करिष्ये।**

करन्यास - हृदयादि न्यास की तरह करें। **ॐ क्रों ह्रीं हृदयाय नमः। ॐ आं वैं शिरसे स्वाहा। ॐ वैवस्वताय शिखायै वषट्। ॐ धर्मराजाय कवचाय हुं। ॐ भक्तानुग्रहकृते नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ नमः अस्त्राय फट्।**

मन्त्र - **ॐ क्रों ह्रीं आं वैं वैतवस्ताय धर्मराजाय भक्तानुग्रहकृते नमः।**

ध्यानम् -

पाथः संयुतमेघसन्निभतनुः प्रद्योतनस्यात्मजो
नृणां पुण्यकृतां शुभावहवपुः पापीयसां दुःखकृत्।
श्रीमद्दक्षिणदिक्पति र्महिषगो भूषाभरालंङ्कृतो
ध्येयः संयमनीपतिः पितृगण स्वामी यमो दण्डभृत् ॥

॥ इति धर्मराज प्रयोग ॥

॥ अरिष्टनाशक यन्त्रादिभिषेक प्रयोगः ॥

रोगोपचार हेतु निम्नलिखित यन्त्र बनाये। मण्डल बनाये। मध्य में साध्यनाम (रोगी का नाम लिखे)। बाहर षट्कोण में षडङ्गों की पूजा करें। उसके बाहर **पञ्चदल में ईशानादि देवों का नाम** लिखें। उसके बाहर **अष्टदल में त्र्यम्बक मन्त्र** के आठ भाग लिखें। **अ......... अं अः। क वर्गादि आठवर्गो को लिखें,** लिखना असंभव हो तो कल्पना करें। उसके बाहर भूपूर परिधि में इन्द्रादि देवों का आयुध सहित पूजन करें।

मण्डल के मध्य में कलश रखें उसमें सतावरी व अन्य औषधियों डालें। शिवार्चन व यन्त्रार्चन करे एवं उस जल से रोगी का अभिषेक करें।

उपरोक्त तरह के दो यन्त्र भोजपत्र पर लोहे की कलम से लिखें। जिस शत्रु का भय हो उस शत्रु का नाम मध्य में लिखें। यन्त्र का उत्तराभिमुख होकर अर्चन करें। एक यन्त्र ताबीज में भरकर स्वयं के बांध लेवें। एवं दूसरा यन्त्र एक शिला पर रखकर दूसरी भारी शिला से दाब देवें तो शत्रु अनुकूल होगा।
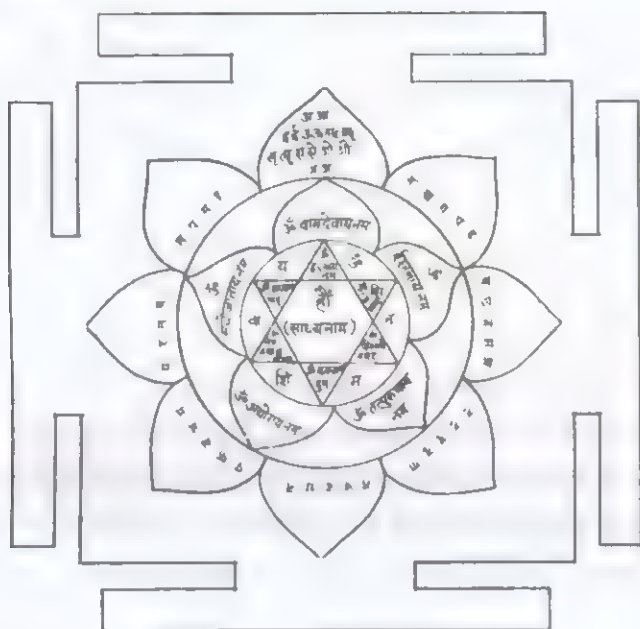
अगर विशेष भय होवे तो स्वयं के पास रखने वाला यंत्र तो गंध व लोहे की कलम से लिखें परन्तु शिला के नीचे दबानें वाला यन्त्र गंध व भस्म से आक व धतूर के रस में कौवे के पंख की कलम मे लिखें।

॥ रणदीक्षा और वीराभिषेक ॥

नरपतिजयचर्या के शान्त्याध्याय में अभिषेक विधि मृत्युञ्जय कवच न्यासादि दिये गये हैं। यथा -

अभिषेकात् परं पूजा कर्तव्या पूर्व मण्डले ।
मृत्युञ्जयेन मन्त्रेण पूर्वोक्तविधिना ततः ।
"ॐ जूं सः"

पश्चात् समर्पयेन्मन्त्रं रणदीक्षा भवेदियम् ।
तया समन्वितो वीरस्त्रिदशैरपि दुर्जयः ॥

इसके अनुसार युद्ध में विजय का इच्छुक मृत्युञ्जय दीक्षा लेवें। शुद्ध भूमि पर एक अष्टदल बनायें उसके बाहर ३ परिधी (तीन रंगों में - सत, रज, तम युक्त बनायें) बनायें।

अष्टदल में मृत्युयन्त्र के अष्टदल में ६४ देवों का यन्त्रार्चन करें। एवं एक एक पत्र में ८-८ देवों का अर्चन करें।

पद्मपत्रे लिखेद् देवांश्चतुः षष्टिप्रमाणतः ।
एकैकपद्मपत्रेषु वसुसंख्या दले दले ॥
भैरवी भैरवा सिद्धिर्ग्रहा नागा उपग्रहाः ।
पीठोपपीठ संयुक्ता दिक्पालैश्च समन्विता ॥
कर्णिकायां न्यसेद देवं साङ्गं सहस्त्रकम् ।
प्रणवादिनमोऽन्तैश्च नाममन्त्रैस्ततो ऽर्चयेत् ॥

अर्थात् भैरवी भैरव, सिद्धियां, ग्रह, नाग, उपग्रह, पीठ, उपपीठ का अर्चन करें। भूपुर में दिक्पाल व आयुधों का अर्चन करें, अथवा पूर्व में बताई गयी यन्त्र पूजा में भैरव, नाग, अष्टसिद्धि की पूजा वाला यन्त्र काम में लेवें।

यन्त्र मध्य में कुम्भ स्थापित करे उसमें सर्वोषधी शतावरी दूर्वा अक्षत पल्लव युक्त करें।

यन्त्रार्चन बाद कुछ दूरी पर अष्टदल के मण्डल युक्त आसन पर वीर पुरुष को बैठाकर उस कुम्भ के जल से मृत्युञ्जय कवचादि मन्त्रों से अभिषेक कर मृत्युञ्जय मन्त्र की दीक्षा प्रदान करें।

॥ अमृतेश्वरी मन्त्र प्रयोगः॥

पुरुष देवता के साथ उसकी शक्ति देवता का पूजन करने से पूर्णाङ्ग होता है। स्त्री देवता के साथ पुरुष देवता का पूजन अर्चन भी आवश्यक है।

यदि पुरुष देवता के एक लक्ष जप किये जाये तो उसके दशांश जप (दस हजार) उसकी स्त्री देवता के करने आवश्यक है। अतः मृत्युञ्जय प्रयोग के साथ अमृतेश्वरी देवी का पूजन अर्चन व जप किया जाय तभी पूर्णाङ्ग होगा।

श्रीभुवनेश्वरी महास्तोत्र में श्रीपृथ्वीधराचार्य ने मन्त्रोद्धार इस प्रकार किया है।

श्रीमृत्युञ्जयनामधेय भगवच्चैतन्य चन्द्रात्मिके
ह्रींङ्कारि प्रथमा तमांसि दलय त्वं हंससञ्जीविनि ।
जीवं प्राणविजृम्भमाण हृदयग्रंथिस्थितं मे कुरु
त्वां सेवे निजबोधलाभरभसा स्वाहा भजामीश्वरीम् ॥

मन्त्र ॐ श्रीं ह्रीं मृत्युञ्जये भगवति चैतन्य चन्द्रे हंससञ्जीवनी स्वाहा।

ध्यानम् –

जाग्रद बोधसुधामयूखनिचयैराप्लाव्य सर्वादिशो,
यस्याः कापि कला कलङ्करहिता षट्चक्रमाक्रार्मति ।
दैन्यध्वान्तविदारणैकचतुरा वाचं परां तन्वती,
या नित्या भुवनेश्वरी विहरतां हंसीव मन्मानसे ॥

यही पृथ्वीधराचार्य ने यन्त्रोद्धार दिया है :

व्योमेन्दो रसनार्णकर्णिकमचां द्वन्द्वै स्फुरत्केसरं,
पत्रान्तर्गत पञ्चवर्ग यशलार्णादि त्रिवर्ग क्रमात् ।
आशास्वस्त्रिषु लान्तलाङ्गलियुजा क्षोणीपुरेणावृतं,
वर्णाब्जं शिरसि स्थितं विषगद प्रध्वंसि मृत्युञ्जयेत् ॥

उपरोक्त यन्त्र में वर्णादि लिखकर पूजाकर धारण करने से शुभ रहे।

॥ चित्रविद्या अमृतेश्वरी प्रयोगः॥

मृत्युञ्जय प्रयोग के साथ इसका प्रयोग करने से प्रयोग सफल होकर लाभ मिलता है।

विनियोगः ॐ अस्य श्री चित्रविद्या अमृतेश्वरी मंत्रस्य संवर्त्तकऋषिः, शक्करी छन्दः, चित्रविद्या अमृतेश्वरी देवता, ठं बीजं, सूं शक्ति, इष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यासः - ठां, ठीं, ठूं, ठें, ठौं, ठः से क्रमशः न्यास करें।

ध्यानम्–

अमलकमलमध्ये चन्द्रपीठे निषण्णाम–
मृतकलश वीणा भिन्न मुद्राग्र हस्ताम् ।
प्रणतशिरसि पूरं संस्रवन्तीं सुधायाः
शरणमहमुपैमि श्री शिवां चित्रविद्याम् ॥

मंत्र : वं सं ज्झूं ज्झूं जूं ठं ह्रीं श्रीं श्री भगवति चित्रविद्ये महामाये अमृतेश्वरि एह्येहि वरे वरदे प्रसन्न वदने अमृतं स्रावय स्रावय अनलं शीतल कुरु कुरु सर्वविष- नाशय नाशय सर्वताप ज्वरं हन हन सर्वपैत्योन्मादं मोचय मोचय

आज्योस्थ शमय शमय सर्वजनं मोहय मोहय मां पालय पालय श्रीं ह्रीं ठं जृं ज्झूं ज्झूं सं वं स्वाहा।

ह्रीं श्रीं का मन में स्मरण कर साध्य का ध्यान करें एवं अमृतकलश से मिञ्चित होने का ध्यार करें।

किसी के पैत्योन्माद होवे तो साध्यनाम की जगह यंत्र में उसका नाम लिखें। मूल मंत्र के दस हजार जप करें। यंत्र को गुड़ की गुटिका बनाकर खिला देवे। प्रधान देव की पूजा में रखें अमृतकलश से साध्य का सिंचन करे लाभ होवे। जब कामना हेतु प्रयोग नहीं करना होवे तो साध्यनाम बिना लिखे यंत्र का पूजन जप करें।

॥ मृत्युञ्जयमन्त्र होम द्रव्याणी ॥

दशद्रव्यैः (मन्त्रमहोदधौ)

प्रजुहुयात्तानि बिल्वफलं तिलाः॥ १॥ पायसं सर्षपा दुग्धं दधि दूर्वा च सप्तमी॥ वटात्पलाशात्खदिरात्समिधो मधुरप्लुताः॥ २॥ एवं कृते प्रयोगार्हो जायतेऽयं महामनुः॥ जन्मभे दशमे तस्मात्पुनश्चैकोनविंशके ॥ ३॥ जुहुयाद्यः सुधावल्याः समिधश्चतुरंगुलाः ॥ स रोगान् सकलाच्छशत्रून् पराभूय श्रिया युतः ॥ ४॥ मोदते पुत्रपौत्राद्यैः शतवर्षाणि साधकः॥ समिद्भिः श्रीफलोत्थाभिर्होमः संपत्तिसिद्‌ध्ये ॥५॥ पलाशतरुजाभिस्तु ब्रह्मवर्चससिद्धये॥ वटोत्थाभिर्धनप्राप्त्यै खादिराभिस्तु कांतये ॥ ६॥ तिलैरधर्मनाशाय सर्षपैः शत्रुनष्टये ॥ पायसेन कृतो होमः कांति श्रीकीर्तिदायकः ॥ ७॥ कृत्वा मृत्युक्षयाकरो दध्ना संवादसिद्धिदः॥ होमसंख्या तु सर्वत्रायुतमानेन कीर्तिता ॥ ८॥ अष्टोत्तरशतं दूर्वात्रिकहोमाद्रुजां क्षयः ॥ स्वजन्मदिवसे यस्तु प्रायसैर्मधुरान्वितैः ॥ ९॥ जुहोति तस्य वर्द्धन्ते कुमलारोग्यकीर्तयः॥ गुडूचीबकुलोत्थभिः समिद्भिर्हवनं नृणाम् ॥ १०॥ जन्मतारात्रयेरोगं मृत्युं चापि विनाशयेत्॥ प्रत्यहं जुहुयाद्दूर्वा अपमृत्युविनष्टये ॥ ११॥ किं बहूक्तेन सर्वेष्टं प्रयच्छति शिवो नृणाम् ॥ अपामार्गसमिद्भिश्च सिद्धान्नैर्ज्वरनष्टये ॥ दुग्धाक्तैरमृताखंडैर्मासं होमोऽखिलाप्तये॥"

सुधावल्ली - (गुडूची, कश्मरी एवं बकुल) की चार अंगुल की समिधाओं का हवन पुरश्चरण में अथवा अपने जन्म नक्षत्र से १० वें या २१ वें नक्षत्र में करें तो रोग, शोक शत्रु का नाश होकर सम्पत्ति को प्राप्त करता है। वंश वृद्ध होवे। तीन पत्तों वाली दूर्वा के होम से आयुवृद्धि होवे। धनप्राप्ति हेतु श्रीफल बिल्वफल एवं

बरगद की समिधाओं से हवन करें। पलाश समिध में वाकसिद्धि, ब्रह्मवर्चस्व वृद्धि, खदिर समिध से कान्तिवृद्धि, सरसों के होम से शत्रुनाश, तिलों के होम से अधर्मनाश व शत्रुनाश होवे।

खीर के होम से कांन्ति कीर्ति व लक्ष्मी की प्राप्ति होवें। दही के होम से शत्रुकृत प्रेतादिविघ्ननाश होवे तथा अपमृत्युनाश होवें। त्रिमधु (घी, मधु, शर्करा) मिश्रित खीर के होम से आरोग्य कीर्ति व लक्ष्मी का विस्तार होवे। अपामार्ग के होम से ज्वर नाश होवे तथा अभिलषित प्राप्ति हेतु दुग्ध में डुबोये गये गिलोय के टुकड़ों से एक मास पर्यन्त हवन करना चाहिये।

॥ महामृत्युञ्जय कवचम् ॥

विनियोगः :- ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जय कवचस्य श्रीभैरवऋषिः गायत्री छन्दः श्रीमृत्युञ्जय रुद्रो देवता ॐ बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं हौमिति तत्त्वं श्री चतुर्वर्गफल साधनाय पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः :- श्रीभैरव ऋषये नमः (शिरसि), गायत्रीछन्दसे नमः (मुखे), श्रीमृत्युञ्जयरुद्र देवतायै नमः (हृदये), ॐ बीजाय नमः (गुह्ये), जूं शक्तये नमः (पादयोः), सः कीलकाय नमः (नाभौ), हौंतत्त्वाय नमः (हृदि), विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)।

कर षडङ्गादिन्यासः :- ॐ हौं जूं सः इस मंत्र से कर एवं हृदयादि षड़ङ्गन्यास करे।

ध्यानम् :-

चन्द्रमण्डल मध्यस्थे रुद्रमाले विचित्रिते ।
तत्रस्थं चिन्तयेत् साध्यं मृत्यु प्राप्तोऽपि जीवति ॥१॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ जूं सः हौं शिरः पातु देवो मृत्युञ्जयो मम ।
श्रीशिवो वै ललाटं च ॐ हौं भ्रुवौ सदाशिवः ॥२॥
नीलकण्ठोऽवतान्नेत्रे कपर्द्दी मेवताच्छ्रुती ।
त्रिलोचनोऽवताद् गण्डौ नासां मे त्रिपुरान्तकः ॥३॥
मुखं पीयूषघटभृदोष्ठौ मे कृत्तिकाम्बरः ।
हनुं मे हाटकेशानो मुखं बटुकभैरवः ॥४॥

कन्धरां कालमथनो गलं गणप्रियोऽवतु।
स्कन्धौ स्कन्दपिता पातु हस्तौ मे गिरिशोऽवतु ॥५॥
नखान् मे गिरिजानाथः पायादङ्गुलिसंयुतान्।
स्तनौ तारापतिः पातुः वक्षः पशुपतिर्मम ॥६॥
कुक्षि कुबेरवरदः पार्श्वौ मे मारशासनः।
शर्वः पातु तथा नाभिं शूली पृष्ठं ममावतु ॥७॥
शिश्नं मे शङ्करः पातु गुह्यं गुह्यकवल्लभः।
कटिं कालान्तकः पायादूरू मेऽन्धकघातकः ॥८॥
जागरूकोऽवताज्जानू जङ्घे मे कालभैरवः।
गुल्फौ पायाज्जटाधारी पादौ मृत्युञ्जयोऽवतु ॥९॥
पादादिमूर्धपर्यन्तं सद्योजातो ममावतु।
रक्षाहीनं नामहीनं वपुः पात्वमृतेश्वरः ॥१०॥
पूर्वं बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः।
पश्चिमे पार्वतीनाथ उत्तरे मां मनोन्मनः ॥११॥
ऐशान्यामीश्वरः पायादाग्नेय्याममग्निलोचनः।
नैर्ऋत्यां शम्भुरव्यान्मां वायव्यां वायुवाहनः ॥१२॥
ऊर्ध्वे बलप्रमथनः पाताले परमेश्वरः।
दश दिक्षु सदा महामृत्युञ्जयश्च माम् ॥१३॥
रणे राजकुले द्यूते विषये प्राणसंशये।
पायादों जूं महारुद्रो देवदेवो दशाक्षरः ॥१४॥
प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु।
सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्यचेतनः ॥१५॥
अर्द्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोदयः।
सर्वदा सर्वतः पातु ॐ जूं सः हौं मृत्युञ्जयः ॥१६॥

॥ फलश्रुति ॥

इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।
सर्वमन्त्रमयं गुह्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ॥१७॥
पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवेदेवाधिदैवतम्।
य इदं च पठेन्मन्त्रं कवचं वाचयेत्ततः ॥१८॥

तस्य हस्ते महादेवि! त्र्यम्बकस्याष्टसिद्धयः ।
रणे धृत्वा चरेद् युद्धं हत्वा शत्रून् जयं लभेत् ॥१९॥
जयं कृत्वा गृहं देवि! स प्राप्स्यति सुखं पुनः ।
महाभये महारोगे महामारी भये तथा ॥२०॥
दुर्भिक्षे शत्रुसंहारे पठेत् कवचमादरात् ।

॥ इति महामृत्युञ्जय कवचम् ॥

॥ श्रीमहामृत्युञ्जय सहस्त्रनाम स्तोत्रम् ॥

विनियोग : अस्य श्रीमहामृत्युञ्जय सहस्त्रनाम स्तोत्रस्य भैरवऋषिरुष्णिक् छन्दः श्रीमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता। ॐ बीजं जुं शक्तिः सः कीलकं मम सर्वविधरोगादिशमनपूर्वकं दीर्घायुः प्राप्तये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- भैरवऋषये नमः (शिरसि), उष्णिक्छन्दसे नमः (मुखे), श्रीमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः (हृदये), ॐ बीजाय नमः (गुह्ये), जुं शक्तये नमः (पादयोः), सः कीलकाय नमः (नाभौ) विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-हृदयादिन्यासः :- ॐ (अंगु० हृदयाय नम०), जूं (तर्जनी० शिरसे०), सः (मध्यमा० शिखायै०) ॐ (अना० कवचाय०), जूं (कनि० नेत्र०), सः (कर० अस्त्राय०)

ध्यानम् :–

उद्यच्चन्द्र समानदीप्तिममृतानन्दैकहेतुं शिवं,
ॐ जूं सः भुवनैकसृष्टिप्रलयोद् भूतैकरक्षाकरम् ।
श्रीमत्तारदशार्णमण्डिततनुं त्र्यक्षं द्विबाहुं परं,
श्रीमृत्युञ्जयमीड्य विक्रमगुणैः पूर्ण हृदयाब्जे भजे ॥

॥ भैरव उवाच ॥

ॐ जूं सः हौं महादेवो मन्त्रेशो मन्त्रनायकः ।
मानी मनोरमाङ्गश्च मनस्वी मानवर्धनः ॥१॥
मायाकर्ता मल्लरूपो मल्लमारान्तको मुनिः ।
महेश्वरो महामान्यो मन्त्री मन्त्रजनप्रियः ॥२॥

मारुतो मरुतां श्रेष्ठो मासिकः पाक्षिकोऽमृतः ।
मातङ्गो मात्तचित्तो मत्तचिन्मत्तभावनः ॥३॥
मानवेष्टप्रदो मेशो मानकीपति वल्लभः ।
मानकायो मधुस्तेयी मारयुक्तो जितेन्द्रियः ॥४॥
जयो विजयदो जेता जयेशो जयवल्लभः ।
डामरेशो विरूपाक्षो विश्वभक्तो विभावसुः ॥५॥
विश्वेशो विश्वतातश्च विश्वसूर्विश्वनायकः ।
विनीतो विनयी वादी वान्तदो वाग्भवो वटुः ॥६॥
स्थूलः सूक्ष्मश्चलो लोलो ललज्जिह्वाकरालकः ।
वीरध्येयो विरागीणो विलासी लास्यलालसः ॥७॥
लोलाक्षो ललधीर्धर्मी धनदो धनदार्चितः ।
धनी ध्येयोऽप्यध्येयश्च धर्मी धर्ममयोदयः ॥८॥
दयावान् देवजनको देवसेव्यो दयापतिः ।
दुर्णिचक्षुर्दरीवासो दम्भी देवदयात्मकः ॥९॥
कुरूपः कीर्तिदः कान्तः क्लीबः क्लीबात्मकः कुजः ।
बुधो विद्यामयः कामी कामकालान्धकान्तकः ॥१०॥
जीवो जीवप्रदः शुक्रः शुद्धः शर्मप्रदोऽनघः ।
शनैश्चरो वेगगतिर्वाचालो राहुरव्ययः ॥११॥
केतु राकापतिः कालः सूर्योऽमितपराक्रमः ।
चन्द्रो भद्रप्रदो भास्वान् भाग्यदो शर्वरूपभृत् ॥१२॥
कूर्तो धूर्तो वियोगी च संगी गङ्गाधरो गजः ।
गजाननप्रियो गीतो ज्ञानी स्नानार्चनः प्रियः ॥१३॥
परमः पीवराङ्गश्च पार्वती बल्लभो महान् ।
परात्मको विराड्वास्यो वानरोऽमितकर्मकृत् ॥१४॥
चिदानन्दी चारुरूपो गारुडो गरुडप्रियः ।
नन्दीश्वरो नयो नागो नागालङ्कारमण्डितः ॥१५॥
नागहारो महानागी गोधरो गोपतिस्तपः ।
त्रिलोचनस्त्रिलोकेश स्त्रिमूर्तिस्त्रिपुरान्तकः ॥१६॥

त्रिधामयो लोकमयो लोकैकव्यसनापहः ।
व्यसनी तोषितः शम्भुस्त्रिधारूपस्त्रिवर्णभाक् ॥१७॥
त्रिज्योतिस्त्रिपुरीनाथस्त्रिधाशान्तिस्त्रिधा गतिः ।
त्रिधा गुणी विश्वकर्ता विश्वभर्ता त्रिपुरुषः ॥१८॥
उमेशो वासुकिर्वीरो वैनतेयो विचारकृत् ।
विवेकाक्षो विशालाक्षो विधिर्विधिरनुत्तमः ॥१९॥
विद्यानिधिः सरोजाक्षो निःस्मरः स्मरशासनः ।
स्मृतिदः स्मृतिमान् स्मार्तो ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ॥२०॥
ब्राह्मी व्रती ब्रह्मचारी चतुरश्चतुराननः ।
चलाचलोऽचलगतिर्वेगी वीराधिपोऽपरः ॥२१॥
सर्ववासः सर्वगतिः सर्वमान्यः सनातनः ।
सर्वव्यापी सर्वरूपः सागरश्च समेश्वरः ॥२२॥
समनेत्रः समद्युतिः समकायः सरोवरः ।
सरस्वान् सत्यवाक् सत्यः सत्यरूपः सुधीः सुखी ॥२३॥
स्वराट् सत्यः सत्यमती रुद्रो रुद्रवपुर्वसुः ।
वसुमान् वसुधानाथो वसुरूपो वसुप्रदः ॥२४॥
ईशानः सर्वदेवानामीशानः सर्वबोधिनाम् ।
ईशोऽवशेषोऽवयवी शेषशायी श्रियः पतिः ॥२५॥
इन्द्रश्चन्द्रावतंसी च चराचरजगत्पतिः ।
स्थिरः स्थाणुरणुः पीनः पीनवक्षाः परात्परः ॥२६॥
पीनरूपो जटाधारी जटाजूटसमाकुलः ।
पशुरूपः पशुपतिः पशुज्ञानी पयोनिधिः ॥२७॥
वेद्यो वैद्यो वेदमयो विधिज्ञो विधिमान् मृदुः ।
शूली शुभङ्कर शोभ्यः शुभकर्ता शचीपतिः ॥२८॥
शशाङ्कधवलः स्वामी वज्री शङ्खी गदाधरः ।
चतुर्भुजश्चाष्टभुजः सहस्रभुज मण्डित ॥२९॥
स्रुवहस्तो दीर्घकेशो दीर्घो दम्भविवर्जितः ।
देवो महोदधिर्दिव्यो दिव्यकीर्तिर्दिवाकरः ॥३०॥

उग्ररूपश्चोग्रपतिरुग्र - वक्षास्तपोमयः ।
तपस्वी जटिलस्तापी तापहा तापवर्जितः ॥३१॥
हरिद्धयो हयपतिर्हयदो हरिमण्डितः ।
हरिवाही महौजस्को नित्यौ नित्यात्मकोऽनलः ॥३२॥
समानी संसृतिस्त्यागी सङ्गी सन्निधिरव्ययः ।
विद्याधरो विमानी वैमानिक वरप्रदः ॥३३॥
वाचस्पति वमासारी वामाचारी बलन्धरः ।
वाग्भवो वासवो वायुर्वासनाबीजमण्डितः ॥३४॥
वाग्मी कौलश्रुतिर्दक्षो दक्षयज्ञविनाशनः ।
दक्षो दौर्भाग्यहा दैत्यमर्दनो भोगवर्धनः ॥३५॥
भोगी रोगहरो योगी हारी हरिविभूषणः ।
बहुरूपो बहुमतिर्वङ्गवित्ती विचक्षणः ॥३६॥
नृत्तकृच्चित्तसन्तोषी नृत्यगीतविशारदः ।
शरदवर्णविभूषाढ्यो गलदग्धोऽघनाशनः ॥३७॥
लागी नागमयोऽनन्तोऽनन्तरूपः पिनाकभृत् ।
नटलो कारकेशानो वरीयान् वै विवर्णभृत् ॥३८॥
साङ्कारष्टङ्कहस्तश्च पाशीशार्ङ्गः शशिप्रभः ।
सहस्त्ररूपी समगुः साधूनामभयप्रदः ॥३९॥
साधुसेव्यः साधुगतिः सेवाफलप्रदो विभुः ।
स्वमहो मध्यमो मत्तो मन्त्रमूर्तिः सुमन्तकः ॥४०॥
कीलालीलाकरो लूतो भवबन्धैकमोचनः ।
रेचिष्णुर्विच्युतरतोऽमृतनो नूतनो नथः ॥४१॥
न्यग्रोधरूपो भयदो भयहारीतिधारणः ।
धरणीधरसेव्यश्च धराधरसुतापतिः ॥४२॥
धराधरोऽन्धकरिपुर्विज्ञानी मोहवर्जितः ।
स्थाणुः केशो जटी ग्राम्यो ग्रामारामो रमाप्रियः ॥४३॥
प्रियकृत प्रियरूपश्च विप्रयोगी प्रतापनः ।
[illegible] प्रभा[illegible]मो मनमान् मानवेश्वरः ॥४४॥

तीक्ष्णबाहुस्तीक्ष्णकरस्तीक्ष्णांशुस्तीक्ष्णलोचनः ।
तीक्ष्णचित्तस्त्रयीरूपस्त्रयीमूर्तिस्त्रयी तनुः ॥४५॥
हविर्भुग् हविषां ज्योतिर्हालाहलो हलीपतिः ।
हविष्मल्लोचनो हालामयो हरिणरूपभृत् ॥४६॥
भ्रदिमाभ्रमयो वृक्षो हुताशो हुतभुग् गुणी ।
गुणज्ञो गरुडो गानतत्परो विक्रमी गुणी ॥४७॥
क्रमेश्वरः क्रमकरः कृमिकृत् क्लान्तमानसः ।
महातेजा महामारी मोहितो मोहवल्लभः ॥४८॥
मनस्वी त्रिदशो बालो वाल्यापतिरघापहः ।
बाल्यो रिपुहरो हार्यो गविर्गविमतो गुणः ॥४९॥
सगुणो वित्तराट् गेयो विरोचनो विभावसुः ।
मालामयो माधवश्च विकर्तनोऽविकत्थनः ॥५०॥
मानकृन्मुक्तिदोऽमूल्यः साध्यः शत्रुभयङ्करः ।
हिरण्यरेताः शुभगः सतीनाथः सुरापतिः ॥५१॥
मेढ़ो मैनाकभगिनीपतिरुत्तमरूपभृत् ।
आदित्यो दितिजेशानो दितिपुत्रः क्षयङ्करः ॥५२॥
वासुदेवो महाभाग्यो विश्वावसुर्वसुप्रियः ।
समुद्रोऽमिततेजश्च खगेन्द्रो विशिखी शिखी ॥५३॥
गुरुत्मान् वज्रहस्तश्च पौलोमीनाथ ईश्वरः ।
यज्ञिपेयो वाजपेयः शतिक्रतुः शताननः ॥५४॥
प्रतिष्ठस्तीव्रविस्त्रम्भी गम्भीरो भाववर्धनः ।
मायिष्ठो मधुरालापो मधुमत्तश्च माधवः ॥५५॥
मायात्मा भोगिनां त्राता नाकिनामिष्टदायकः ।
नाकेन्द्रो जनको जन्यस्तम्भनो रम्भनाशनः ॥५६॥
ईशान ईश्वर ईशः शर्वरीपति शेखरः ।
लिङ्गाध्यक्षः सुराध्यक्षो वेदाध्यक्षो विचारकः ॥५७॥
भव्योऽनर्घो नरेशानो नरकान्तकरूवितः ।
चतुरो भविता भावी विरामो रात्रिवल्लभः ॥५८॥

मङ्गलो धरणीपुत्रो धन्यो बुद्धि विवर्धनः ।
जयो जीवेश्वरो जारो जाठरो जह्नुतापनः ॥५९॥
जह्नुकन्याधरः कल्पो वामगे मास एव च ।
कर्तुर्ऋभुसुताध्यक्षो विहारो विहगापतिः ॥६०॥
शुक्लाम्बरो नीलकण्ठः शुक्लो भृगुसुतो भगः ।
शान्तः शिवप्रदो भव्यो भेदकृच्छान्तकृत्पतिः ॥६१॥
नाथो दान्तो भिक्षुरूपो धन्यश्रेष्ठो विशाम्पतिः ।
कुमारः क्रोधनः क्रोधी विरोधि विग्रही रसः ॥६२॥
नीरसः सुरसः सिद्धो वृषणी वृषघातनः ।
पञ्चास्यः षणमुखश्चैव विमुखः सुमुखी प्रियः ॥६३॥
दुर्मुखो दुर्जयो दुःखी सुखी सुखविलासदः ।
पात्री पौत्री पवित्रश्च भूतोक्त पूतनान्तकः ॥६४॥
अक्षरं परमं तत्त्वं बलवान् बलघातनः ।
भल्ली मौलिभवाभावो भावाभावविमोचनः ॥६५॥
नारायणो युक्तकेशो दिग्देवो धर्मनायकः ।
कारामोक्षप्रदो जेयो महाङ्ग सामगायनः ॥६६॥
उत्सङ्गमो नामकारी चारी स्मरनिषूदनः ।
कृष्णः कृष्णाम्बरः स्तुत्यस्तारावर्णस्त्रयाकुलः ॥६७॥
त्रियामा दुर्गतित्राता दुर्गमो दुर्गघातकः ।
महानेत्रो महाधाता नानाशस्त्रविचक्षणः ॥६८॥
महामूर्धा महादन्तो महाकर्णो महोरगः ।
महाचक्षुर्महानाशो महाग्रीवो दिगालयः ॥६९॥
दिग्वासा दितिजेशानो मुण्डी मुण्डाक्षसूत्रधृत् ।
स्मशाननिलियो रागी महाकटिरनूतनः ॥७०॥
पुराणपुरुषः पारम्परमात्मा महाकरः ।
महालस्यो महाकेशो महेशो मोहनो विराट् ॥७१॥
महासुखो महाजङ्घो मण्डली कुण्डली नटः ।
असपत्न्यः पत्रकरः पत्रहस्तश्च पाटवः ॥७२॥

लालसः सालसः सालः कल्पवृक्षश्च कल्पितः ।
कल्पहा कल्पनाहारी महाकेतुः कठोरकः ॥७३॥
अनलः पवनः पाठः पीठस्थ पीठरूपकः ।
पाठीनः कुलसी पीनो मेरुधामा महागुणी ॥७४॥
महातूणीरसंयुक्तो देवदानवदर्पहा ।
अथर्वशेषः सौम्यास्य ऋक्सहस्त्रामितेक्षणः ॥७५॥
यजुः साममुखो गुह्यो यजुर्वेदविचक्षणः ।
याज्ञिको यज्ञरूपश्च यज्ञो वै धरणीपतिः ॥७६॥
जङ्गमी भङ्गदी भासा दक्षाभिगमदर्शनः ।
अगम्यः सुगमः खर्व खेटी खेटाननो नयः ॥७७॥
अमोघार्थः सिन्धुपतिः सैन्धवः सानुमध्यगः ।
विकालज्ञः सगणकः पुष्करस्थः परोपकृत् ॥७८॥
उपकर्ताऽपकर्ता च घृणी रणभयप्रदः ।
धर्मा चर्माम्बरश्चारूरूपश्चारु विभूषणः ॥७९॥
नक्तञ्चरः कायवशी वशी वशिवशो वशः ।
वश्या वश्यकरो भस्मशायी भस्मविलेपनः ॥८०॥
भस्माङ्गी मलिनाङ्गश्च मालामण्डितमूर्धजः ।
गणकार्यः कुलाचारः सर्वाचारः सखा समः ॥८१॥
मकरो गोत्रभिद् गोप्ता भीमरूपो भयानकः ।
अरुणश्सचैकवित्तश्च त्रिशङ्कुः शङ्कुधारणः ॥८२॥
आश्रमी ब्राह्मणो वज्री क्षत्रियः कार्यहेतुकः ।
वैश्यः शूद्रः कपोतस्थस्त्वरुष्टोऽथ रुषाकुलः ॥८३॥
रोगी रोगापहा शूरः कपिलः कपिनायकः ।
पिनाकीचाष्टमूर्तिश्च क्षितिमान् धृतिमांस्तथा ॥८४॥
जलमूर्तिर्वायुमूर्तिर्गताशः सोममूर्तिमान् ।
सूर्यदेवो यजमान आकाशः परमेश्वरः ॥८५॥
भवहा भवमूर्तिश्च भूतात्मा भूतभावनः ।
भवः शर्वस्तथा रुद्रः पशुनाथश्च शङ्करः ॥८६॥

गिरिजो गिरिजानाथो गिरिन्द्रश्च महेश्वरः ।
भीम ईशान भीतिज्ञः खण्डपश्चण्डविक्रमः ॥८७॥
खण्डभृत् खण्डपरशुः कृत्तिवासा वृषापहः ।
कङ्काल कलनाकार श्रीकण्ठो नीललोहितः ॥८८॥
गुणीश्वरो गुणी नन्दी धर्मराजौ दुरन्तकः ।
भृङ्गरीटी रसासारी दयालु रूपमण्डितः ॥८९॥
अमृतः कालरुद्रश्च कालाग्निः शशिशेखरः ।
त्रिपुरान्तक ईशानस्त्रिनेत्रः पञ्चवक्त्रकः ॥९०॥
कालहृत् केवलात्मा च ऋग्यजु सामवेदवान् ।
ईशानः सर्वभूतानामीश्वरः सर्वरक्षसाम् ॥९१॥
ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्म ब्रह्मणोऽधिपतिस्था ।
ब्रह्मा शिवः सदानन्दी सदानन्दः सदाशिवः ॥९२॥
मेषस्वरूपश्चार्वङ्गो गायत्रीरूपधारणः ।
अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्या घोरघोरतराय च ॥९३॥
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्र रूपिणे ।
वामदेवस्तथा ज्येष्ठः श्रेष्ठः कालकराकलः ॥९४॥
महाकालो भैरवेशो वेशा कलविकारणः ।
बलविकारणो बालो बलप्रमथनस्तथा ॥९५॥
सर्वभूतादिदमनो देवदेवो मनोन्मनः ।
सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः ॥९६॥
भवे भवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवः ।
भवनो भावनो भाव्यो बलकारी परःपदम् ॥९७॥
परः शिवः परो ध्येयः परं ज्ञानं परात्परः ।
परावरः पलाशी च मांसाशी वैष्णवोत्तमः ॥९८॥
ॐ ऐं श्रीं हसौं देवः ॐ ह्रीं हैं भैरवोत्तमः ।
ॐ ह्रां नमः शिवायेति मन्त्रो वटुवरायुधः ॥९९॥
ॐ ह्रौं सदाशिवः ॐ ह्रीं आपदुद्धारणो मतः ।
ॐ ह्रीं महाकरालास्य ॐ ह्रीं बटुकभैरवः ॥१००॥

भर्गस्त्रियम्बक ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं चन्द्रार्धशेखरः ।
ॐ ह्रीं सं जटिलो धूम्र ॐ ऐं त्रिपुरघातकः ॥१०१॥
ह्रां ह्रीं हं हरिवामाङ्ग ॐ ह्रीं हं ह्रीं त्रिलोचनः ।
ॐ वेदरूपो वेदज्ञ ऋग्यजुः सामरूपवान् ॥१०२॥
रुद्रो घोररवो घोर ॐ क्षं हं ह्रीं अघोरकः ।
ॐ जूं सः पीयूषसक्तोऽमृताध्यक्षोऽमृतालसः ॥१०३॥
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥१०४॥
ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ जूं सः मृत्युञ्जयः ।
पातु मा सर्वदेवेशो मृत्युञ्जय सदाशिवः ॥१०५॥

॥ अथ सदाशिव कवचम् ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

भगवन्देवदेवेश सर्वाम्नाय प्रपूजित ।
सर्वं मे कथितं देव कवचं न प्रकाशितम् ॥१॥
प्रासादाख्यस्य मंत्रस्य कवचं मे प्रकाशय ।
सर्वरक्षाकरं देव यदि स्नेहोस्ति मां प्रति ॥२॥

विनियोग:- अस्य श्री प्रासादमंत्र कवचस्य वामदेव ऋषिः। पंक्तिच्छन्दः। सदाशिवो देवता। साधकाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

शिरो मे सर्वदा पातु प्रासादाख्यः सदाशिवः ।
षडक्षरस्वरूपो मे वदनं तु महेश्वरः ॥३॥
पञ्चाक्षरात्मा भगवान्भुजौ मे परिरक्षतु ।
मृत्युंजयस्त्रिबीजात्मा आस्यं रक्षतु मे सदा ॥४॥
वटमूलं समासीनो दक्षिणामूर्तिरव्ययः ।
सदा मां सर्वदः पातु षट्त्रिंशार्णस्वरूपधृक् ॥५॥
द्वाविंशार्णात्मको रुद्रो दक्षिणः परिरक्षतु ।
त्रिवर्णात्मा नीलकण्ठः कण्ठं रक्षतु सर्वदा ॥६॥

चिन्तामणि बीजरूपो ह्यर्द्धनारीश्वरो हरः ।
सदा रक्षतु मे गुह्ये सर्वसम्पत्प्रदायकः ॥७॥
एकाक्षर स्वरूपात्मा कूटव्यापी महेश्वरः ।
मार्तण्डभैरवो नित्यं पादौ मे परिरक्षतु ॥८॥
तुम्बुराख्यो महाबीजस्वरूपस्त्रिपुरान्तकः ।
सदा मां रणभूमौ च रक्षतु त्रिदशाधिपः ॥९॥
ऊर्ध्वमूर्द्धानमीशानो मम रक्षतु सर्वदा ।
दक्षिणास्यं तु तत्पुरुषोऽव्यान्मे गिरिनायकः ॥१०॥
अघोराख्यो महादेवः पूर्वास्यं परिरक्षतु ।
वामदेवः पश्चिमास्यं सदा मे परिरक्षतु ॥११॥
उत्तरास्यं सदा पातु सद्योजातस्वरूपधृक् ।
इत्थं रक्षाकरं देवि कवचं देवदुर्लभम् ॥१२॥
प्रातः काले पठेद्यस्तु सोभीष्टं फलमाप्नुयात् ।
पूजाकाले पठेद्यस्तु कवचं साधकोत्तमः ॥१३॥
कीर्तिश्रीकान्तिमेधायुः सहितो भवति ध्रुवम् ।
कण्ठे यो धारयेदेतत्कवचं मत्स्वरूपकम् ॥१४॥
युद्धे च जयमाप्नोति द्यूते वादे च साधकः ।
कवचं धारयेद्यस्तु साधको दक्षिणे भुजे ॥१५॥
देवा मनुष्यगंधर्वा वश्यास्तस्य न संशयः ।
कवचं शिरसा यस्तु धारयेद्यतमानसः ॥१६॥
करस्थास्तस्य देवेशि अणिमाद्यष्टसिद्धयः ।
भूर्जपत्रे त्विमां विद्यां शुक्लपट्टेन वेष्टिताम् ॥१७॥
रजतोदरसंविष्टां कृत्वा वा धारयेत्सुधीः ।
सम्प्राप्य महतीं लक्ष्मीमन्ते मद्देहरूपभाक् ॥१८॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन ।
शिष्याय भक्तियुक्ताय साधकाय प्रकाशयेत् ॥१९॥
अन्यथा सिद्धिहानिः स्योत्सत्यमेतन्मनोरमे ।
तवस्नेहान्महादेवि कथितं कवचं शुभम् ॥२०॥

न देयं कश्यचिद्भद्रे यदीच्छेदात्मनो हितम् ।
योऽर्चयेद् गंधपुष्पाद्यैः कवचं मन्मुखोदितम् ।
तेनार्चिता महादेवि सर्वे देवा न संशयः ।

(इति भैरवतंत्रे सदाशिव कवचं समाप्तम्)

॥ अथ शतनाम स्तोत्रम् ॥

ॐ शिवो महेश्वरः शम्भुः पिनाकी शशिशेखरः ।
वामदेवो विरूपाक्षः कपर्दी नीललोहितः ॥१॥
शंकरः शूलपाणिश्च खट्वाङ्गी विष्णुवल्लभः ।
शिपिविष्टोम्बिकानाथः श्रीकण्ठो भक्तवत्सलः ॥२॥
भवः सर्वस्त्रिलोकेशः शितिकण्ठः शिवाप्रियः ।
उग्रः कपाली कामारिरन्धकासुरसूदनः ॥३॥
गंगाधरो ललाटाक्षः कालकालः कृपानिधिः ।
भीमः परशुहस्तश्च मृगपाणिर्जटाधरः ॥४॥
कैलासवासी कवची कठोरस्त्रिपुरान्तकः ।
वृषाङ्को वृषभारूढो भस्मोद्धूलितविग्रहः ॥५॥
सामप्रियः स्वरमयस्त्रयीमूर्तिरनीश्वरः ।
सर्वज्ञः परमात्मा च सोमसूर्याग्निलोचनः ॥६॥
हविर्यज्ञमयः सोमः पञ्चवक्त्रः सदाशिवः ।
विश्वेश्वरो वीरभद्रो गणनाथः प्रजापतिः ॥७॥
हिरण्यरेता दुर्द्धर्षो गिरिशो गिरिशोऽनघः ।
भुजङ्गभूषणो भर्गो गिरिधन्वा गिरिप्रियः ॥८॥
कृत्तिवासाः पुरारातिर्भगवान्प्रमथाधिपः ।
मृत्युंजयः सूक्ष्मतनुर्जगद्व्यापी जगद्गुरुः ॥९॥
व्योमकेशो महासेनो जनकश्चारुविक्रमः ।
रुद्रो भूतपतिः स्थाणुरहिर्बुध्न्यो दिगम्बरः ॥१०॥
अष्टमूर्तिरनेकात्मा सात्त्विकः शुद्धविग्रहः ।
शाश्वतः खण्डपरशुरजः पाशविमोचकः ॥११॥

मृडः पशुपतिर्द्देवो महादेवोऽव्ययः प्रभुः ।
पूषदन्तभिदव्यग्रो दक्षाध्वर हरो हरः ॥१२॥
भगनेत्रभिदव्यक्तः सहस्त्रक्षः सहस्त्रपात् ।
अपवर्गप्रदोऽनन्तस्तारकः परमेश्वरः ॥१३॥
इमानि दिव्यनामानि जप्यन्ते सर्वदा मया ।
नामकल्पलतेयं मे सर्वाभीष्ट प्रदायिनी ॥१४॥
नामान्येतानि सुभगे शिवदानि न संशयः ।
वेदसर्वस्वभूतानि नामान्येतानि वस्तुतः ॥१५॥
एतानि यानि नामानि तानि सर्वार्थदान्यतः ।
जप्यन्ते सादरं नित्यं मया नियमपूर्वकम् ॥१६॥
वेदेषु शिवनामानि श्रेष्ठान्यघहराणि च ।
सन्त्यनन्तानि सुभगे वेदेषु विविधेष्वपि ॥१७॥
तेभ्यो नामानि संगृह्य कुमाराय महेश्वरः ।
अष्टोत्तर सहस्त्रं तु नाम्नामुपदिशत्पुरा ॥१८॥

॥ इति शिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीशिव मालामन्त्रः॥

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय। त्र्यम्बक सदाशिव! नमस्ते नमस्ते् । ॐ ह्रीं ह्रीं लूं अः अं एं ऐं महाघोरेशाय नमः। ह्रीं ॐ ह्रौं शं नमो भगवते सदाशिवाय।

सकल तत्त्वात्मकाय, आनन्द-सन्दोहाय, सर्वमन्त्र स्वरूपाय, सर्वयन्त्राधिष्ठिताय , सर्वतन्त्रप्रेरकाय, सर्वतत्त्वविदूराय, सर्व तत्त्वाधिष्ठिताय, ब्रह्मरुद्रावतारिणे, नीलकण्ठाय, पार्वतीमनोहरप्रियाय, महारुद्राय, सोमसूर्याग्नि लोचनाय, भस्मोद्धूलित-विग्रहाय अष्टगन्धादि गन्धोप शोभिताय शेषाधिप-मुकुटभूषिताय, महामणिमुकुट धारणाय , सर्पालङ्काराय, माणिक्यभूषणाय, सृष्टिस्थितिप्रलय काल रौद्रावताराय, दक्षाध्वर ध्वंसकाय, महाकाल भेदनाय, महाकालाधिकालोग्र रूपाय, मूलाधारैकनिलयाय।

तत्त्वातीताय, गङ्गाधराय, महाप्रपात विषभेदनाय, महाप्रलयान्तनृत्याधिष्ठिताय, सर्वदेवाधिदेवाय, षडाश्रयाय, सकलवेदान्त साराय, त्रिवर्गसाधनायानन्त-कोटि -ब्रह्माण्ड नायकायानन्त वासुकि तक्षक कर्कोटक शङ्ख कुलिक

पद्ममहापद्मेत्यष्ट महानागकुल भूषणाय प्रणवस्वरूपाय। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः, ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः।

चिदाकाशायाकाशादि दिक् स्वरूपाय, ग्रहनक्षत्रादि सर्वप्रपञ्च मालिने, सकलाय, कलङ्क रहिताय, सकललोकैक-कर्त्रे, सकल लोकैक-भर्त्रे,सकल लोकैक-संहर्त्रे, सकल लोकैक-गुरवे,सकल लोकैक-साक्षिणे, सकलनिगम गुह्याय, सकलवेदान्त पारगाय, सकल लोकैकवरप्रदाय, सकल-लोकैक सर्वदाय, शर्मदाय, सकललोकैक शङ्कराय।

शशाङ्कशेखराय, शाश्वत निजावासाय, निराभासाय, निराभयाय, निर्मलाय, निर्लोभाय, निर्मदाय, निश्चिन्ताय, निरहङ्काराय, निरंकुशाय, निष्कलङ्काय, निर्गुणाय, निष्कामाय, निरुपलवाय, निरवद्याय, निरन्तराय, निष्कारणाय, निरातङ्काय, निष्प्रयप्रकाय, निःसङ्गाय, निर्द्वन्द्वाय, निराधाराय, नीरागाय, निष्क्रोधाय, निर्मलाय, निष्पापाय, निर्भयाय, निर्विकल्पाय, निर्भेदाय, निष्क्रियाय, निस्तुलाय, निःसंशयाय निरञ्जनाय, निरुपमविभवाय, नित्यशुद्ध बुद्धपरिपूर्ण सच्चिदानन्दाद्वयाय ॐ हसौं ॐ हसौंः ह्रीं सौं क्षमलक्लीं क्षमलइस्फ्रिं ऐं क्लीं सौः क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः।

परमशान्तस्वरूपाय, सोहं तेजोरूपाय, हंसतेजोमयाय, सच्चिदेकं ब्रह्ममहामन्त्र स्वरूपाय, श्रीं ह्रीं क्लीं नमो भगवते विश्वगुरवे, स्मरण मात्रसन्तुष्टाय, महाज्ञान प्रदाय, सच्चिदानन्दात्मने महायोगिने सर्वकामफलप्रदाय, भवबन्धप्रमोचनाय, क्रों सकलविभूति दाय, क्रीं सर्वविश्वाकर्षणाय।

जय जय रुद्र, महारौद्र, वीरभद्रावतार, महाभैरव, कालभैरव, कल्पान्त भैरव, कपालमालाधर, खट्वाङ्ग खड्ग चर्म पाशांकुश डमरुशूल चाप वाण गदा शक्ति भिन्दिपालतोमर मुसल मुद्गर पाश वज्र परिघ भुशुण्डी शतघ्नी ब्रह्मास्त्र पाशुपतास्त्रादि महास्त्र चक्रायुधाय।

भीषणकर, सहस्त्रमुख दंष्ट्राकराल वदन, विकटाट्टहास, विस्फारित ब्रह्माण्डमण्डल, नागेन्द्रकुण्डल, नागेन्द्रहार, नागेन्द्रवलय, नागेन्द्रचर्मधर, मृत्युञ्जय, त्र्यम्बक, त्रिपुरान्तक, विश्वरूप, विरूपाक्ष, विश्वम्भर, विश्वेश्वर, वृषभवाहन, वृषविभूषण, विश्वतोमुख! सर्वतो मां रक्ष रक्ष, ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल, स्फुर स्फुर, आवेशय आवेशय, मम हृदये प्रवेशय प्रवेशय, प्रस्फुर प्रस्फुर।

महामृत्युमपमृत्युभयं नाशय नाशय, चोरभयमुत्सादयोत्सादय, विषसर्पभयं

शमय शमय, चौरान् मारय् मारय्, मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय, मम क्रोधादि सर्व सूक्ष्म तमात् स्थूलतम पर्यन्त स्थितान् शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय, त्रिशूलेन विदारय विदारय, कुठारेण भिन्धि भिन्धि, खड्गेन छिन्धि छिन्धि खट्वाङ्गेन विपोथय विपोथय, मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः सन्ताडय सन्ताडय, रक्षांसि भीषय भीषय, अशेष भूतानि विद्रावय विद्रावय, कूष्माण्ड वेताल मारीच गण ब्रह्मराक्षस गणान् सन्त्रासय सन्त्रासय, सर्वरोगादि महाभयान्ममाभयं कुरु कुरु, वित्रस्तं मामाश्वासयाश्वासय, नरक महाभयान्मामुद्धरोद्धर, सञ्जीवय सञ्जीवय, क्षुत् तृषा ईर्ष्यादि विकारेभ्यो मामाप्याययाप्यायय, दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय, शिव कवचेन मामाच्छादयाच्छादय।

मृत्युञ्जय, त्र्यम्बक, सदाशिव! नमस्ते, नमस्ते, शं ह्रीं ॐ ह्रौं।

॥ महाकाल स्तोत्रम् ॥

कैलास शिखरे रम्ये, सुखासीनं जगद्गुरुं ।
प्रणम्य परया भक्त्या, पार्वती परिपृच्छति ॥

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

त्वत्तः श्रुतं पुरा देव, भैरवस्य महात्मनः ।
नाम्नामष्टोत्तरं शतं, ककरादिमभीष्टदम् ॥
गुह्याद् गुह्यतरं गुह्यं, सर्वाभीष्टार्थ साधकम् ।
तन्मे वदस्व देवेश! यद्यहं तव वल्लभा ।

॥ श्रीशिवोवाच ॥

लक्षवार-सहस्राणि, वारिताऽसि पुनः पुनः ।
स्त्री स्वभावान्महा देवि! पुनस्तत्वं त्वं पृच्छसि ॥
रहस्याति रहस्यं च, गोप्याद् गोप्यं महत्तरम् ।
तत्ते वक्ष्यामि देवेशि! स्नेहात्तव शुचिस्मिते ॥
कूर्चयुग्मं महाकाल, प्रसीदेति पदद्वयम् ।
लज्जायुग्मं वह्निजाया, राजराजेश्वरो महान् ॥

अथ मन्त्रः – हूँ हूँ महाकाल! प्रसीद प्रसीद ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

मन्त्रग्रहण मात्रेण, भवेत्सत्यं महाकविः ।

गद्य-पद्य मयी वाणी, गङ्गा निर्झरिणी यथा ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीराजराजेश्वर श्रीमहाकाल ककाराद्यष्टोत्तर शतनाम माला मन्त्रस्य श्रीदक्षिणा कालिका ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीमहाकालः देवता, हूँ बीजं, ह्रीं शक्तिः, स्वाहा कीलकं, सर्वार्थ साधने पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- शिरसि श्रीदक्षिणा कालिका ऋषये नमः। मुखे विराट् छन्दसे नमः। हृदि श्रीमहाकाल देवतायै नमः। गुह्ये हूँ बीजाय नमः। पादयोः ह्रीं शक्तये नमः। नाभौ स्वाहा कीलकाय नमः। सर्वाङ्गे सर्वार्थ साधने पाठे विनियोगाय नमः।

करन्यास :- ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ह्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास :- ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानम् :-

कोटि कालानलाभासं, चतुर्भुजं त्रिलोचनं ।
श्मशानाष्टक मध्यस्थं, मुण्डाष्टक विभूषितम् ॥
पञ्चप्रेत स्थितं देवं, त्रिशूलं डमरुं तथा ।
खड्गं च खर्परं चैव, वाम दक्षिण योगतः ॥
विभ्रतं सुन्दरं देहं, श्मशान भस्म भूषितम् ।
नानाशवैः क्रीडमानं, कालिका हृदय स्थितम् ॥
लालयन्तं रतासक्तं, घोरचुम्बन तत्परम् ।
गृध्र गोमायु संयुक्तं, फेरवीगण संयुतम् ॥
जटापटल शोभाढ्यं सर्वशून्यालय स्थितम् ।
सर्वशून्यं मुण्ड भूषं, प्रसन्न वदनं शिवम् ॥

॥ अथ स्तोत्रम् ॥

ॐ कूं कूं कूं कूं शब्दरतः, क्रूं क्रूं क्रूं क्रूं परायणः ।
कविकण्ठ स्थितः कै ह्रीं, हूँ कँ कँ कवि पूर्णदः ॥
कपाल कज्जल समः, कज्जल प्रिय तोषणः ।

कपालमालाऽऽभरणः, कपालकर भूषणः ॥
कपाल पात्र सन्तुष्टः, कपालार्घ्य परायणः ।
कदम्ब पुष्पसम्पूज्यः, कदम्ब पुष्प होमदः ॥
कुलप्रियः कुलधरः, कुलाधारः कुलेश्वरः ।
कौलव्रतधरः कर्म, कामकेलि प्रियः क्रतुः ॥
कलह ह्रीं मन्त्रवर्णः, कलह ह्रीं स्वरूपिणः ।
कङ्काल भैरवो देवः, कङ्काल भैरवेश्वरः ॥
कादम्बरी पानरतः, तथा कादम्बरीकलः ।
कराल भैरवानन्दः, कराल भैरवेश्वरः ॥
करालः कलनाधारः, कपर्दीश वर प्रदः ।
करवीर प्रिय प्राणः, करवीर प्रपूजनः ॥
कलाधरः कालकण्ठः, कूटस्थः कोटराश्रयः ।
करुणः करुणावासः, कौतुकी कालिका पतिः ॥
कठिनः कोमलः कर्णः, कृत्तिवास कलेवरः ।
कलानिधिः कीर्तिनाथः, कामेन हृदयङ्गमः ॥
कृष्णः काशीपतिः कौलः, कुलचूडामणिः कुलः ।
कालांजन समाकारः, कालांजन निवासिनः ॥
कौपीनधारी कैवर्तः, कृतवीर्यः कपिध्वजः ।
कामरूपः कामगतिः, कामयोग परायणः ॥
काम सम्मर्दनरतः, कामगेह निवासिनः ।
कालिका रमणः कालि-नायकः कालिका-प्रियः ॥
कालीशः कालिकाकान्तः, कल्पद्रुम लता मतः ।
कुलटालाप मध्यस्थः, कुलटासङ्ग तोषितः ॥
कुलटाचुम्बनोद्युक्तः, कुलटाकुच मर्दनः ।
केरलाचार निपुणः, केरलेन्द्र ग्रह स्थितः ॥
कस्तूरी तिलकानन्दः, कस्तूरी तिलकप्रियः ।
कस्तूरी होम सन्तुष्टः, कस्तूरी तर्पणोद्यतः ॥
कस्तूरी मार्जनोद्युक्तः, कस्तूरी कुण्डमज्जनः ।

कामिनी पुष्पनिलयः, कामिनी पुष्पभूषणः ॥
कामिनी कुण्ड संलग्नः, कामिनी कुण्ड मध्यगः ।
कामिनी मानसाराध्यः, कामिनी मान तोषितः ॥
काममञ्जीर रणितः, कामदेव प्रियातुरः ।
कर्पूरामोद रुचिरः, कर्पूरामोदधारिणः ॥
कर्पूरमालाऽऽभरणः, कर्पूरार्णव मध्यगः ।
क्रकसः क्रकसाराध्यः, कलाप पुष्परूपिणः ॥
कुशलः कुशलाकर्णी, कुक्कुरासङ्ग तोषितः ।
कुक्कुरालय मध्यस्थः, काश्मीर करवीरभृत् ॥
कूटस्थः क्रूर दृष्टिश्च, केशवासक्त मानसः ।
कुम्भीनस विभूषाढ्यः, कुम्भीनस वधोद्यतः ॥

॥ फलश्रुति ॥

नाम्नामष्टोत्तर शतं, स्तुत्वा महाकाल देवम् ।
ककारादि जगद्वन्द्यं, गोपनीयं प्रयत्नतः ॥
य इदं पठते प्रातः, त्रिसन्ध्यं वा पठेन्नरः ।
वाञ्छितं समवाप्नोति, नात्र कार्या विचारणा ॥
लभते ह्यचलां लक्ष्मीं, देवानामपि दुर्लभाम् ।
पूजाकाले जपान्ते च, पठनीयं विशेषतः ॥
यः पठेत्साधकाधीशः, काली रूपो हि वर्षतः ।
पठेद्वा पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदपि ॥
वाचकं तोषयेद्वापि, स भवेद् भैरवी तनुः ।
पश्चिमाभि मुखं लिङ्गं, वृषशून्यं शिवालयम् ॥
तत्र स्थित्वा पठेन्नाम्नां, सर्वकामाप्तये शिवे ।
भौमवारे निशीथे च, अष्टम्यां वा निशामुखे ॥
माषभक्त बलिं छागं, कृसरान्नं च पायसं ।
मद्यं मीनं शोणितं च, दुग्धं मुद्रागुडार्द्रकम् ॥
बलिं दत्वा पठेत्तत्र, कुबेरादधिको भवेत् ।
पुरश्चरणमेतस्य, सहस्त्रावृत्तिरुच्यते ॥

महाकालसमो भूत्वा, यः पठे न्निशि निर्भयः ।
सर्वं हस्तगतं भूयान्नात्र कार्या विचारणा ॥
मुक्तकेशो दिशावासः, ताम्बूल पूरितानन: ।
कुजवारे मध्यरात्रौ, होमं कृत्वा श्मशानके ॥
पृथ्वीशाकर्षणं कृत्वा, नात्र कार्या विचारणा ।
ब्रह्माण्ड गोले देवेशि! या काचिज्जगती तले ॥
समस्ता सिद्धयो देवि! वाचकस्य करे स्थिता ।
भस्माभिमन्त्रितं कृत्वा, ग्रहग्रस्ते विलेपयेत् ॥
भस्म संलेपनाद् देवि! सर्वग्रह विनाशनम् ।
वन्ध्या पुत्रप्रदं देवि! नात्र कार्या विचारणा ॥
गोपनीयं गोपनीयं, गोपनीयं प्रयत्नतः ।
स्वयोनिरिव गोप्तव्यं, न देयं यस्य कस्यचित् ॥

विशेषः- यह स्तोत्र केवल अभिषिक्त साधकों के द्वारा पठनीय है। अतः अन्य लोग इससे विरक्त ही रहे, यहीं उत्तम होगा।

॥इति श्रीभैरवागमे श्रीशिव पार्वति सम्वादे श्रीमहाकाल ककाराद्यष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् ॥

॥ पार्थिवशिव पूजन ॥

मृत्त्री शुद्धमिट्टी को '**ॐ हराय नमः**' से गीली करें। '**ॐ महेश्वराय नमः**' से शिवलिङ्ग का निर्माण करें। '**ॐ शूलपाणये नमः**' से शिवलिङ्ग को पूजा पात्र में रखें और उसके चारों ओर आठ पार्थिव मूर्तियां बनाकर रखें।

वैसे पुत्रकामेष्ठि प्रयोग हेतु सवालाख छोटे-छोटे शिवलिङ्ग बनाकर उनका षोडशोपचार पूजन किया जाता है।

ध्यानम् :–

ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरि निभं चारु चन्द्रावतंसम् ।
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशु मृगवराऽभीति हस्तं प्रसन्नम् ॥
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतिममर गणैर्व्याघ्र कृत्तिं वसानं ।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भय हरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

प्राण प्रतिष्ठा :- **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः शूलपाणे । इह सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रं घ्राण प्राणा यदादीनि सर्वेन्द्रियाणिं सहितं**

इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। ॐ क्षं लं सं हंमः ह्रीं ॐ।

पुष्पाञ्जलि : स्वामिन्! सर्वजगन्नाथ! यावत् पृजाऽवसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन, लिङ्गेऽस्मिन् सन्निधौ भव।

मन्त्र :- ॐ शूल पाणये नमः इह प्रतिष्ठो भव भो पिनाकधृक्! तिष्ठ सन्निहितो वरदो भव। अत्राधिष्ठानं कुरु कुरु, मम पूजां गृहाण। यावत् पूजां करोम्यहं, तावदिहाधिष्ठानं कुरु कुरु स्वाहा।

सङ्कल्प के अंत में यह वाक्य जोड़ लें सकल पापक्षय पूर्वकं धर्मार्थ काम मोक्षार्थे पुत्र सुख प्राप्ति हेतवे श्रीशिव लिङ्ग पृजनमहं करिष्ये।

'ॐ पशुपतये नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि नमः' मंत्र पढ़कर आसन के लिए एक पुष्प शिवलिङ्ग पर रखें।

तत्पश्चात् षोडशोपचार से पृजन करें। पश्चात् आठों पार्थिवों की एक एक करके जल चन्दन से अधोलिखित मंत्रों से पृजन करें

१. ॐ शर्वाय क्षिति मृर्तये नमः, २. ॐ रुद्राय अग्नि मूर्तये नमः, ३. ॐ भवाय जलमृर्तये नमः, ४. ॐ उग्राय वायुमृर्तये नमः, ५. ॐ भीमाय आकाशमृर्तये नमः, ६. ॐ पशुपतये यजमानमृर्तये नमः, ७. ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः, ८. ॐ महादेवाय सोममृर्तये नमः।

इस प्रकार पूजन करने के बाद १०८ बार 'ॐ नमः शिवाय' का जप करें, और निम्न स्तोत्र से भगवान शिव की स्तुति करें -

ॐ सर्वज्ञान प्रविज्ञान प्रदायैक महात्मने ।
नमस्ते देव देवेश! सर्व भूतहिते रतः ॥

अनन्त कान्ति सम्भोग परमेश! नमोऽस्तुते । अनन्त कान्ति सम्पन्न! अनन्तासन संस्थित । परापर! परातीत! उत्पत्ति स्थितिकारक । सर्वार्थ साधनोपाय! विश्वेश्वर नमोऽस्तुते । सर्वार्थ निर्मलाभोग! सर्वव्याधि विनाशन। योग योगि! महायोगि! योगीश्वर! नमोऽस्तुते ।

॥ फलश्रुति ॥

कृत्वा लिङ्ग प्रतिष्ठां च, ध्यात्वा देवं सदा शिवम् ।
लिङ्ग स्तवं महापुण्यं, यः श्रृणोति सदा नरः ॥
नोत्पद्यते च संसारे, स्थानं प्राप्नोति शाश्वतम् ।
पापकञ्चुक निर्मुक्तः, प्राप्नोति परमं पदम् ॥

''**स्तुति पाठ**'' के बाद निम्न मंत्र से सदाशिव को जल अर्पण करें

ॐ गुह्याति गुह्य गोप्ता त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवत्वत् प्रसादान्महेश्वर ॥

अब संहार मुद्रा से विसर्जन करें और निम्न मंत्र पढ़ें **ॐ गच्छ गच्छ महादेव! गच्छ गच्छ पिनाकधृक् ! कैलासादि पीठे गच्छन्तु, यत्र तिष्ठति पार्वति॥**

॥ तुम्बुरू शिव ॥

(शारदा तिलके)

एकाक्षर मंत्र: - **(मंत्रोद्धार) क्षकारोमाग्नि पवन ामकर्णार्द्ध चन्द्रवान।**

क्ष्+म्+र्+यूँ= क्ष्म्र्यूँ

विनियोग - **अस्य मंत्रस्य काश्यप ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, तुम्बुरू शिव देवता, रं बीजं, ॐ शक्तिं सर्वसमृद्धि हेतुवे जपे विनियोगः।**

षड्ङ्गन्यासः - **षड् दीर्धभाजा बीजेन षड़ङ्गानिप्रकल्पयेत्।**

अर्थात बीजं मंत्र के षड् दीर्धो से न्यास करें यथा - **(१) क्ष्म्र्यां (२) क्ष्म्र्यीं (३) क्ष्म्र्यूं (४) क्ष्म्र्यें (५) क्ष्म्र्यौं (६) क्ष्म्र्यः।**

इसके बाद जया, विजया, अजिता एवं अपराजिता देवियों के बीज मंत्रों का उल्लेख है।

क्षकाररहितं बीजं क्रमाज्जभसहान्वितम्। चत्वारि देवीबीजानि देव्योज्ञेया इमाः क्रमात्।

अर्थात् बीज मंत्र में **क्ष** की क्रमशः **ज, भ, स, ह,** से अन्वित करें

यथा - **ज्म्र्यूँ, भ्म्र्यूँ, श्म्र्यूँ, ह्म्र्यूँ** इन चार बीज मंत्रो व चारों अगुंलियों में न्यास कर मूलमंत्र क्ष्म्र्यूँ दोनों के करतल पृष्ठ का व्यापक न्यास करना चाहिये।

क्ष्म्र्यूँ एवं चारों देवियों के बींज मंत्रों से पाद, नाभि, हृदय कण्ठ व मूर्धा में न्यास कर। मूलमंत्र से पाद पर्यन्त व्यापक न्यास करना चाहिये।

पुनः क्ष्म्र्यूँ एवं देवियों के चारों बीज मंत्रो से मूर्धा, मुख, हृदय, नाभि एवं गुह्य में क्रमशः न्यास करना चाहियें।

ध्यानम्—

रक्ताभमिन्दुसकलाभरणं त्रिनेत्रं
खट्वाङ्गपाशसृणि शूलकपाल हस्तम्।
वेदाननं चिपिटनासमनर्घभूषं रक्ताङ्गराग कुसुमांशुकमीशमीडे॥

॥ यन्त्रार्चनम् ॥

भद्रपीठ पर धर्मादिपीठ देवता की स्थापना करे फिर सर्वतोभद्रमंडल (भद्रपीठ) पर पीठ शक्तियों का पूजन करे यथा - **ॐ वामायै नमः, ॐ ज्येष्ठायै नमः, ॐ रौद्रयै नमः, ॐ इच्छायैनमः, ॐ ज्वालारूपिण्यै नमः।**

इसके बाद भद्रपीठ पर यन्त्र को शुद्ध करके रखें एवं अर्चन करें। यन्त्रमध्य में प्रधानदेव का आवाहन करें।

प्रथमावरणम् - षट्कोण में न्यास मन्त्रों से षडङ्ग शक्तियों का आवाहन करें।

द्वितीयावरणम् - (अष्टदल में पूर्वादि चार दिशाओं में) यथा **जयायै नमः, विजयायै नमः, अजितायै नमः, अपराजितायै नमः** से पूजन करें।
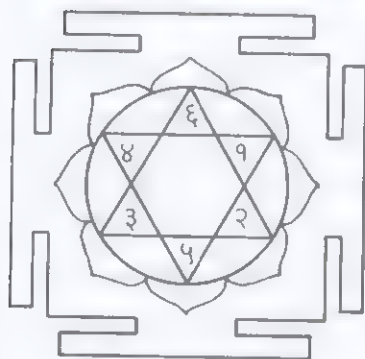
तुम्बुरुशिव यंत्रम्

ये सभी देवियाँ रक्तवर्णा है एवं रक्त अनुलेपन वाली है, अरुणवर्ण के वस्त्र एवं पुष्पों से आढ्य है। मुख में ताम्बूल है, वीणा वादन करने वाली है मद तथा मन्मथ (कामदेव) से पीड़ित है।

ईशानादि चारों दलों में - **ॐ शं दुर्भगायै नमः, ॐ षं सुभगायै नमः, ॐ मं कराल्यै नमः, ॐ हं मोहिन्यै नमः** से पूजन करें।

तृतीयावरणम् - चतुर्द्वार युक्त परिधि (भूपूर) में - **पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि दिक्पालों का पूजन करें।**

चतुर्थावरणम् - भूपूर में इन्द्रादि देवों के वज्रादि आयुधों का पूजन करें।

पुरश्चरण में १ लाख जप कर घृताक्त हविष्य से दशांश होम करें।

प्रयोग - त्रिकोण के मध्य में बीज मन्त्र का ध्यान करके जप करने से बुद्धिमान होवे एवं ज्वरादि महारोग नष्ट हो जाते हैं।

हृदयरोग, कामला, श्वास-कास में इससे अभिमन्त्रित जल के पीने से रोग नष्ट

हो जाते है।

नवकोष्ठक बनाकर उनके मध्य में नवकलश बनायें। मध्यकलश में प्रधान देव '**तुम्बुरूशिव**' का एवं अष्टदल में यन्त्र पूजा में अष्टदल की देवियों का जो उल्लेख है उनका आवाहन कर पूजन कर नवकलशों के जल से पतिव्रता स्त्री का अभिषिंचन करें तो नारी अवश्य ही पुत्र सुख को प्राप्त करती है चाहे वह वन्ध्या ही क्यों न हो।

इस मन्त्र के प्रभाव से एवं अभिषेक के प्रभाव से भूत कृत्याद्रोह शांत होते हैं। संपदा प्राप्त होती है।

॥ वीरभद्र मंत्र प्रयोगः॥

शत्रुनाश हेतु विशेष प्रयोग विधि भैरव प्रपंचसार तंत्र व आकाशभैरव कल्पादि तंत्रो मे देखें।

विनियोगः- **अस्य श्री वीरभद्र मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुप्छंदः, वीरभद्रोदेवता सर्वशत्रुक्षयार्थे जपे विनियोगः।**

मंत्रः - (३२ अक्षरात्मक) **ॐ वीरभद्राय अतिक्रूराय रुद्रकोपं संभवाय सर्वदुष्ट निर्वहणाय हुं फट् स्वाहा॥**

षडङ्गन्यासः - **ॐ वीरभद्राय हृदयाय नमः। अतिक्रूराय शिरसे स्वाहा। रुद्रकोपं संभवाय शिखायै वौषट्। सर्वदुष्ट कवचाय हुं। निर्वहणाय नेत्रत्रयाय वौषट्। हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्।**

ध्यानम्—

गोक्षीराभं दधानं परशुडमरुकौ खड्गखेटौ कपालम्।
शूलञ्चाभीतिदाने त्रिनयनमसितं व्याघ्र चर्माम्बराढ्यम्।
वेतालारूढमुग्रं कपिशतर जटाबद्ध शीतांशुखण्डम्।
ध्यायेद्व्योगीन्द्रभूषं निजगणसहितं सन्ततं वीरभद्रम्॥

प्रयोगान्तरे विशेष ध्यानम्—(स्तंभनार्थे)

अमुं वीरभद्रं हरिद्राभमुग्रं गदामुष्टि हस्तं करालाह हासम्॥
(रिपुक्षयार्थे) - **भुजङ्गगणभूषणं भुजगत त्रिशूलाहत**
स्वशत्रु-रूधिरोक्षितं भजद्धाल नेत्रानलं दिगम्बरम्॥

रक्त वीकर पुष्प (अभावे रक्तकनेर) कमल एवं त्रिमधु से होम करें।

12 लक्ष का पुरश्चरण है। यह रक्षा प्रधान देवता है।

यंत्र पूजनम्- पंचकोण के बाद अष्टदल बनाये उसके बाहर भूपूर बनायें।
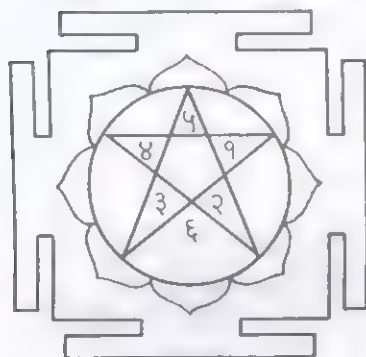
वीरभद्र यंत्रम्

प्रथमावरणम्- पंचकोण में- **पूर्वे तत्पुरूषाय नमः। दक्षिणे अघोराय नमः। उत्तरे सद्योजाताय नमः । पश्चिमे वामदेवाय नमः। ईशाने- ईशानाय नमः।**

द्वितीयावरणम्- इनकी शक्तियों का अग्रिकोणदि में पूजन करें। **निवृत्यै नमः पूर्वे। प्रतिष्ठायै नमः आग्नेये। विद्यायैनमः निर्ऋते। शान्त्यैनमः वायव्ये। शान्त्यतीतायै नमः ईशाने।**

तृतीयावरणम्- (अष्टदले) **परशवे नमः। डमरुकाय नमः। खड्गाय नमः। खेटायनमः। कपालायनमः। शूलाय नमः। अभयाय नमः। वरदाय नमः।**

चतुर्थावरणं- भूपूरे इन्द्रादि देवेश्च पंचमावरणे वज्राद्येः अग्युधानि पूजयेत्।

स्तंभन हेतु हरिद्रा से होम करे। शत्रुविनाश हेतु कटुत्रयादि से होम करें।

सभी प्रयोगों में तिल सर्षप तथा पंचगव्य (दुर्वा, वट, दुग्धान्न, मयूरकाक्षतैश्च ये 5 द्रव्य है। मयूर अपामार्ग, एवं खरमंजरी को भी अपामार्ग कहते है।) प्रतिद्रव्य से ८-८ घृताक्त आहुति देवें। यंत्र मध्य में (रक्त वस्त्र वेष्टित) कुंभ स्थापित कर वीरभंद्र का आवाहन करे। जप हवनादि कर्म करे। बलि प्रदान करें।

॥ इति वीरभद्र प्रयोगः ॥

॥ श्रीसुब्रह्मण्य (कार्त्तिकेय)—साधना ॥

विनियोगः- **ॐ अस्य श्रीसुब्रह्मण्यमंत्रस्य श्रीअग्निः ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीसुब्रह्मण्य देवता, ॐ बीजं वं शक्तिः, श्रीसुब्रह्मण्यदेवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - **श्रीअग्निऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्रीसुब्रह्मण्यदेवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमःगुह्ये। वं शक्तये नमः नाभौ। श्रीसुब्रह्मण्यदेवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
रां	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
रूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुँ
रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
रः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ॐ सिन्दूरारुण कान्तिमिन्दुवदनं केयूरहारादिभिः,
दिव्यैराभरणैर्विभूषिततनुं स्वर्गस्य सौख्यंप्रदम् ।
अम्भोजाभयशक्ति कुक्कुटधरं रक्ताङ्गरागांशुकं,
सुब्रह्मण्यमुपास्महे प्रणमतां भीतिप्रणाशोद्यतम् ॥१॥
ॐ कात्तिकेयं महाभागं मयूरोपरिसंस्थितम्,
तप्त काञ्चनवर्णाभं शक्तिहस्तं वरप्रदम् ।
द्विभुजं शत्रुहन्तारं नानालङ्कारभूषितम्,
प्रसन्न वदनं देवं सर्वसेनासमावृतम् ॥२॥

• मानस पूजन – ॐ लं पृथ्वीतत्त्वात्मकं गन्धं श्रीसुब्रह्मण्यप्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाशतत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीसुब्रह्मण्यप्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायुतत्त्वात्मकं धूपं श्रीसुब्रह्मण्यप्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नितत्त्वात्मकं दीपं श्रीसुब्रह्मण्यप्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जलतत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीसुब्रह्मण्यप्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्वतत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीसुब्रह्मण्यप्रीतये समर्पयामि नमः।

उक्त प्रकार से "**मानस पूजा**" कर श्रीसुब्रह्मण्य के **षडक्षर मंत्र** का **वर्ण-मालाक्षर** से संपुटित कर जप करना चाहिये।

मन्त्र – **वचद्भुवे नमः**। संपुटित विधि यथा **अं वचद्भुवे नमः अं**। "वर्ण माला" से जप करने के बाद निम्न मंत्र पढ़ते हुए **प्रणाम** करना चाहियें -

ॐ कार्त्तिकेयं नमस्यामि गौरीपुत्त्रं सुतप्रदं ।
षडाननं महाभागं दैत्यदर्पनिषूदनम् ॥

॥ सुब्रह्मण्य मंत्रः॥

अस्य मंत्रस्य काश्यप ऋषिःत्रिष्टुप् छन्दः सुब्रह्मण्यो देवता सं बीजं सां शक्तिः सर्वत्र यशोविजय प्राप्यार्थे जये विनियोगः।

अंगन्यासः – **सां,सीं,सूं,सौं,सः** से क्रमशः षडङ्गन्यास करें।

ध्यानम्–

शक्ति हस्तं शिखिवाहं षडाननं दारुणम् ।
रिपुरोगघ्नं भावयेत् कुक्कुटध्वजम् ॥

मंत्र – सुँ सुब्रह्मण्याय स्वाहा

(मेरूतंत्रे) ऋषिब्रह्मा। छंदगायत्री। देवता गुह। ॐ बीज। नमः शक्ति है।

मंत्र – 'ॐ वं वह्नये नमः'।

ध्यानम्–

ध्योयो देवोगुह शक्तिं कुक्कुटाक्षवरान् दधत् ।
रक्तो रक्तांशुको रक्तप्रवराकल्प भूषितः ॥

वाद विवाद में विजयप्राप्ति हेतु एवं जन्म पत्रिका में मंगल कमजोर होवे तो इसका जप करना चाहिए।

॥ महाशास्ता (हरिहरपुत्र) मंत्र प्रयोगः॥

जिस तरह वास्तुपुरुष की उत्पति अंधकदैत्य व शिव के बीच युद्ध समय में दोनों के पसीने की बूंदे भूमि पर गिरी उससे हुई इसी तरह किसी अन्यप्रकरण में यह हरि एवं हर का मानस है पुत्र एवं इसकी गणना विशेष शिवगणों में की जाती हैं।

इसका प्रयोग शत्रुनाश व पुत्र लाभ हेतु तथा साधना के विघ्नों को दूर करने हेतु किया जाता हैं।

(१) पुत्रलाभार्थ मंत्र– **ॐ ह्रीं हरिहरपुत्राय पुत्र लाभाय शत्रुनाशाय मदगजवाहनाय महाशास्ताय नमः।**

विनियोगः– **ॐ अस्य श्री महाशास्ता मंत्रस्य अर्द्धनारीश्वर ऋषिः। अनुष्टुप् छंदः महाशास्तादेवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः। इष्टार्थ सिद्धर्थे जये विनियोगः।**

षडङ्गन्यासः	करन्यासः	अङ्गन्यासः
ह्रीं ह्रीरहरपुत्राय	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयायनमः
पुत्रलाभाय	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसेस्वाहा
शत्रुनाशाय	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायैवषट्
मदगजवाहनाय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
महाशास्ताय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
नमः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यानम्–

आश्यामकोमल विशाल विचित्रितंतु
वासोवसानमहणोत्पल दान हस्तम् ।
उत्तुङ्ग रक्तमुकुटं कुटिलार्द्रकेशं
शास्तारमिष्ट वरदं शरणं प्रपद्ये ॥

पुत्रलाभ हेतु मृत्तिका मूर्ति बनाकर पूजा करे मोदक व पक्वान्न का भोग लगाये, पंचमेवा चढावे। सवालक्ष जपसे पुरश्चरण करे। पलाश समिद् से होम करे। त्रीगन्न घृत युक्त तिलादि से हवन करें।

(२) अरिष्ट एवं विघ्ननाश हेतु– इस मंत्र प्रयोग में '**शास्ता**' को अश्वारूढ बताया है।

शास्तारं मृगयाश्रान्तं अश्वारूढं गणवृत्तं ।
पानीयार्थं वनादेत्य शास्त्रे ते रैवते नमः ॥

इस मंत्र का उल्लेख प्राचीन मंत्रमहोदधि में है वर्तमानप्रचलित पुस्तकों में नहीं हैं। मंत्र में '**मृगया श्रान्तमश्वारूढं**' हैं।

शास्ता से अर्थ शासन करने वाले से होता है। भावार्थ पालन करने हेतु वन से प्रकट हुये तेजोमय रूप अश्वारूढ गणों से वेष्टित दुष्टो के संहार से परिश्रत सुदृढ शासन करने वाले हे महाशास्ते आपको नमस्कार है।

विनियोगः– ॐ **अस्य श्री महाशास्ता मंत्रस्य रैवत ऋषिः, पंक्ति छंदः, महाशास्ता देवता, सर्वाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।**

करन्यास हेतु ८ ८ अक्षरों से अंगुष्ठ से अनामिका तक न्यास करें। इसके बाद मूलमंत्र (कनिष्ठा का नहीं करें) करतल न्यास करें।

अङ्गन्यास हेतु भी ८ ८ अक्षरों से शिर से कवचन्यास तक करे फिर नेत्र न्यास

को छोड़कर पुनः मूलमंत्र से अस्त्रन्यास करे।

ध्यानम्

साध्यं स्वपाशेन विवन्ध्यगाढं निपातयन्तुं खलु साधकस्य ।
पादाब्जयोर्दण्डधरं त्रिनेत्रं शास्तारमभीष्ट सिद्धयै ॥

पुरश्चरण में एक लाख जप कर तिलों से दशांश होम करे। पलाश व विल्व समिध से होम करे। ऑदुम्बर समिध भी उपयुक्त है।

शास्तागायत्री - ॐ भूताधिपाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नः शास्ता प्रचोदयात्॥

॥ अथ मंजुघोष प्रयोगः॥

मंजुघोष का प्रयोग शिव प्रयोगों में विद्या प्राप्ति हेतु विशेष माना जाता है। इस विषय में शिव कहते हैं-

श्रृणु देवि! महामंत्रं साधकानां सुखावहम् ।
यज्ज्ञात्वा जड़धीः प्रायो वाचस्पति समो भवेत् ॥
जपते सिद्धिप्रदं मद्यो वैस्णवं सात्विकात्मकम् ।
शैवसिद्धिप्रदं मद्यस्तामसं समुदाहृतम् ॥

अर्थात् इसकी सात्विक उपासना पद्धति भी है और मुण्डसाधन आदि विधान भी है।

एकाक्षर मन्त्र -ह्रीं

त्र्यक्षर - (१) क्रों, ह्रीं, श्रीं (२) ह्रीं, श्रीं, क्लीं

षडक्षर- (मंत्रकोष) मंत्रोद्धार - मातृकादि समुद्धृत्य (अ) वह्नि बीजं समुद्धरेत (रं)वामांशं कूर्च संज्ञं च ततो ऽ नेन समुद्धरेत मीनेशं च ततः कर्याद वामनेत्र संयुक्तं।

मंत्र - 'अ र व च ल धीं'

अन्यत्र - (भैरव सर्वस्वे) विष्णवग्नि पाशी शशियुक्च धीश्च षडवर्णमन्त्रो जगतां प्रदिस्टः।

(टीका) विष्णुः- अकार। अग्नि- रकार। पाशीवकारः

शशी-सकारः तेन-युक्तश्चकारः- धीश्च - धीः इतिस्वरूपम्।

(परन्तु शशी का संबोधन लकार हो तो मंत्र सही बैठता है।)

अथ मंत्रः- 'अ र व च ल धीः'

विनियोग :- ॐ **अस्य मंत्रस्य वृहदारण्यक ऋषिः, विराट छंदः, श्रीमंजुघोष देवता वाक्सिद्धि हेतवे, सर्भाष्ट सिद्धिये जपे विनियोगः।**

अङ्गन्यास - एक एक अक्षर से अङ्गन्यास करें।

सप्ताक्षर- मंत्रोद्धार- **रविर्विन्दु समायुक्तो जान्तो वान्तोऽग्नि शांतियुक्। क्षकारः पृथिवी चाग्निर्विन्दुः शांतिश्च उद्धतः॥**

भैरव सर्वतन्त्र में टीका में रवि का अर्थ मकार माना है। वैसे मकार ईश्वर हेतु होता है। मंत्रकोष के अन्य टीकाकार ने भी शंका की है परन्तु यह नहीं लिखा कि रवि का अर्थ क्या होवे।

जान्तो- ज का अंतिम 'झ'। वान्तो-वकार अंतिम 'ल'। यद्यपि यह व का पूर्वाक्षर है। शान्तिरीकारः। पृथिवी- लकारः॥

अथ सप्ताक्षर मंत्र- मं झ ल रीं क्ष ल रीं।

विनियोग : अस्य मंत्रस्य कण्व ऋषिः, विराट छंदः वटुक देवता, सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

अङ्गन्यास : प्रथम दो अक्षरों से प्रथम न्यास करे फिर एक एक अक्षर से एक एक न्यास करे।

परन्तु (टीका में लिखा है षड्दीर्घभाजा युक्ते न कुर्यादङ्गानि साधकः)

षडक्षर मंत्रस्य ध्यानम्-

संपूर्णमण्डल तुषारमरीचिमध्य बालं
विलंबिचिकुरं वर-खड्गहस्तम्।
उद्यामकङ्कणवहं परपुष्पकाढ्य नग्नं
यजेत् क्षतजपदादलायताक्षम्॥

सप्ताक्षर मंत्रस्य ध्यानम्-

शिशुतर वरक्लांतिक्लांत-नीलाम्बुदाभं
विकचसरसिजाभ्यां पुस्तकं कर्पकं च।

स्मित- सुविशदवक्त्रं पञ्चचूड़ं त्रिनेत्रं
कुमतिदहन दक्षं मञ्जुघोषं नमामि ॥

यंत्रपूजनम् –
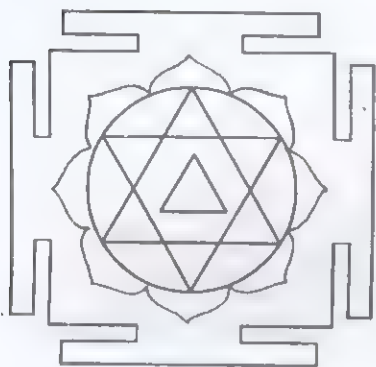
(१) त्रिकोण के मध्य बिन्दु मंजुघोप का **ध्यानपूर्वक** आवाहन करे।

(२) षट्कोण में - हृदयायनमः, शिरसे स्वाहा, शिखायै वषट्, कवचाय हुँ, नेत्रत्रयाय वौषट, अस्त्राय फट् से छः अंगो का पूजन करें। देव के वामांग में उसकी शक्ति की पूजा करे।

(आदावङ्गानि संपूज्य पश्चाच्छक्तीरिमा यजेत्)

(३) अष्टदलेषु - (पूर्वादिक्रमेण) **योगायैनमः, सत्यायैनमः, विमलायैनमः ज्ञानायैनमः, बुद्ध्यैनमः, स्मृत्यैनमः, मेधायैनमः, प्रज्ञायैनमः,** (पत्रेपु सर्वान् मुद्रापुस्तक धारिणीः)

(४) भूपरे- भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों का तथा उनके बाहर उनके अस्त्रों का पूजन करें।

इस यंत्र के अर्चन के जल को पीने से, अथवा यंत्र का थाली में गंधादि से लिखकर उसका प्रक्षालन पीवे तो वाक्सिद्धि होवे। एक हजार बार जप कर जल अभिमंत्रित कर नित्य पीवे तो महाकविर्भवेन्मंत्री मासेन तु न संशयः।

प्रतिपालन विषय मे कहा है-

आचरेत् कुत्सिताचार भक्षयेद् वामबाहुना ।
प्रदीपोच्छिष्टतैलेन विलियेद्गात्रमन्वहम् ॥
परिधानं सदा कुर्यात् केवलं रात्रिवाससा ॥
निशि निशि बलिभस्मै युक्तमन्तं प्रदद्यादधृदय
मनुगलान्ते मंत्र जापं वितन्वन् ।
भवति नृपतिपूज्यो योषितां प्रीतिपात्रं
भवतिखुल कवीनामग्रणीः पण्डितश्च ॥
सर्ववेदागमादीनां व्याख्याता जायतेऽचिरात् ।
काव्यार्थी कुरुते काव्यं धनार्थी प्राप्नुयद्धनम् ॥

॥ मुण्डसाधनम् ॥

गोमुण्डे गिरिपृष्ठे च यत्नेनापि च गोमये ।
यन्त्रे मंत्रं लिखित्वादौ पश्चामंत्रं लिखेत् पुनः ॥
ध्यान मात्रं विधायादौ भावयित्वा चिरं सुधीः ।
निर्जनस्थान मासाद्य जपेन्मन्त्रमधोमुखः ॥
पौर्णमासीं समारभ्य कुन्दस्य कुसुमैः शतैः ।
अष्टाधिकैश्च संपूज्य जपेन्मंत्रं चतुः पथै ॥
त्रिमुण्डारोहणं कृत्वा निशीथे मुक्त कुन्तलः ।
षण्मासमात्रं जपति यदिमन्त्री विधानवित ॥
बृहस्पति समोवक्ता नात्र कार्या विचारिणा ।
कुक्कुरस्य च मुण्डैकं मुण्डं क्रोष्टुर्वृषस्य च ॥
त्रिमुण्डमेतद् विख्यातं साधकानां सुखावहम् ।
आसनं चैव गोमुण्डे वामे कुक्कुरमुण्डकम् ।
दक्षिणे च शिवामुण्ड कृत्वा पूजा समाचरेत् ॥
अर्धचन्द्राकृतिः पश्चात् वामे चन्द्राकृति स्फुटम् ।
तत्रं मंत्रं लिखेत् पूजा कुन्दस्य कुसुमेन च ॥
सव्येनपाणिकमलेन जपादि पूजा शृङ्गारशीलनविधिः खलु दक्षिणेन। राकासुधाकर मरीचितुषारहार गौरं चतुष्पथतटेवृषमस्तकस्थम्॥ सचिन्त्य कुक्कुरशिवाशिर साधिरूढः कुन्देन साधकतमो जयति प्रकामम्। गोचर्मरक्तरचितं रसकोणमात्रं चक्रं तपोऽपि नवकुंकुमरोचनाभिः॥ निर्माय सव्यविधिनाः विजने श्मशाने संपूजयेद् वनभवैश्च नवैः पलाशैः।

इसके बाद ध्यान मंत्र से आवाहन कर पूजन करें।

अरिष्ट गेहे निशि तैलमेवमादाय यत्ना कर पल्लवेन्। तेनांजितं कांचन पुष्पमेव निवेद्य तस्मै रजति प्रकामम्॥ अशोकशाखोटतरोश्च मूले विलिप्य पादौ वदनामृतेन। त्रिमुण्डमात्रस्थित एवं रात्रौ जपेद् यथाशक्ति च पौर्णमास्याम्॥ लकुचविटपिमूले मुंडमात्रैकरूढो हिमकर करगौरं चिंतयित्वा निशीथे। यदि जपति जड़ात्मा लक्ष्मेनं त्रिपक्षं भवति जगति

साक्षात् गीर्पतिर्न्नात्र चित्रम् ॥ भुक्तवान्नमेव कदलीतरुपुष्प जालैः मुण्डत्रये विरचितासन सन्निविष्टः। राकाविधूदयमुपेत्य करोजितपूजां यः सोपि सूर्य इव वाक्पतिरीश्वरः स्यात् ॥ जिह्वां विसृज्य निजपाणि सरोरुहाभ्यां वाणाप्रसूनशतकैः परिपूज्य गोष्ठी। यौ वै जपेदनुदिनं रसलक्षमात्र मीशं जयेत् किमुत वाक्पतिमेकवक्त्रम् ॥ वाणा पोतागेंठी, स्थित्वा निशीथ समये रजकस्यकाष्ठे खड्गान्वितो यजति कत्यपि पौर्णमास्याम्। संपूर्णमासमथवा तरसापि तस्य वक्त्राद् विनिस्सरति गीरमृतायमाना ॥ या दन्तधावन कृतैश्च करञ्जकाष्ठैस्तस्यापि गीः पतिवचो नियतंसुलभ्यम्। तिलतैलेन मतिमान् कुन्दकैरवपुष्यकैः यत्नतो जुहुयान्मंत्री सर्वसिद्धिमुपा लभेत् ॥ मंजिष्ठतोयसुर सासितभानुपुष्पैः स्वीयाङ्ग शोणितयुतः समकुष्ठकैश्च। कृत्वा ललाटफलके तिलकं जपस्थो विद्याववोधविषयेन च गीः पतिः स्यात् ॥

(टीका- तीय राव इति ख्यातम्। मितभानुः श्वेतार्कः। कुष्ठं-कूठं)

॥ इति भैरव सर्वस्वे मंजुघोष प्रयोगः ॥

॥ अर्द्धनारीश्वर ॥

(शिव तन्त्रे)

मंत्र – (षडाक्षर) 'रंक्षं मं यं औं ऊं' (मतांतरे शारद तिलके- ऊः)

विनियोग – **ॐअर्द्धनारीश्वर मंत्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः अर्द्धनारीश्वर देवता सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

ऋषिन्यासः – **कश्यप ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छंदसेनमः मुखे, अर्द्धनारीश्वर देवतायै नमः हृदि, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

अङ्गन्यासः – हमारे अनुमान से मंत्र षडाक्षर है एवं एक एक अक्षर से छः विभाग बनाते है उनसे अङ्गन्यास होने चाहिये परन्तु हिन्दी तन्त्रसार में न्यास इस प्रकार है।

कराङ्गन्यासः – 'रं' अंगुष्ठाभ्यां नमः। 'कं' तर्जनीभ्यां स्वाहा। 'यं'

मध्यमाभ्यां वषट्। 'मं' अनामिकाभ्यां हुं। 'रं' कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। 'यं' करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। इसी तरह से हृदयादि न्यास करें।

ध्यानम्–

नीलप्रवाल रुचिरं विलसत् त्रिनेत्रम् ।
पाशारुणोत्पल कपालक शूल हस्तम् ॥
अर्द्धाम्बिकेश-मनिशं प्रविभक्त - भूषम् ।
बालेन्दुबद्ध मुकुटं प्रणमामि रूपम् ॥

यंत्र पूजा-

(१) त्रिकोण के मध्य बिन्दु में अर्द्धनारीश्वर का ध्यान करें।
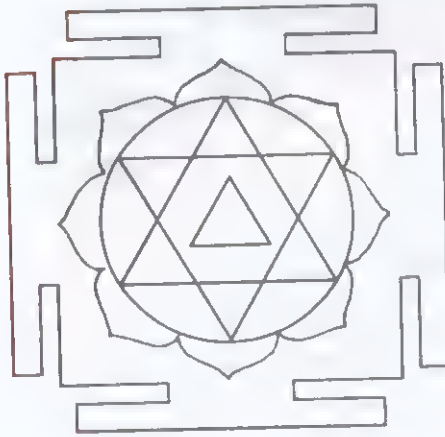
(२) षट्कोण में-आग्नेयादि चारों कोणो में-**रं हृदयाय नमः। कं शिरसे स्वाहा। यं शिखायै वषट्। मं कवचाय हुं। मध्ये-नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वदिक्षु-यं अस्त्रायफट् से पूजा करे।**

(३) अष्टदल में- पूर्वादि क्रम से-**वृषभाय नमः, क्षेत्रपालाय नमः चण्डेश्वराय नमः, दुर्गायै नमः, कार्तिकेयाय नमः, नंदिने नमः, विघ्ननाशकाय नमः, सेनापतये नमः।**

(४) अष्टदल के अग्रभाग में- **ब्राह्मन्यै नमः, माहेश्वर्यैनमः, कौमार्यैनमः, वैष्णव्यै नमः, वाराह्यै नमः, इन्द्राण्यै नमः, चामुण्डायै नमः महालक्ष्म्यै नमः।**

(५) भूपूरे- इन्द्रादि लोकपाल व उनके वज्रादि आयुधों का पूजन करें।

एक लाख जप कर घृत मधुशर्करा मिश्रित तिल तण्डुल से अयुत होम करें। वशीकरण हेतु घृत मधुशर्करा से चून का पुतला बनाये, पुष्पों से साध्य नाम की प्रतिष्ठा कर होम करे तो व्यक्ति वश में होवें। अन्य प्रयोग कान्ती, यश, लक्ष्मी व वाणी हेतु शारदा तिलक में दिये है।

॥ चण्डेश्वर मंत्रः ॥

चण्ड व वाण नाम के असुर गणों को वरदान देने से शिव चण्डेश्वर कहलाये हैं।

त्र्यक्षर मंत्रः - (मंत्र कोष) **ॐ हुं फट्**। (हिन्दी तंत्रसारे) **उर्ध्व फट्**।

ऋष्यादि- मंत्रकोष के अनुसार **ऋषि त्रिक** हैं, तंत्रसार में इसे **त्रित** लिखा है। **छंद अनुष्टुप्** है, **एवं देवता चण्डेश्वर** है।

कराङ्गन्यासः- **ॐ दीप्तफट् अगुष्ठाभ्यां नमः। ज्वाला (ज्वल) फट् तर्जनीभ्यां स्वाहा। ज्वालामालिनी (ज्वालिनि) फट् मध्यमाभ्यां वषट्। तत् (ज्ञेय) फट् अनामिकाभ्यां हुं। हन फट् कनिष्ठाभ्यां वौषट्। सर्वज्वालिनि फट् करतल करपृष्ठाभ्यां फट्।**

जो कोष्ठक में लिखें है वे मतान्तर भेद लिखें है। हृदयादिन्यास इसी तरह करें।

ध्यानम्—

ध्यायेच्चण्डेश्वरं रक्त त्रिनेत्रं रक्तवाससं
चन्द्रमौलिं च विभ्राणां शूलटङ्कं कमुण्डलम्।
स्फटिक स्त्रजमाबद्ध जटाजूटं स नागकम्॥१॥
चण्डेश्वरं रक्ततनु त्रिनेत्रं रक्तांशुकाढयं हृदि भावयामि।
टंकंत्रिशूलं स्फटिकाक्षमालां कमण्डलुं विभ्रतमिन्दु-चूडम्॥२॥

पूर्व मंत्र के विधानुसार यंत्रार्चन व होम करे।

॥ ईशानादि पंचवक्त्र पूजा॥

॥ ईशानादि मंत्र॥

(ॐ) ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां, ब्रह्माधिपति-र्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥१॥

(ॐ) तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥२॥

(ॐ) अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥३॥

(ॐ) वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः। कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः। नमो बलाय नमो

बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥४॥

(ॐ) 'सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमो भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥५॥

(ॐ) नमः परमात्मने पराय कामदाय परमेश्वराय योगाय योगसम्भवाय सर्वकराय कुरु कुरु सद्य सद्य भव भव भवौद्भव वामदेव सर्वकार्यकर पापप्रशमन सदाशिव प्रसन्न नमोऽस्तु ते (स्वाहा) ॥6॥

(इस मंत्र को पढ़कर **हृदयाय नमः** बोलकर हृदय का स्पर्श करना चाहियें।)

'**ॐ शिव शिवाय नमः**।' यह शिरोमंत्र है, अर्थात् इसे पढ़कर '**शिरसे स्वाहा**' बोलकर दक्ष (दाहिने) हाथ से सिर का स्पर्श करना चाहिये। '**ॐ शिवहृदय ज्वालिनी स्वाहा, शिखायै वषट्**' बोलकर शिखा का स्पर्श करें।

'**ॐ शिवात्मक महातेजः सर्वज्ञ प्रभो संवर्तय महाघोर-कवच पिङ्गल आयाहि पिङ्गल नमो महाकवच शिवाज्ञया हृदयं बन्ध बन्ध घूर्णय घूर्णय चूर्णय चूर्णय सूक्ष्मासूक्ष्म वज्रधर वज्रपाशधनुर्वज्राशनिवज्रशरीर मच्छरीरमनुप्रविश्य सर्वदुष्टान् स्तम्भय स्तम्भय हुम् ॥७॥**

इसे पढ़कर "**कवचाय हुम्**" बोलते हुए दोनों हाथों से एक साथ भुजाओं को स्पर्श करें ॥८॥

'**ॐ ओजसे नेत्रत्रयाय वौषट्**' ऐसा बोलकर दोनों नेत्रों को स्पर्श करे। इसके बाद निम्नाङ्कित मंत्र पढ़कर अस्त्र न्यास करें।

'**ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोरघोरतरतनुरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बंध बंध घातय घातय हुं फट्**।' यह (प्रणवसहित बावन अक्षरों का **अघोरास्त्र**-मंत्र है ॥9॥ **अस्त्राय फट्**।

॥ पञ्चवक्त्रार्चनम् ॥

"**भाग 1- पूजाप्रतिष्ठा**" में वेदोक्त विधान से पूजा क्रम दिया जा चुका है। तांत्रिक पद्धति में शिव कलाओं का विन्यासादि प्रमुख है। अत: साधक शिवादि कलाओं का स्वशरीर में विन्यास कर पूजन करें-

(१) षोडश सदाशिव कला :- **ॐ निवृत्ति कलायै नमः शिरसि, आं प्रतिष्ठायै नमः मुखे**। इं विद्यायै नमः दक्षनेत्रे,ई शान्त्यै नमः वाम नेत्रे। उं इन्धिकायै नमः दक्षकर्णे, ऊं दीपिकायै नमः **वामकर्णे**। ऋं रेचिकायै नमः

दक्ष नासापुटे ॠं मोचिकायै नमः वाम नासापुटे। लृं परायै नमः दक्षगण्डे, लॄं सूक्ष्मायै नमः वाम गण्डे। एं सूक्ष्मामृतायै नमः उर्ध्वोष्ठे, ऐं ज्ञानायै नमः अधरोष्ठे। ओं ज्ञानामृतायै नमः उर्ध्वदन्त पंक्तौ, औं अप्यायिनी नमः अधोदन्तपंक्तौं। अं व्यापिन्यै नमः मुखवृते, अः व्योमरूपायै नमः कण्ठे।

(२) दश ब्रह्मा कलाः- ॐ कं सृष्टि कलायै नमः दक्ष बाहुमूले। खं ऋद्ध्यै नमः, दक्ष कर्पूरे। गं स्मृत्यै नमः दक्ष मणिबंधे। धं मेधायै नमः दक्षाङ्गुलिमूले। ङं कान्त्यै नमः, दक्षाङ्गुलि पद्मे। चं लक्ष्म्यै नमः, वाम बाहु मूले। छं द्युत्यै नमः वामकर्पूरे। जं. सिद्ध्यै नमः, वाम मणिबंधे। झं स्थित्यै नमः वामाङ्गुलिमूले। ञं, नमः वामाङ्गुल्याग्रे।

(३) दश विष्णुकलाः- ॐ टं जरायै नमः दक्षोरू। ठं पालिन्यै नमः, दक्ष जानुनि। डं शान्त्यै नमः, दक्ष गुल्फे। ढं ईश्वर्यै नमः दक्ष पादांगुलिमूले। णं रत्यै नमः दक्ष पादाङ्गुल्याग्रे। तं कामिन्यै नमः वामपाद मूले। थं वरदायै नमः वाम जानुनि। दं आह्लादिन्यै नमः वाम गुल्फे। धं प्रीत्यै नमः वामपादाङ्गुलिमूले। नं दीर्घायै नमः वाम पादाङ्गुल्याग्रे।

(४) दश रुद्रकलाः- पं तीक्ष्णायै नमः, दक्ष पार्श्वे। फं रौद्रायै नमः वाम पार्श्वे। बं भयायै नमः पृष्ठे। भं निंद्राय नमः नाभौ। मं तन्द्रायै नमः जठरे। यं क्षुतायै नमः हृदि। रं क्रोधिन्यै नमः दक्षांसे, लं क्रियायै नमः कुकुदि। वं उदगारे नमः वामांसे। शं मृतवे नमः हृदयादि दक्षकरान्तरम्।

(५) चतुः ईश्वर कलाः- षं पीतायै नमः हृदयादिवामकरान्तम्। सं श्वेतायै नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम्। हं अरुणायै हृदयादि वाम पादान्तम्। लं असितायै नमः मस्तकादि पादान्तम्।

ईशानादि ५ देवों के मंत्र पूर्व में **पेज नं.....**पर दिये जा चुके है, पूजाविधान क्रम इस प्रकार है। (कहीं कहीं ईशान से प्रारंभ कर अंत में सद्योजात का पूजन करते है।)

(१) पश्चिम वक्त्र सद्योजातः

विनियोगः- ॐ सद्योजातमित्यस्य श्री सद्योजात ऋषिः, त्रिष्टुप् छंदः, ब्रह्मादेवता, श्वेतवर्ण, हंस वाहनं, पश्चिम वक्त्रं पृथ्वीतत्वं पश्चिम वक्त्रं नमस्कारे विनियोगः।

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमो भवे भवे नातिभवे भवस्य

ॐ भवोद्भवाय नमः।

सद्योजाताय श्वेतवर्णाय हंसवाहनाय पश्चिम वक्त्राय पृथ्वितत्वाय सृष्टिरूपात्मने ब्रह्मणे नमः ह्रां।

धुनर्वाण मुद्रा दिखाकर पूजन पूर्ववत् पूजन हेत विनियोग पढ़े।

फिर सद्योजात मंत्र से गंध, मनः शिला चन्दन, श्वेताक्षत, श्वेतपुज्य गुग्गुलधूप, घृतदीप, पायस नैवेद्यादि से पूजन करे। फिर अष्टकलाओं का पूजन करे।

शारदा तिलक में मंत्र के पदों को अलग अलग कलायें मानी है यथा

सद्योजातं प्रपद्यामि की '**सिद्धि**'। सद्योजाताय वै भृयो नमः की '**वृद्धि**'। भवे की '**द्युति**'। पुनः भवे की '**लक्ष्मी**'। नातिभवे की '**मेधा**'। भवस्वमाम् की '**प्रज्ञा**'। भवान्त की '**प्रभा**'। उद्भवाय नमः की '**स्वधा**'।

मंत्रकोष के अनुसार अष्टकलायें इस प्रकार है।

(१) ॐ ऋद्धयै नमः (२) सिद्धयै, (३) धृत्यै, (४) लक्ष्म्यै, (५) मेधायै (६) कान्त्यै, (७) स्वधायै, (८)ॐ प्रभायै नमः।

साधक को इनका न्यास दोनों पैरो में, स्तनों में, नासिका, मूर्धा एवं दोनों बाहुओं में भी करना चाहिये।

ध्यानम्:–

प्रालेयामर विन्दुकुन्दधवलं गोक्षीरफेनप्रभं
भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेह दमनज्वालावली लोचनम् ।
ब्रह्मेन्दादि मरुदगणैः स्तुति-पैररभ्यर्चितं योगिभिः
वन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम् ॥१॥
शुभ्रं त्रिलोचनं नाम्ना सद्योजातं शिवपदम् ।
शुद्धस्फटिक सङ्काशं वन्देऽहं पश्चिमं मुखम् ॥
धनुर्वाण मुद्रा वामस्य मध्यमाग्रं तु तर्जन्यग्रे नियोजयेत् ।
अनामिकां कनिष्ठां च तस्यांगुष्ठेन पीडयेत् ॥
दर्शयेद दक्षिणस्कंधे धनुर्मुद्रेयमीरिता ।
दक्षमुष्टिस्तर्जन्या दीर्घया वाममुद्रिका ॥

फलश्रुति- श्वेताक्षैः श्वेतपुष्पै पूजयेद हंसवाहनं सिद्धयन्ति सर्वकार्याणिः।

(२) उत्तरवक्त्र वामदेव

नमस्कारे विनियोग: ॐ वामदेवाय इत्यस्य श्रीवामदेव ऋषि:, जगती छंद: , विष्णुर्देवता, कृष्णवर्णं गरुड़वाहनं उत्तर वक्त्रं आपस्तत्वं उत्तरवक्त्र नमस्कारे विनियोग:।

(मतान्तरे त्रिष्टुप्, जगतीछंद:, देवता- सविता, विष्णु।)

फिर प्रणाम करे ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठायनम: श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नम:। कालाय नम: कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नम:॥

वामदेवाय कृष्णवर्णाय गरुड़वाहनाय उत्तरवक्त्राया आपस्तत्वामृत-रूपात्मने विष्णवे नम: ह्रीं।

पञ्चमुद्रा दिखाकर पूर्व की तरह पूजन हेतु विनियोग करे।

हरिचन्दन, तुलसी, शतपत्र (मंजरी) पुष्प पञ्चसौगंधिकधूप, घृतपक्व गोधूमान्न-नैवेद्यादि से पूजन कर ॐ वामदेवाय नमो मंत्र से नमस्कार करे।

अथ त्रयोदश कला पूजनम् - (१) ॐ रजसे नम: (२) रक्षायै, (३) रत्यै (४) पाल्यायै (५) कामायै (६) संजीवन्यै (७) प्रियायै (८) बुद्धयैनम: (९) क्रियायै (१०) धात्र्यै (११) भ्रामयै (१२) मोहिन्यै (१३) ॐ ज्वरायै नम:॥

साधक को इनका न्यास गुह्य, मुष्क, उरुयुग्म, दोनों जानु और जंघायें, स्फिच युगल, कटि एवं दोनों पार्श्व में करना चाहिये।

शारदा तिलक में पूरा मंत्र सर्वभूतदमनाय उन्मनाय नम: तक लिया है। एक एक पद की शक्तियां इस प्रकार है-

स्याज्ज्येष्ठाय नमो रक्षा परिकीर्तिता। स्याद्रुदाय नम: पश्चात्तृतीया रतिरीरिता च॥ बलाय नम: इत्यन्ते पालिनि परिकर्तिता। कला कामा पंचमी स्याततो विकरणाय च। मन: संयमनी षष्ठी कथिता तदन्तरम्। बलक्रिया समादिष्टा कला विकरणाय च॥ नमो वृद्धिरष्टमी स्याद्बलान्ते च स्थिराकला। पश्चात्प्रमथनायान्ते नमोरात्रिरुदीरिता॥ सर्वभूतदमनाय नमोऽन्ते भ्रामणीकला। नमोऽन्ते मोहिनी प्रोक्ता मंत्रज्ञैर्द्वादशीकला। उन्मनाय नम: पश्चाज्जरा प्रोक्ता त्रयोदशी। प्रणवाद्याश्चतुर्थ्यन्ता नमोऽन्तास्ता: प्रकीर्तिता॥

ध्यानम्–

गौरं कुंकुमपिङ्गलं सुतिलकं व्यापाण्डुगण्डस्थलं
भ्रूनिक्षेप कटाक्ष वीक्षण लसत्संसक्त-कर्णोत्पलम् ।
स्निग्धं बिम्बकलाधरं प्रहसितं नीलालकालंकृतं
वन्दे पूर्णशशाङ्क-मंडलनिभं वक्त्रं हरस्योत्तरम् ॥१॥
वामदेवं सुवर्णाभं दिव्यास्त्रगणसेवितम् ।
अजन्मामुमाकान्तं वन्देऽहं ह्युत्तरमुखम् ॥२॥

पद्ममुद्रा– करौ तो संहतौ कृत्वा सन्मुखावुन्नतांगुली तलान्तर्मिलितांगुष्ठौ कुर्यादेषाब्ज मुद्रिका।

सुगंध पंचकम्– कंकोल, कर्पूर, जातीफल, लवङ्गकैः सुगंध पंचकं प्रोक्तं।

फलश्रुति– तुलसी शतपत्रैश्च पूजयेद् गरुडासनं सर्वदोष विनाशेन प्राप्नोति श्रिय-संपदाम्।

(३) दक्षिणवक्त्र–अघोर

नमस्कार हेतु विनियोग ॐ अघोरेभ्य इत्यस्य श्री अघोर ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, रुद्रो देवता, नीलवर्ण कूर्मवाहनं दक्षिणवक्त्रं तेजस्तत्वं दक्षिणवक्त्र नमस्कारे विनियोगः।

॥ प्रणाम मंत्रः ॥

ॐ अघोरेभ्यऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्वतः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥
अघोराय नीलवर्णाय कूर्मवाहनाय दक्षिणवक्त्राय
तेजस्तत्वाय विश्वरूपात्मने कालाग्नि रुद्राय नमः ह्रूं ।

ज्ञानमुद्रादिखाकर पूजन हेतु पूर्व की तरह पुनः विनियोग करें।

कृष्णागुरु चन्दन नीलोत्पल, करवीरपुष्प, सितागरुधूप माषान्न नैवेद्यादि से पूजन कर पुनः मूल मंत्र से नमस्कार करें।

ध्यानम्–

ॐ कालाभ्र भ्रमराञ्जनाचलनिभं व्यावृत पिङ्गेक्षणं
खण्डेन्दुद्वयमिश्रितां सुदशना-प्रोद्भिन्न-दंष्ट्रांकुरम् ।

सर्पप्रोतकपालशक्ति सकलं व्याकीर्ण सच्छेश्वरं
वंदे दक्षिणमीश्वरस्य कुटिल भ्रूभङ्ग रौद्रंमुखम् ॥१॥
नीलाभ्रवर्णमोकारमघोरं घोर दंष्ट्रकं
दंष्ट्रा करालमत्युग्रं वन्देऽहं दक्षिण मुखम् ॥२॥

अष्टकला पूजनम्- (१) ॐ तमसे नमः (२) मोहायै (३) क्षयायै, (४) निद्रायै, (५) व्याधये (६) मृत्यवे (७) क्षुधायै (८) ॐ तृषायै नमः।

साधक को इनका न्यास हृदय, ग्रीवा, दोनों स्कंध, नाभि, कुक्षि, पुच्छ एवं वक्षः स्थल में करना चाहिये।

शारदा तिलक में पहली कला प्रथमा कला तथा तीसरी कला क्षमा लिखा है यथा मंत्र में पद विभाग के अनुसार अघोर की '**प्रथमा कला**'। घोरेभ्य की '**मोह**,' घोर की '**क्षमा**', घोरतरो की **निद्रा**, तत्परा की **व्याधि**, सर्वशर्वेभ्यों की **मृत्यु** नमस्ते अस्तु की **क्षुधा** एवं रुद्ररूपेभ्या की **तृषा** बतायी है।

ज्ञान मुद्रा - **तर्जन्यंगुष्ठकौ सक्तावग्रतो हृदि विन्यसेत्।**

फल श्रुति- नीलोत्पलैः करवीरैः पूजयेत् कूर्मसंस्थितं सर्वबाधा विनाशाय **ज्ञान मोक्ष प्रसाधकं।**

(४) पूर्ववक्त्र तत्पुरूष

नमस्कार हेतु विनियोग करें- **ॐ तत्पुरुषाय इत्यस्य श्री तत्पुरुष ऋषिः, गायत्री छंदः, रूद्रो देवता, पीतवर्ण अश्ववाहनं पूर्ववक्त्रं वायु तत्वं पूर्ववक्त्र नमस्कारे विनियोगः।**

मूल मंत्र से प्रणाम करे- **ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्र प्रचोदयात्॥ तत्पुरुषाय पीतवर्णायाश्ववाहनाय पूर्ववक्त्राय वायुतत्वाय चैतन्त्यात्मने आदित्याय नमः हैं।**

कवचमुद्रा दिखाकर पूजन हेतु विनियोग करें। हरिताल चन्दन, दूर्वाङ्कुर अर्कपुष्पान्यतरपुष्प, कृष्णगरु धूप मोदक नैवेद्यादि से पूजन कर नमस्कार करें।

चतुष्कला पूजनम् - **ॐ निवृत्यै नमः। प्रतिष्ठायै। विद्यायै। ॐ शान्त्यै नमः।** इनका साधक हृदय मूर्ध्नि जठर व पैरो में न्यास करें।

शारदा तिलक में मंत्र के पदो की अलग से कलायें बतायी है यथा-

तत्पुरुपाय विद्महे की '**शांति**', महादेवाय धीमहि की '**विद्या**'। तन्नो की '**प्रतिष्ठा**' एवं प्रचोदयात् की '**निवृति**' कला बतायी है।

ध्यानम्–

संवर्ताग्नितडित् प्रतप्त कनकप्रस्यर्द्धि-तेजोऽरुणं
गंभीरस्मृति निःसृतोभ्र दशन प्रोद्भासितामधरम्।
बालेन्दुद्युति लोलपिङ्गल जटाभार प्रबद्धोरयं
वन्देसिद्ध - सुरासुरेन्द्र नमितं पूर्वं मुखं शूलिनः ॥१॥
बालार्कवर्णमारक्तं पुरुषं च तडित्प्रभम्।
दिव्यं पिङ्ग - जटाधारं वन्देऽहं पूर्वदिङ्मुखम् ॥२॥

कवच मुद्रा - **कर द्वन्द्वांगुलयो वर्मणिस्युः।**

फलश्रुतिः- दूर्वांकुरैरर्कपुष्पैः पूजयेदश्ववाहनं आयुष्यं तत्र विशिष्ट फल दायकम्।

(५) उर्ध्ववक्त्र ईशान

• नमस्कार हेतु विनियोगः **ॐ ईशान इत्यस्य श्री ईशान ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, रुद्रो देवता, गोक्षीरवर्णं वृषभवाहनं उर्ध्ववक्त्रं आकाश तत्वं उर्ध्ववक्त्र नमस्कारे विनियोगः।**

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे ऽस्तु सदाशिवोम्॥ ईशानाय गोक्षीरवर्णाय वृषभवाहनायोर्ध्व वक्त्रायाकाश - तत्वाव्यक्ताय सर्वव्यापकात्मने नमः हौं।

महामुद्रा दिखाकर पुनः पूजन हेतु पूर्ववत् विनियोग करे।

भस्म, विल्वपत्र, कनकपुष्प, ऋतुभवान्यपुष्प, हरिचन्दन धूप, शर्करा दध्योदन नैवेद्यादि से पूजन कर नमस्कार करें।

पञ्चकला पूजनम् - **(१) ॐ शशिन्यै नमः (२) अङ्गदायै (३) इष्टायै (४) मरीच्यैनमः (५) ॐ वालिन्यै नमः।**

शारदा तिलक के अनुसार ईशान की प्रथम कला शशिनी है, सर्वभूतों की अंगदा, ब्रह्माधिपति की इष्टदा, शिवो मे ऽस्तु की मरीचि तथा सदाशिव की अंशुमालिनी कला है।

साधक को इनका न्यास पूर्वादि मुखों (दिकों) में करना चाहिये।

ध्यानम्—

व्यक्ताव्यक्त गुणोत्तरं सुवदनं षट्त्रिंश तत्त्वाधिकं
तस्मादुत्तर तत्वमक्षयमिति ध्येयं सदायोगिभिः ।
वन्देतामस वर्जितेन मनसा सूक्ष्माति सूक्ष्मं परं
शान्तं पञ्चमीश्वरस्य वदनं ख-व्यापि तेजोमयम् ॥१॥
ईशानं सूक्ष्ममव्यक्तं तेजपुञ्जपरायणम् ।
अमृतस्त्रावि चिद्रूपं वन्देऽहं पंचमं मुखम् ॥२॥

महामुद्रा - उत्तानौ तादृशावेव व्यापकाञ्जलिंक करौ। तादृशौ संयुतावेव करौ व्यापकाञ्जलिम्।

फलश्रुति - सोम्य मोक्षप्रदातारं पूजयेद् वृषवाहनम्।

इस प्रकार पञ्चवक्त्र की पूजा करके शिव के वाम भाग में उनकी शक्तियों की पूजा करें १. ॐ उमायै नमः २. शंकरप्रियायै ३. पार्वत्यै ४. गौर्ये ५. काल्यै ६. कालिन्द्यै ७. कोटर्यै ८. विश्वधारिण्यै ९. ह्रां १०. ह्रीं ११. गङ्गादेव्यै १२. गणपतये १३. कार्तिकेयाय १४. पुष्पदंताय १५. कपर्दिने १६. भैरवाय १७. शूलपाणये १८ ईश्वराय १९. दण्डपाणये २०. नंदिन्यै २१. ॐ महाकालाय नमः।

सम्मुख भाग में एकादश रुद्रों की पूजा करें १. ॐ अघोरायनमः २. पशुपतये ३. शर्वाय ४. विरूपाक्षाय ५. विश्वरूपिणे ६. त्र्यम्बकाय ७. कपर्दिने ८. भैरवाय ९. शूलपाणये १०. ईशानाय ११. महेश्वराय

पञ्चवक्त्र देवों को नमस्कार करे।

शक्तिं डमरुकाभीतिवरान्सन्दधतं करैः ।
ईशानं त्रीक्षणं शुभ्रमैशान्यां दिशिं नमामि ॥१॥
अक्षस्त्रज मृगपाशौ सृणि डमरुक ततः ।
खट्वाङ्गं निशितं शूलं कपालं विभ्रतं करैः ॥
परश्वेण वराभीतीर्दधानं विद्युदुज्ज्वलम् ।
पूर्वतो चतुर्मुखं तत्पुरुषं त्रिनेत्रं भजेत् ॥२॥
अज्जनाभ चतुर्वक्त्रं भीमदंष्ट्र भयावहम् ।
अघोर त्रीक्षणं याम्ये प्रसन्नो भव सर्वदा ॥३॥
कुंकुमाभं चतुर्वक्त्रं वामदेव त्रिलोचनम् ।

वराभयाक्ष वलयकुठारं दधतं करै ॥
विलासित स्मेरवक्त्रं सौम्ये मां पातु सर्वदा ॥४॥
कर्पूरेन्दुनिभं सौम्यं सद्योजात त्रिलोचनम् ।
हरिणाक्षगुणाभीतिवरहस्तं चतुर्मुखम् ।
बालेन्दुशेखरोल्लासि मुकुटं पश्चिमे भजेत ॥५॥

यथा शक्ति इष्ट मंत्र जाप करे रूद्राभिषेक करे

॥ अघोरास्त्र मन्त्रप्रयोगः॥

रामायण महामहाभारत काल में इन दिव्यास्त्रों का प्रयोग हुआ है। सामान्य क्रम में अश्वशान्ति, गजशांति, महामारी, राजकीय उपद्रव, प्रेत, शत्रुबाधा असामयिक गर्भपात शान्ति हेतु किया जा सकता है।

मैंने स्वयं इस प्रयोग को एक व्यक्ति जो अभिचार के कारण अर्द्धविक्षिप्त एवं दो माह से अनिद्राग्रस्त था, के लिये किया, सफलता मिली। इसके साथ में शिवपूजा, ईशानदि देवों का पूजन करना चाहिये। शारदा तिलक व अग्निपुराण में इनका विधान है। ईशानादि मंत्र एवं पाशुपतास्त्र प्रयोग आगे दिये गये हैं।

अघोरास्त्रः- (विनियोग) **ॐ अस्य श्री अघोरास्त्र मंत्रस्य, अघोर ऋषिः, त्रिष्टुप् छंदः अघोर रुद्रदेवता, ह ल (व्यंजन वर्ण) बीजं, स्वराः शक्तिं।** (पद्मपादाचार्य के मत से 'हुं' बीजं, 'ह्रीं' शक्तिं) **सर्वोपद्रव शमनार्थे जपे विनियोगः।**

मन्त्र	करन्यासः	षडङ्गन्यासः-
ह्रीं स्फुर स्फुर	अंगु. नमः	हृदयाय नमः
प्रस्फुर प्रस्फुर	तर्ज. नमः	शिरसे स्वाहा
घोर घोर तर तनुरूप	मध्य. नमः	शिखायै वषट्
चट चट प्रचट प्रचट	अना. नमः	कवचाय हुँ
कह कह वम वम	कनि. नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
बंध बंध घातय घातय हुँफट्	करतलकरपृष्ठाभ्यां	नमःअस्त्राय फट्

ध्यानम्—

सजल घनसमाभं भीम दंष्ट्रं त्रिनेत्रं
भुजगधरमघोरं ह्यरक्त वस्त्राङ्ग रागाम् ।

परशु डमरू खडगान् खेटकं वाण चापौ
त्रिशिखि नर कपाले विभ्रतं भावयामि ॥

मंत्र- ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बंध बंध घातय घातय हुँ फट् ॥

॥ अघोरास्त्र–यन्त्रार्चनम् ॥

(१) त्रिकोण मध्य में ध्यान सहित अघोर शिव का आवाहन करे।
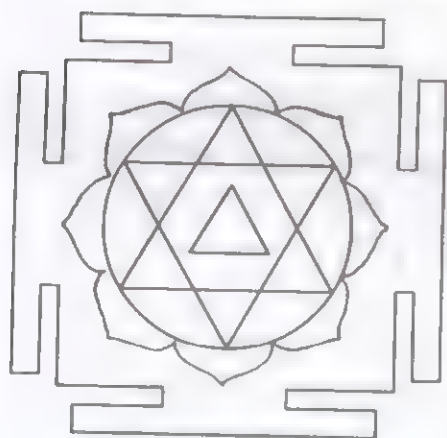
(२) षट्कोणे- हृदयायनमः, शिरसे स्वाहा, शिखायैवषट्, कवचाय हुँ नेत्रत्रयाय वौषट् अस्त्राय फट् से अङ्गन्यास करे। या षडङ्ग न्यासवत् मंत्रो से आवाहन करें।

(३) अष्टदल मध्ये - (पूर्वादि क्रर्मण) परशवेनमः, डमरुवे, खड्गाय नमः, खेटाय नमः, वाणाय नमः, कार्मुकाय नमः, शूलाय नमः, कपालाय नमः।

(४) अष्टदले (दलाग्रभागे) ब्राह्मयैनमः, माहेश्वर्यैनमः, कौमार्यैनमः, वैष्णवै नमः, वाराहयै नमः, इन्द्राण्यै नमः, चामुण्डायै नमः, महालक्ष्म्यै नमः।

(५) भूपूरे- परिधि में इन्द्रादि लोकपालों व उनके वज्रादि आयुधों की पूजा करें।

प्रयोग विधान - अलग अलग कामना भेद से अलग अलग ध्यान दिये गये है। शारदा तिलक के अनुसार अभिचार में तथा ग्रहोत्पात में कृष्णवर्ण का ध्यान करे, वश्य प्रयोग में कुसुम्भ के वर्ण का, मुक्ति लाभ हेतु प्रभु का वर्ण चन्द्रमा के समान आभायुक्त होता है।

मंत्रकोष में भी अलग अलग ध्यान दिये है यथा-

शत्रुसेना नाश हेतु–

सहस्त्राब्धिखं हस्तैर्धनुं पञ्चशतैरपि संधायाकृष्य
च शरान् विमुंचंतमनारतम् धावन्तं

रिपुसेनायां वमद् विद्युद्घनोपमं
ज्वलत् पिंगोर्ध्वकेशं च गजचर्मावगुंठितम् ॥

शत्रु के उच्चाटन हेतु जिससे व अन्य देश को चला जाय।

धावन्तं वैरिणं पश्चादत्युगं सधनुःशरम्।

(मेरे अनुमान से यह पद उपरोक्त मंत्र के तीसरे पाद (धावतं रिपुसेनायां) की जगह पढ़ना चाहियें।

घोर अपस्मृतिनाश ग्रहशान्त्यार्थ-गजशांति, अश्वशांति, उल्कापात आदि शांति हेतु-

त्रि-पादहस्तनयनं नीलाञ्जन चयोपमम् ।
शूलांसि सूची-हस्तं च घोरदंष्ट्राट्टहासिनम् ॥

उपरोक्त ध्यान में त्रिपाद, त्रिहस्त, त्रिनयन वाले नीलाञ्जन स्वरूप है तथा तीनों हाथों में शूल, तलवार एवं सूची है, उनके भयानक दांत है एवं भयंकर गर्जना अट्टहास करने वाले शिव को नमन करता हुं ऐसा ध्यान करना चाहिये।

भूत प्रेतादिनाश हेतु-

खड्ग खेटं तथा घण्टां वेतालं शूलमेव च
कपालं चापि विभ्राणं पिङ्गोर्ध्व कच भीषणम् ।
भूतप्रेत विनाशाय ध्यायेद् भीमाट्टहासिनम् ॥

मृत्युभय (मारकेश ग्रहों को) दूर करने हेतु-

सीताब्ज शीतांशुपुटमिन्दु कांतेन्दु-वर्चसम्
आशाम्बरं व्याघ्रनख-प्रमुखैर्वलि भूषणैः ।
अलंकृताङ्गं द्विभुजं त्रिवर्षार्धकरूपिणम्
क्रमाङ्गं सुमुखं सौभ्यं नीलकुंचित कुन्तलम् ॥

श्रीलाभ हेतु-

तप्तजाम्बूनदनिभं शूलखड्ग वराभयम्
रक्तारविदवसतिं स्मरन्नुच्चैः श्रियं लभेत् ।

मेरुतंत्रोक्त-

ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर तर तर प्रतर प्रतर प्रद प्रद प्रचट प्रचट कह कह मह मह बंध बंध घातय घातय हुं हुं।

अङ्गन्यास के लिये ६ विभाग इस तरह से है-

यथा- ह्रीं स्फुर स्फुर हृदयाय नमः। प्रस्फुर प्रस्फुर शिरसे स्वाहा। तर तर

प्रतर प्रतर शिखायै वषट्। प्रद प्रद प्रचट प्रचट कवचाय हुं। कह कह मह मह नेत्रत्रयाय वौषट्। बंध बंध घातय घातय हुं हुं अस्त्राय फट्।

ध्यानम्–

मेघाकारं ततो ध्यायेद् भीमदंष्ट्रं त्रिलोचनम्
भुजङ्गभूषणं रक्तवसनालेप शोभितम् ।
परशुं करवालं च वाणं त्रिशिखमेव च
दधानां दक्षिणैर्हस्तैरूर्ध्वादि क्रमतः परैः ॥

एक लक्ष जप करके दशांश होम करें। साधक रात्रि में अपामार्ग समिध तिल सरसों एवं पायस से अयुत होम या सहस्राहुति देवें तो कृत्या व भूतों का नाश होता हैं। सफेद पलाश (ढाक) निर्गुण्डी व अपामार्ग सविध से होम भी भूतों व कृत्या का नाश करता है।

मास पक्ष में कृष्णपक्ष की पञ्चमी कों अपामार्ग व आरग्वध की समिधाये जो पंचगव्य से प्रोक्षित की हुयी हो तो उनके होम से भूतों का निग्रह होवें।

घृत अपामार्ग, पंचगव्य हवि और घृत से प्रत्येक की एक सहस्र आहुतियां देवें। आहुति समय ''**इदं अघोर रुद्राय नमय स**'' घृत एक पात्र में त्याग(संपात)करते जाये उस घृत से साध्य(पीड़ित)व्यक्ति को भोजन कराये तो भूतोपद्रव की शांति होवें।

वैसे शारदातिलक में इतना ही लिखा है कि साधक हवन समय में एक पात्र में धृत का संपात करे परन्तु आशय पूरा स्पष्ट नहीं हुआ। भावार्थ यह होवे कि उस समय त्याग घृत पात्र में संकल्प करे उससे भोजन बनाकर पीड़ित को खिलायें ऐसा भी होवे तो उपयुक्त है।

यंत्र प्रयोग– (द्वितीय प्रकाराः)

(१) षट्कोण के मध्य में शक्ति सहित अघोर रुद्र का ध्यान करे। या मंत्र यंत्र में लिखें। षट्कोणों में हृदयादि न्यास शक्तियों का आवाहन करें।

यंत्रोंद्धार में लिखा है कि **मध्ये शक्तिं ससाध्यां स्वरगण सहितां केसरेष्ववर्गात्पत्राग्रं मंत्र वर्णान् लिखित गुण मितानग्रदेशेषु तद्वत्।**

इस प्रकार से अष्टदल के मध्य में सशक्ति देव का आवाहन करे अष्टदल के केसर(मूलभाग)में **अं आं, इं ईं, उं ऊं, ऋं ॠं, लृं लॄं, एं ऐं, ओं औं, अं अः** लिखें।

[illegible]। क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, न वर्ग, प वर्ग, यं रं लं वं, शं

बं सं हं, लं क्षं लिखे।

(अग्रदेशेपु मंत्र वर्णान्) अष्टदलों के अग्रभाग में ह्रीं स्फुर स्फुर, प्रस्फुर प्रस्फुर, घोरघोर तनुरूप, चट चट, प्रचट प्रचट, कह कह, वम वम, बंध बंध, घातय घातय लिखे एवं ईशान व अग्निकोण में क्रमशः हुं एवं फट् लिखकर बाहर चारद्वार युक्त परिधि बनायें।

इस यंत्र पर कलश स्थापन करे पूजा करें। कलश के जल से अभिषेक करे यंत्र को धारण करने से भूतों की शांति होवें।

॥ श्रीनीलकण्ठ अघोरास्त्र स्तोत्रं ॥

विनियोगः - **ॐ अस्य श्री भगवान् नीलकण्ठ सदा-शिव-स्तोत्र-मंत्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः। श्रीनील-कण्ठ सदाशिवो देवता। ब्रह्म बीजं। पार्वती शक्तिः। मम समस्त-पाप-क्षयार्थं क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं मोक्षादि-चतुर्वर्ग-साधनार्थं च श्रीनील-कण्ठ-सदा-शिव-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - **श्रीब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे। श्रीनीलकण्ठ सदाशिव देवतायै नमः हृदि। ब्रह्म-बीजाय नमः लिङ्गे। पार्वती-शक्त्यै नमः नाभौ। मम समस्त पापक्षयार्थ क्षेमस्थैर्यायुरारोग्याभि वृद्ध्यर्थं मोक्षादि चतुर्वर्ग साधनार्थं च श्रीनीलकण्ठ सदाशिव प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ नमो नीलकण्ठाय, श्वेतशरीराय, सर्पालंकारभूषिताय, भुजङ्गपरिकराय, नागयज्ञोपवीताय, अनेकमृत्यु विनाशाय नमः। युग युगान्त कालप्रलय-प्रचण्डाय, प्रज्वाल-मुखाय नमः। दंष्ट्राकराल घोररूपाय हूं हूं फट् स्वाहा। ज्वालामुखाय, मंत्र करालाय, प्रचण्डार्क सहस्रांशु-चण्डाय नमः। कर्पूर-मोद-परिमलाङ्गाय नमः। ॐ ईं ईं नील महानील वज्र वैलक्ष्य मणि-माणिक्य मुकुट भूषणाय, हन-हन-हन-दहन-दहनाय श्रीअघोरास्त्र मूल मंत्र- ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रूं स्फुर अघोर-रूपाय रथ रथ तंत्र-तंत्र-चट्-चट्-कह-कह-मद-मद-दहन-दाहनाय श्रीअघोरास्त्र-मूल-मंत्र-जरा-मरण-भय-हूं हूं फट् स्वाहा।

अनन्ताघोर-ज्वर-मरण-भय-क्षय-कुष्ठ-व्याधि-विनाशाय, शाकिनी-डाकिनी-ब्रह्मराक्षस-दैत्य-दानव-बन्धनाय, अपस्मार-भूत-बैताल-डाकिनी-शाकिनी-सर्व-ग्रह-विनाशाय, मंत्र-कोटि-प्रकटाय, पर-विद्योच्छेदनाय, हूं हूं फट् स्वाहा। आत्म-मंत्र संरक्षणाय नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं नमो भूत-डामरी-ज्वाल-वश-भूतानां द्वादश-भूतानां त्रयोदश-षोडश-प्रेतानां पञ्च-दश-डाकिनी-शाकिनीनां हन हन। दहन-दार-नाथ! एकाहिक-द्वयाहिक-त्र्याहिक-चातुर्थिक-पञ्चाहिक-व्याघ्र-पादान्त-वातादि-वात-सरिक-कफ-पित्तक-काश-श्वास-श्लेष्मादिकं दह-दह, छिन्धि-छिन्धि, श्रीमहादेव-निर्मित-स्तंभन-मोहन-वश्याकर्षणोच्चाटन-कीलनोद्वेषण-इति षट्-कर्माणि वृत्य हूं हूं फट् स्वाहा।

वात ज्वर, मरण-भय, छिन्न-छिन्न नेह नेह भूतज्वर, प्रेतज्वर, पिशाचज्वर, रात्रिज्वर, शीतज्वर, तापज्वर, बालज्वर, कुमारज्वर, अमितज्वर, दहनज्वर, ब्रह्मज्वर, विष्णुज्वर, रुद्रज्वर, मारीज्वर, प्रवेशज्वर, कामादि-विषम ज्वर, मारी-ज्वर, प्रचण्ड-घराय, प्रमथेश्वर ! शीघ्रं हूं हूं फट् स्वाहा। ॐ नमो नीलकण्ठाय, दक्षज्वर-ध्वंसनाय, श्रीनीलकण्ठाय नमः।

फलश्रुति- सप्तवारं पठेत् स्तोत्रं, मनसा चिन्तितं जपेत् ।
तत्सर्वं सफलं प्राप्तं, शिवलोकं स गच्छति ।।

॥ श्रीरामेश्वर तंत्रे श्रीनीलकण्ठ अघोरास्त्र स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ पाशुपतास्त्र प्रयोगः॥

भगवान शिव का पशुपति प्रयोग पशुता (जड़ता) का नाश करने वाला प्रज्ञा एवं बुद्धि प्रदाता तथा पालनकर्ता एवं प्रबल संहारक मंत्र है।

अति आवश्यकता में ही शत्रुसंहार हेतु प्रयोग किया जाता है।

मंत्रौद्धार - **तारो (ॐ) वान्तो (श) धरा (ल) संस्थो, वामनेत्रन्दु भूषितः (ईकार विन्दु) पार्श्वो (प) वक्रः (श) कर्णयुक्त (उकार) वर्म (हूं) अस्त्रान्तः (फट्)।**

शारदा तिलक में वान्तो की जगह टीका में व्यक्त (शकार)लिखा है अतः

षडक्षर मंत्र - ॐ श्लीं पशु हुं फट्।

विनियोगः - ॐ अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छंदः, पशुपतास्त्ररूप

पशुपति देवता, सर्वत्र यशोविजय लाभार्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यासः - शारदा तिलक में कहा है 'षडभिर्वर्णैः षडङ्गानिं **हुंकडन्तैःसजातिभिः।**

अतः मंत्र के अक्षरों के विभागों के अंत में हुं फट् लगाकर न्यास करे यथा - **ॐ हुं फट् हृदयाय नमः। श्रीं हुं फट् शिरसे स्वाहा। पं हुं फट् शिखायै वषट्। शुं हुं फट् कवचाय हुं। हुं हुं फट् नेत्रत्रयाय वौषट्। फट् हुं फट् अस्त्राय फट्।**

मंत्रकोष की एक टीका में इन अङ्गन्यासो के पहिले ॐ लगाने का उल्लेख किया है।

ध्यानम्—

मध्याह्नार्कसमप्रभं शशिधरं भीमाट्टहासोज्वलम्
त्र्यक्षं पन्नगभूषणं शिखिशिखाश्मश्रु-स्फुरन्मूर्द्धजम्।
हस्ताब्जैस्त्रिशिखं समुद्गरमसिं शक्तिदधानं विभुम्
दंष्ट्रभीम चतुर्मुखं पशुपतिं दिव्यास्त्ररूपं स्मरेत्॥

(मेरुतंत्रोक्त) - 'ॐ श्रीं पशु हुं फट्।

इस मंत्र के वामदेव ऋषि, छंद पंक्ति एवं देवता पशुपति है। आर्थिक विघ्नों के निवारण हेतु विशेष है।

ध्यानम्—

पञ्चवक्त्रं दशभुजं प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनं
अग्निज्वालानिभ श्मश्रुमूर्धजं भीमदंष्ट्रकम्।
खड्गं बाणानक्षसूत्रं शक्तिं परशुमेव च
दधानं दक्षिणैर्हस्तैरूर्ध्वादि क्रमतः परै।
खेट चापौ कुण्डिकां च त्रिशुल ब्रह्म दण्डकं
नानाभरण सन्दीप्तं बालचन्द्रैरलंकृतम्॥

अष्टाक्षर मंत्रः- ॐ श्रीं पशुपतिः हुं फट्।

इसके ऋष्यादि मेरुतंत्र के पूर्वोक्त ही है, ध्यान भी वही हैं।

न्यास हेतु षट् विभाग इस तरह से है - ॐ ॐ हृदयाय नमः (२)ॐ पं (३) ॐ शुं (४) ॐ पं (५) ॐ तिं (६) ॐ हुं फट् अस्त्राय फट्।

यंत्रार्चनम् – यंत्र के मध्य में प्रधान देव का ध्यान मंत्र के 'सशक्ति' आवाहन करे। **षट्कोण** मे हृदयादि न्यास मंत्रो से अंग शक्तियों का आवाहन करें। **अष्टदल** में ब्राह्मी, माहेश्वरी, वैष्णवी, कौमारी, इन्द्राणी, महालक्ष्मी, वाराही एवं चामुण्डा का पूजन करें।
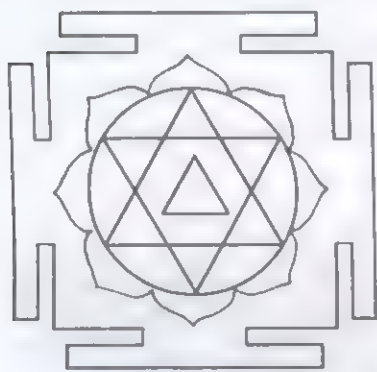
भूपूर (परिधि जो चार द्वार युक्त होती है।)में इन्द्रादि दश दिक्पालों व उनके अस्त्रों का पूजन करें।

प्रयोग विधान – इस मंत्र के छ: लाख जप करे, अष्टाक्षर मंत्र आठ लाख जप कर दशांश होम करें। अपामार्ग,ढाक, निर्गुण्डी एवं आरग्वध की समिधाओं को धृत व पंचगव्य से संप्रोक्षित कर होम करे तो प्रेतादि व बालग्रहादि विघ्न दूर होते है।

इसके मंत्र से अभिमंत्रित जल को पीड़ित व्यक्ति को पिलाया जाये तो ग्रह रुदन करता हुआ उसके शरीर का त्याग कर देता है।

गज शांति व अश्वशांति हेतु प्रयोग गजशाला व अश्वशाला में बैठकर होम करे।

॥ पाशुपतास्त्र स्तोत्रम् ॥

ॐ नमो भगवते महापाशुपतायातुलबलवीर्यपराक्रमाय त्रिपञ्चनयनाय नानारूपाय नानाप्रहरणोद्यताय सर्वाङ्गरक्ताय भिन्नाञ्जनचयप्रख्याय श्मशान वेतालप्रियाय सर्वविघ्ननिकृन्तन-रताय सर्वसिद्धिप्रदाय भक्तानुकम्पिने ऽसंख्यवक्त्रभुजपादाय तस्मिन् सिद्धाय वेतालवित्रासिने शाकिनीक्षोभ जनकाय व्याधिनिग्रहकारिणे पापभञ्जनाय सूर्यसोमाग्निनेत्राय विष्णु- कवचाय खड्गवज्रहस्ताय यमदण्डवरुणपाशाय रुद्रशूलाय ज्वलज्जिह्वाय सर्वरोगविद्रावणाय ग्रहनिग्रहकारिणे दुष्टनागक्षय-कारिणे।

ॐ कृष्णपिङ्गलाय फट्। हूंकारास्त्राय फट्। वज्र-हस्ताय फट्। शक्तये फट्। दण्डाय फट्। यमाय फट्। खड्गाय फट्। नैर्ऋताय फट्। वरुणाय फट्। वज्राय फट्। पाशाय फट्। ध्वजाय फट्। अङ्कुशाय फट्। गदायै फट्। कुबेराय फट्। त्रिशूलाय फट्। मुद्गराय फट्। चक्राय फट्। पद्माय फट्। नागास्त्राय फट्।ईशानाय फट्। खेटकास्त्राय फट्। मुण्डाय फट्। मुण्डास्त्राय

फट्। कङ्कालास्त्राय फट्। पिच्छिकास्त्राय फट्। क्षुरिकास्त्राय फट्। ब्रह्मास्त्राय फट्। शक्त्यस्त्राय फट्। गणास्त्राय फट्। सिद्धास्त्राय फट्। पिलिपिच्छास्त्राय फट्। गन्धर्वास्त्राय फट्। पूर्वास्त्रायै फट्। दक्षिणास्त्राय फट्। वामास्त्राय फट्। पश्चिमास्त्राय फट्। मंत्रास्त्राय फट्। शाकिन्यास्त्राय फट्। योगिन्यस्त्राय फट्। दण्डास्त्राय फट्। महादण्डास्त्राय फट्। नमोऽस्त्राय फट्। शिवास्त्राय फट्। ईशानास्त्राय फट्। पुरुषास्त्राय फट्। अघोरास्त्राय फट्। सद्योजातास्त्राय फट्। हृदयास्त्राय फट्। महास्त्राय फट्। गरुडास्त्राय फट्। राक्षसास्त्राय फट्। दानवास्त्राय फट्। क्षौ नरसिंहास्त्राय फट्। त्वष्ट्रस्त्राय फट्। सर्वास्त्राय फट्। नःफट्। वःफट्। पःफट्। फः फट्। मः फट्। श्रीः फट्। पेः फट्। भूः फट्। भुवः फट्। स्वः फट्। महः फट्। जनः फट्। तपः फट्। सत्यं फट्। सर्वलोक फट्। सर्वपाताल फट्। सर्वतत्व फट्। सर्वप्राण फट्। सर्वनाडी फट्। सर्वकारण फट्। सर्वदेव फट्। ह्रीं फट्। श्रीं फट्। डूं फट्। स्त्रुं फट्। स्वां फट्। लां फट्। वैराग्याय फट्। मायास्त्राय फट्। कामास्त्राय फट्। क्षेत्रपालास्त्राय फट्। हुंकरास्त्राय फट्। भास्करास्त्राय फट्। चन्द्रास्त्राय फट्। विघ्नेश्वरास्त्राय फट्। गौः गां फट्। स्त्रों स्त्रौं फट्। हौं हों फट्। भ्रामय भ्रामय फट्। संतापय संतापय फट्। छादय छादय फट्। उन्मूलय उन्मूलय फट्। त्रासय त्रासय फट्। संजीवय संजीवय फट्। विद्रावय विद्रावय फट्। सर्वदुरितं नाशय नाशय फट्।

इस पाशुपत-मंत्र की एक बार आवृति करने से ही यह मनुष्य सम्पूर्ण विघ्नों का नाश कर सकता है, सौ आवृतियों से समस्त उत्पातो को नष्ट कर सकता है तथा युद्ध आदि में विजय पा सकता है।

इस मंत्र द्वारा घी और गुग्गुल के होम से मनुष्य असाध्य कार्यो को भी सिद्ध कर सकता है। इस पाशुपतास्त्र-मंत्र के पाठमात्र से समस्त क्लेशो की शांति हो जाती है॥

॥ आग्नेय महापुराणे- तीन सौ बाईसवाँ अध्याय॥

॥ खड्गरावण प्रयोगः॥

खड्गरावण का प्रयोग शत्रु द्रोह व कृत्याद्रोह का नाश करने वाला है।

रावण विजयपताका यन्त्र भी विशेष प्रभावशाली होता है। खड्गरावण मन्त्र इस प्रकार है -

१. सप्तत्यूर्ध्व शताक्षर मन्त्रः (१७० अक्षर) **ॐ नमः पशुपतये ॐ नमो भूताधिपतये ॐ नमो रुद्राय ॐ नमो रुद्राय खड्गरावण विहर विहर सरसर नृत्य नृत्य श्मशानभस्मार्चितशरीराय घण्टाकपालमालादिधराय व्याघ्रचर्म परिधानाय शशाङ्कृतशखराय कृष्णसर्पयज्ञोपवीतिने चल चल वल्गु वल्गु अनिवर्त्त कपालिने हन हन भूतान् त्रासय त्रासय कट कट रुद्र! अङ्कुशेन शमय प्रवेशय प्रवेशय आवेशय आवेशय चण्डासि धराधिपति रुद्र! ज्ञापय स्वाहा।**

शारदा तिलक में खड्गरावण का पूजा मन्त्र **''भूताधिपतये स्वाहा''** का उल्लेख है।

इसका प्रधान बीज मंत्र '**खौं**' कहा है।

२. चतुस्सप्तत्यूर्ध्व शताक्षर मन्त्र - (१७४ अक्षर मंत्र) **ॐ नमो भगवते पशुपतये ॐ नमो भूताधिपतये ॐ नमो रुद्राय खड्गरावण लं लं विहर विहर सर सर नृत्य नृत्य व्यसनं भस्मार्चित शरीराय घण्टा कपाल-मालाधराय व्याघ्रचर्मपरिधानाय शशांककृतशेखराय कृष्णसर्प यज्ञोपवीतिने चल चल बल बल अतिवर्तिकपालिने जहि जहि भूतान् नाशय नाशय मण्डलाय फट् फट् रुद्राङ्कुशेन शमय शमय प्रवेशय प्रवेशय आवेणय आवेणय रक्षांसि धराधिपति रुद्रो ज्ञापयति स्वाहा।**

विनियोगः - **ॐ अस्य मन्त्रस्य रावण ऋषिः, अमित छन्दः, खड्गरावण देवता , परमन्त्र परतन्त्र परकृत्या भूतद्रोह ग्रहादि द्रोह शमनार्थे जपे विनियोगः।**

मूर्तिन्यासः - **ॐ खं ईशानाय नमः मूर्ध्नि, ॐ खीं तत्पुरुषाय नमः हृदये, ॐ खूं अघोराय नमः नाभौ, ॐ खें सद्योजाताय नमः गुह्ये, ॐ खौं वामदेवाय नमः पादयोः।**

पुनः यही न्यास उर्ध्वादि पांच मुखों में करे।

षडङ्गन्यासः - **खां, खीं, खूं, खें, खौं, खः** से अङ्गन्यास व करन्यास करें।

॥ अथ यन्त्रार्चनम् ॥

भद्रपीठ (मण्ड़ल) पर धर्मादि पीठ देवताओं का आवाहन कर वामा, ज्येष्ठा, रौद्री, इच्छा व ज्वालामालिनी पीठशक्तियों का आवाहन कर उस पर यन्त्र को शुद्ध कर रखें।

यन्त्रमध्य में - **ॐ भूताधिपतये स्वाहा** से अर्चन करें।

प्रथमावरणम् - (षट्कोणे) **ॐ खां हृदयाय नमः। ॐ खीं शिरसे स्वाहा। ॐ खूं शिखायै वषट्। ॐ खें कवचाय हुं। ॐ खौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ खः अस्त्राय फट्।** से षड्ङ्गशक्तियों का अर्चन करें।
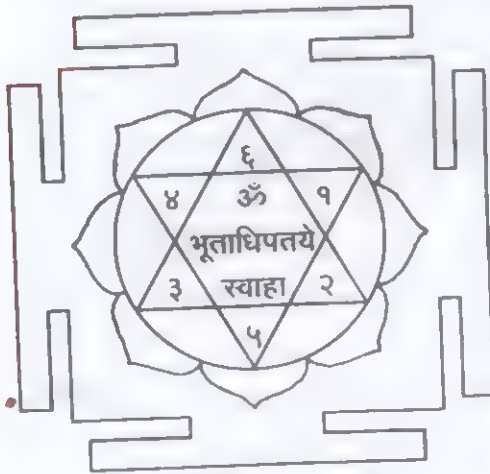
खड्गरावण यंत्रम्

द्वितीयावरणम् - (अष्टदल मूले) पूर्वादिक्रमेण - **ॐ चुलुकुण्डायै नमः। ॐ प्रज्वलिन्यै (प्रस्खलिन्यै) नमः। ॐ कृष्णपिङ्गलायै नमः। ॐ फल्गुन्यै नमः। ॐ टिरिटिल्लयै नमः। ॐ मन्त्रमालिकायै नमः। ॐ शंखिन्यै नमः। ॐ चन्द्रांकित्यै नमः।** ये सभी खड्गरावण की वल्लभायें है।

तृतीयावरणम् - (अष्टदलेपत्राग्रे) - **ॐ ऐन्द्रयै नमः। ॐ कौमारिकायै नमः। ॐ ब्राह्मयै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वैनायिक्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः।**

चतुर्थावरणम् - अष्टदल के बाहर भूपुर में पूर्वादि चार दिशाओं में - **ॐ पूर्वे- रौद्रपिङ्गलाय नमः।** ॐ दक्षिणे - **श्मशान विभीषणाय नमः।** ॐ पश्चिमे- **द्वौ दृढकर्णाय नमः।** ॐ उत्तरे- **भृंगिरीटिकाय नमः।** ॐ आग्नेयां- **आमर्दकाय नमः।** ॐ नैऋत्यां - **महाकाजाय नमः।** ॐ वायवे **कुंभकर्णनाम्ने भल्लाटकाय नमः। ईशाने अशोक नाम्ने सिहारकाय नमः।**

पञ्चमावरणम् - इन्द्रादि दिक्पालों का उनके आयुधों सहित पूजन करें।

प्रयोगान्तरः - दो अयुत जप करके घृत पायस से दशांश होम करें। फिर भूताधिपति के लिए राजस व पञ्चक्रान्ध बलि (तामस बलि) प्रदान करें।

भूतों के विग्रह करने के साधन में यह सर्वश्रेष्ठ मन्त्र कहा है अर्थात् अन्य कोई दूसरा मन्त्र ही विद्यमान नहीं है।

॥ अथ शिवपरिवार देवतानां ध्यानम् ॥

वृषभम् - हिमालयाभं वृषभं तीक्ष्णश्रृङ्गं त्रिलोचनम् ।
सर्वाभरण संदीप्तं साक्षाच्छब्द स्वरूपिणाम् ॥

नन्दी - नन्दिनं पूजयेत्सौम्यं रत्नभूषणमण्डितम् ।
परश्वेण वराभीतिधारणं श्यामविग्रहम् ॥

विध्नेश - पाशांकुश वराभीष्टधारिणं कुंकुमप्रभम् ।
विघ्ननानायकमभ्यर्चैच्चन्द्रार्द्ध कृतशेखरम् ॥

षण्मुख - कल्पशाखां रत्नघण्टां दधानं द्वादशेक्षणम् ।
बालार्काभं शिशुं कान्तं षण्मुखं त्वां भजाम्यहम् ॥

दुर्गा - चक्र शंखभयाभीष्टकरां मरकतप्रभाम् ।
दुर्गां प्रपूजयेत्सौम्यां त्रिनेत्रां चारुभूषणाम ॥

चण्डेश - शूल टङ्काक्ष वलय कमण्डलु लसत्करम् ।
रक्ताकांर त्रिनयनं चण्डेशमथ भावयेत् ॥

क्षेत्रपाल - कपालशूलविलसत्करं कालघनप्रभम् ।
क्षेत्रपालं त्रिनयनं दिगम्बरमथार्चयेत् ॥

सेनापति - श्यामं रक्तोत्पलकरं वामाङ्कन्यस्त तत्करम् ।
त्रिनेत्रं रक्तावस्त्राढयं सेनापतिं नमाम्यहम् ॥

॥ कुबेर यन्त्रपूजनम् ॥

कुबेर को धन्य-धान्य, समृद्धि का प्रतीक एवं वित्तमंत्री भी कहा गया है। इनकी उपासना तो देवताओं को भी करनी पड़ी है। निर्धनता दूर करने के लिये कुबेर की साधना सर्वोत्तम मानी गयी है। इसकी उपासना के लिये कुबेर यंत्र की आवश्यकता होती है। इनके मंत्र का जाप स्त्री-पुरूष कोई भी कर सकता है। यदि किसी कारण वश स्वयं के द्वारा संभव नही हो तो, योग्य विद्वान के द्वारा भी करवाया जा सकता है।

घर के पूजा स्थान में महालक्ष्मी का चित्र लगाकर उनकी विधिवत् पूजाकर उनका आवाहन करना चाहिये तदुपरान्त पास हि कुबेर यंत्र कि स्थापना करें। यंत्र का निर्माण सुवर्ण व्यक्ति के द्वारा विजयकाल में ही करे। फिर यंत्र का षोडशोपचार एवं पूजन कर प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिये। किसी भी बुधवार को प्रातः समय, सूर्योदय के समय में इसकी स्थापना करे। इसके बाद गणपति मंत्र का १०८ बार जप करके निम्नलिखित मंत्र का जाप करे, इस मंत्र का एक लक्ष जप करे। धोती पहने एवं मंत्र जाप करते समय मुख पूर्व या उत्तर की तरफ करे, मंत्र जाप कमल गट्टे की माला से हि करें।

मंत्र - ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

१. अष्टाक्षर मंत्र - ॐ वैश्रवणाय स्वाहा

ध्यानम्–

धनपूर्णं स्वर्णकुंभ तथा रत्नकरण्डकं
हस्ताभ्यां विप्लुतं खर्वकर पादं च तुन्दिलम् ।
वटाधस्ताद् रत्नपीठोपविष्टं सुस्मिताननं
होमकाले कुबेरं तु चिन्तयेदग्नि मधागम् ॥

२. षोडशाक्षर मंत्र - ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः।

इसे कुबेर का सर्वदारिद्र्यनाशक मंत्र कहा है।

विनियोगः - **ॐ अस्य श्री कुबेरमंत्रस्य, विश्रवाऋषिः, बृहतीछंदः, शिवमित्रधनेश्वरो देवता, ममात्मनोऽभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - **ॐ विश्रवाऋषये नमः शिरसि। वृहती छंदसे नमः मुखे। शिवमित्रधनेश्वर देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥**

षड्ङ्गन्यासः - **ॐ श्रीं ॐ हृदयाय नमः। ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रीं क्लीं शिखायै वषट्। श्रीं क्लीं कवचाय हुं। वित्तेश्वराय नेत्रत्रयाय वौषट्। नमः अस्त्राय फट्।**

इसी तरह करन्यास करे।

३. पञ्चत्रिंशदक्षर मंत्रः - यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये

धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा।

विनियोग:- विनियोग पूर्ववत् है। देवता शिवमित्र कुबेर है।

४. षड्त्रिंशदक्षर मंत्र: - पूर्वोक्त मंत्र के आगे ॐ या ह्रीं, श्रीं इत्यादि कोई बीजाक्षर लगाने से छत्तीस अक्षर का मंत्र हो जाता है ।

षडङ्गन्यास: - **यक्षाय हृदयाय नम:। कुबेराय शिरसे स्वाहा। वैश्रवणाय शिखायै वषट्। धनधान्याधिपतये कवचाय हुं। धनधान्यसमृद्धिं मे नेत्रत्रयाय वौषट्। देहि दापय स्वाहा अस्त्राय फट्।**

ध्यानम्:-

मनुजवाह्य विमानवरस्थितं गरुडरत्ननिभं निधिनायकम् ।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वर-गदे-दधतं भज तुन्दिलम् ॥

यंत्र पूजनम्:- सर्वतोभद्रमण्डल पर कुबेरयंत्र स्थापित करें।

ॐ धर्मादिपरतत्वांतपीठदेवताभ्यो नम: से पीठ देवताओं का पूजन कर यंत्र को शोधित कर रखे।

पुष्पांजलि देकर हाथ जोड़कर यंत्रार्चन की आज्ञा मांगे।

ॐ संविन्मय: परो देव: परामृतरसप्रिय:। अनुज्ञां देहि धनद परिवारार्चनाय मे।

यंत्र मंत्र में कुबेर का ध्यान पूर्वक आवाहन करें।

प्रथमावरणम् - (षटकोणे)-(आग्नेयां) **ॐ यक्षाय हृदयायनम:। हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नम:।** (नैऋत्यां) **ॐ कुबेराय शिरसे स्वाहा, शिर: श्री पा. पू. तर्प। वायव्यां ॐ वैश्रवणाय शिखायै वषट् शिखा श्री पा.।** (ईशाने) **ॐ धनधान्याधिपतये कवचाय हुं, कवच श्री पा.।** (पूर्वे) **ॐ धनधान्यसमृद्धि में नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्र श्री पा.।** (दिक्षु) **ॐ देहि दापय स्वाहा अस्त्राय फट् अस्त्र श्री पा.।**
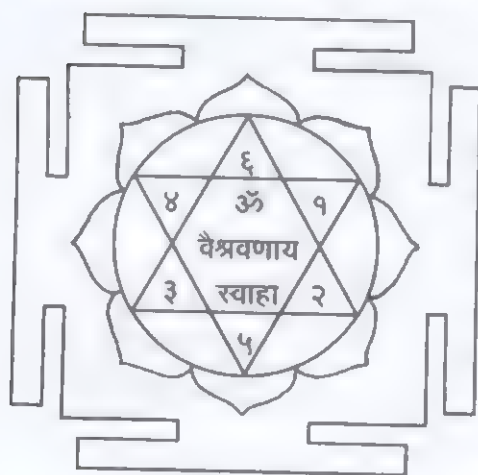
कुबेर यंत्रम्

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या सभर्पयेतुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

इस प्रकार प्रत्येक आवरण पूजा में पुष्पांजलि देवे एवं जल छोड़कर कहें **पूजिताः तर्पिताः सन्तु।**

द्वितीयावरणम्- अष्टदल में अष्टकुबेरमूर्ति की पूजा करे- **ॐ यक्षाय नमः। वैश्रवणाय नमः। धनदाय नमः। वित्तेश्वराय नमः। धनाध्यक्षाय नमः। निधिनायकाय नमः। धान्याधिपतये नमः। शिवसखाय नमः।** पुष्पांजलि देवें।

तृतीयावरणम् - अष्टदल के बाहर भूपूर (चार द्वार युक्त परिधि) में पूर्वे- **इन्द्राय नमः।** आग्नेयां- **अग्नये नमः।** दक्षिणे **यमाय नमः।** नैऋत्यां-**नैऋतये नमः।** पश्चिमे **वरुणाय नमः।** वायव्यां- **वायवे नमः।** उत्तरे **सोमाय नमः।** ऐशान्यां-**ईशानाय नमः।** पूर्व ईशान मध्ये - **ब्रह्मणेनमः।** पश्चिम नैऋत मध्ये **अनन्ताय नमः।**

चतुर्थावरणम्- पूर्वादि क्रम से दिक्पालों के आयुधों का पूजन करे - **ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अङ्कुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।**

इस प्रकार यंत्रार्चन कर पुष्पांजलि देवें।

शिवालये जपेन्मंत्रयुत धनवृद्धये॥ बिल्वमूलोपविष्टेन जप्तो लक्षं धनिद्धिदः।

॥ अथ रुद्रचण्डी प्रयोगः॥

यद्यपि यह प्रयोग अनुष्ठान कर्म के देवीखण्ड में देते परन्तु शिव के हृदय में विराजमान इस देवी का प्रयोग रुद्र के साथ देना उचित समझा अतः मंत्र व स्तोत्र दोनो प्रयोग यहाँ पर दिये जा रहे है।

नवाक्षरः- **ॐ ऐं ह्रीं ॐ क्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं ह्रीं।**

विनियोगः- (त्रैलोक्य विजय कवच अन्तर्गत) **अस्य श्री रुद्रचण्डी मंत्रस्य रुद्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री रुद्रचण्डी देवता ह्रीं बीजं चतुर्वर्ग साधने जपे विनियोगः।**

षडंगन्यास - **ह्रां, ह्रीं, ह्रूं , ह्रैं, ह्रौं, ह्रः** इन छः विभागो से अंगन्यास

करन्यास करें।

ध्यानम्–

ॐ रक्तवर्णां महादेवी लसच्चन्द्रविभूषितां ।
पट्टवस्त्रपरीधानां स्वर्णालङ्कारभूषितम् ।
वराभयकरां देवीं मुण्डमालाविभूषितां ।
कोटिचन्द्रसमासीनां वदनैः शोभितां पराम् ॥
करालवदनां देवीं किञ्चिज्जिह्वां च लोलितां
स्वर्णवर्णमहादेव – हृदयोपरि-संस्थिताम् ।
अक्षमालाधरां देवीं जपकर्मसमाहिताम्
वांछितार्थप्रदायिनीं रुद्रचण्ड़ीमहं भजे ॥

॥ रुद्रचण्डीस्तोत्र पाठ ॥ (रुद्रयामलोक्त)

इस स्तोत्र का रुद्र पाठ या सहस्त्रधारा रुद्राभिषेक के समय भी पठन किया जा सकता है, तंत्र में कहा गया है कि पुरुष देवता के साथ स्त्री देवता के तद् दशांश जप तो होने ही चाहिये।

प्रस्तुत स्तोत्र में अन्यत्र पाठ भेदों को समाहित करने से श्लोक संख्या अधिक है तथा कई स्तोत्रो में प्रयोग विधि मध्य में है प्रस्तुत श्लोक में प्रारम्भ में है।

॥ श्रीशंकर उवाच ॥

चण्डिका हृदयं न्यस्य शरणं यः करोत्यपि ।
अनन्तफलमाप्नोति देवी चण्डीप्रसादतः ॥१॥
रविवारे यदा चण्डीं पठेदागमसंमताम् ।
नवावृति फलं तस्य जायत्रे नात्र संशयः ॥२॥
सोमवारे यदाचण्डीं पठेद्यस्तु समाहितः ।
सहस्त्रावृत्तिपाठस्य फलं जानीहि सुव्रते ॥३॥
कुजवारे जगद्धात्रीं पठेदागमसंमताम् ।
शतावृत्तिफलं बुधेलक्षध्रुवम् ॥४॥
गुरौ यदि महामाये लक्षयुग्म फलं ध्रुवम् ।
शुक्रे देवी जगद्धात्रि चण्डीपाठेन शंकरि ॥५॥
ज्ञेयं तुल्यं फलं दुर्गे यदि चण्डी समाहितः ।
शनिवारे जगद्धात्री कोट्यावृत्तिफलं ध्रुवम् ॥६॥

अत एव महेशानि यो वै चण्डीं समभ्यसेत् ।
ससद्यश्च कृतार्थश्च राजराजाधिपो भवेत् ॥७॥
आरोग्यं विजयं सौख्यं वस्त्ररत्न - प्रवालकम् ।
पठनाच्छ्रवणाच्चैव जायते नात्र संशयः ॥८॥
धनं धान्यं प्रवालं च वस्त्रं रत्न विभूषणम् ।
चण्डीश्रवण मात्रेण कुर्यात्सर्वं महेश्वरी ॥९॥

॥ स्तोत्रम् ॥

घोरचण्डी महाचण्डी चण्डमुण्डविखण्डिनी ।
चतुर्वक्त्रा महावीर्या महादेव विभूषिता ॥१०॥
रक्तदंता वरारोहा महिषासुरमर्दिनी ।
तारणी जननी दुर्गा चण्डिका चण्डविक्रमा ॥११॥
गुह्यकाली जगद्धात्री चण्डी च यामलोद्भवा ।
श्मशानवासिनी देवी घोरचण्डी भयानका ॥१२॥
शिवाघोरा रुद्रचण्डी महेशा गणभूषिता ।
जाह्नवी परमा कृष्णा महात्रिपुरसुन्दरी ॥१३॥
श्रीविद्या परमाविद्या चण्डिका वैरिमर्दिनी ।
दुर्गा दुर्गं शिवा घोरा चण्डहस्ता प्रचण्डिका ॥१४॥
माहेशी बगला देवी भैरवी चण्डविक्रमा ।
प्रमथैर्भूषिता कृष्णा चामुण्डा मुण्डमर्दिनी ॥१५॥
रणखण्डा चन्द्रघण्टा रणरामवरप्रदा ।
भारणी भद्रकाली च शिवाघोरभयानका ॥१६॥
विष्णुप्रिया महामाया नन्दगोपगृहोद्भवा ।
मङ्गला जननी चण्डीं महाक्रुद्धभयंकरी ॥१७॥
विमला भैरवी निद्रा जातिरूपा मनोहरा ।
तृष्णा निद्रा क्षुधा माया शक्तिर्मायामनोहरा ॥१८॥
तस्यै देव्यै नमस्तस्यै सर्वरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥
इमां चण्डीं जगद्धात्रीं ब्राह्मणस्तु सदा पठेत् ।
नान्यांस्तु पाठयेद्देवि पठने ब्रह्महा भवेत् ॥२०॥

यः शृणोति धरायां च मुच्यते सर्वपातकैः ।
ब्रह्महत्या च गोहत्या स्त्रीवधोद्भवपातकम् ॥२१॥
श्वश्रूगमनपापं च कन्यागमनपातकम् ।
तत्सर्वं पातकं दुर्गे मातृगमन पातकम् ॥२२॥
सुतस्त्रीगमने चैव यद्यत्पापं प्रजायते ।
परदारकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥२३॥
जन्मजन्मान्तरात्पापाद् गुरुहत्यादिपातकम् ।
मुच्यते मुच्यते देवि गुरुपत्नीसुसंगमात् ॥२४॥
मनसा वचसा पापं यत्पापं ब्रह्महिंसने ।
मिथ्यायाश्चैव यत्पापं तत्पापं नश्यति क्षणात् ॥२५॥
श्रवणं पठनं चैव यः करोति धरातले ।
स धनश्च कृतार्थश्च राजराजाधिपो भवेत् ॥२६॥
यः करिष्यत्यविज्ञाय रुद्रयामल चण्डिकाम् ।
पापैरेतैः समायुक्तो रौरवं नरकं व्रजेत् ॥२७॥
अश्रद्धया च कुर्वन्ति ते च पातकिनो नराः ।
रौरवं नरकं कुण्डं कृमिकुण्डं मलस्य वै ॥२८॥
शुक्रस्य कुण्डं स्त्रीकुण्डं यान्ति ते ह्यचिरेण वै ।
ततः पितृगणैः सार्धं विष्ठाया जायते कृमिः ॥२९॥
शृणु देवि महामाये चण्डीपाठं करोति यः ।
गङ्गायां चैव यत्पुण्यं काश्यां विश्वेश्वराग्रतः ॥३०॥
प्रयोगे मुण्डने चैव हरिद्वारे हरेर्गृहे ।
तस्यपुण्यं भवेद्देवि सत्यं दुर्गे रमे शिवे ॥३१॥
त्रिगयायां त्रिकाश्यां वै यच्च पुण्यं समुत्थितम् ।
तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं न संशयः ॥३२॥

(अन्यश्च)–

भवानी च भवानी च भवानी चोच्यते बुधैः ।
भकारस्तु भकारस्तु भकारः केवलः शिवः ॥३३॥
वाणी चैव जगद्धात्री वरारोहे भकारकः ।
प्रेतवद्देवि विश्वेशि भकारः प्रेतवत्सदा ॥३४॥

आरोग्यं च जयं पुण्यं नातः सुखविवर्धनम् ।
धनं पुत्र जरारोग्यं कुष्ठं गलितनाशनम् ॥३५॥
अर्धांगरोगन्मुच्यते दद्रुरोगाच्च पार्वति ।
सत्यं सत्यं जगद्धात्रि महामाये शिवे शिवे ॥३६॥
चण्डे चण्डि महारावे चण्डिका व्याधिनाशिनी ।
मन्दे दिने महेशानि विशेषफलदायिनी ॥३७॥
सर्वदुःखादिमुच्यते भक्त्या चण्डीं शृणोति यः ।
ब्राह्मणो हितकारी च पठेन्नियतमानसः ॥३८॥
मङ्गलं मङ्गलं ज्ञेयं मङ्गलं जयमङ्गलम् ।
भवेद्धि पुत्रपौत्रैश्च कन्यादासादिभिर्युतः ॥३९॥
तत्त्वज्ञानेन निधनकाले निर्वाणमाप्नुयात् ।
मणिदानोद्भवं पुण्यं तुलाहिरण्यके तथा ॥४०॥
चण्डीश्रवणमात्रेण पठनाद् ब्राह्मणोऽपि च ।
निर्वाणमेति देवेशि महास्वस्त्ययने हितः ॥४१॥
सर्वत्र विजयं याति श्रवणाद् ग्रहदोषतः ।
मुच्यते च जगद्धात्रि राजराजाधिपो भवेत् ॥४२॥
महाचण्डी शिवा घोरा महाभीमा भयानका ।
कांचनी कमला विद्या महारोगविमर्दिनी ॥४३॥
गुह्यचण्डी घोरचण्डी चण्डी त्रलोक्यदुर्लभा ।
देवानां दुर्लभा चण्डी रुद्रयामल संमता ॥४४॥
अप्रकाश्या महादेवी प्रिया रावणमर्दिनी ।
मत्स्यप्रिया मांसरता मत्स्यमांसबलिप्रिया ॥४५॥
मदमत्ता महानित्या भूतप्रमथसंगता ।
महाभागा महारामा धान्यदा धनरत्नदा ॥४६॥
वस्त्रदा मणिराज्यादि-सदाविषयवर्द्धिनी ।
मुक्तिदा सर्वदा चण्डी महाविपदनाशिनी ॥४७॥
इमां हि चण्डीं पठतेमनुष्यः शृणोति भक्ता परमां शिवस्य ।
चण्डीं धरण्यामतिपुण्ययुक्तां स वै न गच्छेत्परमंदिरं किल ॥४८॥

जप्यं मनोरथं दुर्गे तनोति धरणीतले ।
रुद्रचण्डीप्रसादेन किं न सिद्ध्यति भूतले ॥४९॥
रुद्रध्येया रुद्ररूपा रुद्राणी रुद्रवल्लभा ।
रुद्रशक्ति रुद्ररूपा रुद्रमुख समन्विता ॥५०॥
शिवचण्डी महाचण्डी शिवप्रेतगणान्विता ।
भैरवी परमा विद्या महाविद्या च षोडशी ॥५१॥
सुन्दरी परमा पूज्या महात्रिपुर सुन्दरी ।
गुह्यकाली भद्रकाली महाकालविमर्दिनी ॥५२॥
कृष्णा तृष्णा स्वरूपा सा जगन्मोहनकारिणी ।
अतिमंत्रा महालज्जा सर्वमङ्गलदायिनि ॥५३॥
घोरतन्त्री भीमरूपा भीमादेवी मनोहरा ।
मंगला बगला सिद्धिदायिनी सर्वदा शिवा ॥५४॥
स्मृतिरूपा कीर्तिरूपा योगाद्रैरपि सेविता ।
भयानका महादेवी भयदु:खविनाशिनी ॥५५॥
चण्डिका शक्तिहस्ता च कौमारी सर्वकामदा ।
वा ही च वाराहस्य इन्द्राणी शक्रपूजिता ॥५६॥
माहेश्वरी महेशस्य महेशगण भूषिता ।
चामुण्डा नारसिंही च नृसिंहशत्रुमर्दिनी ॥५७॥
सर्वशत्रुप्रशमनी सर्वारोग्य प्रदायिनी ।
इति सत्ये महादेवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥५८॥
नैवशोकं नैवरोगं नैवदु:खं भयं तथा ।
आरोग्यं मङ्गलं नित्यं करोति शुभमंगलम् ॥५९॥
महेशानि वरारोहे ब्रवीमि सत्यमुतमम् ।
अभक्तायन दातव्यं मम प्राणाधिकं शुभम् ॥६०॥
तव भक्ताय शान्ताय शिवविष्णुप्रियाय च ।
दद्यात्कदाचिद्देवेशि सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥६१॥
अनंतफलमाप्नोति शिवचण्डी प्रसादत: ।
अश्वमेघ वाजपेय राजसूय-शतानि च ॥६२॥

तुष्टाश्च पितरो देवास्तथा च सर्वदेवताः ।
दुर्गेयं मृन्मयी ज्ञानं रुद्रयामलपुस्तकम् ॥६३॥
मन्त्रमक्षरसंज्ञानं करोत्यपि नराधमः ।
अत एव महेशानि किं वक्ष्ये तव सन्निधौ ॥६४॥
लंबोदराधिकश्च चण्डीपठनाच्छ्रवणात्तु यः ।
तत्त्वमस्यादि वाक्येन मुक्तिं प्राप्नोति दुर्लभाम् ॥६५॥

॥ इति रुद्रयामलोक्त रुद्रचण्डी स्तोत्रम् ॥

॥ अथ श्रीत्रिशिरा देवी विधानम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीशत्रु विध्वंसिनी स्तोत्र मन्त्रस्य ज्वलत् पावकः ऋषिः , अनुष्टुप् छन्दः, श्रीशत्रुविध्वंसिनी देवता, मम शत्रुं शीघ्रं विध्वंसनार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - ज्वलत् पावक ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीशत्रु विध्वंसिनी देवतायै नमः हृदि। श्री शत्रुविध्वंसिनी देवता प्रसादात् मम शत्रुं शीघ्रं विध्वंसनार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास - ॐ शत्रु विध्वंसिन्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ रौद्रायै तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ त्रिशिरसे मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ रक्त लोचनायै अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ अग्निर्ज्वालायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ रौद्रमुख्यै करतल करपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यास - ॐ घोर दंष्ट्रायै हृदयाय नमः। ॐ त्रिशूलिन्यै शिरसे स्वाहा। ॐ दिगम्बर्यै शिखायै वषट्। ॐ मुक्त केश्यै कवचाय हुम्। ॐ रक्तपाण्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ महोदर्यै अस्त्राय फट्।

फट् से तालत्रय दें (तीन बार ताली बजायें) और 'ॐ रौद्रमुख्यै नमः' से दशों दिशाओं में चुटकी बजाकर दिग् बन्धन करें।

ध्यानम् :-

रक्ताङ्गीं शिववाहनां त्रिशिरसां रौद्री महाभैरवीम्
धूम्राक्षीं भव नाशिनीं घन निभां नीलालंकारकृताम् ।

खड्गं शूलं त्रिशूलं वराभय युतां ध्यात्वा कृताङ्गी महा
सर्वाङ्गी त्रिजटां महानलं निभां, ध्यायेत् पिनाकीं च ताम् ।

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ शत्रु विध्वंसिनी रौद्री त्रिशिरा रक्तलोचना ।
अग्निर्ज्वाला रौद्रमुखी, घोरदंष्ट्रा त्रिशूलिनी ॥
दिगम्बरी मुक्तकेशी, रक्त पाणिर्महोदरी ।
सर्वदा विप्लवे घोरे, शीघ्रं वश्यकरी द्विषाम् ॥

॥ फलश्रुति ॥

इदं स्तवं जपेन्नित्यं, विजयं शत्रुनाशनम् ।
सहस्त्रं त्रिदिनं कुर्यात्, कार्य सिद्धिर्न संशयः ॥
गुग्गुलं चन्दनं सर्पिः, होमयेत् सर्पिषाऽथवा ।
विवादे वाद संग्रामे, विजयं भवति ध्रुवम् ॥

हवन विधि अग्नि संस्कारं कृत्वा गुग्गुलुं, रक्त चंदनं घृताप्लुतं वा केवलं नाम चतुर्थ्यन्त नमः स्वाहा। इति विधानेन हवनं कुर्यात् प्रति नाम्ना।

॥ शत्रुविध्वंसिनी मन्त्र ॥

मन्त्र - **ॐ नमो भगवति चामुण्डे रक्त वाससे अप्रतिहत रूप पराक्रमे! अमुकं वधाय विचेतसे स्वाहा।**

शापोद्धार मन्त्र - "**ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं क्रों ऐं लोभाय मोहाय उत्कीलय स्वाहा**"

अग्नि मंत्र - **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं शत्रु भस्मं कुरु कुरु ॐ हूँ फट् स्वाहा।**

विशेष :- रक्षार्थ पाठ करने के बाद १ माला शापोद्धार, १००० **शत्रुविध्वंसिनी मन्त्र का जप** करे। ३ दिन में १००० बार **द्वादश नाम वाले स्तोत्र** का पाठ करें। विधिवत् हवन कुण्ड बनाकर अग्नि डालकर अग्निमन्त्र का १०८ जाप करे।

हवन विधि में उल्लेखित द्रव्यों पीलीसरसों, कटुतैल, निम्बपत्र, गुग्गुल आदि से अग्निमन्त्र पढ़ता हुआ १००० आहुतियाँ दें। इससे **मारण प्रयोग** कदापि नहीं करे। इससे अपना ही सर्वनाश होता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद आदि **दुर्वासना का मारण** करना उचित है।

॥ अथ सर्वरोगहरं श्रीमाहेश्वर कवचम् ॥

॥ राजोवाच ॥

अङ्गन्यासो यदुक्तो भो महेशाक्षर संयुतः ।
विधानं कीदृशं तस्य कर्तव्यः केन हेतुना ॥१॥
तद्वदस्व महाभाग विस्तरेण मामग्रतः ।

॥ भृगुरुवाच ॥

कवचं माहेश्वरं राजन्देवैरपि सुदुर्लभम् ।
यः करोति स्वगात्रेषु पूतात्मा स भवेन्नरः ॥२॥
कृत्वा न्यासमिमं यस्तु संग्रामं प्रविशेन्नरः ।
न शरास्तोमरास्तस्य खड्गशक्तिपरश्वधाः ॥३॥
प्रभवंति रिपोः क्वापि भवेच्छिवपराक्रमः ।
व्याधिग्रस्तस्तु यः कश्चित्कारयेच्चैव मार्जनम् ॥४॥
एकादशकुशैः साग्रैर्मुक्तो भवति नान्यथा ।
न भूता न पिशाचाश्च कूष्माण्डा न विनायकाः ॥५॥
शिवस्मरणमात्रेण न विशन्ति कलेवरम् ।

विनियोगः- ॐ नमः पञ्चवक्राय शशिसोमार्कनेत्राय भयार्तानामभयाय मम सर्वगात्ररक्षार्थे विनियोगः ।

॥ कवचम् ॥

ॐ ह्रौं ह्रां ह्रं मन्त्रेणानेन वृषगोमयभस्मनाम् ।
आमन्त्र्य ललाटे तिलकमादाय पठेत् ।
त्राहि मां देव दुष्प्रेक्ष शत्रूणां भयवर्द्धन ।
ॐ स्वच्छंदभैरवः प्राच्यामाग्नेय्यां शिखिलोचनः ॥१॥
भूतेशो दक्षिणे भागे नैर्ऋत्यां भीमदर्शनः ।
वारुण्यां वृषकेतुश्च वायौ रक्षतु शङ्करः ॥२॥
दिग्वासाः सौम्यतो नित्यमैशान्यां मदनान्तकः ।
वामदेवोर्ध्वतो रक्षेदधो रक्षेत्रिलोचनः ॥३॥
पुरारिः पुरतः पातु कपर्द्दी पातु पृष्ठतः ।
विश्वेशो दक्षिणेभागे वामे कालीपतिः सदा ॥४॥

महेश्वरः शिरोभागे भवो भाले सदैव तु ।
भ्रुवोर्मध्ये महातेजास्त्रिनेत्रो नेत्रयोर्द्वयोः ॥५॥
पिनाकी नासिकादेशे कर्णयोर्गिरिजापतिः ।
उग्रः कपोलयो रक्षेन्मुखदेशे महाभुजः ॥६॥
जिह्वायामन्धकध्वंसी दंतान् रक्षतु मृत्युजित् ।
नीलकंण्ठः सदा कण्ठे पृष्ठे कामाङ्गनाशनः ॥७॥
त्रिपुरारिः स्कंधदेशे बाह्वोश्च चन्द्रशेखरः ।
हस्तिचर्मधरो हस्ते नखाङ्गुलिषु शूलभृत् ॥८॥
भवानीशः पातु हृदि पातूदरकटी मृडः ।
गुदे लिङ्गे च मेढ्रे च नाभौ च प्रमथाधिपः ॥९॥
जंघोरुचरणे भीमः सर्वाङ्गे केशवप्रियः ।
रोमकूपे विरूपाक्षः शब्दस्पर्शे च योगवित् ॥१०॥
रक्तमज्जावसामांसशुक्रे वसुगणार्चितः ।
प्राणापानसमानेषूदानव्यानेषु धूर्जटिः ॥११॥
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन यत् ।
तत्सर्वे रक्ष मे देव व्याधि दुर्गज्वरादितः ॥१२॥
कार्य्यं कर्म्म त्विदं प्राज्ञैर्दीपं प्रज्वाल्य सर्पिषा ।
निवेद्य शिखिनेत्राय वारयेत्तु ह्युदङ्मुखम् ॥१३॥
ज्वरदाहपरिक्रांतं तथान्यव्याधिसंयुतम् ।
कुशैः संमार्ज्यसंमार्ज्य क्षिपेद्दीपशिखां ज्वरम् ॥१४॥
ऐकाहिकं द्व्याहिकं वा तृतीयकचतुर्थकम् ।
वातपित्तकफोद्भूतं सन्निपातोग्रतेजसम् ॥१५॥
अन्यं दुःखदुराधर्षकर्म्मजं चाभिचारिकम् ।
धातुस्थं कफसं मिश्रं विषमं कामसम्भवम् ॥१६॥
भूताभिषङ्गसंसर्ग भूतचेष्टादिसंस्थितम् ।
शिवाज्ञां घोरमन्द्रेण पूर्ववृत्तं स्वयं स्मर ॥१७॥
त्यज देहं मनुष्यस्य दीपं गच्छ महाज्वर ।
कृतं तु कवचं दिव्यं सर्वव्याधिभयार्द्दनम् ॥१८॥

न बाधंते व्याधयस्तं बालग्रहभयानि च ।
लूताविस्फोटकं घोरं शिरोर्तिच्छर्दिविग्रहम् ॥१९॥
कामलां क्षयकासं च गुल्माश्मरीभगंदराः ।
शूलोन्मादं च हृद्रोगयकृती पाण्डुविद्रधिम् ॥२०॥
अतिसारादिरोगांश्च डाकिनीपीडकग्रहान् ।
पामाविचर्चिकादद्रुकुष्ठ व्याधिविषार्दनम् ॥२१॥
स्मरणान्नाशयत्याशु कवचं शूलपाणिनः ।
यस्तु स्मरति नित्यं वै यस्तु धारयने नरः ॥२२॥
स मुक्तः सर्व पापेभ्यो वसेच्छिवपु चिरम् ।
संख्याव्रतस्य दानस्य यज्ञस्यास्तीह शास्त्रतः ॥२३॥
न संख्या विद्यते शम्भोः कवचस्मरणाद्यतः ।
तस्मात्सम्यगिदं सर्वैः सर्वकामफलप्रदम् ॥२४॥
श्रोतव्यं सततं भक्त्या कवचं सर्वकामिकम् ।
लिखितं तिष्ठते यस्य गृहे सम्यगनुत्तमम् ॥२५॥
न तत्र कलहोद्वेगो नाकालमरणं भवेत् ।
नाल्पप्रजाः स्त्रियस्तत्र न दौर्भाग्यं समाश्रिताः ॥२६॥
तस्मान्माहेश्वरं नाम कवचं देवगाणार्चितम् ।
श्रोतव्यं पठितव्यं च मंतव्यं भावुकप्रदम् ॥२७॥
श्रीमाहेश्वर कवचं सर्वव्याधिनिषूदनम् ।
यः पठेत्तु नरो नित्यं स व्रजेच्छाङ्करं पुरम् ॥२८॥

॥ इति सर्वव्याधिहरं श्रीमाहेश्वरकवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ दत्तात्रेय मन्त्र प्रयोगः ॥

१ एकाक्षरी मन्त्र – द्रां

यह एकाक्षरी उपनिषत् प्रोक्त मोक्षप्रद महामन्त्र है।

विनियोगः– अस्य श्रीदत्तात्रेयस्यैकाक्षरी मंत्रस्य सदाशिव ऋषिः, गायत्रीः छन्दः, श्रीचतुर्भुज-दत्तात्रेयो देवमा मम श्रीदत्तप्रसाद सिद्धये विनियोगः।

[illegible] द्रां, द्रीं, द्रूं, द्रैं, द्रौं, द्रः से करन्यास तथा अंगन्यास करें।

ध्यानम्–

सदानन्दात्मकं शुद्धं सात्त्विकं तारकं परम् ।
विश्वरूपं जगद्योनिं दत्तात्रेयं भजाम्यहम् ॥

२. षडक्षर मंत्र:– ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ग्लौं द्रां।

यह मंत्र "औपनिषद् मंत्र" कहलाता है। यह योग और सम्पत्ति की समृद्धि देने वाला है। इसके ऋष्यादि पूर्ववत् है। ४ अंगन्यास एक एक बीज से करन्यास एवं अंगन्यास करें।

ध्यानम्–

दत्तात्रेयं शिवं शान्तमिन्द्र नीलनिभं विभुम् ।
आत्ममायारतं देवमवधूतं दिगम्बरम् ॥
भस्मोद्धूलित सर्वाङ्गं जटाजूटधरं विभुम् ।
चतुर्बाहुमुदारांगं प्रफुल्ल कमलेक्षणम् ।
ज्ञानयोगनिधिं विश्वगुरुं योगिजनप्रियम् ॥
भक्तानुकम्पिनं देवं दत्तात्रेयमहं भजे ।

३ अष्टाक्षर मंत्र– द्रां दत्तात्रेयाय नमः।

इस मंत्र के ऋषि एवं छन्द पूर्ववत् है। न्यास द्रां बीज से पूर्व बताये गये अनुसार करें।

४ द्वादशाक्षरी मंत्र – आं ह्रीं क्रों द्रां एहि दत्तात्रेय स्वाहा।

यह सभी कामनाओं का पूरक तथा अमृत्व प्रदान करने वाला है।

विनियोग:– अस्य श्रीदत्तात्रेय द्वादशाक्षरी मंत्रस्य सदाशिव ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदत्तात्रेयो देवता, ॐ बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रीदत्तात्रेय कीलकं, मम श्रीदत्तप्रसाद सिद्धये जपे विनियोगः।

करन्यास:– आं ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्रों द्रां तर्जनीभ्यां नमः। एहि मध्यमाभ्यां नमः। दत्त अनामिकाभ्यां नमः। आत्रेय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास– उपर्युक्त मंत्र के दो-दो अक्षरो वाले छह खण्डों से ही [illegible] में ('हृदय से अस्त्राय फट्' तक) न्यास करें। ध्यान पूर्ववत् ही है

[illegible] ाक्षरी मंत्र– ॐ ऐं क्रों क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं हूं सौः दत्तात्रेया[illegible]

विनियोग:- **अस्य श्रीदत्त-षोडशाक्षरी मंत्रस्य सदाशिव ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदत्तात्रेयो देवता, ॐ बीजं, स्वाहा शक्तिः, दत्तात्रेयाय कीलकं, चतुर्विधपुरुषार्थ-प्राप्तये जपे विनियोगः**

ऋष्यादि न्यासः- **सदाशिव ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्रीदत्तात्रेय देवतायै नमः हृदये। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। दत्तात्रेयाय कीलकाय नमः नाभौ। चतुर्विधपुरुषार्थ प्राप्तये विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

अङ्गन्यास	करन्यास	षडङ्गन्यास
ॐ ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
क्रों	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
क्लां क्लीं क्लूं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
सौः	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
दत्तात्रेयाय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
स्वाहा	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

॥ द्वात्रिंशदक्षर मंत्र ॥

माया, कमण्डलु, वाद्य, त्रिशूल, शंख, और चक्र को छहों भुजाओं में धारण किये हुए, महर्षि अत्रि को वर देने वाले श्रीदत्तात्रेय का मैं भजन करता हूँ। ऐसा ध्यान करके फिर मंत्रजप करें।

मंत्र इस प्रकार है-

दत्तात्रेय हरे कृष्ण उन्मत्तानन्ददायक ।
दिगम्बर मुने बाल पिशाच ज्ञानसागर ॥

विनियोग:- **अस्य श्रीदत्तात्रेयानुष्टुप् मंत्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, षडभुजः श्रीदत्तात्रेयो देवताततप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **शिव ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। षडभुज श्रीदत्तात्रेय देवतायै नमः हृदये। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

हृदयादिन्यासः दत्तात्रेय (हृदये)। हरे कृष्ण (शिरसि)। उन्मत्त (शिखायाम्)। आनन्ददायक दिगम्बर (कण्ठे)। मुने (भुजयोः)। बाल (नेत्रयोः) पिशाच ज्ञानसागर (अस्त्राय फट्)।

करन्यासः- दत्तात्रेय (अंगुष्ठाभ्यां नमः)। हरे कृष्ण (तर्जनीभ्यां नमः)। उन्मत्त (मध्यमाभ्यां नमः)। आनन्ददायक दिगम्बर (अनामिकाभ्यां नमः)। मुने (कनिष्ठिकाभ्यां नमः)। बाल (करतलाय नमः) पिशाच ज्ञानसागर (करपृष्ठाभ्यां नमः)।

॥ ऋणनाशक दत्तात्रेय मंत्र ॥

विनियोगः - अस्य श्रीऋणनाशक दत्तमंत्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदत्तो देवता मम ऋणनाशनार्थे श्रीदत्तमंत्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः सदाशिव ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीदत्तदेवतायै नमः हृदये। मम ऋणनाशनार्थे श्रीदत्तमंत्र जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

अङ्गन्यास	करन्यास	षडङ्गन्यास
ॐ	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
द्रां	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ह्रां	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
क्लीं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
दत्तात्रेयाय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
स्वाहा	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

ध्यानम्—

रविमण्डलमध्यस्थं रक्तं रक्ताब्जसंस्थितम् ।
योगारूढं ज्ञानधनं दत्तात्रेयं नमाम्यहम् ॥

मूल मंत्र-

ॐ अत्रेरात्मप्रदानेन यो मुक्तो भगवान् ऋणात् ।
दत्तात्रेयं तमीशानं नमामि ऋणमुक्तये ॥

इस मंत्र के पाँच लाख जप करने से ऋण से मुक्ति मिलती है।

॥ अन्य सिद्ध मंत्र ॥

श्रीदत्तात्रेय भगवान् की स्वयं ब्रह्माजी ने तथा अन्य महर्षियों ने भी समय-समय पर अपनी इष्टसिद्धियों के लियें भिन्न-भिन्न मंत्रो से उपासनाऐं की है। अतः उनके द्वारा किये गये मंत्र भी अनेक प्रकार के तंत्रग्रंथो में प्राप्त होते है।

विनियोगः- अस्य श्रीदत्तात्रेयमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः,

श्रीदत्तात्रेयो देवता, आं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, मम श्रीदत्तात्रेय प्रसाद सिद्धये (अमुक कामना सिद्धये) जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्रीदत्तात्रेय देवतायै नमः हृदये। आं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्रौं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-षडंगन्यासः- क्रमशः आं, ह्रीं, क्रौं, आं, ह्रीं, क्रौं इन छह बीजो से करन्यास तथा हृदयादिन्यास पूर्वोक्त विधि से करें। ध्यान ऊपर लिखें अनुसार करें। मंत्र इस प्रकार है-

१ ॐ आं ह्रीं क्रौं एहि दत्तात्रेय स्वाहा।
२ ॐ दत्तात्रेयाय नमः
३ श्रीं ह्रीं क्लीं दत्तात्रेयाय स्वाहा।
४ द्रां दत्तात्रेयाय नमः।
५ द्रां ॐ दत्तात्रेयाय नमः।
६ द्रां (एकाक्षरी मंत्र) आदि।

इसके पश्चात् मानसिक पंचोपचार-पूजा करके ध्यान करें-

माया-कमण्डलु वाद्य-त्रिशूले शंखचक्रके ।
दधानमत्रिवरदं दत्तात्रेयं भजाम्यहम् ॥

✿विशेष -दत्तात्रेय का अन्य स्तोत्र मिश्रतन्त्र के अर्न्तगत दिया गया है। ✿

॥ दत्तात्रेय माला मंत्र ॥

अत्यन्त प्रभावशाली तथा समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला यह मालामंत्र श्रीविष्णु के द्वारा ब्रह्माजी को बताया गया था। इसके जप से चित्तशुद्धि, समदृष्टि, दोषों से मुक्ति एवं सभी प्रकार से उपकार करने की शक्ति प्राप्त होती है।

मालामंत्र - ॐ नमो भगवते दत्तात्रेयाय स्मरणमात्रसंतुष्टाय महाभयनिवारणाय महाज्ञानप्रदाय चिदानन्दात्मने बालोन्मत्त-पिशाचवेषाय महायोगिने अवधूताय अनुसूयानन्द-वर्धनायात्रिपुत्राय। ॐ भवबन्धविमोचनाय ह्रीं सर्वविभूतिदाय क्रों असाध्याकर्षणाय ऐं वाक्-प्रदाय क्लीं जगत्त्रय वशीकरणाय सौः सर्वमनःक्षोभणाय श्रीं महासम्पत्प्रदाय ग्लौं भूमण्डला-

धिपत्यप्रदाय द्रां चिरजीवने वषट् वशीकुरु वशीकुरु वौषट् आकर्षय-आकर्षय हुं विद्वेषय विद्वेषय फट् उच्चाटय उच्चाटय ठः ठः स्तम्भय स्तम्भय खें खें मारय मारय नमः सम्पन्नय सम्पन्नय स्वाहा पोषय पोषय परमंत्र-परयंत्र-परतंत्राणि छिन्धि-छिन्धि ग्रहान् निवारय निवारय व्याधीन् विनाशय विनाशय दुःखं हर हर दारिद्रयं विद्राव्य विद्राव्य देहं पोषय पोषय चित्तं तोषय तोषय सर्वमंत्रस्वरूपाय सर्वतंत्रस्वरूपाय सर्वपल्लवस्वरूपाय ॐ नमो महासिद्धाय स्वाहा।

॥ श्रीदत्त गायत्री मंत्र ॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीदत्तात्रेयमंत्रस्य शबर ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदत्तात्रेयो देवता, द्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकं, श्रीदत्तात्रेय प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- शबर ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्रीदत्तात्रेय देवतायै नमः हृदये। द्रां बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्रों कीलकाय नमः नाभौ। श्रीदत्तात्रेय प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

अङ्गन्यास	करन्यास	षडङ्गन्यास
द्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
द्रीं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
द्रूं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
द्रैं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
द्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
द्रः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

ध्यानम्–

रविमण्डलमध्यस्थं रक्तं रक्ताब्जसंस्थितम्।
योगारूढं ज्ञानधनं दत्तात्रेयमहं भजे ॥

दत्तगायत्री मंत्र- ॐ द्रां ह्रीं क्रों दत्तात्रेयाय विद्महे योगीश्वीराय धीमहि। तन्नो दत्तः प्रचोदयात्।

॥ इति शिवतन्त्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री शरभ शालुव पक्षिराज ॥

राजस्थान की एक प्रसिद्ध रियासत का भित्ति चित्र

॥ शरभ तन्त्रम् (रुद्रावतार)॥

(शरभ–शालुव–पक्षिराज–आकाशभैरव इत्यादि प्रख्यात नामानि)

(शत्रुसंहार विशेष प्रयोग)

शिव पुराण में शरभ की उत्पत्ति नृसिंह अवतार के समय बताया है। विष्णुपुराण में विष्णु की महिमा बताते हुये कहा गया है कि भक्त प्रह्लाद की स्तुति से नृसिंह का क्रोध शान्त हुआ। शिव पुराण में शिव की महिमा बताते हुये कथा है कि समस्त देवताओं ने शिव से प्रार्थना की तो शिवजी ने विशेष विचित्र पक्षी का रूप धारण किया जिसका मुँह उल्लू की तरह नेत्र में अग्नि सूर्य चन्द्र का वास था। धड़ मनुष्य की तरह जो चार हाथों में विशेष आयुध धारण किये हुये है, नख वज्र के समान तीखें है, दो पंख जिनमें काली व दुर्गा का निवास है, हृदय में जठरानल व पेट में बड़वानल अग्नि विराजमान है। कटिप्रदेश से बाद का भाग हिरण की तरह एवं पूंछ सिंह के समान लंबी है उरु में व्याधि एवं मृत्यु को धारण किये हुये है ऐसे शरभरूप पक्षिराज ने नृसिंह को चोंचमार मूर्छित कर दिया। अपनी पूंछ से दोनों पैर बाँध दिये, अपने दोनो पिछले पैर नृसिंह के पैरो पर रखें अग्रपादों को नृसिंह के वक्षस्थल पर तथा अपने हाथों से नृसिंह के हाथों को पकड़कर आकाश में उड़े पश्चात् नृसिंह ने शिवजी की स्तुति की एवं अपने स्वरूप का विसर्जन किया तो शिव ने उनकी चर्म को प्रिय मानकर बाघाम्बर धारण किया। ऐसी तन्त्र ग्रन्थों में कथा है।

अत: पक्षिराज शरभ का प्रयोग नृसिंह प्रयोग से भी घातक है। इसलिये इसके प्रयोग का अधिकारी उच्च साधक ही हो सकता है। यदि कार्यवश इस शत्रुसंहारक प्रयोग को करना पड़े तो उसे आत्मरक्षा कवच एवं मृत्युञ्जय प्रयोग का विधिवत साधन करने के बाद ही इसके जप करने चाहिये। अन्यथा प्रयोग कर्ता को हानि या असफलता हाथ लगेगी।

उच्चकोटि के साधक साधना के विघ्नो को शमन करने हेतु इसका प्रयोग करते हैं काम-क्रोधादि षट् रिपुओं का स्तम्भन करने व साधना के क्रम को आगे बढ़ाने में यह प्रयोग सहायक है।

'आकाश भैरव कल्प' में शरभराज या शालुव पक्षिराज नाम से कई विशेष प्रयोग दिये है।

पक्षिराज प्रयोग में वैष्णव उपासना में गरुड़ के प्रयोग दिये गये है जिन्हें भी मारण, मोहन, उच्चाटनादि षट्कर्मों के काम में लिया जाता है। इसलिये शरभपक्षिराज व गरुड़ प्रयोगों को गारुड़ी विद्या कहा गया है एवं इन्हें गुप्त रखने हेतु कहा गया है कि-

'गारुड़ी विद्या पिता पुत्रं न देय'

शरभ प्रयोग विषय में किवदंति है कि अकबर के समय में तत्कालीन राजस्थान की एक प्रसिद्ध रियासत के नरेश, जो अकबर के सेनापति भी थे। वे किसी भ्रांति के कारण आशंकित व भयक्रांत हो गये थे कि कहीं अकबर हम पर आक्रमण नहीं कर देवें। अत: भय व शत्रुनाश हेतु मारवाड़ से श्यामजी पाण्डे (संभव है माघजी पण्डित भी उन्हीं का नाम हो) के संरक्षण में शरभराज का प्रयोग किया गया।

श्यामजी पाण्डे अच्छे साधक थे उनको षोढ़ान्यास सिद्ध थे। (षोढ़ान्यास सिद्ध व्यक्ति किसी को नमस्कार नहीं कर सकता, ऐसा करने पर सामने वाला नष्ट हो जाता है उसके द्वारा मूर्ति को नमस्कार करने से मूर्ति खण्डित हो जाती है।) श्यामजी पाण्डे ने जप समाप्ती के पश्चात् हवन कर्म में जब शत्रु के पुतले की आहुति दी तो वह पुतला बाहर आ गया, ऐसा सात बार हुआ तब पण्डितजी ने ध्यान योग से कहा कि अभी ऐसा ईश्वरीय विधान है कि शत्रु की सात पीढ़ीयां राज्य करेगी, अगर तुम अपनी सात पीढ़ीयों के सुख का दान करते हो तो शत्रु की सात पीढ़ी सुख पूर्वक राज्य नहीं करेगी कोई आजीवन ताज का बादशाह नहीं होकर नहीं मरेगा तब सङ्कल्प करने पर प्रयोग सफल हुआ।

किवदंती के कथानक की सत्यता का ज्ञान तो ईश्वर को ही है, किन्तु उस समय का बनाया हुआ शरभ स्वर्णभित्तिचित्र आज भी जनानीड्योडी में मौजूद तथा तत्कालीन नरेश के बाद सातपीढ़ी सन्तान, सब 'गोद' ही आई तथा बाद मे वंशानुगत हुई। अकबर की पीढ़ीयां गृहयुद्ध व शत्रुयद्ध में उलझी रही ५ वीं पीढ़ी बाद नाममात्र के शासक रह गये।

मैनें स्वयं भी इसके प्रयोग साधना हेतु व अन्य कामना प्रयोग हेतु किये, सफल भी रहे।

नये साधक को प्रारंभकाल में गुस्सा, आवेश अधिक आता है, आँखें रक्तवर्ण की रहने लगती है, परन्तु बाद में अच्छा ध्यान लगने लग जाता है, चित्त में शान्ति व स्फुर्ति बनती है। उच्चकेन्द्रों में ध्यान लगकर उन्नति होती है, आर्थिक विकास साधारण रह सकता है।

इसके साथ कवच मन्त्रों का पाठ करना उचित होगा।

शरभ को अन्य नाम आकाश भैरव से भी जाना जाता है। यहां पक्षिराज मन्त्र प्रयोग के साथ कुछ अन्य स्तोत्र भी दिये जा रहे है। साधक सात्विक प्रयोग हेतु व साधना की उन्नति हेतु ही श्रेष्ठ गुरु के मार्गदर्शन में प्रयोग करें।

इसकी महिमा के लिये लिखा है कि -

संग्रामे शत्रवो दृष्ट्वा पलायन्ते च तत्क्षणात् ।
स्वर्गभूतल पाताल वासिनोऽमर्त्य मर्त्यकाः ॥
शालुवस्मरणादेव मरणं यात्यहेतुकम् ।
शालुवस्य प्रयोगेन त्रिमूर्तिर्नैव रक्षति ॥

अर्थात् शालुव पक्षिराज शरभ का प्रयोग किसी पर किया जाय तो स्वर्ग पाताल भूतल पर त्रिदेव ब्रह्मा विष्णु शिव भी रक्षा नहीं कर सकते हैं।

इसके प्रयोग के साथ रुद्रसूक्त का पाठ करने का भी उल्लेख है।

श्रीरुद्रसूतं प्रजेपत्रिवारं तथाखिलेशः परितुष्टहृत्स्यात् ॥
चमकोक्ताखिलं भाग्यं ददस्वाकाशभैरव ।
संतुष्ट हृदयस्तस्मै ददात्यैव न संशयः ।
तेन श्रीरुद्रसूक्तेन शिवालिङ्गाभिषेचनम् ।
कृत्वैकादशधा मन्त्री पूजयेत्सर्व सिद्धये ॥

अर्थात् साधक रुद्रसूक्त का ३ पाठ करे। चकमाध्याय के एकादश पाठ से रुद्राभिषेक करे तो शरभराज प्रसन्न होवे।

लेखक का अनुभव है कि सरसों के तैल से रुद्रसूक्त या पक्षिराज के स्तोत्र से अभिषेक किया जाय तो कठिन रोग तथा अभिचार पीड़ा दूर होती है।

सरसों के तैल से अभिषेक के बाद शान्ति हेतु पुनः दूग्ध, दही व सुगन्धित द्रव्य से भी अभिषेक करना चाहियें।

रुद्रसूक्त के अलावा अन्य सूक्तों का भी पठन करें -

श्रीसूक्तं घृतसूक्तं च भूसूक्तं पुरुषसूक्तम् ।
ब्रह्मसूक्तं विष्णुसूक्तं पञ्चरौद्रमत परम् ॥

पञ्चरौद्र का अर्थ ईशान, तत्पुरुष, सद्योजात, वामदेव अघोरादि देवों से है।

॥ अथ शरभ मन्त्रप्रयोगाः॥

विशेष मन्त्र प्रयोग आकाश भैरव कल्प, शरभार्चापरिजात, आशुगरुड़ इत्यादि तन्त्र ग्रन्थों में दिये गये है।

शरभप्रयोग हेतु कृष्णपक्ष की अष्टमी से कृष्णपक्ष की चतुर्दशी तक के लिये भी विशेष लिखा है। चतुर्दशी को यदि मंगलवार होवे तो विशेष ग्राह्य है।

अन्यत्र लिखा है '**भानुवारं समारम्भ मंगलान्तं जपेत् सुधी**' इसके दो अर्थ है प्रथम यह कि रविवार से प्रयोग प्रारंभ कर मंगलवार को समापन करे, दूसरा अर्थ है कि शुभवार (भानुवार) सिद्धियोग से प्रयोग प्रारंभ करे एवं मंगलकार्य सिद्धि (मंगलान्त) होने पर समापन करे।

एकाक्षरी मंत्र – '**खं**'। खं का अर्थ आकाश में विचरण करने से होता है। **खं** का अन्य अर्थ ग्रास करने से भी है तथा '**ख**' कारबीज मन्त्र भी है।

षडक्षर मन्त्र – **ॐ श्रीं आं क्रौं हुं अँ।**

विनियोगः – अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः पक्षिरूपी शालुवो देवता, ॐ बीजं, हुं शक्तिः, क्रौं कीलकं, सर्वार्थ सिद्धये जपे विनियोग।

ध्यानम् –

उग्राकारोग्रदृष्टि प्रकटितभयदं दंभोलिघोषं
ज्वालामालापटाग्रे ज्वलदनल समं हारकेयूरभूषम् ।
हालाहल कलङ्करन्ध्रसहितं हंसात्मकं केशरम्
वंदेऽहं हरि पार्वती पति विरञ्चयात्मं चिरं शालुवम् ॥

इसका छः लक्ष का पुरश्चरण है, तिलादि से होम करें।

अष्टाक्षरी मन्त्रः – ॐ आं क्ष्रौं ह्रीं हुं हुं हुं फट्।

विनियोग – अस्य मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, पक्षिरूपी शालुव सदाशिवो देवता, हुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, हुं कीलकं सर्वार्थसिद्धये जपे विनियोगः।

ध्यानम् :–

चन्द्रार्कयुत कोटिकान्तिसहितं चण्डीश संसेवितम् ।
खण्डेन्दूज्वल शारदापति-सदासंसेव्यमानम् ।
मुदाहृत्पद्मान्तर कर्णिकान्तरचरद्धासं भीषणम्,
संसेवे सकलार्थदं मुनिपतिं श्रीशालुवं सिद्धिदम् ॥

शरभमूलमन्त्र – शरभराज के प्रचलित में ३९, ४१, ४२ अक्षर के मन्त्र है वे इस प्रकार है–

एकोन चत्वारिंशाक्षर मन्त्र (३९ अक्षर) – (आकाश भैरव कल्पे) – **ॐ खें खें खें खं घ्रसौः घ्रसि हुं शरभ सर्वशत्रुसंहार कारिणे शरभ शालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।**

विनियोगः – **ॐ अस्य मन्त्रस्य वामदेवो ऋषिः, जगतीछन्दः, श्रीशरभेश्वर देवता, खं बीजं, स्वाहा शक्ति, फट् कीलकं सर्वार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास – **ॐ खें खें खें हृदयाय नमः। खं घ्रासौः घ्रसि शिरसे स्वाहा। हुं शरभ सर्वसंहारकारिणे शिखायै वषट्। शरभ शालुवाय कवचाय हुं। पक्षिराजाय नेत्रत्रयाय वौषट्। हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्।**

ध्यानम् –

अष्टांघ्रिश्च सहस्त्रबाहुरनल प्रख्यः शिरोयुग्मभृत्
विः त्र्यक्षोऽति जवो द्विपुच्छ उदितः साक्षान्नृसिंहापहा ।
अर्द्धेनापि मृगाकृतिः पुनरथाप्यर्द्धेन पक्ष्याकृतिः
श्री वीरः शरभः स पातु सुचिरं नीत्वा सदा मां हृदि ॥

(४१-४२ अक्षरात्मक मंत्र हेतु भी ध्यान कर सकते हैं।)

एकचत्वारिंशदक्षर मन्त्रः – (मन्त्रकोपे) – **ॐ खं खां खं फट् शत्रून् ग्रससि ग्रससि हुं फट् सर्वास्त्र संहारणाय शरभाय शान्ताय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा नमः।**

वैसे यह मन्त्र उग्र है परन्तु तन्त्रों में कहा गया है कि जिस मन्त्र के अन्त में नमः युक्तपल्ल्व हो वह शान्त मन्त्र कहा जाता है।

विनियोगः – **ॐ अस्य मन्त्रस्य श्रीवासुदेव ऋषिः, जगतीछन्दः, कालाग्निरुद्र शरभ देवता, खं बीजं, स्वाहा शक्तिः, मम सर्वशत्रु क्षयार्थे सर्वोपद्रव शमनार्थे जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यासः – **ॐ खं खां खं हृदयायनमः। फट् शत्रून् ग्रससि ग्रससि शिरसे स्वाहा। हुं फट् सर्वास्त्र संहारणाय शिखायै वषट्। शरभाय शान्ताय कवचाय हुं। हुं फट् स्वाहा नमः अस्त्राय फट्।**

इसी तरह करन्यास करें।

ध्यानम् –

विद्युज्जिह्वं वज्र नखं वडवाग्न्युदरं तथा
व्याधिमृत्युरिपुघ्नं चण्डवातातिवेगिनम् ।
हृद् भैरव स्वरूपं च वैरिवृन्द निषूदनं
मृगेन्द्रत्वक्-छरीरेऽस्य पक्षाभ्यां चञ्चुनारवः ।
अधोवक्त्रश्चतुष्पाद उर्ध्व दृष्टिश्चतुर्भुजः
कालान्त-दहन-प्रख्यो नीलजीमूत-निःस्वनः ।
अरिर्यद् दर्शनादेव विनष्टबलविक्रमः
सटाक्षिप्त गृहक्षार्य पक्षविक्षिप्त-भूभृते ।
अष्टपादाय रुद्राय नमः शरभमूर्तये ॥

पुरश्चरण में एक सहस्त्र जप कर पायस से प्रतिदिन छः मास तक दशांश होम करे। अर्थात् १० माला नित्यकर छः मास तक दशांश होम नित्य करें।

द्वि-चत्वारिंशदक्षर मन्त्र – ॐ खें खां खं फट् प्राणग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट् सर्वशत्रु संहारणाय शरभशालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।

विनियोग – ॐ अस्य श्री शरभेश्वर मन्त्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः, जगती छन्दः, श्रीशरभेश्वरो देवता, खं बीजं, स्वाहा शक्तिः, फट् कीलकं चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

(मतान्तर में वामदेवाकालाग्निरुद्र ऋषिः, अतिजगती छन्दः, देवता सुपक्ष है।)

ऋष्यादिन्यास – कालाग्निरुद्राय ऋषये नमः शिरसि। जगतिछन्दसे नमः मुखे। भगवते श्री शरभ देवतायै नमः हृदये। खं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। फट् कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

पञ्चाङ्गन्यास – ॐ खें खां खं फट् हृदयाय नमः। प्राणग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट् शिरसे स्वाहा। सर्वशत्रु संहारणाय शिखायै वषट्। शरभ शालुवाय पक्षिराजाय कवचाय हुं। हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्।

इस न्यास में नेत्रन्यास का अभाव है, अतः द्वितीय प्रकार निम्न है – (मन्त्रकोषे)

ॐ खें खां अं कं खं.........ङं आं हृदयाय नमः। ॐ खं फट् इं चं......ञ ईं शिरसे स्वाहा। ॐ प्राणग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट् उं टं.....णं ऊं शिखायै वषट्। ॐ सर्वशत्रुसंहारणाय एं तं....नं ऐं कवचाय हुं। ॐ शरभशालुवाय ओं पं....मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा अं यं.....हं लं

क्षं अः अस्त्राय फट्।

ध्यानम् –

चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टिः कुलिशवरनखश्चञ्चलोऽत्युग्र जिह्वः ।
काली दुर्गा च पक्षौ हृदय जठरगो भैरवो वाडवाग्निः ॥
ऊरूस्थौ-व्याधिमृत्यु शरभ वरखगरचश्चण्ड-वातातिवेगः ।
संहर्ता-सर्वशत्रून स जयति शरभः शालुवः पक्षिराजः ॥१ ॥
मृगस्त्वर्ध शरीरेण पक्षाभ्यां चंचुना द्विजः
अधोवक्त्रश्चतुष्पाद उर्ध्ववक्त्रश्चतुर्भुजः ।
कालाग्निदहनोपेतो नीलजीमूतसन्निभः
अरिस्तद् दर्शनादेव विनष्ट बलविक्रमः ॥२ ॥
सटाहृटोग्ररूपाय पक्ष विक्षिप्त भूभृते ।
अष्टपादाय रुद्राय नम : शरभमूर्तये ॥३ ॥

॥ अथ शरभार्चा प्रयोगविधिः ॥

भगवान शरभराज की पूजा यन्त्र में शिवलिङ्ग या शालिग्राम शिला पर करें यथा –

यन्त्रे शिवलिङ्गे शालिग्रामादा वा बाह्य पूजां कुर्यात् ।

शरभराज की भगवान शिव के समान षोडशोपचार पूजा व अभिषेक करें।

विशेष – **पाद्य पात्रे श्यामांकविष्णुक्रान्ता यव दूर्वाछित्या प्रक्षेपः ।अर्घ्यपात्रे दूर्वा तिल दर्भाग्र सर्षप पुष्पाक्षत युक्तं जलं गृहीत्वा । आचमने लवंग जाति केकोल युतं जलं गृहीत्वा। शतरुद्रियेण पुरुषसूक्तेन च स्नापयित्त्वा।**

चमकाध्याय से अभिषेक करें। अरिष्ट निवारण हेतु दूध दही से रोग व शत्रुनाश तथा अभिचार से मुक्ति हेतु सरसों के तेल से अभिषेक कर पुनः सुगन्धित द्रव्य से शांत्यार्थ अभिषेक करें।

शिव यन्त्रार्चन वा शरभयन्त्रार्चन कर शरभगायत्री स्मरण पूर्वक अर्घ प्रदान करें।

सन्ध्या समय सूर्यार्घ्य – **हंसः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्ति सहिताय श्रीसृर्याय इदमर्घ्यं समर्पयामि नमः स्वाहा।**

उपस्थात्मकंध्यानम्–

सूर्यमण्ड़ल मध्यस्थं ज्योतिर्मय मुखाम्बुजम् ।
चारुकुण्डलसंयुक्तं चन्द्रमालावतंसितम् ॥
दशबाहुं महाकायं सुवर्णसदृशप्रभम् ।
चक्रशूलगदा खड्ग–बाण कार्मुकखेटकै ॥
घण्टा कपाल शङ्खैश्च भासमान कराम्बुजम् ।
दिव्या भरण संयुक्तं दिव्यवासं त्रिलोचनम् ॥

शरभ गायत्री –

ॐ पक्षि शाल्वाय विद्महे वज्रतुण्डाय धीमहि तन्नः शरभ प्रचोदयात् ॥१॥

ॐ शालुवेशाय विद्महे पक्षिराजाय धीमहि तन्नोः रुद्रः प्रचोदयात् ॥२॥

॥ अथ शरभ यन्त्रार्चनम् ॥
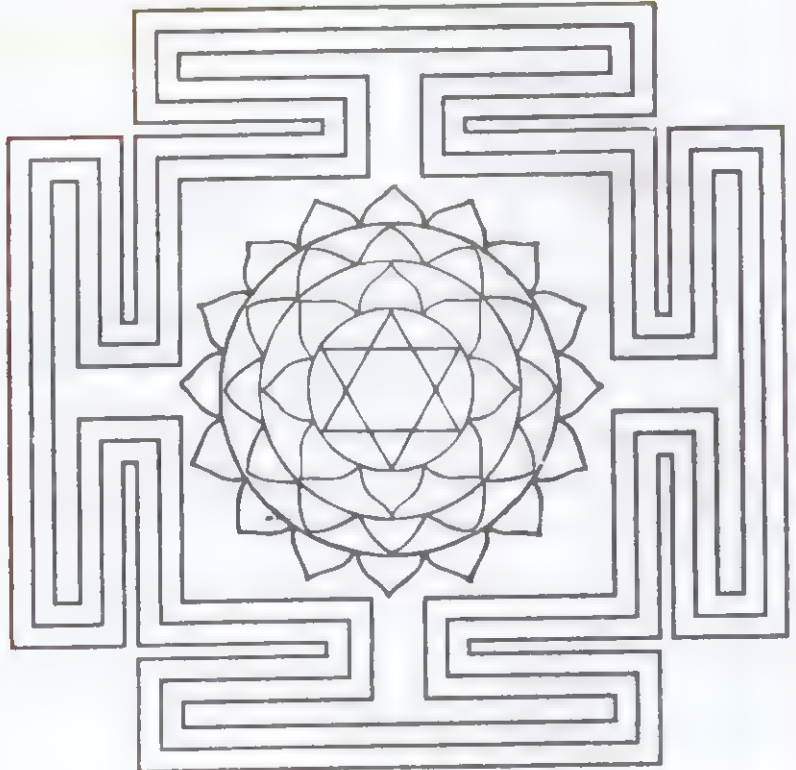
श्री शरभ शालुवपक्षिराज यन्त्रम्

यन्त्रोद्धार - त्रिकोण के बाहर वृत्त बनाकर अष्टदल बनायें, उसके बाहर द्वादशदल पुनः उसके बाद षोड़शदल बनायें। षोड़श दल के बाद दो परिधि युक्त भूपूर बनायें।

प्रत्येक नामावलि के साथ **पादुकां पूजयामि तर्पयामि** कहते हुये गंधाक्षत पुष्प से पूजन एवं तर्पण करें।

यन्त्रमध्य में प्रधान देवता का आवाहन करें। ध्यान मन्त्र पूर्व में दिये जा चुके हैं। मूलमन्त्र सहित आवाहन करें।

प्रथमावरणम्- अपनी गुरु परम्परा के अनुसार गुरु चतुष्टय का आवाहन करें।

ॐ गुरवे नमः। ॐ परमगुरवे नमः। ॐ परात्परगुरवे नमः। ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः। त्रिकोणे (पूर्वादिकोणेषु) - **ॐ चन्द्राय नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ अग्नये नमः।** (त्रिकेणे वृत्तमध्ये चतुर्दिक्षु) - **ॐ भैरवाय नमः। ॐ वडवाग्नये नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ काल्यै नमः।**

पुष्पाञ्जलि देवें -

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

द्वितीयावरणम् - (अष्टदलेषु) - **लं इन्द्राय नमः। रं अग्नये नमः। यं यमाय नमः। छं निर्ऋतये नमः। वं वरुणाय नमः। यं वायवे नमः। सं सोमाय नमः। हं ईशानाय नमः।**

पुष्पाञ्जलि - ॐ अभीष्ट .... द्वितीयावरणार्चनम् ॥

तृतीयावरणम् - (अष्टदलपार्श्वे) - **ॐ व्यां व्याधये नमः दक्षपार्श्वे। ॐ मृं मृत्यवे नमः वामपार्श्वे।**

पुष्पाञ्जलि - ॐ अभीष्ट .... तृतीयावरणार्चनम् ॥

चतुर्थावरणम् - (द्वादशदले) पूर्वादि क्रमेण **मं मदनाय नमः। रं रक्तचामुण्डायै नमः। मं मोहिन्यै नमः। द्रां द्राविण्यै नमः।** शं शब्दाकर्षिण्यै **नमः। वां वाण्यै नमः। रं रमायै नमः। मां मान्यायै नमः। पु पुलिन्दियै नमः। शं शास्त्रे नमः। क्षं क्षोभिण्यै नमः। जं ज्यैष्ठायै नमः।**

पुष्पाञ्जलि ॐ अभीष्ट .... चतुर्थावरणार्चनम् ॥

पञ्चमावरणम् - (षोडशदले) अं आं इं ईं .... ईत्यादि षोडश स्वरों का या इनके अधिष्ठाता षोडश देवताओं का आवाहन करें।

शरभ तन्त्र में केवल स्वर देवताओ का **आवाहन अं आं...अः** से है परन्तु गीर्वाणतन्त्र में इन १६ स्वरों के देवताओं का विशेष आवाहन है यथा -

ॐ ब्रह्मणे नमः। परायै नमः। शक्त्यै नमः। विष्णवे नमः। मायायै नमः। वराहाय नमः। पृथिव्यै नमः। विधये नमः। शिवायै नमः। अश्विभ्यां नमः। वीरभद्राय नमः। भारत्यै नमः। शिवाय नमः। शंकराय नमः। रुद्राय नमः। कालरुद्राय नमः।

पुष्पाञ्जलि देवें - ॐ अभीष्ट .... पञ्चमावरणार्चनम् ॥

षष्ठमावरणम् - (प्रथम भूपूरे)- पूर्वादि दिक्षु - **ॐगणेशाय नमः। यमाय: नमः। स्कंदाय नमः। भैरवाय नमः।** वायव्यादि विदिक्षु - **ॐ त्वरितायै नमः। वीरभद्राय नमः। बडवानल भैरवाय नमः। महामायायै नमः।**

ॐ अभीष्ट सिद्धिं से पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

सप्तमावरणम् - (बाह्य भूपूरे) पूर्वादि क्रमेण **ॐ ब्राह्मयै नमः। माहेश्वर्यै नमः। कौमार्यै नमः। वैष्णव्यै नमः। वाराह्यै नमः। इन्द्राण्यै नमः। चामुण्डायै नमः। महालक्ष्म्यै नमः।**

ॐ अभीष्ट.... सिद्धिं, मे सप्तमावरणम् की पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

अष्टमावरणम् - (तद्बाह्ये भूपूरे) - **कं खं गं ....क्षं तक के वर्ण देवताओ का आह्वान करे।** गीर्वाणतन्त्रानुसार इन प्रत्येक वर्ण का उनके अधिष्ठाता देवता का आवाहन करें। जैसे **गं** के लिये **गणेश** है।

ॐ ब्रह्मणे नमः। जाह्नव्यै नमः। गणेशाय नमः। भैरवाय नमः। कालाय नमः। भद्रकाल्यै नमः। भीमकाल्यै नमः। जातवेदसे नमः। अर्द्धनारीश्वराय नमः। परमात्मने नमः। पृथिव्यै नमः। चन्द्राय नमः। शुक्राय नमः। विष्णवे नमः। बलभद्राय नमः। धनदाय नमः। पराशक्त्यै नमः। दुर्गायै नमः। धर्माय नमः। निर्विकल्पाय नमः। अग्नये नमः। भैरवाय नमः। अश्विभ्यां नमः। भार्गवाय नमः। ईश्वराय नमः। वायवे नमः। कृशानवे नमः। शक्ताय नमः। वरुणाय नमः। शंकराय नमः। द्वादशादित्येभ्यो नमः। भारत्यै नमः। सदाशिवाय नमः। पृथिव्यै नमः। नृसिंहाय नमः। (इत्थं ककारादि क्षकारान्ता वर्ण देवताः प्रोक्ता)

पुष्पाञ्जलिमादाय -

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्य अष्टमावरणार्चनम् ॥

नवमावरणम् - (अन्यत्र में) भूपूर में अणिमादि अष्टसिद्धियों का पूजन करें। **अणिमायै नमः। लघिमायै नमः। महिमायै नमः। ईशित्व्यै नमः। वशित्व सिद्ध्यै नमः। प्राकाम्य सिद्ध्यै नमः। भुक्त्यै नमः। प्राप्त्यै नमः।**

धूप दीपौ नेवेद्यञ्च दद्यात्।

नित्य होम करे तो प्राणाय स्वाहा,व्यानाय स्वाहा ,अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, से पंचाहुति देवें। षडङ्ग मंत्रो मे षडाहुति देवें। मूल मंत्र की आहुति देवें।

बलिकर्म - ईशान अग्नि ,नैर्ऋति, एवं वायु कोण में बटुक, योगिनी, क्षेत्रपाल, एवं गणेश हेतु बलि प्रदान करें । सर्वभूतो के लियें नैऋति में या बाह्य जाकर बलि प्रदान करे

॥ द्वितीयप्रकारा यंत्र पूजा ॥

मध्य में प्रधान देवता का आह्वान करें। गुरुमण्डल देवताओं का पूजन करें। १.त्रिकोण - **सूर्य, चन्द्र, अग्नि का धां, धी, ऐं बीज मंत्रो से आह्वान करें।** २. वृत्तमध्ये - **भैरव, बडवाग्नि, दुर्गा, कालि का मं,मूं,दं,क्षं, बीज मंत्रो से आह्वान करें** । ३. पार्श्वे - **ह्रां व्याधियै नमः। ह्रैं मृत्यवे नमः।** ४. अष्टदलेषु- **ऐं, रं, लंभ्यां, क्षं, धं, यं, सं, क्रीं इत्यादि बीज मंत्रो से आह्वान करें।** ५. द्वादशदलेषु- **क्लीं, फ्रीं, हूं, क्रां, हैसं, श्रीं, डं, लूं, यूं, क्ष्म्यां, क्ष्मृं,मं बीज मंत्रो से आह्वान करें** । ६. षोडशदले- **अकारादि स्वराः अधिदेवता बीजाः - ओं, श्रौं, ह्रौं, धां, धैं, ज्मां, षं, चं, यूं , त्रैं, ऊं, ऐं, ओं, ह्यों, डं, हौं** । ७. प्रथम भूपूरे - (पूर्वादि चक्षुः दिक्षु) **गणेश, यम, स्कंद, भैरव तेषां बीजाः - गं, धं, स्कं, मं, आग्नेयादि चतुर्दिक्षु - त्रैं, धां, बं, ईं, । इति बीज मंत्राः।** ८. द्वितीय भूपूरे - **कं खं गं .... हं लं क्षं इत्यादि वर्णं बीजम्।**

इस तरह यंत्र में बीजाक्षरो से आह्वान कर पूजा करें ।

॥ होम द्रव्याणि ॥

सौम्य क्रमे- दुर्वा, गुडूची, चञ्चु, तिल, लाजा, दुग्ध, अपूप, यव, मधुत्रय, इत्यादि । **क्रूर क्रमे**- अपामार्ग, खदिर, कटिम, सैन्धव, सर्षप, कटुत्रय (निम्बपत्रादिभि) आज्य। ये द्रव्य विशेष कामना प्रयोगों में लिये जाते है अन्य द्रव्य यथा प्रयोग आवश्यक कामना हेतु तंत्रो में दिये गये है। यथा - **स्तंभन हेतु** हरताल व हरिद्रा, वशीकरण हेतु एला लवंग एवं राई। **प्रेतोउपद्रव हेतु** फूल प्रयंगु, अर्क धतूरादि का प्रयोग किया जाता है। **आयु वृध्दि हेतु** दुर्वा,श्री वृद्धि हेतु

बिल्व समिध पायस होम इस तरह कई प्रयोग द्रव्य है।

श्री भार्गवीर्नवरात्र होमैः प्रयान्ति शान्ति। उदुम्बराश्वत्थ समित्सहस्त्रैः कुर्याच्चतुर्थं ज्वरभूतशान्त्यैः॥ पलाशशाखाभिरभीष्ट सिद्धयै रक्षां हि कुर्याद थखादिरोत्थैः। कुर्यात् नवैर्बहुमित्रकामास्त्वनन्तरायाम शमीसमिद्भिः ॥ पुत्राय कुर्यादथ दीपिकाभिः प्रसाद सिद्ध्यै करवीरपुष्पै। वश्याय कुर्यान्मधुसिक्त पद्मैराकर्षणायस्मर पञ्चबाणैः। (अरविन्दमशोकञ्च चूतञ्च नवमल्लिकाः। नीलोत्पलञ्चपञ्चैते पञ्चबाणस्य सायकाः ॥ अर्थात् अरविन्द, अशोक, आम, नवमल्लिका, नीलपुष्प ये पाँच समिध हैं।)

विद्वेषनणायाथ द्विषांघ्रियोत्थैः स्तंभक्रियायै वि याप्रसूनैः। उच्चाटनाय स्तुहि बालपत्रैः संहरणायार्ककटु स्नुहीभिः॥ धतुरशाखा फल पत्रपुष्पैः उन्मादनायोश्च शिखां विमुक्त्यै। यद्धान्य होमं हुतमस्य शीघ्रं तद्धान्यराशेस्तनुते विवृद्धिम्॥ दीडिमीकुसुमजालकैर्नरा मन्मथत्वमुपयान्ति सुभ्रुवाः ऐवमेव नियतं रवेर्दिने कारयेदखिल काम्य सिद्धये॥ अन्नेन चात्रं पयसा पयश्च घृतेन भाग्यं मधुना च नादम्। तैलेन सारं दधिभिश्चपुष्टिं चूतप्रवालैरभि रूपवृद्धिम्। त्रिकटु सर्षप हिङ्ग्वजमोदा तुरगमौलि ससेंधव जीरकम्। सधृत पारद टङ्कण युक्तं शरभ होम परिक्षयमेतत्। दुर्वानावृताखण्डै गोधूमैश्च विशेषतः तिललाजैः सर्षपेश्च मिश्रीकृत्य हुनेत्ततेः। त्रिदिनाच्छत्रु संघाताः पलायन्ते न संशयः। भौमरात्रिमारम्य सप्तरात्रं प्रत्यहं धत्तूरपुष्पैर्द्विसहस्त्रं जुहुयात् स्तंभनं भवति। भौमरात्रो नग्नो भूत्वा वकुलतरोर्मूले दक्षिणाभिमुखो रक्तकमलासनो हरिद्रामालया भौमपर्यन्तं द्वादशसहस्त्र जपादाकर्षणम्।

जपेद्दशसहस्त्रं तु शतमष्टोत्तरं तु वा । कृष्णाष्टमीं समारम्यं यावत्कृष्ण चतुर्दशी॥ मासान्ते शत्रवस्तस्य पलायन्ते न संशयः।

॥ मोक्षप्राप्ति हेतु प्रयोग विधि ॥

भगवान शरभ के तीनों नेत्रों में सूर्य, अग्नि एवं सोम का निवास है। अतः **भूर्भुवः स्वः** इत्यादि लोकों पर दृष्टिनियन्त्रण कर्ता है। अग्नि व सोम के संयोजन से काम की उत्पत्ति मानी गई है, और काम से सृष्टि की उत्पत्ति है अतः सृष्टि स्थिति व संहार के कर्त्ता भी हैं। दोनों पक्षों (पङ्खों) में काली (काल कृष्णपक्ष) व दुर्गा (शुक्लपक्ष) का निवास होने से काल की गति का नियन्त्रण कर्ता है। कभी शान्त नहीं होने वाली [illegible] के प्रणेता है, बडवानल (पानी में अग्नि)

अर्थात् प्रेमरस में अश्रुपात के होने के समय हृदय में बसने वाली भक्ति (प्रेम व विरहाग्नि) को धारण किये हुये है जो भक्तों को आनन्द देने वाली है। व्याधि मृत्यु तथा अकारण विघ्नों एवं उत्पातों को वश में करने वाले हैं।

मन्त्र जाप करते समय भावना करे '**प्राण ग्रससि प्राणग्रससि**'। इसका अर्थ है मेरे प्राणमय शरीर पर आप अनुग्रह करिये उसको ग्रहण कर उसको अपने आत्मसाक्षात् द्वारा संचालित कारे, प्राण अपानादि वायु को स्तंभित कर अपनी आकाशगमन की शक्ति के द्वारा मेरे मन प्राण को उर्ध्वरेता बनाये जिससे कभी औज का क्षरण नहीं होवे, बिन्दु का पात नहीं होवे।

(**खं** इनका बीज मन्त्र है जो आकाश गमन-खेचर से संबंध रखता है)

अपनी उर्ध्व गति के द्वारा कुण्डली शक्ति का उत्थापन कर षट्चक्रों का भेदन कराते हुये सहस्त्रारचक्र तक गतिमान करें।

'**सर्वशत्रुसंहारणाय**' के जप के समय भावना करे कि काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकार, निद्रा, तन्द्रा, आलस्य, प्रमाद आदि शत्रुओं का दमन करें साधना के समय अन्तरिक्ष विघ्नों (भूत प्रेत बेताल क्षेत्रपाल लोकपालादि) का शमन कर साधना मार्ग में उत्तरोत्तर तीव्रगति प्रदान करने वाले हैं।

अत: शुद्ध विवेक से मन्त्र जप करने पर यह मन्त्र मोक्ष प्रदाता है। साधना के विघ्नों को दूर करता है।

॥ गीर्वाणतन्त्रानुसार शरभ मन्त्र: ॥

ॐ नमोऽष्टपादाय सहस्त्रबाहवे द्विशिखे त्रिनेत्राय द्विपक्षाय अग्निवर्णाय मृग विहंगरूपाय वीर शरभेश्वराय ॐ।

ऋष्यादिन्यास – (**पूर्ववत्**)

षडङ्गन्यास – **ॐ नमोष्टपादाय हृदयाय नम:। सहस्त्रबाह्वे द्विशिखे शिरसे स्वाहा। त्रिनेत्राय द्विपक्षाय शिखायै वषट्। अग्निवर्णाय कवचाय हुं। मृगविहंगरूपाय नेत्रत्रयाय वौषट्। वीर शरभेश्वराय ॐ अस्त्राय फट्।** इसी तरह कराङ्गन्यास करें।

ध्यानम् –

(त्रयोदशाष्ट चतु: पञ्चाष्ट नववर्णा अङ्गति)

अष्टांघ्रिश्च सहस्त्रबाहुरनल प्रख्य: शिरोयुग्मभृत्
वि: त्र्यक्षोऽति जवो द्विपुच्छ उदित: साक्षान्नृसिंहापहा ।

अर्द्धेनापि मृगाकृतिः पुनरथाप्यर्द्धेन पक्ष्याकृतिः
श्री वीरः शरभः स पातु सुचिरं नीत्वा सदा मां हृदि ॥

मन्त्र का पुरश्चरण करके क्षीर से होम करें।

॥ शत्तोत्तर षड्विंशद्वर्णात्मक मन्त्र ॥

विनियोगः - **ॐ अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, पंक्ति छन्दः, शरभशालुव देवता, ॐ बीजं, स्वाहा शक्तिं, हुं त्रय कीलकं सवार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।**

मन्त्र - **ॐ नमः भगवते खें खें खें घ्रसीं घ्रसौं शरभशालुवाय पक्षिराजाय सर्वशत्रु संहार कारिणे तत्पुरुषाय अघोर सद्योजात वामदेव ईशानकाल कालकण्ठाय गरं हुं हुं हुं प्रस्फुर प्रस्फुर उग्रोग्रतम चट चट प्रचट प्रचट बन्ध बन्ध घातय घातय विदारय विदारय शरभ शालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।**

विनियोगः - **अस्य मन्त्रस्य ब्रह्माऋषि, पंक्तिश्छन्दः, शरभ शालुवो देवता, प्रणवो बीजं, स्वाहा शक्तिः, हुं त्रय कीलकं सवार्थसिद्धये जपे विनियोगः।**

पञ्चाङ्गन्यास - **ॐ तत्पुरुषाय नमः हृदयाय नमः। अघोराय नमः शिरसे स्वाहा। सद्योजाताय शिखायै वषट्। वामदेवाय कवचाय हुं। ईशानाय अस्त्राय फट्।**

षडाङ्गन्यास - **द्रां, द्रीं, द्रूं, द्रें, द्रौं, दः से षडङ्गन्यास करें।**

ध्यानम् -

स्फटिकाभं चतुर्बाहुं ज्वालापद समन्वितं।
पञ्चवक्त्रं महाभीमं त्रिपञ्च नयनैर्युतम् ॥
प्रथमं शालुव वक्त्रं द्वितीय शङ्करस्य तु तृतीयं वैष्णवं वक्त्रं
चतुर्थ ब्रह्मसंभवं अघोरं पञ्चमं वक्त्रं महाशंभु स्वरूपिणम्।

इस मन्त्र की साधना से समस्त भूत-प्रेत उपद्रव नष्ट होते हैं।

॥ लक्ष्मीप्रद शरभ मन्त्रः (संजीवनार्थ) ॥

मन्त्र - ॐ श्रीं हूं स्वाहा शरभ शालुवाय स्वाहा हूं श्रीं हूं ह्रीं ॐ।

भूवाराह (हूं) की जगह ग्लौं भी हो सकता है।

इसके प्रयोग में न्यास ध्यान की विशेष आवश्यकता नहीं है। ध्यान करें तो

पूर्ववत् ध्यान मन्त्रों से कर सकते है। यथा –

एवं शावर शाल्वाख्यं महामन्त्रं कुलेश्वरी देवः शरभ शाल्वाख्यः साक्षाच्च त्रिपुरान्तकः। न्यास ध्यानादि रहितं सर्वसिद्धिप्रदस्तथा। पूर्वमेवायुते (दस हजार) जप्त्वा ततः सिद्धिर्भवेत् ध्रुवम्॥

॥ प्रयोग विधियाँ ॥

कृष्णाङ्गार चतुर्दश्यामारम्य भौमवार पर्यन्तं वृषशून्यशिवालये अयुतं जपः कार्य पुनः प्रयोग सिद्ध्यर्थमयुतं जपेत् अष्टोत्तर शतवारमभिमन्त्रित भस्म मिश्र शालिना शरीरे शत कृत्वः प्रक्षेपात् भूत प्रेतादिनाशः नद्यादिशुद्ध जलं ताम्रपत्रे गृहित्वा त्रिसप्त कृत्वो वाभिमन्त्र्य पानात् गुल्मोदरगत शूलादि व्याधिनाशः। ज्वरार्तं मूर्ध्नि हस्तं दत्त्वा अर्के भौमे भृगोर्वा त्रिसन्ध्या काले जपाज्जवरनाशः।

एकादश लवंग १०० बार अभिमन्त्रित कर चतुर्दशी से उष्णजल के साथ लेवें एक सप्ताह में वात रोग नष्ट होवें।

वृश्चक सर्पादि दंश होने पर बदरीकाष्ट से १००० बार अभिमन्त्रित कर स्पर्श करें, अभिमन्त्रित जल पिलावें भस्म लगावें।

किसी खजाने पर आत्मा का निवास होवे तो शरभ मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म व जल छिड़कें। ऋग्वेद की ''**यस्मन्नरो**'' ऋचा व ''**केतुकृण्वन्**'' ऋचा उस स्थान के समीप जपे तो वह आत्मा ''**स्वयमेव स सन्तुष्टौ तस्मै सर्वं ददाति च**'' स्वयं ही सन्तुष्ट हो जाती है।

राज चौरादि संकट, निर्जन वन में ''**अभिव्यये**'' ऋचा का जप करें। संग्राम में ''**बलंघेहि**'' ऋचा से संक्रंदन के समान बलवान होकर विजय होवे एवं ''**वयः सूपर्ण**'' इस ऋचा से शत्रु की माया का भेदन कर विजयी होवे। ''**विजिहोर्ष**'' सूक्त का जप करने से शीघ्र प्रसव होवे। ''**वृहत्साम**'' ऋचा से जङ्गम में रक्षा होवें। इस तरह से कई प्रयोग **है। कृपया उक्तसूक्त परिशिष्ट पेज नं० ६९१ पर देखें**

॥ बालासुन्दरी मन्त्रेण पुटित मन्त्र ॥

ॐ कारं पूर्वमुच्चार्य बालायास्त्र्यक्षरी तथा। वितरणीत्रयोवर्णा हुकाराणां त्रयं तथा॥ शालुवाय ततोच्चार्य हुंकारत्रयमेव च। वह्निजाया समायुस्थो मन्त्रो ज्वरहस्तथा।

अस्यार्थ – ॐ ऐं क्लीं सौः हुं हुं हुं शालुवाय हुं हुं हुं सौः क्लीं ऐं स्वाहा।

अस्यप्रयोगः – माष, मुद्ग, मसूर, कुलत्थ, चणक, शलि, गोधूम, कार्पाशमस्थि

(कपास वृक्ष की तने की लकड़ी) यावनाला (जौ की नाल की घास टुकड़ी) ये सब धान्य लेवें इनके बराबर भस्म लेवें उनके ताम्रपात्र में मिश्रण कर १०८ बार अभिमन्त्रित करें। ज्वर ग्रसित व्यक्ति पर डालें तो ज्वर शान्त होवें।

अगर प्रेतादिग्रस्त होवे तो एक ताम्रपात्र या भोजपत्र पर '**आवेशय आवेशय रुद्रोज्ञापय**' लिखकर रोगी को बैठाकर उसके आसन के नीचें रखें तो आवेश नष्ट होवें।

॥ अथ पुत्तल प्रयोगः ॥

पुत्तल प्रयोग की विधि में कुछ शब्दो का भावार्थ इस प्रकार जाने । **पुत्तल - पुतला। मायाबीजं- ह्रीं। पवनं= प्राणप्रतिष्ठा। वह्नि बीजं= रं। वह्निप्रिया= स्वाहा। पृथ्वीबीजं= लं। वाग्बीजं= ऐं। श्रीबीजं= श्रीं। चिन्तामणि= ऐं। कामराजं= क्लीं। हंसबीजं= हंसः। वायुंसम्यग्विधानेन, पवनं विदधीत दोनो का अर्थ= विधिपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा।**

पुत्तलीं च विधायाथ कुलालकरमृणमयीम्। वायुंसम्यग्विधानेन (प्राणप्रतिष्ठा) **कृत्वास्थाप्यसमाहितः॥ स्नुहि क्षीरे तु संक्षिप्य- मृष्टस्तदयुतं जपेत्। उन्मत्तमूले** (आक धतुरे कि जड़में) **निखनेद्** (खोदकर रखें) **अपस्मारी भवेत्तदा॥ शालुवं शिवरूपं च ध्यात्वा सम्यक्समाहितः। निम्बचूर्णेन कृत्वा तु पुत्तलीं च यथा विधीम्॥ पुत्तल्यां वायुमारोग्य** (प्राणप्रतिष्ठा) **स्पष्ट्वा तामयुतं जपेत्। शमशाने निखनेद्देवि पुत्तलीं शत्रुं चालयेत्॥**

उन्मत्तमूले पुत्तल्यां वामारोप्यस्तु साधकः स्पष्ट्वातीवायुतं मंत्री ध्यात्वा शत्रुन्वितन्वतः॥ निक्षिपेच्छत्रुदेशे तु शत्रुणांचालनं भवेत्। शन्यर्काङ्गारवारे तु जपेदयुत संख्यया। त्रिदिनान्ते रिपून्वध्वा चालयेदाशु साधकः॥ विष्टेन पुत्तली कृत्वा मूलेनैव (मूल मंत्र से) **तु पूजयेत्। मांसयुक्तं तु नैवेद्यं ताम्बूलन्तु निवेदयेत्।। लाक्षारसेन संलिप्य बिम्बस्य च शिरोगले साध्य नाम** (शत्रू नाम) **च संयुक्तां लिखित्वा तां च पुत्तलीम्॥ सदापचेत् ततो वह्नौ समिद्धिः पिचुमन्दकैः** (अर्क समिध) **गणिकायाङ्गणे होमं कृत्वा चैव विधानतः। जपादयुतमात्रेण पलायन्ते न संशय॥ अर्कमूलं समादाय पुत्तलीं च यथा विधिम्। तस्य प्राणस्य पवनं विदधीत** (प्राणप्रतिष्ठा) **यथोदितम्॥**

तस्याश्च हृदिदेशे तु मायाबीजं (ह्रीं) **समालिखेत्। तस्याशिरसिमालिख्य व्रह्नि बीजं** (रं) **स बिन्दुकम्॥ पाददोश्च तथा लिख्य पृथ्वीबीजं** (लं) **स भैरवम्। उभयोस्कंधयौश्चैव वाग्बीजं** (ऐं) **चैव वाग्भवम्॥ भार्गवं वदने पृष्ठे**

श्रींबीजं (श्रीं) भुवनेश्वरीं। पूजां च विधिवत्कृत्वा नैवेद्यं च निवेदयेत्। निखनेदर्कमूले च पलायन्ते च शत्रवः। ततः शत्रु शरीरं च स्फोटयेत् पक्षिशालुवः॥ चतुरङ्गलि विस्तारं दशाङ्गुलि समायुतम्। श्मशान मृत्तिकायां तु पुत्तलीं कारयेद्बुधः (४ अङ्गुल चौडी १०अङ्गुल विस्तार की श्मशान मिट्टी से पुत्तली बनायें) श्मशानाग्निं समादाय उन्मत्तरस- संयुयम्। पुत्तल्युपरि खेंकारः पार्श्वे चिन्तमणिं लिखेत्।। मस्तके कामराजं (क्लीं) च हंसबीजं (हं सः) तु मूर्धनि। स्नुहिक्षीराभिषेकं च विधिवत्प्राणपूर्वकम्॥ स्नुहिवृक्षस्याधोभागे खनेत् प्रादेशमातृकम्। शुक्लप्रतिपदारम्य अष्टम्यतं जपेत् सुधीः॥ पराजिता पलायन्ते शत्रवो नात्र संशय॥ शालुवं पक्षिराजानं शरभं शिवरूपिणीम्। यो द्विजः सततं ध्यायेत् पलायन्ते च शत्रवः॥

खादरीं पुत्तलीं कृत्वा पवनञ्च (प्राणप्रतिष्ठा) यथा विधिम्। तत्स्पृष्टवां चायुतं मंत्रं मुच्यते राज्य तस्करैः॥ पुत्तली खादिरेमूले निक्षिपेत्तस्य शत्रवः। पुत्र मित्र कलत्रादीन् त्यक्त्वा देशान्तरं व्रजेत॥ राजवृक्षस्य( ) पुत्तल्यां भूबीजं (लं, हुं) स्मर खवह्निना (खं) वाग्भवं (ऐं) वायुबीजं (यं) च श्रीबीजं (श्रीं) भुवनेश्वरी॥ प्रादक्षिण्येन वेष्टव्यं पुत्तल्योपरि लेखितः। मूलेन राजवृक्षस्य समिद्धोमो विधीयते। अष्टोत्तरसहस्रं च शतमष्टोत्तर च वै॥ हुनेच्च विधिवन्मंत्रं चतुः कण्ठं विधानतः॥ त्रिदिनान्ते च विद्वेषः शत्रुणां च परस्परम्। रिपवः संशयं यान्ति पलायन्ते न संशयः॥

॥ इत्याकाश भैरव तन्त्रे अरिखण्डे शरभ प्रयोग विधि ॥

॥ प्रयोगान्तरे विविध ध्यानम् ॥

आकर्षणे ध्यानम्

रक्ताम्बर समालेप भूषणं रक्तलोचनं।
रक्तवर्णं लसद्ग्रीवं रक्तकुण्डल संयुतम् ॥१॥
रक्तकेयूर मुकुटं लसच्चन्द्रार्द्ध शेखरम्।
प्रसन्नममृतोन्मत्तं प्रणताभीष्ट सिद्धिदम् ॥२॥
इक्षुकोदण्ड पुष्पेषु पुण्ड्र चाप सहस्रकम्।
कार्मुकेन शरैर्दिव्यै पूरिताशावकाशकम् ॥३॥

मूलमंत्र को कामबीज से (क्लीं) संपुटित कर जप करें।

आकर्षणे तदा ध्यानं पाशबाहु सहस्रकम्।
तत्पाश पूरिताशेष आशाकुंभोक्षिताकुलम् ॥

ध्यात्वा जपेत्तथा मंत्रं साधकस्थिर मानसः ॥

आकर्षण में ध्यान करें कि साध्य व्यक्ति को भगवान शरभ ने हजार भुजाओं में पाशबद्ध कर लिया है एवं साध्य व्यक्ति मुझसे मिलने को आकुल है। "**आं**" मंत्र से संपुटित मंत्र को जपने से भी साध्य का आकर्षण होता है ।

स्तंभन विद्वेषणे ध्यानम्–

महाकालं घनश्यामं वक्रदन्तं मुखाम्बुजम् ।
कपिलाख्यं बृहत्स्कंधं करालं कृष्णवाससम् ॥१॥
गङ्गास्थित भालं चन्द्रार्धशेखरं विषमेक्षणम् ।
महाकायं महावेगं व्याल यज्ञोपवीतिनम् ॥२॥
वामहस्ते रिपोरास्यन्ताऽयन्तं प्रदक्षिणम् ।
सत्वरं दक्षहस्ताग्रे-ताडयन्तमुरस्थले ॥३॥

मूल मंत्र के आदि व अन्त में इन्द्रबीज (लं) या रुद्र मंत्र -**नमः शिवाय** ...... मूल मंत्र **शिवाय नमः** अथवा रुद्रबीज **क्षौं** या **हौं** से पुटित मंत्र को जपने से शत्रु का विद्वेषण होवें। मंत्र के अन्त में जो बीजाक्षर या ॐ **नमः**, **स्वाहा**, **ठः ठः ठः**, **हुं फट्** इत्यादि लगाते है **ये पल्लव कहलाते है**। **यथा** -

वासवं मूलमंत्रञ्च पुनरिन्द्रं सपल्लवम् ।
रुद्र मंत्रं पुना रूद्रं पल्लवद्वेषि सिद्धये ॥
वैरिणारैश्वर्य जालानां क्षयं कुर्वन्तमाशुवै ।
तयोर्दशदिनात् पश्चात् महद् युद्धं भवेद् ध्रुवम् ॥

निग्रहोच्चाटने ध्यानम्–

करालमुग्रदृक्दंष्ट्रं कालानलसमप्रभम् ।
अनेक कोटि बह्मास्थि मुण्डमाला-विभूषितम् ॥१॥
घोराट्टहास ब्रह्माण्ड गोलकं कृत्तिवाससम् ।
सहस्त्रमुख हस्तांघ्रिमुकुटं नागभूषितम् ॥२॥
सहस्त्रकोटि वेतालगण-संघसमावृतम् ।
नानाविध शिलाभेदैवर्षयन्तं स्वकिङ्करै ॥३॥
महावीरमतिक्रुद्धमतिभीम - पराक्रम ।
भक्षयन्तं निजैभूतैः परबंधि कुलं बहु ॥४॥

प्रयोग - मूल मंत्र को वायु बीज "**यं**" या "**हं**" कार मंत्र से संपुटित कर जप

करे । यथा -

वायुबीजं च मंत्रं च पुनर्वायुं सपल्लवम् ।
हुङ्कारञ्च ततो मंत्रं पुनुर्हुङ्कार पल्लव ॥
इति प्रयोग द्वितयं कुर्याद्यत्नेन चाम्बिके ।
सहसा लभते सिद्धिं संशयो नास्ति चाम्बिके ॥

मोक्ष प्राति च सरस्वती ध्यानम्—

स्फटिकाभं महादेवं प्रसन्नं वदनाम्बुजम् ।
अमृतां शुकलाचूडं अग्निसूर्येन्दुलोचनम् ॥
व्याघ्र चर्माम्बरधरं व्यालयज्ञोपवीतिमम् ।
वैडूर्यहार शोभाढ्यं मन्दस्मित मनोहरम् ॥
मुक्ता विद्रुमरत्नाङ्ग बद्धाङ्गद विभूषणम् ।
स्वर्णानूपुर पादाब्जं श्वेत कुण्डल मंडितम् ॥
वीणां व्याख्यान मुद्राञ्चपुस्तकं स्फटिक स्त्रजम् ।
पद्महस्तं गदापद्मं सुधाकुंभं कराम्बुजे ॥
विभूषणामल ब्रह्मज्ञानमुद्रा-स्वरूपिणम् ।
चन्द्रमण्डल मध्यस्थं सच्चिदानन्दमव्ययम् ॥

(भाषा)- सरस्वतीबीजं "ऐं" व चिन्तामणि बीज मंत्र ( ) से संपुटित कर जप करें। यथा- **भाषा मंत्रं पुनर्भाषां स्वाहान्ते मंत्रमुच्यते** (पहला मंत्र) मूल मंत्र को ऐं से संपुटित कर अंत में स्वाहा लगाकर जप करें। विद्या प्राप्त होवें। **चिंतामणिंततो मंत्रं पुनश्चिन्तामणिं नमः। मोक्षाय प्रणवाद्यन्तं धारणाय विशेषतः।** (दूसरा मंत्र)मोक्ष हेतु मूल मंत्र को चिन्तामणि मंत्र से संपुटित करें। अन्त में **नमः** कहे एवं इन सबके आदि अन्त में "ॐ" लगायें।

श्रियै श्रिया संपुटितं घृणिरारोग्य वर्द्धकः। "श्रीं" मंत्र के संपुट से मूल मंत्र जपने से आयु आरोग्य की वृद्धि होवें। तथा लृं बीजाक्षर के संपुट से रोग एवं "ठं " से विष का विनाश होवे यथा-

लृं लृं रोग विनाशय, विषनाशाय ठं युतम्॥ इति गुह्यतम् शास्त्रं लघुसिद्धि प्रदायकम्। यत्ने नापि जपेद्देवि सर्व कामार्थ सिद्धये।

॥ इति आकाश भैरव कल्पे षट्कर्म प्रयोग विधि॥

॥ अथ शरभ मालामन्त्रम् ॥

माला विनियोग मंत्र- अस्य मंत्रस्य कालाग्नि रुद्र ऋषिः अति जगती छन्दः श्री शरभेश्वरो देवता, खं बीजं, स्वाहा शक्तिः, फट् कीलकं चतुर्विध पुरूषार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः,।

ध्यानम् —

चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टिः कुलिशवरनखश्चञ्चलोऽत्युग्र जिह्वः ।
काली दुर्गा च पक्षौ हृदय जठरगो भैरवो वाडवाग्निः ॥
ऊरूस्थौ-व्याधिमृत्यु शरभ वरखगरचश्चण्ड-वातातिवेगः ।
संहर्ता-सर्वशत्रून स जयति शरभः शालुवः पक्षिराजः ॥१ ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ नमः पक्षिराजाय निशित कुलिशनखवराय अनेक कोटि- ब्रह्माण्ड कपालमालांकृताय सकलकुल महानागभूषणाय सर्वभूतनिवारणाय नृसिंहगर्व-निर्वापकारणाय सकलरिपूणामटवी मोहनाय ह्योनिजाय शरभ शालुवाय ह्रां ह्रीं ह्रूं प्रवेशय-२ आवेशय-२ भाषय-२ मोहय-२ ह्रां स्तंभय-२ कंपय-२ घातय-२ बंधय-२ भूतग्रह बंधय-२ रोगग्रह बन्धय-२ बालग्रहं बन्धय-२ यक्षग्रहं बंधय-२ सूतिकाग्रहं बंधय-२ चातुर्थिकाग्रहं बंधय-२ भीमग्रहं बंधय-२ अपस्मारग्रहं बंधय-२ पिशाचग्रहं बंधय-२ आवेशग्रहं बंधय-२ अनावेशग्रहं बंधय-२ काम होम त्रोटय-२ प्रैं त्रैं ह्रैं माराय-२ मुञ्च-२ हुं फट्।

॥ श्रीआकाशभैरव चित्रमाला मंत्र ॥

आकाशभैरव से तात्पर्य रुद्रावतार भगवान् शरभ शालुव पक्षिराज से है। शत्रुनाश हेतु यह प्रयोग किया जाता है।

विनियोग:- ॐ श्रीआकाशभैरवरस्य चित्रमाला नाममंत्रस्य श्रीआनन्द-भैरव ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीआकाशभैरव देवता, ह्रीं बीजं, हुं शक्तिः, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास: - ॐ श्रीआनन्दभैरव ऋषये नमः शिरसि, ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे, ॐ आकाशभैरव देवतायै नमः हृदि, ॐ ह्रीं बीजाय नमः

गुह्ये , ॐ हुं शक्त्यै नमः पादयोः, ॐ सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्या नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां हुं, ॐ ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

अङ्गन्यास - ॐह्रां हृदयाय नमः। ॐह्रीं शिरसे स्वाह। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्–

सहस्त्रपाणि-पद्-वक्त्रं, सहस्त्र-त्रयलोचनम् ।
सर्वाभीष्टप्रदं देवं, स्मरेद् आकाश-भैरवम् ॥

॥ मानस पूजन ॥

ॐ लं पृथ्वीव्यात्मकं गन्धं श्रीआकाशभैरव पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीआकाशभैरव पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीआकाशभैरव पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि। ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीआकाशभैरव पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि। ॐ वं जलात्मकं नैवेद्यं श्रीआकाशभैरव पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि। ॐ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीआकाशभैरव पादुकाभ्यां नमःअनुकल्पयामि।

॥ मालामंत्र ॥

ॐ नमो भगवते आकाशभैरवाय निखिल-लोकप्रियाय प्रणतजन-परिताप-विमोचनाय सकलभूत-निवारणाय सर्वाभीष्टप्रदाय नित्याय सच्चिदानन्द-विग्रहाय सहस्त्रबाहवे सहस्त्रमुखाय सहस्त्र-त्रिलोचनाय सहस्त्र-चरणाय करालाय अखिलरिपुसंहार-कारणाय अनेककोटिब्रह्मकपाल-माला-अलंकृताय नररुधिरमांस-भक्षणाय महाबलपराक्रमाय महादन्तराय विष-मोचनाय पर-मंत्र-तंत्र-यंत्र-विद्या-विच्छेदनाय प्रसन्नवदनाम्बुजाय ऐह्येहि आगच्छागच्छ ममाभीष्टं आकर्षय-आकर्षय आवेशय-आवेशय मोहय-मोहय भ्रामय-भ्रामय द्रावय-द्रावय तापय-तापय सिद्धय-सिद्धय बन्धय-बन्धय भाषय-भाषय क्षोभय-क्षोभय भृतप्रेतादि-पिशाचान् मर्दय-मर्दय कुर्दम-कुर्दम पाटय-पाटय मोटय-मोटय गुम्फय-गुम्फय कम्पय-कम्पय ताडय-ताडय त्रोटय-त्रोटय भेदय-भेदय छेदय-छेदय चण्ड-वातोंति वेगाय सन्तत-

गम्भीर-विजृम्भणाय संकर्षय-संकर्षय संक्रामय-संक्रामय प्रवेशय-प्रवेशय स्तोभय-स्तोभय स्तंभय-स्तंभय तोदय-तोदय खेदय-खेदय तर्जय-तर्जय गर्जय-गर्जय नादय-नादय रोदय-रोदय घातय-घातय वेतय-वेतय सकल-रिपु-जनान्छिधि-भिन्धि भिन्दय-भिन्दय अन्धय-अन्धय रून्धय-रून्धय नर्दय-नर्दय बन्धय-बन्धय श्रीं ह्रीं क्लीं कल्याणकारणाय श्मशानानन्द-महाभोगप्रियाय देवदत्तं (अमुकं) आनय-आनय दूनय-दूनय केलय-केलय मेलय-मेलय प्रपन्न वत्सलाय प्रति वदन दहनामृत किरण नयनाय सहस्र कोटि वेताल परिवृताय मम रिपून उच्चाटय-उच्चाटय नेपय-नेपय तापय-तापय सेचय-सेचय मोचय-मोचय लोटय-लोटय स्फोटय-स्फोटय ग्रहण-ग्रहण अनन्त-वासुकि-तक्षक कर्कोटक-पद्म-महापद्म-शङ्ख-गुलिक-महानाग-भूषणाय स्थावर-जङ्गमानां विषं नाशय-नाशय प्राशय-प्राशय भस्मी-कुरु भस्मी-कुरु भक्तजन-वल्लभाय सर्ग-स्थिति-संहारकारणाय कथय-कथय सर्व-शत्रून् उद्रेकय-उद्रेकय विद्वेषय-विद्वेषय उत्सादय उत्सादय बाधय बाधय साधय-साधय दह-दह पच-पच शोषय-शोषय पोषय-पोषय दूरय-दूरय मारय-मारय भक्षय-भक्षय शिक्षय-शिक्षय समस्त-भूतं शिक्षय-शिक्षय श्रीं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रयैं अनवरत-ताण्डवाय आपदुद्धारणाय साधुजनान् तोषय-तोषय भूषय-भूषय पालय-पालय शीलय-शीलय काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्यं शमय-शमय दमय-दमय त्रासय-त्रासय शासय-शासय क्षिति-जल-दहन-मरुत-गगन-तरणि-सोमात्म-शरीराय शम-दमोपरति-तितिक्षा-समाधान-श्रद्धां दापय-दापय प्रापय-प्रापय विघ्न-विच्छेदनं कुरु कुरु रक्ष-रक्ष क्ष्म्रयै क्लीं ह्रीं श्रीं ब्रह्मणे स्वाहा।

विधानम् - गुरु-स्मरण एवं इष्ट-देवता-पूजन कर उक्त मंत्र का १०० बार पाठ करें। इससे सभी कार्य सिद्ध होते हैं। साधारण कार्यों हेतु ३ पाठ ही पर्याप्त हैं। अपने गुरु की अनुमति से करें।

॥ शरभहृदय स्तोत्रम् ॥

किसी भी देवता का हृदय मित्र के समान कार्य करता है, शतनाम अंगरक्षक के समान एवं सहस्त्रनाम सेना के समान रखा करता है अतः इनका अलग-अलग महत्व है। भूमिका के अनुसार समुन्द्र मंथन के समय विष्णु ने शरभ हृदय की २१ आवृति ३ मास तक की तब शरभराज प्रकट होकर निर्विघ्नता पूर्वक अमृत पान

करने का आशीर्वाद दिया। शिव ने विष्णु को यह हृदयस्तोत्र बताया।

पुरा नारायणः श्री मान् क्षीराब्धौ मंथने कृते ।
तस्य प्रारंभ समये हृदयं शरभस्य च ॥
प्रातः काले पठेन्नित्यं विंशदावर्तिकं मुदा ।
एवं मासत्रयं कृत्वा प्रादुर्भवति शालुवः ।
ततश्च दण्डबद्भूमिं प्रणम्य च पुनः पुनः ।
तमुत्थाय महातेजा मुर्ध्नि चाघ्राय शालुव ।
संतुष्ट प्रत्युवाचैनं निर्विघ्ननामृतं भवेत् ॥

विनियोग – अस्य श्री शरभहृदय स्तोत्र मंत्रस्य कालाग्नि रुद्र ऋषिः, जगती छन्दः, शरभराज देवता, खां बीजं, महादेव शक्तिः स्वाहा कीलकं इष्टार्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद मूल मंत्र के न्यास ध्यान करें।–

॥ स्तोत्रम् ॥

प्रथमं पक्षिराजं च द्वितीयं शरभं तथा ।
तृतीयं शालुवं प्रोक्तं चतुर्थं लोकनायकम् ॥१॥
पंचमं रेणुकानाथं षष्ठंकालाग्नि रुद्रकम् ।
सप्तमं नरसिंहघ्नं अष्टमं विश्वलोचनम् ॥२॥
श्रीं ह्रीं क्लीं नवमं चैव हुं हुं हुं दशमं तथा ।
क्लीं श्रीं क्लीं एकादशं च द्वादशं सर्वमंत्रवित् ॥३॥
त्रयोदशं तु यन्त्रेशं चतुर्दश महाबलम् ।
पञ्चदशं पापनाशं षोडशञ्च करालकम् ॥४॥
सप्तदशं महारौद्रं भीममष्टादशं तथा ।
एकोनविंशं साम्बं च विंशकं शंकरं तथा ॥५॥
विंशोत्तरेक सर्वेशं द्वाविंशं पार्वतीपतिः ।
हुं हुं हुं च त्रयोविंशं चतुर्विंशमनन्तकम् ॥६॥
पञ्चाविंशं वृषारूढं षड्विंशं विश्वलोचनम् ।
त्रिलोचनं सप्तविंशं अष्टाविशं खगेन्द्रकम् ॥७॥
पं पं पं नवविंशं च त्रिंशद्भुजग-भूषणम् ।
लं लं लमेक त्रिंशञ्च द्वात्रिंशं पञ्चवक्त्रकम् ॥८॥

त्रयस्त्रिंशञ्च नन्दञ्च चतुस्त्रिंशमतः परम् ।
भं भं भं भं पञ्चत्रिंशं षट्त्रिंशं षट्त्रिंशं शत्रुनाशनम् ॥९॥
सप्तत्रिंशं स्वयंभूञ्च विश्वेशमष्ट त्रिंशकम् ।
शूलपाणिं नवत्रिंशं चत्वारिंशत् कलाधरम् ॥१०॥
एक चत्वारिंशत् सं सं सं द्विचत्वारिंश हासकम् ।
एतं यशस्यमायुष्यं मंत्रं सर्वार्थदायकम् ॥११॥
अनेक रत्न लम्बानि जटामुकुट धारिणम् ।
अनेक रत्न संयुक्तं सुवर्णाञ्चित मौलिनम् ॥१२॥
तक्षकादि महानाग कुण्डलद्वय शोभितम् ।
कालीं लिखित दुर्गां च पक्षद्वय विराजितम् ॥१३॥
दशायुधधरं दीप्तं दशबाहुं त्रिलोचनम् ।
त्रिपञ्चनयनं पञ्चवक्त्रतुण्डधरं प्रभुम् ॥१४॥
नीलकण्ठामराभोग सर्थहारोपशोभितम् ।
विशालाक्षं च विश्वेशं विश्वमोहनमव्ययम् ॥१५॥
त्रिपुरारिं त्रिशूलादिं धारिणं मृगधारिणम् ।
करालभृकुटिं भीमं शंखतुल्य कपोलकम् ॥१६॥
व्याघ्रचर्माम्बरधरं वाडवाग्नि स्थितोदरम् ।
मृत्यु व्याधिस्थितोरूं च वज्र जानुप्रदेशकम् ॥१७॥
पादपङ्कज युग्मञ्च तीक्ष्णवज्र नखाग्रकम् ।
रणन्नूपुर मञ्जीर झणत्किं किणि कूजितम् ॥१८॥
वज्रतुण्डं महादीप्तं कालकालं कृपानिधिम् ।
एवं ध्यात्वा च हृदयं त्रिंशदावृत्तिकं क्रमात् ॥१९॥
नित्यं जप्त्वा शालुवेशं हृदयं सर्वकामदम् ।
सर्वपुण्यफलं श्रेष्ठं सर्वशत्रुविनाशनम् ॥२०॥
सर्वरोगहरं दिव्य भजतां पापनाशनम् ।
इहैव सकालान् भोगानन्ते शिवपद ब्रजेत ॥२१॥
इत्युक्त्वान्ते तदा देवः शरभपक्षिराजसौ ।
ततोनारायण ध्यात्वा दृष्ट्वा रूपञ्च विस्मितः ॥२२॥

एतत्ते सुभ्रु कथित हृदयं शरभस्य च ।
पठतां श्रृण्वताञ्चैव सर्वमंत्रादिसिद्धिम् ॥२३॥

॥ इति महाशैवतन्त्रे अति रहस्ये आकाशभैरव कल्पे प्रत्क्षसिद्धिप्रदे शरभशालुव पक्षिराज हृदय संपूर्णम् ॥

॥ अथ शरभेशाष्टक स्तोत्रम् ॥

कुण्डलिनी शक्तिका ध्यान करते हुये स्तोत्र का 3 बार पाठ करे।

तडित्कोटि प्रतीकाशां विषतन्तु तनीयसीं। इति कुण्डलिनी ध्यात्वा॥

विनियोगः **अस्य श्री शरभेष्टाक मंत्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः, जगती छंदः, भगवान श्री शरभेश्वरो देवता, खं बीजं, स्वाहा शक्तिः, चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - **कालाग्निरुद्राय ऋषये नमः शिरसि। जगती छन्दसे नमः मुखे। भगवते श्री शरभेश्वराय देवातयै नमः हृदये। खं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। विनियोग नमः सर्वाङ्गे।**

मूलमंत्र से षडङ्गन्यास करे एवं ध्यान करें ।

ध्यानम्—

ज्वलन कुटिलकेशं सूर्यचन्द्राग्नि नेत्रम्,
निशित कर नरखाग्रैर्धूर्म होमादि देहम्
शरभमथ मुनीन्द्रैः स्तूयमानं सिताङ्गम्
प्रणतभय-विनाशं भावये पक्षिराजम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ देवाधिदेवाय जगन्मयाय शिवायनालीक निभाननाय ।
शर्वाय भीमय शराधिपाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय ॥१॥
हराय भीमाय हरिप्रियाय भवाय शान्ताय परात्पराय।
मृडाय रुद्राय त्रिलोचनाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय ॥२॥
शीतांशु चूडाय दिगम्बराय सृष्टि स्थिति ध्वंसन कारणाय।
जटाकलापाय जितेन्द्रियाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय ॥३॥
कलंक कण्ठाय भवान्तकाय कपाल शूलाढ्य कराम्बुजाय।
भुजङ्ग भूषाय पुरान्तकाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय ॥४॥

शमादि षट्काय यमान्तकाय यमादि योगाष्टक सिद्धिदाय।
उमाधिनाथाय पुरातनाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय॥५॥
घृणादि पाशाष्टक वर्जिताय लेखी कृतास्मिन् पथिपुङ्गवाय।
गुणादिहीनाय गुणत्रयाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय॥६॥
कलादि वेदामृत कन्दलाय कल्याण कौतूहल कारणाय।
स्थूलाय सूक्ष्माय सूरूपकाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय॥७॥
पंचाननायखिल भासनाय पञ्चाशदर्णाय पराक्षराय।
पंचाक्षरेशाय जगद्धिताय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय॥८॥
नीलकण्ठाय रुद्राय शिवाय शशिमौलिने।
भवाय भवनाशाय पक्षिराजाय ते नमः॥९॥
परात्पराय घोराय शंभवे परमात्मने।
शर्बाय निर्मलाङ्गाय शालुवाय नमो नमः॥१०॥
गङ्गाधराय साम्बाय परमानन्द तेजसे।
सर्वेश्वराय शान्ताय शरभाय नमो नमः॥११॥
वरदाय च गङ्गाय वामदेवाय शूलिने।
गिरिशाय गिरिशाय गिरिजापतये नमः॥१२॥
कनक जठर कोद्यद्रक्त पानोन्मेदन प्रथित निखिल पीड़ा
नारसिंहेन जाता। शरभ हर शिवेश त्राहि नः
सर्वपापा दनिशमिह कृपालो शालुवेश प्रभोत्वम्॥१३॥
शरभेश शर्वाधिक शान्तमूर्ते कृतापराधान मरानपायान्।
विनीत विश्व द्विविधायतेन नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय॥१४॥
दंष्ट्राननोग्रः शरभःसपक्षश्चतुर्भुजश्चाष्ट-भुजश्चर्तुर्विधः।
कोटीर गङ्गेन्दुधरो नृसिंहक्षोभाय ह्यास्मद्रिपुहास्तु शंभुः॥१५॥
हुंकारी शरभेश्वरोष्टचरणः पक्षीचतुर्बाहुकः
पादाकृष्ट निंसह विग्रहधर कालाग्नि कोटिद्युतिः।
विश्वक्षोभहरः सहेतिरनिशं ब्रह्मेन्द्र मुख्यैस्तुतो
गङ्गाचन्द्रधरः पुरत्रय हर सद्यो रिपुघ्नोस्तुमः॥१६॥
मृगङ्गलाङ्गल सुचञ्चुपक्षो दंष्ट्राभिरष्टांघ्रि भुजा सहस्त्रः
त्रिनेत्र गङ्गेन्दुधरः प्रभाढ्यः पायाद पायाच्छरभेश्वरो नः॥१७॥

नृसिंहमृत्युग्रमदिव्यतेजः प्रकाशिनं दानवभङ्गदक्षम्।
प्रशान्तमन्तंविदधाति यो ऽ मेसो ऽ व्यादपायाच्छरभेश्वरो नः ॥१८॥
योऽभृत् सहस्रांशु शतप्रकाशः सपक्ष सिंहाकृतिरष्टपादाः।
नृसिंह संक्षोभ शमात्तरूपः पायादपायाच्छरभेश्वरो नः ॥१९॥
त्वां मन्युमन्तं प्रवदन्ति वेदाः त्वां शांतिमन्तं मुनयो
गृणन्ति दृष्टे नृसिंहे जगदीश्वरेते सर्वापराधंशरभः क्षमस्व ॥२०॥

करचरणकृतं वा कायजं कर्मजं वा
श्रवण नयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व,
शिव शिव करुणाब्धे श्रीमहादेव शंभो ॥२१॥

रुद्रः शङ्कर ईश्वरः पुरहरः स्थाणुः कपर्दी शिवो वागीशो
वृषभध्वज स्मरहरी भक्ति प्रियस्त्र्यम्बकः।
भूतेशो जगदीशश्वरश्च शरभो मृत्युंजय श्रीपतिरस्मान्काल
गलोऽवतात् पशुपतिः शंभुः पिनाकीः हरः ॥२२॥
योऽ स्मान्पाहि भगवन्त प्रसीद च पुनः पुनः।
इति स्तुतो महादेवः प्रसन्नो भक्तवत्सलः ॥२३॥
यतो नृसिंह हरसे हर इत्युच्यसे बुधैः।
यतो विभर्ति सकलं विभज्यतनुमष्टधा ॥२४॥
सुरान्नाह्लादयामास वरदानै-रभीप्सितैः।
प्रसन्नोऽस्मि स्तवेनाहमनेन विबुधेश्वराः ॥२५॥
मयिरुद्रे महादेवे भजध्वं भक्ति पूरिताः।
ममांशोऽयं नृसिंहोऽपि मयि भक्ततमोऽस्त्विह ॥२६॥
इयं स्तवं पठेद्यस्तु शरभेष्टाकं नरः।
तस्य नश्यन्ति पापानि रिपवश्चसुरोत्तमाः ॥२७॥
नश्यन्ति सर्वरोगाणि क्षयरोगादिकानि च।
अशेष ग्रह भूतानि कृत्रिमाणि च ज्वराणि च ॥२८॥
सर्व चौरादि शार्दूल गजपोत्रिमुखाणि च।
अन्यानि च वनस्थानि नास्ति भीतिर्न संशयः ॥२९॥

इत्युक्त्वान्तर्दधे देवा देवान्सर्व शालुवः।
ततस्ते स्वस्वधामानि गताश्चाह्लाद पूर्वकम्॥३०॥
एतच्छारभं स्तोत्रं मंत्रंभूतं जपेन्नरः।
सर्वान्कामान वाप्नोति शिवलोकञ्च गच्छति॥३१॥

॥ इति शरभार्चन पद्धति प्रयोगान्तरे शरभाष्टक स्तोत्रं॥

॥ अथ श्रीशरभ दिग्बंधनम् ॥

विनियोगः - अस्य श्रीशरभ दिग्बंधन महामंत्रस्य वामदेव ऋषिः, अति जगती छंदः, शरभशालुव पक्षिराजो देवता, खं बीजं, स्वाहा शक्तिः, क्रों कीलकं शरभ शालुव प्रसाद सिद्धि द्वारा दिग्बंधने विनियोगः।

न्यासः - ॐ खें खां वीर शरभाय- अंगुष्ठाभ्यां नमः।(हृदयाय नमः) खं फट् उग्रशरभाय- तर्जनीभ्यां नमः।(शिरसे स्वाहा) प्राणग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट् क्रूर शरभाय-मध्याभ्यां नमः।(शिखायै वषट्) सर्वशत्रु संहारणाय त्रिशूलशरभाय - अनामिकाभ्यां नमः।(कवचाय हुं) शरभ शालुवेशाय आनंद शरभाय-कनिष्ठिकाभ्यां नमः।(नेत्रत्रयाय वौषट्) पक्षिराज हुं फट् स्वाहा वज्रनख दंष्ट्र शरभाय-करतल.।(अस्त्राय फट्)

ॐ लं वीरशरभाय पूर्वद्वारं बंधय-बंधय
मां रक्ष-रक्ष महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा ॥१॥
ॐ रं अग्निशरभाय आग्नेयद्वारं बंधय-बंधय
मां रक्ष-रक्ष महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा ॥२॥
ॐ हुं प्रलयकालशरभाय दक्षिणद्वारं बंधय-बंधय
मां रक्ष-रक्ष महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा ॥३॥
ॐ शं कपालशरभाय नैऋृत द्वारं बंधय-बंधय
मां रक्ष-रक्ष महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा ॥४॥
ॐ वं प्रचण्डशरभाय पश्चिमद्वारं बंधय-बंधय
मां रक्ष-रक्ष महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा ॥५॥
ॐ यं चामुण्ड शरभाय वायव्यद्वारं बंधय-बंधय
मां रक्ष-रक्ष महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा ॥६॥

ॐ शं आनंद शरभाय उत्तरद्वारं बंधय-बंधय
मां रक्ष-रक्ष महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा ॥७॥
ॐ शं उग्र शरभाय ईशानद्वारं बंधय-बंधय
मां रक्ष-रक्ष महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा ॥८॥
ॐ लं कल्याण शरभाय अंतरिक्षद्वारं बंधय-बंधय
मां रक्ष-रक्ष महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा ॥९॥
ॐ क्षं प्रलयकालमहाताध्य शरभाय भूमिद्वारं बंधय-बंधय
मां रक्ष-रक्ष महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा ॥१०॥
ॐ फं दक्षाध्वर ध्वंसनशरभाय सर्वदिग्द्वारं बंधय-बंधय
मां रक्ष-रक्ष महायोगीश्वराय हुं फट् स्वाहा ॥११॥
भूतप्रेत पिशाचोच्चाटनाय महाशरभाय सालुव पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ॥

॥ श्रीशरभ स्तोत्रम् ॥

(चित्तकलाकर्षण स्तोत्रम्)

विनियोग: - श्री गणेशाय नमः। ॐ अस्य श्री चित्कलाकर्षण मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, जगती छन्दः, वीरशरभो देवता, खें बीजं, ह्रीं शक्तिः, फट् कीलकं मम आत्मरक्षणार्थे मम सर्वशत्रुतेजाकर्षणार्थे श्रीवीरशरभेश्वर प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

करन्यास - खां, खीं, खूं, खैं, खौं, खः से हृदयादिन्यास करें।

ध्यानम् :-

दूर्वा श्याम महोग्रं स्फुरदचल धरं चंद्र सूर्याग्नि नेत्रं ॥
चक्रं वज्रं त्रिशूलं शर मुशल गदा शक्त्यभीतिर्वहन्तम् ॥
शंखं खेटं कपालं सधनु हल फणि त्रोट दानादि हस्तं ।
सिंहारि सालुवेशं नमति रिपुजनं प्राण संहारदक्ष ।

पूजन :- पंचतत्त्व मुद्रा प्रदर्शन करें॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ नमो वीर शरभ रुद्रावताराय रौद्राति घूर्ण नेत्रत्रयाय खट्वांग परशु डमरु शूल धनुर्बाण शंख खड्ग चक्रहस्ताय ॐ वीर शरभ हरिहर मंत्रादि देवतानां नानाविध स्थावर देवतानां अष्टाष्ट कोटि भूतगणानां सर्व जन्तूनां

अभीष्ट तेजोविग्रहं मम सर्व शत्रून् व्योम केशेन गुरु शक्ति सहितं केशभारं बंधय बंधय ब्रह्मणा परमात्म शक्तिसहितं शिरस्थानं बंधय बंधय इन्द्रेण लक्ष्मीशक्ति सहितं कर्णद्वय बंधय बंधय सोम सूर्याग्निभिरिडा पिंगला शुषम्ना शक्ति सहितं नासापुटं बंधय बंधय यक्षसेन सरस्वति सहितं जिह्वां बंधय बंधय वरुणेन उदान शक्ति सहितं कंठ प्रदेशं बंधय बंधय वायुना प्राण शक्ति सहितं नाभि प्रदेशे बंधय बंधय ईशानेन आधार शक्ति सहितं कटिप्रदेशं बंधय बंधय कालाग्निरुद्रेण व्यानशक्ति सहितं सर्वाङ्गं बंधय बंधय विष्णुना मनोबुद्धिचित्तहंकारशक्ति सहितं अंतःकरण चतुष्टयं बंधय बंधय वसुभिरिच्छा शक्ति सहितं धातून् बंधय बंधय ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हूँ फट् जानुद्वयं शृंखलयोपदद्वय बाहूद्वयं बंधय बंधय आकर्षय आकर्षय प्रहारय प्रहारय दाहय दाहय जलेनिमज्जय मज्जय पीड़य पीड़य घातय घातय मम इष्ट देवता पार्श्वे कुरु कुरु मम किं करो भूतं कुरु ॐ खं खें खें खें ह्रीं श्रीं वीरशरभाय फट् फट् फट् स्वाहा॥

॥ फलश्रुति ॥

सिद्ध मंत्रमिदं ख्यातं न जपेर्न च होमकैः॥ एकोच्चारण मात्रेण सर्व सिद्ध्यति तत्क्षणात्॥ वीरशरभ मंत्रेण मंत्रराज मिदं भुवि स्मरणात् वैरिवर्ग तु दाहयेत तृलराशिवत्॥२॥ पंचक्रोश प्रमाणेम परविद्या न भाषते॥ परप्रज्ञापहरणं परकृत्रिमनाशनम्॥ अघोरेषु च मंत्राणां प्रयोगं न भवेत् ततः॥ महाप्रयोग दमनं मेरु मंदार संन्निभम् वैष्णवेषु च मंत्राणां भैरवेषु च मंत्रकम्॥ शक्तिभेदेषु मंत्राणां नाना क्षुद्रादयस्तथा॥ सर्वप्रयोगहरणं एतन्मंत्रं च भूतले॥ नास्ति नास्ति पुर्नास्ति नास्ति तत्सदृशो मनु॥ अस्य मुख शकाशात्तु शापानुग्रह कारकं॥ स्वयं श्री शरभेशश्च वर्तते भूतलेनृणां॥ भूतानां च गणानां च देवतानां नरस्तथा॥ तस्य दर्शन मात्रेण भयं भवति निश्चितं॥ मंडूको भोगिनं दृष्ट्वा मार्जारो मूषकं तथा। पन्नगो गरुड़ं॥ दृष्ट्वा नात्र कार्या विचारणा॥ नित्यं षोडश वारंतु मंत्रं जप्त्वातु यत्नतः स्वयं श्री शरभेशस्यं सारूप लभते ध्रुवम्॥ पुरश्चरणं शोड़ष शतं ॥ एवं श्री आकाश भैरव कल्पे चित्कलाकर्षण मंत्रं शुभम्॥

क्रियाविधि :– पूर्व दिने आरम्भं कृत्वा तत्रस्थाने आसनं पुरश्चरण समाप्ति पर्यन्तं आस्तीर्य॥ यमदिशि मुखं कृत्वा उपविश्य शत्रु प्रतिमा प्रादेश मात्रं पुरुषाकृतिं विलिख्यते॥ प्रतिमा सन्मुखं स्थापयेत्॥ प्रतिमा शिरमध्ये शत्रुनामगोत्रसहितं लिख्यते॥ द्रव्य पुरेतान अक्षतान् साग्रं तण्डुलं गृहीत्वा समंत्रादि वर्णा यथा यथा मंत्र क्रम तत्र तत्र स्थानं ताडयेत्॥ प्रतिभि यथाधिकारे विजयादि बोधं कृत्वा तत्र पुरुश्चरण पाठं

कृत्वा (पादधूलि १) (भाड़धूलि २) (कलाल धूलि ३) (श्मशान धूलि ४) (अश्वशाला धूलि ५) (गजशाला धूलि ६) पुत्तली कृत्वा १६ पाठ कृत्वा। एक पाठ माने ऐसे १६ पाठ २५६ दिन १६ मंत्र, ४०९६ पाठ करें।

॥ निग्रहदारुण सप्तक शरभपक्षिराज स्तोत्रम् ॥

विनियोग: :- अस्य श्री निग्रह दारुण सप्तक माला मन्त्रस्य श्रीसदाशिव ऋषि: वृहती छन्द: श्रीशरभो देवता मम वैरिविनाशार्थे भगवन् श्रीशरभ सालुव पक्षिराज देवता प्रसन्नार्थे जपे विनियोग:।

॥ ध्यानम् ॥

चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टि: कुलिशवरनखश्चञ्चलोऽत्युग्र जिह्व:
काली दुर्गा च पक्षौ हृदय जठरगो भैरवो वाडवाग्नि: ।
ऊरूस्थौ व्याधि मृत्यु शरभवरखगश्चण्डवातातिवेग:
संहर्ता सर्वशत्रून् स जयतिशरभ: शालुव: पक्षिराज: ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

कोपोद्रेकातिनिर्यन् निखिलपरिचरत् ताम्रभारप्रभूतं
ज्वालामालाग्र दग्धस्मरतनुसकलं त्वामहं शालुवेश
याचे त्वत्पाद पद्मप्रणिहितमनसं द्वेष्टिमां य: क्रियाभि:
तस्यप्राणप्रयाणं परशिवभवत: शूलभिन्नस्य तूर्णम् ॥१॥
शम्भो त्वद्धस्तकुन्तक्षत रिपुहृदयान्नि: स्रवल्लोहितौघं
पीत्वापीत्वाऽतिदीर्घा दिशिदिशि विचरास्त्वद्गणाश्चण्डमुख्या:।
गर्जन्तुक्षिप्रवेगा निखिलजयकरा भीकरा: खेललोला:
संत्रस्ताब्रह्मदेवा: शरभ खगपते त्राहि न: शालुवेश ॥२॥
सर्वाद्यं सर्वनिष्ठं सकलभयकरं त्वत्स्वरूपं हिरण्यं
याचेऽहं त्याममोघं परिकरसहितं द्वेष्टिमां य: क्रियाभि:।
श्रीशम्भो त्वत्कराब्जस्थित कुलिशकराघात वक्ष:स्थलस्य
प्राणा: प्रेतेशदूत ग्रहगणपरिखा: क्रोशपूर्वं प्रयान्तु ॥३॥
द्विष्म: क्षोण्यां वयं हि तव पदकमल ध्यान निर्धूतपापा:
कृत्याकृत्यैर्विमुक्ता विहग कुलपते खेलया बद्धमूर्ते।
तूर्णं त्वत्पादपद्म प्रधृतपरशुना तुण्डखण्डीकृताङ्ग:
सद्द्वेषी यातु याम्यं पुरमति कलुषं कालपाशाग्रबद्ध: ॥४॥

भीम श्रीशालुवेश प्रणतभयहर प्राणजिद् दुर्मदानां
याचेऽहं चास्य वर्ग प्रशमनमिह ते स्वेच्छया बद्धमूर्ते ।
त्वामेवाशु त्वदङ्घ्र्यष्टकनख विलसद्ग्रीवजिह्वोदरस्य
प्राणायान्तु प्रयाणं प्रकटित हृदयस्यायुरल्पायतेश ॥५॥

श्रीशूलं ते कराग्रस्थित - मुसलगदा वृत्तवात्याभिघातात्
यातायातारियूथं त्रिदश विघटनोद्भूतरक्तच्छटार्द्रम् ।सद्दृष्ट्वाऽऽयोधने
ज्यामखिलसुरगणाश्चाशु नंदन्तु-नाना
भूता-वेतालपूगः पिवतु तदखिलं प्रीतचित्तः प्रमत्तः ॥६॥

अल्पं दोर्दण्डबाहु प्रकटित विनमच्चण्ड कोदण्डमुक्तै .
र्बाणैर्दिव्यैरनेकैः शिथिलितवपुषः क्षीणकोलाहलस्य तस्य
प्राणावसानं परशरभ विभोऽहंत्वदिज्या प्रभावैः
तूर्णं पश्यामि यो मां परिहसति सदा त्वादिमध्यान्तहेतो ॥७॥

॥ फलश्रुति ॥

इतिनिशि प्रयतिस्तुनिरासनो यममुखः शिवभावमनुस्मरन् ।
प्रतिदिनं दशवार दिनत्रयं जपति निग्रह दारुणसप्तकम् ॥८॥

इति गुह्यं महाबीजं परमं रिपुनाशनम् ।
भानुवारं समारभ्य मङ्गलान्तं जपेत् सुधीः ॥९॥

[इति श्री आकाशभैरवकल्पे प्रत्यक्ष ।
सिद्धिप्रदे नरसिंहकृता शरभस्तुतिः समाप्ता ॥]

॥ निग्रह दारुण सप्तकम् ॥

(द्वितीय प्रकाराः)

विनियोगः- ॐ अस्य श्री दारुण सप्तक स्तोत्र महामंत्रस्य वामदेव ऋषिः, जगती छन्दः, शरभशालुव कालाग्नि रुद्रो देवता, खं बीजं, ह्रीं शक्तिः, हुं फट् कीलकम् मम ये ये प्रतिकूल कारिणः प्रकट अप्रकट शत्रूणां पलायनार्थे जपे विनियोगः ।

न्यासः- ॐ ह्रां खां अंगुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं खीं तर्जनीभ्या नमः ।ॐ ह्रूं खूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रैं खैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐह्रौंखौं कनिष्ठिकाभ्या नमः । ॐह्रः खः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ।

इसी तरह हृदयादि न्यास करें ।

॥ ध्यानम् ॥

चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टिः कुलिशवरनखश्चञ्चलोऽत्युग्र जिह्वः ।
काली दुर्गा च पक्षौ हृदय जठरगो भैरवो वाडवाग्निः ॥
ऊरूस्थौ-व्याधिमृत्यु शरभ वरखगरचश्चण्ड-वातातिवेगः ।
संहर्ता-सर्वशत्रून स जयति शरभः शालुवः पक्षिराजः ॥१ ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां हं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ शालुवाय कालाग्नि रुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्री दें खीं व खीं दं खं तममुकनामान शत्रुं नाशय, ॐ श्रीं पशुं हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फें फं घृणे हुं फट्।

कोपोद्रेकातिनिर्यन् निखिलपरिचरत् ताम्रभारप्रभृतं
ज्वालामालाग्र दग्धस्मरतनुसकलं त्वामहं शालुवेश
याचे त्वत्पाद पद्मप्रणिहितमनसं द्वेष्टिमां यः क्रियाभिः
तस्यप्राणप्रयाणं परशिवभवतः शूलभिन्नस्य तूर्णम् ॥

ॐ नमो भगवते वाडवनल भैरवाय ज्वल ज्वल वैरिकुलं दह दह वर्म वर्म ठः ठः सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट् ॥१ ॥

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां हं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ शालुवाय कालाग्नि रुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्री दें खीं व खीं दं खं तममुकनामान शत्रुं नाशय, ॐ श्रीं पशुं हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फें फं घृणे हुं फट्।

शम्भो त्वद्धस्तकुन्तक्षत रिपुहृदयान्निः स्त्रवल्लोहितौघं
पीत्वापीत्वाऽतिदीर्घा दिशिदिशि विचरास्त्वद्गणाश्चण्डमुख्याः ।
गर्जन्तुक्षिप्रवेगा निखिलजयकरा भीकराः खेललोलाः
संत्रस्ताब्रह्मदेवाः शरभ खगपते त्राहि नः शालुवेश ॥

ॐ नमो भगवते वाडवनल भैरवाय ज्वल ज्वल वैरिकुलं दह दह वर्म वर्म ठः ठः सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट् ॥२ ॥

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां हं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ शालुवाय कालाग्नि रुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्री दें खीं व खीं दं खं तममुकनामान शत्रुं नाशय, ॐ श्रीं पशुं हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फें फं घृणे हुं फट्।

सर्वाद्यं सर्वनिष्ठं सकलभयकरं त्वत्स्वरूपं हिरण्यं
याचेऽहं त्वाममोघं परिकरसहितं द्वेष्टिमां यः क्रियाभिः।
श्रीशम्भो त्वत्कराब्जस्थित कुलिशकराघात वक्षःस्थलस्य
प्राणाः प्रेतेशदूत ग्रहगणपरिखाः क्रोशपूर्वं प्रयान्तु ॥

ॐ नमो भगवते वाडवनल भैरवाय ज्वल ज्वल वैरिकुलं दह दह वर्म वर्म ठः ठः सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट् ॥३॥

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां हं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ शालुवाय कालाग्नि रुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्री दें खीं व खीं दं खं तममुकनामान शत्रुं नाशय, ॐ श्रीं पशुं हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फें फं घृणे हुं फट्।

द्विष्मः क्षोण्यां वयं हि तव पदकमल ध्यान निर्धूतपापाः
कृत्याकृत्यैर्विमुक्ता विहग कुलपते खेलया बद्धमूर्ते।
तूर्णं त्वत्पादपद्म प्रधृतपरशुना तुण्डखण्डीकृताङ्गः
सद्द्वेषी यातु याम्यं पुरमति कलुषं कालपाशाग्रबद्धः ॥

ॐ नमो भगवते वाडवनल भैरवाय ज्वल ज्वल वैरिकुलं दह दह वर्म वर्म ठः ठः सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट् ॥४॥

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां हं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ शालुवाय कालाग्नि रुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्री दें खीं व खीं दं खं तममुकनामान शत्रुं नाशय, ॐ श्रीं पशुं हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फें फं घृणे हुं फट्।

भीम श्रीशालुवेश प्रणतभयहर प्राणजिद् दुर्मदानां
याचेऽहं चास्य वर्ग प्रशमनमिह ते स्वेच्छया बद्धमूर्ते ।
त्वामेवाशु त्वदङ्घ्र्यष्टकनख विलसद्ग्रीवजिह्वोदरस्य
प्राणायान्तु प्रयाणं प्रकटित हृदयस्यायुरल्पायतेश ॥

ॐ नमो भगवते वाडवनल भैरवाय ज्वल ज्वल वैरिकुलं दह दह वर्म वर्म ठः ठः सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट् ।।५ ।।

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां हं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ शालुवाय कालाग्नि रुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्री दें खीं व खीं दं खं तममुकनामान शत्रुं नाशय, ॐ श्लीं पशुं हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फें फं घृणे हुं फट्।

श्रीशूलं ते कराग्रस्थित - मुसलगदा वृत्तवात्याभिघातात्
यातायातारियूथं त्रिदश विघटनोद्भूतरक्तच्छटार्द्रम् ।सद्दष्ट्राऽऽयोधने
ज्यामखिलसुरगणाश्चाशु नंदन्तु-नाना
भूता-वेतालपूगः पिवतु तदखिलं प्रीतचित्तः प्रमत्तः ।।

ॐ नमो भगवते वाडवनल भैरवाय ज्वल ज्वल वैरिकुलं दह दह वर्म वर्म ठः ठः सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट् ।।६ ।।

ॐ खें खां घ्रां घ्रं ह्रां हं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभ शालुवाय कालाग्नि रुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा ह्री दें खीं व खीं दं खं तममुकनामान शत्रुं नाशय, ॐ श्लीं पशुं हुं फट् घ्राण्येव हुं फट् तं शीघ्रं नाशय स्वाहा सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फें फं घृणे हुं फट्।

अल्पं दोर्दण्डबाहु प्रकटित विनमच्चण्ड कोदण्डमुक्तै
र्बाणैर्दिव्यैरनेकैः शिथिलितवपुषः क्षीणकोलाहलस्य तस्य
प्राणावसानं परशरभ विभोऽहंत्वदिज्या प्रभावैः
तूर्णं पश्यामि यो मां परिहसति सदा त्वादिमध्यान्तहेतो ।।

ॐ नमो भगवते वाडवनल भैरवाय ज्वल ज्वल वैरिकुलं दह दह वर्म वर्म ठः ठः सर्वशत्रूणामुच्चाटनं कुरु हुं फट् सर्वज्ञ ॐ ह्रीं खें खें फं घृणे हुं फट् ।।७ ।।

॥ फलश्रुति ॥

इतिनिशि प्रयतिस्तुनिरासनो यममुखः शिवभावमनुस्मरन् ।
प्रतिदिनं दशवार दिनत्रयं जपति निग्रह दारुणसप्तकम् ।।८ ।।

इति गुह्यं महाबीजं परमं रिपुनाशनम् ।
भानुवारं समारभ्य मङ्गलान्तं जपेत् सुधीः ।।९ ।।

[इति श्री आकाशभैरवकल्पे प्रत्यक्ष ।
सिद्धिप्रदे नरसिंहकृता शरभस्तुतिः समाप्ता ॥]
॥ इति आकाश भैरव कल्पे प्रत्यक्ष सिद्धिप्रदे नृसिंहकृते शरभस्तुतिः समाप्ता ॥

॥ श्री शरभ कवचम् ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

सर्वज्ञ सर्वमंत्रस्य सर्वाचार्य शिव प्रभो ।
शरभं कवचं दिव्यं सर्व रक्षाकरं परम् ॥
वज्रपञ्जर नामाख्यं वद मे करुणाकर ।

॥ श्री ईश्वरोवाच ॥

वक्ष्यामि शृणु देवेशि सर्व लक्षणमद्भुतम् ।
शरभं कवचं नाम्ना चतुर्वर्ग फलप्रदम् ॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्री शरभ शालुव पक्षिराजाख्य कवचस्य सदाशिव ऋषिः, बृहस्पति छन्दः, श्री शरभेश्वरो देवताः, प्रणवो बीजं, प्रकृतिः शक्तिः, अव्यक्तं कीलकं, चतुर्वर्ग फल प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - शिरसि सदाशिवाय ऋषये नमः। मुखे बृहस्पत्यै छन्दसे नमः। हृदि श्री शरभेश्वराय दैवतायै नमः। गुह्ये ॐ बीजाय नमः। पादयोः प्रकृत्यै शक्तये नमः। नाभौ अव्यक्त कीलकाय नमः। सर्वाङ्गे चतुर्वर्ग फल प्राप्त्यर्थे विनियोगाय नमः।

करन्यास एवं अंगन्यासः- खां खीं खूं खैं खौं खः से पूर्व की भाँति करे।

ध्यानम् :-

रत्नाभं सुप्रसन्नं त्रिनयनममृतोन्मत्त भूषाभिरामम् ।
कारुण्याम्बोधिमीशं वरदमभयदं चन्द्ररेखावतंशम् ॥
शंखाध्माताखिलाशा प्रतिहतविधिना भासमानात्मभासम् ।
सर्वेशं शालुवेशं प्रणतभयहरं पक्षिराजं नमामि ॥

मानस पूजन- पूर्व की भांति करें।

॥ श्री महारुद्राय नमः ॥

ॐ श्री शिवः पुरतः पातु मायाधीशस्तु पृष्ठतः ।
पिनाकी दक्षिणं पातु वामपार्श्वं महेश्वरः ॥१॥
शिखाग्रं पातु मे शम्भु निर्टिलं पातु शंकरः ।
ईश्वरो वदनं पातु भ्रुवोर्मध्यं पुरान्तकः ॥२॥
भ्रुवो पातु मम स्थाणुः कपर्दी पातु लोचने ।
शर्वो मे श्रोत्रयोः पातु वागीशः पातु लम्बिकाम् ॥३॥
नासायोर्मे वृषारूढो नासाग्रं वृषभध्वजः ।
स्मरारिः पातु मे ताल्वेरोष्ठयोर्भक्त वत्सलः ॥४॥
जिह्वां मम सदा पातु सर्व विद्या प्रदायकः ।
पातु मृत्युञ्जयोदन्ताश्चिबुकं पातु भूतराट् ॥५॥
परामेशः कपोलौ मे त्रिकं पातु कपालभृत् ।
कण्ठं पशुपतिः पातु शूली पातु हनू मम ॥६॥
स्कन्धद्वयं हरः पातु धूर्जटिः पातु मे भुजौ ।
भुजद्वयं महादेवं ईशानो मम कर्पूरम् ॥७॥
मुष्टिसन्धि जगन्नाथ प्रकोष्ठौ चन्द्रशेखरः ।
मणिबन्धं त्रिनेत्रो मे भीमः पातु करस्तलम् ॥८॥
करपृष्ठं मृडः पातु रुद्रोऽगुष्ठद्वयं मम ।
उमासहायस्तर्जन्यौ भर्गो मे पातु मध्यमे ॥९॥
अनामिके करालस्य कालकण्ठः कनिष्ठिके ।
गंगाधरोंऽगुलीपर्वाण्य प्रमेयो नखानि मे ॥१०॥
ईशानः पातुदोर्मूलं मेदो मे स्वस्तिदोऽवतु ।
वक्षस्तत्पुरुषः पातु कुक्षौ दक्षाध्वरान्तकः ॥११॥
अघोरो हृदयं पातु वामदेव स्तनद्वयम् ।
भालदृक् जठरं पातु नाभिं नारायण प्रियः ॥१२॥
कुक्षिं प्रजाकरः पातु कुक्षिं पार्श्वं महाबलः ।
सद्योजातः कटिं पातु पृष्ठ भागं तु भैरवः ॥१३॥
मोहनोजघनं पातु गुदं मम जितेन्द्रियः ।
ऊर्ध्वरेता लिंगदेशे वृषणं वृषभध्वजः ॥१४॥

ऊरुद्वयं भवः पातु जानुयुग्मं भवान्तकः ।
हुंकार पातु मे जंघे फट्कारो मम गुल्फके ॥१५॥
वषट्कारः पाद पृष्ठं वौषट्कारोंऽघ्रिणस्तले ।
स्वाहाकारोंऽगुलीर्पार्श्वे स्वधाकरोंऽगुली र्मम ॥१६॥
त्वरितः सर्व सन्धिन्मे रोमकूपे नृसिंहाजित् ।
त्वचं पातु मनोवेगः कालजिद् रुधिरं मम ॥१७॥
पुष्टिदः पातु मे मांस मेदो मे स्वस्तिदोऽवतु ।
सर्वात्मास्थिञ्चयं पातु मज्जां मम जगत्प्रभुः ॥१८॥
शुक्रं वृद्धिकरः पातु बुद्धिं वाचामधीश्वरः ।
मूलाधाराम्बुजं पातु भगवान् शरभेश्वरः ॥१९॥
स्वाधिष्ठानमजः पातु मणिपूरं हरिप्रियः ।
अनाहतं शालुवेशो विशुद्धं जीवनायकः ॥२०॥
सर्वज्ञानप्रदो देवो ललाटं मे सदाशिवः ।
ब्रह्मरन्ध्रं महादेवः पक्षिराजोऽखिलाकृतिम् ॥२१॥
सर्वलोक वशीकारः पातु मां खरगर्वजित् ।
वज्र-मुष्टि-वराभीति हस्तः कालाग्नि सन्निभः ॥२२॥
विजया सहितः पातु चैन्द्रीं ककुभमाग्निजित् ।
शक्ति-शूल-कपालासिहस्तः सौदामिनी प्रभः ॥२३॥
जयायुतो महा-भीमः पातु वैश्वानरीं दिशाम् ।
दण्डासि-शूल-मुसलं हाल पाशांकुश-कराम्बुजः ॥२४॥
यमान्तकोऽजितायुक्तोयाम्यीं पातु दिशं यमीम् ।
खड्ग-खेटाग्नि-परशु हस्तः शत्रु विमर्दनः ॥२५॥
अपराजितया युक्तः सदाव्यान्नैर्ऋतिं दिशम् ।
पाशांकुश-धनुर्बाण-पाणिः श्रेणी मुखाग्रगः ॥२६॥
हरिद्राभौऽनिशं पायाद्वारुणीं दिशमात्मजित् ।
ध्वजाग्र कवचोदार भुजो दुर्गायुतः खगः ॥२७॥
चण्डवेगः शिवः पायात्सततं मारुतीं दिशम् ।
गदाक्षस्त्रग्वराभीति करम्भोजः शिवायुतः ॥२८॥

कनकाभो महातेजाः पातु कौबेरकी दिशम् ।
त्रिशूलहि-कपालाग्रिदोः स्तलो विद्यायायुतः ॥२९॥
भस्मोद्धूलित सर्वांगो दिशं पात्वपराजिताम् ।
जपाक्ष-पुस्तकां भोज कमण्डलुं कराम्बुजः ॥३०॥
ऊर्ध्वं पातु गिरायुक्तः सर्वभूत हितेरतः ।
शंखं-चक्रं-गदाऽभीति-हस्तः पद्मायुतोऽव्ययः ॥३१॥
नीलाञ्जन समोनीलः पातालं पात्वनारतम् ।
अनुक्त विदिशः पातु शलवो नृसिंहजित् ॥३२॥
शरभः पातु संग्रामे युद्धे वैरिकुलान्तकः ।
सर्व सौभाग्यदः पातु जाग्रत्स्वप्न-सुषुप्तिषु ॥३३॥
सर्व सम्पत्प्रदः पातु धनाध्यक्षादिकं मम ।
सतानदः सुतान्पातु पुत्रानायुष्करोऽनिशम् ॥३४॥
बन्धुन्वृद्धिकरः पातु गृहं मम वशं करः ।
ग्रामं ग्रामेश्वरः पातु राज्यं मम दिगम्बरः ॥३६॥
राष्ट्रं शान्तिकरः पातु राजानं धर्मदायकः ।
मार्गं दुष्टहरः पातु मम कार्याणि भैरवः ॥३७॥
बटुकः पातु मे सर्वं त्र्यवस्थासु भयेषु च ।
स्पर्श-वीक्षण-संयुक्तः प्राणरक्षां मनोजवः ॥३८॥
प्रधानमूर्ति भावश्च प्रसादेष्वाशु सिद्धिकृत् ।
साधकः प्रणवं माया बीजं नमो भगवतेति च ॥
प्रतिनाम चतुर्थ्यतं स्पर्श इत्यभिधीयते ।
द्विर्ज्वल-प्रज्वले साध्यं साधय द्विर्द्विरक्ष तत् ॥३९॥
सर्वदुष्टेभ्यो हुं फट् स्वाहान्तं युग्-वीक्षणम् ।
स्पृशन् पश्यन् जपं कृत्वा प्रतिस्थानं समाहितः ॥४०॥
प्रार्थयेदखिलं स्वेष्टं हृदिस्थं शालुवेश्वरम् ।
ये ग्राम घातकाः क्रूराः कपटा दौष्टिका भटाः ॥४१॥
तस्कराः शत्रवो क्रुद्धा वधे सक्ताः पलाशनाः ।
छद्मचारः विदोभ्रष्टा दिवाचर-निशाचराः ॥४२॥

ते सर्वे पक्षिराजस्य पक्षवात पराहताः ।
स्त्री-बाल-सहिताः क्षिप्रं पितृ-मातृ कुलान्विताः ॥४३॥
भग्नचित्ता गतप्राणाः यान्तु देशान्तरं स्वयम् ।
ये च दुष्टग्रहाः शक्ताः पिशाचा देवयोनयः ॥४४॥
चतुः षष्टिगणाः सप्तसप्तत्युन्मादका ग्रहाः ।
अष्टाशीति महाभूताः सप्तकोटि महाग्रहाः ॥४५॥
नवति ज्वर भेदाश्च शत-भेदाश्च कृत्तिकाः ।
पञ्चाशद् गणनाथाश्च नियुताः कृत्रिम ग्रहाः ॥४६॥
प्रेतारूढास्त्रयस्त्रिंशत्पिण्डान परायणाः ।
अयुतं क्षुद्र-भेदाश्च चत्वारिंशच्छिवाह्वयाः ॥४७॥
द्वात्रिंशद्वह्निवक्त्राश्च विंशन्मार्जार वक्त्रकाः ।
चतुः षष्ट्याखुरूपाश्च ये चान्ये क्षुद्रयोनयः ॥४८॥
ते सर्वे शालुवेशस्य शंखं-निःस्वन-मोहिताः ।
विषण्णाः स्खलिताः शान्ताः प्राणः-त्राण-परायणाः ॥४९॥
गच्छन्तु सम्प्रयोत्कारो देशान्तरमनिच्छया ।
ये चान्येवनजा ग्राम्याः शुनकोरगवृश्चिकाः ॥५०॥
आशीविषाः शिवा व्याला व्याघ्र-ऋक्षेभ सूकराः ।
गृध्राः श्येनाः खगाः काकाः दंशका भ्रंशका मृगाः ॥५१॥
एते शरभहस्ताग्र-नख-क्षत-विमोक्षगाः ।
स्त्रवद्रक्त छटासिक्ताः शिलातल निताडिताः ॥५२॥
सम्भेदिता नखैः शीघ्रं नश्यंत्वखिल दुश्चराः ।
न दंशत्पुरगाः क्वापि वातोतिवक्षितु ॥५३॥
न दहत्वसवो वह्निरायात्वापो न चाधिकाः ।
न वर्षत्वतिवृष्टिश्च न पतत्व शनिः क्वचित् ॥५४॥
नाक्रामत्वपमृत्युश्च न रोगानाशुभं क्वचित् ।
न म्रियते भञ्जनो न भवत्वशुभं क्वचित् ॥५५॥
न वदन्त्वसहो वाक्यं जन्तवो मम देशके ।
नास्याद्वैरं च जन्तूनां अन्येषां राजके मम ॥५६॥

भवन्तु सुखिनः सर्वे-सर्वे सन्तु पतिव्रताः ।
सर्वाः सूयन्तां सत्पुत्रान्पुत्रीश्च शुभ लक्षणाः ॥५७॥
सर्वे सर्वाश्च नंदन्तु सन्तु सम्कल्याणकारकाः ।
राजन्वती मही चास्तु राजा भवतु धार्मिकः ॥५८॥
सम्स्त्रंवन्तु पयोगावः फलंत्वोषध्योऽधिकम् ।
भवन्तु फलदा वृक्षाः सिद्धिर्भवतु मेऽखिला ॥५९॥
ममास्तु तरसा नूनमात्माज्ञानं चञ्चलम् ।
काम-क्रोध-महा-मोह-लोभ सम्मोह मत्सराः ॥६०॥
न सन्तु भगवन्क्वापि सर्वेश करुणानिधे ।
श्रीशरभेश्वर विश्वेश पक्षिराज दयानिधे ॥६१॥
देहि मे निश्चलां भक्तिं प्रणतोऽस्मि पुनः पुनः ।
गौरी वल्लभ कामारे कालकूटविषादन ॥६२॥
मामुद्धरापदंभोधेस्त्रिपुरहनांतकान्तक ।
शालुवेश जगन्नाथ सर्वभूतहिते रत ॥६३॥
पाहि मां तरसा चौरान् दुष्टानाशय नाशय ।
कालभैरव विश्वेशं विश्व रक्षा परायण ॥६४॥
रक्ष मूषक-चौरेभ्यो धान्यराशिमिमं प्रभो ।
पक्षिराज महा-देवप्रणतार्ति विनाशन ॥६५॥
मदीयानि पदार्थानि नित्यं पालय-पालय ।
सर्वज्ञ सर्वलोकेश सर्वदुष्ट विनाशका ॥६६॥
तस्करेण हृतं वस्तु द्रुतं दापय दापय ।
ये च मे वादिनो दिक्ष क्षद्रोपद्रवकारकाः ॥६७॥
सर्वाचार-परिभ्रष्टा मानहीनाश्च रोधकाः ।
ते सर्वे शालुवेशस्य मुसलायुध चूर्णिताः ॥६८॥
नश्यन्तु निमिषार्धेन पावकावृत्ततूलवत् ।
ये जन द्रोहिणोल्पाश्च तत्कालेऽहित भाषिणः ॥६९॥
सत्कर्म विघ्नकर्तारः शान्त भक्षपरायाणाः ।
तु शालुवेश हस्ताग्र-खड्गनिर्भिन्नदेहिनः ॥
पतन्तु भूतले याम्यां प्राणास्तेषां प्रयांत्वलम्
[illegible] श्गन निर्दग्धान्यायत्केश्चार्थ मंत्रिणः

महां द्रुहांति ये तेषां विभवानि क्षयंत्वरम् ।
त्वदाचार परं भक्तं साधकानां विवेकिनम् ॥७२॥
ये चाक्रमन्ति संग्रामे ते गच्छन्तु पराहताः ।
त्वदीयेनैव मार्गेण संचरन्तं जपातुरम् ॥७३॥
ये वदन्ति परीवादं भ्रान्ताः शीघ्रं भवन्तु ते ।
त्वद्दसममलं वीरं ये मां तर्जते बलात् ॥७४॥
मनसा ये न मन्यन्ते तत्स्वान्तं भ्राम्यतु क्षणात् ।
मनसा कर्मणा वाचा ये इत्यंत्पतिदुःसहम् ॥७५॥
ते महारोग शोकाद्यैः पतंत्वाशु शिवाज्ञया ।
मदीयानि पदार्थानि गृहीन्तु योऽवलोकते ॥७६॥
तत्क्षणादेव नष्टार्थो भवत्वादीश्वराज्ञया ।
मदीयं द्रव्यमादय ये गच्छन्तिह तस्कराः ॥७७॥
सिंहारि-पाश-सम्बद्धास्ते गच्छन्तु प्रदक्षिणम् ।
सीमातीताश्च ये चौरा गृहीतद्रव्य संचयाः ॥७८॥
अवशावयवास्तेन तु आगच्छन्तु शिवाज्ञया ।
तस्करा निम्नगास्वान्त-धान्य-वस्त्र-धनादिकाः ॥७९॥
पक्षिराज पराकृष्टाः समागच्छन्तुतेद्रुतम् ।
समाहृत पदार्था ये देशातीताश्च तस्कराः ॥८०॥
शरभेश-हलाकृष्टा तस्यागच्छन्तु सानुगाः ।
चौरा गृहीतुमुद्युक्ताः समागच्छन्ति मां गृहे ॥८१॥
ते शालुवेशपक्षोत्थ वातैर्गच्छन्तु सत्वरम् ।
शान्तं विवेकिनं भक्तं त्वदांघ्रि ध्यानतत्परम् ॥८२॥
दुह्यन्ति ये सहप्राणास्तेसं यान्तु यमां पुरीम् ।
षट्त्रिंशत्कोष्ठके यन्त्रे रेखाशूलाग्र मध्यमे ॥८३॥
स्वेच्छा मंत्रं लिखित्वा तु जपेदाराध्य साधकः ।
मध्ये पाशांकुशे वह्नि साध्य नाम लिखित्क्रमात् ॥८४॥
उदङ्मुखः सहस्त्रन्तु रक्षणाय जपेन्निशि ।
नष्टाहरणके पञ्चरात्रं पश्चिमादिङ्मुखः ॥८५॥

मारणे सप्तरात्रं तु दक्षिणोभिमुखो जपेत् ।
रोगानिग्रहणे चाष्टरात्रमाग्नेयदिङ्मुखः ॥८६॥
इति गुह्यं महा-मंत्र परमं सर्वसिद्धिदम् ।
शरभेशाख्य-कवचं चतुर्वर्ग फलप्रदम् ॥८७॥
प्रत्यहं प्रतिपक्षं वा प्रतिमास मथापि वा ।
यो जपेत्प्रतिवर्ष वा वरेण्यः स शिवो भवेत् ॥८८॥
एवं हि जपतः पुंसः पातकं चोपातकम् ।
सर्व विलयमाप्नोति रविणा तिमिर यथा ॥८९॥
दशाब्दं यो जपेन्नित्यं प्रातरूत्थाय साधकः ।
सर्वसिद्धि समाश्रित्य देहान्ते स शिवो भवेत् ॥९०॥
त्रिकालं ध्यानपूर्वं तु जपेद् द्वादश-वार्षिकम् ।
कायेनानेन सो देवि जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥९१॥
शतवारं जपेन्नित्यं मण्डलं यो वरानने ।
सोऽणिमादि गुणान् प्राप्य विचरेत्स्वेच्छया सदा ॥९२॥
अतलादिधरण्यादि भुवनानि चतुर्दश ।
विचरेत्कामवित्सर्वैः पूज्यमानो यथासुखम् ॥९३॥
त्रि-मासं यो जपन्नित्यमष्टोत्तर सहस्त्रकम् ।
सहसा शरभेशस्य स्वरूपं लभतेऽम्बिके ॥९४॥
षण्मासं यो जपेद्देवि प्रयतस्तु दृढव्रतः ।
मद्रूपधारकैर्मर्त्यैः सह सिद्धि प्रदायकैः ॥९५॥
मम लोके च सम्पूज्यो विष्णुलोके तथैव च ।
ब्रह्मलोके च रमते सर्वत्र न निवार्य्यते ॥९६॥
इन्द्राग्नियम रक्षेश जलेश पवनैः सदा ।
सोमेशानक लक्ष्मीशैर्द्दिशांपालैश्च पूज्यते ॥९७॥
आदित्य सोम-पृथ्वीश-बुध-श्रीगुरु-भार्गवैः ।
पूज्यते स ग्रहैः सर्वैः शनि-राहु-केतुभिः ॥९८॥
भृग्वंगिरः पुलस्त्यैश्च पुलहात्रि-मरीचिभिः ।
दक्ष-काश्यप-भृगवादियोगिभिश्च पूज्यते ॥९९॥

भैरवैर्वसुभी रूद्रैरादित्यैर्गाणपत्यकैः ।
दिग्गजैश्च महानागैर्दिव्यास्त्रै र्दिव्य वाहनैः ॥१००॥
माहेश्वरैर्महारत्नैः कामधेनु सुरद्रुमैः ।
सरिद्भिः सागरैः शैलैर्देवताभिस्तपोधनैः ॥१०१॥
दानवै राक्षसैः क्रूरैः सिद्ध-गन्धर्व-किन्नरैः ।
यक्षैर्विद्याधरैर्नागैरप्सरोभिः प्रपूज्यते ॥१०२॥
अपस्मार ग्रहैर्भीमैरून्मत्तैर्ब्रह्मराक्षसैः ।
वेतालैः खेचरैर्मर्त्यैः कूष्माण्डै राक्षस ग्रहैः ॥१०३॥
व्यालवत्क्रतमोहारैः स्त्रीग्रहैः पा [illegible]ग्रहैः ।
भूत-प्रेत-पिशाचाद्यैर्ग्रहैः सर्वत्र पूज्यते ॥१०४॥
ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैरन्यैश्च जातिभिः ।
पशु-पक्षि-मृग-व्यालैः पूज्यते सर्वजन्तुभिः ॥१०५॥
किमत्र बहुना देविः तव वक्ष्ये यथा तथम् ।
मया च विष्णुना चैव विश्वकर्त्रा च पाल्यते ॥१०६॥
भवान्या च गिरा लक्ष्म्या ब्राह्मण्याद्यष्ट मातृभिः ।
प्राणेश्वरादि योगीन्द्रैर्योगिनीभिः स पाल्यते ॥१०७॥
य इदं पूजयेद्भक्त्या तस्यासाध्यं न विद्यते ।
कवचेन्द्रं महामंत्र जपेत्तस्मादनुत्तमम् ॥१०८॥
उच्चाटने मरुद्वक्त्रो विद्वेषे राक्षसाननः ।
प्रागाननोऽभिवृद्धौ तु सर्वेष्वीशानदिङ्मुखः ॥१०९॥
यो जपेत्कवचं नित्यं त्रिकाल ध्यान पूर्वकम् ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति सहसा साधकोत्तमः ॥११०॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

देव-देव महा-देव शिव कारुण्यवारिधे ।
पाहि मां प्रणतं स्वामिन्प्रसीद परमेश्वर ॥१११॥
सर्वार्थसाधनोपाय सर्वेश्वर्य-प्रदायक ।
समस्तापत्प्रतीकार चन्द्रशेखर ते नमः ॥११२॥
यत्कृत्यं तन्न कृतं यद कृत्यं तत्कृत्य वदाचरितम् ।
उभयोः प्रायश्चितं शिव तव नामाक्षरोच्चरितम् ॥११३॥

॥ श्री शरभ-कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री शरभेश्वर शतनाम–स्तोत्र ॥

विनियोग: ॐ अस्य श्री शरभेश्वर शतनाम-स्तोत्र मंत्रस्य, अघोर ऋषि:, अमृत गायत्रीछन्द:, महावीर शरभेश्वरो देवता, शरभेश्वर प्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास: - ॐ अघोर ऋषये नम: शिरसि। अमृत गायत्री छन्दसे नम: मुखे। महावीर शरभेश्वर देवतायै नम: हृदये। शरभेश्वर प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे।

करन्यास एवं अंगन्यास: - खां, खीं, खूं, खैं, खौं, ख: से पूर्व की भाँति करे।

चन्द्रार्काग्निस्त्रि- दृष्टि....... से ध्यान व पूर्व की भाँति मानस पूजन भी करे।

॥ श्री नृसिंह उवाच ॥

ॐ नम: शिवाय शान्ताय शंकारयार्त्ति हारिणे ।
मयस्कराय पक्षीणाम्पतये शरभात्मने ॥१ ॥
अंबिकापतये तुभ्यमुमायापतये नम: ।
जाताय वहुधा लाके प्रभूताय नमो नम: ॥२ ॥
रूद्राय नीलरूद्राय वटुभद्राय चेतसे नम: ।
मीष्ढुष्टमाय देवाय शिपिविष्टायते नम: ॥३ ॥
नाराय च सुताराय तारणाय नमो नम: ।
हरिकेशाय देवाय शाम्भवेमदशत्रवे ॥४ ॥
देवानां शम्भवे तुभ्यं मन्यवे रुदरूपिणे ।
कपर्द्दिने नमस्तुभ्यं कालकण्ठाय ते नम: ॥५ ॥
हिरण्याय नमस्तुभ्यं श्रीकण्ठाय नमो नम: ।
नमो डमरू-त्रिशूलाय उग्राय च नमो नम: ॥६ ॥
भीमाय भीम रूपाय धर्मरूपाय ते नम: ।
भस्मदाय शरीराय कमण्डलु धराय च ॥७ ॥
नमो ह्स्वाय दीर्घाय वामनाय नमो नम: ।
अग्रेश्वराय वै तुभ्यं नमो दूरतराय च ॥८ ॥
धन्दिने शूलिने तुभ्यं दैत्यानां मर्म भेदिने ।
सद्योजाताय - वामाय - घोराय च नमो नम: ॥९ ॥

तत्पुरूषाय नमस्तुभ्यं ईशानाय नमो नमः ।
ब्रह्मणे-विष्णु रूपाय रूद्राय शिव रूपिणो ॥१०॥
नमो रूद्राय कल्पाय महाग्रासाय विद्मवे ।
नमो भवाय शर्वाय नमः पर शिवायते ॥११॥
काल-कालाय-कालाय महाकालाय मृत्यवे ।
वीराय वीरभद्राय क्षयकाराय शूलिने ॥१२॥
महादेवाय महते पशूनाम्पतये नमः ।
एकाय नीलकण्ठाय पिनाकिने ॥१३॥
नमोऽनंताय सूक्ष्माय नमस्ते मृत्यु-मृत्यवे ।
पराय च परमेशाय परात्परतरायते ॥१४॥
परात्पराय विश्वाय नमस्ते विश्वमूर्तये ।
नमो विष्णुकलत्राय विष्णुक्षेत्राय भावने ॥१५॥
कैवर्त्ताय किराताय महाव्याधाय शाश्वते ।
भैरवाय शरण्याय काम-कालपुरारये ॥१६॥
नमः पापौघ संहत्रे विष्णुकालान्त कारिणे ।
त्र्यम्बकाय त्र्यक्षराय शिपिविष्टाय मीढुषे ॥१७॥
निरालं च नित्याय शाम्भवे वायु सम्भवे ।
भवोद्भवाय शुद्धाय सर्वदेवोद्भवायते ॥१८॥
मृत्युञ्जयाय शर्वाय सर्वज्ञाय मखारये ।
मखेशाय वरेण्याय नमस्ते वह्निरूपिणे ॥१९॥
मेघवाहाय देवाय पार्वतीपतये नमः ।
अव्यक्ताय विकाराय स्थिराय स्थिरधन्विने ॥२०॥
स्थाणवे कृतिवासाय नमः पञ्चार्थ हेतवे ।
नमस्ते द्विजराजाय धनानाम्पतये नमः ॥२१॥
योगीश्वराय नित्याय सत्वाय परमेष्ठिने नमः ।
सर्वात्मने नमस्तुभ्यं नमः सर्वेश्वरायते ॥२२॥
एक-द्वि-त्रि-चतुः-पञ्च कृत्वास्तेऽस्तु नमो नमः ।
दशकृत्वः शतकृत्वः सहस्त्रकृत्वो नमो नमः ॥२३॥

नमोऽपरिमितिं कृत्वेऽनंतकृत्वे नमो नमः ।
ॐ नमः शालुवेशाय शरभेशायते नमः ॥२४॥

॥ श्री शरभशतनाम-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ शरभ यंत्रस्य आवरणदेवताया पृथक् पृथक् विशेष पूजा प्रयोगः ॥

(भैरव प्रपंचसार संग्रहे)

॥ उग्रभैरव मंत्र ॥

मन्त्र - ॐ नमो भगवते उग्रभैरवाय सर्वविघ्नान् नाशय ठः ठः स्वाहा।

विनियोग - **ॐ अस्य मंत्रस्य अघोर ऋषिः, विराट छंदः, भैरवो देवता, भं बीजं, फट् शक्तिः, सवार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।**

ध्यानम्–

कालाम्बुद श्यामल मानतास्यं करालभव्याहतमप्रमेयम् ।
लोलालकं लोकविनाश हेतुं लुण्ठद्रिपुं नौमि धृताट्टहासम् ॥

षडङ्गन्यास - **भां, भीं, भूं, भैं, भौं, भं, भः** से न्यास करे।

॥ यंत्र पूजनम् ॥

उर्ध्वमुख त्रिकोण बनाये उसके मध्य में '**ह्रीं फट्** ' लिखे। उसके बाहर अष्टदल में प्रत्येक दल में '**खें खां खं** ' लिखे। बाहर चौकोर भूपूर बनाये।

त्रिकोण में मध्य में '**उग्रभैरवाय नमः**' से पूजन करे।

अष्टदल मध्ये **भैरव्यै नमः, अघोराय नमः, स्कन्दाय नमः, विष्णवे नमः, दक्षिणामूर्त्तये नमः, चण्द्रोदण्डाय नमः, गणेशाय नमः, आपदुद्धारणाय नमः।**

दलान्ते- **आठो दलों में ब्राह्मी आदि अष्टमातृका पूजन करें।**

भूपूरे पूर्वादि दिशाओं में - **नरान्तकाय नमः, भीमाय नमः विजयाय नमः रक्त भैरवाय नमः।** फिर इन्द्रादि दिक्पालों की पूजा करे।

॥ सिद्ध भैरव ॥

विनियोग - **ॐ अस्य श्री सिद्ध भैरव मंत्रस्य शंकर ऋषिः, संस्कृति छंदः, सिद्ध भैरवो देवता, भं बीजं, श्री शक्तिः, मोहने जपे विनियोगः।**

न्यास - पूर्व मंत्र की तरह **भां, भीं, भूं, भैं, भौं भः** से षडङ्ग न्यास करे।

ध्यानम्—

जलदपटलनीलं दीप्यमानोग्रकेशं त्रिशिख डमरुहस्तं ।
चन्द्रलेखावतसं विमलवृष निरूढं चित्रशार्दूलवासः ।
विजयमनिशमीडे विक्रमोद्दण्ड चण्डम् ॥

मंत्र - ॐ नमो भगवते विजय भैरवाय प्रलयान्तकाय महाभैरव्यै महाभैरवाय सर्वविघ्न निवारणाय शक्तिधराय चक्रपाणये वटमूलसन्निषण्णाय अखिल गणनायकाय आददुद्धारणाय आकर्षय२ आवेशय२ मोहय२ भ्रामय२ शीघ्रंभाषय ह्रां ह्रीं त्रिपुरताण्डवाय अष्टभैरवाय भाषय२ स्वाहा ।

यन्त्रोद्धार- **'शान्तं त्रिमुखमालिख्य तने संवेष्टचय सर्वतः।**

तंत्रो की भाषा अति गुप्त है। शान्तं का अर्थ- **ॐ, ह्रीं नमः** कोई भी हो सकता है। त्रिकोण अष्टदल एवं भूपुर बनायें।

त्रिमुख का अर्थ त्रिभुज है। त्रिमुख से तीन आवरण त्रिकोण, अष्टदल एवं भूपूर भी हो सकता है। संवेष्टचय सर्वतः अर्थात् परिधि (भूपूर)। यहाँ पूर्व मंत्र की तरह ही यंत्र त्रिकोण, अष्टदल भूपूर युक्त भस्म से बनाये। मध्य में "**ह्री** " लिखें।
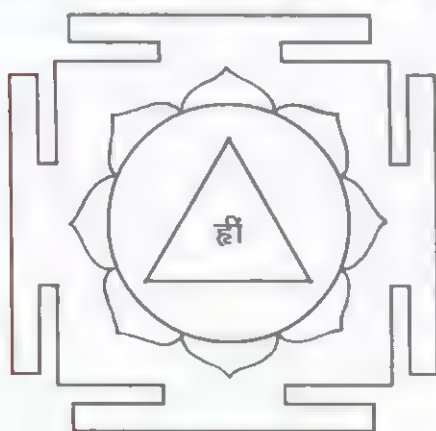
यंत्र के दोनों ओर दो शूल पार्श्वो में बनायें। **अथ शूलं च द्विपार्श्वे च यंत्रं विजयमद्‌भुतम्। षं षं षं** शूल के मूलमध्य व अग्रभाग तक लिखें पूर्व मंत्र की तरह यंत्र पूजा करें। मंत्र जप कर भस्म को साध्य

पर डालने से आवेश आकर्षण होता है।

॥ वडवानल मन्त्रम् ॥

अस्य वडवानल मंत्रस्य भास्कर ऋषिः, अतिधृति छन्दः, वडवानलो देवता, रं बीजं, स्वाहा शक्तिः अभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

न्यासः - **रां, रीं, रूं, रैं, रौं, रः से** क्रमशः षडङ्गन्यास करें।

ध्यानम्–

त्रिनयनमरुणन्त्वा बद्धमौलीषु शुक्लां शुकमरुण
मनेका - कल्पमम्भोज संस्थम् ।
अभिमत वरशक्ति स्वस्तिकाभीति हस्तं
नमत कनकमालालंकृताङ्गं कृशानुम् ॥

इसके दो प्रयोग है। -

१. मंत्र- (४० अक्षरात्मक) - **त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशु शुक्षणिस्त्वमद्भ्यः। त्वं भस्म परित्वं वनेभ्यस्त्वं मौषधीभ्यस्त्वं नृणांपते जावसे शुचिः।**

यंत्रम् - पंचकोण के बाद अष्टकोण बनायें उसके बाहर वृत्त बनाकार नवकोण बनायें। नवकोण के प्रत्येक कोणों पर रेखा आगे बढ़ाकर शूल बनायें।

शूल के आगे गोलाकार रूप में चारों ओर शत्रु का नाम लिखें।

नवकोणों में अग्नि मंत्र लिखें - **(१) त्वमग्ने (२) द्युभिस्त्वामाशु (३) शुक्षणिस्त्वमद्भ्यः (४) त्वं भस्मपरि (५) त्वं वनेभ्यः (६) त्वमौषधीभ्यः (७) त्वं नृणांपते (८) जावसे (९) शुचिः।**

यंत्र को लोहे, ताम्ब्र, या शीशे पर लिखकर अग्नि की ओर रखें। अग्नि अभिमुख रखें अर्थात् अग्नि की ओर यंत्र को करके तपायें मूल मंत्र का जाप करें शत्रु नाश होवें।

२. मंत्र - शत्रवस्तान् संहाराग्ने त्वं तदगेहं दह सत्वरं फट् स्वाहा हुं।

(यहाँ हुं को पल्लव के रूप में जोड़ा गया है।)

पंचकोण उसके बाद अष्टकोण के बाहर ४० कोष्ठक (दल) युक्त यंत्र बनायें। ४० दलों में ऊपर लिखें ४० अक्षर मंत्र के १-१ वर्ण लिखें। बाहर शत्रु का नाम लिखें मंत्र के १००० या १०८ बार जप करें।

दग्ध योग में श्मशान में जाकर खनन करें। बलि देवें। पुनः १००० अथवा १०८ बार मंत्र जपें।

तत्पश्चाद्वैरिवेश्मानि निर्दग्धानि भवन्ति हि।

उपसंहार - उपसंहार के दो अर्थ है (१) अभिचार कर्म जनित पाप से मुक्ति हेतु (२) किसी पर ऐसा प्रयोग किया हुआ होतो उसका निस्तारण।

विनियोगः - **ॐ अस्य श्री जातवेदा पापदहन मंत्रस्य सविता ऋषिः, अत्यष्टि छन्दः, अग्निर्देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्ति, उपसंहारे विनियोगः।**

ध्यानम्—

सशराय सशार्ङ्गाय शक्ति हस्ताय वह्नये ।
कपालिने नमस्तुभ्यं मत्पापं दहमुञ्चतम् ॥

मंत्रः- ॐ भूर्भुवः स्वः अग्निरस्मी जन्मना जातवेदा घृतं मे च क्षरमृतं म आसन् अर्कस्त्रिधानृजसो विमातो जस्रो धर्मो हविरस्मि नाम भूर्भुवः स्वः मत्पापदं दह मुञ्चतं स्वाहा।

१००८ जप व होम करके ब्राह्मण भोजन करायें।

॥ अथाग्नेयास्त्र मंत्र ॥

विनियोगः - **अस्य श्री आग्नेयास्त्र मंत्रस्य परब्रह्म ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, वड़वामुखोऽग्निर्देवता ॐ बीजं व्याहृति शक्तिः ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

न्यासः- भूः, भुवः, स्वः, स्वः भुवः, भूः से क्रमशः अङ्गन्यास करें।

ध्यानम्—

बाणाग्रकोणस्थितं एधमानं परान्दहन्तं स्वमरीचिकोणैः ।
शोणाम्बरं चन्द्रकलावतंसं नमामि देवं वड़वामुखाग्निम् ॥

मंत्र - शोचिष्केशाय विद्महे वड़वामुखाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

यंत्र - त्रिकोण में ''रं'' अग्नि बीज मंत्र लिखें।

अष्टदल में क्रमशः - **शोचिष्केशाय। विद्महे। वडवामुखाय। धीमहि। तन्नः। शुक्रः। प्रचो। दयात्।** लिखें

नीचे साध्य का नाम लिखें या मन में स्मरण कर प्राण प्रतिष्ठा करें। इसके बाद

मंत्र का जप करें। इससे शत्रु आग्नेयास्त्र मे पीड़ित होवें।

द्वितीय प्रकारा: - (विलोम गायत्री मंत्र)- **त्यादचोप्र नः यो योधि हिमधी स्यवदे गोर्भ ण्यरेव रतुविसत्त स्वः भुवः भूः।**

तृतीय प्रकारा: - (विलोम जातवेदाग्नि) **ग्नित्यंतारिदु धुंसि ववेनाश्वावि णिगार्दु तिदर्षप नः स। दर्वे तिहादनि तोयतीराममसो मवानसु सेदवेतजा।**

चतुर्थ मंत्र:- **विलोम गायत्री मंत्र**-(पश्चात्)-

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातियतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः ॥

इसके बाद गायत्री मंत्र इस तरह यह मंत्र पूरा हुआ।

॥ व्याधि देवता ॥

(शुभाऽशुभ कार्ये प्रयोग विधि)

विनियोग - **अस्य श्रीव्याधि मंत्रस्य वीरभद्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शिवो देवता, व्यां बीजं, हुं शक्तिः, श्रीव्याधि देवता प्रसन्नार्थ द्वारा अमुकजनस्य जरापीड़ा व्याधि मुच्यते द्वारा आयु आरोग्यादि प्राप्ति हेतवे जपे विनियोगः।** (सर्व शत्रुक्षयार्थे जपे विनियोग:)

शुभ प्रयोग में रोग निवृत्ति हेतु प्रयोग में यह ध्यान करना चाहियें कि व्याधि देवता अपने अंग परिवार सहित रोगी के देह व स्थान को छोड़कर देशान्तर को गमन कर रहे है। (कभी पास आने का ध्यान नहीं करना चाहियें) एवं रोगी को आरोग्य लाभ हो रहा है।

दुर्गा सप्तशती में भी तो रहस्य खण्ड में आया है कि- **''कालमृत्यो च संपूज्यौ सर्वारिष्ट शांतये''**।

''शत्रुनाश'' हेतु प्रयोग में यह भावना करनी चाहिये कि मेरा शत्रु व्याधि द्वारा प्रताड़ित होकर कष्ट पा रहा है।

न्यास:- **व्यां, व्यीं, व्यूं, व्यैं, व्यौं, व्यः** से पृथक्-पृथक् अंगन्यास करें।

ध्यानम्—

त्रिपादं त्रिभुज भीमं त्रिमूर्द्धानं त्रिलोचनं
कपालाढ्यं ज्वालास्य वक्त्र दंष्ट्रकम् ।

सप्तश्रृङ्गं　वसामाली　　चर्माम्बर　धारिणम् ॥
अशेषाङ्गे　वृणोदभूत　कृमिजाले　समाकुलम्
वक्त्रानासं　वृहत्स्कंधं　　क्षुधया　पीडितोदरं　।
वैरिणां　देहमालिङ्ग्य　भक्षयन्तं　विकर्णकम्
कलाय　कुसुमानीलं　महाव्याधिकरं　शिवम् ॥

व्याधि नाश हेतु मंत्र - **ॐ नमो भगवते रुद्राय महाव्याधि कारिणे अमुकस्य सर्वपीड़ा निवारय निवारय स्वाहा।**

शत्रुनाश हेतु मंत्र - **ॐ नमो भगवते रुद्राय महाव्याधिकराय अमुकं पीड़य हुं फट् स्वाहा।**

यन्त्र - ७ रेखा आड़ी एवं ७ रेखा खड़ी खीचें (तिर्यगूर्ध्व चतुर्दश रेखा) बीच में व्याधि नाम मंत्र लिखें तथा रेखाओं के अग्रभाग में शूल बनायें। शूलाग्र के चारों ओर साध्य (शत्रु) का नाम लिखें।

अष्टगंध से यंत्र लिखें एवं प्राणप्रतिष्ठा करके जप करें, चौराहे या श्मशान में खनन करें एवं यंत्र को रखें व वहाँ बलिप्रदान कर पुनः जप करें तो शत्रु व्याधि ग्रसित होवें।

॥ मृत्यु देवता ॥

(शुभाऽशुभ प्रयोग)

इसका शांतिमय प्रयोग करने से अकाल मृत्यु तथा मारकेश योग दूर होवें, व्यक्ति मृत्युपाश से छूटे, शत्रु के लिये प्रयोग करे तो उसे व्याधि एवं मृत्यु प्राप्त होवें।

मारकेश काल प्रतीत होने पर प्रयोग समय भावना करें की अमुक जीव मृत्युपाश से छुटकर आरोग्य लाभ प्राप्त कर रहा है।

विनियोगः- **अस्य श्रीमृत्यु देवता मंत्रस्य नारायण ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, मृत्युर्देवता, ङ बीजं, ह्रैं शक्तिः, अमुकजीव मृत्युपाशात् विमुञ्चन द्वारा तथा वराभय प्राप्ति द्वारा आयु आरोग्य प्राप्ति हेतवे मृत्यु देवता प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।**

मंत्र - **ॐ नमो भगवते मृत्यवे यमाय सर्वजीवहरण कारणाय उग्राय दण्ड हस्ताय ङ ह्रैं अमुक जीवं मृत्युपाशात् मुञ्चय मुञ्चय सर्वलोक भयङ्कराय**

वराभय प्रदय-प्रदय सर्वारिष्ट नाशय नाशय आरोग्य कुरु कुरु हैं हूं फट् स्वाहा।

शत्रुनाशार्थे मंत्र - ॐ नमो भगवते मृत्यवे यमाय सर्वजीव हरणाय उग्राय दण्ड हस्ताय ङं हैं अमुकस्य जीव गृह्ण सर्वलोक- भयंकराय नाशय-नाशय हैं हूं फट् स्वाहा।

न्यास:- डां, डीं, डूं, डें, डौं, डः से क्रमशः अंगन्यास करें।

ध्यानम्–

रक्तास्यं भीमदष्ट्रं प्रकटित वदनं वक्रनासं कराब्जैः ।
शूलं पाशं कपालं फणिमुसल हलं वज्र खेटं वहन्तम् ॥
भीमकालाभ्रनीलं भृकुटित नयनं सैरिभ स्कन्धरूढम् ।
नानाभूतैः करालैः परिवृतमखिलं प्राणिकालं भजामि ॥

इदं काल मंत्रं निशामध्ये प्रातः पुनः जप्त्वा जपेत् ततो मंत्रं सहस्त्रनाम पूर्वकं तज्जपस्या वषाने तु स रिपुर्मरणं लभेत्।

卐 इति श्रीशरभ तन्त्रम् सम्पूर्णम् 卐

॥ अथ हनुमान तन्त्रम् ॥

श्री रामभक्त हनुमानजी के प्रयोग सात्विक विधान से यत्न पूर्वक करना चाहिये, अति आवश्यकता में तामस प्रयोग सिद्ध पुरुष व गुरु की आज्ञा से ही करने चाहिये। भक्तों को अभय देने एवं शत्रु नाश में हनुमान उपासना अभीष्ट सिद्धिप्रद हैं।

॥ अथ हनुमद्द्वादशाक्षर मंत्र प्रयोगः ॥

मन्त्रः "हौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमते नमः"।

(उपरोक्त मंत्र के बीजाक्षर वीरभाव एवं ब्रह्मभावसदाशिव स्वरूप के द्योतक है।)

विनियोग :- ॐ अस्य श्री हनुमन्मन्त्रस्य रामचन्द्रः ऋषिः जगती छन्दः हनुमान देवता ह्सौं बीजं, ह्स्फ्रें शक्तिः, मनोऽभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास :- हौं हृदयाय नमः, ह्स्फ्रें शिरसे स्वाहा, ख्फ्रें शिखायै वषट्, ह्सौं कवचाय हुम्, ह्स्ख्फ्रें नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्सौं अस्त्राय फट्।

वर्णन्यास - हौं नमः मूर्ध्नि, ह्स्फ्रें नमः ललाटे, ख्फ्रें नमः नेत्रयोः, ह्स्त्रौं नमः मुखे, ह्स्ख्फ्रें नमः कण्ठे, ह्सौं नमः बाहोः, हं नमः हृदि, नुं नमः कुक्षौ, मं नमः नाभौ, ते नमः लिङ्गे, नं नमः जान्वोः, मं नमः पादयोः।

पदन्यास हौं नमः मूर्ध्नि, ह्स्फ्रें नमः ललाटे, ख्फ्रें नमः मुखे, ह्स्त्रौं नमःहृदि, ह्स्ख्फ्रें नमः नाभौ, ह्सौं नमः ऊर्वोः, हनुमते नमः जंघयोः, नमः नमः पादयोः।

ध्यानम्—

बालार्कयुततेजसं त्रिभुवनप्रक्षोभकं सुन्दरं
सुग्रीवादि समस्तवानरगणैः संसेव्यपादाम्बुजम् ।
नादेनैव समस्तराक्षसगणान् संत्रासयन्तंप्रभुं
श्रीमद्रामपदाम्बुजस्मृतिरतं ध्यायामिवातात्मजम् ॥

॥ यंत्रार्चनम् ॥

पहले षट्कोण उसके बाहर अष्टदल एवं उसके चारों और भूपूर बनाकर मध्य में "**हौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें**" बीजाक्षर लिखें। वैष्णव पीठ में कूर्म अनन्तादि पीठ देवताओं का पूजन करें पश्चात् विमलादि नव पीठ शक्तियों का पूजन करें
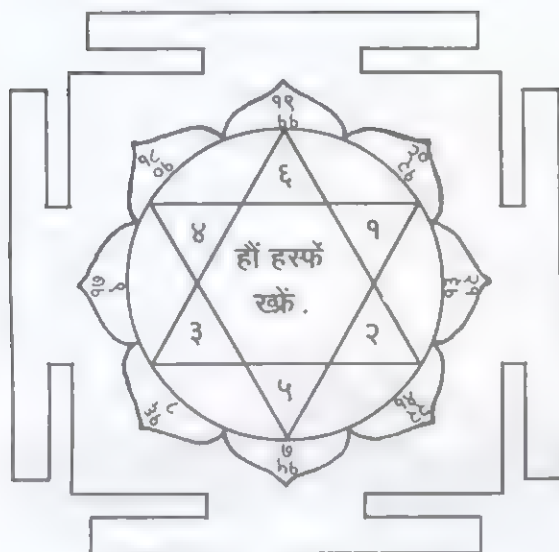
हनुमत्कूट द्वादशाक्षर यन्त्रम्

यथा- अष्टदले पूर्वादि क्रमेण- **ॐ विमलायै नमः, ॐ उत्कर्षिण्यै नमः, ॐ ज्ञानायै नमः, ॐ क्रियायै नमः, ॐ योगायै नमः, ॐ प्रह्वये नमः, ॐ सत्यायै नमः, ॐ ईशानाय नमः, मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः।**

तदनन्तर **"ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्म संयोग पद्मपीठाय नमः"** से पीठ की पूजन कर प्रधान देव का पूजन करें। मूर्त्यादि पूजन उपरान्त यन्त्र के आवरण देवताओं के पूजन की आज्ञा मांगे।

ॐ सचिन्मय परोदेव परामृतरस प्रिये। अनुज्ञां मे देहि परिवारार्चनाय ते॥

प्रथमावरणम् - षट्कोण में आग्नेयादि चारों कोणों में मध्य में एवं सर्वत्र षडङ्ग पूजन करें - (केसरों मे) **हौं हृदयाय नमः, हस्फ्रें शिरसे स्वाहा, खफ्रें शिखायै वषट्, हस्त्रों कवचाय हुम्, हस्खफ्रें नेत्रत्रयाय वौषट्, हसौः अस्त्राय फट्।**

द्वितीयावरणम् - अष्टदले - पूर्वादिक्रमेण नाममंत्रों से आह्वान करें। **ॐ रामभक्ताय नमः, ॐ महातेजसे नमः, ॐ कपिराजाय नमः, ॐ महाबलाय नमः, ॐ द्रोणाद्रिहारकाय नमः, ॐ मेरुपीठार्चनकारकाय नमः, ॐ दक्षिणाशा भास्कराय नमः, ॐ सर्वविघ्न निवारकाय नमः।** अष्टदलाग्रभागे- **ॐ सुग्रीवाय नमः, ॐ अंगदाय नमः, ॐ नीलाय नमः, ओम् जाम्बवन्ताय नमः, ॐ नलाय नमः, ॐ सुषेणाय नमः, ॐ द्विगविदाय नमः, ॐ मयन्दाय नमः।**

तृतीयावरणम् -भूपूरे- पूर्वादि क्रमेण - **ॐ इन्द्राय नमः, ॐ अग्नये नमः, ॐ यमाय नमः, ॐ निर्ऋत्ये नमः, ॐ वरुणाय नमः, ॐ वायवे नमः, ॐ सोमाय नमः, ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः पूर्वेशानयोर्मध्ये। ॐ अनन्ताय नमः पश्चिम नैऋत्योर्मध्ये।**

चतुर्थावरणम् – अस्त्र पूजनम् – इन्द्रादि लोकपालों के पास उनके आयुधों का पूजन करें। क्रमशः – **ॐ वज्राय नमः, ॐ शक्त्यये नमः, ॐ दण्डाय नमः, ॐ खड्गाय नमः, ॐ पाशाय नमः, ॐ अंकुशाय नमः, ॐ गदायै नमः, ॐ त्रिशूलाय नमः, ॐ पद्माय नमः, ॐ चक्राय नमः।**

पश्चात् हनुमानजी एवं यंत्रपरिवार देवताओं का पूजन अर्चन करें।

एकादशाक्षर मन्त्र – ॐ हें श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं।

यह मन्त्र सभी अभीष्ट की सिद्धि देने वाला है। इसके ऋषिन्यास ध्यान पूर्व मन्त्र वाले (१२ अक्षर वाले) है।

॥ अस्य काम्य प्रयोगः ॥

दश हजार जप करके तिलादि से दशांश होम करें। केला, बिजौरा एवं आम्रफलों से एक हजार आहुतियाँ देवे एवं २२ ब्रह्मचारी ब्राह्मणों को भोजन कराये इससे महाभूत, चोर, विषजन्य उपद्रव रोग शान्त होवे।

अभिचार एवं ज्वर पीड़ा में भस्म एवं अभिमन्त्रितजल से मार्जन अभिषेक करने से ३ दिन में रोगी रोग मुक्त हो जाता है। भस्म लगाने एवं अभिमन्त्रित जल पीकर युद्ध में जाने से शस्त्र भय नहीं होवे। भस्म व जल का चर्म रोग में भी प्रयोग लाभप्रद है। भस्म को खाद्यन्न एवं चन्दन युक्त अभिमन्त्रित जल को क्रूर जानवरों को खिलाये पिलायें तो वे भी वशीभूत हो जाते है तो मनुष्यों की तो बात ही क्या है? करञ्जवृक्ष के ईशान कोण की जड़ लाकर उसमें हनुमानजी की प्रतिमा का निर्माण कराकर, सिन्दूर लेपन कर प्रतिष्ठा पूर्वक पूजन करें एवं इस मन्त्र का जाप करे। इस प्रतिमा को घर के दरवाजे पर गाड़ देने से भूत ,पिशाच, अभिचार कर्म, विष, अग्नि, चौरभय व उपद्रव नष्ट हो जाते है।

शत्रुनाशक प्रयोगः – रात्रि में श्मशान भूमि की भस्म या मिट्टी लेकर उससे शत्रु की प्रतिमा बनाकर हृदय में उसका नाम लिखें। प्राण प्रतिष्ठा शत्रु का नाम लेते हुये करें।

फिर '**ह्रौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्सौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौं हनुमते नमः अमुक नाम्ने मम शत्रून् छिन्दय-२ भिन्दय-२ मारय-२**' जप करते हुये शस्त्र के द्वारा शत्रु के पुतले के टुकड़े करें। क्रोध मुद्रा में होठों को दांतों के नीचें दबाते हुये हथेलियों से टुकड़ों को मसल देवें एवं उनको वहीं फेंक कर शुद्ध होकर घर आ जाना चाहिये।

७ दिनों तक ऐसा लगातार करने से शत्रु चाहे शिव द्वारा रक्षित हो मृत्यु को प्राप्त होता है।

श्मशान भूमि में अर्धचन्द्राकृति कुण्ड या वेदी बनावें, राई, नमक मिश्रित धत्तूर फल पुष्प, कौवा, उल्लू एवं गीद्ध के नाखून, रोम, एवं पंखों से, तथा विष से लिसोड़ा एवं बहेड़ा की समिधाओं से, क्रोध मुद्रा में केशों को खोलकर दक्षिणाभिमुख होकर एक सप्ताह पर्यन्त नित्य होम करें तो शत्रु मृत्यु को प्राप्त होवे।

मालीपन्ना सिन्दूर हनुमानजी के वस्त्र होते है अत: इनका होम करने से हनुमानजी आवेशित व क्रोधित होकर कार्य करते हैं।

एक पण्डित जी की किसी से शत्रुता हो गयी, उन्होंने गर्म गर्म तेल हनुमान जी की प्रतिमा पर उड़ेल दिया उग्र मन्त्र का जाप करने लगें शत्रु ३ दिन में ज्वर से पीड़ित होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

सावधानी - उग्र प्रयोगों को करने से पहिले अपने घर एवं स्वयं का पूर्ण रक्षाबन्धन करें। हनुमानजी को कार्य सिद्धी के बाद पुन: शान्त करना चाहिये अत: मधुत्रय, घृतान्न, पायस से होम करें। श्रीराम के चरित्र का गुणगान करने से हनुमानजी क्रोध त्याग कर प्रसन्न हो जाते है।

बेतालसिद्धी - रात्रि के समय श्मशान में जाकर ३ दिन तक १०० मन्त्रमूल मन्त्र युत करें -

''ह्रौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमते नमःअमुक वेताल मे वशमानय स्वाहा''

कुल १८०० या २१०० मन्त्र जाप करने से बेताल दासवत होकर भूत भविष्य का दर्शन भी कराता है एवं साधक का कार्य भी करता है।

बन्दी विमोचन - हनुमानजी की प्रतिमा के सामने एक पट्टा बिछाकर उस पर सिन्दूर या कुंकुम बिछायें उस पर अनार की कलम से मूल मन्त्र लिखकर आगे अमुकान् विमोचय विमोचय लिखें फिर मिटाकर पुन: लिखे इस प्रकार बार बार करने से बंदी की हथकड़ी बेड़ी शीघ्र कट जाती है।

इसी तरह हनुमानजी के पैरों के नीचे अमुकं विद्वेषय-२ या अमुकं उच्चाटय २ अथवा अमुकं मारय -२ लिखने से शत्रु का विद्वेषण, उच्चाटन, एवं मारण हो जाता है परन्तु कार्य साध्य होने पर शान्तिपाठ, ब्राह्मण भोजन इत्यादि कर्म करना चाहिये।

अन्य काम्य प्रयोग - वश्य कर्म में सरसों से, विद्वेषण में कनेर पुष्प व काष्ठ समिध के साथ जीरा कालीमिर्च से हवन करें।

ज्वर में दूर्वा, गिलोय, दही, घृत, दूध तथा पोढर एवं रेड़ी की समिधाओं से

अथवा निर्गुण्डीकी समिधाओं को तेल में भिगोकर होम करे। धान्यवृद्धि हेतु धान्य से, सौभाग्य हेतु चन्दन, कपूर, गोरोचन, लौंग, इलायची, व सुगन्धित पुष्पों से होम करे। शत्रु के पैर की मिट्टी को राई, नमक के साथ होम करने से शत्रु का नाश होवे।

॥ द्वादशाक्षर मन्त्र प्रयोगः (गारुड़ी तन्त्रे) ॥

मन्त्र – हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट्।

षडङ्गन्यास – हं हृदयाय नमः, हनुमते शिरसे स्वाहा, रुद्रात्मकाय शिखायै वषट्। हुं कवचाय हुम्। फट् नेत्रत्रयाय वौषट्।

पुनः पूरा मूलमन्त्र बोलकर अस्त्राय फट्।

अन्य मन्त्र – **ॐ नमो भगवते हनुमते महारुद्राय हुं फट् स्वाहा।**

इस मन्त्र के प्रभाव से सभी भय बंधन से मुक्त होता है साधक की रक्षा होती है।

ध्यानम्–

महाशैलं समुत्पाटय धावन्तं रावणं प्रति ।
तिष्ठ तिष्ठ रणे दुष्ट घोररावं समुच्चरन् ॥१॥
लाक्षारसारुणं गात्रं कालान्तक यमोपमम् ।
ज्वलदग्निसन्नेत्रं सूर्यकोटिसमप्रभम् ।
अंगदाद्यैर्महावीरैर्वेष्टितं रुद्ररूपिणम् ॥२॥

इस मन्त्र को श्रीकृष्ण ने अर्जुन को शत्रुओं पर विजय के लिये बताया था। हनुमान यंत्र की रचना करें। मूर्ति की कल्पना कर हनुमान जी की पूजा करें। सीता सहित श्रीरामचन्द्रजी का भी पूजन कर ध्यान पूर्वक करते हुये पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

कुले रघूणां समवाप्य जन्म विधाय सेतुं जलधेर्जलान्तः ।
लंकेश्वरं यः शमयाचकार सीतापतिं तं प्रणमामि भक्त्या ॥

हनुमानजी के मूलमन्त्र से आठ बार पुष्पाञ्जलि देवे।

॥ यंत्र पूजनम् ॥

यंत्रार्चन सम्बन्ध में गारुड़ी तन्त्र में दो क्रम दिये गये है।

(१) यंत्र मध्य में दक्ष व वाम भाग १ २ में "**ॐ सुग्रीवाय नमः, ॐ लक्ष्मणाय नमः**" से अर्चन करें। अष्टदलों में (३ से १० तक) (३) ॐ अंगदाय नमः (४) ॐ नलाय नमः (५) ॐ नीलाय नमः (६) ॐ

द्वादशाक्षरी हनुमत् यन्त्रम्

जाम्बवते नमः (७) ॐ कुमुदाय नमः (८) ॐ केसरिणे नमः (९)ॐ पवनाय नमः (१०) ॐ अंजन्यै नम।

(२) द्वितीय प्रकारः यन्त्रम् - अष्टदल की कर्णिमा में मूल मन्त्र लिखे, हनुमानजी व सीता सहित श्रीरामचन्द्र जी का अर्चन करें।

पहले की तरह श्रीराम व हनुमानजी के पुष्पांजलि देवें। यंत्र के मध्य में दक्ष एवं वामभाग में "**ॐ पवनाय नमः, ॐ अंजन्यै नमः**" का पूजन करें।

अष्टदल में पूर्वादिक्रम से - **ॐ सुग्रीवाय नमः, ॐ लक्ष्मणाय नमः, ॐ अंगदाय नमः, ॐ नलाय नमः, ॐ नीलाय नमः, ॐ जाम्बवते नमः, ॐ कुमुदाय नमः, ॐ केसरिणे नमः।**

एक लक्ष जप करके दशांश होम करें। एवं यह भी कहा गया है कि जब तक दर्शन प्राप्त नहीं होवे तब तक प्रयोग करते रहना चाहिये दर्शन देकर हनुमान जी वर प्रदान करते है।

॥ वीरहनुमान मन्त्रः ॥

मन्त्र - हं पवननन्दनाय स्वाहा। ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः से अङ्गन्यास करे।

प्राणायाम करें यथा- **अं आं ...... अं अः** से पूरक। **कं खं ......पं फं बं भं मं से कुम्भक एवं यं रं ...... हं लं क्षं से रेचक करें।** इस तरह तीन बार प्राणायाम करे।

मूल मन्त्र से ही अङ्गन्यास एवं व्यापक न्यास करें।

ध्यानम्–

ध्यायेद्रणे हनूमन्तं कपिकोटि समन्वितम् ।
धावंतं रावणं जेतुं दृष्ट्वासत्वरमुत्थितम् ॥
लक्ष्मणं च महावीरं पतितं रणभूतले ।
गुरुं च क्रोधमुत्पाद्य गृहीत्वा गुरुपर्वतम् ॥
हाहाकारैः सदर्पैश्च कम्पयन्तं जगत्त्रयम् ।
ब्रह्माण्डं स समावाप्य कृत्वा भीमं कलेवरम् ॥

सात दिन तक रात्रि व दिन को स्मरण करते रहें। ६ हजार जप नित्य करें। हनुमानजी महाभय को प्रकट करते है एवं रात्रि तीसरे पहर में साधक के पास आकर वर प्रदान करते है।

चतुर्दशाक्षर मन्त्र – **ॐ नमो हरिमर्कट मर्कटाय स्वाहा।**

यह मन्त्र भी पञ्चमुखी हनुमान कवच में आये मन्त्रों की तरह है एवं इसका प्रयोग सफल रहता है ऐसा कई व्यक्तियों का अनुभव है।

इस मन्त्र को आम्र के पत्ते पर गुलाल बिछाकर अनार की कलम से एक लाख बार लिखे तो मनोरथ सिद्ध होवे। राज्य लाभ होवे।

राज्य विरोध या शत्रु विरोध विशेष होवे तो निम्न मन्त्र का जप करे **ॐ नमो हरिमर्कट मर्कटाय अमुकं हरिमर्कट मर्कटाय स्वाहा।**

इस मन्त्र को सिन्दूर से कागज या भोजपत्र पर लिखकर हनुमानजी के मस्तक पर चिपका देवे, सरसों के तेल से सहस्त्रधारा अभिषेक (एक ताम्रपात्र जिसमें छोटे छोटे १०००छिद्र होवे) या छोटे पात्र में १,३,५ छिद्र वाले पात्र से अभिषेक होता रहे एवं १लाख जप का प्रयोग पूरा करें। ५ छिद्र में २१ हजार जाप करने पर भी कार्य सिद्ध हो जाता है। शत्रु का नाश होवे एवं वशीभूत होकर आपके पैरों में आन पड़े।

अष्टादशाक्षर मन्त्र – **नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा।**

विनियोग – **ॐ अस्य श्री मन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, हनुमान देवता, हुं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास विधि- **ॐ आञ्जनेयाय हृदयाय नमः। ॐ रुद्रमूर्त्तये शिरसे स्वाहा। ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट्। ॐ अग्निगर्भाय कवचाय हुम्। ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारणाय अस्त्राय फट्।**

ध्यानम्–

दहनतप्त सुवर्णसमप्रभं भयहरं हृदये विहितांजलिम् ।
श्रवणकुण्डल शोभिमुखाम्बुजं नमत वानरराजमिहाद्भुतम् ॥

यन्त्र पूजनम् – मध्य में ध्यान पूर्वक हनुमानजी का आवाहन करें। षट्कोण में षडङ्गविधि मन्त्रों से देवताओं का आवाहन करें तथा शेष अष्टदल व भुपूर के देवताओं की पूजा द्वादशाक्षर मन्त्र के समान है।

अष्टादशाक्षरी हनुमत् यन्त्रम्

॥ काम्य प्रयोगः॥

१. इस मन्त्र का १० हजार जप का पुरश्चरण है तिलादि से दशांश होम करें। अनुष्ठान समय में केवल रात्रि में भोजन करें यम नियम से रहे। इस मन्त्र के प्रभाव से भूत प्रेत पिशाचादि दूर भागते है असाध्य रोगों से मुक्ति के लिये प्रतिदिन एक हजार जप करें।
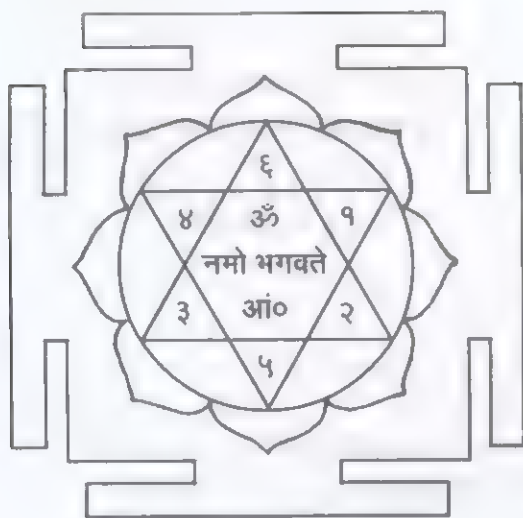
२. नियमित एक समय हविष्यान्न भोजन करें तथा राक्षस समूह को नष्ट करते हुये हनुमान जी का ध्यान कर नित्य १० हजार जप करने से शीघ्र ही शत्रु पर विजय प्राप्त करता है।

४. सुग्रीव के साथ राम की मित्रता कराते हुये कपीश्वर का ध्यान करने से शत्रु से संधि हो जाती है।

५. लंकादहन करते हुये का ध्यान करने से शत्रुओं का धन वैभव घर जलकर नष्ट हो जाता है।

६. इस मन्त्र का सोते समय जप करने से चोरों से रक्षा तथा यात्रा एवं प्रवेश समय जप स्मरण करने से मंगल होवे तस्करादि भय नष्ट होवे।

७. द्रोणगिरी धारण करते हुये का ध्यान करने से औषधी कारक होकर रोगी को रोग मुक्त करता है।

अष्टादशाक्षर अन्य मन्त्र - ॐ ह्रौं नमो हनुमते आवेशय आवेशय स्वाहा।

यह मन्त्र किसी महात्मा का प्रयोगिक एवं अनुभूत है।

विधान - रक्त चन्दन की हनुमानजी की प्रतिमा बनाये प्राण प्रतिष्ठा पूर्वक पूजन करें। जपकाल में रक्त वस्त्र धारण करें, रक्त वर्ण के आसन पर पूर्वाभिमुख होकर जप करें, रात्रि के समय हनुमानजी का पञ्चोपचार पूजन करें। गुड़ चूरमे का भोग लगावे जिसे आठों पहर हनुमानजी के सामने रखा रहने दे, दूसरे दिन

उसको अलग पात्र में इकट्ठा करें एवं पुनः नैवेद्य चढ़ावे, इस तरह आठ दिन का इकट्ठा नैवेद्य या तो किसी ब्राह्मण को दे देवे या भूमि में गाड़ देवे। रुद्राक्ष माला पर ११०० मन्त्र नित्य ११ दिन तक जपे तो हनुमानजी स्वप्न में आकर साधक के प्रश्न का उत्तर देते है।

इसके लक्षाधिक मन्त्र हवनादि करके प्रेतादि से आवेशित व्यक्ति पर मार्जन करे तो बाधा दूर होवे।

॥ सर्वसिद्धिप्रदहनुमत् मालामन्त्र ॥

सर्वप्रथम एक वृत बनाये साध्य व्यक्ति (रोगी, पीड़ित, या जिसकी रक्षा करनी हो) व्यक्ति का नाम **''देवदत्त''** की जगह लिखें। इसके बाहर पुच्छाकार के दो घेरे बनाये, एक में ८ या १२ बार पाश बीज **''आं''** लिखे। इनके बाहर अष्टदल बनाये,प्रत्येक दल में वर्मबीज **''हुं''** लिखे। इसके ऊपर वृत्त एवं भूपूर बनाये। भुपूर की रेखा के अग्रभागों में कोणों में त्रिशूल बनायें, भुपूर के आठों कोणों में **''ह्सौं''** बीज लिखें। चारों कोणों में अंकुशबीज **''क्रौं''** लिखना चाहिये।

इसके बाहर चारों ओर हनुमानजी का मालामन्त्र **ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं .....ज्वलदग्नि सूर्यकोटि समप्रभ** तक लिखकर बाद में स्वाहा भी लिखे।
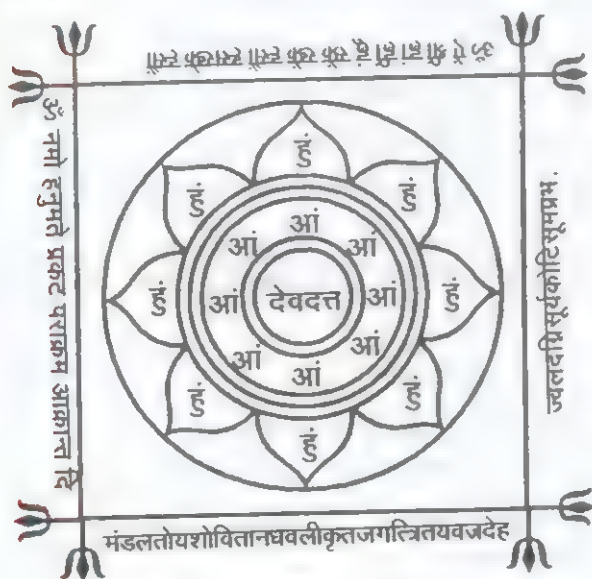
हनुमत् पूजन यन्त्र

यदि यन्त्र का आधार बड़ा है तो पूरा माला मन्त्र लिखे। मालामन्त्र के बाहर तीन वृत और बनाये।

यंत्र को वस्त्र, शिला, काष्ठ की चौकोर पट्टी ताम्रपत्र, दीवार भोजपत्र या ताड़पत्र पर गोरोचन, कस्तुरी, एवं कुंकुम, केशर से लिखना चाहिये। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये

प्राणप्रतिष्ठा पूर्वक यंत्रार्चन करते हुये मंत्र जाप करना चाहिये। साधक यदि धारण करता है तो सभी प्रकार की विपत्तियों से छुटकारा मिलता है। शत्रुकृत समस्त अभिचार बाधा षड़यन्त्र नष्ट हो जाते है।

॥ माला मन्त्र ॥

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौं ॐ नमो हनुमते प्रकटपराक्रम आक्रान्तदिङ्मण्डल यशोवितान धवलीकृतजगत्त्रितय वज्रदेह ज्वलदग्नि सूर्यकोटिसमप्रभतनूरुह रुद्रावतार लंकापुरी दहनोदधि-लंघन दशग्रीवशिरः कृतान्तक सीताश्वासन वायुसुत अञ्जनागर्भसंभूत श्रीरामलक्ष्मणानन्दकर कपिसैन्यप्राकारा सुग्रीवसख्यकारण बालि-निबर्हणकारण द्रोणपर्वतोत्पाटन अशोकवनविदारण अक्षकुमारच्छेदन वनरक्षाकरसमूह विभञ्जन ब्रह्मास्त्रशक्तिग्रसन लक्ष्मणशक्तिभेदनिवारण विशल्योषधि समानयन बालोदितभानुमण्डलग्रसन मेघनाद होमविध्वंसन इन्द्रजिद्वधकारण सीतारक्षक राक्षसीसंघ विदारण कुम्भकर्णादिवधपरायण श्रीरामभक्तितत्पर समुद्रव्योमद्रुमलंघन महासामर्थ्य महातेजः पुञ्ज-विराजमान स्वामिवचन सम्पादित अर्जुनसंयुग सहाय कुमारब्रह्मचारिन् गम्भीरशब्दोदय दक्षिणाशामार्त्तण्ड मेरुपर्वत पीठकार्चन सकलमन्त्रा-गमाचार्य मम सर्वग्रहविनाशन सर्वज्वरोच्चाटन सर्वविषनाशन सर्वापति-निवारण सर्वदुष्टनिबर्हण सर्वव्याघ्रादिभयनिवारण सर्वशत्रुच्छेदन ममपरस्य च त्रिभुवन पुंस्त्रीनपुंसकात्मक सर्वजीवजातं वशय वशय मम आज्ञाकारकं सम्पादय सम्पादय नाना नाम धेयान् सर्वान् राज्ञः सपरिवारान् मम सेवकान् कुरु कुरु सर्वशस्त्रास्त्र विषाणि विध्वंसय विध्वंसय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रां ह्रां एहि एहि ह्सौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौं ख्फ्रें ह्स्फ्रें सर्वशत्रून् हन हन परदलानि परसैन्यानि क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्य जातं साधय साधय सर्वदुष्ट दुर्जनमुखानि कीलय कीलय घे घे घे हा हा हा हुं हुं हुं फट् फट् फट् स्वाहा।

॥ इदं मालामन्त्रोऽयमष्टाशीत्याधिक पञ्चशत वर्णः ॥

॥ प्लीहा एवं उदररोग नाशक मन्त्र ॥

मन्त्र ॐ यो यो हनूमन्तं फल फलित धग धगितायुराषपरुडाह।

इस मन्त्र के ऋषिन्यास "ॐ नमो भगवते ओजनेनाय महाबलाय स्वाहा" वत् है।

विधान – प्लीहा वाले रोगी पर पान रखें । पान के टुकड़े को उसके आठ गुणा कपड़े से आच्छादित कर देवे। उसके ऊपर हनुमानजी का ध्यान करते हुये बाँस का टुकड़ा रख देवे। जंगल के पत्थर पर उत्पन्न बेर की लकड़ियों को जलाये एवं उस कपड़े को मूल मन्त्र से सात बार तपाये। फिर कपड़े से पेट पर रखे हुये बाँस के टुकड़े को ७ बार ताडन करना चाहिये। इससे प्लीहा रोग शीघ्र दूर होवे।

॥ रक्षक यन्त्र ॥

अष्टदल बनाये उसके मध्य में जिसकी रक्षा करनी हो उसका नाम लिखे। अष्टदलों में अष्टबीजाक्षर लिखे एवं उसके बाहर माला मन्त्र चारों ओर लिखते हुये वेष्टन करे। अष्टाक्षर मन्त्र व मालामन्त्र के जाप करें इनके ऋषि न्यास पूर्ववत् ही हैं।
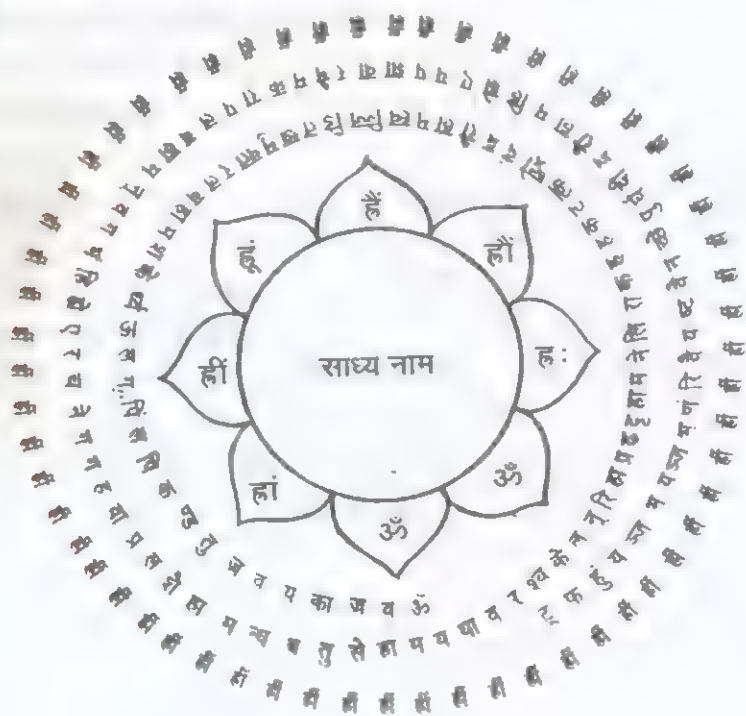
हनुमान रक्षक यन्त्र

अष्टाक्षर मन्त्र – ॐ हां हीं हूं हैं हौं हः ॐ

मालामंत्र – ॐ वज्रकाय वज्रतुण्डकपिल पिङ्गल उर्ध्वकेश महावर्णबल रक्तमुख तडिज्जिह्व महारौद्र द्रंष्ट्रोत्कटक ह ह करालिने महादृढ प्रहारिन् लंकेश्वर वधाय महासेतुबन्ध महाशैल प्रवाह गगनेचर एह्येहि भगवन् महाबल पराक्रम भैरवज्ञापय एह्येहि महारौद्र दीर्घपुच्छेन वेष्ट्य वैरिणं भञ्जय-२ हुं फट्।

यह मन्त्र रोगी को रोग मुक्त करता है एवं युद्ध में विजय देता है।

यंत्र में हनुमानजी का पूजन कर माला मंत्र का जप करके धारण करें पहले विशेष संख्या में जप करके मंत्र सिद्ध करना चाहिये।

॥ श्रीविचित्रवीरहनुमन्माला मन्त्रः॥

शत्रु विजय हेतु इस मंत्र के ११०० पाठ १० दिनों तक कर गुग्गुल से दशांश हवन करें।

विनियोग :- **ॐ अस्य श्रीविचित्र वीर हनुमन्माला मन्त्रस्य श्रीरामचन्द्रो भगवान् ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीविचित्र वीर हनुमान् देवता। ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे माला मन्त्र जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास :- **श्रीरामचन्द्र भगवान् ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीविचित्र वीर हनुमान् देवतायै नमः हृदि। ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे माला मन्त्र जपे विनियोगाय नमः सार्वाङ्गे।**

षडङ्गन्यास :- **ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः)। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा)। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्)। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हुं)। ॐ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः (नेत्रत्रयाय वौषट्)। ॐ ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्)।**

ध्यानम् :-

वामे करे वैर वहं वहन्तम् शैलं परे शृङ्खला मालयाढ्यम् ।
दधानमाध्मातमुग्र वर्णम् भजे ज्वलत् कुण्डलमाञ्जनेयम् ।।

॥ माला मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते, विचित्रवीर हनुमते, प्रलयकालानल प्रभा ज्वलत् प्रताप वज्रदेहाय, अञ्जनी गर्भ सम्भूताय, प्रकट विक्रम वीर दैत्य दानव यक्ष राक्षस ग्रहबन्धनाय भूतग्रह प्रेत ग्रह पिशाच ग्रह शाकिनी ग्रह डाकिनी ग्रह काकिनी

ग्रह कामिनी ग्रह ब्रह्म ग्रह ब्रह्मराक्षस ग्रहचोर ग्रह बन्धनाय एहि एहि आगच्छागच्छ आवेशयावेशय मम हृदयं प्रवेशय प्रवेशय स्फुट स्फुट प्रस्फुट प्रस्फुट सत्यं कथय कथय व्याघ्रमुखं बन्धय बन्धय सर्प मुखं बन्धय बन्धय राजमुखं बन्धय बन्धय सभामुखं बन्धय बन्धय शत्रुमुखं बन्धय बन्धय, सर्वमुखं बन्धय बन्धय, लङ्का प्रासाद भञ्जक सर्वजनं मे वशमानय श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सर्वानाकर्षयाकर्षय शत्रून् मर्दय मर्दय मारय मारय चूर्णय चूर्णय खे खे श्रीरामचन्द्राज्ञया प्रज्ञया मम कार्यसिद्धिं कुरु कुरु मम शत्रून् भस्मी कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः फट् श्री विचित्र वीर हनुमते! मम सर्वशत्रून् भस्मी कुरु कुरु हन हन हुं फट स्वाहा।

॥ इति श्रीविचित्रवीरहनुमन्माला मन्त्रः॥

॥ हनुमद्वडवानलस्तोत्रम् ॥

यह स्तोत्र सभी रोगों के निवारण में, शत्रुनाश, दूसरों के द्वारा किये गये पीड़ा कारक कृत्या अभिचार के निवारण, राजबंधन विमोचन आदि कई प्रयोगों में काम आता है। सरसों के तेल का दीपक जलाकर १०८ पाठ नित्य ४१ दिन तक करने पर सभी बाधाओं का शमन होकर अभीष्ट कार्य की सिद्धि होती है। अलग-अलग कार्यों हेतु तिलादि विशेष द्रव्य व समिधाओं के हवन से शीघ्र कार्य सिद्ध होवें।

विनियोग: - **ॐ अस्य श्री हनुमान् वडवानलस्तोत्रमंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः, श्रीहनुमान वडवानल देवता, ह्रां बीजम्, ह्रीं शक्तिं, सौं कीलकं, मम समस्त विघ्न दोष निवारणार्थे, सर्वशत्रुक्षयार्थे सकलराजकुलसंमोहनार्थे, मम समस्त रोग- प्रशमनार्थम् आयुरारोग्यैश्वर्याऽभिवृद्ध्यर्थं समस्तपापक्षयार्थं श्रीसीतारामचन्द्र- प्रीत्यर्थं च हनुमद् वडवानलस्तोत्र जपमहं करिष्ये।**

ध्यानम्–

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतम् शरणं प्रपद्ये ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते प्रकटपराक्रम सकलदिङ्मण्डल- यशोवितानधवलीकृत- जगतत्रितय वज्रदेह रुद्रावतार लङ्कापुरीदहय उमा- अर्गलमंत्र उदधिबंधन दशशिरः कृतान्तक सीताश्वसन वायुपुत्र अञ्जनीगर्भसंभूत

श्रीरामलक्ष्मणानन्दकर कपिसैन्यप्राकार सुग्रीवसाह्यरण पर्वतोत्पाटन कुमारब्रह्मचारिन् गंभीरनाद सर्वपापग्रहवारण-सर्वज्वरोच्चाटन डाकिनी-विध्वंसन ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो महावीरवीराव सर्वदुःख निवारणाय ग्रहमण्डल सर्वभूतमण्डल सर्वपिशाचमण्डलोच्चाटन भूतज्वर-एकाहिकज्वर-द्वयाहिकज्वर त्र्याहिकज्वर चातुर्थिकज्वर संतापज्वर विषमज्वर तापज्वर माहेश्वर वैष्णवज्वरान् छिन्दि छिन्दि यक्ष ब्रह्मराक्षस भूतप्रेत पिशाचान्उच्चाटय उच्चाटय स्वाहा।

ॐ ह्रां श्रीं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः आं हां हां हां हां ॐ सौं एहि एहि एहि ॐ हं ॐ हं ॐ हं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते श्रवणचक्षुर्भूतानां शाकिनी डाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्वविषं हर हर आकाशभुवनं भेदय भेदय छेदय छेदय मारय मारय शोषय शोषय मोहय मोहय ज्वालय ज्वालय प्रहारय प्रहारय शकलमायां भेदय भेदय स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते महाहनुमते सर्वग्रहोच्चाटन परबलं क्षोभय क्षोभय सकलबंधन मोक्षणं कुरु कुरु शिरः शूल-गुल्मशूल सर्वशूलान्निर्मूलय निर्मूलय नागपाशानन्त-वासुकि-तक्षक-कर्कोटकालियान् यक्षकुलजगत-रात्रिञ्चर-दिवाचर- सर्पान्निर्विषं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते महाहनुमते राजभय चोरभय परमंत्र-परयंत्र-परतंत्र परविद्याश्छेदय छेदय स्वमंत्र-स्वयंत्र-स्वतंत्रकाविद्याः प्रकटय प्रकटय सर्वारिष्टन्नाशय नाशय सर्वशत्रून्नाशय नाशय असाध्यं साधय साधय हुं फट् स्वाहा।

॥ इति विभीषणकृतं हनुमद् वडवानलस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ हनुमत्स्तोत्रम् ॥

॥ हनुमानुवाच ॥

तिरश्चामपि यो राजा समवायं समीयुषाम् ।
तथा सुग्रीवमुख्यानां यस्तं वन्द्यं नमाम्यहम् ॥१॥
सकृदेव प्रसन्नाय विशिष्टायैव राज्यदः ।
विभीषणाय यो देवस्तं वीरं प्रणमाम्यहम् ॥२॥

यो महापुरुषो व्यापी महाब्धौ कृतसेतुकः ।
स्तुतो येन जटायुश्च महाविष्णुं नमाम्यहम् ॥३॥
तेजसाप्यायिता यस्य ज्वलंति ज्वलनादयः ।
प्रकाशते स्वतंत्रो यस्तं ज्वलंतं नमाम्यहम् ॥४॥
सर्वतोमुखता येन लीलया दर्शिता रणे ।
राक्षसेश्वरयोधानां तं वंदे सर्वतोमुखम् ॥५॥
नृभावं तु प्रपन्नानां हि नस्ति च सदारुजम् ।
नृसिंहतनुमप्राप्तो यस्तं नृसिंहं नमाम्यहम् ॥६॥
यस्माद्बिभ्यति वातार्कज्वलनेन्द्राः समृत्यवः ।
भयं तनोति पापानां भीषणं तं नमाम्यहम् ॥७॥
परस्य योग्यतां वीक्ष्य हरते पापसन्ततिम् ।
पुरस्य योग्यतां वीक्ष्य तं भद्रं प्रणमाम्यहम् ॥८॥
यो मृत्युं निजदासानां मारयत्यतिचेष्टदः ।
तत्रापि निजदासार्थं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥९॥
यत्पादपद्मप्रणतो भवत्युत्तमपूरुषः ।
तमीशं सर्वदेवानां नमनीयं नमाम्यहम् ॥१०॥
आत्मभावं समुत्क्षिप्य दास्यं चैव रघूत्तमम् ।
भजेऽहं प्रत्यहं रामं ससीतं सहलक्ष्मणम् ॥११॥
नित्यं श्रीरामभक्तस्य किंकरा यमकिंकराः ।
शिववत्यो दिशस्तस्य सिद्धयस्तस्य दासिकाः ॥१२॥
इदं हनुमता प्रोक्तं मंत्रराजात्मकं स्तवम् ।
पठेदनुदिनं यस्तु स रामे भक्तिमान्भवेत् ॥१३॥

॥ इति हनुमत्कल्पे श्रीहनुमन्मंत्रराजात्मकस्तवराजः समाप्तः ।॥

॥ श्रीहनुमत्सिद्धि स्तोत्रम् ॥

इस स्तोत्र के प्रत्येक मन्त्र के ११००० 'जप' एवं दशांश 'हवन' से सिद्धि होवे। हनुमान जी के मन्दिर में 'रुद्राक्ष' की माला से, ब्रह्मचर्य-पूर्वक 'जप' करें। नमक न खाए, तो उत्तम है। कठिन-से-कठिन कार्य इन मन्त्रों की सिद्धि से

सुचारु रूप से होते हैं।

(१) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, वायुसुताय, अञ्जनीगर्भसम्भूताय, अखण्ड ब्रह्मचर्यव्रतपालन-तत्पराय, धवलीकृत जगत् त्रितयाया, ज्वलदग्नि सूर्यकोटिसमप्रभाय, प्रकटपराक्रमाय, आक्रान्तदिग् मण्डलाय, यशोवितानाय, यशोऽलंकृताय, शोभिताननाय, महासामर्थ्याय, महातेजपुञ्जः विराजमानाय, श्रीरामभक्तितत्पराय, श्रीराम लक्ष्मणानन्दकारणाय, कपिसैन्यप्राकाराय, सुग्रीव सौख्यकारणाय, सुग्रीवसाहाय्यकारणाय, ब्रह्मास्त्र ब्रह्मशक्ति-ग्रसनाय, लक्ष्मणशक्ति-भेदनिवारणाय, शल्य-विशल्यौषधि-समानयनाय, बालोदित-भानुमण्डल-ग्रसनाय, अक्षयकुमार छेदनाय, वनरक्षाकर समूहविभञ्जनाय, द्रोणपर्वतोत्पाटनाय, स्वामिवचन-सम्पादितार्जुन-संयुग - संग्रामाय, गम्भीर-शब्दोदयाय, दक्षिणाशामार्तण्डाय, मेरूपर्वत - पीठिकार्चनाय, दावानल-कालाग्नि-रुद्राय, समुद्रलङ्घनाय, सीताऽऽश्वासनाय, सीतारक्षकाय, राक्षसी-सङ्घ-विदारणाय, अशोकवन-विदारणाय, लङ्कापुरी-दहनाय, दशग्रीव-शिरः कृन्त्तकाय, कुम्भकर्णादि-वधकारणाय, बालिनिवर्हण-कारणाय, मेघनाद - होमविध्वंसनाय, इन्द्रजीतवध-कारणाय, सर्वशास्त्रपारङ्गताय, सर्वग्रह-विनाशकाय, सर्वज्वर हराय, सर्वभय निवारणाय, सर्वकष्ट-निवारणाय, सर्वापत्ति-निवारणाय, सर्वदुष्टादि-निबर्हणाय, सर्वशत्रुच्छेदनाय, भूत-प्रेत-पिशाच - डाकिनी - शाकिनी-ध्वंसकाय, सर्वकार्य-साधकाय, प्राणिमात्र - रक्षकाय, रामदूताय स्वाहा।

(२) ॐ नमो हनुमते, रुद्रावताराय, विश्व-रूपाय, अमित-विक्रमाय, प्रकट-पराक्रमाय, महाबलाय, सूर्यकोटिसमप्रभाय, रामदूताय स्वाहा।

(३) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय रामसेवकाय, रामभक्ति - तत्पराय, रामहृदयाय, लक्ष्मणशक्ति-भेद निवारणाय, लक्ष्मण-रक्षकाय, दुष्टनिबर्हणाय, रामदूताय स्वाहा।

(४) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, सर्वशत्रुसंहारणाय, सर्वरोग-हराय, सर्व-वशीकरणाय, रामदूताय स्वाहा।

(५) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, आध्यात्मिकाधि-दैविकाधि-भौतिक-तापत्रय-निवारणाय, रामदूताय स्वाहा।

(६) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, देव दानवर्षि-मुनि-वरदाय, रामदूताय स्वाहा।

(७) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, भक्तजनमनः कल्पना-कल्पद्रुमाय, दुष्टमनोरथ-स्तम्भनाय, प्रभञ्जन-प्राण प्रियाय, रामदूताय स्वाहा।

(८) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, वज्रदेहाय, वज्रनखाय, वज्रमुखाय, वज्र रोम्णे, वज्रनेत्राय, वज्रदन्ताय, वज्रकराय, वज्रभक्ताय, रामदूताय स्वाहा।

(९) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, परयन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-त्राटक-नाशकाय, सर्वज्वरच्छेदकाय, सर्वव्याधि-निकृन्तकाय, सर्वभय-प्रशमनाय, सर्वदुष्ट-मुखस्तम्भनाय, सर्वकार्य-सिद्धिप्रदाय, रामदूताय स्वाहा।

(१०) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, देव - दानव - यक्ष-राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-दुष्ट-ग्रह-बन्धनाय, रामदूताय स्वाहा।

(११) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, पञ्चवदनाय पूर्व-मुखे सकल-शत्रु-संहारकाय, रामदूताय स्वाहा।

(१२) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, पञ्चवदनाय दक्षिणमुखे कराल-वदनाय, नारसिंहाय, सकल-भूत-प्रेत-दमनाय, रामदूताय स्वाहा।

(१३) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, पञ्चवदनाय, पश्चिम-मुखे गरुडाय, सकलविष-निवारणाय, राम-दूताय स्वाहा।

(१४) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, पञ्चवदनाय उत्तर-मुखे आदि वराहाय, सकल-सम्पत्-कराय, रामदूताय स्वाहा।

(१५) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, ऊर्ध्व मुखे, हयग्रीवाय, सकल-जन-वशी-करणाय, रामदूताय स्वाहा।

(१६) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, सर्वग्रहान, भूत-भविष्य - वर्त्तमानान्, समीपस्थान् सर्वकाल-दुष्टबुद्धिनुच्चाटयोच्चाटय परबलानि क्षोभय-क्षोभय, मम सर्वकार्याणि साधय-साधय स्वाहा।

(१७) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, परकृत-यन्त्र-मन्त्र-पराहङ्कार-भूत-प्रेत-पिशाच-पर-दृष्टि-सर्व-विघ्न-तर्जन-चेटक-विद्या-सर्व-ग्रह-भयं निवारय निवारय स्वाहा।

(१८) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, डाकिनी-शाकिनी-ब्रह्म-राक्षस-कुल-पिशाचोरु भयं निवारय निवारय स्वाहा।

(१९) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, भूत-ज्वर-प्रेत-ज्वर-चातुर्थिकज्वर -विष्णु-ज्वर-महेश-ज्वर निवारय निवारय स्वाहा।

(२०) ॐ नमो हनुमते रुद्रावताराय, अक्षिशूल-पक्षशूल-शिरोऽभ्यन्तर-शूल-पित्त-शूल-ब्रह्मराक्षस-शूल-पिशाच-कुलच्छेदनं निवारय निवारय स्वाहा।

॥ लाङ्गूलास्त्र-शत्रुञ्जय हनुमत्स्तोत्रम् ॥

ॐ हनुमन्तं महावीरं वायुतुल्य पराक्रम् ।
मम कार्यार्थमागच्छ प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्री हनुमच्छत्रुञ्जय स्तोत्रमाला मंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः, नानाछन्दासि, श्रीमन्महावीरो हनुमान् देवता, मारुतात्मज इति ह्सौं बीजम्। अञ्जनीसूनुरिति ह्स्फ्रें शक्तिः ॐ हा हा हा इति कीलकम्, श्रीरामभक्त इति ह्रां प्राणः,श्रीरामलक्ष्मणानन्दकर इति ह्रां ह्रीं ह्रूं जीवः ममाऽराति-पराजयनिमित्त च उल्लास पूर्वक मम विजय प्राप्ति हेतुवे शत्रुञ्जयस्तोत्रमाला मंत्र जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यास - ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें हसौं नमो हनुमते हृदयाय नमः। ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौं नमो रामदूताय शिरसे स्वाहा। ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौं नमो लक्ष्मण प्राणदात्रे शिखायै वषट्। ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौं नमो अञ्जनीसूनवे कवचाय हुं। ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रौं नमो सीताशोक विनाशनाय नेत्रत्रयाय वौषट्।ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें हस्त्रौं नमो लंकाप्रासादभञ्जनाय अस्त्राय फट्।

इसी तरह करन्यास करे।

ध्यानम् -

ध्यायेद बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं
देवेन्द्रप्रमुखैः प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा ।
सुग्रीवादि समस्तवानरयुतं सुव्यक्त तत्वाप्रियं
संरक्ताऽरुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम् ॥१॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥२॥

वज्राङ्गं पिंगकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डलमण्डितं ।
नियुद्धमुपसङ्कल्प- पारावरपराक्रमम् ॥३॥

गदायुक्तं वामहस्तं पाशहस्तं कमुण्डलुम् ।
उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तयेत् ॥४॥

हनुमानजी को प्रसन्न करने के लिये उन्हे सम्बोधन करते हुए कहे "अरे मल्ल

चटख'' अथवा कहे ''तोडरमल्ल चटख'' एवं कपि मुद्रा दिखावें।

कपिमुद्रा- करौ संपुटितौ कृत्वा समश्लिष्टाङ्गुली स्फुटा ।
तर्जन्यश्चाऽङ्गुली मूले कृत्वा द्वयङ्गुष्ठयोरपि ॥
अङ्गुल्यः पाणयोः सर्वा अन्तर्गर्भस्थिराः कुरु ।
हृदयोपरि स्थितास्तास्तु मुकुलाकृति संयुताः ।
स्ववाम पादे स्थिरा दृष्टिर्मुद्रास्याच्च स्थिराऽपितु ।
ज्ञेयेयं वानरी मुद्रा चैका मन्त्रपथे ध्रुवा ॥

॥ मालामंत्र ॥

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें ह्सौं नमो हनुमते त्रैलोक्याक्रमण-पराक्रम श्रीरामभक्त। मम परस्य च सर्वशत्रून् चतुर्वर्णसम्भवान् पुं-स्त्री-नपुंसकान् भूत भविष्यद् वर्तमानान् नानादूरस्थ-समीपस्थान् नानानामध्येयान् नानासङ्करजातिजान् कलत्र पुत्र मित्र भृत्य बन्धु सुहृत् समेतान् प्रभुशक्तिसहितान् धनधान्यादि-संपत्तियुतान् राज्ञो राजपुत्र सेवकान् मंत्रि सचिवसखीन् अत्यन्तिकक्षणेन त्वरया एतद् दिनावधि नानोपायैमारय मारय शस्त्रैश्छेदय छेदय अग्निना ज्वालय ज्वालय दाहय दाहय अक्षयकुमारवत् पादतलाक्रमणेनाऽनेन शिलातले आत्रोटय आत्रोटय घातय घातय वध वध भूतसङ्घैः सह भक्षय भक्षय क्रुद्धचेतसा नखैर्विदारय विदारय देशादस्मा-दुच्चाटय उच्चाटय पिशाचवत् भ्रंशय भ्रंशय भ्रामय भ्रामय भयातुरान् विसंज्ञान् सद्यः कुरु कुरु भस्मीभूतान् उद्धूलय उद्धूलय भक्तजनवत्सल। सीताशोका-पहारक। सर्वत्र माम् एनं च रक्ष रक्ष हा हा हा हुं हुं हुं घे घे घे हुं फट् स्वाहा ॥१॥

ॐ नमो भगवते हनुमते महाबलपराक्रमाय महाविपत्ति-निवारिकाय भक्तजनमनः कामना-कल्पद्रुमाय दुष्टजनमनोरथ स्तंभनाय प्रभञ्जन-प्राणप्रियाय स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः मम शत्रून् शूलेन छेदय छेदय अग्निना ज्वालय ज्वालय दाहय दाहय उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ॥२॥

इनमें प्रथम मंत्र का राजकुल शत्रुकुलनाश हेतु एवं दूसरे का सर्वविपत्ति नाश हेतु प्रयोग कर सकते है।

॥ शत्रुञ्जय हनुमत्स्तोत्रम् ॥

श्रीमन्तं हनुमन्त-मार्तरिपुभिद्-भूभृतरुभ्राजितं
चाल्पद्-बालधि-बंधवैरिनिचयं चामीकराद्रि प्रभम् ।

अष्टौरक्तपिशङ्ग-नेत्रनलिनं भ्रूभङ्गमङ्ग-स्फुरत्
प्रोद्यच्चण्ड-मयूखमण्डलमुखं दुःखापहं दुःखिनाम् ॥१॥
कौपीनं कटिसूत्र-मौञ्ज्यजिनयुगदेहं विदेहात्मजा
प्राणाधीशपदारविन्दनिरतं स्वान्तं कृतान्तं द्विषाम् ।
ध्यात्वैवं समराङ्गणस्थितमथानीय स्व-हृत्पङ्कजे
संपूज्याऽखिल पूजनोक्त विधिना संप्रार्थयेत् प्रार्थितम् ॥२॥
हनुमन्नञ्जनीसूतो! महाबलपराक्रम ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥३॥
मर्कटाधिप! मार्तण्ड मण्डल-ग्रासकारक ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥४॥
अक्षयन्नपि पिङ्गाक्ष! क्षितिशोकक्षयङ्कर ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥५॥
रुद्रावतार! संसार-दुःख-भारापहारक ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥६॥
श्रीरामचरणाम्भोज- मधुपायतमानस ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥७॥
बालिकोदरद-क्लान्त सुग्रीवोन्मोचनप्रभो ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥८॥
सीताविरह-वारीशमग्न- सीतेशतारक ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥९॥
रक्षोराजप्रतापाग्नि-दह्यमान- जगद्धन ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥१०॥
ग्रस्ताऽशेषजगत् स्वास्थ्य-राक्षसाम्भोधिमन्दर ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥११॥
पुच्छगुच्छ स्फुरद भूमि जगद्-दग्धारिपत्तन ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥१२॥
जगन्मनो-दुरुल्लङ्घ्य- पारावार विलङ्घन ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥१३॥

स्मृतमात्र- समस्तेष्टपूरक! प्रणतप्रिय ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥१४॥
रात्रिञ्चर-चमूराशिकर्तनैक- विकर्तन ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥१५॥
जानकी जानकीज्यानि प्रेमपात्र! परन्तप ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥१६॥
भीमादिक- महावीर- वीरावेशावतारक ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥१७॥
वैदेही- विरहक्लान्त- रामरोषैक- विग्रह ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥१८॥
वज्राङ्ग- नख-दंष्ट्रेश। वज्रिवज्रावगुण्ठन ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥१९॥
अखर्वगर्व- गंधर्व पर्वतोभेदन स्वर ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥२०॥
लक्ष्मणप्राण- संत्राणत्राता तीक्ष्णकरान्वय ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥२१॥
रामाधिविप्रयोगार्त! भरताद्यार्तिनाशने ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥२२॥
द्रोणाचल- समुत्क्षेप- समुत्क्षिप्तारिवैभव ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥२३॥
सीताशीर्वादसंपन्न! समस्तावयवाक्षत ।
लोलल्लाङ्गूलपातेन ममाऽरातीन् निपातय ॥२४॥
इत्येवमश्वत्थतलोपविष्टः शत्रुञ्जयं नाम पठेत् स्वयं यः ।
स शीघ्रमेवास्तु-समस्तशत्रुः प्रमोदते मरुतज प्रसादात् ॥२५॥

॥ इति शत्रुञ्जयहनुमत् स्तोत्रम् ॥

॥ हनुमद्दीपदान विधिः॥

विशेष संकट में, ग्रहपीड़ा, राजभय में, आपत्ति विपत्ति में, दीपदानप्रयोग करना चाहिये। यह प्रयोग गणेश, दुर्गा, शिव, शालिग्राम, हनुमानजी की सन्निधि में अथवा चौराहे पर भी किया जा सकता है। वर्तिका १ से २१ सूत्र तक की बना सकते है दीपपात्र भी १, ११, २१, ५१ या अधिक जलाये जा सकते हैं।

यथा– सुदर्शनसंहितायाम्–

अथाऽतः संप्रवक्ष्यामि दीपदानं हनूमतः ।
येन विज्ञानमात्रेण सिद्धो भवति साधकः ॥१॥
दीपदानप्रमाणं तु सावधानादिदं शृणु ।
प्रमाणं तं तु वक्ष्यामि पञ्चमान मनुक्रमात् ॥२॥
स्थानं भेदं च मंत्रं च दीपदाने मनुं पृथक् ।
पुष्पवासिततैलं च सर्वकामफल प्रदम् ॥३॥
तिलतैलं श्रियो हेतुः पृथिकागमनाय च ।
अतसीतैलमुद्दिष्टं यशः कर्मणि निश्चितम् ॥४॥
सार्षपं रोगनाशाय सर्वव्याधि विनाशकम् ।
मारणे राजिकाजातं तथा वैभीतकादिकम् ॥५॥
उच्चाटे च करञ्जोत्थं विद्वेषे मधुवक्षजम् ।
अलाभे सर्वतैलं च तिलतैलमनुत्तमम् ॥६॥
गोधूमं च तिलं माषं मुग्दं वै तण्डुलं क्रमात् ।
पञ्चधान्यमिदं प्रोक्तं नित्यं दीप उदाहृतम् ॥७॥
पञ्चधान्यसमुद्भूत- पिष्टपात्रं सुशोभनम् ।
सर्वकाममिदं प्रोक्तं सर्वदा दीपदापने ॥८॥
वश्ये तण्डुलपिष्टं च मारणे माषपिष्टकम् ।
उच्चाटने तिलं कृष्णं यवपिष्टं प्रकीर्तितम् ॥९॥
पान्थस्यागमने प्रोक्तं गोधूमोत्थं स-तण्डलम् ।
मोहने तण्डुलं पिष्टमाकर्वे -मुग्दपिष्टकम् ॥१०॥
संग्रामे केवलं माषं कृत्वा दीपं च पात्रके ।
सन्धौ त्रिपलजं प्रोक्तं लक्ष्मीः कस्तूरिका मता ॥११॥

एला लवङ्ग कर्पूर -मृगनाभिसुसंयुता ।
कन्यकावरणे राजवश्ये सर्वं तथैव च ॥१२॥
अलाभे सर्ववस्तूनां पञ्चधान्यं परं मतम् ।
अष्टमुष्टि भवेत् किंचित् किंचित् पिष्टं तु पुष्कलम् ॥१३॥
सञ्च सप्त तथा रौद्रं प्रमाणं च यथा क्रमम् ।
सुगन्धं नैवमानं स्याद्यथारुचि समं मतम् ॥१४॥
नित्यं दीपः प्रकर्तव्यस्ताम्रपात्रे हनूमतः ।
सोमवारे तथा ध्यात्वा जलाप्लावं च कारयेत् ॥१५॥
पश्चात् प्रमाणतो ग्राह्यं क्रमशो ह्यमानकम् ।
तत् पिष्टं शुद्ध पात्रे तु नदीतोयेन् शोधितम् ॥१६॥
दीपपात्रं ततः कुर्याच्छुद्धो नियतमानसः ।
दीपपात्रे योज्यमाने मारुतेः कवचं पठेत् ॥१७॥

॥ इति पात्रविधिः ॥

मालानूनाश्च ये वर्णाः साध्यनाम समन्विताः ।
वर्तिकायाः प्रकर्तव्यास्तन्तवस्तत्प्रमाणतः ॥१८॥
त्रिंशांशेनैव सा रम्या गुरुकार्येऽखिले मताः ।
कूटतुल्या स्मृतानित्या सामान्यऽथ विशेषतः ॥१९॥
रुद्रकूटगुणा प्रोक्ता न पात्रं च विचालयेत् ।
एकविंशति-संख्यास्तन्तवो निर्मला मताः ॥२०॥
रक्तसूत्रं हनुमतो दीपदाने प्रकीर्तितम् ।
कृष्णमुच्चाटने प्रोक्तं द्वेषमारण कर्मणि ॥२१॥
कटुतुल्यपलं तैलं गुरुकार्येऽष्टसंगुणम् ।
नित्ये पञ्चपलं प्रोक्तमथवा मनसो रुचिः ॥२२॥
हनुमत्प्रतिमायास्तु सन्निधौ दीपदापनम् ।
प्रतिमा दीपसहिता ग्रहभूतग्रहेषु च ॥२३॥
चतुष्पथे तथा प्रोक्तं दीपदानमनन्तरम् ।
सन्निधौ स्फाटिके लिङ्गे शालग्रामस्य सन्निधौ ॥२४॥
नानाभोगाश्रयं प्रोक्तं दीपदानं हनूमतः ।
गणेश सन्निधौ विष्णोर्महासङ्कट नाशनम् ॥२५॥

विषव्याधि महाघोरे हनुमत् सन्निधौ कुरु ।
दुर्गायाः सन्निधौ प्रोक्तं संग्रामे घोर सङ्कटे ॥२६॥
द्यूते वृष्टिस्थले चैव विशेषान् मारणे तथा ।
व्याधिनाशे तुण्डबन्धे दुष्टदृष्टौ तथैव च ॥२७॥
राजद्वारे बन्धमुक्तौ गुरुकार्ये प्रयत्नतः ।
गजस्य मस्तके चैव राज्यलक्ष्मी समृद्धये ॥२८॥
स्त्रीवशीकरणे दीपो वापीतीरे सरोवरे ।
विप्र क्षत्रियविट् शूद्रवश्ये विप्रालये शुभम् ॥२९॥
जपे पूर्वमुखः कार्य उच्चाटे वायवः स्मृतः ।
सर्ववश्ये च कर्त्तव्यो दीपो याम्यदिशामुखः ॥३०॥

(यहाँ दक्षिण दिशा दीप ज्योति के मुख से है, साधक के मुँह की दिशा नही है)

मारणे भेदकार्ये च कर्त्तव्यो राक्षसीमुखः ।
शान्तिके पौष्टिके सन्धौ कन्यापुत्राप्तये तथा ॥३१॥
अभिचारार्थ सिद्ध्यर्थे दीपः कार्यो जलाश्रितः ।
स्तंभने भूतदमने शाकिनीनां च विग्रहे ॥३२॥
व्यन्तराणां च यक्षाणां पवनाभिमुखं कुरु ।
धानेशो धनधान्यादि राजलक्ष्मीसमृद्धये ॥३३॥
दीपः कार्यो महायोगे पान्थस्यागमनाय च ।
ईशानाभिमुखः कार्यः सर्वत्रऋद्धिविवृद्धये ॥३४॥
सर्वेषु गुरुकार्येषु राजपत्नीवशे तथा ।
वृष्टे समागमार्थाय देशस्योत्सादनाय ॥३५॥
देवतासम्मुखः कार्यो दीपः शून्ये प्रकल्पयेत् ।
वृष्टि वृक्षादि-निष्पत्तौ दुर्गे तोयप्रशोषणे ॥३६॥
विवरादि प्रवेशेषु भूमिस्थ धनकर्षणे ।
गण्डभेदेषु सर्वेषु शृङ्खलाबन्ध मोचने ॥३७॥
खातं कृत्वा करोन्मानं चतुरस्रं सुशोभनम् ।
तन्मध्ये स्थापयेद् दीपं दक्षिणाभिमुखं तथा ॥३८॥
पात्रधारण यंत्रं तु विशेषेण निशामय ।
स्वर्णो रूपोद्भवं ताम्रं त्रपुलाहाद्भवं तथा ॥३९॥

नागपात्रं विशेषेण वश्यादिषु च कर्मसु ।
पात्राधारे तु षट्कोणे तथा बीजानि विन्यसेत् ॥४०॥

हौं हौं हौं हां फ्रें हौं क्रमात्।

दीप की सुरक्षा के लिये भूमि में गड्ड़ा खोदकर रखें अथवा फर्श पर किसी काँच के गोले आदि द्वारा रक्षा करे। भूमि पर पट्कोण बनायें अग्निकोण से क्रम पूर्वक चारों कोणों में "**हौं हौं हौं ह्रां**" ये चार बीजमंत्र लिखें। अग्र एवं पृष्ठ दिशा में "**फ्रें** एवं "**ह्रौं**" लिखें। चतुरस्र बनाये तथा स्वर्ण चाँदी ताम्रपात्र या पीप्री से बना दीप पात्र रखें। वर्तिका का मुँह दक्षिण दिशा में रखें।

यंत्र मध्य में हनुमान गायत्री से पूजन करे-

अग्निकोणं समाश्रित्य कोणे कोणे यथा क्रमम् ।
मध्ये हनुमद् गायत्रीं तां शृणुष्व षडानन ॥

हनुमानगायत्री - ॐ रामदूताय विद्महे वायुपुत्रायधीमहि। तन्नो हनुमान् प्रचोदयात्॥

ततो मंत्रेण दीपपात्रं वेष्टयेत् (दीपरक्षा)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः वज्रतुण्डकाय लङ्केश्वरवधाय महासेतुबन्धाय महाशैलप्रवाह- गगनेचर एह्येहि भगवन् महाबलपराक्रम भैरवायाऽऽज्ञा एहयेहि महारौद्र दीर्घपुच्छेन वेष्टय वैरिणो भञ्जय भञ्जय हुं फट्। (इति मंत्रं जपेत्)

५१ बार मंत्र जपते हुये पात्र एवं यंत्र का वेष्टन करें। चुटकी बजाते हुये या रक्षा सूत्र से वेष्टन करे। उसके आगे छुरि रखें कनेर के पुष्प से पूजा करें।

पञ्चाशदधिकं पात्रे यंत्रं मंत्रेण वेष्टयेत् ।
छुरिका अग्रतः स्थाप्या करवीरैश्च पूजयेत् ॥

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रैं फ्रें हनुमान् प्रकट पराक्रम आक्रान्त-दिङ्मण्डल-यशोधवलीकृत जगत्रितय वज्रदेह

इसके बाद जब तक दीप जले तब तक निम्न मंत्र का जाप करे -

ज्वलत्सूर्यकोटिसमप्रभ तनुरुद्रावतार लङ्कापुरीदहन उदधिलंघन दशग्रीवशिरः कृतान्त सीतात्रासनिवारक वायुसुत अञ्जनिगर्भसंभूत श्रीरामलक्ष्मणानन्दकर कपिसैन्यप्राकार सुग्रीवसख्यकारण बालिनिर्वहण द्रोणपर्वतोत्पाटन अशोकवनविदारण अक्षकास्यच्छेदन वनरक्षाकरसमूह-भञ्जन ब्रह्मास्त्रब्रह्मशक्तिग्रसन लक्ष्मणशक्तिभेदन लक्ष्मणशक्तिभेदननिवारण

शिशुसमानपीनबालादित्यसानुग्रसन मेघनादहोमविध्वंसन इन्द्रजिद्वधकारण सीतारक्षकराक्षसविदारण कुम्भकर्णादिवधपरायण श्रीरामभक्ति तत्पर व्योमद्रुमोल्लंघन-महासामर्थ्य महातेजः पुञ्जविराजमानस्वामिवचनसंपादित अर्जुनसंयुगसहाय कुमारब्रह्मचारी गंभीरस्वर दक्षिणांशमार्त्तण्ड मेरुपर्वतोत् पाटकचरण सर्वदुष्टनिबर्हण व्याघ्रादिभयनिवारण सर्वशत्रुच्छेदनसमपरस्य त्रिभुवन स्त्री-पुं-नपुंसकात्मकं सर्वजीवजातं वशय वशय ममाज्ञाकारं संपादय संपादय नानानामधेयान् राज्ञः सपरिवारान्मम सेवकान् कुरु कुरु सर्ववश्य अविषाणविध्वंसय विध्वंसय परबलानि प्रबलानि परसैन्यानि क्षोभय क्षोभय संकार्यादिनादिति साधय साधय सर्वदुर्जनानां मुखानि स्तंभय स्तंभय कीलय कीलय घे घे घे हा हा हा हुं हुं हुं फट् स्वाहा।

मंत्रमेतत् पठेन्नित्यं यावद् दीपं समापयेत् ।
दीपाग्रे पठमानस्तु मनोवाञ्छितमाप्नुयात् ॥

॥ विधानम् ॥

भूमिशायी नक्तभोजी वर्णमाला समन्वितः ।
कपीश्वरं स्मेरन्नित्यमेकविंशति वासरान् ॥१॥
प्रमाणं दीपकरणे कार्यसिद्धिः प्रजायते ।
शकुनान् संप्रवक्ष्यामि आगमोक्तप्रमाणकान् ॥२॥
कार्यासं रसकुम्भं च विद्धाङ्गं चाऽङ्गवर्जितम् ।
अधिकाङ्गं दुष्टबुद्धिं दृष्ट्वा कार्यं न जायते ॥३॥
सुवासिनीं सुपुरुषं फलं गा वत्ससंयुताम् ।
तुरङ्गं गजखड्गं च दृष्ट्वा बाह्यं सुखप्रदम् ॥४॥
एवं दीपविधानं च मयोक्तं ते विशेषतः ।
हिताय जगतां पुत्र । तत्क्षणात् सिद्धि कारकम् ॥५॥
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देयं कृत्वा परीक्षणम् ।
देवानां च यथा विष्णुर्नदीनां जाह्नवी तथा ॥६॥
तक्षकः सर्वनागानां धेनूनां कामधुक् तथा ।
तथा सुदर्शनं चेयं संहिता परिकीर्तिता ॥७॥
विष्णुभक्ताय शान्ताय कान्ताय वशवर्तिने ।
सुभक्ताय सुशिष्याय व्रतज्ञाय प्रकाशयेत् ॥८॥
यथा माहिष्मतीनाथस्तथा वायुसुतः स्मृतः ।
उभयोरन्तरं नास्ति कृत्वा पापमवाप्नुयात् ॥९॥

॥ अथ एकमुखीहनुमत् कवचम् ॥

श्री ब्रह्माणपुराण में अगस्त्य नारद संवाद में हनुमत्कवच जो दिया गया है उसमें शरीर के अङ्गो व दिशा बंधन ही है तथा जो आनन्दरामायण में शिवपार्वति संवाद कवच कहा है उसमें कुछ रक्षा मंत्रों की अधिकता है दोनों ही कवच श्रीराम द्वारा कहे गये है।

॥ नारद उवाच ॥

एकदा सुखमासीनं शंकरं लोकशंकरम् ।
प्रपच्छ गिरिजा कान्तं कर्पूरधवलं शिवम् ॥१॥

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

भगवन्देवदेवेश लोकनाथ जगत्प्रभो ।
शोकाकुलानां लोकानां केन रक्षा भवेद्ध्रुवम् ॥२॥
संग्रामे संकटे घोरे भूतप्रेतादिके भये ।
दुःखदावाग्नि संतप्तचेतसां दुःखभागिनाम् ॥३॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया ।
विभीषणाय रामेण प्रेम्णा दत्तं च यत्पुरा ॥४॥
कवचं कपिनाथस्य वायुपुत्रस्य धीमतः ।
गुह्यं तत्ते प्रवक्ष्यामि विशेषाच्छृष्ट सुन्दरि ॥५॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्री हनुमत्कवच स्तोत्र मंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः श्रीवीरोहनुमान् परमात्मादेवता, अनुष्टुप् छन्दः, मारुतात्मज इतिबीजम्, अंजनीसूनुरिति शक्तिः, लक्ष्मणप्राणदाता इतिजीवः, श्रीरामभक्तिरिति कवचम्, लङ्काप्रदाहक इतिकीलकम्, मम सकलकार्य सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

मंत्र - ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः।

करन्यास - ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः - ॐ अञ्जनीसूनवे नमो हृदयाय नमः। ॐ रुद्रमूर्त्तये नमः शिरसे स्वाहा। ॐ वातात्मजाय नमः शिखायै वषट्। ॐश्रीरामभक्ताय

नमः कवचाय हुम्। ॐ वज्रकवचाय नमो नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारणाय नमः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्–

ध्यायेद् बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं
देवेन्द्रप्रमुख- प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा।
सुग्रीवादि- समस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्वप्रियं
संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालङ्कृतम् ॥१॥

उद्यन्मार्तण्डकोटि- प्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं
मौञ्जी यज्ञोपवीताऽऽभरण रुचि शिखा शोभितं
कुण्डलाढ्यम्भक्तानामिष्टदान-प्रणवमनुदिनं वेदनादप्रमोदं
ध्यायेद्देवं विधेयं प्लगकुलपतिं गोष्पदीभूतवार्धिम् ॥२॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥३॥

व्रजाङ्ग पिङ्गकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डलमण्डितम्।
उद्यद्दक्षिण- दोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तये ॥४॥

स्फटिकामं स्वर्णकान्तिं द्विभुजं च कृताञ्जलिम्।
कुण्डलद्वय- संशोभि- मुखाम्भोजं हरिं भजे ॥५॥

उद्यदादित्य सङ्काशमुदारभुज -विक्रमम्।
कंदर्पकोटिलावण्यं सर्वविद्याविशारदम् ॥७॥

श्रीरामहृदयानन्दं भक्तकल्पमहीरुहम्।
अभयं वरदं दोर्भ्यां कलये मारुतात्मजम् ॥८॥

अपराजित! नमस्तेऽस्तु नमस्ते रामपूजित।
प्रस्थानं च करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

यो वारान्निधिमल्प पल्लवमिवोल्लङ्घ्य प्रतापान्वितो।
वैदेही धनशोक-तापहरणो वैकुण्ठभक्तप्रियः।
अक्षाद्यूर्जित राक्षसेश्वरमहादर्पापहारी रणे।
सोऽयं वानरपुङ्गवोऽवतु सदा चाऽस्मान् समीरात्मजः ॥९॥

वज्राङ्ग पिङ्गनेत्रं कनकमयललित्-कुण्डलाक्रान्तगण्डं
सर्वाविद्याधिनाथं करतलविधृतं पूर्णकुम्भं दृढं च।

भक्ताभीष्टाधिकारं विदधति च सदा सुप्रसन्नं कपिन्द्रं
त्रैलोक्यत्राणकरं सकलभुवनगं रामदूतं नमामि ॥१०॥
उद्यल्लङ्गूलकेश- प्रचलजलधरं भीममूर्तिं कपीन्द्रम् ।
वन्दे रामाङ्घ्रिपद्म-भ्रमरपरिवृतं सत्वसारं प्रसन्नम् ॥११॥
वामेकरे वीरभयं वहन्तं शैलं च धत्तेनिजकण्ठलग्नम् ।
उद्यानमुत्थाय सुवर्णवर्णं भजे ज्वलत्कुण्डल रामदूतम् ॥१२॥
पद्मरागमणि-कुण्डलत्विषा पाटलीकृत कपोलमण्डलम् ।
दिव्यगेह कदलीवनान्तरे भावयामि पवमाननन्दनम् ॥१३॥
उल्लंघ्य सिंधोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लंकां नमामि तं प्राञ्जलिरांजनेयम् ॥१४॥

ये विविध प्रकार के ध्यान मंत्र दिये गये है, यह जरुरी नहीं है कि सभी ध्यान मंत्र पढ़े जायें।

ॐ नमो हनुमते यशोऽलंकृताय अञ्जनीगर्भसंभृताय रामलक्ष्मणानन्दकाय कपिसैन्यप्रकाशनाय पर्वतोत्पाटनाय सुग्रीवसाह्यकरण परोच्चाटन कुमार ब्रह्मचर्य गंभीरभीमशब्दोदयाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं सर्वदुष्टजन-दुष्टग्रह निवारणाय स्वाहा ॥१॥

ॐ नमो भगवते हनुमदारण्यरुद्राय सर्वदुष्टजन मुखस्तंभनं कुरु कुरु ह्रां ह्रीं ह्रूं ठं ठं ठं हुं फट् स्वाहा ॥२॥

ॐ नमो हनुमते सर्वग्रहान भूतभविष्यद् वर्तमानान् समीपस्थान् सर्वकाल दुष्टबुद्धिनुच्चाटयोच्चाटय परबलान् क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्याणि साधय साधय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् घे घे घे ॐ शिवसिद्धिं ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रूं ॐ ह्रैं ॐ ह्रौं ॐ ह्रः स्वाहा ॥३॥

ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय शाकिनी डाकिनी विध्वंसनाय किल किल वामकरेण निषण्णाय हनुमद्देवाय ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां स्वाहा ॥४॥

ॐ नमो हनुमते परकृत्ययंत्रमंत्र पराहंकार-भूतप्रेतपिशाचदृष्टि- सर्वविघ्न दुर्जनचेष्टा कुविद्या चेटकविद्या सर्वग्रहभयं निवारय -२ बंध-२ लुंठ-२ विलुंच-२ किल-२ वध-२ पच-२ हन-२ सर्वकुयंत्राणि ॐ फट् स्वाहा ॥५॥

ॐ नमो हनुमते पाहि पाहि एहि एहि सर्वग्रहभूतानां शाकिनी डाकिनां विषमदुष्टानां सर्वेषामाकर्षयाकर्षय मर्दय मर्दय छेदय छेदय अपमृत्यं

ममोपशोषय मर्त्यान्मारय मारय शोषय शोषय प्रज्वल प्रज्वल भूतमण्डल पिशाचमण्डलनिरसनाय भूतज्वर प्रेतज्वर चातुर्थिकज्वर ब्रह्मराक्षसपिशाच च्छेदनक्रिया विष्णुज्वर महेशज्वरान् छिंधि-२ भिन्धि-२ अक्षिशूले शिरोऽभ्यंतरे ह्यक्षिशूले गुल्मशूले पित्तशूले ब्रह्मराक्षसकुल प्रबलनागकुलविषं -निर्विषं झटिति -२ ॐ ह्रीं फट् घे घे । सर्वदुष्टग्रहनिवारणाय स्वाहा ॥६॥

ॐ नमो हनुमते पवनपुत्राय वैश्वानरमुखाय पापदृष्टि घोरदृष्टि षोढादृष्टि हनुमदाज्ञा फुरे स्वाहा ॥७॥

ॐ नमो हनुमते स्वगृहे द्वारे पट्टके तिष्ठ तिष्ठेति तत्र रोगभयं राजकुलभयं नास्ति तस्योच्चारणमात्रेण सर्वे नश्यंति ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं घे घे स्वाहा ॥८॥

॥ श्रीरामचन्द्र उवाच ॥

हनुमान पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः ।
पातु प्रतीच्यां रक्षोघ्नः पातु सागर पारगः ॥९॥
उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केसरीप्रिय नन्दनः ।
अधस्तु विष्णुभक्तश्च पातु मध्यं पावर्निः ॥२॥
अवान्तरदिशः पातु सीताशोकविनाशनः ।
लंकाविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम् ॥३॥
सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः ।
भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम् ॥४॥
नेत्रे छायापहारी च पावनः प्लवगेश्वरः ।
कपोले कर्ण मूले च पातु श्रीरामकिंकरः ॥५॥
नासाग्रमंजनीसूनुः पातु वक्त्रं हरीश्वरः ।
वाचं रुद्रप्रियः पातु जिह्वां पिङ्गललोचनः ॥६॥
पातु दन्तान् फाल्गुनेष्टश्चुबकं दैत्यदर्पहा ।
पातुकण्ठं च दैत्यारिः स्कंधौ पातु सुरार्चितः ॥७॥
भुजौ पातु महातेजा करौ च चरणायुधः ।
नखान् नखायुधः पातु कुक्षिं पातु कपीश्वरः ॥८॥
वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः ।
लङ्काविभञ्जनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम् ॥९॥

नाभिं च रामदूतस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः ।
गुह्ये पातु महाप्राज्ञो लिङ्गं पातु शिवप्रियः ॥१०॥
ऊरू च जानुनी पातु लङ्काप्रासादभञ्जनः ।
जङ्घे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फो पातु महाबलः ॥११॥
अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः ।
अङ्गान्यमितसत्वाढ्यः पातु पादाङ्गुलीस्तथा ॥१२॥
सर्वाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान् ।
हनुमत्कवचं यस्तु पठेद् विद्वान् विचक्षणः ॥१३॥
स एव पुरुष श्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ।
फलश्रुति- त्रिकालमेककालं वा पठेन्मात्रयं सदा ॥१४॥
सर्वान् रिपून् क्षणाज्जित्वा स पुमान् श्रियमाप्नुयात् ।
मध्यरात्रे जले स्थित्वा सप्तवारं पठेद् यदि ॥१५॥
क्षयाऽपस्मार- कुष्ठादि तापज्वर निवारणम् ।
अश्वत्थमूलेऽर्कवारे स्थित्वा पठति यः पुमान् ॥१६॥
अचलां श्रियमाप्नोति संग्रामे विजयं तथा ।
लिखित्वा पूजयेद् यस्तु सर्वत्र विजयी भवेत् ॥१७॥
यः करे ध्यारयेन्नित्यं स पुमान् श्रियमाप्नुयात् ।
विवादे द्यूतकाले च द्यूते राजकुले रणे ॥१८॥
दशवारं पठेद् रात्रौ मिताहारो जितेन्द्रियः ।
विजयं लभते लोके मानवेषु नराधिपः ॥१९॥
भूतप्रेत महादुर्गे रणे सागरसंप्लवे ।
सिंहव्याघ्रभये चोग्रे शरशस्त्रास्त्रपातने ॥२०॥
शृङ्खलाबन्धने चैव काराग्रहनियन्त्रणे ।
कायस्तोभे वह्निचक्रे क्षेत्रे घोरे सुदारुणे ॥२१॥
शोके महारणे चैव ब्रह्मग्रहविशानम् ।
सर्वदा तु पठेन्नित्यं जयमाप्नोत्य संशयम् ॥२२॥
भूर्जे वा वसने रक्ते क्षोभे वा तालपत्रके ।
त्रिगंधेनाथ मश्यैव विलिख्य धारयेन्नरः ॥२३॥

पञ्चसप्त त्रिलोहैर्वा गोपितं कवचं शुभम् ।
गले गट्यां बाहुमूले कण्ठे शिरसि धारितम् ।
सर्वान् कामानवाप्नोति सत्यं श्रीरामभाषितम् ॥२४॥

॥ द्वादशनामावलि॥

हनुमानंजनीसुनुर्वायुपुत्रो महाबलः ।
रामेष्ट फाल्गुनसखः पिंगाक्षोऽमित विक्रमः ॥१॥
उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः ।
लक्ष्मण प्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा ॥२॥
एवं द्वादश नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः ।
स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत् ॥३॥
तस्य सर्वभयं नास्ति रणे च विजयी भवेत् ।
राजद्वारे गह्वरे च भयं नास्ति कदाचन ॥४॥

॥ अथ पञ्चमुखीहनुमत् कवचम् ॥

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

सदाशिव वरस्वामिञ्ज्ञानद प्रियकारक ।
कवचादि मया सर्वं देवानां संश्रुतंप्रिय ॥१॥
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं करुणानिधे ।
वायुसूनोर्वरं येन नान्यदन्वेषितं भवेत् ।
साधकानां च सर्वस्वं हनुमत्प्रीतिवर्द्धनम् ॥२॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

देवेशि दीर्घनयने दीक्षादीप्तकलेवरे ।
मां पृच्छसि वरारोहे न कस्यापि मयोदितम् ॥३॥
कथं वाच्यं हनुमतः कवचं कल्पपादपम् ।
स्त्रीरूपा त्वमिदं नानाकूटमण्डित विग्रहम् ॥४॥
गह्वरं गुरुगम्यं च यत्र कुत्र वदिष्यसि ।
तेन प्रत्युत पापानि जायंते गजगामिनि ॥५॥
अत एव महेशानि नो वाच्यं कवचं प्रिये ॥६॥

॥ श्री पार्वत्युवाच ॥

वदान्यस्य वचोनेदं नादेयं जगतीतले ।
त्वं वदान्यावधिः प्राणनाथो मे प्रियकृत्सदा ॥७॥
मह्यं च किं न दत्तं ते तदिदानीं वदाम्यहम् ।
गणपं शाक्त सौरे च शैवं वैष्णवमुत्तमम् ॥८॥
मंत्रयंत्रादिजालं हि मह्यं सामान्यतस्त्वया ।
दत्तं विशेषतो यद्यत्तत्सर्वं कथयामि ते ॥९॥
श्रीरामतारको मंत्रः कोदण्डस्यापि मे प्रियः ।
नृहरेः सामराजो हि कालिकाद्याः प्रियंवद ॥१०॥
दशविद्या विशेषेण षोडशीमंत्र नायिकाः ।
दक्षिणामूर्ति संज्ञोऽन्यो मंत्रराजो धरापते ॥११॥
सहस्त्रार्जुन कस्यापि मंत्रा येऽन्ये हनूमतः ।
ये ते हयदेया देवेश तेऽपि मह्यं समर्पिताः ॥१२॥
किं बहूक्तेन गिरिश प्रेमयंत्रित चेतसा ।
अर्धाङ्गमपि मह्यं ते दत्तं किं ते वदाम्यहम् ।
स्त्रीरूपं मम जीवेश पूर्वं तु न विचारितम् ॥१३॥
शिव उवाच- सत्यं सत्यं वरारोहे सर्वं दत्तं मया तव ।
परं तु गिरिजे तुभ्यं कथ्यते श्रृणु सांप्रतम् ॥१४॥
कलौ पाखण्ड बहुला नानावेषधरा नराः ।
ज्ञानहीना लुब्धकाश्च वर्णाश्रम बहिष्कृताः ॥१५॥
वैष्णवत्वेन विख्याताः शैवत्वेन वरानने ।
शाक्तत्वेन च देवेशि सौरत्वेनेनरे जनाः ॥१६॥
गाणपत्येन गिरिजे शास्त्रज्ञानबहिष्कृता ।
गुरुत्वेन समाख्याता विचरिष्यन्ति भूतले ॥१७॥
ते शिष्य संग्रहं कर्तुमुद्युक्ता यत्र कुत्रचित् ।
मंत्राद्युच्चारणे तेषां नास्ति सामर्थ्यमम्बिके ॥१८॥
तच्छिष्याणां च गिरिजे तथापि जगतीतले ।
पठन्ति पाठयिष्यन्ति विप्रद्वेषपराः सदा ॥१९॥

द्विजद्वेषपराणां हि नरके पतनं ध्रुवम् ।
प्रकृतं वच्मि गिरिजे यन्मयापूर्वमीरितम् ॥२०॥
नानारूपमिदं नानाकूटमण्डितविग्रहम् ।
तत्रोत्तरं महेशानि श्रृणु यत्नेन सांप्रतम् ॥२१॥
तुभ्यं मया यदा देवि वक्तव्यं कवचं शुभम् ।
नानाकूटमयं पश्चात् त्वयाऽपि प्रेमतः प्रियम् ॥२२॥
वक्तव्यं कुत्रचित्तत्तु भुवने विचरिष्यति ।
विश्रांतः पातिनां भद्रे यदि पुण्यवतां सताम् ॥२३॥
सत्संप्रदाय शुद्धानां दीक्षामंत्रवतां प्रिये ।
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या विशेषेण वरानने ॥२४॥
उच्चारणे समर्थानां शास्त्रनिष्ठावतां सदा ।
हस्तागतं भवेद्भद्रे तदा ते पुण्यमुत्तमम् ॥२५॥
अन्यथा शूद्र जातीनां पूर्वोक्तानां महेश्वरि ।
मुखशुद्धि विहीनानां दांभिकानां सुरेश्वरि ॥२६॥
यदा हस्तगतं तस्यात् तदा पापं महत्तव ।
तस्माद्विचार्य देवेशि ह्यधिकारिणमम्बिके ॥२७॥
वक्तव्यं नात्र संदहो ह्यन्यथा निरयं व्रजेत् ।
किं कर्त्तव्यं मया तुभ्यमुच्यते प्रेमतः प्रिये ॥२८॥
त्वयापीदं विशेषेण गोपनीयं स्वयोनिवत् ।

कवच प्रारंभते - ॐ पञ्चवदनायाञ्जनेयाय नमः।

विनियोग - ॐ अस्य श्री पंचमुखी हनुमद् मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋर्षिः गायत्री छन्दः पंचमुखी हनुमान देवता ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिम्, क्रौं किलकम्, क्रूं कवचं, क्रैं अस्त्राय फट्, इति दिग्वधः सर्वाऽभीष्ट सिद्धये आत्मनो रक्षणार्थे सर्वशत्रुक्षयार्थे जपे विनियोगः।

॥ श्री गरूड़ उवाच ॥

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि श्रृणु सर्वाङ्गसुन्दरि ।
यत्कृतं देवदेवेन ध्यानं हनुमतः प्रियम् ॥

ध्यानम्–

पञ्चवक्त्रं महाभीमं त्रिपंचनयनैर्यतुम् ।
बाहुभिर्दशभियुक्तं सर्वकामार्थ सिद्धिदम् ॥
पूर्वं तु वानरं वक्त्रं कोटिसूर्यसमप्रभम् ।
दष्ट्राकरालवदनं भृकुटिकुटिलेक्षणम् ॥१॥
अस्यवै दक्षिणं वक्त्रं नारसिंह महाद्भुतम् ।
अत्युग्रतेजोवपुषं भीषणं भय नाशनम् ॥२॥
पश्चिमं गारूडं पक्त्रं वक्रतुण्डं महाबलम् ।
सर्वनागप्रशमनं विषभूतादिकृंतनम् ॥३॥
उत्तरं सौकरं वक्त्रं कृष्णदीप्त नमोपमम् ।
पातालसिंह वेताल ज्वररोगादिकृंतनम् ॥४॥
उर्ध्वं हयाननं घोरं दावान्तकरं परम् ।
सेन वक्त्रेण विपेन्द्र तारकाख्यं महासुरम् ॥५॥
जघानशरणं तस्यात्सर्वशत्रुहरं परम् ।
ध्यायेत्पंचमुखं रूद्रं हनुमंतं दयानिधम् ॥६॥
खड्ग त्रिशुलं खट्वाङ्गं पाशमंकुशपर्वतम् ।
मुष्टिं कौमोदकीं वक्षं धारयंतं कमण्डुलम् ॥७॥
भिन्दिपालं ज्ञानमुद्रां दशभिमुनिपुंगव ।
एतान्यायुधजालानि धारयंतं भजाम्यहम् ॥८॥
प्रेतासनोपविष्टं तं सर्वाभरणभूषितम् ।
दिव्यमालांबरधरं दिव्यगंधानुलेपनम् ॥९॥
सर्वाश्चर्यमयं देवं हनुमद्विश्वतोमुखम् ।
पंचास्यमच्युतमनेक विचित्रवर्णं वक्त्रं
शशांकशिखरं कपिराजवर्यम् ॥१०॥
पीताम्बरादिमुकुटैरूप शोभिताङ्गं
पिङ्गाक्षमाद्यमनिशं मनसा स्मरामि ॥११॥
मर्कटेश महोत्साह सर्वशत्रुहरः परः ।
शत्रुं संहर मां रक्ष श्रीमन्नापद उद्धर ॥१२॥

ॐ हरिमर्कट मर्कटमंत्रमियं परिलिख्यति लिख्यति वामतले।
यदि नश्यति नश्यति शत्रुकुलं यदि
मुञ्चति मुञ्चति वामलता ॥१३॥

इत ध्यात्वा कवचं पठेत् - ॐ हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा॥१॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय पूर्वकपिमुखाय सकलशत्रु संहारणाय स्वाहा॥२॥ ॐ नमो भगवते पंचदनाय दक्षिणमुखाय करालवदनाय नरसिंहाय सकलभूत मथनाय स्वाहा॥३॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय पश्चिममुखाय गरूडाननाय सकलविषहराय स्वाहा॥४॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनायोत्तर मुखायादि वराहाय सकलसंपतकराय स्वाहा॥५॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय उर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकलजन वशंकराय स्वाहा॥६॥

ये सभी मंत्र हनुमानजी के प्रत्येक स्वरूप के है इनका अलग अलग मंत्र जप प्रयोग भी हो सकता है।

विनियोगः - ॐ अस्य पंचमुख हनुमद्कवच मंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋर्षिः, अनुष्टुप् छन्दः, पंचमुखवीरहनुमान्देवता, हनुमान बीजं, वायुपुत्र शक्ति, अंजनी सुत कीलकं, श्रीरामदूत हनुमत्प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋषिन्यासः - ॐ रामचन्द्र ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्द से नमः मुखे, पंचमुखीवीरहनुमाद्देवतायै नमः हृदि, हनुमानिति बीजाय नमः गुह्ये, वायुपुत्र इति शक्तये नमः पादयोः, अंजनीसुत कीलकाय नमः नाभौ, विनियोगाय नमःसर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास - ॐ अंजनीसुताय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ रूद्र मूर्तय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ वायुपुत्राय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अग्निगर्भाय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ रामदूताय कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ पंचमुख हनुमते करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

पुनः- ॐ अंजनी सुताय हृदयाय नमः। ॐ रूद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा। ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट्। ॐ अग्नि गर्भाय कवचाय हुं। ॐ रामदुताय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ पंचमुखहनुमतेऽस्त्राय फट्।

ध्यानम्-

वन्दे वानरनारसिंह - खगराट् क्रोडाश्ववक्त्रान्वितं
दिव्यालंकरणं त्रिपंचनयनं देदीप्यमानं रूचा ।

हस्ताब्जैरसिरखेटपुस्तक सुधाकुंभांकुशाद्रीन्हलम् ।
खट्वाङ्गं फणिभूरूहं दशभुजं सर्वारिवीरापहम् ॥

विनियोगः –ॐ रामदूतायञ्जनेयाय वायुपुत्राय महाबलपराक्रमाय सीतादुःखनिवारणाय लंकादहनकारणाय, महाबलप्रचण्डाय फाल्गुनसखाय कोलाहल सकलब्रह्माण्ड विश्वरूपाय सप्तसमुद्र नीरालंघनाय पिङ्गल नयनाया ऽमित विक्रमाय सूर्यबिम्बफलसेवनाय दुष्टनिबर्हणाय दृष्टिनिरालंकृताय संजीवनी संजीविताङ्गद लक्ष्मण-महाकपिसैन्यप्राणदाय दशकण्ठविध्वंसनाय रामेष्टाय फाल्गुनमहासखाय सीतासहित रामवरप्रदाय षट् प्रयोगागम पंचमुखवीरहनुमन्मंत्र जपे विनियोगः ।

ॐ हरिमर्कटमर्कटाय वँ वँ वँ वँ वँ वौषट् स्वाहा ॥१॥ ॐ हरिमर्कट मर्कटाय फँ फँ फँ फँ फँ फट् स्वाहा ॥२॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय खें खें खें खें मारणाय स्वाहा ॥३॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय लुँ लुँ लुँ लुँ लुँ आकर्षित सकल संपतकराय स्वाहा ॥४॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय धँ धँ धँ धँ धँ शत्रुस्तंभनाय स्वाहा ॥५॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय ठँ ठँ ठँ ठँ ठँ कूर्ममूर्तये पंचमुख वीरहनुमते परयंत्र परतंत्रोच्चाटनाय स्वाहा ॥६॥ ॐ कं खं गं घं चं छं जं झं जं टं ठं डं ढं नं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं स्वाहा ॥७॥ ॐ पूर्वकपिमुखाय पंचमुखहनुमते ठं ठं ठं ठं ठं सकल शत्रु संहारणाय स्वाहा ॥८॥ ॐ दक्षिणमुखाय पंचहनुमते करालवदनाय नरसिंहाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं हः सकलभूतप्रेतदमनाय स्वाहा ॥९॥ ॐ पश्चिममुखाय गरूडाननाय पंचमुखहनुमते मँ मँ मँ मँ मँ सकल विष हराय स्वाहा ॥१०॥ ॐ उत्तरमुखायादिवराहाय लँ लँ लँ लँ लँ नृसिंहाय नीलकण्ठमूर्तये पंचमुख हनुमते स्वाहा ॥११॥ॐ उर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय रूँ रूँ रूँ रूँ रूँ रूद्रमूर्तये सकलप्रयोजन निर्वाहकाय स्वाहा ॥११॥ ॐ अंजनीसुताय वायुपुत्राय महाबलाय सीताशोकनिवारणाय श्रीरामचन्द्र कृपा पादुकाय महावीर्य प्रमथनाथ ब्रह्माण्डनाथाय कामदाय पंचवीर हनुमते स्वाहा ॥१२॥

॥ फलश्रुति ॥

कवचं तु पठित्वेदं महाकवचं पठेन्नरः ।
एकवारं जपेत्स्त्रोत्रं सर्वशत्रु निवारणम् ॥१॥
द्विवारं तु पठेन्नित्यं पुत्रपौत्र प्रवर्धनम् ।
त्रिवारं च पठेन्नित्यं सर्वसंपत्करं शुभम् ॥२॥

चतुर्वारं पठेन्नित्यं च सर्वरोगनिवारणम् ।
पंचवारं पठेन्नित्यं सर्वलोकवशंकरम् ॥३॥
षडवारं च पठेन्नित्यं सर्वदेववशंकरम् ।
सप्तवारं पठेन्नित्यं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥४॥
अष्टवारं पठेन्नित्यमिष्ट कामार्थ सिद्धिदम् ।
नववारं पठेन्नित्यं राजभोगमवाप्नुयात् ॥५॥
दशवारं पठेन्नित्यं त्रैलोक्यं ज्ञानदर्शनम् ।
रूद्रावृत्ती पठेन्नित्यं सर्वसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥६॥
कवचं स्मरणेनैव महाबलमवाप्नुयात् ॥७॥

एक से अधिक बार पढ़ने के समय में बार बार न्यास व फलश्रुति पढ़ने की आवश्यकता नहीं होती है। प्रारंभ में न्यास ध्यान तथा उत्तरार्धपाठ के साथ फल श्रुति पढते है यही सर्वत्र नियम है।

॥ इति श्री सुदर्शन संहितायां श्रीरामचन्द्र सीता प्रोक्तं श्री पंचमुख हनुमत् कवचं सम्पूर्णं ॥

॥ सप्तमुख हनुमत्कवचम् ॥

विनियोगः - **ॐ अस्य श्री सप्तमुखवीर हनुमत्कवच स्तोत्र मंत्रस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसप्तमुखीकपिः परमात्मा देवता, ह्रां बीजम्, ह्रीं शक्तिः, ह्रूं कीलकं मम सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

अंगन्यास-

ॐ ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः
ॐ ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा
ॐ ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्
ॐ ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुं
ॐ ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ ह्रः	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्

करन्यास की तरह ही हृदयादि न्यास करें।

ध्यानम्-

वन्दे वानर-सिंह-सर्परिपु वाराहाऽश्व-गौ मानुषै-
[illegible] गिरि चक्रं गदां [illegible] ।

खट्वाङ्गंहलमङ्कुशं फणिसुधा कुम्भौ शराब्जाभयान्
शूलं सप्तशिखं दधानममरः सेव्यं कपिं कामदम् ॥

॥ ब्रह्मोवाच ॥

सप्तशीर्ष्णः प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम् ।
जप्त्वा हनुमतो नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१॥
सप्तस्वर्गपतिः पायाच्छिखां मे मारुतात्मजः ।
सप्तमूर्धाशिरोऽव्यान्मे सप्तार्चिर्भालदेशकम् ॥२॥
त्रिः सप्तनेत्रो नेत्रेऽव्यात् सप्तस्वर गतिः श्रुति ।
नासां सप्तपदार्थोऽव्यान्मुखं सप्तमुखोऽवतु ॥३॥
सप्तजिह्वस्तु रसनां रदान् सप्तहयोऽवतु ।
सप्तच्छन्दो हरिः पातु कण्ठं बाहू गिरिस्थितः ॥४॥
करौ चतुर्दशकरो भूधरोऽव्यान्ममाङ्गुलोः ।
सप्तर्षिध्यातो हृदयमुदरं कुक्षि सागरः ॥६॥
सप्तद्वीपपतिश्चित्तं सप्तव्याहृतिरूपवान् ।
कटिं मे सप्तसंस्थार्थ दायकः सक्थिनी मम ॥६॥
सप्तग्रहस्वरूपी मे जानुनी जङ्घयोस्तथा ।
सप्तधान्यप्रियः पादौ सप्तपाताल धारकः ॥७॥
पशून् धनं च धान्यं च लक्ष्मीं लक्ष्मीप्रदोऽवतु ।
दारान् पुत्रांश्च कन्याश्च कुटुम्बं विश्वपालकः ॥८॥
अनुक्तस्थानमपि मे पायाद् वायुसुतःसदा ।
चौरेभ्यो व्यालदंष्ट्रिभ्यः शृङ्गिभ्यो भूतराक्षसात् ॥९॥
दैत्येभ्योऽप्यथ यक्षेभ्यो ब्रह्मराक्षसजाद् भयात् ।
दंष्ट्राकराल वदनो हनुमान् मां सदाऽवतु ॥१०॥
परशस्त्र-मंत्रतंत्र-यंत्राऽग्नि- जलविद्युतः ।
रुद्रांशः शत्रुसंग्रामात् सर्वावस्थासु सर्वभृत् ।
ॐ नमो भगवते सप्तवदनाय आद्यकपिमुखाय वीर हनुमते ।
सर्वशत्रु संहारणाय ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ॐ नमः स्वाहा ॥१२॥
ॐ नमो भगवते सप्तवदनाय द्वितीय नारसिंहास्याय
अत्युग्रतेजोवपुषे भीषणाय भयनाशनाय

हं हं हं हं हं हं हं ॐ नमः स्वाहा ॥१३॥
ॐ नमो भगवते सप्तवदनाय तृतीय
गरुडवक्त्राय वज्रदंष्ट्राय महाबलाय
सर्वरोग विनाशनाय मं मं मं मं मं मं मं ॐ नमः स्वाहा ॥१४॥
ॐ नमो भगवते सप्तवदनाय चतुर्थक्रोडतुण्डाय
सौमित्रि रक्षकायपुत्राद्यभिवृद्धि कराय
लं लं लं लं लं लं लं ॐ नमः स्वाहा ॥१५॥
ॐ नमो भगवते सप्तवदनाय पञ्चमाश्व वदनाय
रुद्रमूर्तये सर्ववशीकरणाय सर्वागम स्वरूपाय
रुं रुं रुं रुं रुं रुं रुं ॐ नमः स्वाहा ॥१६॥
ॐ नमो भगवते सप्तवदनाय षष्ठगोमुखाय
सूर्यरूपाय सर्वरोग हराय मुक्तिदात्रे
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ नमः स्वाहा ॥१७॥

ॐ नमो भगवते सप्तवदनाय सप्तमानुषमुखाय रुद्रावतराय अंजनीसुताय सकलदिग्यशो विस्तारकाय वज्रदेहाय सुग्रीवसाह्यकराय उदधिलङ्घनाय सीताशुद्धिकराय लङ्कादहनाय अनेकराक्षसान्तकराय रामानन्ददायकाय अनेकपर्वतोत्पाटकाय सेतुबन्धकाय कपिसैन्यनायकाय रावणान्तकाय ब्रह्मचर्याश्रमिणे कौपीनब्रह्मसूत्रधारकाय रामहृदयाय सर्वदुष्टग्रह निवारणाय शाकिनीडाकिनी-वेताल ब्रह्मराक्षस-भैरवग्रह-यक्षग्रह-पिशाचग्रह-ब्रह्मग्रह-क्षत्रियग्रह-वैश्यग्रह-शूद्रग्रहान्त्यजग्रह म्लेच्छग्रह -सर्पग्रहोच्चाटकाय मम सर्वकार्य साधकाय सर्वशत्रु संहारकाय सिंहव्याघ्रादि दुष्टसत्वाकर्षकाय ऐकाहिकादि त्रिविध ज्वरच्छेदकाय परयंत्रमंत्रतंत्र-नाशकाय सर्वव्याधि-निकृन्तकाय सर्पादि-सर्वस्थावर जङ्गमविषस्तंभनकराय सर्वराजभय चोरभयाऽग्निभय-प्रशमनाय आध्यात्मिकाऽऽधिदैविक अधिभौतिक तापत्रय निवारणाय सर्वविद्या सर्वसंपत् सर्वपुरुषार्थ दायकाय असाध्यकार्य साधकाय सर्ववरप्रदाय सर्वाऽभीष्टकराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐ नमः स्वाहा ॥१८॥

॥ फलश्रुति ॥

य इदं कवचं नित्यं सप्तास्यस्य हनूमतः ।
त्रिसंध्यं जपते नित्यं सर्वशत्रु विनाशनम् ॥१९॥

पुत्रपौत्रप्रदं सर्वं संपद-राज्यप्रदं परम् ।
सर्वरोगहरं चाऽऽयुः कीर्तिदं पुण्यवर्धनम् ॥२०॥
राजानं स वशं नीत्वा त्रैलोक्य विजयीभवेत् ।
इदं हि परमं गोप्यं देयं भक्तियुताय च ॥२१॥
न देयं भक्तिहीनाय दत्त्वा स रिरयं व्रजेत् ॥२२॥
नामानि सर्वाण्यपवर्गदानि रूपाणि विश्वानि च यस्य सन्ति ।
कर्माणि देवैरपि दुर्घटानि तं मारुतिं सप्तमुखं प्रपद्ये ॥२३॥

॥ इति अथर्वणरहस्योक्त सप्तमुखहनुमत् कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथैकादशमुख हनुमत्कवचम् ॥

॥ लोपामुद्रोवाच ॥

कुम्भोद्भव दयासिंधो श्रुतं हनुमतः परम् ।
यंत्र मंत्रादिकं सर्वं त्वन्मुखोदीरितं मया ॥१॥
दयां कुरु मयि प्राणनाथ वेदितुमुत्सहे ।
कवचं वायुपुत्रस्य एकादशमुखात्मनः ॥२॥
इत्येवं वचनं श्रुत्वा प्रियायाः प्रश्रयान्वितम् ।
वक्तुं प्रचक्रमे तत्र लोपामुद्रापतिः प्रभुः ॥३॥

॥ अगस्त्य उवाच ॥

नमस्कृत्वा रामदूतं हनुमंतं महामतिम् ।
ब्रह्मप्रोक्तं तु कवचं शृणु सुन्दरि सादरम् ॥४॥
सनन्दनाय सुमहत् चतुराननभाषितम् ।
कवचं कामदं दिव्यं सर्वरक्षोनिबर्हणम् ॥५॥
सर्वसंपत्प्रदं पुण्यं मर्त्यानां मधुर स्वरे ॥६॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीमदेकादशमुख हनुमत्कवचस्य सनन्दन ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। प्रसन्नात्मा हनुमान्देवता। वायुपुत्रेति बीजम्। मुख्यः प्राण शक्तिः। सर्वकामार्थ सिद्ध्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ स्फ्रें बीजं शक्ति धृक् पातु शिरो मे पवनात्मजः ।
क्रौं बीजात्मनयनयोः पातु मां वानरेश्वरः ॥१॥

क्षं बीजरूपी कर्णौ में सीताशोक विनाशनः ।
ग्लौं बीजवाच्यो नासां लक्ष्मणप्राण दायकः ॥२॥
वं बीजार्थश्च कण्ठं में पातु चाक्षय्यकारकः ।
ऐं बीजावाच्यो हृदयं पातु मे कपिनायकः ॥३॥
वं बीज कीर्तितः पातु बाहू मे चाञ्जनीसुतः ।
ह्रां बीजो राक्षसेन्द्रस्य दर्पहा पातु चोदरम् ॥४॥
ह्सौं बीजमयो मध्यं पातु लंकाविदाहकः ।
ह्रीं बीजधरो मां पातु गुह्यं देवेन्द्र वन्दितः ॥५॥
रं बीजात्मा सदा पातु चोरुवारिलंघनः ।
सुग्रीव सचिवः पातु जानुनी मे मनोजवः ॥६॥
पादौ पादतले पातु द्रोणाचलधरो हरिः ।
आपादमस्तकं पातु रामदूतो महाबलः ॥७॥
पूर्वे वानरवक्त्रो मामाग्नेयां क्षत्रियान्तकृत् ।
दक्षिणे नारसिंहस्तु नैऋत्यां गणनायकः ॥८॥
वारुण्यां दिशि मामव्यात्खगवक्त्रो हरीश्वरः ।
वायव्यां भैरवमुखः कौबेर्य्यां पातु मां सदा ॥९॥
क्रोडास्यः पातु मां नित्यमीशान्यां रुद्ररूपधृक् ।
उर्ध्वं हयाननः पातु त्वधः शेषमुखस्तथा ॥१०॥
रामास्यः पातु सर्वत्र सौम्यरुपी महाभुजः ।
इत्येवं रामदूतस्य कवचं प्रपठेत्सदा ॥११॥

॥ फलश्रुति ॥

एकादश मुखस्यैतद् गोप्यं वै कीर्तितं मया ।
रक्षोघ्नं कामदं सौम्यं सर्वसंपद्विधायकम् ॥१२॥
पुत्रदं धनदं चोग्रशत्रु संघविमर्द्दनम् ।
स्वर्गापवर्गदं दिव्यं चिंतितार्थ प्रदं शुभम् ॥१३॥
एतत्कवचमज्ञात्वा मंत्रसिद्धिर्न जायते ।
चत्वारिंशत्सहस्त्राणि पठेच्छुद्धात्मना नरः ॥१४॥
एकवारं पठेन्नित्यं कवचं सिद्धिदं पुमान् ।
द्विवारं वा त्रिवारं वा पठन्नायुष्यमाप्नुयात् ॥१५॥

क्रमादेकादशादेवमावर्तन जपात्सुधी ।
वर्षान्ते दर्शनं साक्षाल्लभते नात्र संशयः ॥१६॥
यं यं चितयते चार्थं तं तं प्राप्नोति पुरुषः ।
ब्रह्मोदीरितमेतद्धि तवाग्रे कथितं महत् ॥१७॥
इत्येव मुक्त्वा वचनं महर्षिस्तूर्ष्णीं बभूवेन्दुमुखीं निरीक्ष्य ।
संहृष्टचेता हि तदा तदीयौ पादौ ननामातिमुदा स्वभर्तुः ॥१८॥

॥ इति अगस्त्यसार संहितायामेकादशमुख हनुमत्कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ हनुमत्सहस्रनामस्तोत्रम् ॥

॥ ऋषय ऊचुः॥

ऋषे लोहगिरिं प्राप्तः सीताविरहकातरः ।
भगवान् किं व्यधाद्रामस्तत्सर्वं ब्रूहि सत्वरम् ॥१॥

॥ वाल्मीकिरुवाच ॥

मायामानुषदेहोऽयं ददर्शाग्रे कपीश्वरम् ।
हनुमन्तं जगत्स्वामी बालार्कसमतेजसम् ॥२॥
स सत्वरं समागम्य साष्टांग प्रणिपत्य च ।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा हनुमान् राममब्रवीत् ॥३॥

॥ श्रीहनुमानुवाच ॥

धन्योऽस्मि कृतकृत्योऽस्मि दृष्ट्वा त्वत्पादपंकजम् ।
योगिनामप्यगम्यं च संसारभयनाशनम् ॥४॥
पुरुषोत्तमदेवेश कर्तव्यं तन्निवेद्यताम् ।

॥ श्रीराम उवाचः॥

जनस्थानं कपिश्रेष्ठकोऽप्यागत्य विदेहजाम् ॥५॥
हृतवान्विप्रसंवेषो मारीचानुगते मयि ।
गवेष्यः साम्प्रतं वीर जानकीहरणे परः ॥६॥
त्वयाऽगम्यो न को देशस्त्वं च ज्ञानवतां वरः ।
सप्तकोटिमहामंत्रमंत्रितावयवः प्रभुः ॥७॥

॥ ऋषय ऊचुः॥

को मंत्रः किं च तद्ध्यान तन्नो ब्रूहि यथार्थतः ।
तथा सुधारसं पीत्वा न तृप्यामः परंतप ॥८॥

॥ वाल्मीकिरुवाच॥

मंत्रं हनुमतो विद्धि भुक्तिमुक्ति प्रदायकम् ।
महारिष्टमहापापमहादुःख निवारणम् ॥९॥

ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय लंकाविध्वंसनायाञ्जनीगर्भ संभूताय शाकिनीडाकिनी ध्वंसनायकिलिकिलिबुबुकारेण विभीषणायहनुमद्देवाय'' ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा॥''

अन्यं हनुमतो मंत्रं सहस्त्रनामसंज्ञकम् ।
जानंति ऋषयः सर्वे महादुरितनाशनम् ॥१०॥
अस्य संस्मरणात्सीता लब्धा राज्यमकण्टकम् ।
विभीषणाय च ददावात्मानं लब्धवान्मया ॥११॥

॥ ऋषय ऊचुः॥

सहस्त्रनामसन्मंत्रं दुःखाघौघनिवारणम् ।
वाल्मीके ब्रूहि नस्तूर्णं शुश्रूषामः कथां पराम् ॥१२॥

॥ वाल्मीकिरुवाच॥

शृण्वंतु ऋषयः सर्वे सहस्त्रनामकं स्तवम् ।
स्तवानामुत्तमं दिव्यं सदर्थस्य प्रदायकम् ॥१३॥

॥ अथ पाठः॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्री हनुमत्सहस्त्रनामस्तोत्रमंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीहनुमन्महारुद्रो देवता। ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां बीजम्। श्रीं इति शक्तिः। किलिकिलिबुबुकारेणेति कीलकम्। लंकाविध्वंसनेति कवचम्। मम सर्वोपद्रव शांत्यर्थे सर्वकर्मसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - श्रीरामचन्द्र ऋषये नमः शिरसि॥१॥ अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे॥२॥ श्रीहनूमन्महारुद्र देवतायै नमः हृदि॥३॥ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां बीजाय नमः गुह्ये॥४॥ श्रीं इति शक्तये नमः पादयोः॥५॥ किलिकिलि बुबुकारेणेति कीलकाय नमः नाभौ॥६॥ लंकाविध्वंसनेति कवचाय नमः बाहुद्वये॥७॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे॥८॥ इति ऋष्यादि न्यासः॥

करन्यासः - ॐ ऐं हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ लंकाविध्वंसनाय तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ॐ अञ्जनीगर्भसम्भूताय मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ शाकिनीडाकिनीविध्वंसनाय अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ किलिकिलि बुबुकारेण विभीषणाय हनुमद्देवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडंगन्यासः - ॐ हनुमते हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ लंकाविध्वंसनाय शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ अञ्जनीगर्भसम्भूताय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ शाकिनीडाकिनीविध्वंसनाय कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ किलिकिलिबुबुकारेण विभीषणाय हनुमद्देवाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादि षडंगन्यासः॥

प्रतप्तस्वर्णवर्णाभं संरक्तारुणलोचनम्।
सुग्रीवादियुतं ध्यायेत्पीताम्बरसमावृतम् ॥१४॥
गोष्पदीकृतवारीशं पुच्छमस्तकमीश्वरम्।
ज्ञानमुद्रां च बिभ्राणं सर्वालंकारभूषितम् ॥१५॥

॥ श्रीरामचन्द्र उवाच॥

ॐ हनुमान् श्रीपदोवायुपुत्रो रुद्रोऽनघोऽजरः।
अमृत्युर्वीरवीरश्चग्रामवासो जनाश्रयः ॥१६॥
धनदो निर्गुणः कायो वीरो निधिपतिर्मुनिः।
पिंगाक्षो वरदो वाग्मी सीताशोक विनाशनः ॥१७॥
शिवः सर्वः परोऽव्यक्तो व्यक्ताव्यक्तो रसाधरः।
पिंगरोमः पिंगकेशः श्रुतिगम्यः सनातनः ॥१८॥
अनादिर्भगवान् देवो विश्वहेतुर्निरामयः।
आरोग्यकर्ताविश्वेशो विश्वनाथो हरीश्वरः ॥१९॥
भर्गो रामो रामभक्तः कल्याणप्रकृतिः स्थिरः।
विश्वंभरो विश्वमूर्तिर्विश्वाकारोऽथ विश्वदः ॥२०॥
विश्वात्मा विश्वसेव्योऽथ विश्वो विश्वहरो रविः।
विश्वचेष्टो विश्वगम्यो विश्वध्येयः कलाधरः ॥२१॥
प्लवंगमः कपिश्रेष्ठो ज्येष्ठो विद्यावनेचरः।
बालो वृद्धो युवा तत्वं तत्वगम्य उदग्रजः ॥२२॥

अञ्जनीसूनुरव्यग्रो ग्रामख्यातो धराधरः ।
भूर्भुवः स्वर्महर्लोको जनलोकस्तपोऽव्ययः ॥२३॥
सत्यमोंकारगम्यश्च प्रणवो व्यापकोऽमलः ।
शिवधर्म्मप्रतिष्ठाता रामेष्टः फाल्गुनप्रियः ॥२४॥
गोष्पदीकृतवारीशः पूर्णकामो धरापतिः ।
रक्षोघ्नः पुण्डरिकाक्षः शरणागतवत्सलः ॥२५॥
जानकीप्राणदाता च रक्षः प्राणापहारकः ।
पूर्णः सत्यः पीतवासा दिवाकरसमप्रभः ॥२६॥
देवोद्यानविहारी च देवताभय भंजनः ।
भक्तोदयो भक्तलब्धो भक्तपालनतत्परः ॥२७॥
द्रोणहर्ता शक्तिनेता शक्तिराक्षसमारकः ।
रक्षोघ्नो रामदूतश्च शाकिनीजीवहारकः ॥२८॥
बुबुकारहनारातिर्गर्व पर्वतमर्दनः ।
हेतुस्त्वहेतुः प्रांशुश्च विश्वभर्ता जगद्गुरुः ॥२९॥
जगन्नेता जगन्नाथो जगदीशो जनेश्वरः ।
जगद्धितो हरिः श्रीशो गरुडस्मय भंजनः ॥३०॥
पार्थध्वजो वायुपुत्रोऽमितपुच्छोऽमितप्रभः ।
ब्रह्मपुच्छः परं ब्रह्म पुच्छां रामेष्ट एव च ॥३१॥
सुग्रीवादियुतोज्ञानी वानरो वानरेश्वरः ।
कल्पस्थायी चिरंजीवी प्रसन्नश्च सदाशिवः ॥३२॥
सन्नतः सद्गतिर्भक्तिमुक्तिदः कीर्तिनायकः ।
कीर्तिः कीर्तिप्रदश्चैव समुद्रः श्रीपदः शिवः ॥३३॥
भक्तोदयो भक्तगम्यो भक्तभाग्यप्रदायकः ।
उदधिक्रमणो देवः संसारभयनाशकः ॥३४॥
बलिबंधनकृद्विश्वजेता विश्वप्रतिष्ठितः ।
लंकारि कालपुरुषो लंकेशगृहभंजनः ॥३५॥
भूतावासो वासुदेवो वसुस्त्रिभुवनेश्वरः ।
श्रीरामरुपः कृष्णस्तु लंकाप्रासादभंजकः ॥३६॥

कृष्णा कृष्णस्तुतः शान्तः शान्तिदो विश्वपावनः ।
विश्वभोक्ताऽथ मारघ्नो ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ॥३७॥
ऊर्द्धगोलांगुली माली लांगूलाहतराक्षसः ।
समीरतनुजो वीरो वीरमारो जयप्रदः ॥३८॥
जगन्मंगलदः पुण्यः पुण्यश्रवणकीर्तनः ।
पुण्यकीर्तिः पुण्यगतिर्जगत्पावनपावनः ॥३९॥
देवेशो जितमारोऽथ रामभक्ति विधायकः ।
ध्याता ध्येयो भगः साक्षी चेता चैतन्यविग्रहः ॥४०॥
ज्ञानदः प्राणदः प्राणो जगत्प्राणसमीरणः ।
विभीषण प्रियः शूरः पिप्पलायनसिद्धिदः ॥४१॥
सिद्धिः सिद्धाश्रयः कालः कालभक्षकभञ्जनः ।
लंकेशनिधन स्थायी लंकादाहक ईश्वरः ॥४२॥
चन्द्रसूर्याग्निनेत्रश्च कालाग्निः प्रलयान्तकः ।
कपिलः कपिशः पुण्यराशिर्द्वादशराशिगः ॥४३॥
सर्वाश्रयोऽप्रमेयात्मा रेवत्यादिनिवारकः ।
लक्ष्मणप्राणदाता च सीताजीवनहेतुकः ॥४४॥
रामध्येयो हृषीकेशो विष्णुभक्तो जटी बलिः ।
देवारिदर्पहा होता धाता कर्ता जगत्प्रभुः ॥४५॥
नगरग्रामपालश्च शुद्धो बुद्धो निरंतरः ।
निरंजनो निर्विकल्पो गुणातीतो भयंकरः ॥४६॥
हनुमांश्च दुराराध्यस्तपः साध्यो महेश्वरः ।
जानकीघनशोकोत्थतापहर्ता परात्परः ॥४७॥
वाङ्मयः सदसद्रूपकारणं प्रकृतेः परः ।
भाग्यदो निर्मलो नेता पुच्छलंकाविदाहकः ॥४८॥
पुच्छबद्धयातुधानो यातुधानरिपुप्रियः ।
छायापहारी भूतेशो लोकेशः सद्गतिप्रदः ॥४९॥
ल्पवंगमेश्वरः क्रोधः क्रोधसंरक्तलोचनः ।
सौम्यो गुरुः काव्यकर्ता भक्तानां च वरप्रदः ॥५०॥

भक्तानुकम्पी विश्वेशः पुरुहूतः पुरन्दरः ।
क्रोधहर्ता तापहर्ता भक्ताभयवरप्रदः ॥५१॥
अग्निर्विभावसुर्भानुर्यमो निर्ऋतिरेव च ।
वरुणो वायुगतिमान् वायुः कुबेर ईश्वरः ॥५२॥
रविश्चन्द्रः कुजः सौम्यो गुरुः काव्यः शनैश्चरः ।
राहुः केतुर्मरुद्धाता धर्ता हर्ता समीरजः ॥५३॥
मशकीकृतदेवारिदेत्यारिर्मधुसूदनः ।
कामः कपिः कामपालः कपिलो विश्वजीवनः ॥५४॥
भागीरथीपदाम्भोजः सेतुबन्धविशारदः ।
स्वाहा स्वधा हविः कव्यहव्यवाह प्रकाशकः ॥५५॥
स्वप्रकाशो महावीरो लघुरमितविक्रमः ।
भंजनो दानगतिमान् सद्गतिः पुरुषोत्तमः ॥५६॥
जगदात्मा जगद्योनिर्जगदंतो ह्यनंतकः ।
विपाप्मा निष्कलंकोऽथ महात्मा हृदयंकृतिः ॥५७॥
खं वायुः पृथिवी रामो वह्निर्दिक्पाल एव च ।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रहर्ता च पल्वलीकृतसागरः ॥५८॥
हिरणमयः पुराणश्च खेचरो भूचरो मनुः ।
हिरण्यगर्भः सूत्रात्मा राजराजो निशांपतिः ॥५९॥
वेदान्तवेद्य उद्गीथो वेदवेदांगपारगः ।
प्रतिग्रामस्थितिः सद्यः स्फूर्तिदातागुणाकरः ॥६०॥
नक्षत्रमाली भूतात्मा सुरभिः कल्पपादपः ।
चिंतामणिर्गुणनिधिः प्रजाधारो ह्यनुत्तमः ॥६१॥
पुण्यश्लोकः पुरारातिर्ज्योतिष्मान् शर्वरीपतिः ।
किलिकिलिरावसंत्रस्त भूतप्रेतपिशाचकः ॥६२॥
ऋणत्रयहरः सूक्ष्मः स्थूलः सर्वगतिः पुमान् ।
अपस्मारहरः स्मर्ता श्रुतिर्गाथास्मृतिर्मनुः ॥६३॥
स्वर्गद्वारप्रजाद्वार मोक्षद्वारपतीश्वरः ।
नादरुपः परं ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मपुरातनः ॥६४॥

एकोऽनेको जनः शुक्लः स्वयंज्योतिरनाकुलः ।
ज्योतिर्ज्योतिरनादिश्च सात्त्विको राजसस्तमः ॥६५॥
तमोहर्ता निरालम्बो निराहारो गुणाकरः ।
गुणाश्रयो गुणमयो बृहत्कर्मा बृहद्यशाः ॥६६॥
बृहद्धनुर्बृहत्पादो बृहन्मूधा बृहत्स्वनः ।
बृहत्कायो बृहन्नासो बृहद्बाहुर्बृहत्तनुः ॥६७॥
बृहद्यत्नो बृहत्कामो बृहत्पुच्छो बृहत्करः ।
बृहद्गतिर्बृहत्सेव्यो बृहल्लोकफलप्रदः ॥६८॥
बृहच्छक्तिर्बृहद्वाञ्छाफलदो बृहदीश्वरः ।
बृहल्लोकनुतो द्रष्टाविद्यादाता जगद्गुरुः ॥६९॥
देवाचार्य्यः सत्यवादी ब्रह्मवादी कलाधरः ।
सप्तपातालगामी च मलयाचलसंश्रयः ॥७०॥
उत्तराशास्थितः श्रीदो दिव्यौषधिवशः खगः ।
शाखामृगः कपीन्द्रोऽथ पुराणः प्राणचंचुरः ॥७१॥
चतुरो ब्राह्मणो योगी योगगम्यः परावरः ।
अनादिनिधिदो व्यासो वैकुण्ठः पृथिवीपतिः ॥७२॥
अपराजितो जितारातिः सदानन्दो गिरीशजः ।
गोपाली गोपतिर्योद्धा कलिकालपरात्परः ॥७३॥
मनोवेगी सदायोगी संसारभयनाशनः ।
तत्त्वदाताऽथ तत्त्वज्ञस्तत्त्वं तत्त्वप्रकाशकः ॥७४॥
शुद्धो बुद्धो नित्ययुक्तो भक्तराजो जगद्रथः ।
प्रलयोऽमितमायश्च मायातीतो विमत्सरः ॥७५॥
मायाभर्जितरक्षाश्च मायानिर्मितविष्टपः ।
मायाश्रयश्च निर्लेपो मायानिर्वर्तकः सुखम् ॥७६॥
सुखी सुखप्रदो नागो महेशकृतसंस्तवः ।
महेश्वरः सत्यसंधः शरभः कलिपावनः ॥७७॥
रसो रसज्ञः संमानो रूपं चक्षुः श्रुतीरवः ।
घ्राणो गंधः स्पर्शनं च स्पर्शोऽहंकारमानगः ॥७८॥

नेतिनेतीतिगम्यश्च वैकुण्ठभजनप्रियः ।
गिरीशो गिरिजाकांतो दुर्वासाः कविरंगिराः ॥७९॥
भृगुर्वशिष्ठश्च्यवनो नारदस्तुम्बरुर्बलः ।
विश्वक्षेत्रो विश्वबीजो विश्वनेत्रश्च विश्वपः ॥८०॥
याजको यजमानश्च पावकः पितरस्तथा ।
श्रद्धा बुद्धिः क्षमा तंत्रो मंत्रो मंत्रपिता सुरः ॥८१॥
राजेन्द्रो भूपती रुण्डमालीसंसारसारथिः ।
नित्य सम्पूर्णकामश्च भक्तकामधुगुत्तमः ॥८२॥
गणपः केशवो भ्राता पिता माताऽथ मारुतिः ।
सहस्त्रमूर्द्धा सहस्त्रास्यः सहस्त्राक्ष सहस्त्रपात् ॥८३॥
कामजित्कामदहनः कामी कामफलप्रदः ।
मुद्रापहारी रक्षोघ्नः क्षितिभारहरो बलः ॥८४॥
नखदंष्ट्रायुधो विष्णुर्भक्ताभयवरप्रदः ।
दर्पहा दर्पदो दंष्ट्राशतमूर्तिरमूर्तिमान् ॥८५॥
महानिधिर्महाभागो महाभर्गो महर्द्धिदः ।
महाकारो महायोगी महातेजा महाद्युतिः ॥८६॥
महाकर्मा महानादो महामन्त्रो महामतिः ।
महागमो महोदारो महादेवात्मको विभुः ॥८७॥
रुद्रकर्मा कृतकर्मा रत्ननाभः कृतागमः ।
अम्भोधिलंघनः सिंहः सत्यधर्मप्रमोदनः ॥८८॥
जितामित्रो जयः सोमो विजयो वायुवाहनम् ।
जीवो धाता सहस्त्रांशुर्मुकुन्दो भूरिदक्षिणः ॥८९॥
सिद्धार्थः सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः सिद्धिहेतुकः ।
सप्तपातालचरणः सप्तर्षिगणवंदितः ॥९०॥
सप्ताब्धिलंघनो वीरः सप्तद्विपोरुमण्डलः ।
सप्तांगराज्यसुखदः सप्तमातृनिषेविनः ॥९१॥
सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तहोत्रस्वराश्रयः ।
सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तच्छन्दः सप्तजनाश्रयः ॥९२॥

सप्तसामोपगीतश्च सप्तपातालसंश्रयः ।
मेघादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः ॥९३॥
सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः ।
प्रतिवादिमुखस्तंभो रुष्टचित्तप्रसादनः ॥९४॥
पराभिचारशमनो दुःखहा बन्धमोक्षदः ।
नवद्वारपुराधारो नवद्वारनिकेतनः ॥९५॥
नरनारायणस्तुल्यो नवनाथमहेश्वरः ।
मेखली कवची खड्गी भ्राजिष्णुर्जिष्णुसारथिः ॥९६॥
बहुयोजनविस्तीर्णपुच्छः पुच्छहतासुरः ।
दुष्टग्रहनिहंता च पिशाचग्रहघातकः ॥९७॥
बालग्रहविनाशी च धर्मनेता कृपाकरः ।
उग्रकृत्य उग्रवेग उग्रनेत्रः शतक्रतुः ॥९८॥
शतमन्युस्तुतः स्तुत्यः स्तुतिः स्तोता महाबलः ।
समग्रगुणशाली च व्यग्रो रक्षोविनाशनः ॥९९॥
रक्षोऽग्निदाहो ब्रह्मेशः श्रीधरो भक्तवत्सलः ।
मेघनादो मेघरुपो मेघवृष्टिनिवारकः ॥१००॥
मेघजीवनहेतुश्च मेघश्यामः परात्मकः ।
समीरतनयो योद्धा तत्त्वविद्याविशारदः ॥१०१॥
अमोघो मोघदृष्टिश्च दिष्टदोऽरिष्टनाशनः ।
अर्थोऽनर्थापहारी च समर्थो रामसेवकः ॥१०२॥
अर्थिवन्द्यो सराराति: पुण्डरीकाक्ष आत्मभूः ।
संकर्षणो विशुद्धात्मा विद्याराशिः सुरेश्वरः ॥१०३॥
अचलोद्धारको नित्यः सेतुकृद्रामसारथिः ।
आनन्दः परमानन्दो मत्स्यः कूर्मो निधीशयः ॥१०४॥
वाराहो नारसिंहश्च वामनो जमदग्निजः ।
रामः कृष्णः शिवो वृद्धः कल्की रामश्च मोहनः ॥१०५॥
नन्दी भृंगी च चण्डी च गणेशो गणसेवितः ।
कर्माध्यक्षः सुरारामो विश्रामो जगतीपतिः ॥१०६॥

जगन्नाथः कपीशश्च सर्वावासः सदाश्रयः ।
सुग्रीवादिस्तुतो दांतः सर्वकर्मा प्लवंगमः ॥१०७॥
नखदारितरक्षाश्च नखयुद्धविशारदः ।
कुशलः सुधनः शेषो वासुकिस्तक्षकस्तथा ॥१०८॥
स्वर्णवर्णो बलाढ्यश्च पुरजेताऽघनाशनः ।
कैवल्यदीपः कैवल्यो गरुडः पन्नगो गुरुः ॥१०९॥
क्लिक्लिरावहतारातिर्गर्व पर्वतभेदनः ।
वज्रांगो वज्रवज्रश्च भक्तवज्रनिवारकः ॥११०॥
नखायुधो मणिग्रीवो ज्वालामाली च भास्करः ।
प्रौढप्रतापस्तपनो भक्ततापनिवारकः ॥१११॥
शरणं जीवनं भोक्ता नानाचेष्टोऽथ चंचलः ।
स्वस्थस्त्वस्वास्थ्यहा दुःखशातनः पवनात्मजः ॥११२॥
पावनः पवनः कांतो भक्तागः सहनो बली ।
मेघनादरिपुर्मेघनाद संहतराक्षसः ॥११३॥
क्षरोऽक्षरो विनीतात्मा वानरेशः सतां गतिः ।
श्रीकण्ठः शितिकण्ठश्च सहायोऽसहनायकः ॥११४॥
अस्थूलस्त्वनणुर्भर्गो दिव्यः संसृतिनाशनः ।
अध्यात्मविद्यासारश्चाप्यध्यात्मकुशलः सुधीः ॥११५॥
अकल्मषः सत्यहेतुः सत्यदः सत्यगोचरः ।
सत्यगर्भः सत्यरुपः सत्यः सत्यपराक्रमः ॥११६॥
अंजनीप्राणलिंगश्च वायुवंशोद्वहः श्रुतिः ।
भद्ररूपो रुद्ररूपः सुरुपश्चित्ररूपधृक् ॥११७॥
मैनाकवंदितः सूक्ष्मदशनो विजयोऽजयः ।
क्रांतदिङ्मण्डलो रुद्रः प्रकटीकृतविक्रमः ॥११८॥
कंबुकण्ठः प्रसन्नात्मा ह्रस्वनासो वृक्रोदरः ।
लंबोष्ठः कुण्डली चित्रमाली योगविदां वरः ॥११९॥
विपश्चित्कविरानन्द - विग्रहोऽनल्पशासनः ।
फल्गुनीसूनुरव्यग्रो योगात्मा योगतत्परः ॥१२०॥

योगविद्योगकर्ता च योगयोनिर्दिगम्बरः ।
अकारादिक्षकारांतवर्ण - निर्मितविग्रहः ॥१२१॥
उलूखलमुखः सिद्धसंस्तुतः प्रमथेश्वरः ।
श्लिष्टजंघः श्लिष्टजानुः श्लिष्टपाणिः शिखाधरः ॥१२२॥
सुशर्माऽमितशर्मा च नारायणपरायणः ।
जिष्णुर्भविष्णू रोचिष्णुर्ग्रसिष्णुः स्थाणुरेव च ॥१२३॥
हरिरुद्रानुकृद्दक्षकंपनो भूमिकंपनः ।
गुणप्रवाहः सूत्रात्मा वीतरागस्तुतिप्रियः ॥१२४॥
नागकन्याभयध्वंसी ऋतुपर्णः व पालभृत् ।
अनुकूलोऽक्षयोऽपायोऽनपायो वेदपारगः ॥१२५॥
अक्षरः पुरुषो लोकनाथ ऋक्षप्रभुर्दृढः ।
अष्टांगयोगफलभूः सत्यसंघः पुरुष्टुतः ॥१२६॥
श्मशानस्थाननिलयः प्रेतविद्रावणक्षमः ।
पंचाक्षरपरः पंचमातृको रंजनध्वजः ॥१२७॥
योगिनीवृन्दवंद्यश्रीः शत्रुघ्नोऽनंतविक्रमः ।
ब्रह्मचारीन्द्रियरिपुर्धृतदण्डो दशात्मकः ॥१२८॥
अप्रपंचः सदाकारः शूरसेनो विदारकः ।
वृद्धः प्रमोद आनन्दः सप्तजिह्वपतिर्धरः ॥१२९॥
नवद्वारपुराधारः प्रत्यग्रः सामगायकः ।
षट्चक्रधामा स्वर्लोकभयहृन्मानदोऽमद्रः ॥१३०॥
सर्ववश्यकरः शक्तिरनंतोऽनंतमंगलः ।
अष्टमूर्तिर्नयोपेतो विरूपः सुरसुन्दरः ॥१३१॥
धूमकेतुर्महाकेतुः सत्यकेतुर्महारथः ।
नन्दिप्रियः स्वतन्त्रश्च मेखली डमरु प्रिय ॥१३२॥
लोहांगः सर्वविद्धन्वी खण्डलः शर्व ईश्वरः ।
फलभुक् फलहस्तश्च सर्वकर्मफलप्रदः ॥१३३॥
धर्माध्यक्षो धर्मफलो धर्मो धर्मप्रदोऽर्थदः ।
पंचविंशतितत्त्वज्ञस्तारको ब्रह्मतत्परः ॥१३४॥

त्रिमार्गवसतिर्भीमः सर्वदुष्टनिबर्हणः ।
ऊर्जस्वान्निष्कलः शूली मौलिर्गर्जन्निशाचरः ॥१३५॥
रक्तांबरधरो रक्तोरक्तमालाविभूषणः ।
वनमाली शुभांगश्च श्वेतः श्वेतांबरो युवा ॥१३६॥
जयोऽजयपरीवारः सहस्त्रवदनः कपिः ।
शाकिनीडाकिनीयक्ष रक्षोभूतप्रभंजकः ॥१३७॥
सद्योजातः कामगतिर्ज्ञानमूर्तिर्यशस्करः ।
शंभुतेजाः सार्वभौमो विष्णुभक्तः प्लवंगमः ॥१३८॥
चतुर्नवतिमंत्रज्ञः पौलस्त्यबलदर्पहा ।
सर्वलक्ष्मीप्रदः श्रीमानंगदप्रिय ईतिनुत् ॥१३९॥
स्मृतिबीजं सुरेशानः संसारभयनाशनः ।
उत्तमः श्रीपरीवारः श्रितरुद्रश्च कामधुक् ॥१४०॥

॥ वाल्मीकिरुवाच ॥

इति नाम्नां सहस्त्रेण स्तुतो रामेण वायुभूः ।
उवाच तं प्रसन्नात्मा संधायात्मानमव्ययम् ॥१४१॥

॥ श्रीहनुमानुवाच ॥

ध्यानास्पदमिदं ब्रह्म मत्पुरः समुपस्थितम् ।
स्वामिन्कृपानिधे राम ज्ञातोऽसि कपिना मया ॥१४२॥
त्वद्ध्यानिरता लोकाः किं मां जपसि सादरम् ।
तवागमनहेतुश्च ज्ञातो ह्यत्र मयाऽनघ ॥१४३॥
कर्तव्यं मम किं राम तथा ब्रूहि च राघव ।
इति प्रचोदितो रामः प्रहृष्टात्मेदमब्रवीत् ॥१४४॥

॥ श्रीराम उवाच ॥

दुर्जयः खलु वैदेहीं गृहीत्वा कोऽपि निर्गतः ।
हत्वा तं निर्घृणं वीरमानय त्वं कपीश्वर ॥१४५॥
मम दास्यं कुरु सखे भव विश्वसुखंकरः ।
तथा कृते त्वया वीर मम कार्यं भविष्यति ॥१४६॥
ओमित्याज्ञां तु शिरसा गृहीत्वा स कपीश्वरः ।
विधेयं विधिवत्तत्र चकार शिरसा स्वयम् ॥१४७॥

इदं नाम्नां सहस्रं तु योऽधीते प्रत्यहं नरः ।
दुःखौघो नश्यते तस्य सम्पतिर्वर्धतेऽचिरम् ॥१४८॥
वश्यं चतुर्विधं तस्य भवत्येव न संशयः ।
राजानो राजपुत्राश्च राजकीयाश्च मंत्रिणः ॥१४९॥
अश्वत्थमूले जपतां नास्ति वैरिकृतं भयम् ।
त्रिकालपठनात्तस्य सिद्धिः स्यात्करसंस्थिता ॥१५०॥
ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय प्रत्यहं यः पठेन्नरः ।
ऐहिकामुष्मिकं सोऽपि लभते नात्र संशयः ॥१५१॥
संग्रामे सन्निविष्टानां वैरिविद्रावणं परम् ।
ज्वरापस्मारशमनं गुल्मादीनां निवारणम् ॥१५२॥
साम्राज्यसुखसंपत्तिदायकं जायते नृणाम् ।
स्वर्गं मोक्षं समाप्नोति रामचन्द्रप्रसादतः ॥१५३॥
य इदं पठते नित्यं श्रावयेद्वा समाहितः ।
सर्वान्कामानवाप्नोति वायुपुत्रप्रसादतः ॥१५४॥

॥ इति श्री ब्रह्माण्डपुराणे उत्तरखण्डे श्रीरामकृतं हनुमत्सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ विविधकामना हेतु अनुष्ठान प्रयोगः॥

१. **हनुमान चालीसा के सौ पाठ** - हनुमान चालीसा के सौ पाठ ४१ दिन पर्यन्त नित्य करे। अनुष्ठान घर मन्दिर या पीपल के पेड़ के नीचे करें । समापन के दिन हनुमानजी के चोला चढ़ावे, हनुमान चालीसा व श्रीराम नाम से तिल,गुग्गुलादि से हवन करे, ब्राह्मण को भोजन कराये ५-७ या ११ बच्चों को भोजन करायें।

२. **हनुमान चालीसा का लोम-विलोम पाठ** - पहली चौपाई से ४० तक पढ़े फिर ४०-३९-३८ ३७........२..१ इस तरह पहली चौपाई तक पढ़ने पर एक पाठ हुआ। इस तरह के ५- ११ या २१ पाठ नित्य जब तक कार्य पूरा नहीं हो तब तक करें। शत्रु बाधा आपत्ति विपत्ति निवारण में यह प्रयोग विशेष काम करता है । विलोम पाठ चौपाई की विलोम संख्या से भी कर सकते हैं एवं अन्तिम पंक्ति से प्रथम पंक्ति तक भी कर सकते हैं। हमने दोनों ही क्रम में सफलता देखी है, जैसा सुगम लगे वैसे पाठ करें।

३. **तेलाभिषेक प्रयोग**- हनुमानजी के सामने सुन्दरकाण्ड, हनुमानचालीसा एवं रामरक्षास्तोत्र के पाठ करे। एक ताम्रपात्र में बारीक छेदकर ऊपर से प्रतिमा पर लटका देवें, उसमें शत्रुनाश हेतु सरसों का तैल, सर्वकामनासिद्धि हेतु तिलों का तैल, धनयशवृद्धि हेतु सौभाग्य हेतु चमेली का तैल डालकर अभिषेक करें। तैल का संग्रह करके शाम को उससे दीपक जला देवें, रोगी लगावे तो आरोग्य लाभ होवे। अनुष्ठान समापन पर हनुमान जी को चोला चढ़ावे, शृंगार करे भोग लगावें।

४. **संकट निवारण हेतु** - तुलसी के पत्तों पर केसर चन्दन से रामनाम लिखे उनकी माला बनाकर पहिनावे अथवा लौंग की माला बनाकर माला पहिनाने से भी क्रूर ग्रहों की दशा शान्त होती है।

गुग्गल व जायफल के होम से भी संकट निवारण होता है।

५. **हनुमत् सहस्त्रनाम प्रदक्षिणा** - हनुमान सहस्त्रनाम पढते हुये १००८ या एक हजार बार परिक्रमा करने से संकट दूर होवे। सहस्त्रनाम नही पढ़ सके तो हनुमानचालीसा पढ़ते हुये परिक्रमा करे।

६. **कठिन कार्य में** हनुमानजी के चोला नख से शिर तक चढ़ाते है फिर कार्य सिद्ध होने पर पुनः शिर से पैर तक सिन्दूर लगाकर शृंगार कर होमादि करे।

७. **राज्य में विजय हेतु व** क्रूर ग्रहों की दशा में हनुमानजी के शृंगारादि करके "**ध्वजापताका**" चढ़ावे।

८. **शत्रु पर विजय एवं रोग निवारण हेतु** - हनुमानजी की प्रतिमा के सामने विभीषण कृत हनुमद् बडवानल स्तोत्र या शत्रुञ्जय हनुमत् स्तोत्र का ११-२१-३१ पाठ प्रतिदिन करे।

९. **सर्वसिद्धिप्रद**-

दीनानुबन्धि मेधावि प्रेमाब्धि रामबल्लभ ।
यद्येवं मारुते वीर! मेऽभीष्टं देहि सत्त्वरम् ॥

इस मन्त्र का एक लाख जप का पुरश्चरण करें।

१०. हनुमानचालीसा या सुन्दरकाण्ड के निम्न मंत्र का सम्पुट लगाकर पाठ करें-

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥

इस मंत्र के भी ५१००० या १ लाख जप करने से आपद नष्ट होवे।

११. राजकुल-शत्रुकुलनाशनार्थे - ॐ ऐं श्रीं ह्रां हं हं ह्स्फें ख्फ्रें ह्सौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं नमो हनुमते त्रैलोक्याक्रमणपराक्रम श्रीरामभक्त मम परस्य च शत्रूंश्चतुर्वर्ण सम्भवान् पुं. स्त्रीं नपुंसकान् भूतभविष्यद् वर्तमानान् दूरस्थान् समीपस्थान् नानानामध्येयान् नानासङ्करजातीयान् कलत्र-पुत्र-मित्र-भृत्य- बन्धु-सुहृत्समेतान् प्रभुशक्तिसहितान् धनधान्यादि संपत्तिसंयुतान् रात्रपुत्रसेवकान् मंत्रिसचिव सखीनात्यन्तिकान् क्षणेन त्वरया एतद् दिनावधि नानोपायैर्मारय मारय शस्त्रैच्छेदय छेदय अग्निनाज्वालय ज्वालय दाहय दाहय अक्षकुमारवत्पादतलाक्रमणेन शिलातले आत्रोटय आत्रोटय घातय घातय बन्धय बन्धय भृतससंघैः सह भक्षय भक्षय क्रुद्धचेतसा नखैर्विदारय विदारय देशादस्मादुच्चाटय उच्चाटय पिशाचवद् भ्रंशय भ्रंशय भ्रामय भ्रामय भयातुरान् विसंज्ञांस्तान् सद्यः कुरु कुरु भस्मीभूतानुद्धूलय उद्धूलय भक्तजनवत्सल सीताशोकापहारक सर्वत्र मामेन च रक्ष रक्ष हा हा हा हुं हुं हुं घे घे घे हुं फट् स्वाहा विधि विधान सहित इस तीन सौ इकतालीस वर्ण वाले मंत्र का जप कार्य सिद्धि तक करते रहे।

१२. शत्रुनाशक प्रयोग- ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्स्फें ख्फ्रें ह्सौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं नमो हनुमते राक्षसकुल-दावानल द्वादशार्क-कोट्यर्क प्रभज्वलत्-तनूरुह भीमनाद मम परस्य च दुष्टदुर्जन-महापकारक वादि-विवादिद्वेषकारक कार्यभञ्जनक क्रूरप्रकृतिक प्रवृद्धकोपावेशकहन्तुकामुकादीन् दूरस्थान समीपस्थान् भूत-भविष्यद्-वर्तमानान् पुं-स्त्री-नपुंसकांश्चातुर्वण्यान् क्षणेन सत्त्वरं हन हन दह दह संहारय संहारय मारय मारय मर्दय मर्दय द्वेषय द्वेषय मार्जारमूषकवत्सद्यः प्राणैर्वियोजय वियोजय विध्वंसय विध्वंसय हिल्लि हिल्लि मूकय मूकय जारय जारय वर्धय वर्धय जृंभय जृंभय पातय पातय मम परस्य च पादतलाक्रमितान् कुरु कुरु दासीभूतान् संपादय संपादय हा हा हा हुं हुं हुं घे घे घे हुं फट् स्वाहा।

१३. सर्पभय एवं विषनाशक (झाड़ने का) मन्त्र - ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं हं ह्सौं ख्फ्रें ह्सौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं नमो हनुमते मम परस्य च महाभयानि सर्प-व्याघ्र-तस्कर जलाग्नि-विषजङ्गमस्थावर- सहज कृत्रिमोपविष महासंग्रामारण्यवाद विवाद शस्त्राऽस्त्राग्न्यादिकानि संहर संहर विनाशय

विनाशय दुःखं संग्रासय संग्रासय त्रोटय त्रोटय भंज भंज भंजय भंजय स्तंभय स्तंभय कुण्ठय कुण्ठय मोचय मोचय वानर-ऋक्ष महावीर मामेनं च रक्ष रक्ष हा हा हा हूं हूं हूं घे घे घे हूं फट् स्वाहा।

१४. भूतप्रेत (झाड़ने का) निवारण मंत्र - **ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्सौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं ॐ नमो हनुमते महाबल पराक्रम मम परस्य च भूतप्रेतपिशाच शाकिनी डाकिनी-यक्षिणी -पूतना-मारी महामारी-कृत्या यक्ष राक्षस भैरव वेतालग्रह ब्रह्मग्रह ब्रह्मराक्षसादिकजात-क्रूरबाधान् क्षणेन हन हन जृंभय जृंभय निरासय निरासय वारय वारय बन्धय बन्धय नुद नुद सूद सूद धुनु धुनु मोचय मोचय मामेनं च रक्ष रक्ष रक्ष महामाहेश्वर रुद्रावतार हूं हूं हूं हुं हुं हुं घे घे घे हूं फट् स्वाहा।**

इसे एकसौ इकहत्तर वर्ण अक्षर वाले मंत्र से अभिमंत्रित जल पिलाने, सरसों छिड़कने में व झाड़ा देने से भूतप्रेतादि क्रूर बाधायें नष्ट होती हैं।

१५. सर्वरोगनाशक मंत्र - **ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्सौं ह्सौं ॐ नमो हनुमते मम परस्य च क्षय कुष्ठ गुण्डमाला स्फोटकं क्षतज्वरमैकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं संतत ज्वरं सान्निपातिक ज्वरं भूतज्वरं मन्त्र ज्वरं शूलभगन्दर मूलकृच्छ कपालशूल-कर्णशूलाऽक्षिशूलोदशूल हस्तशूल पादशूलादीन् सर्वव्याधीन् क्षणेन् भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि नाशय नाशय निकृन्तय निकृन्तय छेदय छेदय भेदय भेदय महावीर हनुमन् हां हां घे घे हीं हीं हूं हूं फट् स्वाहा।**

इस १७० वर्ण अक्षर वाले मंत्र से झाड़ा देने पर उपरोक्त सभी रोग नष्ट होते है।

१६. **गुदभ्रंश निवारक (काँच निकालने का) प्रयोग** - गुन्दीवृक्ष की जड़ को हनुमानजी के उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित करके रोगी की कमर में बांधने से निश्चय लाभ होवे। बाद में हनुमानजी के घी तैल सिन्दूर प्रसाद चढ़ावे।

१७. **विजय पताका** - युद्ध में शत्रुओं पर जीतने की इच्छा रखने वाले राजा को विजय पताका यंत्र धारण करना चाहिये। लालवस्त्र पर कोयल के पंख से अष्टगंध से हनुमानजी की मूर्ति द्रोणगिरि व पताका ध्वजा सहित बनायें। शत्रु के नाम सहित हनुमानजी का अष्टादशाक्षर मंत्र पताका में लिखें। यथा

नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय अमुकं स्वाहा। ग्रहण के समय मातृका मंत्रों सहित जप करें। अर्थात् **अं...मंत्र अं। आं मंत्र आं। इं मंत्र इं।** इस तरह ५२ मातृकाओं पर मंत्र की आवृतियाँ करें।

तिलमिश्रित सरसों से हवन करे। ध्वज को अपने रथ या हाथी पर लगावे तो ध्वज को देखकर शत्रु दल भयभीत होकर भागने लगे।

पुनः यही मंत्र यदि पूंछ जैसे आकार के वस्त्र पर हनुमानजी की मूर्ति सहित लिखें। एवं राजा उसे अपने सिर पर बांध कर जाये तो विजय प्राप्त करे।

१८. **बन्दी विमोचन** - हनुमानजी की पार्थिव प्रतिमा बनाये। बन्दी व्यक्ति के नाम के आगे द्वितीयान्त (अमुकं) पद लिखकर उसके बाद विमोचय विमोचय पद लिखें (अमुकं विमोचय विमोचय)। यह मंत्र प्रतिमा पर नहीं लिख सके तो भोजपत्र पर लिखकर हनुमानजी के चरणों के पास रखें। उस मूर्ति पर "**नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय अमुकं विमोचय विमोचय स्वाहा**" मंत्र पढ़ते हुए बांये हाथ से कुश जल द्वारा कम से कम १०८ या १००८ बार मार्जन करें पश्चात् मूर्ति का विसर्जन करे। इस तरह १०८ बार प्रतिमा बनाकर पूजन मार्जन एवं विसर्जन करने से बन्दी कारागार से मुक्त हो जाता है।

१९. **अन्य कार्यों हेतु विशेष** - स्तंभन प्रयोग में हनुमानजी के मंत्र का दशांश हवन ताजाजत्र, पीपल का फल, हल्दी, तिल, शल्लकीफल, सेमर का फूल, एवं मधुत्रय से होम करें। उच्चाटन में लिसौड़े के फूल से, वशीकरण में सरसों अंगूर,मधृक व गुग्गल से हवन करे। विद्वेषण में - करवीर (कनेर) पत्र व लकड़ी से लसेड़ा के पत्र व काष्ठ से जीरा, कालीमिर्च, कड़ुवा तेल, मिश्रित राई से हवन करें। सभी तरह के ज्वर व शूलवेदना तथा भगन्दर इत्यादि रोगों में दूर्वा, गुड़ची (गिलोय), दूध, दही, नागफणी, रेंड की लकड़ी, कुबेराक्ष, निर्गुण्डी की समिधा व तिल के तेल से होम करें।

उत्तम फल प्राप्ति हेतु सुगंधित पुष्प चढ़ावे। विद्वेषण व मारण में धतूरा व राई के पुष्प चढ़ावे। गीद्ध, उल्लू, व कौवा के पंखों का नमक युक्त कड़वे तेल से होम करे। आकर्षण में तिलादि होम को राई व नमक सहित (सामान्य मात्रा में) हवन करें। मोहन में-धत्तूरे का फूल व उसकी समिध से होम करें। अन्न-धान्य के होम से अन्नादि की प्राप्ति। तेल, घी, दूध, दही, बिल्वफल व उसकी समिद, खेर व उदुम्बर समिध होने से सर्वकार्य सिद्ध होवे, अर्थ की प्राप्ति होवें।

॥ हनुमद्व्रतकथा एवं उद्यापन विधानम् ॥

(भविष्योत्तर पुराणे)

कथा - एक समय गंगातट पर शौनकादि ऋषियों ने पुराणप्रवक्ता सूतजी से कहा कि हे सूतजी! आपने वासुदेव कथा के प्रसंग में अनेक व्रत विधान बताये आप अब किसी अन्य व्रत का विधान बताइए।

सूतजी ने कहा - मैं अब आपको कपीश्वर हनुमान् का अतिपवित्र व्रत विधान बताता हुँ जो चारों वर्णो के करने योग्य है। यह व्रत मांगलिक है तथा संसार में अतिगुप्त है धन, आयु, आरोग्य,ऐश्वर्यादि तथा पुत्र पौत्रादि को देने वाला है।

एक समय भगवान व्यासजी अचानक द्वैतवन में युधिष्ठर के पास पहुँचे तो युधिष्ठर ने आदर पूर्वक उन्हे सिंहासन पर बैठाकर उनका पूजन किया। व्यासजी ने युधिष्ठर से कुशलक्षेम और अर्जुन के पाशुपतास्त्रादि शस्त्र प्राप्ति के विषय में पूछा। तत्पश्चात् व्यासजी ने युधिष्ठर से कहा कि अब मैं आपको हनुमानजी का उत्तम व्रत बतलाता हुँ जिसके करने से निश्चय ही नष्ट राज्य पुनः शीघ्र प्राप्त होता है।

युधिष्ठर ने कहा प्रभु। मैं इस समय भाईयों सहित बहुत दुःखी हुँ आप इस व्रत का महात्म्य एवं पूजन विधि बताइए तथा यह व्रत कब करना चाहिऐ यह भी बताये। हनुमानजी का स्मरण करते हुए व्यासजी ने कहा -

पूर्व समय में पाञ्चाली द्रौपदी के आग्रह पर श्रीकृष्ण ने हनुमद् व्रत का निरूपण किया। उसी व्रत के विधान से तुमने समस्त सम्पतियाँ प्राप्त की थी। किसी समय में हनुमद् व्रत के डोरे को द्रौपदी के गले में देखकर अर्जुन ने कहा की तुमने यह डोरा व्यर्थ ही गले में क्यों धारण कर रखा है?। तत्पश्चात् द्रौपदी ने मधुर वचनों से हनुमद् व्रत का महत्व बताकर कहा कि यह उत्तम डोरा उसी व्रत का है जिसे मैने धारण कर रखा है। द्रौपदी के वचन सुनकर ऐश्वर्याभिमान में चूर अर्जुन ने कहा कि अरे! यह बन्दर तो सेवक की भाँति मेरे ध्वज पर लटका रहता है क्या जंगलीफल खाने वाला वानर सम्पत्ति प्रदान कर सकता है?। उस कपटी कृष्ण ने तुम्हें ठग लिया और हास्यवश इस व्रत का डोरा बांधने के लिये कह दिया। परन्तु तुम मुझे इस तरह के व्रतों से ठग नहीं सकती तुम तो पतिव्रता एवं सतीसाध्वी हो तुम्हे अपने पति के पुरुषार्थ पर विश्वास करना चाहिये, दूसरे की शरण आश्रय व्रतादि से क्या प्रयोजन? एतदर्थ इस डोरे का तुम शीघ्र ही परित्याग कर दो।

इस प्रकार अर्जुन के कठोर वचनों को सुनकर भयभीत द्रौपदी ने डोरे को अपने कण्ठ से उतार कर फेंका नहीं अपितु बगीचे के मध्य में सुरक्षित रख दिया। **हे युधिष्ठर!** उस डोरे के परित्याग के कारण ही आपने अनायास वनवास प्राप्त किया। तेरह ग्रंथि युक्त इस डोरे का अपमान करने से तेरह वर्ष पर्यंत वनवास व्यतीत करना पड़ा। यदि इसे धारण किये हुए होते तो तेरह वर्ष पर्यन्त अवश्यमेव सुख का उपभोग करते। इस प्रकार व्यासजी की बात सुनकर द्रौपदी को उस व्रत का स्मरण हो आया और अपने पांचों पतियों से कहा की उक्त बात सत्य है।

पुनः व्यासजी ने कहा - हे युधिष्ठर हनुमद् व्रत का एक और इतिहास आपसे कहता हुँ उसे ध्यान पूर्वक श्रवण करो। एक समय मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्र सीता की खोज करते हुए लक्ष्मण के साथ ऋष्यमूकपर्वत पर आये उस समय हनुमानजी ने उनकी सुग्रीव से मित्रता करवायी।

प्रसंगवश हनुमानजी ने कहा हे महाबाहु राम। मैं वास्तविकता में तो आपके कार्य करने में अत्यन्त आतुर एवं परम भक्त हूँ परन्तु मेरी एक बात आप ध्यान पूर्वक श्रवण कीजिये।

किसी समय देवराज इन्द्र ने मेरी हनु (ठोड़ी) पर वज्र प्रहार किया जिससे मैं मूर्च्छित हो गया, उस समय मेरे पिता वायु को बहुत क्रोध आया और कहने लगे जिसने मेरे पुत्र को मारा है मैं उसे अवश्य नष्ट करूंगा। उस समय ब्रह्मादि देव गणों ने आकर मुझे अनेक वर एवं अस्त्रादि दिये और कहा कि तुम अमित पराक्रमी बनो चिरंजिवी हो और हे कपीश्वर वानरराज! वायुपुत्र! तुम अपने व्रत के आज से नायक होते हुए राम के समस्त कार्यो को सिद्ध करो। उन समस्त देवगणों ने इस प्रकार वरदान भी दिया कि तुम्हारे इस पुनीत व्रत को जो भी करेगा उसके सभी मनोरथ निश्चय ही सिद्ध होंगे। और यह भी कहा कि इस व्रत को कार्यार्थी राघव ने भी किया था। अतः हे स्वामी! देवताओं ने मुझसे पहले ही कहा है कि तुम राम के समस्त कार्य सिद्ध करो। हे नाथ! आप इस व्रत को व्यर्थ न समझें अपितु सत्य ही मानें। हे प्रभु! यदि आपके मन में अपनी कार्य सिद्धि अभीष्ट हो तो आप इस व्रत को अवश्य कीजिये। उस समय देवताओं ने भी आकाशवाणी द्वारा इस व्रत की पुष्टि की एवं श्रीराम ने व्रत संकल्प का निश्चय करके हनुमानजी से उस व्रत का विधान बताने को कहा।

उस समय मारुती नन्दन ने इस प्रकार कहा - मार्गशीर्ष (अगहन) शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी तेरह घड़ी युक्त हो तथा अभिजित नक्षत्र भी हो तो उस दिन तेरह

गांठ युक्त पीले डोरे को कलश में रखकर "**ॐ नमो भगवते वायुनन्दनाय**" इस मंत्र से आह्वान कर पीले गंध, पुष्प व अन्यान्य पूजन सामग्री से मेरा पूजन करे।

साधक षोडशोपचार से मेरा पूजन करे। गेहूं के आटे का तथा तेरह मालपुए, ताम्बूल, दक्षिणा ब्राह्मण को देवें। तेरह ब्राह्मणों को भोजन करायें। इस व्रत को १३ वर्ष तक करना चाहिये। प्रतिवर्ष मंगसर शुक्ला त्रयोदशी को नया डोरा धारण कर पुराने का विसर्जन करना चाहिये। १३ वर्ष उपरांत व्रत का उद्यापन करना चाहिये।

हे युधिष्ठर! राम ने लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण सहित इस व्रत को किया एवं उनके कार्य की सिद्धि हुई।

हे युधिष्ठर! इस व्रत को करने वाले प्राणी की हनुमानजी सभी तरह से सहायता कर अभीष्ट की सिद्धि करते हैं। अत: इसी मास में यदि तुम इस व्रत को करो तो निश्चित् ही तुम्हे अपना खोया हुआ राज्य प्राप्त होगा।

इस प्रकार व्रत करने से एक वर्ष के भीतर ही युधिष्ठर ने अपना राज्य पुन: प्राप्त कर लिया। पश्चात् उन महर्षियों ने भी उत्तम व्रत को धारण किया।

फलश्रुति - इस व्रत को करने वाले के हनुमानजी सभी कार्य सिद्ध करते है, रोगी रोग मुक्त होवे, कैदी बंधन मुक्त होवें, राजा को अपना खोया हुआ या नष्ट राज्य पुन: प्राप्त होवे। पुत्रार्थी को पुत्रलाभ होवे। मोक्षार्थी को मोक्ष, धनार्थी को धन प्राप्त होवे।

"**ॐ नमो भगवते वायुनन्दनाय**" इस मंत्र से अभिमंत्रित गंध का तिलक लगाने से राजा तथा प्रजा का वशीकरण होवे। यात्रा में विजय होवे, राजद्वार, युद्ध, तथा सभा में विजय एवं सम्मान मिले। व्याघ्र सर्प चौरादि भय नष्ट होवे। तेरह गांठ वाले हनुमद् व्रत के डोरे को कण्ठ या दाहिने हाथ में धारण करने से सभी कार्यो की सिद्धि होती है।

॥ हनुमद् व्रत विधानम् ॥

व्रत करने वालों को मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी के दिन जितेन्द्रिय एवं ब्रह्मचर्य का पालन कर त्रयोदशी के दिन प्रात: नदी तीर पर जाकर "**पम्पा सरोवर**" का पूजन करना चाहिये। बंधु बांधवों के साथ गाजे बाजे सहित समीप की नदी पर पम्पा पूजन करना चाहिये।

संकल्प - **तत्राऽऽदौ हनुमद्व्रतं कर्त्तुमारंभमाण आचाराऽनुसारेण विशिष्टाचार परम्पराप्राप्तां यथा शक्तिद्रव्यै पम्पा पूजनं करिष्ये।**

नदी में स्नान करके अघमर्षण मंत्र से अपने को शुद्ध कर पितृ तर्पण संध्यावंदन करके पंपा पूजन करना चाहिये।

नदी में पम्पानदि का आह्वान करे-

हेमकूटगिरिप्रान्त जनानां गिरिसानुगाम् ।
पम्पामावाहयाम्यस्यां नद्यां ह्यद्यां प्रयत्नतः ॥

आसनम् - **तरङ्गशत-कल्लोलेरिङ्गत्ताम - रसोज्ज्वले ।**
पम्पानदि! नमस्तुभ्यं गृहाणासनमुत्तमम् ॥

पाद्यम् - **हृद्यं सुगंधसंपन्नं शुद्धं शुद्धाम्बुसत्कृतम् ।**
पाद्यं गृहाण पम्पाख्ये महानदि! नमोऽस्तुते ।

अर्घ्यम् - **भागीरथि! नमस्तुभ्यं सलिलेन सुशोभने ।**
अनर्घ्यमर्घ्यमनद्ये! गृह्यतामिदमुत्तमम् ॥

उसके बाद आचमन, पंचामृतस्नान, शुद्धस्नान,वस्त्र, यज्ञोपवीत प्रदान करे। गंध, अक्षत, कुंकुम चढ़ाकर नेत्राञ्जन करे

कज्जलं त्रिजगद्वन्द्ये महापुष्प-तरङ्गिणि ।
नेत्रयोः पादममघं गृह्यतां सरितांवरे ॥

पुष्प चढ़ावें -

शतपत्रैश्च कल्हारैः कुमुदैर्बकुलैरपि ।
मल्लिकाः जाति-पुन्नागैः केवलैश्चाऽपि चम्पकैः ॥१॥
तुलसीदामभिश्चापि तथा बिल्वदलैरपि ।
पूजयामि महापुण्ये पंपानदि नमोस्तुते ॥२॥

पंपा नदी की अंग पूजा गंध, पुष्पाक्षत चढ़ाते हुये करे।

जयाभिपापहारिण्यै नमः, जङ्घे पूजयामि। सुभ्रुवे नमः, जानुनी पूजयामि। उरुतरङ्गिण्यै नमः, उरुं पूजयामि। तडिदुज्ज्वलजवायै नमः, कटिं पूजयामि। अम्बुशोभिन्ये नमः नितम्बं पूजयामि॥ अणुमध्यायै नमः, मध्यं पूजयामि। सुस्तनायै, नमः स्तनौपूजयामि। कंबुकंठायैनमः, कण्ठं पूजयामि। ललितबाहुतरङ्गायै नमः,बाहू पूजयामि। दीर्घवेण्यैनमः, वेणीं पूजयामि। सुवक्त्रायै नमः, वक्त्रं पूजयामि। दुर्वारवारिपूरायै नमः, शिरः पूजयामि।

सहस्त्रमुखायै नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि।

इसके बाद धूप दीप नेवैद्यादि अन्य उपचार करे आरति कर प्रदक्षिणा की भावना कर प्रार्थना करे-

पंपानदि! महापुण्य तरङ्गिणि! नमोऽस्तु ते ।
त्वत्तीरे हनुमत्पूजा कृता रामेण धीमता ॥१॥
मनोरथफलाऽवाप्तिस्तस्याऽभीष्टं न संशयः ।
सुग्रीवेण च तीरेऽस्मिन् कपिवर्यपतेर्व्रतम् ॥२॥
सत्कृतं च मनोवाञ्छा सद्यस्तस्य बभूव सा ।
अतस्त्वन्नीरपुलिने कृते हनुमतो व्रते ॥३॥
श्रेयांसि मम सर्वाणि न विघ्नानि भवन्त्विह ।
इति संप्रार्थ्य पम्पाख्यां नदीं शुभतरङ्गिणीम् ॥४॥

इस प्रकार शुभ तरंग वाली पंपा नदी से प्रार्थना करते हुए तथा कलश में श्रद्धापूर्वक पंपा का जल लेकर व्रती अपने घर आवे। हनुमत्पीठ की रचना करें उस पर कलश रखें। पूर्णपात्र रखे पीठ पर हनुमानजी की मूर्ति रखें। स्वस्तिक, शंख, पद्म आदि रंगोली से बनायें। तेरह पत्रों का एक पदा (कमल), बनायें उन पर चावलों की ढेरी रखकर १३ कलश रखे उनमें शुद्ध जल (पम्पानदी का जल) भरे।

आचमन प्राणायाम करके हनुमद्व्रत पूजा का संकल्प करे अपने अभीष्ट की कामना करे। गणेश पूजन, भू शुद्धि, भूतशुद्धि, मातृका, नवग्रह, रुद्रकलशादि का पूजन करे। पश्चात् हनुमत् पीठ की पूजा करे।

पीठस्याऽधोभागे - **अतलाय नमः। वितलाय नमः। सुतलाय नमः। रसातलाय नमः। तलाऽतलाय नमः। महातलाय नमः। सप्तपातालाय नमः।**

तत्राऽगाध- **सर्वतो शब्दात्मने नमः।** तत्र कमले- **कमठाय नमः।** तदुपरि- **सहस्त्रमणि-फणाप्रकाशमान शेषाय नमः। अष्टदिग्गजेभ्यो नमः।** तदुपरि- **भूमण्डलाय नमः।** तदुपरि- **भूर्लोकाय नमः। भुवर्लोकाय नमः। स्वर्लोकाय नमः। जनलोकाय नमः। तपोलोकाय नमः। महर्लोकाय नमः। सत्यलोकाय नमः। अष्टदिक्पालकेभ्यो नमः।** तन्मध्ये- **मेरवे नमः।** मेरोर्दक्षिणदिग्भागे- **कस्मैचिद्द्रोणशैलाय नमः।** तन्मध्ये **सुतरवे नमः।** तन्मूले- **सुवर्णवेदिकायै नमः।** वेद्यां वृक्षस्य पूर्वभागे- **नवरत्नखचित चारुरत्नपीठाय नमः।**

प्रधान कलश में जल भरे पूर्णपात्र रखे, पीताम्बर रखें।

कमल के तेरह पत्तों में "**ॐ नमो भगवते वायुनन्दनाय नमः**" के प्रत्येक वर्ण को लिखें। हल्दी आदि मांगलिक द्रव्यों से युक्त तेरह गांठ वाले नवीन डोरे को उस कलश पर प्रतिष्ठित करे। हनुमानजी की प्रतिमा पीठ पर रखे। उत्तराभिमुख बैठकर सीता सहित श्रीरामचन्द्रजी का मानसिक ध्यान करते हुए पवनपुत्र श्री हनुमानजी का आह्वान करे प्रतिष्ठा मंत्रों से आह्वान करें। पश्चात् हनुमानजी का आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नानं, वस्त्र, कौपीन, यज्ञोपवीत, गंध, अक्षत, पुष्प चढ़ावें।

ग्रंथिपूजा - नवीन डोरे की १३ ग्रंथियों (गाठों का) का इस प्रकार पूजन करें-

अञ्जनीसूनवे नमः, प्रथमग्रंथिं पूजयामि। हनुमते नमः, द्वितीयग्रंथीं पूजयामि। वायुपुत्राय नमः, तृतीयग्रंथीं पूजयामि। महाबलाय नमः, चतुर्थग्रंथीं पूजयामि। रामेष्टाय नमः, पञ्चमग्रंथीं पूजयामि। फाल्गुनसखाय नमः, षष्ठग्रंथीं पूजयामि। पिङ्गाक्षाय नमः, सप्तमग्रंथीं पूजयामि। अमित विक्रमाय नमः, अष्टमग्रंथीं पूजयामि। कपीश्वराय नमः, नवमग्रंथीं पूजयामि। सीताशोक विनाशनाय नमः, दशमग्रंथीं पूजयामि। लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः, एकादश ग्रंथीं पूजयामि। दशग्रीवदर्पघ्नाय नमः, द्वादश ग्रंथीं पूजयामि। भविष्यद् ब्रह्मणे नमः, त्रयोदश ग्रंथीं पूजयामि।

इसके बाद हनुमानजी की अङ्ग पूजा करे-

हनुमते नमः पादौ पूजयामि। सुग्रीवसखाय नमः, गुल्फौ पूजयामि। अङ्गद मित्राय नमः, जङ्घे पूजयामि। रामदासाय नमः, उरु पूजयामि। अक्षघ्नाय नमः, कटिं पूजयामि। लङ्कादहनाय नमः, बालं पूजयामि। राममणिदाय नमः, नाभिं पूजयामि। सागरोल्लंघनाय नमः, मध्यं पूजयामि। लङ्कामर्दनाय नमः, केशावलिं पूजयामि। संजीवनहर्त्रे नमः, स्तनौ पूजयामि। सौमित्रिप्राणदाय नमः, वक्षः पूजयामि। कुण्ठितदशकण्ठाय नमः, कण्ठं पूजयामि। रामाभिषेक कारिणे नमः, हस्तौ पूजयामि। मंत्र रचित रामायणाय नमः, वक्त्रं पूजयामि। प्रसन्न वदनाय नमः, वदनं पूजयामि। पिङ्गनेत्राय नमः, नेत्रे पूजयामि। श्रुतिपारणाय नमः, श्रुतिं पूजयामि। उर्ध्वपुण्ड्रधारिणे नमः, कपोलं पूजयामि। मणिकण्डमालिने नमः, शिरः पूजयामि। सर्वाभीष्टप्रदाय नमः, सर्वाङ्ग पूजयामि।

इसके बाद गुग्गुलादि दशांश धूप दीप नैवेद्यादि उपचार करें।

आरती प्रदक्षिणा कर पुष्पाञ्जलि प्रदान कर प्रार्थना करें

नमस्तेऽस्तु महावीर! नमस्ते वायुनन्दन ।
विलोक्य कृपया नित्यं त्राहि मां भक्तवत्सल ॥

तेरह ग्रंथि वाला डोरा बांधते समय कहे-

ये पुत्र- पौत्रादि-समस्तभाग्यं वाञ्छन्ति वायोस्तनयं प्रपूज्य।
त्रयोदशग्रंथियुतं तदङ्गं बध्नन्ति हस्ते वरदोरसूत्रम् ॥
अञ्जनीगर्भ संभूत! रामकार्यार्थसंभव ।
वरदोरकृताभासारक्ष मां प्रतिवत्सरम् ॥

पुराना डोरा उतारते समय प्रार्थना करे

अनेन भगवन् कार्यं प्रतिपादकविग्रहम् ।
हनूमान् प्रीणयित्वा च प्रार्थितो हृदि तिष्ठतु ॥

॥ हनुमद्व्रतोद्यापन विधानम् ॥

यजमान नदी में मध्याह्निक स्नान एवं नित्यकर्म कर आचार्य ब्रह्मा एवं होताओं के साथ यज्ञ भूमि में प्रवेश करें। १३ ब्राह्मणों का वरण करें। हनुमानजी की स्वर्ण की प्रतिमा बनायें। व्रत विधि में जो पूजन, आवाहन, मण्डल रचना विधान बताया गया है उसी तरह से प्रधान कलश व १३ अन्य कलश स्थापित करें। पीठ पूजन, ग्रंथि पूजन, अङ्ग पूजन करे।

चारों प्रहर पूजा करते हुए तथा मंगलध्वनि भागवत पारायण- पुराण श्रवण इत्यादि से रात्रि में जागकर दूसरे दिन ब्राह्मणों के साथ खीर, घृत, पीपल, समिधा व अन्य हवनीय द्रव्यों से '' **ॐ नमो भगवते वायुनन्दनाय नमः** '' मंत्र से १००८ आहुतियाँ देकर पूर्णाहुति करे। १३ ब्राह्मणों को वस्त्र कलश दक्षिणा प्रदान करें।

इस प्रकार यह विधान सूतजी ने शौनकादि ऋषियों से कहा।

॥ इति हनुमद्व्रतकथा एवं उद्यापन विधानम् ॥

卐 इति श्रीहनुमान तन्त्रम् सम्पूर्णम् 卐

॥ अथ भैरव तंत्रम् ॥

॥ अथ तान्त्रिकसन्ध्या पूजन प्रयोगः॥

प्रातः काल उठकर गुरु का ध्यान करें -

॥ गुरु स्मरणम् ॥

आनन्दमानंदकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् ।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि ॥

मानसिक पूजन करें – गुं गुरुभ्यो नमः, लं पृथिव्यात्मकं गंधं समर्पयामि। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। यं वाय्वात्मकं धूपं आघ्रापयामि। रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि।

प्रातः प्रभूतिसायान्तं सायादि प्रातरन्ततः ।
यत्करोमि जगन्नाथ तदस्तु तव पूजनम् ॥

बटुक के मूल मन्त्र से तीन बार प्रणायाम करें एवं हृदय में ध्यान करें।

प्रातस्मरामिवटुकं सुकुमारमूर्ति,
श्रीस्फटिकामसदृशं कुटिलालकाढ्यम् ।
वक्त्रं दधानमणिमादि गुणैर्हि युक्तं,
हस्तद्वयं मणिमयैः पदभूषणैश्च ॥१॥

प्रातर्नमामि वटुकं तरणं त्रिनेत्रं,
कामास्पदं वरकपाल त्रिशूल दण्डान् ।
भक्तार्तिनाश करणे दधतं करेषु,
तं कौस्तुभाभरण भूषित दिव्य देहम् ॥२॥

प्रातःकाले सदाऽहं भगणपतिधरं भालदेशे महेशं
नागं पाशं कपालं डमरुमथशृणिं खड्गघण्टा भयानि ।
दिग्वस्त्रं पिंगकेशं त्रिनयन सहितं मुण्डमालं करेषु
यो धत्ते भीमदंष्ट्रं मम विजयकरं भैरवं तं नमामि ॥३॥

देवदेव दयासिन्धौ सर्वनाशिन्महाऽव्यथः ।
संसारासक्त चित्तं मां योगमार्गे निवेशय ॥४॥
एतच्छ्लोक चतुष्कं वै भैरवस्य तु यः पठेत् ।
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोः जायते निर्भय पुमान् ॥५॥

गुरु एवं देवता के एकाकार की भावना कर अजपाजप करें।

षट्शतं तु गणेशस्य षट्सहस्त्रं प्रजापतेः ।
षट्सहस्त्रं गदापाणेः षट्सहस्त्रं पिनाकिनः ॥
आत्मानस्तत्सहस्त्रं च सहस्त्रं परमात्मनः ।
सहस्त्र श्रीगुरुभ्यश्च एतानि विनियोजयेत् ॥

॥ अजपाजप विधानम् ॥

विनियोगः अस्य श्री अजपागायत्री मंत्रस्य हंस ऋषिः, अव्यक्त छन्दः, श्रीपरमहंस देवता, मम सर्वार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः ॐ अस्य श्री अजपा गायत्री महामन्त्रस्य हंसऋषये नमः शिरसि, अव्यक्ता छन्दसे नमः मुखेः, परमहंसाय देवतायै नमः हृदि।

हं बीजाय नमः आधारे, सः शक्तये नमः पादयोः, सोहं कीलय नमः हृदये, प्रणव तत्वाय नमः कण्ठे, नभस्थानाय नमः भ्रूमध्ये, श्वेतवर्णाय नमः ललाटे, उदात्त स्वराय नमः ब्रह्मरन्ध्रे। मम सर्वज्ञत्व सिद्धये अजपा गायत्र्यः आचारितं मूलाधारादि चक्रेषु स्थितेभ्यः गणपति ब्रह्मा, विष्णु, रुद्रजीवात्म परमात्म श्री गुरुभ्यः सशक्तिकेभ्यो यथा ज्ञानेन यथासंख्यं निवेदयिष्ये।

करन्यासः – हसां सूर्यात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः, हसीं सोमात्मने तर्जनीभ्यां नमः, हसूं निरंजनात्मने मध्यमाभ्यां नमः, हसैं निराभासात्मने अनामिकाभ्यां नमः, हसौं अतनु वितनु सूक्ष्म प्रचोदयात् कनिष्ठिकाभ्यां नमः, हंसः अग्निसोमात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

इसी तरह हृदयादिन्यास करें। गायत्री मन्त्र से दिग्बन्धन करें।

मूलाधारचक्र में सिद्धिलक्ष्मी सहित गणपति का ६०० जप कर समर्पण करें। स्वाधिष्ठानचक्र में सरस्वती सहित ब्रह्मा हेतु ६००० जप समर्पण करें। मणिपूरचक्र में लक्ष्मी सहित विष्णु हेतु ६००० जप समर्पण करें। अनाहतचक्र में पार्वती सहित रुद्र हेतु ६००० जप समर्पण करें। विशुद्धचक्र में अविद्याशक्ति सहित जीवात्मना

हेतु १००० जप समर्पण करें। आज्ञाचक्र में विद्याशक्ति सहित परमात्मना को १००० जप समर्पण करें। ब्रह्मरन्ध्र में ज्ञानशक्ति सहित गुरुतत्व हेतु १००० जप समर्पण करें।

हंसगायत्री का दशबार जप करें -

ॐ हंसो हंसाय विद्महे सोहं हंसाय धीमहि ।
तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥
हंसो गणेशो विधिरेव हंसो, हंसो हरिर्हंसमयश्च शम्भु : ।
हंसो हि जीवो गुरुरेव हंसः हंसो गुरो हंसमयं च सर्वे ॥

भूमि की प्रार्थनाकर पैर स्पर्श करें -

समुद्र मेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्वमे ॥

ग्राम के बाहर नैऋत्य दिशा में उत्तराभिमुख होकर मलत्याग करें। आमचंपक अपामार्ग इत्यादि का १२ अंगुल का दंतकाष्ठ गृहण करें।

आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजापशु धनानि च ।
श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नोदेहि वनस्पते ॥

ॐ ह्रीं तडित्स्वाहा इति मंत्रेण काष्ठं छित्वा, क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः इत्यनेन दंतान संशोध्य, ऐं मन्त्रेण जिह्वामुल्लिख्य दंतकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्यां शुद्धदेशेनिःक्षपेत्।

इसके बाद **बटुकभैरव प्रीत्यर्थ मन्त्रस्नानमहं करिष्ये**। संकल्प करें।

जल में त्रिकोण बनायें अंकुशमुद्रा से तीर्थो का आवाहन करें। '**क्रों**' बीज मन्त्र का उच्चारण करें।

ब्रह्मोण्डदर तीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥

धेनुमुद्रा दिखाकर अमृतीकरण करें, गुरु का ध्यान करें, मूल मन्त्र का उच्चारण करें। मूलमन्त्र से अंकुशमुद्रा से अपने शिर पर ३ बार, ३ बार भुजाओं पर तथा ३ बार हृदय पर अभिषिंचन करें। भैरव मन्त्र का जप करते हुये १० बार तर्पण करें। सूर्य मन्त्र से अर्घ देवे तथा ३ बार सूर्य को अञ्जलि प्रदान करें।

मन्त्र - ॐ ह्रीं हंस : स्वाहा श्रीमृयार्य इदमर्घ्यं गृह्ण गृह्ण स्वाहा।

पश्चात् ॐ ब्रह्माणं तर्पयामि, ॐ विष्णुं तर्पयामि, ॐ रुद्र तर्पयामि से ३

३ अञ्जलि देवें। प्राणायाम करें, ऋष्यादि न्यास करें, संहारमुद्रा दिखाकर देव को अपने हृदय में स्थापित करें। सूर्यमण्डल में तीर्थों का पुनः स्थापन करें। नदी तीर पर आकर पुनः ३ अञ्जलि प्रदान करें।

असुरा भूतवेतालाः कूष्माण्डा ब्रह्मराक्षसाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयादत्तेन वारिणा ॥

योनिमुद्रा दिखायें। घर आकर तांत्रिकी संध्या करें।

त्रिराचमेत् - **ॐ ह्रां आत्मतत्वाय नमः। ॐ ह्रीं विद्यातत्वाय नमः। ॐ ह्रूं शिवतत्वाय नमः।**

प्राणाम्य - **ऋष्यादिन्यास व करन्यास करें**। मूलमन्त्र से जल देवें।

अस्त्रायफट् से संप्रोक्षण करें, **दर्भ** से ताडन करें। **कवचाय हुं** इत्यभ्युक्ष्य तज्जलेन कुंभमुद्रया मूर्द्धिन सिंचेत्।

बायें हाथ में जल लेवें दाहिने हाथ से मार्जन करें। यथा -

ह्रां वां हृदयाय नमः। ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं वूं शिखायै वषट्। ह्रैं वैं कवचाय हुं। ह्रौ वौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः वः अस्त्राय फट्। ॐ आं ह्रां व्योमव्यापिने नमः।

मूलमन्त्र तथा सद्योजातादि ५ मन्त्रों से मार्जन करें।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ।
भवेभवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥१॥
ॐ वामदेवाय नमो श्रेष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय
नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो
बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय
नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥२॥
ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥३॥
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥४॥
ईशानां सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति
ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदाशिवोम् ॥५॥

ह्रां ह्रीं ह्रूं युक्त मूलमन्त्र जपें बांये हाथ में जल लेकर वाम नासा के पास लाकर

इडानाड़ी से जल को अन्दर खींचे, एवं कुंभक के समय सभी पापों के प्रक्षालन की भावना करें, पश्चात् रेचक द्वारा दक्षिण नासा से जल छोड़ें। बांये हाथ के जल को दक्षिण हाथ में लेकर क्रोधमुद्रा में वज्रशिला पर अस्त्राय फट् से डालें।

पुन: मूलमन्त्र का उच्चारण करें तथा **"ॐ शिवरूपाय सूर्यायेदमर्घ्यं"** स्वाहा से ३ बार अर्घ देवें। बटुकगायत्री का जप करें।

आपदुद्धारणाय विद्महे बटुकेश्वराय धीमहि। तन्नोवीर: प्रचोदयात् ॥

पुन: आचमन करें तथा कराङ्ग न्यास करें। जल में तीर्थ देवता पीठ की कल्पना करें एवं हृदय में विराजमान देव को बाहर लाकर जल में मानसिकरूप से स्थान देवे। पञ्चोपचार पूजन करें। अञ्जलि से मूलमन्त्र द्वारा **'श्री भैरवं तर्पयामि' से १० बार तर्पण करें।**

पश्चात् - **"ऐं ह्रीं श्रीं स्वगुरु श्री अमुकानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि"** की तरह ही **परमगुरु, परात्परगुरु परमेष्ठीगुरु** का तर्पण करें। पश्चात् **द्विव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ गुरुओं की पादुका का पूजन करें।** पुन: तीर्थ का विसर्जन करें।

॥ पूजाविधि ॥

सामान्य अर्घपात्र से पूजागृह के द्वार पर **"फट्"** मन्त्र से प्रोक्षण करें,

ऊपर - **ॐ द्वारंश्रियैनम:, गं गणपतये नम:।** ऊपरी भाग के दक्षिण कोण में **सं सरस्वत्यै नम:, वामे नं नन्दिने नम:। दक्षशाखायां "गं गंगायै नम:", वामशाखायां यं यमुनायै नम:,** इस तरह पूजन करके गृह के नैऋत्य कोण में **"ॐ वास्तुपुरुषाय नम:" ब्रह्मणे नम:, गणपतये नम:, वायवे नम:** से पूजन करें।

सरसों विकरण करते हुये विघ्न निवारण करें।

अपसर्पन्तु ये भृता ये भृता भृमि संस्थिता: ।
ये भृता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

हुं फट् स्वाहा से सरसों फेकें।

[illegible] का [illegible] या [illegible] मन्त्रों से रक्षण करें ये मन्त्र कवच व पञ्च[illegible] में [illegible] गये हैं।

आसन का संशोधन करें। "ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा" से भूमि का प्रोक्षण करें। आसन के नीचे त्रिकोण मण्डल बनाकर उसके बीच में ह्रीं मन्त्र लिखें। ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः से पूजन करें। अस्त्र से संरक्षण करें।

आसन के त्रिकोण में सं सरस्वत्यै नमः। वायव्ये दुं दुर्गायै नमः। ईशाने - क्षं क्षेत्रपालाय नमः से पूजन करें।

आसन का स्पर्श करें -

पृथिवी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

शिखा बन्धन करें - ॐ मणिधारिणी वज्रिणि महाप्रतिसरे रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ईशान कोण में त्रिकोण बनाकर दीप जलावें। प्रार्थना करें

ॐ रक्तवर्ण द्वादशशक्ति सहिताय दीपनाथाय नमः। ॐ मार्तण्ड भैरवाय नमः।

भो दीप देवस्वरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत् कर्म समाप्तिं स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भवः ॥

पूजा सङ्कल्प करके पश्चात् ध्यान करें वामे गुं गुरेभ्य नमः, दक्षिणे गं गणपत्ये नमः, हृदये इष्ट देवतायै वं वटुकाय नमः।

गुरु मण्ड़ल का ध्यान करें -

श्रीनाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम् ।
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीत्रयं मण्डलम् ॥
वीरान्द्वष्ट्य चतुष्क षष्टि नवकं वीरावली पञ्चकम् ।
श्रीमन्मालिनि मन्त्रराज सहितं वन्दे गुरोर्मण्ड़लम् ॥

अपने गुरु एवं गुरु की पत्नि का अमुकाम्बा नाम से ध्यान कर पादुका पूजन करें।

गुरु पादुका मन्त्र में बीजाक्षर भेद से चार प्रकार से है। लघु, स्थूल, मध्य एवं वृहत् पादुका।

विनियोगः - अस्य श्री गुरु पादुका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः गायत्री छन्दः श्री गुरुर्देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

स्वगुरु, परमगुरु, परात्परगुरु तथा परमेष्ठीगुरुओं का "ऐं ह्रीं श्रीं" बीजाक्षरों से

पादुका पूजन करें। यथा -

लघुपादुका मन्त्र - **ऐं ह्रीं श्रीं स्वगुरु अमुकानन्दनाथ अमुकाम्बा सहिताय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।**

स्थूल पादुका मन्त्र - चारों गुरुओं के पादुका पूजन से पहले "**ऐं ह्रीं श्रीं ह स ख फ्रें ह स क्ष म ल व रयूं स ह ख फ्रें स ह क्ष म ल व र यीं हसौं सहौं अमुकानन्दनाथ अमुकाम्बा सहित श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि**" से पूजन करें।

पादुका पूजन से सभी विघ्नों से रक्षा होती है।

भूतशुद्धि - प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृकान्यास तथा बहिर्मातृका न्यास पुस्तक के प्रारंभ में ***पृष्ठ संख्या ३५ पर*** दिये गये हैं।

इसके बाद बटुकमन्त्र के न्यास अन्य एकादश न्यास विविध न्यास करें।

मन्त्रन्यास -.**ॐ अस्य श्री बटुकभैरव मन्त्रस्य वृहदारण्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री बटुकभैरव देवता, ह्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिं। आं कीलकम् श्री बटुकभैरव प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः - वृहदारण्य ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छंदसे नमः मुखे । श्री बटुकभैरव देवतायै नमो हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तिं नमः पादयोः। आं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

पञ्चब्रह्मन्यास :

ह्रों वौं ईशानाय नमः अंगुष्ठयोः।
हैं वैं तत्पुरुषाय नमःतर्जनीयोः।
हुं वूं अघोराय नमः मध्यमयोः।
ह्रीं वीं वामदेवाय नमः अनामिकयोः।
ह्रां वां सद्योजाताय नमः कनिष्ठिकयोः।

हृदयादिन्यासः

ह्रां वां हृदयाय नमः
हीं वीं शिरसे स्वाहा
हुं वूं शिखायै वषट्
हैं वैं कवचाय हुँ
ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट्
हः वः अस्त्राय फट्

प्रेतबीज न्यास :

ॐ हस हौं हृदयाय नमः
ॐ हस हौं शिरसे स्वाहा
ॐ हस हौं शिखायै वषट्
ॐ हस हौं कवचाय हुँ

सिंहबीज न्यासः

ॐ हसक्षं नमः शिरसि
ॐ हसक्षं नमः बाह्वौ
ॐ हसक्षं नमः लिङ्गे
ॐ हसक्षं नमः नाभौ

ॐ हस हौं नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ हस हौं अस्त्राय फट्
ॐ हमक्षं नमः हस्ताङ्गुलीषु
ॐ हसक्षं नमः पादाङ्गुलीषु

काणबीजन्यासः - **ॐ झ्रौं नमः** सभी जगह उच्चारण करते हुये न्यास करें। **ब्रह्मरंध्रे। मुखे। नेत्रद्वये। ग्रीवायाम्। नासापुटयोः। कपोलयोः। चिबुके। ब्रह्मरंध्रे।**

सत्याबीजन्यासः - "**ॐ मलहों नमः**" उच्चारण सहित सभी अङ्गों में न्यास करें। **पादयोः। हस्तयोः। करयोः। नेत्रयोः। कर्णयोः। मुखे। कुक्षिद्वये। लिङ्गे।**

महाश्रीबीजन्यासः "**ॐ श्रृं नमः**" से सभी अङ्गों में न्यास करें। **चिबुके। पादयोः। कर्णयोः। हृदये। मुखे। पादयोः। नाभौ। पादयोः।**

प्राणबीजन्यासः - "**ॐ क्रृं नमः**" से सर्वत्र न्यास करें। **यथा - हृदये। मुखे। हृदये। नाभौ। हृदये। पादयोः। हृदये। सव्यकुक्षौ। हृदये। वामकुक्षौ। हृदये। दक्षपादतले। हृदये। वामपादतले। हृदये।**

घण्टाबीजन्यासः - "ॐ घृं नमः" से अङ्गन्यास करें। **यथा - गलघण्टिकायां। नाभौ। घण्टिकायां। हृदये।**

ख्यातिबीजन्यासः "ॐ खन्यू नमः" से अङ्गों का न्यास करें। **यथा - मस्तके। पादयोः। ग्रीवायां। नाभिमण्डले। गले। हृदये। जंघयोः। नेत्रयोः। कणर्याः। बाह्वोः। स्तनयोः।**

मूलबीजन्यासः - "**ॐ ॐ नमः**" से अङ्गों का न्यास करें। **यथा - हृदये। मुखे। पादयोः। कर्णयोः। हस्तयोः। नासापुटयोः।**

भ्रामरीबीजन्यासः - "**ॐ भ र ल स हीं नमः**" से अङ्गों का न्यास करें। **यथा - मुखे। नेत्रद्वये। कर्णद्वये। कपोलयोः। गण्डयोः। कण्ठदेशे। स्तनयोः। हृदये। पादयोः। चिबुके। मस्तके। बाह्वोः। स्कंधयोः। दन्तपंक्त्योः। ब्रह्मरन्ध्रे। आधारे। भ्रूमध्ये।**

आकुतिन्यासः - "**ॐ न म र ल म र क्ष र श र ह स्रीं नमः**" से सभी जगह न्यास करें। **यथा - शिरसि। गण्डयोः। वक्त्रे।**

कालबीजन्यासः - "**ॐ क र ल स र म रीं**" नमः से न्यास करें। **यथा - नेत्रयोः। कर्णयोः। नाभौ। लिङ्गे। गुदे।**

विद्याबीजन्यासः - **ॐ क्ष र स र हसीं** नमः से न्यास करें। **यथा -**

कपोलयोः। ब्रह्मरन्ध्रे। दंतपंक्त्योः।

शृंखला महापराख्यबीजन्यासः - "ॐ सह महल कलइ शग्वर वल व ऊ ई नमः" से सभी अङ्गों का न्यास करें। यथा - मस्तके। दक्षनेत्रे। वामनेत्रे। दक्षकर्णे। वामकर्णे। दक्षिण कपोले। वाम कपोले। दक्षगण्डके। वामगण्डके। चिबुके। गले। दक्षस्कंधे। वामस्कंधे। दक्षस्तने। वामस्तने। हृदये। दक्षकुक्षौ। वामकुक्षौ। नाभौ। वक्षसि। दक्षजंघे। वामजंघे। लिङ्गे। दक्षमेण्ढ्रे। वाममेण्ढ्रे। मूलाधारे। दक्षगुल्फे। वामगुल्फे। दक्षपादे। वामपादे। दक्षपादाङ्गुलिषु। वामपादाङ्गुलिषु। ब्रह्मरन्ध्रे। मूलाधारे। ब्रह्मरन्ध्रे।

महासरस्वतीबीजमातृकान्यासः - " ॐ क ल ड र स ह र ह क्ष श र ई" प्रारंभ में बोलते हुये सभी अङ्गों का न्यास करें। यथा - ललाटे। मुखवृत्ते। दक्षनेत्रे। वामनेत्रे। दक्षकर्णे। वामकर्णे। दक्षनासापुटे। वामनासापुटे। दक्षगण्डे। वामगण्डे। उर्ध्वोष्ठे। अधरोष्ठे। उर्ध्वदन्तपंक्तौ। अधोदन्तपंक्तौ। शिरसि। मुखाभ्यन्तरे। दक्षबाहुमूले। दक्ष कर्पूरे। दक्ष मणिबंधे। दक्षकरांगुलिमूले। दक्षकरांगुल्यग्रे। वामबाहुमूले। वाम कपूरे। वाममणिबन्धे। वामकराङ्गुलिमूले। वामकराङ्गुल्यग्रे। दक्षपादमूले। दक्षजानुनि। दक्षगुल्फे। दक्षपादाङ्गुलिमूले। दक्षपादांगुल्यग्रे। वाम पादमूले। वाम जानुनि। वाम गुल्फे। वामपादांगुलिमूले। वामपादाङ्गुल्यग्रे। दक्षपार्श्वे। वामपार्श्वे। पृष्ठदेशे। नाभौ। जठरे। हृदि। दक्षांसे। ककुदि। हृदयादि दक्षकरांगुल्यग्र पर्यन्तम्। हृदयादि वामकराङ्गुल्यग्र पर्यन्तम्। हृदयादि दक्षपादाङ्गुल्यग्र पर्यन्तम्। हृदयादि वामपादाङ्गुल्यग्र पर्यन्तम्। नाभ्यादि हृदय पर्यन्तम्। हृदयादि मुख पर्यन्तम्।

अथपीठन्यासः - हृदय कमल में देवता के पीठ की भावना करनी चाहिये।

ॐ मण्डूकाय नमः मूलाधारे। ॐ कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने। ॐ कूर्माय नमः नाभौ। हृदये - ॐ अनन्ताय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ सुधांबुधये नमः। ॐ रत्नदीपाय नमः। ॐ मणिमण्डपाय नमः। ॐ कल्पवृक्षाय नमः। ॐ रत्नवेदिकायै नमः। ॐ धर्ममाय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ ऐश्वार्याय नमः। ॐ अं अधर्माय नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ अवैराग्नाय नमः। ॐ अनैश्वार्याय नमः। ॐ आनन्दकंदाय नमः। ॐ संविन्नालय नमः। ॐ सर्वतत्व पद्माय नमः। ॐ प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः। ॐ विकारमय केसरेभ्यो नमः। ॐ पञ्चाशद्वर्ण बीजाढ्यकर्णिकायै नमः। ॐ अर्कमण्डलाय नमः। ॐ सोममण्डलाय नमः। ॐ वह्निमण्डलाय

नमः। ॐ सं सत्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ अं अंतरात्मने नमः। ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। ॐ मां मायातत्वात्मने नमः। ॐ विं विद्यातत्वाय नमः। ॐ शिं शिवतत्वात्मने नमः। ॐ पं परतत्वाय नमः।

हृदयकमल के चारों ओर अष्ट दिशाओं में न्यास करें।

ॐ वां वामायै नमः। ॐ ज्यां जैष्ठायै नमः। ॐ रौं रौद्रायै नमः। ॐ कां काल्यै नमः। ॐ कं कलविकरण्यै नमः। ॐ बं बलविकरण्यै नमः। ॐ बं बलप्रमथिन्यै नमः। ॐ सं सर्वभूतदमनायै नमः। मध्ये ॐ मं मनोन्मन्यै नमः। ॐ नमो भगवते सकल गुणात्म शक्तियुक्ताय अनंतयोग पीठाय नमः।

इस तरह न्यास युक्त हृत् कमलासन पर अपने इष्टदेवता का ध्यान करना चाहिये।

॥ सुधाकुम्भ स्थापनम् ॥

तान्त्रिक यन्त्रार्चन आवरण पूजा से पहले सुधा मांसादि द्रव्यों का शोधन करना जरूरी है। अतः प्रथम सुधा कुंभ का पूजन स्थापन कर सुधा (प्रथम तत्व) का शोधन करें।

अपने वामभाग में त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्र मण्डल बनाकर शङ्खमुद्रा दिखायें। इष्ट मन्त्र के तीन विभाग करें उनको कूट कहते हैं।

जैसे बटुक मंत्र में १. ह्रीं बटुकाय २. आपदुद्धारणाय ३. कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।.

त्रिकोण के तीनों कोणों में तीनों कूटों से पूजन करें। त्रिकोण में माया बीज 'ह्रीं' से पूजन करें।

षट्कोण में अधोमुख एवं उर्ध्वमुख दो त्रिकोण बनते हैं। इनमें मन्त्र के त्रिकूटों से प्रथम बार दक्षिणावर्त से एवं द्वितीय आवृत्ति वामावर्त से करने पर षट्कोणों का पूजन होता है। पुनः अग्निकोणे हृदयशक्तिं पूजयामि। ईशान्ये शिरः शक्तिं पूजयामि। वायव्ये शिखाशक्तिं पूजयामि। नैऋत्ये कवचशक्तिं पूजयामि। त्रिकोणमध्ये नेत्रशक्तिं पूजयामि। द्वारे अस्त्रशक्तिं पूजयामि। इस प्रकार षट्कोण का पूजन कर वृत्त की 'अं आं इं ईं..........हं लं क्षं' इत्यादि मातृकावर्णों से पूजन करें।

चतुरस्र के चारों द्वारों में पूजन करें — पूर्वे — ओड्यान पीठाय नमः। दक्षिणे

जालंधर पीठाय नमः। पश्चिमे - **पूर्णगिरि पीठाय नमः।** उत्तरे **कामरूप पीठाय नमः।**

इस प्रकार मण्डल की पूजा करें। '**ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः**' से आधार पात्र का प्रक्षालन कर मण्डल पर रख कर पूजन करें। एवं अग्नि की दश कलाओं का पूजन उस पर करें।

ॐ अर्थप्रद दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः। वह्निकलां पूजयेत् **यं धूम्रार्चिषे नमः, रं उष्मायै नमः, लं ज्वलिन्यै नमः, वं ज्वालिन्यै नमः, शं विस्फुलिंगिन्यै नमः, षं सुश्रियै नमः, सं सुरूपायै नमः, हं कपिलायै नमः, लं हव्यवाहायै नमः, क्षं कव्यवाहायै नमः।**

तदनन्तर कलश को '**फट्**' मंत्र से धोकर, '**नमः**' से आधार पर स्थापित करें। कलश पात्र में सूर्य की कलाओं का पूजन करें।

ॐ अर्थप्रद द्वादशकलाय अर्कमण्डलकलात्मने नमः, ॐ कं भं तपिन्यै नमः, ॐ खं बं तापिन्यै नमः, गं फं धूम्रायै नमः, घं पं मरीच्यै नमः, ङं नं ज्वालिन्यै नमः, चं धं रुच्यै नमः, छं दं सुषुम्नायै नमः, जं थं भोगदायै नमः, झं तं विश्वायै नमः, ञं णं बोधिन्यै नमः, टं ढं धारिण्यै नमः, ठं डं क्षमायै नमः।

कारण अर्थात् सुधा पात्र अलग हो तो उसका भी उपरोक्त विधि से मण्डल बनायें, आधारपात्र स्थापन करें, कलश पूजन करें, उसके बाद सुधा के संस्कार कर फिर '**अं आं.........लं क्षं**' मातृका वर्ण बोलते हुये पात्र में सुधा डालें। अथवा इसी पात्र में सुधा के संस्कार करें।

यथा - **ॐ कामप्रद षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः। चन्द्रमा की कलाओं का पूजन करें-**

ॐ अं अमृतायै नमः। आं मानदायै नमः। इं पूषायै नमः। ईं तुष्ट्यै नमः। उं पुष्ट्यै नमः। ऊं रत्यै नमः। ऋं धृत्यै नमः। ॠं शशिन्यै नमः। लृं चन्द्रिकायै नमः। लॄं कान्त्यै नमः। एं ज्योत्स्नायै नमः। ऐं श्रियै नमः। ओं प्रीत्यै नमः, औं अङ्गदायै नमः। अं पूर्णायै नमः। अः पूर्णामृतायै नमः। इसके बाद सुधा के संस्कार करें।

(१) '**ॐ वौषट्**' मन्त्र पढकर देखें (२) ''**फट्**'' मन्त्र से रक्षा करें (३) '**हुँ**' से अवगुण करें(४)'**वषट्**' से शुद्ध करें (५) '**स्वाहा**' से पूजन करें।

सुधा गायत्री का दश बार जप करें।

ॐ सुधा देव्यै च विद्महे कामेश्वर्यै च धीमहि। तन्नो रक्ताक्षिः प्रचोदयात्॥

सुधायाः शापविमोचनम् –

एवमेव परंब्रह्म स्थूल सूक्ष्ममयं ध्रुवम् ।
कवचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥
सूर्यमण्डल संभूते वरुणालयसंभवे ।
आस्यबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥
वेदानां प्रणवोबीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि ।
तेन सत्येन मे देवि ब्रह्महत्या व्यपोहतु ॥

पात्र को आच्छादित करके उपरोक्त मन्त्रों को पढ़ें

ॐ सां सीं सूं सैं सौं सः शुक्रशाप विमोचिकायै सुगदेव्यै नमः। इति द्वादशा जपेत् ॥१॥ **ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्मशाप विमोचिकायै सुगदैव्यै नमः।** इति दशधा जपेत् ॥२॥ **ॐ ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुधाकृष्णशापं विमोचय विमोचय श्रावय श्रावय स्वाहा।** इति दशधा जपेत् ॥३॥ **ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः रुद्रशापविमोचिकायै सुरादैव्यै नमः।** इति दशधा जपेत् ॥४॥ **ॐ ह्रीं क्रीं परमस्वामिनी परमाकाश शून्यवाहिनी चन्द्रसूर्याग्नि भक्षिणि त्वं पात्रं विश विश स्वाहा।** इति घटोपरि दशधा जपेत् ॥५॥ **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महेश्वराय विद्महे सुधादेव्यै च धीमहि। तन्नोऽर्द्धनारीश्वरः प्रचोदयात्।** इति दशधा जपेत् ॥६॥

इसके बाद पात्र पर दश दोष निवारण हेतु "अक्षत्" फेंके।

दोष निवारण हेतु चाण्डालिनियों के बीजाक्षरों में अलग अलग तंत्रों में मतभेद है। कहीं "**ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें**" है तो कहीं "**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह त् क्ष् ल् व् फ्रें**" इत्यादि बीज मन्त्र है। कहीं तपनीय वध चाण्डालिनी की जगह बुध चाण्डालिनी है, निर्दय चाण्डालिनी की जगह निर्दोष चाण्डालिनी का प्रयोग है तो सर्वजन दृष्टि दोष निवारण हेतु -**पशुपाश चाण्डालिनी** का उल्लेख है। (तन्त्रों में अज्ञानी व निंदक को पशु संज्ञा दी गई है)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पथिक देवताभ्यो हुं फट् स्वाहा ॥१॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें यं रं लं आं आस्फालिनी ग्रामचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा॥२॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां संगम स्पर्श चाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥३॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फ्रें घं ङं लं क्षं दृष्टिचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥४॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ग्लौं ग्लां क्रोधचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥५॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं सृष्टिचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥६॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं क्रों घटचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥७॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं

छं तपनीयवधचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥८॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं आं क्रों क्लीं निर्दयचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा ॥९॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्रृं छं स्त्रौं खेदय खेदय सर्वजन दृष्टिस्पर्श दोषाय हुँ फट् स्वाहा ॥१०॥ ॐ हंसः शुचिषद्व-सुरंतरिक्षसन्द्धौता वेदिपदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृत सद्व्योम सदब्जागोजा-ऋतजा अद्रिजा ऋतंबृहत् ॥११॥

इस मन्त्र को ३ बार द्रव्य पर पढ़ें। गंध पुष्पाक्षत छोड़ें तथा दोष रहित इस सुधाद्रव्य के मध्य में आनन्दभैरव व आनन्दभैरवी का ध्यान करें।

ॐ सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम् ।
अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम् ॥१॥
अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरिस्थितम् ।
वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम् ॥२॥
कपालखट्वाङ्गधरं घण्टाडमरुवादिनम् ।
पाशाङ्कुशधरं देवं गदामुशलधारिणम् ॥३॥
खडगखेटक पट्टीशं मुदगरं शूलदण्डधृक ।
विचित्र खेटकं मुण्डं वरदाभयधारिणम् ॥४॥
लोहितं देवदेवेशं भावयेत् साधकोत्तमः ॥५॥

आनन्दभैरव का तीन बार पूजन करें ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं ह स क्ष म ल व र यूं आनन्दभैरवाय वौषट्। इति मन्त्रेण संपूज्य॥

तदनन्तर आनन्दभैरवी का ध्यान करें। यथा -

भावयेच्च सुधां देवीं चन्द्रकोटियुतप्रभाम् ।
हेमकुंदेंदुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम् ॥१॥
अष्टदशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम् ।
प्रहसंतीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सम्मुखीम् ॥२॥

इतिध्यात्वा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसक्षमलवरयीं आनन्दभैरवीं सुधादेव्यै वौषट्। इत्यानन्दभैरवीं संपूजयेत्॥

ततः स्थालीमध्ये किंचिदद्रव्यंगृहीत्वाद्रव्य मध्ये शक्तिचक्रं विलिख्य तदभावे त्रिकोणदक्षावर्तेन विलिख्य। उर्ध्वरेखायाम् अं आं........अं अः। दक्षिणरेखायाम् - कं खं......णं तं। उत्तररेखायाम् थं दं......सं हं। दक्षिणपार्श्वे ॐ लं नमः। वामपार्श्वे ॐ क्षं नमः। त्रिकोणमध्ये ईं (कामकलां)

विलिख्य।

इसके बाद उन दोनों का संयोगीत्रस्था का ध्यान करें और यह समझें कि उनके दिव्य स्राव से यह द्रव्य अमृतमय हो गया है।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्लूं स्त्रौं जूं सः अमृते अमृतोद्भव अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा शुक्रादिशापात् सुरां मोचय मोचय मोचिकायै नमः।

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरिन्ति सिन्धवः। इत्यादि तीन ऋचाओं से पूजन करें। गङ्गादि तीर्थों का आवाहन करें।

ॐ ह्रीं ॐ जूं सः का २२ बार जप करें। ८ बार मूल मन्त्र का जप करें। सुधामन्त्र से अभिमन्त्रित करें यथा -

पावमानः परानन्द पावमानः परो रसः ।
पावमानं परं ज्ञानं तेन ते पावयाम्यहम् ॥

पश्चात् धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करें, मत्स्यमुद्रा से आच्छादन करें। कवच मन्त्र 'हुँ' से अवगुंठन, अस्त्र से रक्षा, स्फटिका मुद्राभिदर्श, दिग्बंधनं कृत्वा।

कलश का ध्यान करें -

देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि महाकुंभ विष्णुनाविधृतः करे॥१॥ त्वत्तोये सर्वदेवाः स्युः सर्वेवेदाः समाश्रिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयिप्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥ शिवस्त्वं च घटोऽसि त्वं विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्याद्या ग्रहाःसर्वे विश्वेदवाः सपैतृकाः॥३॥ त्वयि तिष्ठंति कलशे यतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भवे॥४॥ त्वदावलोकनमात्रेण भुक्तिमुक्तिफलं महत्। सान्निध्यं कुरु भो कुंभ प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

इसके बाद "**घटसूक्त**" का पाठ कर प्रार्थना करें -

समुद्रे मथ्यमाने तु क्षीरोदे सागरोत्तमे ।
तत्रोत्पन्नां सुरां ध्यायेत् कन्यकारूपधारिणीम् ॥१॥
अष्टादशभुजां देवीं रक्तान्तायत-लोचनाम् ।
आपीनवर्णां स्वर्गाभां बहुरूपां परां सुराम् ॥२॥
सा सर्वे संस्तुताः सर्व देवानामभयंकरि ।
या सुरा सा रमादेवी यो गंधः स जर्नादनः ॥३॥

यो वर्णः स भवेद् ब्रह्मा यो मदः स महेश्वरः ।
स्वादे तु संस्थितः सोमः शब्दसंस्थो हुतासनः ॥४॥
इच्छायां मन्मथो देवः पाताले तु च भैरवः ।
घटो ब्रह्माः रसोविष्णुर्विद्रवो रुद्र एव च ॥५॥
हुंकारः ईश्वरो प्रोक्तो व्योमादेस्तु सदाशिवः ।
घटमूले स्थितो ब्रह्मा घटमध्ये तु माधवः ॥६॥
घटकण्ठे नीलकण्ठो घटाग्रे सर्वदेवताः ।
लध्वी हि वारुणी देवी महामांसचरुप्रिया ॥७॥
सर्वविद्या तु या देवी सुरो देवि नमोऽस्तुते ।
अनेन घट सूक्तेन द्रव्यशुद्धि प्रजायतेः ॥८॥

इसके बाद कलश की प्राणप्रतिष्ठा करें। हाथ से कलश को आच्छादित करें। **ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं श्रीमद् बटुकभैरवस्याधार सहितस्य कलशेऽस्मिन् अग्निसूर्यसोमकलानां प्राणा इह प्राणाः।**

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं श्री बटुकभैरव कलशेऽस्मिन् जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं श्री बटुकभैरव कलशेऽस्मिन् सर्वेन्द्रियाणिवाड्मनस्त्वक्-चक्षुर्जिह्वा- श्रोत्र- घ्राण - प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा॥ इति प्राण प्रतिष्ठा॥ गंधादिभिः कलशं संपूजयेत्।

कलश में पाँच रत्नों की पूजा करें - (पूर्वे) **ग्लूं गगन रत्नाय नमः।** (दक्षिणे) **स्लूं स्वर्ग रत्नाय नमः** (पश्चिमे) **प्लूं पाताल रत्नाय नमः।** (उत्तरे) **म्लूं मर्त्यरत्नाय नमः।** (मध्ये) **न्लूं नागरत्नाय नमः।**

कलश बलिः- रक्तचन्दन सिन्दूर कुंकुम से कलश के पास त्रिकोण वृत्त चतुरस्त्र मंडल बनाये। '' **सर्वपथिक देवेभ्यो नमः** '' से गंधार्चन करे। मत्स्य मुद्रा से बलि रखें। बांये हाथ से ३ बार कलश पर घुमावे एवं बलि को बाहर विर्सजित करे।

शुद्धि स्थापन विधिः (द्वितीय तत्त्वं मासं)

कुम्भस्य वामतः शुद्धिं संस्थाप्य। अग्नि मण्डलाय नमः। ॐ धर्मप्रद द्वादश कलात्मने शुद्धिपात्राय नमः। कामप्रद षोडश सोमकलात्मने नमः। धेनुमुद्रा दिखावें।

ॐ उद्बुध्यस्व पशो त्वं हि न पशुस्त्वं शिवोऽसि भोः। शिवोकृत्यमिदं पिण्डंयतस्त्वं शिवतां व्रज॥

ॐ पशु पाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि। तन्नो छागः (मांस) प्रचोदयात्॥ यह पशु गायत्री मंत्र तीन बार कहें।

॥ अथ पात्रासादन प्रयोगः॥

शङ्खस्थापनम् :- कुंभ के समीप त्रिकोण वृत्त चतुरस्र मण्डल बनाकर **ॐ आधारशक्तये नमः** से पूजन करें। इस पर त्रिपदी स्थापन करें। **ॐ धर्मप्रद दशकलात्मने वह्निमण्ड़लाय नमः** से उसका पूजन करें। शङ्ख का प्रक्षालन करके उस पर रखें एवं **ॐ अर्थप्रद द्वादशकलात्मने सूर्यमण्ड़लाय नमः** से पूजन करें।

तीर्थमण्ड़लों का आवाहन कर शुद्धजल से पूरण कर जल में **ॐ कामप्रद षोड़शकलात्मने सोममण्डलाय नमः** से पूजन करें।

शङ्ख का पूजन करें -

शङ्खादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता ।
पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गङ्गा सरस्वती ॥
त्रैल्ोक्यं यानि तीर्थानि वासुदेवस्यचाज्ञया ।
शङ्खे तिष्ठति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत् ॥

प्रार्थना करें-

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते ॥

ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि। तन्न शङ्खः प्रचोदयात् ॥

घण्टास्थापनम् - देव दक्षिणतः घण्टां संस्थाप्यः, नादं कृत्वा, पूजयेत - ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः। ॐ जगद्ध्वने मन्त्रमातः स्वाहा। गरुड मुद्रा दिखावें।

दीपस्थापनम् - देवस्य दक्षिणभागे घृतदीपं वामे तैलदीपं स्थापयेत्। सुदर्शन मन्त्र से घृतदीप का पूजन करें। ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः सुदर्शनायास्त्राय फट् स्वाहा। तेलदीप की "ॐ श्लीं पशु हुं फट् स्वाहा"। इस पाशुपत मन्त्र से पूजन करें।

दीपशिखा का स्पर्श करें ॐ अघोराय घोरतमाय महारौद्राय वीरभद्राय ज्वालामालिने सर्वदुष्टप्राणोपसंहर्त्रे हुं फट स्वाहा।

''ॐ मार्तण्ड भैरवाय नमः'' से नमस्कार करें तेज को अपनी आत्मा से समीभूत कर चित्त का शोधन करें।

''हुं फट् स्वाहा'' से मुख एवं ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा हृदये से हृदय पर हाथ रख कर रक्षा करें।

हाथ में अक्षत पुष्प लेवें उन्हें सूंघकर मर्दन करके ईशान दिशा में दूर फेंके

ॐ ते सर्वे विलयं यांतु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः ।
मृत्युरोगभयक्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके ॥

हस्त प्रक्षालन करें।

विशेषार्घ्यस्थापनम् – अपने एवं श्रीचक्र (देवयन्त्र) के बीच में सुधाकुंभ कलश की पूर्व विधि के समान विशेषार्घ का स्थापन करें।

वामे शङ्ख प्रतिष्ठाय मध्ये चार्घ्यं प्रकल्पयेत्। दक्षिणे प्रोक्षणीपात्र मर्घ्यत्रय विकल्पने। दृष्ट्वार्घ्यपात्रं देवेशि ब्रह्माद्या देवताः सदाः । नृत्यंति सर्वयोगिन्यः प्रीताः सिद्धि ददत्यपि॥

विशेषार्घ में सुधाकुंभ से सुधा का पूरण कर निम्न मन्त्रों से अभिमन्त्रित करें -

ऐं क्लीं सौः ब्रह्माण्डखण्डसम्भृतमशेषरस संभवम् ।
आपूरितं महापात्रं पीयूष रसमावह ॥१॥
ऐं अखण्डैक रसानन्द कलेवर सुधात्मनि ।
स्वच्छंदस्फुरणा मन्त्रा निधेहिकुलरूपिणि ॥२॥
क्लीं अकुलस्थामृताकरे शुद्धज्ञान करे परे ।
अमृत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तूनि क्लिन्नरूपिणी ॥३॥
सौः तद्रूपिण्यैकरस्यत्वं कृत्वाह्येतद स्वरूपिणी ।
भूत्वा परामृताकारं मयि विस्फुरणं कुरु ॥४॥

देवता के दक्षिण में प्रोक्षणीपात्र रखें। विशेषार्घ के वाम भाग में

श्रीपात्र ॥१॥ गुरुपात्र ॥२॥ भैरवपात्र ॥३॥ शक्तिपात्र ॥४॥ योगिनीपात्र ॥५॥ भोगपात्र ॥६॥ वीरपात्र ॥७॥ आत्मपात्र ॥८॥ बलिपात्र ॥९॥ की स्थापना करें।

दक्षिण में पाद्य, अर्घ्य, आचमन एवं मधुपर्कादि चार पात्रों की स्थापना करें। अशक्ति में गुरु पात्र, वीरपात्र, आत्मपात्र, बलिपात्र एवं भोगपात्र की स्थापना करें। तथा पाद्यादि अन्य उपचार हेतु एक पात्र की स्थापना करें।

पात्रों का उपयोग यन्त्रार्चन में अलग अलग देवों के अर्चन हेतु होता है। श्रीपात्र से प्रधान देवों का, गुरुपात्र से गुरुमण्डल का एवं गुरु के हेतु, भैरवपात्र में अष्टभैरवों का, शक्तिपात्र से प्रधानदेव की शक्तियों का तथा पूजन समय में आपके सहभाग में मैथुन शोधन हेतु अपनी संगिनी शक्ति हेतु, योगिनीपात्र से योगिनियों का, भोगपात्र एवं वीरपात्र से यन्त्र के परिधि देवता व इन्द्रादि लोकपालों का तथा आत्मपात्र से स्वयं का तथा बलिपात्र से बलिदेवताओं का तर्पण एवं प्रसाद ग्रहण होता है।

माँसशोधनम् – **ॐ पशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि।**
तन्नो माँस प्रचोदयात् ॥ इसका १० बार जप करें।

मीनशोधनम् – **ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्** ॥

मुद्राशोधनम् – (मुद्रा अर्थात् चर्वण वस्तु नमकीन इत्यादि) **ॐ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति। गर्भं ते अश्विनौ धत्तां वर्धेतां पुष्करस्त्रजौ** ॥

ॐ प्लूं ज्लूं ग्लूं स्वाहा। इति मन्त्रेण मांसमीनमुद्राः शोधयेत्।

शक्तिशोधनम् – मैथुनानन्द शोधन हेतु (रेतसः तर्पण हेतु) शक्ति की आवश्यकता है, अतः शक्ति दीक्षित होनी चाहिये अन्यथा उसके बायें कान में १० बार "**ह्रीं**" मन्त्र का जप कर शोधन करें। शक्ति का अर्चन अन्तरयाग पूजन में आता है जिसे चक्रपूजा कहते हैं अतः इसका विधान गुप्त है एवं इसके अधिकारी बिरले ही होते है, कारण शक्ति के अर्चन में बिन्दु का क्षरण नहीं होना चाहिये बिन्दु के क्षरण की अवस्था जब आने लगे तब उस बिन्दु को साधक प्राणायाम द्वारा नाभि मण्डल में खींचता है।

इस प्रकरण हेतु साधक को योग क्रियायें सीखनी चाहिये अन्यथा मुजाक व अन्य बिमारियाँ होने की संभावना रहती है।

चक्रपूजा अन्तर्गत शक्ति व स्वयं के अङ्गों में देवता के यन्त्रावरण देवों के न्यास करें, योनिकवच, योनिस्तोत्र, लिङ्गस्तोत्र द्वारा [illegible] मुख व पितृमुख का पूजन करें त्रिपुष्कर (योनि) एवं शिवदण्ड (लिङ्ग) [illegible] दूसरे में समर्पित करें।

इसमें विपरीत रतिक्रिया करने से साधक बिन्दु को नाभिमण्डल तक खींच सकता है।

अशक्त साधक रक्तपुष्प में आनन्दभैरवी तथा श्वेतपुष्प में आनन्दभैरव का पूजन करें। यन्त्रार्चन के बाद श्वेतपुष्प को नीचे रखकर उसके ऊपर रक्तपुष्प को अधोमुख कर दोनों का संयोग अवस्था अर्थात् विपरीत रति का ध्यान करें।

उसके बाद पात्रों से सुधा ग्रहण कर, मांसादि का प्रसाद ग्रहण करें। पात्र ग्रहण करने के भी कई मन्त्र हैं।

शक्तिशोधन हेतु सामान्य विधान इस प्रकार है

ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः, इमां शक्तिं पवित्रीं कुरु कुरु स्वाहा।

''**मम शक्ति कुरु कुरु**'' से सामान्य जल से प्रोक्षण करें। उसके कर्ण में अपने इष्ट मन्त्र का जप करें। सुगन्धित द्रव्यों से शक्ति का लेपन करें -

कर्पूरं चैव कस्तूरीमिश्रितं चन्दनं तथा ।
सर्वाङ्गलेपनं कुर्यात् लक्ष्मीसूक्तेन बुद्धिमान ॥
पर्यङ्कोपरि तां कन्यां चन्दनं विलेपिताम् ।
ध्रुवा द्यौः इति मन्त्रेण कन्यां दक्षिणतोमुखीम् ॥
उन्मुखीशयनं कुर्यात् श्रीसूक्तेन कुमारकः ।
तस्याः पादौ प्रसार्याऽथ गुप्तेनाऽर्चनमाचरेत् ॥
न्यस्त्वा षोढाद्वयं चैव स्तोत्रं पञ्जरं न्यसेत् ।
कन्यां चैव न्यसेदेवं तत्तदङ्गानि संस्मरन् ॥
पादं जपपुरं चैव मार्जयेन्मूलविद्यया ।
गंधद्वारेति मन्त्रेण कुर्यात् कस्तूरिलेपनम् ॥
मूलमन्त्रेण सम्यक् च पुष्पमालां समर्पयेत् ।
निवेदयेद द्रव्यशुद्धिं तत्रैव जपमाचरेत् ॥

ॐ हं ॐ हुं फट् स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं सुरतप्रिये॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ फट् स्वाहा।

ऐं प्लूं ह्रौं जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि शुक्रशापं मोचय मोचय अमृतं स्रावय स्रावय अमृतं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु ।
[illegible] प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥

गर्भं धेहि सिनीवाली गर्भं धेहि सरस्वति ।
गर्भं तेऽश्विनौ देवौ आधत्तां पुष्करस्त्रजौ ॥

॥ तिरस्करणीदुर्गा पूजनम् ॥

साधक जब मद्य माँसादि द्रव्यों से पूजन करता है तो निन्दकों द्वारा या अन्य किसी कारण से विघ्न की आशंका रहती है।

विशिष्ट साधक तिरस्करणी दुर्गा को सिद्ध करते हैं जिससे पूजा समय यदि किसी निन्दक या अदीक्षित का प्रवेश हो जाये तो मांसादि द्रव्यों का अन्य व्यञ्जनों में या पूजा सामग्री स्वरूप अन्य द्रव्यों में बदला हुआ दिखाई देवें।

ध्यानम् –

**नीलं हयं समधिरुह्य पुरः प्रयाति नीलांशुकभरणमास्य विलेपनाढ्या ।
निद्रापुटेन भुवनानि तिरोदधाना खड्गायुधा भगवती परिपातु भक्तान् ॥**

गंधाक्षत से पूजन कर मन्त्र का स्मरण करें।

ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि सर्व पशुजनमनश्चक्षु स्तिरस्करणीं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ग्लौं तिरस्करणीं सर्वजन वाग्वादिनी सकलपशुजन मनश्चक्षुषी श्रोत्र जिह्वा घ्राण तिरस्करणं कुरु कुरु ठः ठः ठः स्वाहा।

॥ स्वशरीरे आवरणदेवतान्यासः ॥

साधक जब विशिष्ट पूजा करे तो उसे अपने शरीर को तद्देवमय बनाने हेतु पीठ देवता तथा यन्त्र के आवरण देवताओं का न्यास स्वशरीर में करना चाहिये।

पीठावरणदेवतान्यासः – **ॐ मं मण्डूकाय नमः मूलाधारे, ॐ कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने, ॐ कूं कूर्माय नमः मणिपूरे। ॐ आं आधारशक्तये नमः, ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः, ॐ रं रत्नभूताय नमः, ॐ रं रत्नदीपाय नमः, ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः, ॐ रं रत्नवैदिकायै नमः** इत्यादि सभी न्यास हृदय में करें।

ॐ धं धर्माय नमः दक्षांसे, ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः वामांसे। ॐ वं वैराग्याय नमः वामोरौ, ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः दक्षोरौ। ॐ अं अधर्माय नमः वदने, ॐ अं अज्ञानाय नमः वामपार्श्वे, ॐ अं अनेश्वर्याय नमः दक्षपार्श्वे। ॐ अं अवैराग्याय नमः नाभौ।

हृदयकमल में - ॐ आं आनन्दाय नमः, ॐ सं सविन्नालाय नमः, ॐ पं प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः, ॐ विं विकारमय केशरेभ्यो नमः। ॐ अं अर्कमण्डलाय नमः ॐ चं चन्द्रमण्डलाय नमः, ॐ रं वह्निमण्डलाय नमः, ॐ सं सत्वबोधात्मने नमः, ॐ रं रजः प्रकृत्यात्मने नमः, ॐ तं तमस्तु मोहात्मने नमः, ॐ आं आत्मने नमः, ॐ पं परमात्मने नमः, ॐ अं अंतरात्मने नमः, ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने नमः, ॐ मां मायातत्वात्मने नमः, ॐ कं कलातत्वात्मने नमः, ॐ विं विद्यातत्वात्मने नमः, ॐ पं परतत्वात्मने नमः।

इसके बाद इष्टदेवता का हृदय में ध्यान करना चाहिये। पश्चात् यंत्र के आवरण देवताओं की स्वशरीर में स्थापना कर न्यास करें।

॥ अथ स्वशरीरे यंत्रावरण देवता न्यास ॥

प्रथमावरण न्यासः - पञ्चवक्त्र शिव के न्यास अपने वक्त्र में करें। ॐ तं तत्पुरुषायनमः पश्चिम वक्त्रे। ॐ इं ईशानाय नमः ईशान वक्त्रे। ॐ अं अघोराय नमः पूर्व वक्त्रे। ॐ वां वामदेवाय नमः दक्षिण वक्त्रे। ॐ सं सद्योजाताय नमः उर्ध्वमुखे।

पूर्वादिक्रमेण ॐ वां वामायै नमः, ॐ जें जेष्ठायै नमः, ॐ श्रें श्रेष्ठायै नमः, ॐ रौं रौद्रायै नमः, ॐ कां कालायै नमः, ॐ कं कलविकरणायै नमः, ॐ बं बलविकरणायै नमः, ॐ बं बलप्रमथनायै नमः। ॐ सं सर्वभूतदमन्यै नमः उर्ध्वभागे। ॐ मं मनोन्मनायै नमः हृदये।

ॐ हृं हृदयदेवाय भूतनाथाय नमः। शिरसि ॐ देवाय आदिनाथाय नमः। हूं शिखायां देवायानंदनाथाय नमः। ॐ कं कवचदेवाय सिद्धशावरनाथाय नमः बाह्वौ। ॐ नें नेत्रदेवाय सहजानन्दनाथाय नमः नेत्रे। ॐ अं अस्त्रदेवाय निंः सीमानन्दनाथाय नमः अस्त्रे। ॐ अं अस्त्र देवाय नमः।

ललाटे - (द्वितीयावरण देवतान्यासः) ॐ डां डाकिनी पुत्रेभ्यो नमः। ॐ शां शाकिनीपुत्रेभ्यो नमः। ॐ लां लाकिनी पुत्रेभ्यो नमः। ॐ कां काकिनी पुत्रेभ्यो नमः। ॐ सां साकिनी पुत्रेभ्यो नमः। ॐ हां हाकिनी पुत्रेभ्यो नमः। ॐ मां मालिनी पुत्रेभ्यो नमः। ॐ दें देवीपुत्रेभ्यो नमः। ॐ मां मातृपुत्रेभ्यो नमः। ॐ रुं रुद्रपुत्रेभ्यो नमः। ॐ ऊँ उर्ध्वमुखपुत्रेभ्यो नमः। ॐ अं अधोमुखपुत्रेभ्यो नमः।

कण्ठे – (तृतीयावरण देवतान्याम:) ॐ ब्रं ब्रह्माणीपुत्र वटुकाय नमः। ॐ मां माहेश्वरीपुत्र वटुकाय नमः। ॐ वैं वैष्णवीपुत्र वटुकाय नमः। ॐ इं इन्द्राणीपुत्र वटुकाय नमः। ॐ मं महालक्ष्मीपुत्र वटुकाय नमः। ॐ वां वाराहीपुत्र वटुकाय नमः। ॐ चां चामुण्डापुत्र वटुकाय नमः।

हृदये – (चतुर्थावरण देवतान्यास:) ॐ हें हेतुकाय नमः। ॐ त्रिं त्रिपुरान्तकाय नमः। ॐ वें वेतालाय नमः। ॐ अं अग्निजिह्वाय नमः। ॐ कां कालान्तकाय नमः। ॐ कं करालाय नमः। ॐ एं एयालाय नमः। ॐ त्रीं त्रीमाय नमः। ॐ अं अचलाय नमः। ॐ हां हाटकेशाय नमः।

नाभौ – (पञ्चमावरण देवतान्यास:) ॐ श्रीं श्रीकण्ठाय नमः। ॐ अं अनन्तेशाय नमः। ॐ सूं सूक्ष्मेशाय नमः। ॐ अं अमीशाय नमः। ॐ भां भारभूतीशाय नमः। ॐ अं अतिथीशाय नमः। ॐ स्थां स्थाण्वीशाय नमः। ॐ हं हरेशाय नमः। ॐ झिं झिंटीशाय नमः। ॐ भौं भौतिकेशाय नमः। ॐ सं सद्योजातेशाय नमः। ॐ अं अनुग्रहेशाय नमः। ॐ क्रूं क्रूरेशाय नमः। ॐ मं महासेनेशाय नमः।

स्वाधिष्ठाने – (षष्ठावरण देवतान्यास:) ॐ क्रौं क्रोधीशाय नमः। ॐ चं चण्डीशाय नमः। ॐ पं पञ्चान्तकेशाय नमः। ॐ शं शिवोत्तमेशाय नमः। ॐ एं एकरुद्रेशाय नमः। ॐ कूं कूर्मेशाय नमः। ॐ एं एकनेत्रेशाय नमः। ॐ चं चतुराननेशाय नमः। ॐ अं अजेशाय नमः। ॐ सं सर्वेशाय नमः। ॐ सों सोमेशाय नमः। ॐ लां लांगलीशाय नमः। ॐ दां दारुकेशाय नमः। ॐ अं अर्द्धनारीशाय नमः। ॐ उं उमाकान्तेशाय नमः। ॐ आं आषाढीशाय नमः।

मूलाधारे (सप्तावरण देवतान्यास:) – ॐ दं दण्डीशाय नमः। ॐ अं अत्रीशाय नमः। ॐ मं मीनेशाय नमः। ॐ मं मेषेशाय नमः। ॐ लों लोहितेशाय नमः। ॐ शिं शिखीशाय नमः। ॐ छं छगलण्डेशाय नमः। ॐ द्वि द्विरण्डेशाय नमः। ॐ मां महाकालीशाय नमः। ॐ बां बालीशाय नमः। ॐ भुं भुजङ्गेशाय नमः। ॐ पिं पिनाकीशाय नमः। ॐ खं खड्गीशाय नमः। ॐ बं बकीशाय नमः। ॐ श्वें श्वेतेशाय नमः। ॐ भृं भृग्वीशाय नमः। ॐ नं नकुलीशाय नमः। ॐ शिं शिवेशाय नमः। ॐ सं संवर्तकेशाय नमः। ॐ दिं दिव्ययोगिन्यै नमः। ॐ अं अन्तरिक्ष योगिन्यै नमः। ॐ भूं भूमिष्ठ योगिन्यै नमः। ॐ सं संवर्त्त योगिन्यै नमः।

पादयो (अष्टावरण देवतान्यासः) ॐ वं वज्रसहितेन्द्राय नमः। ॐ शक्ति सहिताग्नये नमः। ॐ दं दण्डसहित यमाय नमः। ॐ खं खड्ग सहित नैऋत्यै नमः। ॐ पां पाशसहित वं वरुणाय नमः। ॐ अं अंकुशसहित वां वायवे नमः। ॐ गं गदासहित सं सोमाय नमः। ॐ त्रिं त्रिशूलसहित ईं ईशानाय नमः। ॐ कं कमल सहित ब्रं ब्रह्मणे नमः। ॐ चं चक्रसहित अनन्ताय नमः।

॥ श्रीकण्ठादि कलामातृकान्यासः ॥

शिवप्रयोग, मृत्युञ्जयप्रयोग, भैरवप्रयोग में श्रीकण्ठादि कलामातृकान्यास विशेपरूप से किया जाता है। वैसे इन देवताओं का न्यास आवरण देवता में किया गया हैं।

ध्यानम् –

पाशाङ्कुश वराक्षस्त्रक्पाणि शीतांशु शेखरम् ।
त्र्यक्षं रक्तसुवर्णाभमर्धनारीश्वरं भजे ॥
बन्धूक कांचननिभं रुचिराक्षमालां -
पाशाङ्कुशौ च वरदं निजबाहुदण्डैः ।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्रमर्धाम्बिके-
शमनिशं वपुराश्रयामः ॥

ॐ ह्सौं अं श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः मस्तके। ॐ ह्सौं आं अनन्तेशशिवराजाभ्यां नमः मुखवृत्ते। ॐ ह्सौं इं सूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ ह्सौं ईं त्रिमूर्ति लोलाक्षीभ्यां नमः वामनेत्रे। ॐ ह्सौं उं अमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमः दक्षिणकर्णे। ॐ ह्सौं ऊं अर्थीश दीर्घघोणाभ्यां नमः वामकर्णे।

ॐ ह्सौं ऋं भारभूतीश दीर्घमुखीभ्यां नमः दक्षनासापुटे। ॐ ह्सौं ॠं अतिथीश गोमुखीभ्यां नमः वामनासापुटे। ॐ ह्सौं लृं स्थाण्वीश दीर्घजिह्वाभ्यां नमः दक्षगण्डे। ॐ ह्सौं ॡं हरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः वामगण्डे। ॐ ह्सौं एं झिण्टीशोर्ध्वकेशीभ्यां नम उर्ध्वोष्ठे। ॐ ह्सौं ऐं भौतिकेश विकृतमुखीभ्यां नमः अधरोष्ठे।

ॐ ह्सौं ओं सद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः उर्ध्वदन्तपंक्तौ। ॐ ह्सौं औं अनुग्रहेशोल्कामुखीभ्यां नमः अधोदन्तपङ्क्तौ। ॐ ह्सौं अं अक्रूरेश श्रीमुखीभ्यां नमः शिरसि। ॐ ह्सौं अः महासेनेश विद्यामुखीभ्यां नमः

मुखमध्ये।

ॐ ह्सौं कं क्रोधीश महाकालीभ्यां नमः दक्षस्कंधे। ॐ ह्सौं खं चण्डेशसरस्वतीभ्यां नमः दक्षकर्पूरे। ॐ ह्सौं गं पञ्चातकेशगौरीभ्यां नमः दक्षिणमणिबन्धे। ॐ ह्सौं घं शिवोत्तमेश त्रैलोक्यविजयाभ्यां नमः दक्षहस्ताङ्गुलिमूले। ॐ ह्सौं ङं एकरुद्रेश मन्त्रशक्तिभ्यां नमः दक्षहस्ताङ्गुल्यग्रे। ॐ ह्सौं चं कर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः वामस्कंधे।

ॐ ह्सौं चं कर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः वामस्कंधे। ॐ ह्सौं छं एकाननेश भूतमातृकाभ्यां नमः वामकर्पूरे। ॐ ह्सौं जं चतुराननेश लंबोदरीभ्यां नमः वाममणिबन्धे। ॐ ह्सौं झं अंजेश द्राविणीभ्यां नमः वामहस्तांगुलिमूले। ॐ ह्सौं ञं सर्वेशनागरीभ्यां नमः वामहस्तांगुल्यग्रे।

ॐ ह्सौं टं सोमेशखेचरीभ्यां नमः दक्षपादमूले । ॐ ह्सौं ठं लंगलीश मञ्जरीभ्यां नमः दक्षजानुनि। ॐ ह्सौं डं दारुकेश भागिनीभ्यां नमः दक्षगुल्फे। ॐ ह्सौं ढं अर्धनारीश्वरेश वारुणीभ्यां नमः दक्षपादांगुलिमूले। ॐ ह्सौं णं उमाकांतेश वृकोदरीभ्यां नमः दक्षपादांगुल्यग्रे।

ॐ ह्सौं तं आषाढीश पूतनाभ्यां नमः पादमूले। ॐ ह्सौं थं दंडीश भद्रकालीभ्यां नमः वामजानुनि। ॐ ह्सौं दं अत्रीश योगिनीभ्यां नमः वामगुल्फे। ॐ ह्सौं धं मीनेश शङ्खिनीभ्यां नमः वामपादांगुलिमूले। ॐ ह्सौं नं मेपेश तर्जनीभ्यां नमः वामपादांगुल्यग्रे।

ॐ ह्सौं पं लोहितेश कालरात्रिभ्यां नमः दक्षकुक्षौ। ॐ ह्सौं फं शिखीश कुण्डलिनीभ्यां नमः वामकुक्षौ। ॐ ह्सौं बं छागलण्डेश कपर्दिनीभ्यां नमः पृष्ठे। ॐ ह्सौं भं द्विरण्डेश वज्राभ्यां नमः नाभौ। ॐ ह्सौं मं महाकालेश जयाभ्यां नमः उदरे।

ॐ ह्सौं यं त्वगात्मभ्यां वालीश मुखेश्वरीभ्यां नमः हृदये। ॐ ह्सौं रं असृगात्मभ्यां भुजगेश्वरेवतीभ्यां नमः दक्षांसे। ॐ ह्सौं लं मासात्मभ्यां पिनाकीशमाधवीभ्यां नमः ककुदि। ॐ ह्सौं वं मेदात्मभ्यां खड्गीशवारुणीभ्यां नमः वामांसे।

ॐ ह्सौं शं अस्थ्यात्मभ्यां केशवायवीभ्यां नमः हृदयादिदक्षकराग्रांतम्। ॐ ह्सौं षं मज्जात्मभ्यां श्वेतेशरक्षोवधारिणीभ्यां नमः हृदयादिवामकराग्रांतम्। ॐ ह्सौं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीशसहजाभ्यां नमः हृदयादि दक्षपादान्तम् । ॐ ह्सौं हं प्राणात्मभ्यां लकुलीश लक्ष्मीभ्यां नमः हृदयादि वामपादान्तम् । ॐ

ह्सौं लं शक्त्यात्मभ्यां शिवेशव्यापिनीभ्यां नमः हृदयादि नाभ्यान्तम् । ॐ ह्सौं क्षं परमात्मभ्यां संवर्तकेश मायाभ्यां नमः हृदयादि शिरोन्तम् ।

॥ अथ प्रधानदेवता पूजनम् ॥

सर्वतोभद्र मण्डल पर यन्त्र को दुग्ध व जलधारा से शोधन कर प्राणप्रतिष्ठित करके रखें। देवप्रतिमा भी मण्डल पर स्थापित कर पूजन करें।

पहले मण्डल की पीठशक्तियों का पूजन करें।

ॐ ह्रीं आधारासनाय नमः। म मण्डूकाय नमः। कां कालाग्निरुद्राय नमः। कूं कूर्माय नमः। अं अनन्ताय नमः। पृं पृथिव्यै नमः। सुं सुधांबुधये नमः। रं रत्नदीपाय नमः। मं मणिमण्डपाय नमः। कं कल्पवृक्षाय नमः। रं रत्नवेदिकायै नमः। धं धर्माय नमः। ज्ञां ज्ञानाय नमः। वैं वैराज्ञाय नमः। ऐं ऐश्वर्याय नमः। आं आनंदकन्दाय नमः। सं संविन्नालय नमः। सं सर्वतत्त्वाय नमः। पं पद्माय नमः। प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। विं विकृतिमय केशरेभ्यो नमः। पं पञ्चाशद्वर्ण बीजाढ्य कर्णिकायै नमः। अं अर्कमण्डलाय नमः। सं सोममण्डलाय नमः। रं वह्निमण्डलाय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। आं आत्मने नमः। पं परमात्मने नमः। ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। मां मायातत्वाय नमः। विं विद्यातत्वाय नमः। शिं शिवतत्वाय नमः। पं परतत्वाय नमः।

पीठ की नवशक्तियों का पूर्वादिक्रमेण पूजन करें।

वां वामायै नमः। ज्यैं ज्यैष्ठायै नमः। रौं रोद्र्यै नमः। कां काल्यै नमः। कं कलविकरण्यै नमः। बं बलविकरण्यै नमः। बं बलप्रमथनायै नमः। सं सर्वभूतदमन्यै नमः। पीठमध्ये - मं मनोन्मन्यै नमः।

गंधपुष्पाक्षत् छोड़ें।

यंत्रसंस्कार - यन्त्र की प्राणप्रतिष्ठा करें। "ॐ" या "ह्रीं" मन्त्र १५ बार बोलते हुये गर्भाधानादि १५ संस्कार करें। यथा - **ह्रीं वटुकभैरवाय परिवार यन्त्रस्य गर्भाधानादि संस्कार करोम्यहं।**

प्रधानदेवता का ध्यान करें।

ध्यानम् –

शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्त्रादित्यवर्चसम् ।
नीलजीमूतसंकाशं नीलांजन समप्रभम् ॥

अष्टबाहु त्रिनयनं चतुर्बाहु द्विबाहुकम् ।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुराराव संकुलम् ॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्ण शिरोरुहम् ।
दिगम्बरं कुमारेशं वटुकाख्यं महाबलम् ॥
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलं दक्षिणभागतः ।
डमरुं च कपालं च वरदं भुजगं तथा ॥
अग्निवर्ण समोपेतं सारमेय समन्वित ।
ध्यात्वा जपेत्सु संहृष्ट सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥

अक्षत् लेकर आवाहन करें -

देवेश भक्तिसुलभपरिवार समन्वित ।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देव इहावह ॥
आगच्छ देववटुक स्थाने चात्र स्थितोभव ।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौभव ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेवतायै इहागच्छ इहतिष्ठ।

आवाहन, आसनम्, स्थापनम्, संनिधापनम्, मन्त्रिरूध्यम् अवगुंठन मुद्रा दिखायें।

प्रार्थना - स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ।
प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥

पाद्यम् - यद्भक्तिलेशसंपर्कात्परमानन्दविग्रहः ।
तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पयेत् ॥

अर्घम् - तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् ।
तापत्रयविनिर्मुक्त तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥

मधुपर्क - सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णसुखात्मने ।
मधुपर्कमिमं देव कल्पयामि प्रसीद मे ॥

आचमनम् - वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने ।
आचमनं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥

स्नानम् - गङ्गासरस्वतीरेवा पयोष्णी नर्मदाजलै ।
स्नापितोऽसि मयादेव शान्तिं कुरुष्व मे ॥

पयः पृथिव्यां मन्त्र से पय स्नान। दधिक्राव्णोऽअकारिषं से दधिस्नान, घृतं

मिमिक्षे से घृतस्नान। मधुवाताऋतायते से मधुस्नान। अपांश्ठरस से शर्करास्नान। शुद्धवाल सर्वशुद्धवालो से शुद्धस्नान करायें।

वस्त्रम् – असौ योऽव सर्पति नीलग्रीवो विलोहितः उतैनं गोपाऽअद्रश्रन्नदृश्रनुदहार्यः स दृष्टो मृडयातिनः ॥

यज्ञोपवीतम् – नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् । उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥

गन्धम् – नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः॥ सर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च॥

कुंकुम् – तरणिविश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसिसूर्य विश्वमाभासि रोचनम्।

सिन्दूरं गुलालं अबीरं –
अहिरिव भौगैः पर्येति बाहुं ज्यायाहेति परिवाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान पुभान् पुमा संपरिपातु विश्वतः।

अक्षतः – अक्षन्नभीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न विष्ठयामती योजान्विद्रते हरी।

पुष्पमाला – ओषधी प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः अश्वाइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥

पुष्पाणि – नमो पार्याय चावार्य्याय न नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च।

धूपम् – नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्त्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय चशिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च।

दीपम् – नमः आशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नमः ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च दीप्यायच

वैसे नैवेद्य आवरण पूजा के बाद सभी परिवार देवताओं सहित प्रधान देव को समर्पित करें तो उत्तम है।

नैवेद्यम् – नाभ्या आसीदन्तरिक्षर्ठ ऽशीष्णो द्यौः समवर्तत पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥

ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ अपानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा ॐ व्यानाय

स्वाहा ॐ उदानाय स्वाहा। अन्तरपट प्रदान करें।

आचमनम् - **ॐ वेदनामपि वेदाय देवानां देवतात्मने आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥**

॥ अथ यन्त्रावरणपूजनम् ॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान कर देव से परिवारार्चन की आज्ञा माँगे।

सविन्मये परोदेव परामृत रसप्रिय । अनुज्ञां देहि वटुक परिवारार्चनाय मे ॥

प्रथमावरणम् - शिव के पञ्चवक्त्रों का पूजन यन्त्र मध्य में करें। यद्यपि यन्त्र मध्य में पञ्चकोण नहीं बनाया तो पूर्वादि दिशा व अन्यदिशा की कल्पना कर देवताओं का पूजन करें। त्रिकोण में पूजन करें।
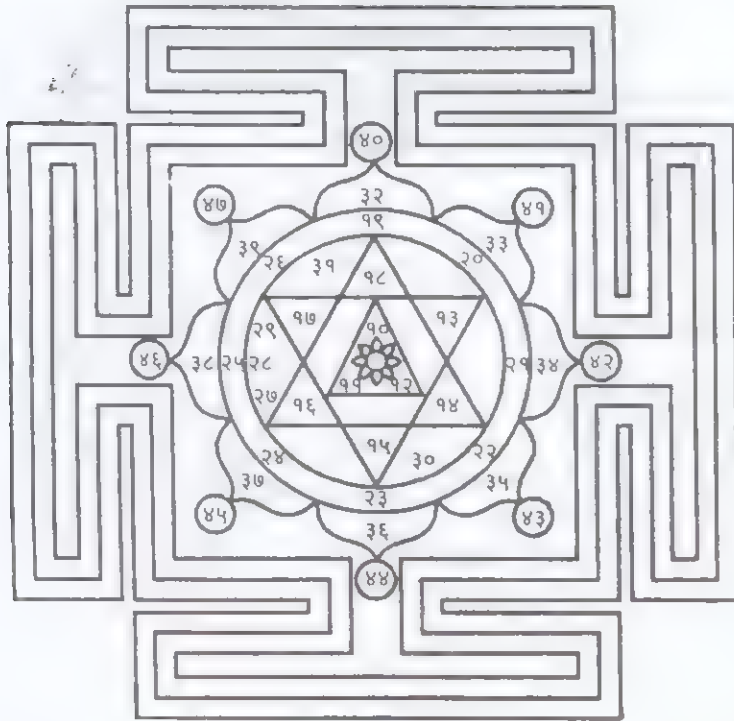
आपदुद्धारक वटुक भैरव यन्त्र

यन्त्रार्चन में सर्वत्र दाहिने हाथ की तर्जनी व अंगुष्ठ के द्वारा गंध, पुष्प, अक्षत् (मिश्रण) चढ़ावें तथा बायें हाथ से शुद्धिखण्ड चढाकर पुन: दाहिने हाथ से तर्पण करें। तर्पण सुधापात्र से करें तथा प्रत्येक आवरण के पूजा पश्चात पुष्पाञ्जलि देकर

''**पूजिताः तर्पिताः सन्तु**'' कहकर विशेपार्घ से जल छोड़ें।

एक से अधिक साधक हो तो गन्ध पुष्प अक्षत शुद्धिखण्ड तर्पण पात्रादि के विभाग से पूजन कर सकते हैं।

पात्रासादन में बताया जा चुका हैं कि प्रधान, अंगभैरव, योगिनी, क्षेत्रापालादि के अलग-अलग पात्रा सादन कर उन्हीं के पात्र से पूजन तर्पण करें।

गुरुमण्डल पूजनम् - (त्रिकोणमध्ये) यद्यपि कई पद्धतियों में गुरुमण्ड़ल व दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ तथा गुरुचतुष्टय पूजन का उल्लेख नहीं है। परन्तु मैं गुरुचतुष्टय के पूजन को तन्त्रशास्त्रों की परिपाटी के अनुसार करना शुभमानता हुँ। अतः साधक को अपनी गुरुपरम्परा के चारों गुरुओं का पूजन करना चाहिये।

यथा - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमुकानन्दनाथ अमुकाम्बासहित श्री परमेष्ठीगुरु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमुकानन्दनाथ अमुकाम्बासहित श्री परात्परगुरु श्री पा. पू. त.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमुकानन्दनाथ अमुकाम्बासहित श्री परमगुरु श्री पा. पू. त.। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमुकानन्दनाथ अमुकाम्बासहित श्री स्वगुरु श्री पा. पू. त.।**

त्रिकोणमध्ये - **ॐ ह्रः बः ईशानाय अंगुष्ठाभ्यां अंगुष्ठ श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रौः बौंः तत्पुरुषाय तर्जनीभ्यां तर्जनी श्री पा. पू. त.। ॐ हैं: बैं: अघोराय मध्यमाभ्यां मध्यमा श्री पा. पू. त.। ॐ ह्रूं बूं वामदेवाय अनामिकाभ्यां अनामिका श्री पा. पू. त.। ॐ ह्रीं बीं सद्योजाताय कनिष्ठिकाभ्यां कनिष्ठा श्री पा. पू. त.। ॐ हं बां पञ्चवक्त्राय महादेवाय करतलकरपृष्ठाभ्यां करतलकरपृष्ठ श्री पा. पू. त.। ॐ ह्रीं वीं ईशानाय शिरसे स्वाहा शिरसि श्री पा. पू. त.। ॐ हैं बैं तत्पुरुषाय उर्ध्ववक्त्राय मुखाय मुखं श्री पा. पू. त.। ॐ ह्रूं बूं अघोराय दक्षिणवक्त्राय दक्षिणकर्णे दक्षिणकर्ण श्री पा. पू. त.। ॐ ह्रूं बीं वामदेवाय उत्तरवक्त्राय वामकर्णे वामकर्ण श्री पा. पू. त.। ॐ ह्रूं बां सद्योजाताय पश्चिमवक्त्राय चूडाधः चूड़ाधः श्री पा. पू. त.।**

षडङ्गपूजनम् - (त्रिकोणमध्ये) **ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा शिरः श्री पा.। ॐ ह्रूं वूं शिखायै वषट् शिखा श्री पा.। ॐ हैं वैं कवचाय हुम् कवच श्री पा.। ॐ ह्रौ वौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्र श्री पा.। ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट् अस्त्र श्री पा.।**

पुष्पाञ्जलि प्रदान करें -

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

विशेपार्घ से जल छोड़ें। "**पूजिताः तर्पिताः सन्तु**"।

इस तरह प्रत्यंक आवरण में पुष्पाञ्जलि देवें अर्घपात्र से जल छोड़ें। प्रथमावरण की जगह अमुकावरण का नाम लेवें।

द्वितीयावरणम् - कर्णिका के वहिर्भाग में पूर्वादिक्रम से (मध्ये) **ॐ ह्रीं आं असिताङ्गभैरवाय नमः असिताङ्गभैरव श्री पा.॥१॥ ॐ ह्रीं ईं रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरव श्री पा.॥२॥ ॐ ह्रीं ऊं चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरव श्री पा.॥३॥ ॐ ह्रीं ऋं क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरव श्री पा.॥४॥ ॐ ह्रीं लृं उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरव श्री पा.॥५॥ ॐ ह्रीं ऐं कपालभैरवाय नमः कपालभैरव श्री पा.॥६॥ ॐ ह्रीं औं भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरव श्री पा.॥७॥ ॐ ह्रीं अं संहारभैरवाय नमः संहारभैरव श्री पा.॥८॥**

त्रिकोणे - (पूर्वादिकोणेषु) **ॐ सं सत्वाय नमः श्री पा.। ॐ रं रजसे नमः श्री पा.। ॐ तं तमसे नमः श्री पा.।**

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे..........से पुष्पाञ्जलि देवें।

तृतीयावरण.म् - (त्रिकोण के बाहर पट्कोण में) **ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः भूतनाथ श्री पा.॥१॥ ॐ ह्रीं आदिनाथाय नमः, आदिनाथ नमः श्री पा.॥२॥ ॐ ह्रीं आनन्दनाथाय नमः, आनन्दनाथ श्री पा.॥३॥ ॐ ह्रीं सिद्धशाबरनाथ नमः सिद्धशाबरनाथ श्री पा.॥४॥ ॐ ह्रीं सहजानन्दनाथाय नमः, सहजानन्द श्री पा.॥५॥ ॐ ह्रीं निः सीमानन्दनाथाय नमः, निः सीमानन्द श्री पा.॥६॥**

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे..........से पुष्पाञ्जली देवे।

चतुर्थावरणम् (वर्तुले पूर्वादिक्रमेण)- **ॐ ह्रीं डाकिनी पुत्रेभ्यो नमः, डाकिनीपुत्र श्री पा.॥१॥ ॐ ह्रीं राकिनीपुत्रेभ्यो नमः, राकिनीपुत्र श्री पा.॥२॥ ॐ ह्रीं लाकिनीपुत्रेभ्यो नमः, लाकिनीपुत्र श्री पा.॥३॥ ॐ ह्रीं काकिनीपुत्रेभ्यो नमः, काकिनीपुत्र श्री पा.॥४॥ ॐ ह्रीं शाकिनीपुत्रेभ्यो नमः, शाकिनीपुत्र श्री पा.॥५॥ ॐ ह्रीं हाकिनीपुत्रेभ्यो नमः, हाकिनीपुत्र श्री पा.॥६॥ ॐ ह्रीं याकिनीपुत्रेभ्यो नमः, याकिनीपुत्र श्री पा.॥७॥ ॐ ह्रीं देवीपुत्रेभ्यो नमः, देवीपुत्र श्री पा.॥८॥**

उत्तरदिशा में वर्त्तुल में (देवदक्षिणतः) - **ॐ ह्रीं उमापुत्रेभ्यो नमः, उमापुत्र**

श्री पा.॥९॥ ॐ ह्रीं रुद्रपुत्रेभ्यो नमः, रुद्रपुत्र श्री पा.॥१०॥ ॐ ह्रीं मातृपुत्रेभ्यो नमः, मातृपुत्र श्री पा.॥११॥

पश्चिमनैर्ऋत्ययोर्मध्ये - ॐ ह्रीं उर्ध्वमुखीपुत्रेभ्यो नमः, उर्ध्वमुखपुत्र श्री पा.॥१२॥ पूर्व ईशानयोर्मध्ये - ॐ ह्रीं अधोमुखीपुत्रेभ्यो नमः, अधोमुखपुत्र श्री पा.॥१३॥

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे..........से पुष्पाञ्जलि देवें।

पञ्चमावरणम् - (अष्टदले पूर्व से ईशान उत्तर अग्निकोण क्रम से) पूर्वे ॐ ह्रीं ब्रह्माणीपुत्र वटुकाय नमः ब्रह्माणीपुत्र श्री पा. ॥१॥ ऐशान्ये - ॐ ह्रीं माहेश्वरीपुत्रवटुकाय नमः, माहेश्वरीपुत्र वटुक श्री पा.॥२॥ उत्तरे - ॐ ह्रीं वैष्णवीपुत्रवटुकाय नमः, वैष्णवीपुत्र वटुक श्री पा. ॥३॥ वायवे ॐ ह्रीं कौमारीपुत्रवटुकाय नमः, कौमारीपुत्र वटुक श्री पा. ॥४॥ पश्चिमे - ॐ ह्रीं इन्द्राणीपुत्रवटुकाय नमः, इन्द्राणीपुत्र वटुक श्री पा. ॥५॥ नैऋत्ये ॐ ह्रीं महालक्ष्मीपुत्रवटुकाय नमः, महालक्ष्मीपुत्र वटुक श्री पा. ॥६॥ दक्षिणे ॐ ह्रीं वाराहीपुत्रवटुकाय नमः, वाराहीपुत्रवटुक श्री पा. ॥७॥ आग्नेये ॐ ह्रीं चामुण्डापुत्रवटुकाय नमः, चामुण्डापुत्र वटुक श्री पा. ॥८॥

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे..........से पुष्पाञ्जलि देवें।

षष्ठमावरणम् - (अष्टदल एवं भूपूर के मध्य में पूर्वादिक्रम से) - ॐ ह्रीं हेतुकाय नमः, हेतुक श्री पा. पू. ॥१॥ ॐ ह्रीं त्रिपुरांतकाय नमः, त्रिपुरांत श्री पा. पू. ॥२॥ ॐ ह्रीं वैतालाय नमः, वैताल श्री पा. पू. ॥३॥ ॐ ह्रीं अग्निजिह्वाय नमः, अग्निजिह्व श्री पा. पू. ॥४॥ ॐ ह्रीं कालांतकाय नमः, कालांतक श्री पा. पू. ॥५॥ ॐ ह्रीं करालाय नमः, कराल श्री पा. पू. ॥६॥ ॐ ह्रीं एकपादाय नमः, एकपाद श्री पा. पू. ॥७॥ ॐ ह्रीं भीमरूपाय नमः, भीमरूप श्री पा. पू. ॥८॥ पूर्वईशानमध्ये - ॐ ह्रीं अचलाय नमः, अचल श्री पा. पू. ॥९॥ दक्षिणनैर्ऋत्योर्मध्ये - ॐ ह्रीं हाटकेशाय नमः, आटकेश श्री पा. पू. ॥१०॥

सप्तमावरणम् - (भूपूर में प्रथमरेखा में) प्रत्येक देवता का चतुर्थी से आवाहन कर प्रथमा से पादुका पूजन करें।

पूर्वे - ॐ ह्रीं अं कंठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१॥ दक्षिणे ॐ ह्रीं आं अनन्तेश विरजाभ्यां, नमः श्री पा. ॥२॥ पश्चिमे - ॐ ह्रीं इं सूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः, श्री पा. ॥३॥ उत्तरे ॐ ह्रीं ईं त्रिमूर्तीश लोलाक्षीभ्यां

नमः, श्री पा. ॥४॥ आग्नेयाम् - ॐ ह्रीं उं अमरेश वर्तुलाक्षीभ्यां नमः, श्री पा. ॥५॥ नैऋते - ॐ ह्रीं ऊं अर्धीश दीर्घघोणाभ्यां नमः, श्री पा. ॥६॥ वायव्ये - ॐ ह्रीं ऋं भारती भूतीश दीर्घमुखीभ्यां नमः, श्री पा. ॥७॥ ईशान्ये - ॐ ह्रीं ॠं अतिथीश गोमुखीभ्यां नमः, श्री पा. ॥८॥ पूर्वाग्निमध्ये - ॐ ह्रीं ऌं स्थाणवीश दीर्घजिह्वाभ्यां नमः, श्री पा. ॥९॥ दक्षिणनैऋत्यमध्ये - ॐ ह्रीं-ॡं हरेश कुण्डोदरीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१०॥ पश्चिम वायुमध्ये - ॐ ह्रीं एं झिण्टीशोर्ध्वकेशीभ्यां नमः, श्री पा. ॥११॥ उत्तरेशानमध्ये - ॐ ह्रीं ऐं भौतिकेश विकृतमुखीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१२॥ अग्निदक्षिणमध्ये ॐ ह्रीं ओं सद्योजातेश ज्वालामुखीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१३॥ निऋति वरुणयोर्मध्ये - ॐ ह्रीं औं अनुग्रहेशोल्कामुखीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१४॥ वायुसोममध्ये - ॐ ह्रीं अं अक्रूरेश श्रीमुखीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१५॥ ईशानपूर्वमध्ये - ॐ ह्रीं अः महासेनेश विद्यामुखीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१६॥

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे...........से पुष्पाञ्जलि देवें।

अष्टमावरणम् - (भूपूरे षोडश स्थाने) द्वितीय रेखायाम् पूर्वे ॐ ह्रीं कं क्रोधीश महाकालीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१॥ दक्षिणे - ॐ ह्रीं खं चण्डी सरस्वतीभ्यां नमः, श्री पा. ॥२॥ पश्चिमे - ॐ ह्रीं गं पञ्चातकेशसर्वसिद्धि गौरीभ्यां नमः, श्री पा. ॥३॥ उत्तरे - ॐ ह्रीं घं शिवोत्तमेशत्रैलोक्यविजयाभ्यां नमः, श्री पा. ॥४॥

आग्नेयाम् ॐ ह्रीं ङं एकरुद्रेशमन्त्रशक्तिभ्यां नमः, श्री पा. ॥५॥ नैर्ऋत्ये ॐ ह्रीं चं कूर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः, श्री. पा. ॥६॥ वायव्ये - ॐ ह्रीं छं एकनेत्रेश भूतमातृकाभ्यां नमः, श्री पा. ॥७॥ ऐशान्ये ॐ ह्रीं जं चतुराननेश लंबोदरीभ्यां नमः, श्री. पा. ॥८॥ पूर्वाग्निमध्ये - ॐ ह्रीं झं अजेशद्राविणीभ्यां नमः, श्री पा. ॥९॥ दक्षिणनैर्ऋत्यमध्ये - ॐ ह्रीं ञं सर्वेशनागरीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१०॥ पश्चिमवायुमध्ये - ॐ ह्रीं टं सोमेशखेचरीभ्यां नमः, श्री पा. ॥११॥ उत्तरेशानमध्ये ॐ ह्रीं ठं लांगलीशमंजरीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१२॥ आग्नेययाम्यमध्ये - ॐ ह्रीं डं दारुकेशरूपिणीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१३॥ नैऋत्यपश्चिममध्ये - ॐ ह्रीं ढं अर्धनारीश वरिणीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१४॥ वायुसोममध्ये ॐ ह्रीं णं उमाकांतेश काकोदरीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१५॥ ईशानपूर्वमध्ये - ॐ ह्रीं तं आषाढेश पूतनाभ्यां नमः, श्री पा. ॥१६॥

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे...........से पुष्पाञ्जलि देवें।

नवमावरणम् - (भूपूरे तृतीय रेखायाम्) पूर्वे ॐ ह्रीं थं दण्डीश भद्रकालीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१॥ दक्षिणे ॐ ह्रीं दं अत्रीशयोगिनीभ्यां नमः, श्री पा. ॥२॥ पश्चिमे - ॐ ह्रीं धं मीनेशशंखिनीभ्यां नमः, श्री पा. ॥३॥ उत्तरे ॐ ह्रीं नं मेषेशगर्जनीभ्यां नमः, श्री पा. ॥४॥ आग्नेयाम् ॐ ह्रीं पं लोहितेशकालरात्रिभ्यां नमः, श्री पा. ॥४॥ नैर्ऋत्ये ॐ ह्रीं फं शिखीश कुब्जिकाभ्यां नमः, श्री पा. ॥६॥ वायव्ये ॐ ह्रीं बं छागलेशकपर्दिनीभ्यां नमः, श्री पा. ॥८॥ ऐशान्ये ॐ ह्रीं भं द्विरंडेशवज्रिणीभ्यां नमः, श्री पा. ॥८॥ पूर्वअग्निमध्ये - ॐ ह्रीं मं महाकालेश जयाभ्यां नमः, श्री पा. ॥९॥ दक्षिणनैऋत्यमध्ये ॐ ह्रीं यं त्वगात्मभ्यां बालेशसुमुखीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१०॥ पश्चिमवायव्यमध्ये ॐ ह्रीं रं असृगात्मभ्यां भुजंगेशरेवतीभ्यां नमः, श्री पा.॥११॥ उत्तरेशानयोर्मध्ये ॐ ह्रीं लं मासात्मभ्यां पिनाकीशमाधवीभ्यां नमः, श्री पा. ॥१२॥ आग्नेय दक्षिणमध्ये ॐ ह्रीं वं वेदात्मभ्यां खड्गीश ।वारुणीभ्यां नमः, श्री पा.॥१३॥ नैऋत्यपश्चिममध्ये ॐ ह्रीं शं अस्थ्यात्मभ्यां बकेशवायवीभ्यां नमः, श्री पा.॥१४॥ वायु सोममध्ये ॐ ह्रीं षं मज्जात्मभ्यां श्वेतेशरक्षोवधीरिभ्यां नमः, श्री पा.॥१५॥ ईशानपूर्वमध्ये ॐ ह्रीं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीशसहजाभ्यां नमः, श्री पा.॥१६॥

इसके बाद भूपूर के बाहर देवता के दक्षिण में ॐ ह्रीं हं प्राणात्मभ्यां लकुशलक्ष्मीभ्यां नमः, श्री पा.॥१॥ ॐ ह्रीं लं शक्त्यात्मभ्यां नमः शिवेश व्यापिनी श्री पा.॥२॥ ॐ ह्रीं क्षं क्रोधात्मभ्यां संवर्तकेश महामायाभ्यां नमः, श्री पा.॥३॥

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे..........से पुष्पाञ्जलि देवें। तथा "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" कहकर विशेषार्घ से जल छोड़ें।

दशमावरणम् (भूपूर के बाहर) पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि दिक्पालों का पूजन करें - ॐ ह्रीं लं इन्द्राय नमः, इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥१॥ ॐ ह्रीं रं अग्नये नमः, अग्नि श्री पा. ॥२॥ ॐ ह्रीं यं यमाय नमः, यम श्री पा. ॥३॥ ॐ ह्रीं क्षं निर्ऋतये नमः, निर्ऋति श्री पा. ॥४॥ ॐ ह्रीं वं वरुणाय नमः, वरुण श्री पा. ॥५॥ ॐ ह्रीं यं वायवे नमः, वायु श्री पा. ॥६॥ ॐ ह्रीं सों सोमाय नमः, सोम श्री पा. ॥७॥ ॐ ह्रीं हं ईशानाय नमः, ईशान श्री पा. ॥८॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये - ॐ ह्रीं आं ब्रह्मणे नमः, ब्रह्म श्री पा. ॥९॥ वरुणनिर्ऋतयोर्मध्ये - ॐ ह्रीं अं अनंताय नमः, अनन्त श्री पा. ॥१०॥

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे..........से पुष्पाञ्जलि देवें। तथा "पूजितास्तर्पिताः सन्तु " कहकर विशेषार्घ से जल छोड़ें।

एकादशावरणम् - (भूपूर के बाहर इन्द्रादि दिक्पालों के पास) **ॐ वं वज्राय नमः, श्री पा.॥१॥ ॐ शं शक्तये नमः, श्री पा.॥२॥ ॐ दं दण्डाय नमः, श्री पा.॥३॥ ॐ खं खड्गाय नमः, श्री पा.॥४॥ ॐ पां पाशाय नमः, श्री पा.॥५॥ ॐ अं अङ्कुशाय नमः, श्री पा.॥६॥ ॐ गं गदायै नमः, श्रीपा.॥७॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः, श्री पा.॥८॥ ॐ पं पद्माय नमः, श्रीपा.॥९॥ ॐ चं चक्राय नमः, चक्र श्री पा.पू.त.॥१०॥**

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं एकादशावरणार्चनम् ॥

से पुष्पाञ्जलि देवें। "**पूजितास्तर्पिताः सन्तु** " सन्तु कहकर विशेषार्घ से जल छोड़ें।

गंध पुष्पाक्षत धूप दीप एवं नैवेद्य निवेदन कर आचमन करायें।

नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं परम् ।
परमानन्द पूर्ण त्वं गृहाण जलमुत्तमम् ॥

नित्यहोमः - दैनिक जप संख्या मूलमन्त्र की करने से पश्चात् यथा शक्त्यानुसार दशांश होम करें।

पञ्चबलिप्रदानम् - यन्त्र के पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर दिशाओं में बिन्दु, त्रिकोण, वृत्त, चतुरस्र मण्ड़ल बनायें एवं एक मण्ड़ल गणपति के समीप बनाकर "**ॐ ह्रीं व्यापक मण्डलाय नमः**" से पूजन करें।

पूर्वे - **वं बटुकाय नमः** से पाद्यादि अर्चन करें। पक्वान्न सलिल मीन, माँस कारण (मद्य) बलिपात्र में रखें। मीनमुद्रा दिखायें, दीप रखें। बांये हाथ के अंगुष्ठ अनामिका से जल छोड़ें -

ॐ एह्येहि देवीपुत्र बटुकनाथ कपिल जटाभार भासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्ननान नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। एष बलिर्वटुकाय नमः।

दक्षिणे - "**यां योगिनीभ्यो नमः**" से अर्चन करें बलि मांस पक्वान्नादि रखें। दीप प्रदान करें। दक्षिण अंगुष्ठअनामिका से जल छोड़ें -

उर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा ।
पाताले वा तले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा ॥
क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन ।
प्रीत्यादेव्यः सदा नः शुभबलि पान्तु वीरेन्द्र वंद्याः ॥

यां योगिनीभ्यः स्वाहा सर्व योगिन्यो हुं फट् स्वाहा एष बलिर्योगिनीभ्यो नमः। योनिमुद्रा दिखावें।

पश्चिमे – ''क्षं क्षेत्रपालाय नमः'' से अर्चन करें, पूर्व तरह बलिपात्र एवं दीपपात्र रखें। अङ्कुश मुद्रा दिखावें। दक्षिण अंगुष्ठ अनामिका से जल छोड़ें।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल धूपादिसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा एष बलिः क्षेत्रपालाय नमः।

उत्तरे – ''गं गणेशाय नमः'' से गणेश का पूजन करें। सामान्य बलि प्रदान करें दीप प्रदान करें। बलि प्रदान कर दक्ष अंगुष्ठ तर्जनी से जल छोड़ें –

ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय बलिं गृह्ण गृह्ण एष बलिर्गणपतये नमः। इसी तरह गणपति समीपे सामान्य माष बलि प्रदान करें।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यो हुँ स्वाहा एष बलिः सर्वभूतेभ्यो नमः।

आरती वन्दन करके पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

॥ भैरव यंत्रार्चनम् (द्वितीय प्रकाराः) ॥

पूर्वादि दिशाओं में पीठ शक्तियों की यंत्र मध्य में पूजा करें। **त्रिकोण के बिन्दु मध्य** भाग में भैरव का ध्यान मंत्र बोलकर आवाहन करें फिर यंत्रपृजा करें।

इस पूजन क्रम स्वशरीरे आवरण देवतान्यास एवं यन्त्रपूजन विधान दोनों का लघु विधान वर्णित है। ततः हृद्येव पूर्वाद्यष्टदिक्षु नव पीठशक्तीर्न्यसेत्॥ **ॐ वां वामाये नमः पूर्वभागे॥** ॐ ज्यें ज्येष्ठायै नमः आग्नेये॥ **ॐ श्रें श्रेष्ठायै नमः दक्षिणे॥** ॐ रौं रौद्रायै नमः नैर्ऋत्ये॥ **ॐ कां काल्यै नमः पश्चिमे॥ ॐ कं** कलविकरण्यै नमः वायव्यं॥ **ॐ बं बलविकरण्यै नमः उत्तरे ॥ ॐ बं** बलप्रमथिन्यै नमः ऐशान्यां॥ ॐ सं सर्वभूतदमन्यै नमः **ऊर्ध्वभागे॥ ॐ मं**

मनोन्मन्यै नमः हृदयमध्ये॥ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्तायानंताय योगपीठात्मने नमः इति मंत्रेण स्वहृदये एवं यंत्र मध्ये पीठदेवतायै आसनं दत्त्वा आवरणदेवतान्यासं कुर्यात्॥

॥ अथावरणदेवतान्यास एवं यंत्र पूजा॥

तत्र (शिरसि षट्कोणे) अथ प्रथमावरण देवतान्यासः ॐ ह्रां वां हृदयेदेवाय भूतनाथाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं वीं शिरसि देवाय आदिनाथाय नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं वं शिखायां देवायानंदनाथाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रैं वैं कवचदेवाय सिद्धशाबरनाथाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रौं वौं नेत्रदेवाय सहजानंदनाथाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रः वः अस्त्रदेवाय निः सीमानंदनाथाय नमः ॥ ६ ॥

द्वितीया वरणदेवतान्यासः - (ललाटे द्वादश दले) ॐ डां डाकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ १ ॥ ॐ शां शाकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ २ ॥ ॐ लां लाकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ३ ॥ ॐ कां काकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ४ ॥ ॐ सां साकिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ५ ॥ ॐ हां हाकिनीपुत्रेम्यो नमः ॥ ६ ॥ ॐ मां मालिनीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ७ ॥ ॐ दें देवीपुत्रेभ्यो नमः ॥ ८ ॥ ॐ मां मातृपुत्रेभ्यो नमः ॥ ९ ॥ ॐ रुं रुद्रपुत्रेभ्यो नमः॥ १० ॥ ॐ ऊं ऊर्ध्वमुखपुत्रेभ्यो नमः ॥ १२ ॥ तृतीयावरणदेवतान्यासः ॥

(कंठस्थानेअष्टदले) ॐ ब्रं ब्रह्माणीपुत्रबटुकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ मां माहेश्वरीपुत्रबटुकाय नमः ॥ २ ॥ ॐ कौं कौमारीपुत्रबटुकाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ वें वैष्णवीपुत्रबटुकाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ इं इन्द्राणीपुत्रबटुकाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ मं महालक्ष्मीपुत्रबटुकाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ वां वाराहीपुत्रबटुकाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ चां चामुण्डापुत्रबटुकाय नमः॥॥८ ॥ चतुर्थावरणदेवतान्यासः ॥

हृदयेदशदले ॐ हें हेतुकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ त्रिं त्रिपुरांतकाय नमः ॥ २ ॥ ॐ वें वेतालाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ अं अग्निजिह्वाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ कां कालांतकाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ कं करालाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ एं एयालाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रीं त्रीमाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ अं अचलाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ हां हाटकेशाय नमः ॥ १० ॥ पंचमावरणदेवतान्यासः ॥ (नाभौ चतुर्दशकोणे) ॐ श्रीं श्रीकण्ठाय नमः ॥१ ॥ ॐ अं अनंतेशाय नमः ॥ २ ॥ ॐ सूं सूक्ष्मेशाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ अं अर्मीशाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ भां भारभूतीशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अं अतिथीशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ स्थां स्थाणवीशाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ हं हरेशाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ झिं झिंटीशाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ भौं भौतिकेशाय नमः ॥ १० ॥ ॐ स सद्योजातेशाय नमः ॥ ११ ॥ ॐ आं

अनुग्रहेशाय नमः ॥ १२ ॥ ॐ क्रूं क्रूरेशाय नमः ॥ १३ ॥ ॐ मं महासेनेशाय नमः ॥ १४ ॥ षष्ठमावरणदेवतान्यासः ॥

स्वाधिष्ठाने षोड़शदले ॐ क्रों क्रोधीशाय नमः ॥ १ ॥ ॐ चं चंडीशाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पं पंचांतकेशाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ शिं शिवोत्तमेशाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ एं एकरुद्रेशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ कूं कूर्मेशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ एं एकनेत्रेशाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ चं चतुराननेशाय नमः ॥८ ॥ ॐ अं अजेशाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ सं सर्वेशाय नमः ॥ १० ॥ ॐ सों सोमेशाय नमः ॥ ११ ॥ ॐ लां लांगलीशाय नमः ॥ १२ ॥ ॐ दां दारुकेशाय नमः ॥ १३ ॥ ॐ अं अर्धनारीशाय नमः ॥ १४ ॥ ॐ उं उमाकांतेशाय नमः ॥ १५ ॥ ॐ आं आषाढीशाय नमः ॥ १६ ॥ सप्तमावरणदेवतान्यासः ॥

मूलाधारे चतुर्विंशति दले ॐ दं दंडीशाय नमः ॥ १ ॥ ॐ अं अत्रीशाय नमः ॥ २ ॥ ॐ मीं मीनेशाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ में मेघेशाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ लों लोहितेशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ शिं शिखीशाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ छं छगलंडेशाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ द्विं द्विरंडेशाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ मं महाकालीशाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ वां वालीशाय नमः ॥ १० ॥ ॐ भुं भुजंगेशाय नमः ११ ॥ ॐ पिं पिनाकीशाय नमः ॥ १२ ॥ खं खड्गीशाय नमः ॥ १३ ॥ ॐ व वकीशाय नमः ॥ १४ ॥ ॐ श्वें श्वेतेशय नमः ॥ १५ ॥ ॐ भृं भृग्वीशाय नमः ॥१६ ॥ ॐ नं नकलीशाय नमः ॥ १७ ॥ ॐ शिं शवेशाय नमः ॥ १८ ॥ ॐ सं संवर्तकेशाय नमः ॥ २१ ॥ ॐ दिं दिव्ययोगिन्यै नमः ॥ २० ॥ ॐ अं अंतरिक्षयोगिन्यै नमः ॥ २१ ॥ ॐ भूं भूमिष्ठयोगिन्यै नमः ॥ २२ ॥ ॐ सं संवर्तयोगिन्यै नमः ॥ २३ ॥ ॐ सर्वभूतदमनाय नमः ॥ २४ ॥ अष्टमावरणदेवतान्यासः ॥

पादयोः भूपूरे ॐ इं इंद्राय वज्रहस्ताय नमः ॥ १ ॥ ॐ अं अग्नये शक्तिहस्ताय नमः ॥ २ ॥ ॐ यं यमाय दंडहस्ताय नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये खड्गहस्ताय नमः ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय पाशहस्ताय नमः ॥ ५ ॥ ॐ वां वायवे अंकुशहस्ताय नमः ॥ ६ ॥ ॐ सां सोमाय गदाहस्ताय नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानाय त्रिशूल हस्ताय नमः ॥ ८ ॥ ॐ ब्रं ब्रह्मणे कमल हस्ताय नमः ॥ ९ ॥ ॐ आं अनंताय चक्रहस्ताय नमः ॥ १० ॥ इति अष्टम आवरण देवता न्यास।

इसके बाद ..न देवताओं की पूजा अर्चना करे।

॥ श्रीवटुकभैरव मन्त्रजप विधानम् ॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्री आपदुद्धारण वटुकभैरव मन्त्रस्य वृहदारण्य ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, श्रीवटुकभैरवो देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्ति, भैरव कीलकं अभीष्ट सिद्धर्थे जपे विनियोगः।

ऋषिन्यासः - वृहदारण्य ऋषि नमः शिरसि, त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे, श्रीवटुकभैरव देवतायै नमः हृदि, ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये, स्वाहा शक्तये नमः पादयोः, भैरव कीलकाय नमः नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

अङ्गादिन्यासः -

मन्त्रः	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ ह्रां वां	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं वीं	तर्जनीभ्यां नमः।	ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं वूं	मध्यमाभ्यां नमः।	ॐ ह्रूं वूं शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं वैं	अनामिकाभ्यां नमः।	ॐ ह्रैं वैं कवचाय हुँ।
ॐ ह्रौं वौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ हः वः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।	ॐ हः वः अस्त्राय फट्।

मन्त्रन्यासः -

ॐ ह्रां ह्रीं	अगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं वटुकाय	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रं आपदुद्धारणाय	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं कुरु कुरु	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
ॐ ह्रौं वटुकाय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ हः ह्रीं	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

॥ साधारणध्यानम् ॥

करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणि-
स्तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती ।
क्रतु समयसपर्या-विघ्नविच्छेद हेतु-
र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

मूलमन्त्र - ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं ॐ।

कई जगह वटुक व कहीं बटुक का प्रयोग है, दौनों ही शब्द सही है। क्रूरकार्य

में तामस ध्यान तथा वशीकरण व स्तंभन में राजसध्यान एवं शुभकार्यों में सात्विकध्यान करें।

॥ सात्त्विकध्यानम् ॥

श्वेतवर्णं चतुर्बाहुं जटामुकुटधारिणम् ।
भुजङ्गपाशहस्तं च हस्ते दण्डकमण्डलुम् ॥
शुक्लयज्ञोपवीतं च शुक्लकौपीनवाससम् ।
शुक्ल वस्त्रपरीधानं श्वेतमालानुलेपनम् ॥
त्रिनेत्रं नीलकण्ठं च मुक्ताभरण भूषितम् ॥१ ॥
वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं
दिव्याकल्पै नवमणिमयैः किंकिणी नूपुराढ्यैः ।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं
हस्ताग्राभ्यां वटुकसदृशं शूलदण्डोपधानम् ॥२ ॥

॥ राजसध्यानम् ॥

तुषारकर्णिकाभासं मायारूपमनंतकम् ।
मुर्ध्नि खण्डेन्दुशकलं त्रिनेत्रं शान्तछिन्नशीर्षा विभूषितम् ॥
सर्पमालासमायुक्तं हस्तोरुस्थूल जानुषु ।
अंत्रमालासमायुक्तं सर्वाभरणभूषितम् ॥१ ॥
उद्यद्भास्कर सन्निभं त्रिनयनं रक्तांग रागस्त्रजम् ।
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः ॥
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशु खण्डोज्वलम् ।
बन्धूकारणवाससं भयहरं देवं सदाभावये ॥२ ॥

॥ तामसध्यानम् ॥

ॐ त्रिनेत्रं रक्तवर्णं च वरदाभयहस्तकम् ।
सव्ये त्रिशूलमभयं कपालं वरमेव ॥
रक्तवस्त्रपरीधानं रक्तमाल्यानुलेपनम् ।
नीलग्रीवं च सौम्यं च सर्वाभरणभूषितम् ॥१ ॥
ध्यायेन्नीलादिकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशम् ।
दिग्वस्त्रं पिंगकेश डमरुमथसृणि खड्गपाशाऽभयानि ॥

नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्विभ्रतं भीमदंष्ट्रम् ।
दिव्यकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किंकिणी नूपुराढ्यम् ॥२ ॥

मूलमन्त्र के एक लक्ष जप का पुरश्चरण कहा है। दशांश होम व दुग्धमिश्रित जल से तर्पण करें। तर्पण का दशांश मार्जन अपनी मूर्ध्नि पर करें।

(ॐ आत्मानमभिषिंचामि नमः, इति मूर्ध्नभिषेकः)

वैसे तो भैरव के लिये रविवार प्रधान माना जाता है, रुद्रयामल के अनुसार शुक्लपक्ष की द्वितीया शुक्रवार को भी प्रयोग का विधान लिखा गया है। अष्टदल पर आधातोला वचाचूर्ण, आधातोला घृतयुक्त अर्पण कर तीन हजार जप करें। तीन लक्ष जप करें तो वाणी गद्य-पद्यमयी होवे। कृष्णपक्ष में चतुर्दशी मंगलवार को रजत स्वर्ण पात्र में कपिला गौघृत से दीप जलाकर स्वर्णपात्र या नरकपाल में अञ्जन करें तो सभी का वशीकरण होवे तीन हजार से तीस हजार जप अवश्य करें। आधा तोला हल्दी व आधा तोला वचा चूर्ण गौमूत्र व गौघृत युक्त करें तथा देवता के आगे पद्मपत्र पर निवेदन करें इसको वंध्या भी ग्रहण करें तो आयुष्मान विद्यावान गुणवान पुत्र प्राप्त करें।

पुत्रजीवी के फलों के होम से सर्वसिद्धि प्राप्त होवे, अश्वत्थ समिध होम से पुत्र प्राप्त होवे। लवणघृत होम से शत्रू का उच्चाटन होवे। काक एवं उल्लु के माँस होम से शत्रु का मारण होवे।

श्मशान में तीनलाख जप करने से भैरव दर्शन देवे। वटवृक्ष के नीचे जपने से भूत वेताल का वशीकरण होवे।

रक्तोत्पल मधु रक्तपुष्प व दुग्धान्न के होम से वशीकरण होवे। पलाश के पुष्प के होम से वाक्‌सिद्धि होवे। कर्पूर अगर गुग्गल होम से ज्ञानवृद्धि तथा दूर्वा होम से आयुवृद्धि होवे। जायफल व बिल्वफल होम से तथा पुष्प एवं मधुत्रय होम से सबका वशीकरण होवे। सरसों के होम से शत्रुनाश होवे। पाटलीपुष्प, कुन्द, उत्पल, नागचम्पा के होम से श्रीवृद्धि होवे। लाजाहोम, दधिक्षीर घृतायुक्त होम से रोगनाश होवें।

तिलक – कर्पूर समभाग, चतुर्भाग जटामांसी, गोरोचन, दोभाग चन्दन, सातभाग कुंकुम, नवभाग अगर की पिष्टिका कन्याद्वारा बनवावें एवं उसका तिलक करें तो सभी का वशीकरण होवें।

उशीरं चन्दनं कुष्ठं घनसारं स कुंकुमम् । श्वेतार्कमूल वाराही लक्ष्मीक्षीर महीरुहाम्। त्वचो बिल्वतरोमूलं शोषयित्वा सुचूर्णयेत्। चूर्णं व्योम्नि गृहीतेन

गोमयेन् विमिश्रतम्। कृत्वा पिण्डं हि संशोष्य संस्कृते हव्यवाहने। मूलेन दग्ध्वा तद्भस्म शुद्धे पात्रे विनिःक्षिपेत्। केतकीमालतीपुष्पैर्वासयेद्भस्म शोधितम्। अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं स्पृष्ट्वा भस्म सुपूजितम्। एतदादाय दिवसे प्रातः पुंड्रं करोति यः। तस्य रोगाः प्रणश्यंति कृत्याद्रोहमहाग्रहाः। रिपुचोरमृगादिभ्यो भयमस्य न जायते। वर्द्धते संपदः सर्वा पूज्यते सकलैर्जनैः॥

॥ विजयाभिषेकः ॥

राजा को विजय की कामना हेतु वटुकघटों के द्रव्य से अभिषेक कराना चाहिये। मध्य में कलश रखकर (प्रधानघट) उसके बाहर अष्टदिशाओं में अष्टकुंभ रखें। इस तरह हेमादिपात्र युक्त नव कलश रखें।

अष्टदल के बाहर १३ कलश, उनके बाहर १० कलश, उनके बाहर १६ कलश उनके बाहर ३५ कलश रखें।

कलशों का स्थापन व उनमें देव का आवाहन पूजन वटुक यंत्र पूजन की तरह ही होगा।

मध्य के ९ कलशों में नवरत्न डालें, अन्य सभी कलशों में -

संस्थाप्य विमलैस्तौयैरापूर्यान्विनिःक्षिपेत् ।
क्षीरद्रुमप्रवालानि लक्ष्मीदुर्वासमायुतम् ॥

कर्पूरं चंदनं विल्व मुशीरं कुंकुमं पुनः । कंकोलमगुरुं जाति मल्लिका चंपकोत्पलैः॥ गोमेद दाडिमं पश्चात् पट्टसूत्रेण वेष्टयेत्॥

लक्ष्मी – ऋद्दि वृद्दि नाम, कंद है जो कौशल पर्वत पर उगते हैं। वैसे हरड़ को श्रेयसी कहते हैं अभाव में इसका प्रक्षेप कर सकते हैं। कलशों को जल से पूरित कर उपरोक्त औषधियाँ व पत्ते ड़ालें। प्रधानघट में भैरव का राजसध्यान कर आवाहन करें। उसके बाहर अष्ट कलशों में असितांगादि अष्टभैरवों का आवाहन करें। उनके बाहर १३ कलशों में डाकिनी पुत्रादि १३ गणों का आवाहन करें। उनके बाहर १० कलशों में इन्द्रादि लोकपालों का पूजन करें। उनके बाहर १६ कलशों में श्रीकण्ठेश से महासेनेशादि का पूजन करें। उनके बाहर ३५ कलशों में **''ॐ ह्रीं कं क्रोधीश महाकालीभ्यां से लेकर ॐ ह्रीं क्षं क्रोधात्मभ्यां संवर्तकेश महामायाभ्यां नमः''** तक के देवताओं का आवाहन पूजन करें।

उपरोक्त देवताओं के नाम वटुकयन्त्र पूजन से अवलोकन कर लेवें।

घटों का स्पर्श (अन्वारब्ध) करके १० हजार जप करें। पायस, तिल, सरसों इत्यादि से दशांश हवन करे बलि प्रदान करें। उसके बाद नदी तीर पर मंगलध्वनि के साथ आचार्य राजा को **कवचमन्त्र, नाममन्त्र व रक्षोघ्न तथा पावमानसूक्त, शान्तिसूक्त** इत्यादि से अभिषेक करें।

आस्तिकं शुद्धवचनमभिषिंचेत्प्रसन्नधीः। अभिषिक्तो नरपतिः प्रणिपत्य गुरुं परम्॥ भूयसीं दक्षिणां दद्यात्प्रसीददति यथा गुरुः। राजाभिषिक्तो भवति साक्षाद्भूमिपुरंदरः॥ परान्विजयते भूपान्स्तूयते सकलैर्नरैः। भक्ष्यभौज्यैर्धनैर्धान्यैः पूजयंति यशस्विनः॥

॥ भैरव दीपदान प्रयोगः॥

पूजा अनुष्ठान कर्म में दीपदान का महत्व है। **दीपदान के दो प्रकार हैं।**

१. पूजापाठ प्रारंभ करने के समय - यह कर्मसाक्षीदीप है।

२. पूजापाठ पश्चात् - यह भैरव की प्रसन्नता हेतु बलिकर्म के साथ होता है।

कामना विशेष हेतु दीपदान का स्वतन्त्र विधान है जिसमें पात्र, द्रव्य, घृत व भार, वर्त्ति संख्या इत्यादि के भेद से कामनाफल का भेद है।

नदी तीर पर भैरवपूजन कर दीपों का पूजन कर नदी में विर्सजन का भी विशेष फल है।

शुभमुहुर्त्त में चन्द्रतारा अनुकूल होवे तथा रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाति, विशाखा, जेष्ठा और श्रवण नक्षत्रों में व्यतिपात, वैधृति सौभाग्य, शोभन, प्रीति, सुकर्म, धृति, वृद्धि, हर्षणादि योगों में प्रारम्भ करे।

विशेष - *सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, संक्रांति, कृष्णाष्टमी, नवरात्रि, ज्येष्ठशुक्ला दशमी व सभी देवी पर्वों में वटुक हेतु दीपदान प्रयोग करें।*

॥ पात्रस्य धातु मानम् ॥

सौवर्णं सिद्धिदं पात्रे वश्ये रोप्यं प्रकल्पयेत्।
विद्वेषणकरं लौहं मारणे मृण्मयं तथा॥
उच्चाटन कास्यं मोहे पित्तलजं स्मृतम्।
अत्रोक्तं सर्वकार्येषु सर्वाभावे तु ताम्रजम्॥

अधिकतर मृणमय पात्र काम में आता है परन्तु यहाँ अशुभ लिखा है अतः पात्र में चाँदी की अंगुठी इत्यादि डाल देवें। इसके अलावा अन्न की पिष्ठी का तैल पात्र

बनाया जाता है।

गोधूमाश्च तिला माषा (उड़द) मुद्गाश्च (मूंग) तंडुलाः क्रमात् ।
पञ्चधान्यमिदं प्रोक्तं सर्वदा दीप दापने ॥
वश्ये तण्डुलपिष्टोत्थं मारणे माषपिष्टजम् ।
तिलपिष्ट समुद्भूतमुच्चाटन विधौ स्मृतम् ॥
प्रियस्यागमने प्रोक्तं गोधूमोत्थं सतण्डुलम् ।
मोहने मुद्‌गजं प्रोक्तं पात्रद्रव्यमनुक्रमात् ॥

॥ सूत्रमानम् ॥

श्वेतशान्तौ तथा पीतं स्तंभेवश्ये तु रक्तकम् ।
मांजिष्ठ द्वेषणे प्रोक्तं मारणे कृष्णसूत्रकम् ॥
सर्वाभावे महादेवि श्वेतसूत्रं प्रशस्यते ॥

॥ वर्तिमानम् ॥

वर्तिका युग्म शिर की बनावें। वर्ति या तन्तु संख्या विषम होनी चाहिये।

एकापञ्च तथा सप्त एकविंशति संख्यया ।
अयुग्माथ प्रकर्त्तव्या युग्मां नैव तु कारयेत् ॥
वर्तिरिका प्रकर्त्तव्या त्रिस्त्रो वा वर्त्तस्य स्तथा ॥

॥ घृत तैल मानम् ॥

गोघृते सर्वसिद्धिः स्यान्माहिषं मारणे स्मृतम् ।
उष्ट्रीयं द्वेषणे प्रोक्तं गाडरं शान्तिकर्मणि ॥
अजामुच्चाटने कार्यं सर्वाभावे गोघृतम् ।
घृताभावे भवेत्तैलं दीपदाने विशेषतः ॥
तिल तैलं तथा नव्यं घृतं वश्ये प्रकल्पयेत् ।
कटुतैलं द्वेषणे च मारिणे राजिकं स्मृतम् ॥
बंदिबंधनमोक्षे च तथा भूत पिशाचके ।
सार्षपं तैलमापूर्य दीपदानं विधीयते ॥

तेल में वसा व मेदा नहीं होनी चाहिये।

वार परत्वेन बलिदानम्

प्रत्येक वार को बलिप्रदान करने के अलग अलग द्रव्य भी है, विनियोग बोलते हुये बलि प्रदान करें। देवता का सात्विक, राजस, तामस ध्यान कामना भेद से करें।

बलि के बाद तीन बार आचमन कर हस्त प्रक्षालन करें एवं प्रार्थना करें -

रविवारे पायसान्नं सोमवारे च मोदकम् ।
भौमे गुडाज्य गोधूमा बुधे च दधिशर्करः ॥
गोधूम पूरिका युक्ता घृतमध्ये सुपाचिताः ।
गुरौ चणक खण्डाज्यं केवलं चणकं भृगौ ॥
शनौ माषान्नतैलं च इतिवारबलिः क्रमात् ॥

॥ राजसध्यानम् ॥

उद्यत्सूर्य सहस्त्राभं त्रिनेत्र चन्द्रशेखरम् ।
रक्ताङ्गरागमारक्तं मालाम्बर विभूषितम् ॥
स्मेराननं नीलकण्ठं नानाभरण भूषितम् ।
दक्षिणोर्ध्वकरे शूलम् तदधो वरमद्रिजे ॥
वामोर्ध्वहस्ते देवेशि कपालं तदधोऽभयम् ।
दधानं संस्मरेद्देवि स्मृर्तणामभयंकरम् ॥

॥ तामसध्यानम् ॥

अञ्जनाचल संकाशं मुण्डमाला विभूषितम् ।
चन्द्रखण्ड लसत्पिंग केशभारं दिगम्बरम् ॥
त्रिनेत्रं दक्षिणैहस्तैडमरुं च सृणिं तथा ।
खड्गं शूलं च देवेशि दधानमपरैः करैः ॥
अभयं नागपाशं च घण्टां चैव कपालम् ।
उर्ध्वादिक्रमतो देवि भीमदंष्ट्रं भयानकम् ॥
सर्वाभरण संदीप्तं मणिनूपूर मण्डितम् ।
किंकिणी जाल संयुक्तं ध्यायेत्वटुकभैरवम् ॥

॥ कार्यपरत्वेन पात्र वितारे तैलमानम् ॥

विंशत्पलमिते पात्रे बुध्नोच्छ्राये षडङ्गुलम् ।
विस्तारे चाङ्गुलान्येव षोडश परिकीर्तितम् ॥१॥
पञ्चाशत्पलगव्यं च वश्ये चौर्यादिकर्मणि ।
त्रिंशद्दशपले पात्रे मानं तद्वत्प्रकीर्तितम् ॥२॥
षष्ठिपलमिते पात्रे बुध्नोच्छाये नवाङ्गुलम् ।
अङ्गुलानि चतुर्विंशदायामे परिकल्पयेत् ॥३॥

पञ्चसप्तमिते तैले सर्वशत्रुविनाशनम् ।
द्विपञ्चाशत्पले पात्रे बुध्नोच्छ्राये तु षष्ठिमत् ॥४॥
शतं पलमिते तैले द्वीपाद्वैरिविनाशनम् ।
शतं पलमिते पात्रे चोच्छ्रायो द्वादशाङ्गुलम् ॥५॥
द्वात्रिंशच्चैव ह्यायामे तन्मध्ये तु सहस्त्रकम् ।
सर्वकर्मणि सिद्धिः स्याद्दीपे पलसहस्त्रके ॥६॥
सपादशतपात्रे च पञ्चोत्तरशताधिके ।
पञ्चदशाङ्गुलोच्छ्रायं व्यायामे षट् च त्रिंशके ॥७॥
अयुतपलदीपश्च निगडाद्वंदिमुक्तये ।
सहस्त्रपलदीपे च वंदिमोक्षः प्रजायते ॥८॥
त्रिंशत्पलमिते पात्रे मान्यं चैव तु पूर्ववत् ।
त्रिंशत्पलमिते तैले दिनान्येकोनविंशतिः ॥९॥
कन्याभिकांक्षी तैलेन प्रत्यहं दीपमाचरेत् ।
इच्छितां लभते कन्यां भैरवस्य प्रसादतः ॥१०॥
नृकपालमिते पात्रे चोच्छ्रायं तु रसोंगुलम् ।
विंशत्पलमिते दीपं प्रत्यहं विंशतिर्दिने ॥११॥
सर्वरोग विनाशाय क्षयापस्मारदारुणे ।
दशपलमिते पात्रे बुध्नोच्छ्राये तु त्रिंशतम् ॥१२॥
दशपलमिते तैलं प्रत्यहं सप्तवासरे ।
राजवश्यकरं क्षिप्रं यदि साक्षाज्जगत्पतिः ॥१३॥
नित्य दीप प्रमाणे तु पात्रं पलत्रयं स्मृतम् ।
(तन्त्रांतरेऽपि) शतमष्टोत्तरं चाथ पलानि प्रथमेविधौ ।
अष्टाशीतिः द्वितीये च परेऽष्टाविंशतिः प्रिये ॥
सर्वकार्येषु देवेशि संख्या त्रिधाऽत्र वै ॥१४॥

दीपनाशे विचारः – दीपनाशे पुनर्दीपं कृत्वा शान्तिं तु कारयेत्।

अर्थात् दीप दोष होने पर दूसरी वर्तिका बनाकर दीप जलायें तथा शान्ति पाठ करें।

दीपदान विशेष – कपिलागोमयं चिंचाद्याम्लद्रव्यं यथा कामनया दीपपात्रं प्रयोक्तमाज्यं तैलं वा यथोक्त वर्तया शीघ्रकार्ये पात्रपल ६४, द्रव्यपल १०८,

तन्तु १०००।

द्वितीयपक्षे - पात्रपल ३२, द्रव्यपल ८८, तन्तु ३००।

मध्यमाने - पात्रपल १६, द्रव्यपल २८, तन्तु १००।

कनिष्ठपक्षे - पात्रपल ८, द्रव्यपल ८, तन्तु १६।

नित्यपक्षे - पात्रपल ३, द्रव्यपल १, तन्तु २१।

शुभकार्ये - दीपमुख उत्तरे, साधकः पूर्वाभिमुखः आधार यन्त्र मुख उत्तरे।

अशुभकार्ये - दीप, यन्त्र साधकानां मुखं दक्षिणे।

नित्य प्रयोग दीप रक्षा हेतु कील का प्रमाण ६ अङ्गुल। नैमित्तिक प्रयोग में दीप रक्षा हेतु कील का प्रमाण १२ अङ्गुल।

॥ अथ प्रयोगमाहः ॥

पूर्वदिन सामग्री का संग्रह करें एक समय भोजन करें या उस दिन उपवास रखें, भूमि शयन कर प्रातः काल जल्दी उठें।

शोधित स्थल पर कपिला गाय के गोमय से लेपन कर चार अङ्गुल की वेदी बनायें उस पर भैरव यन्त्र लिखें। दीप वेदिका के आगे चावल से अष्टदल बनाकर उस पर कलश स्थापित करें उस पर स्वर्णनिर्मित भैरव मूर्ति रखें।

सङ्कल्प - दीपदान प्रयोग ५, ७, १०, ११, १५, २१, २८, ४० दिन जैसी कामना होवे उतने दिन का सङ्कल्प करें।

अद्येत्यादि मम यजमानस्य वा सकलमनोरथ सिद्धये अमुककामनासिद्ध्यर्थे अमुक दिन पर्यन्तं अमुकसंख्यामानेन पात्रेण घृतेन तैलेन वा अमुक संख्याभिर्वर्तिकाभिः श्री बटुकभैरव प्रीत्यर्थं दीपदानं प्रयोगमहं करिष्ये।

गणेश अम्बिका का पूजन करे। आचार्य का वरण करे -

ममेप्सित फलावाप्त्यै आचार्य त्वामहं वृणे। द्रव्य दक्षिणा प्रदान करे।

भक्त्या समगतोऽहं ते पादयोर्भक्तवत्सल ।
दीपकार्यं च भक्त्या संपाद्यं वै नमो नमः ॥

आचार्य अपने सहाचार्यों के साथ पुण्याहवाचन नान्दीश्राद्धादि कर्म कराये।

सहाचार्यो व यजमान सहित भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठा (स्वयं की) मातृका न्यास मंत्र के ऋष्यादि न्यास करन्यास, अङ्गन्यास, पदन्यास, अक्षरन्यास, एकादशन्यास, पीठन्यासादि करें।

मूर्ति का अग्न्युत्तारण कर कलश पर स्थापन करें तथा भैरव पूजन तथा आवरण

पूजन कर बलिदान आदि करे।

दीपदान विनियोगः- ॐ अस्य श्री वटुकभैरव दीपदान मालामंत्रस्य मन्मथ ऋषिः पंक्ति छन्दः आपदुद्धारक वटुकभैरव देवता बं बीजं ह्रीं शक्तिः मम सर्वमनोरथ सिद्धर्थे दीपदाने विनियोगः।

मंत्रन्यासः- मन्मथ ऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, वटुकभैरव देवतायै नमः हृदये, बं बीजाय नमः गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

बीजन्यासः-

ह्रां बां अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ह्री बीं तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ह्रूं बूं मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ह्रैं बैं अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुं।
ह्रौं बौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः बः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

- प्रयोगानुसार भैरव का राजस तामस ध्यान करे।

दीपवेदी पर यंत्र रखे चावल से पूरित करे (बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, अष्टदल, षोडशदल एवं भूपूर युक्त यंत्र)

बिन्दु त्रिकोणं षट्कोणं वृत्ताष्टदलकं तथा।
दलानिषोडशान्येव चतुरस्त्रं ततः परम् ॥
एवं यंत्रं समालिख्य तत्र संपूज्य देवताः।
तस्योपरि दीपपात्रं च स्थापयेत् साधकोत्तमः।

उस पर घृत, तैल, वर्ति युक्त दीप स्थापन करे एवं मंत्र पढ़े-

ॐ नमो भगवते वटुकभैरवाय देवी ,य सर्वदुष्टजन मुखस्तंभं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।

यह मंत्र आठ बार पढकर मूलमंत्र से दीप प्रज्वलित करे अथवा विस्तृत विधि के अनुसार करें। यथा-

दीपवेदी की रक्षा के लिये आठों दिशाओं में खादिर वृक्ष की ८ कीलें गाड़े (इनकी लम्बाई का प्रमाण पहले दिया जा चुका है) प्रत्येक दिशा में कीलों के पास में अष्टभैरवों के लिये बलि देवें। बलिपात्र के नीचे चंदन अथवा जल से त्रिकोण

षट्कोण चतुरस्र मंडल बनावें। प्रत्येक दिशा का अलग-अलग भैरव है उनके दीप जलाये,उनके नाम से वहाँ गंधाक्षत करे, रक्तचंदन व करवीर पुष्प चढ़ावें।

बलि अर्पण करते हुये मंत्र बोलकर जल निक्षेप करे।

पूर्वे - **ॐ ह्रीं जयन्त भैरवाय नमः। ॐ ह्रीं जयन्त भैरव एहि एहि इमं सदीपं मासान्न बलिं गृहण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा।**

आग्नेये- **ॐ ह्रीं अघोर भैरवाय नमः। ॐ ह्रीं अघोर भैरवाय एहि एहि इमं सदीपं मासान्न बलिं गृहण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा।**

दक्षिणे **ॐ ह्रीं चामीकर भैरवाय नमः। ॐ ह्रीं चामीकर भैरव एहि एहि इमं सदीपं मासान्न बलिं गृहण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा।**

नैऋत्ये **ॐ ह्रीं असितांग भैरवाय नमः। ॐ ह्रीं असितांग भैरव एहि एहि इमं सदीपं मासान्न बलिं गृहण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा।**

पश्चिमे - **ॐ ह्रीं भीषण भैरवाय नमः। ॐ ह्रीं भीषण भैरव एहि एहि इमं सदीपं मासान्न बलिं गृहण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा।**

वायव्ये **ॐ ह्रीं प्रचण्ड भैरवाय नमः। ॐ ह्रीं प्रचण्ड भैरव एहि एहि इमं सदीपं मासान्न बलिं गृहण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा।**

उत्तरे - **ॐ ह्रीं कराल भैरवाय नमः। ॐ ह्रीं कराल भैरव एहि एहि इमं सदीपं मासान्न बलिं गृहण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरू कुरू स्वाहा।**

ईशाने **ॐ ह्रीं कपाल भैरवाय नमः। ॐ ह्रीं कपाल भैरव एहि एहि इमं सदीपं मासान्न बलिं गृहण मां रक्ष रक्ष अभीष्टं कुरु कुरु स्वाहा।**

अपने कुल सम्प्रदाय के ४ गुरुवों को नमस्कार करें।

ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ परम गुरुभ्यो नमः। ॐ परात्पर गुरुभ्यो नमः। ॐ परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः।

गणपति व क्षेत्रपाल का स्मरण करें।

ग्लौं गणपतये नमः। क्षौं स्थान क्षेत्रपालाय नमः।

तामपात्र पर त्रिकोण, षट्कोण, चतुरस्र, बना हुआ दीपयंत्र रखे। रक्तचंदन व अक्षतों से पात्र पूरित करे। यंत्र का पीठ पूजन करे। विस्तृत पूजन हेतु पीठ पूजा विधान अलग लिखा हुआ है वहाँ से "**ॐ मण्डूकाय नमः, कालाग्निरुद्राय नमः**" इत्यादि पूजन करे।

सामान्य पूजन हेतु ॐ मण्डूकादि पीठ देवताभ्यो नमः।

पीठ शक्तियों का पूजन करें-ॐ वामायै नमः, ॐ ज्यैष्ठायै नमः,ॐ रौद्रयै नमः, ॐ काल्यै नमः, ॐ कलविकरण्यै नमः, ॐ बलविकरण्यै नमः, ॐ बलप्रमथिन्यै नमः, ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः, ॐ मनोन्मन्यै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्म-शक्तियुक्ताय अनन्ताय योग पीठात्मने नमः। इति पीठं संपूज्य।

त्रिकोण में पूजन करे-ॐ सं सत्वाय नमः, ॐ रं रजसे नमः, ॐ तं तमसे नमः।

षट्कोणे- ॐ ह्रां बां हृदयाय नमः, हृदयं पादुकां पूजयामि। ॐ ह्रीं बीं शिरसे नमः, शिरं पा. पू.। ॐ ह्रूं बूं शिखायै नमः, शिखां पा. पू.। ॐ ह्रैं बैं कवचाय नमः, कवचं पा. पू.। ॐ ह्रौं बौं नेत्रत्रयाय नमः, नेत्रत्रयं पा. पू.। ॐ ह्रः बः अस्त्राय नमः अस्त्रं पादुकां पूजयामि।

पात्र को घृत या तैल से पूरित करे। गायत्री मंत्र का स्मरण करते हुये वर्तिका (यथा कामना संख्यानुसारेण) रखें, दीपक के प्रमाण के अनुसार उसमें शलाका रखें अथवा रजत मुद्रिका रख देवें। पात्र के दक्षिण की ओर ''छुरिका'' रखे।

ॐ ह्रीं छीं छुरिके मम शत्रुच्छेदिनि रिपून् निर्दलय निर्दलय मां पाहि पाहि स्वाहा। इस मंत्र से छुरि का पूजन करें।

ॐ ह्रां ह्रीं सर्वाङ्ग सुन्दर्यै शलाकायै नमः। इस मंत्र से शलाका का पूजन करे।

अशुभ कामना में वर्ति का मुँह दक्षिण की ओर तथा शुभकामना में पूर्वोत्तर अथवा पश्चिम में करें।

मूल मंत्र या गायत्री मंत्र से दीप प्रज्वलित करें। पुनः दीपदान का ऋषि न्यास करे। जो पूर्व में दिये गये है। यथा मन्मथ ऋषये नमः शिरसि ......।

निम्न मंत्र से दीपक के गंधाक्षत करे पुष्प निक्षेप करे। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं सर्वज्ञाय प्रचण्डपराक्रमाय बटुकाय इमं दीपं गृहाण सर्वकार्याणि साधय-२ सर्वदुष्टान्नाशय नाशय त्रासय त्रासय सर्वतो मम रक्षां कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।

दाहिने हाथ में जल लेकर निवेदन करे

गृहाण दीपं देवेश बटुकेश महाप्रभो ।
ममाभीष्टं कुरु क्षिप्रमापद्भ्यो मां समुद्धर ॥

मूल मंत्र पढे। पुनः बटुकाय इमं दीपं निवेदयामि नमः। कहकर जल भूमि

पर छोड़े।

दीपक की **प्राण प्रतिष्ठा करें**–

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ह्रां हंसः ह्रां अस्य दीपस्य प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ह्रां हंसः ह्रां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ह्रां हंसः ह्रां सर्वेन्द्रियाणि स्थितानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

इस प्रकार प्राण प्रतिष्ठा कर दीपक में बटुक का आवाहन सात्विक, राजस, तामस, ध्यान अपनी कामनानुसार करे। आवाहनादि मुद्रा दिखाये। यंत्र की आवरण पूजा करे। पूजा पूर्व में की जा चुकी है तो पंचोपचार पूजन करे। बलि प्रदान करें।

दीपक के वाम भाग में बलि मण्ड़ल बनायें। त्रिकोण, वृत, षट्कोण, बनाये गंधाक्षत करे– "**ॐ बलि मंड़लाय नमः**"।

क्षत्रियादिभिः समांसो बलिं देय।

शाल्योदन (धान की साठी, चूर्ण) शर्करा, लाजाचूर्ण, गुड़, अपूप, शष्कुलीसमूह, सूप, पायसन्नादिघृतलुप्तमनेक जातीयं बलिद्रव्यं त्रिमधुयुतं (घृत,मधुशर्करा) मोदक माषवटकानि विविध भक्ष्य द्रव्याणि वा यथा संभवं माष(उड़द) मुद्गान्नप्रधान(मूंग के द्रव्य) बलिद्रव्यं संस्थाप्य।

वहाँ पर पिष्टी का (गेंहू का आटा, या उड़द, मूंग का आटा) दीपक जलाये तथा संकल्प करें–

देशकालौ संकीर्त्य अमुकफलावाप्तये श्री वटुकभैरव प्रीतये अमुक द्रव्येण बलिदानमहं करिष्ये।

बायें हाथ के अंगुठे को बलिपात्र से स्पर्श करें। दाहिने हाथ में जल लेवें।

मूल मंत्र का जप करें पश्चात् "**ॐ एहि एहि विदुषि पुरं भंजय भंजय नर्तय नर्तय विग्रह विग्रह महाभैरव बटुक बलिं गृहण गृहण स्वाहा**"।

ॐ येह्येहि देवीपुत्र बटुकनाथ कपिलजटाभार-भासुर-त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलिं गृहण गृहण स्वाहा। ऐसा उच्चारण करके जल छोड़े।

समांसबलि पक्षे– **ॐ पाशुपाशाय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि तन्नः पशु प्रचोदयात्।**

ॐ अलिपिशित मांसान्न बलिं गृहण गृहण मां रक्ष **रक्ष शत्रुपक्षस्य रुधिरं**

पिशितं पिशितं दिने दिने भक्षय भक्षय गणैः सार्द्धं सारमेय समन्वितः सर्वगणेभ्यो नमः आमिषं गृहण गृहण भक्षय भक्षय मां रक्ष रक्ष स्वाहा। इति **मंत्रेण जलमुत्सृजेत्।**

पश्चात् हस्तशुद्धि कर आचमन करें।

यथा कामनानुसार देव का ध्यान करें। अष्टोत्तरशतनाम की ११, २१, ५१, १०० आवृत्ति करें, स्तव स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम का पाठ करें। मूलमन्त्र के जप करें दीप समाप्ति तक मन्त्र जप व कवचादि स्तोत्रों का पठन करते रहें। पाठ समाप्ति या प्रयोग समाप्ति पश्चात् कन्या, सुवासिनी एवं वटुक को पायसान्न मोदक चणक नाना भक्ष्य भौज्य से तृप्त करें।

आचार्य नित्य शान्तिस्तोत्र का पाठ करें, यजमान भी करें।

॥ शान्तिस्तोत्रम् ॥

यस्यार्चनेन विधिना किमपीह लोके
कर्मप्रसिद्धमिति नामफलं प्रसूते ।
तं सन्ततं सकल साधक वाञ्छितार्त्तिं
चिन्तामणि सुरगणाधिपतिं नमामि ॥
रक्ताम्बरं ज्वलन पिङ्गजटाकलापं
ज्वालावली कुटिलचन्द्रधरं त्रिनेत्रम् ।
बालार्क धूम फल काञ्चन तुल्य वर्णं
देवीसुतं वटुकनाथमहं नमामि ॥
हरतु कुल गणेशो विघ्न संघान शेषान्नयतु
कुल सपर्या पूर्णतां साधकानाम् ।
पिवतु वटुकनाथः शोणितं निन्दकानां
दिशतु सकल कामान् साधकानां गणेशः ॥
सतत वितत तेजश्चक्र भासा विनम्र
ग्रसमसमुदितो वै स्वाससन्दोहनाभिः ।
प्रलय नयननाभिः किन्तु चात्मोद्भवाभिः
भवतु भुवन गर्भो भैरवो नः पुनातुः ।
या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा ।
[illegible] [illegible] सा मम व्याधिं व्यपोहतु ॥

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु प्रदूषकाः ।
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा ॥

इति पठित्वा पश्चाज्जपदशांशेन होमादि ब्राह्मणभोजनान्तैः सन्तर्प्य ब्राह्मणाज्ञ-पानुसारेण दक्षिणादिभिः सन्तोष्य आचार्यं कार्यानुसारेण दक्षिणावस्त्रालंकारादिभिः संतोष्य प्रणमेत् ॥

॥ इति दीपदान प्रयोगः ॥

॥ वीरभैरव साधन प्रयोगः ॥

साधक नित्य क्रिया से निवृत्त होकर गंधाक्षत पुष्प धूप दीप ताम्बूल फल पूजा द्रव्यों का संग्रहण करें। सुपक्कान्, माषान्, मुग्दान्, मसूरान्, चणकान्, ओदनक्षीर, अपूपान्, सुहालीन भक्ष भोज्य द्रव्याणि संगृह्य। आठ दूधवाले वृक्ष की कीलें, एवं स्तंभन हेतु एक मोटी कील बनायें। कन्या से काते हुये कपाससूत्र का कुंकुम से चर्चित करें। पलाशपत्रों के पात्रों में सोलह जगह एवं २ २ पात्र अलग, इनमें पक्कानादि रखें। उत्तरसाधक (सहायक) को साथ लेकर श्मशान भूमि की ओर गमन करें।

आचम्य प्राणायामं कृत्वा। स्वेष्ट देवतां ध्यात्वा। करबद्ध होकर श्मशानी वासी देवताओं से प्रार्थना करें।

ॐ अत्र श्मशाने या काश्चिद्देवता निवसंति हि ।
ताः प्रयच्छंतु मे सिद्धिं प्रसन्ना संतु पांतु माम् ॥

सरसों व अक्षत लेकर दिग्रक्षण करें -

पूर्वे मां शङ्करः पातु तथाग्नेयां च शूल धृक् ।
कपाली दक्षिणे पातु नैर्ऋत्ये जटिलोऽवतु ॥१॥
पश्चिमे पार्वतीनाथो वायव्ये प्रमथाधिपः ।
उत्तरे मुण्डमालोऽव्यादीशान्ये वृषभध्वजः
उर्ध्वं पातु तथा शंभुरधस्ताद् धूलिधूसरः ॥२॥

हाथ जोड़ कर कहें -

अग्रतो भैरवः पातु पृष्ठतः पातु खेचरः ।
दक्षिणे भूधरः पातु वामे च पिशितासनः ॥१॥

केशान्पातु विशालाक्षो मूर्धानं च मरुत्प्रियः ।
मस्तकं पातु भृग्वीसो नेत्रे पातु महामनाः ।
कपोलौ पातु वीरेशो गण्डौ गण्डाभिमर्दनः ॥
उत्तरोष्ठे विरूपाक्षो ह्यधरे योगिनीप्रियः ।
अक्षेषु दक्षविध्वंसी चिबुके च कपालधृक् ॥
कण्ठे रक्षतु मां देवो नीलकण्ठो जगद्गुरुः ।
दक्षस्कंधे गिरीन्द्रेशो वामस्कन्धे वसुंजयः ॥
दक्षिणे च भुजे सर्वमंत्रनाथः सदावतु ।
वामेभुजे सार्वभौमो हृदयं पातु पाण्डुरः ॥
दक्षस्तने पशुपतिर्वामे पातु महेश्वरः ।
उदरे सर्वकल्याणकारकोऽवतु मां सदा ॥
नाभौ कामप्रविध्वंसी जंघे पातु दयामयः ।
जानुनी पातुजामित्रो गुल्फौ गौरीपतिः सदा ॥
पादपृष्ठे सार्मानधिस्तथा पादांगुलिर्हरः ।
पादाधः पातु सततं व्योमकेशो जगत्प्रियः ॥

इति रक्षा मंत्रान् पठित्वा पूर्वादिदिक्षु रक्षाबीज मंत्रान्पठन्नमस्कुर्यात्।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः नमः पूर्वे, ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रौं नमः आग्नेये, ॐ ह्रीं श्रीं नमः दक्षिणे, ॐ ग्लूं ग्लूं नग नग नमः नैर्ऋत्ये, ॐ यूं भ्रूं प्रूं सं सः नमः पश्चिमे, ॐ म्रां म्रां नमः वायव्ये, ॐ भ्रां भ्रां भैरवे नमः उत्तरे, ॐ ब्रूं ब्रूं भ्रूं फट् नमः ईशान्ये, ॐ ग्लों ब्लूं नमः ऊर्ध्वे, ॐ घ्रां घ्रं घ्रः नमः अधरे।

इन मंत्रों से रक्षा करें। आठों दिशाओं में आठ कीले दूध वाले वृक्ष की गाड़े एवं एक कील मोटी स्तंभन हेतु मध्य में रोपण करें।

मध्य स्तंभ के पास बैठकर भैरव से प्रार्थना करें।

ॐ भां भैरव भैरवाय नमः भां भैरव भैरव भयंकर भयं हर मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

प्रत्येक कील के पास बलिपात्र रखें, बलिपात्र को त्रिकोण, षट्कोण, चतुरस्र मण्डल पर रखें। प्रत्येक दिशा में कील के पास पूजन कर बलि प्रदान करें दीपक भी जलावें।

पूर्वे- ॐ लं इन्द्र सांग सपरिवार इहागच्छेत्यावाह्य, ऐरावतारूढं वज्रहस्तं पीतवर्णं सहस्राक्षं सुरगणपरिवारं ध्यात्वा। ॐ लं इन्द्राय नमः आसन अर्घ्य पाद्य आचमन स्नान गंधपुष्प अक्षत धूप दीप उपचारैः सम्पूज्य तत्पुरतः चतुरस्त्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र माषपुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन्-

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं भो इन्द्र सुरनायक शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सनातनीं सिद्धिं मे देहि देहि रक्ष मां इमं माष बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा।

इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृजेत् ताम्बूलं च दत्वा प्रणमेत्।

आग्नये - ततः आग्नेय कोण गत कील समीपं गत्वा तत्र ॐ रं अग्ने सांग सपरिवार इहागच्छागच्छेत्यावाह्य। मेषारुढं शक्तिहस्तं त्रिनेत्रं तेजोनिधिं ध्यात्वा ॐ रं अग्नये नमः आसनादि दशोपचारैः संपूज्य तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मंडलं जलेन कृत्वा तत्र मुद्ग भरितं पुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन्-

ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रौं अग्नेतेजोनायक शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सनातनीं सिद्धिं मे देहि इमं मुद्गबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट्। इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य ताम्बूलं च दत्वा प्रणम्य।

ततः दक्षिण कील समीपं गत्वा तत्र ॐ टं यम सांग सपरिवार इहागच्छागच्छेत्यावाह्य।

महिषारूढं कृष्णवर्णं दण्डहस्तं प्रेतगणपरिवेष्टितं ध्यात्वा।

ॐ टं यमाय नमः आसनाद्युपचारैः पूर्वोक्तैः संपूज्य तत्पुरतः चतुरस्त्र मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र मसूर भरितं पुटकं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन्-

ॐ प्रां प्रीं प्रूं भो यम प्रेताधिपते शीघ्रं मे प्रसन्नो भव इमं मसूरबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट्। इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य ताम्बूलं च दत्वा प्रणम्य।

नैर्ऋत्ये - ततः नैर्ऋत्यकोणगत कीलसमीपं गत्वा तत्र-

ॐ क्षं निर्ऋते सांग सपरिवार इहागच्छागच्छेत्यावाह्य- प्रेतारूढं धूम्रवर्णं खड्गहस्तं रक्षोभिः परिवृतं ध्यात्वा, ॐ क्षं निर्ऋते नमः पूर्वोक्तैः सम्पूज्य।

तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मंडलं जलेन कृत्वा तत्र- चणकपूरितं पुटकं निधाय दक्षहस्ते

जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन्- ॐ फ्रें फ्रें फ्रें हूं हूं खें खें खें ह्रों ह्रों भो भो रक्षोनाथ शीघ्रं मे प्रसन्नो भव इमं चणक बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट्।

इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य ताम्बूलं च दत्वा प्रणमेत्।

पश्चिमे - ततः पश्चिम दिग्गत कील समीपं गत्वा तत्र ॐ वं वरुण सांग सपरिवार इहागच्छ आगच्छ इति आवाह्य- मकरारूढं पाशहस्तं श्वेतवर्णं यादोगण परिवार सहितं ध्यात्वा।

ॐ वं वरुणाय जलनाथाय नमः पूर्वोक्तैः सम्पूज्य तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्रौदन पूरित पात्रं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन्-

ॐ व्रां व्रीं व्रूं भो भो वरुण जलनाथ शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सिद्धिं मे देहि इमं ओदनबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट्।

इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य ताम्बूलं च दत्वा प्रणमेत्।

वायुकोणे - ततो वायुकोणगत कील समीपं गत्वा तत्र ॐ यं वायो सांग सपरिवार इहागच्छागच्छेत्यावाह्य- मृगारूढं वृक्षायुधधरं मरुद्गण सहितं ध्यात्वा ॐ यं वायवे नमः पूर्वोक्तैः सम्पूज्य, तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्र पायस पूरितं पात्रं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन्-

ॐ वां वीं वूं ॐ ब्रां ब्रीं ब्रूं भो वायो भुवनपते शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सिद्धिं मे देहि इमं पायस बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट्।

इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य ताम्बूलं च दत्वा प्रणमेत्।

उत्तरे - ततः उत्तरदिग्गत कीलसमीपं गत्वा तत्र ॐ कुं कुबेर सांग सपरिवार इहागच्छागच्छेत्यावाह्य। नरवाहनं गदाहस्तं शुक्लवर्णं यक्षगण परिवेष्टितं ध्यात्वा ॐ कुं कुबेराय नमः पूर्ववत् सम्पूज्य, तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मण्डलं जलेन कृत्वा तत्रापूप पूरितं पात्रं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन्-

ॐ क्रूं क्रूं क्रूं ॐ क्रां क्रां क्रां भो भो यक्षनाथ शीघ्रं मे प्रसन्नो भव सिद्धिं मे देहि इममपूपबलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट्।

इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं बलिं चोत्सृज्य ताम्बूलं च दत्वा प्रणमेत्।

ईशानकोणे - ततः ईशानकोणगत कीलसमीपं गत्वा तत्र ॐ हं ईशान

सांग सपरिवार इहागच्छागच्छेत्यावाह्य। वृषभारूढं शूलहस्तं श्वेतवर्णं विद्यागण सेवितं ईशानं ध्यात्वा।

ॐ हं ईशानाय नमः पूर्वोक्तैः सम्पूज्य, तत्पुरतश्चतुरस्त्रं मण्डलं जलेन कृत्वा सुहाली पूरित पात्रं निधाय दक्षहस्ते जलं गृहीत्वा वामहस्तेन तत्पात्रं स्पृशन्-

ॐ श्रीं श्रीं ॐ श्रां श्रां श्रां भो ईशान विद्याधिपते शीघ्रं मे प्रसन्नो भवं सिद्धिं मे देहि इमं शष्कुलि बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट्।

इति मंत्रेण तस्मिन्पात्रे जलं वलिं चोत्सृज्य ताम्बूलं च दत्वा प्रणमेत्।

इत्यष्ट दिक्पाल बलिं दत्वा मध्यस्तंभसमीपं गत्वा निर्भया सन् (मध्य कील के पास) **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं स्तंभाय स्वाहा। इति मंत्रेण पूर्वोक्तैः सम्पूज्य मंत्रमयं कवचं पठेत्।**

तद्यथा- **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः क्षां क्षीं क्षूं क्षः ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रः घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रः म्रां म्रीं म्रूं म्रः म्रं म्रें म्रों म्रौं ह्रों ह्रों ह्रों ह्रों क्लों क्लों क्लों क्लों श्रों श्रों श्रों श्रों ज्रों ज्रों ज्रों ज्रों हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं फट् सर्वतो रक्ष रक्ष रक्ष रक्ष भैरवनाथ नाथ हुं फट्।**

अपने शरीर पर मूल मंत्र से व्यापक न्यास करें।

मध्य स्तंभ के पास पूर्वाभिमुख होकर अपना आसन गृहण करे भूमि पर अष्टदल उसके बाहर षोडशदल पुनः उसके बाहर चारद्वार युक्त परिधि (चतुरस्त्र) बनाये।

यंत्र मध्य में देव का आवाहन कर षोडशोपचार पूजन कर यंत्र का पूजन करें।

प्रथमावरणम् - षट्कोणे **ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुं। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।**

द्वितियावरणम् - अष्टदले -(पूर्वादिक्रमेण) **ॐ असितांग भैरवाय नमः। ॐ रुरुभैरवाय नमः। ॐ चण्डभैरवाय नमः। ॐ क्रोधभैरवाय नमः। ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः। ॐ कपालभैरवाय नमः। ॐ भीषणभैरवाय नमः। ॐ संहारभैरवाय नमः।**

तृतीयावरणम् - षोडशदलेषु - श्री वटुकभैरव के षोडश मित्रों का पूजन करें (पूर्वादिक्रमेण) -**ॐ कुलिशाय नमः। ॐ सुकुलिशाय नमः। ॐ जामित्राय नमः। ॐ रामठाय नमः। ॐ अरिभाय नमः। ॐ प्रचण्डाय नमः। ॐ चण्डकेशाय नमः। ॐ चण्डात्मने नमः। ॐ चामराय नमः। ॐ चरित्राय**
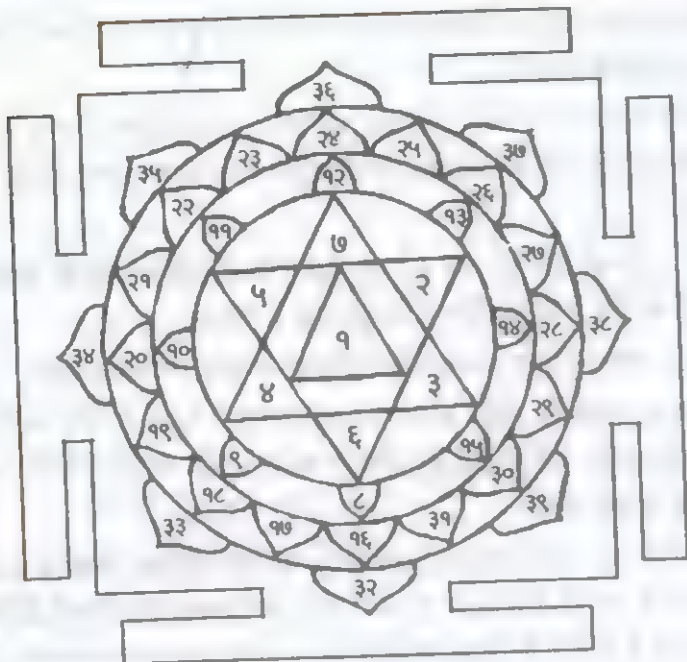
वीरसाधना पूजन यन्त्र

नमः। ॐ चमत्काराय नमः। ॐ चञ्चलाय नमः। ॐ चारुभूषणाय नमः। ॐ चामीकराय नमः। ॐ चारुवाहाय नमः। ॐ कितवाय नमः।

चतुर्थावरणम् - उसके बाहर के अष्टदलों में - (पूर्वादिक्रमेण) ॐ ब्राह्मयै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराही नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। इत्यादि मातृकाओं का पूजन करें।

पञ्चमावरणम् - बाहर के चतुरस्त्र में दिक्पालों का पूजन करें (पूर्वादिक्रमेण)- ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः।

षष्ठमावरणम् - दिक्पालों के आयुधों का पूजन करें - ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ वृक्षायुधाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः।

आवाहित देवताओं का पञ्चोपचार से पूजन करें। पृथक पृथक पात्र में प्रत्येक आवरण हेतु एक पात्र में पायसनैवेद्य निवेदन करें। यन्त्र पर स्थापित देवताओं के

मण्डल पर वीरशान्ति पाठ करते हुये अक्षत छोड़े।

ॐ चण्ड आयाहि, ॐ प्रचण्ड आयाहि, ॐ ऊर्ध्वकेश आयाहि, ॐ भीषण आयाहि, ॐ प्रभीषण आयाहि, ॐ व्योमकेश आयाहि, ॐ व्योमवाहो आयाहि, ॐ व्योमव्यापक आयाहिः।

इस प्रकार आवाहन कर पृथक-पृथक गंधोपचार से पूजन कर नैवेद्य अर्पण करें। पश्चिमाभिमुख होकर ऋष्यादिन्यास करें।

भैरव के अष्टाक्षर मन्त्र "**भां भैरवनाथाय हुं फट्**" का जप करें। बायें हाथ से पायस पात्र गृहणकर देव को नैवेद्य अर्पण करें। प्रसन्नचित्त होकर जप करें।

प्रार्थना करें - **देवोवरं वरयेति**। दण्डवत् प्रणाम करें। कन्या वटुक सुवासिनी भोजन कराकर महोत्सव करें।

॥ इति वीरसाधन प्रयोगः॥

॥ अथ स्वर्णाकर्षणभैरव प्रयोगः॥

लक्ष्मी चंचल है अतः इसके साथ पुरुष देवता की उपासना जरुरी है। इसमे लक्ष्मी का निवास स्थिर होता है। वैष्णव संप्रदाय के अनुसार दधित्वामन की उपासना तथा तन्त्र मन्त्र में गणेश व स्वर्णाकर्षण की उपासना करनी चाहिये।

इसकी उपासना से आय के साधन बढते हैं तथा लक्ष्मी स्थिर रहती है। स्वर्णाकर्षण भैरव स्वप्न में शास्त्रगुरु की तरह मार्गप्रदर्शन भी करता है ऐसा अनुभव है। द्ररिद्रता नाश एवं धन प्राप्ति हेतु व बगलामुखी साधना में स्वर्णाकर्षण भैरव का विशेष महत्व हैं एवं लाभप्रद साधना है।

विनियोग - **ॐ अस्य श्री स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः पंक्ति छन्दः हरिहरब्रह्मात्मक स्वर्णाकर्षण भैरवो देवता, ह्रीं बीजम्, सः शक्ति ओम् कीलकम् ममदारिद्रयनाशार्थे, स्वर्ण राशि प्राप्त्यर्थे स्वर्णाकर्षण भैरव प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः **ब्रह्मऋषये नमः शिरसि, पंक्ति छन्द से नमः मुखे। स्वर्णाकर्षण दैवताया नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सः शक्तिः नमः पादयोः ओम् कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

कराङ्गन्यास - **ओम् ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय अंगुष्ठाभ्यां नमः।** (हृदायाय

नमः)। ॥१॥ ओम् ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिलबद्धाय तर्जनीभ्यां नमः । शिरसि स्वाहा। ॥२॥ ओम् लोकेश्वराय मध्यमाभ्यां नमः। (शिखायैवषट्)॥३॥ ओम् स्वर्णाकर्षण भैरवाय अनामिकाभ्यां नमः।(कवचाय हुम्)॥४॥ ओम् ममदारिद्रय विद्वेषणाय कनिष्ठकाभ्यां नमः।(नेत्रत्र याय वौषट्)॥५॥ ओम् महा भैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।(अस्त्राय फट्)॥६॥

ध्यानम्-

पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम् ।
अक्षयं स्वर्णमाणिक्यं-तडितपूरित पात्रकम् ॥

अभिलषितं महाशूलं चामरं तोमरोद्वहम् ।
सर्वाभरणसम्पन्नं मुक्ताहारोपशोभितम् ॥१॥

मदोन्मत्तं सुखासीनं भक्तानाम् च वर प्रदम् ।
सततं चिन्तये देवं भैरवं सर्वसिद्धिदम् ॥

पारिजात द्रुमुकान्तारस्थिते मणिमण्डपे ।
सिंहासनगतं ध्यायेद भैरवं स्वर्णदायकम् ॥२॥

गाङ्गेयपात्रं डमरुं त्रिशूलं वरं करैः संदधतं त्रिनेत्रं ।
देव्या युतं तप्तस्वर्णवर्ण स्वर्णाकृतिं भैरवमाश्रयामि ॥३॥

जप मन्त्र ''ओम् ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्रय विद्वेषणाय महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं।''

इस मन्त्र की तीन या पांच माला का नित्यजाप, हवन, तर्पण, मार्जन आदि करने से इक्तालीस दिन में वांछित लाभ मिलता है।

॥ यन्त्र पूजनम् ॥

बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टकोण, पुनः अष्टकोण उसके बाहर पुनः अष्टकोण बनायें। उसके चारों ओर चारद्वार युक्त चतुरस्र बनायें। उपर्युक्त यन्त्र ताम्रपात्र पर बनायें अथवा तंडुलादि से बनायें।

सर्वतोभद्र या लिङ्गतोभद्र मण्डल बनायें। पीठ देवताओं का पूजन करें ॐ मं मण्डूकादि परतत्वांत पीठदेवताभ्यो नमः। पीठ शक्तियों का पूजन करें - (पूर्वादिक्रमेण) ॐ वामायै नमः। ॐ जैष्ठायै नमः। ॐ रौद्रये नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कलविकरण्यै नमः। ॐ बलविकरण्यै नमः। ॐ

बलप्रमथिन्यै नमः। ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः। मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः।

पीठशक्तियों का पूजन करें। स्वर्ण निर्मित यन्त्र-मूर्ति का घी से अभ्यञ्जन करें दुग्ध धारा व जलधारा देवें। स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर भद्रपीठ पर आसीन करें।

प्राणप्रतिष्ठा करें। उसके बाद पूजन करें तथा यन्त्रार्चन करें। पुष्पाक्षत लेकर ध्यान करें। गंधाक्षत व पुष्पों से अर्चन करें तथा तर्पण भी करते रहें।

ॐ गांगेयपात्रं डमरुं त्रिशूलं वरं करैः संदधतं त्रिनेत्रम् ।
देव्यायुति तप्तसुवर्णवर्णं स्वर्णाकृतिं भैरवमाश्रयामि ॥१॥

मन्दारद्रुममूलभाजि सुमहामाणिक्यसिंहासने
संविष्टोदरभिन्नपङ्कजरुचा देव्या कृतालिङ्गनः ।
भक्तेभ्यः कररत्नपात्रभरितं स्वर्ण ददानोऽनिशं
स्वर्णाकर्षणभैरवो विजयते स्वर्गापवर्गैकभूः ॥२॥

पञ्चोपचार पूजन करें, आवरण पूजा के लिये आज्ञा माँगें।

पुष्पाञ्जलि प्रदान करें -

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ।
अनुज्ञां देहि वटुक परिवारार्चनाय मे ॥
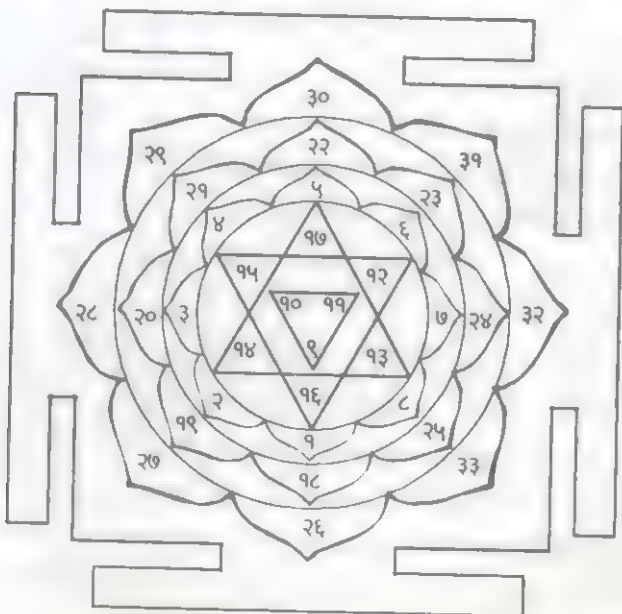
स्वर्णाकर्षण भैरव यन्त्रम्

प्रथमावरणम् - (अङ्गपूजनम्) देव के साथ अष्टदलों में अष्टदिशा की कल्पना करते हुये अष्टदल में अङ्गपूजन करें।

पूर्वादिक्रमेण - **ॐ आकाशाय नमः। मूर्ध्नि पूजयामि ॥१॥ ॐ समीरणाय नमः। मुखे पूजयामि ॥२॥ ॐ दध्नाय नमः। बाह्वोः पूजयामि॥३॥ ॐ वैवर्त्ताय नमः। हृदि पूजयामि॥४॥ ॐ विश्वंभराय नमः। उदरे पूजयामि॥५॥ ॐ ब्रह्मणे नमः। कटौ पूजयामि॥६॥ ॐ जनार्द्दनाय नमः। जानुनोः पूजयामि॥७॥ ॐ इन्द्राय नमः। पादयोः पूजयामि॥८॥**

प्रत्येक आवरण पूजन पश्चात् पुष्पाञ्जलि देवें।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

विशेषार्घ्य से जल छोड़ें - **ॐ सर्वे देवा पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

द्वितीयावरणम् - (त्रिकोणे) पूर्वकोणे - **ॐ वटुकभैरवाय नमः। वटुक श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि॥** ईशानकोणे - **ॐ कालभैवाय नमः। कालभैरव श्री पा. प. त.॥** अग्निकोणे - **ॐ क्षेत्रपालभैरवाय नमः। क्षेत्रपाल श्री पा. पू. त.॥**

पुष्पाञ्जलि देवें अभीष्टसिद्धिं........द्वितीयावरणार्चनम्॥ ॐ पूजितास्तर्पिता सन्तु से जल छोड़ें।

तृतीयावरणम् (षट्कोणे) अग्निकोणे **ॐ आपदुद्धारणाय नमः श्री पा.पू.त.।** नैऋत्यकोणे - **ॐ अजामलबद्धाय नमः श्री पा.पू.त.।** वायुकोणे - **ॐ लोकेश्वराय नमः श्री पा.पू.त.।** ऐशान्ये - **ॐ स्वर्णाकर्षण भैरवाय नमः श्री पा.पू.त.।** प्राच्याम् - **ॐ ममदारिद्र्यविद्वेषणाय नमः श्री पा.पू.त.।** पश्चिमे - **श्री महाभैरवाय नमः श्री पा.पू.त.।**

पुष्पाञ्जलि देवें - अभीष्टसिद्धिं........ तृतीयावरणार्चनम्॥ ॐ पूजितास्तर्पिता सन्तु से जल छोड़ें।

चतुर्थावरणम् (अष्टदले) पूर्वादिक्रमेण - **ॐ असिताङ्ग भैरवाय ब्राह्मीशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ रुरु भैरवाय माहेश्वरीशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ चण्डभैरवाय कौमारीशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ क्रोधभैरवाय वैष्णवीशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ उन्मत्तभैरवाय वाराहीशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ कपालभैरवाय नारसिंहीशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ भीषणभैरवाय चामुण्डाशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ संहारभैरवाय चण्डिकाशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.।**

पुष्पाञ्जलि देवे - अभीष्टसिद्धिं.........चतुर्थावरणार्चनम् ॥ ॐ पूजितास्तर्पिता सन्तु से जल छोड़ें।

पञ्चमावरणम् (अष्टदले) पूर्वे - **ॐ आदित्याय स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ सोमाय स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ भौमाय स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ बुधाय स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ जीवाय स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ शुक्राय स्व स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ शनैश्चराय स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ राहवे केतवे स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.।**

पुष्पाञ्जलि देवें - अभीष्टसिद्धिं........पञ्चमावरणाचर्नम् ॥ ॐ पूजितास्तर्पिता: सन्तु से जल छोड़ें।

षष्टमावरणम् - भूपूर के अन्दर देव के दक्षिण भाग में - **ॐ पूजाविधिसिद्ध्यै नमः श्री पा.पू.त.। ॐ रससिद्ध्यै नमः श्री पा.पू.त.। ॐ स्वर्णसिद्ध्यै नमः श्री पा.पू.त.।**

पुष्पाञ्जलि देवें - ॐ अभीष्टसिद्धिं........षष्टमावरणार्चनम् ॥ ॐ पूजितास्तर्पिता: सन्तु से जल छोड़ें।

सप्तमावरणम् - भूपूर के बाहर देवता के वाम भाग में - **ॐ भूतप्रेतपिशाच वेतालासुरेभ्योनमः श्री पा.पू.त.।**

पुष्पाञ्जलि देवे - ॐ अभीष्टसिद्धिं........सप्तमावरणार्चनम् ॥ ॐ पूजितास्तर्पिता: सन्तु से जल छोड़ें।

अष्टमावरणम् - भूपूर में पूर्वादिक्रम से। पूर्वे - **वज्रसहित इन्द्र श्री पा.पू.त.।** आग्नेये - **शक्ति सहित अग्नि श्री पा.पू.त.।** दक्षिणे - **दण्ड सहित यम श्री पा.पू.त.।** नैऋत्ये - **खड्ग सहित नैऋति श्री पा.पू.त.।** पश्चिमे - **पाश सहित वरुण श्री पा.पू.त.।** वायव्ये - **अङ्कुश सहित वायव्ये श्री पा.पू.त.।** उत्तरे - **गदा सहित कुबेर श्री पा.पू.त.।** ईशाने - **त्रिशूल सहित ईशान श्री पा.पू.त.।** ईशानपूर्वमध्ये - **पद्म सहित ब्रह्मा श्री पा.पू.त.।** निऋति पश्चिममध्ये - **चक्र सहित अनन्त श्री पा.पू.त.।**

पुष्पाञ्जलि देवे - ॐ अभीष्टसिद्धिं........अष्टमावरणार्चनम् ॥ ॐ पूजितास्तर्पिता: सन्तु से जल छोड़ें।

धूप दीप नेवैद्यादि अर्पण कर नमस्कार करें। एक लक्ष जप कर पुरश्चरण करें। दशांश हवन करें। पायस होम करें।

ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चान्मन्त्र सिद्धिर्नसंशयः ।
एवं सिद्धे कृते मन्त्रे अयुतं प्रजपेन्मनुम् ॥
दारिद्र्यं दूरमुत्क्षिप्य जायते धनदोपमः ।
करवीरैर्जाति पुष्पैर्जपादाद्रिम संभवैः ॥
रक्तप्रसूनैर्जुहुयात्सौभाग्यं च समश्नुते ।
सिद्धद्रव्येण जुहुयाल्लभ्यते चाष्टसिद्धयः ॥
पायसेनापि जुहुयाल्लभ्यते सकलं फलम् ।
आज्यं च जुहुयाद्देवि ऐहिकामुष्मिकं फलम् ॥
मन्त्रसिद्धिं च लभते चन्दनादींधनैः क्रमात् ॥

॥ अथ स्वर्णाकर्षणस्तोत्रम् ॥

विनियोगः - ओम् अस्य श्री स्वर्णाकर्षण भैरव स्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, स्वर्णाकर्षण भैरवो देवता, ह्रीं बीजं, क्लीं शक्तिः, सः कीलकं ममदरिद्रयनाशार्थे सर्व कार्य सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। स्वर्णाकर्षण भैरव देवताय नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः, ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः - ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

॥ अथ स्तोत्रम् ॥

ओम् नमस्ते भैरवाय ब्रह्मविष्णु शिवात्मने ।
नमस्त्रैलोक्य वन्द्याय वरदाय वरात्मने ॥
रत्नसिंहासनस्थाय दिव्याभरण शोभिने ।
दिव्यमाल्य विभूषाय नमस्ते दिव्यमूर्तये ॥
नमस्तेऽनेकहस्ताय अनेक शिरसे नमः ।
नमस्तेऽनेकनेत्राय अनेक विभवे नमः ॥

नमस्तेऽनेक कण्ठाय अनेकांशाय ते नमः ।
नमस्तेऽनेक पार्श्वाय नमस्ते दिव्य तेजसे ॥
अनेकायुधयुक्ताय अनेक सुर सेविने ।
अनेकगुण युक्ताय महादेवाय ते नमः ॥
नमो दारिद्र्यकालाय महासम्पद् प्रदायिने ।
श्री भैरवी संयुक्ताय त्रिलोकेशाय ते नमः ॥
दिगम्बर नमस्तुभ्यं दिव्याङ्गाय नमो नमः ।
नमोऽस्तु दैत्यकालाय पापकालाय ते नमः ॥
सर्वज्ञाय नमस्तुभ्यं नमस्ते दिव्य चक्षुषे ।
अजिताय नमस्तुभ्यं जितामित्राय ते नमः ॥
नमस्ते रुद्ररूपाय महावीराय ते नमः ।
नमोऽस्त्वनन्तवीर्याय महाघोराय ते नमः ॥
नमस्ते घोर-घोराय विश्वघोराय ते नमः ।
नमः उग्रायशान्ताय भक्तानांशान्तिदायिने ॥
गुरवे सर्वलोकानां नमः प्रणवरूपिणे ।
नमस्ते वाग्भवाख्याय दीर्घकामाय ते नमः ॥
नमस्ते कामराजाययोषित कामाय ते नमः ।
दीर्घमायास्वरूपाय महामाया ते नमः ॥
सृष्टिमाया स्वरूपाय विसर्गसमयाय ते ।
सुरलोक-सुपूज्याय आपदुद्धारणाय च ॥
नमो-नमो भैरवाय महादारिद्र्य नाशिने ।
उन्मूलने कर्मठाय-अलक्ष्म्याः सर्वदा नमः ॥
नमो अजामिलबद्धाय नमो लोकेश्वराय ते ।
स्वर्णाकर्षणशीलाय भैरवाय नमो नमः ॥
ममदारिद्र्य विद्वेषणाय लक्ष्याय ते नमः ।
नमो लोकत्रयेशाय स्वानन्द निहिताय ते ॥
नमः श्रीबीजरूपाय सर्वकाम प्रदायिने ।
नमो महाभैरवाय श्रीभैरव नमो नमः ॥

धनाध्यक्ष नमस्तुभ्यं शरण्याय नमो नमः ।
नमः प्रसन्नरूपाय सुवर्णाय नमो नमः ॥
नमस्ते मन्त्ररूपाय नमस्ते मन्त्ररूपिणे ।
नमस्ते स्वर्णरूपाय सुवर्णाय नमो नमः ॥
नमः सुवर्णवर्णाय महापुण्याय ते नमः ।
नमः शुद्धाय बुद्धाय नमः संसार तारिणे ॥
नमो देवाय गुह्याय प्रचलाय नमो नमः ।
नमस्ते बालरूपाय परेशां बलनाशिने ॥
नमस्ते स्वर्ण संस्थाय नमो भूतलवासिने ।
नमः पातालवासाय अनाधाराय ते नमः ॥
नमो नमस्ते शान्ताय अनन्ताय नमो नमः ।
द्विभुजाय नमस्तुभ्यं भुजत्रयसुशोभिने ॥
नमोऽनमादि-सिद्धाय स्वर्णहस्ताय ते नमः ।
पूर्णचन्द्र-प्रतीकाशवदनाम्भोज शोभिने ॥
नमस्तेऽस्तु स्वरूपाय स्वर्णालङ्कार शोभिने ।
नमः स्वर्णाकर्षणाय स्वर्णाभाय नमो नमः ॥
नमस्ते स्वर्णकण्ठाय स्वर्णाभाम्बर धारिणे ।
स्वर्णसिंहासनस्थाय स्वर्णपादाय ते नमः ॥
नमः स्वर्णाभपादय स्वर्णकाञ्ची सुशोभिने ।
नमस्ते स्वर्णजङ्घाय भक्तकामदुधात्मने ॥
नमस्ते स्वर्णभक्ताय कल्पवृक्ष स्वरूपिणे ।
चिन्तामणि स्वरूपाय नमो ब्रह्मादि सेविने ॥
कल्पद्रुमाद्यः संस्थाय बहुस्वर्ण-प्रदायिने ।
नमो हेमाकर्षणाय भैरवाय नमो नमः ॥
स्तवेनान सन्तुष्टो भव लोकेश भैरव ।
पश्यमाम् करुणादृष्ट्या शरणागतवत्सल ॥

॥ फलश्रुतिः ॥

श्री महाभैरवस्येदं स्तोत्रमुक्तं सुदुर्लभम् ।
मन्त्रात्मकं महापुण्यं सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥

य: पठेन्नित्यमेकाग्रं पातकै: स प्रमुच्यते ।
लभते महतीं लक्ष्मीमष्टैश्वर्यमवाप्नुयात् ॥
चिन्तामणिमवाप्नोति धेनुं कल्पतरुं ध्रुवम् ।
स्वर्णराशिं वाप्नोति शीघ्रमेव स मानव: ॥
त्रिसन्ध्यं य: पठेत् स्तोत्रं दशावृत्या नरोत्तम: ।
स्वप्ने श्रीभैरवस्तस्य साक्षाद् भूत्वा जगद्गुरु: ॥
स्वर्णाराशिं ददात्यस्मै तत्क्षणं नास्ति संशय: ।
अष्टावृत्या पठेत् यस्तु सन्ध्यायां वा नरोत्तम: ॥
सर्वदा य: पठेत् स्तोत्रं भैरवस्य महात्मन: ॥
लोकत्रयं वशीकुर्यादचलां श्रियमाप्नुयात् ।
न भयं विद्यते नवापि विषभूतादि-सम्भवम् ॥
अष्ट पञ्चाशद् वर्णाढ्यो मन्त्रराज: प्रकीर्तित: ।
दारिद्रय दु:ख शमन: स्वर्णाकर्षण कारक: ॥
य एन सञ्जपेद् धीमान स्तोत्रं वा प्रयठेत् सदा ।
महाभैरव सायुज्यं सो अन्तकाले लभेद् ध्रुवम् ॥

॥ इतिश्री रूद्रायमल तन्त्रे स्वर्णाकर्षण भैरव स्तोत्रं सम्पूर्ण ॥

॥ अथ श्रीवटुकभैरव ब्रह्मकवचम् ॥

(रुद्रयामले)

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

भगवन्सर्ववेत्ता त्वं देवानां प्रीतिदायकम् ।
भैरवं कवचं ब्रूहि यदि चास्ति कृपा मयि ॥१॥
प्राणत्यागं करिष्यामि यदि नो कथयिष्यसि ।
सत्यं सत्यं पुन: सत्यं सत्यमेव न संशय: ॥२॥
इत्थं देव्या वच:श्रुत्वा प्रहस्यातिशयं प्रभु: ।
उवाच वचनं तत्र देवदेवो महेश्वर: ॥३॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

वटुकं कवचं दिव्यं शृणु मत्प्राणवल्लभे ।
चण्डिकातन्त्रसर्वस्वं वटुकस्य विशेषतः ॥४॥
तत्र मंत्राद्यक्षरं तु वासुदेवस्वरूपकम् ।
शङ्खवर्णऽद्वयो ब्रह्मा वटुकश्चन्द्रशेखरः ॥५॥
आपदुद्धारणो देवो भैरवः परिकीर्तितः ।
प्रवक्ष्यामि समासेन चतुर्वर्गप्रसिद्धये ॥६॥
प्रणवः कामदं विद्याल्लज्जाबीजं च सिद्धिदम् ।
बटुकायेति विज्ञेयं महाप[illegible]कनाशनम् ॥७॥
आपदुद्धारणायेति त्वापदुद्धारणं नृणाम् ।
कुरुद्वयं महेशानि मोहने परिकीर्तितम् ॥८॥
वटुकाय महेशानि स्तम्भने परिकीर्तितम् ।
लज्जाबीजं तथा विधान्मुक्तिद परिकीर्तितम् ॥
द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः क्रमेण जगदीश्वरि ॥९॥

॥ स्तोत्रम् ॥

विनियोगः – ॐ अस्य श्रीबटुकभैरव ब्रह्मकवचस्य भैरवऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्री बटुकभैरवो देवता। मम श्रीबटुकभैरव प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ पातु नित्यं शिरसि पातु ह्रीं कंठदेशके ।
वटुकाय पातु नाभौ चापदुद्धारणाय च ॥
कुरुद्वयं लिंगमूले त्वाधारे वटुकाय च ।
सर्वदा पातु ह्रीं बीजं वाह्वोर्युगलमेव च ॥
षडङ्गसहितो देवो नित्यं रक्षतु भैरवः ।
ॐ ह्रीं वटुकाय सततं सर्वांगं मम सर्वदा ॥
ॐ ह्रीं पादौ महाकालः पातु वीरासनो हृदि ।
ॐ ह्रीं कालः शिरः पातु कंठदेशे तु भैरवः ॥
गणराट् पातु जिह्वायामष्टभिः शक्तिभिः सह ।
ॐ ह्रीं [illegible]डपाणिर्गुह्यमूले भैरवीसहितस्तथा ॥

ॐ ह्रीं विश्वनाथः सदा पातु सर्वांगं मम सर्वदाः ।
ॐ ह्रीं अन्नपूर्णा सदा पातु चांसौ रक्षतु चण्डिका ॥
असितांगः शिरः पातु ललाटं रुरुभैरवः ।
ॐ ह्रीं चण्डभैरवः पातु वक्त्रं कंठं श्रीक्रोधभैरवः ॥
उन्मत्तभैरवः पातु हृदयं मम सर्वदा ।
ॐ ह्रीं नाभिदेशे कपाली च लिंगे भीषणभैरवः ।
संहारभैरवः पातु मूलाधारं च सर्वदा ॥
ॐ ह्रीं बाहुयुग्मं सदा पातु भैरवो मम केवलम् ।
हंसबीजं पातु हृदि सोऽहं रक्षतु पादयोः ॥
ॐ ह्रीं प्राणापानौ समानं च उदानं व्यानमेव च ।
रक्षतु द्वारमूले च दश दिक्षु समंततः ॥
ॐ ह्रीं प्रणवः पातु सर्वाङ्गं लज्जाबीजं महाभये ।
इतिब्रह्मकवचं भैरवस्य प्रकीर्तितम् ॥
चतुवर्गप्रदं नित्यं स्वयं देव प्रकाशितम् ।
यः पठेच्छृणुयान्नित्यं धारयेत्कवचोत्तमम् ॥
सदानन्दमयो भूत्वा लभते परमं पदम् ।
य इदं कवचं देवि चिन्तयेन्मन्मुखोदितम् ॥
कोटिजन्मार्जितं पापं तस्यनश्यति च तत्क्षणात् ।
जलमध्येऽग्निमध्ये वा दुर्ग्रहे शत्रुसंकटे ।
कवचस्मरणाद्देवि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥
भक्तियुक्तेन मनसा कवचं पूजयेद्यदि ।
कामतुल्यस्तु नारीणां रिपूणां च यमोपमः ॥
तस्य पादांबुजद्वंद्वं राज्ञां मुकुटभूषणम् ।
तस्य भूतिं विलोक्यैव कुबेरोऽपि तिरस्कृतः ॥
यस्य विज्ञान मात्रेण मन्त्रसिद्धिर्नसंशयः ।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्बटुकं नरः ॥
न चाप्नोति फलं तस्य परं नरकमाप्नुयात् ।
मन्वंतरत्रयं स्थित्वा तिर्यग्योनिषु जायते ॥

इहलोके महारोगी दारिद्र्येणातिपीडितः ।
शत्रूणां वशगो भूत्वा करपात्री भवेज्जडः ॥
देयं पुत्राय शिष्याय शांताय प्रियवादिने ।
कार्पण्यरहितायालं बटुभक्तिरताय च ॥
योऽपरागे प्रदाता वै तस्य स्यादतिसत्वरम् ।
आयुर्विद्या यशो धर्मं बलं नश्यत्यसंशयम् ॥
इति ते कथितं देवि गोपनीयं स्वयोनिवत् ।

॥ इति श्रीरुद्रयामलोक्तं श्री वटुकभैरवब्रह्मकवचं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीवटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

विनियोगः – ॐ अस्य श्रीवटुकभैरव सहस्रनामात्मकस्तोत्रस्य दुर्वासा ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। भैरवो वटुकनाथो देवता। मम सर्वकार्यसिद्ध्यर्थं सर्वशत्रुनिवारणार्थं वटुकसहस्रनामपाठे विनियोगः।

ॐ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो भद्रस्वरूपाय जयदाय नमो नमः ॥१॥
नमः कल्पस्वरूपाय विकल्पाय नमो नमः ।
नमः शुद्धस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः ॥२॥
नमः कङ्कालरूपाय कालरूप नमोऽस्तु ते ।
नमस्त्र्यंबकरूपाय महाकालाय ते नमः ॥३॥
नमः संसारसाराय शारदाय नमो नमः ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥४॥
नमः क्षेत्रनिवासाय क्षेत्रपालाय ते नमः ।
क्षेत्राक्षेत्रस्वरूपाय क्षेत्रकर्त्रे नमो नमः ॥५॥
नमो नामविनाशाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो मातङ्गरूपाय भाररूप नमोस्तु ते ॥६॥
नमः सिद्धस्वरूपाय सिद्धिदाय नमो नमः ।
नमो बिन्दुस्वरूपाय बिन्दुसिन्धुप्रकाशिने ॥७॥
नमो मङ्गलरूपाय मङ्गलाय नमो नमः ।
नमः सङ्कटनाशाय शंकराय नमो नमः ॥८॥

नमो धर्मस्वरूपाय धर्मदाय नमो नमः ।
नमोऽनंतस्वरूपाय एकरूप नमोऽस्तु ते ॥९॥
नमो वृद्धिस्वरूपाय वृद्धिकामिन्नमोऽस्तु ते ।
नमो मोहनरूपाय मोक्षरूपाय ते नमः ॥१०॥
नमो जलदरूपाय सामरूप नमोऽस्तु ते ।
नमः स्थूलस्वरूपाय शुद्धरूपाय ते नमः ॥११॥
नमो नीलस्वरूपाय रंगरूपाय ते नमः ।
नमो मण्ड़लरूपाय मण्ड़लाय नमो नमः ॥१२॥
नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्रनाथाय ते नमः ।
नमो ब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मवक्त्रे नमो नमः ॥१३॥
नमस्त्रिशूलधाराय धाराधारिन्नमोऽस्तु ते ।
नमः संसारबीजाय वीररूपाय ते नमः ॥१४॥
नमो विमलरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो जङ्गमरूपाय जलजाय नमो नमः ॥१५॥
नमः कालस्वरूपाय कालरुद्राय ते नमः ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१६॥
नमः शत्रुविनाशाय भीषणाय नमो नमः ।
नमः शांताय दांताय भ्रमरूपिन्नमोऽस्तु ते ॥१७॥
न्यायगम्याय शुद्धाय योगिध्येयाय ते नमः ।
नमः कमलकांताय कालवृद्धाय ते नमः ॥१८॥
नमो ज्योतिःस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः ।
नमः कल्पस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१९॥
नमो जयस्वरूपाय जगज्जाड्यनिवारिणे ।
महाभूताय भूताय भूतानां पतये नमः ॥२०॥
नमो नन्दाय वृन्दाय वादिने ब्रह्मवादिने ।
नमो वादस्वरूपाय न्यायगम्याय ते नमः ॥२१॥
नमो भवस्वरूपाय मायानिर्माणरूपिणे ।
विश्ववंद्याय वंद्याय नमो विश्वंभराय ते ॥२२॥

नमो नेत्रस्वरूपाय नेत्ररूपिन्नमोऽस्तु ते ।
नमो वरुणरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥२३॥

नमो यमस्वरूपाय वृद्धरूपाय ते नमः ।
नमः कुबेररूपाय कालनाथाय ते नमः ॥२४॥

नमः ईशानरूपाय अग्निरूपाय ते नमः ।
नमो वायुस्वरूपाय विश्वरूपाय ते नमः ॥२५॥

नमः प्राणस्वरूपाय प्राणाधिपतये नमः ।
नमः संहाररूपाय पालकाय नमो नमः ॥२६॥

नमश्चन्द्रस्वरूपाय चण्डरूपाय ते नमः ।
नमो मन्दारवासाय वासिने सर्वयोगिनाम् ॥२७॥

योगिगम्याय योग्याय योगिनांपतये नमः ।
नमो जङ्गमवासाय वामदेवाय ते नमः ॥२८॥

नमः शत्रुविनाशाय नीलकण्ठाय ते नमः ।
नमो भक्तिविनोदाय दुर्भागाय नमो नमः ॥२९॥

नमो मान्यस्वरूपाय मानदाय नमो नमः ।
नमो भूतिविभूषाय भूषिताय नमो नमः ॥३०॥

नमो रजःस्वरूपाय सात्त्विकाय नमो नमः ।
नमस्तामसरूपाय तारणाय नमो नमः ॥३१॥

नमो गङ्गाविनोदाय जटासंधारिणे नमः ।
नमो भैरवरूपाय भयदाय नमो नमः ॥३२॥

नमः संग्रामरूपाय संग्रामजयदायिने ।
संग्रामसाररूपाय यौवनाय नमो नमः ॥३३॥

नमो वृद्धिस्वरूपाय वृद्धिदाय नमो नमः ।
नमस्त्रिशूलहस्ताय शूलसंहारिणे नमः ॥३४॥

नमो द्वंद्वस्वरूपाय रूपदाय नमो नमः ।
नमः शत्रुविनाशाय शत्रुबुद्धिविनाशिने ॥३५॥

महाकालाय कालाय कालनाथाय ते नमः ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥३६॥

नमः शंभुस्वरूपाय शंभुरूपिन्नमोऽस्तु ते ।
नमः कमलहस्ताय डमरुहस्ताय ते नमः ॥३७॥
नमः कुक्कुरवाहाय वहनाय नमो नमः ।
नमो विमलनेत्राय त्रिनेत्राय नमो नमः ॥३८॥
नमः संसाररूपाय सारमेयाय वाहिने ।
संसारज्ञानरूपाय ज्ञाननाथाय ते नमः ॥३९॥
नमो मङ्गलरूपाय मङ्गलाय नमो नमः ।
नमो न्यायविशालाय मन्त्ररूपाय ते नमः ॥४०॥
नमो यंत्रस्वरूपाय यंत्रधारिन्नमोऽस्तु ते ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥४१॥
नमः कलंकरूपाय कलंकाय नमो नमः ।
नमः संसारपाराय भैरवाय नमो नमः ॥४२॥
रुण्डमालाविभूषाय भीषणाय नमो नमः ।
नमो दुःखनिवाराय विहाराय नमो नमः ॥४३॥
नमो दण्डस्वरूपाय क्षणरूपाय ते नमः ।
नमो मुहूर्तरूपाय सर्वरूपाय ते नमः ॥४४॥
नमो मोदस्वरूपाय श्रोणरूपाय ते नमः ।
नमो नक्षत्ररूपाय क्षेत्ररूपाय ते नमः ॥४५॥
नमो विष्णुस्वरूपाय बिन्दुरूपाय ते नमः ।
नमो ब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मचारिन्नमोऽस्तु ते ॥४६॥
नमः कंथानिवासाय पटवासाय ते नमः ।
नमो ज्वलनरूपाय ज्वलनाथ नमो नमः ॥४७॥
नमो वटुकरूपाय धूर्तरूपाय ते नमः ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥४८॥
नमो वैद्यस्वरूपाय वैद्यरूपिन्नऽमोस्तु ते ।
नमः औषधरूपाय औषधाय नमो नमः ॥४९॥
नमो व्याधिनिवाराय व्याधिरूपिन्नमो नमः ।
नमो ज्वरनिवाराय ज्वररूपाय ते नमः ॥५०॥

नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्राणां पतये नमः ।
विरूपाक्षाय देवाय भैरवाय नमो नमः ॥५१॥

नमो ग्रहस्वरूपाय ग्रहाणां पतये नमः ।
नमः पवित्रधाराय परशुधाराय ते नमः ॥५२॥

यज्ञोपवीतिदेवाय देवदेव नमोऽस्तु ते ।
नमो यज्ञस्वरूपाय यज्ञानां फलदायिने ॥५३॥

नमो रुद्रप्रतापाय तापनाय नमो नमः ।
नमो गणेशरूपाय गणरूपाय ते नमः ॥५४॥

नमो रश्मिस्वरूपाय रश्मिरूपाय ते नमः ।
नमो मलयरूपाय रश्मिरूपाय ते नमः ॥५५॥

नमो विभक्तिरूपाय विमलाय नमो नमः ।
नमो मधुररूपाय मधुपूर्णकलापिने ॥५६॥

कालेश्वराय कालाय कालनाथाय ते नमः ।
नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥५७॥

नमो योनिस्वरूपाय भ्रातृरूपाय ते नमः ।
नमो भगिनिरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥५८॥

नमो वृषस्वरूपाय कर्मरूपाय ते नमः ।
नमो वेदान्तवेद्याय वेदसिद्धांतसारिणे ॥५९॥

नमः शाखाप्रकाशाय पुरुषाय नमो नमः ।
नमः प्रकृतिरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥६०॥

नमो विश्वस्वरूपाय शिवरूपाय ते नमः ।
नमो ज्योतिःस्वरूपाय निर्गुणाय नमो नमः ॥६१॥

निरञ्जनाय शान्ताय निर्विकाराय ते नमः ।
निर्मायाय विमोहाय विश्वनाथाय ते नमः ॥६२॥

नमः कण्ठप्रकाशाय शत्रुनाशाय ते नमः ।
नमो आशाप्रकाशाय आशापूरकृते नमः ॥६३॥

नमो मत्स्यस्वरूपाय योगरूपाय ते नमः ।
नमो वाराहरूपाय वामनाय नमो नमः ॥६४॥

नमः आनन्दरूपाय आनन्दाय नमो नमः ।
नमोऽस्त्व अनर्घ्यकेशाय ज्वलत्केशाय ते नमः ॥६५॥
नमः पापविमोक्षाय मोक्षदाय नमो नमः ।
नमः कैलासनाथाय कालनाथाय ते नमः ॥६६॥
नमो बिन्ददबिन्दाय बिन्दुभाय नमो नमः ।
नमः प्रणवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥६७॥
नमो मेरुनिवासाय भक्तवासाय ते नमः ।
नमो मेरुस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥६८॥
नमो भद्रस्वरूपाय भद्ररूपाय ते नमः ।
नमो योगिस्वरूपाय योगिनां पतये नमः ॥६९॥
नमो मैत्रस्वरूपाय मित्ररूपाय ते नमः ।
नमो ब्रह्मनिवासाय काशीनाथाय ते नमः ॥७०॥
नमो ब्रह्माण्डवासाय ब्रह्मवासाय ते नमः ।
नमो मातङ्गवासाय सूक्ष्मवासाय ते नमः ॥७१॥
नमो मातृनिवासाय भ्रातृवासाय ते नमः ।
नमो जगन्निवासाय जलावासाय ते नमः ॥७२॥
नमः कौलनिवासाय नेत्रवासाय ते नमः ।
नमो भैरववासाय भैरवाय नमो नमः ॥७३॥
नमः समुद्रवासाय वह्निवासाय ते नमः ।
नमश्चन्द्रनिवासाय चन्द्रावासाय ते नमः ॥७४॥
नमः कलिङ्गवासाय कलिङ्गाय नमो नमः ।
नमः उत्कलवासाय शक्रवासाय ते नमः ॥७५॥
नमः कर्पूरवासाय सिद्धिवासाय ते नमः ।
नमः सुन्दरवासाय भैरवाय नमो नमः ॥७६॥
नमः आकाशवासाय वासिने सर्वयोगिनाम् ।
नमो ब्रह्मणवासाय शूद्रवासाय ते नमः ॥७७॥
नमः क्षत्रियवासाय वैश्यवासाय ते नमः ।
नमः पक्षिनिवासाय भैरवाय नमो नमः ॥७८॥

नमः पातालमूलाय मूलावासाय ते नमः ।
नमो रसातलस्थाय सर्वपातालवासिने ॥७९॥

नमः कङ्कालवासाय कङ्कवासाय ते नमः ।
नमो मन्त्रनिवासाय भैरवाय नमो नमः ॥८०॥

नमोऽहंकार रूपाय रजोरूपाय ते नमः ।
नमः सत्त्वनिवासाय भैरवाय नमो नमः ॥८१॥

नमो नलिनरूपाय नलिनाङ्गप्रकाशिने ।
नमः सूर्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥८२॥

नमो दुष्टनिवासाय साधूपायनरूपिणे ।
नमो नम्रस्वरूपाय स्तंभनाय नमो नमः ॥८३।

पञ्चयोनिप्रकाशाय चतुर्योनिप्रकाशिने ।
नवयोनि प्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥८४॥

नमः षोडशरूपाय नमः षोडशधारिणे ।
चतुःषष्ठिप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥८५॥

नमो बिन्दुप्रकाशाय सुप्रकाशाय ते नमः ।
नमो गणस्वरूपाय मुखरूप नमोऽस्तुते ॥८६॥

नमश्चाम्बररूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो नानास्वरूपाय सुखरूप नमोऽस्तुते ॥८७॥

नमो दुर्गस्वरूपाय दुःखहर्त्रे नमोऽस्तुते ।
नमो विशुद्धदेहाय दिव्यदेहाय ते नमः ॥८८॥

नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः प्रेतनिवासाय पिशाचाय नमो नमः ॥८९॥

नमो निशाप्रकाशाय निशारूप नमोऽस्तुते ।
नमः सोमार्धरामाय धराधीशाय ते नमः ॥९०॥

नमः संसारभाराय भारकाय नमो नमः ।
नमो देहस्वरूपाय अहयदेहाय नमो नमः ॥९१॥

देवदेहाय देवाय भैरवाय नमो नमः ।
विश्वेश्वराय विश्वाय विश्वधारिन्नमोऽस्तुते ॥९२॥

स्वप्रकाशप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ।
स्थितिरूपाय नित्याय स्थितीनां पतये नमः ॥९३॥
सुस्थिराय सुकेशाय केशवाय नमो नमः ।
स्थविष्ठाय गरिष्ठाय प्रेष्ठाय परमात्मने ॥९४॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः पारदरूपाय पवित्राय नमो नमः ॥९५॥
नमो वेधकरूपाय अनिंदाय नमो नमः ।
नमः शब्दस्वरूपाय शब्दातीताय ते नमः ॥९६॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो निंदास्वरूपाय अनिंदाय नमो नमः ॥९७॥
नमो विशदरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः शरणरूपाय शरण्यानां सुखाय ते ॥९८॥
नमः शरण्यरक्षाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः स्वाहास्वरूपाय स्वधारूपाय ते नमः ॥९९॥
नमो वौषट्स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
अक्षराय नमस्तुभ्यं त्रिधा मात्रास्वरूपिणे ॥१००॥
नमोऽक्षराय शुद्धाय भैरवाय नमो नमः ।
अर्धमात्राय पूर्णाय संपूर्णाय नमो नमः ॥१०१॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमोऽष्टचक्ररूपाय ब्रह्मरूपाय ते नमः ॥१०२॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो भैरवरूपाय सृष्टिकर्त्रे महात्मने ॥१०३॥
नमः पाल्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
सनातनाय नित्याय निर्गुणाय गुणाय ते ॥१०४॥
नमः सिद्धाय शान्ताय भैरवाय नमो नमः ।
नमो धारास्वरूपाय स्वखड्गहस्ताय ते नमः ॥१०५॥
नमस्त्रिशूलहस्ताय भैरवाय नमो नमः ।
नमः कुण्डलवर्णाय शवमुण्डविभूषिणे ॥१०६॥

महाक्रुद्धाय चण्डाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो वासुकिभूषाय सर्वभूषाय ते नमः ॥१०७॥
नमः कपालहस्ताय भैरवाय नमो नमः ।
पानपात्रप्रमत्ताय मत्तरूपाय ते नमः ॥१०८॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
माध्वाकारसुपर्णाय माधवाय नमो नमः ॥१०९॥
नमो माङ्गल्यरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः कुमाररूपाय स्त्रीरूपाय नमो नमः ॥११०॥
नमो गंधस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो दुर्गंधरूपाय सुगन्धाय नमो नमः ॥१११॥
नमः पुष्पस्वरूपाय पुष्पभूषण ते नमः ।
नमः पुष्पप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥११२॥
नमः पुष्पविनोदाय पुष्पपूजाय ते नमः ।
नमो भक्तिनिवासाय भक्तदुःख निवारिणे ॥११३॥
भक्तप्रियाय शान्ताय भैरवाय नमो नमः ।
नमो भक्तिस्वरूपाय रूपदाय नमो नमः ॥११४॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो वासाय भद्राय वीरभद्राय ते नमः ॥११५॥
नमः संग्रामसाराय भैरवाय नमो नमः ।
नमः खट्वाङ्गहस्ताय कालहस्ताय ते नमः ॥११६॥
नमोऽघोराय घोराय घोराघोरस्वरूपिणे ।
घोरधर्माय घोराय भैरवाय नमो नमः ॥११७॥
घोरत्रिशूलहस्ताय घोरपानाय ते नमः ।
घोररूपाय नीलाय भैरवाय नमो नमः ॥११८॥
घोरवाहनगम्याय ह्यगम्याय नमो नमः ।
घोरब्रह्मस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥११९॥
घोरशब्दाय घोराय घोरदेहाय ते नमः ।
घोरद्रव्याय घोराय भैरवाय नमो नमः ॥१२०॥

घोरसंगाय सिंहाय सिद्धिसिंहाय ते नमः ।
नमः प्रचण्डसिंहाय सिंहरूपाय ते नमः ॥१२१॥
नमः सिंहप्रकाशाय सुप्रकाशाय ते नमः ।
नमो विजयरूपाय जयदाय नमो नमः ॥१२२॥
नमो भार्गवरूपाय गर्भरूपाय ते नमः ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१२३॥
नमो मेध्याय शुद्धाय मायाधीशाय ते नमः ।
नमो मेघप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥१२४॥
दुर्ज्ञेयाय दुरंताय दुर्लभाय दुरात्मने ।
भक्तिलभ्याय भव्याय भाविताय नमो नमः ॥१२५॥
नमो गौरवरूपाय गौरवाय नमो नमः ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१२६॥
नमो विघ्ननिवाराय विघ्नराशिन्नमोऽस्तु ते ।
नमो विघ्नविद्रावणायैव भैरवाय नमो नमः ॥१२७॥
नमः किंशुकरूपाय रजोरूपाय ते नमः ।
नमो नीलस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१२८॥
नमो गणस्वरूपाय गणनाथाय ते नमः ।
नमो विश्वविकासाय भैरवाय नमो नमः ॥१२९॥
नमो योगिप्रकाशाय योगिगम्याय ते नमः ।
नमो हेरम्बरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३०॥
नमस्त्रिधास्वरूपाय रूपदाय नमो नमः ।
नमः स्वरस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३१॥
नमः सरस्वतीरूप बुद्धिरूपाय ते नमः ।
नमो वैद्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३२॥
नमस्त्रिविक्रमरूपाय त्रिस्वरूपाय ते नमः ।
नमः शशाङ्करूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३३॥
नमो व्यापकरूपाय व्याप्यरूपाय ते नमः ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३४॥

नमो विशदरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः सत्त्वस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३५॥
नमः सूक्तस्वरूपाय शिवदाय नमो नमः ।
नमो गङ्गास्वरूपाय यमुनारूपिणे नमः ॥१३६॥
नमो गौरीस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो दुःख विनाशाय दुःखमोक्षणरूपिणे ॥१३७॥
महाचलाय वंद्याय भैरवाय नमो नमः ।
नमो नन्दस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३८॥
नमो नन्दिस्वरूपाय स्थिररूपाय ते नमः ।
नमः केलिस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१३९॥
नमः क्षेत्रनिवासाय वासिने ब्रह्मवादिने ।
नमः शान्ताय शुद्धाय भैरवाय नमो नमः ॥१४०॥
नमो नर्मदरूपाय जलरूपाय ते नमः ।
नमो विश्वविनोदाय जयदाय नमो नमः ॥१४१॥
नमो महेन्द्ररूपाय महनीयाय ते नमः ।
नमः संसृतिरूपाय शरण्याय च ते नमः ॥१४२॥
नमस्त्रिबन्धुवासाय बालकाय नमो नमः ।
नमः संसारसाराय सरसां पतये नमः ॥१४३॥
नमस्तेजः स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः कारुण्यरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१४४॥
नमो गोकर्णरूपाय ब्रह्मवर्णाय ते नमः ।
नमः शङ्करवर्णाय हस्तिकर्णाय ते नमः ॥१४५॥
नमो विष्टरकर्णाय यज्ञकर्णाय ते नमः ।
नमः शंबुककर्णाय भैरवाय नमो नमः ॥१४६॥
नमो दिव्यसुकर्णाय कालकर्णाय ते नमः ।
नमो भयदकर्णाय भैरवाय नमो नमः ॥१४७॥
नमः आकाशवर्णाय कालकर्णाय ते नमः ।
नमो दिग्रूपकर्णाय भैरवाय नमो नमः ॥१४८॥

नमो विशुद्धकर्णाय विमलाय नमो नमः ।
नमः सहस्रकर्णाय भैरवाय नमो नमः ॥१४९॥
नमो नेत्रप्रकाशाय सुनेत्राय नमो नमः ।
नमो वरदनेत्राय जयनेत्राय ते नमः ॥१५०॥
नमो विमलनेत्राय योगिनेत्राय ते नमः ।
नमः सहस्रनेत्राय भैरवाय नमो नमः ॥१५१॥
नमः कलिंदरूपाय कलिंदाय ते नमो नमः ।
नमो ज्योतिःस्वरूपाय ज्योतिषाय नमो नमः ॥१५२॥
नमस्तारप्रकाशाय ताररूपिन्नमोऽस्तु ते ।
नमो नक्षत्रनेत्राय भैरवाय नमो नमः ॥१५३॥
नमश्चन्द्रप्रकाशाय चन्द्ररूप नमोऽस्तु ते ।
नमो रश्मिस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१५४॥
नमः आनन्दरूपाय जगदानन्दरूपिणे ।
नमो द्रविडरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१५५॥
नमः शङ्खनिवासाय शङ्कराय नमो नमः ।
नमो मुद्राप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥१५६॥
नमोन्यासस्वरूपाय न्यासरूप नमोऽस्तु ते ।
नमो बिन्दुस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१५७॥
नमो विसर्गरूपाय प्रणवरूपाय ते नमः ।
नमो मन्त्रप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥१५८॥
नमो जंबुकरूपाय जंगमाय नमो नमः ।
नमो गरुडरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१५९॥
नमो लंबुकरूपाय लंबिकाय नमो नमः ।
नमो लक्ष्मीस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१६०॥
नमो वीरस्वरूपाय वीरणाय नमो नमः ।
नमः प्रचण्डरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१६१॥
नमो डंबस्वरूपाय डमरुधारिन्नमोऽस्तु ते ।
नमः कलंकनाशाय कालनाथाय ते नमः ॥१६२॥

नमः ऋद्धिप्रकाशाय सिद्धिदाय नमो नमः ।
नमः सिद्धस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१६३॥

नमो धर्मप्रकाशाय धर्मनाथाय ते नमः ।
धर्माय धर्मराजाय भैरवाय नमो नमः ॥१६४॥

नमो धर्माधिपतये धर्मध्येयाय ते नमः ।
नमो धर्मार्थसिद्धाय भैरवाय नमो नमः ॥१६५॥

नमो विरजरूपाय रूपारूपप्रकाशिने ।
नमो राजप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥१६६॥

नमः प्रतापसिंहाय प्रतापाय नमो नमः ।
नमः कोटिप्रतापाय भैरवाय नमो नमः ॥१६७॥

नमः सहस्त्ररूपाय कोटिरूपाय ते नमः ।
नमः आनन्दरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१६८॥

नमः संहारबन्धाय बंधकाय नमो नमः ।
नमो विमोक्षरूपाय मोक्षदाय नमो नमः ॥१६९॥

नमो विष्णुस्वरूपाय व्यापकाय नमो नमः ।
नमो माङ्गल्यनाथाय शिवनाथाय ते नमः ॥१७०॥

नमो व्यालाय व्याघ्राय व्याघ्ररूपिन्नमोऽस्तु ते ।
नमो व्यालविभूषाय भैरवाय नमो नमः ॥१७१॥

नमो विद्याप्रकाशाय विद्यानां पतये नमः ।
नमो योगिस्वरूपाय क्रूररूपाय ते नमः ॥१७२॥

नमः संहाररूपाय शत्रुनाशाय ते नमः ।
नमः पालकरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१७३॥

नमः कारुण्यदेवाय देवदेवाय ते नमः ।
नमो विश्वविलासाय भैरवाय नमो नमः ॥१७४॥

नमो नमः प्रकाशाय काशीवासिन्नमोऽस्तु ते ।
नमो भैरवक्षेत्राय क्षेत्रपालाय ते नमः ॥१७५॥

नमो भद्रस्वरूपाय भद्रकाय नमो नमः ।
नमो भद्राधिपतये भयहंतर्नमोऽस्तु ते ॥१७६॥

नमो मायाविनोदाय मायिने मदरूपिणे ।
नमो मत्ताय शांताय भैरवाय नमो नमः ॥१७७॥
नमो मलयवासाय कैलासाय नमो नमः ।
नमः कैलासवासाय कालिकातनयाय ते ॥१७८॥
नमः संसारपाराय भैरवाय नमो नमः ।
नमो मातृविनोदाय विमलाय नमो नमः ॥१७९॥
नमो यमप्रकाशाय नियमाय नमो नमः ।
नमः प्राणप्रकाशाय ध्यानाधिपतये नम ॥१८०॥
नमः समाधिरूपाय निर्गुणाय नमो नमः ।
नमो मन्त्रप्रकाशाय मन्त्ररूपाय ते नमः ॥१८१॥
नमो वृन्दविनोदाय वृन्दकाय नमो नमः ।
नमो बृंहितरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥१८२॥
नमो मान्यस्वरूपाय मानदाय नमो नमः ।
नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥१८३॥
नमो वै स्थिरपीठाय सिद्धपीठाय ते नमः ।
नमो मण्डलपीठाय उत्तपीठाय ते नमः ॥१८४॥
नमो यशोदानाथाय कामनाथाय ते नमः ।
नमो विनोदनाथाय सिद्धिनाथाय ते नमः ॥१८५॥
नमो नाथाय नाथाय ज्ञाननाथाय ते नमः ।
नमः शङ्करनाथाय जयनाथाय ते नमः ॥१८६॥
नमो मुद्गलनाथाय नीलनाथाय ते नमः ।
नमो बालकनाथाय धर्मनाथाय ते नमः ॥१८७॥
विश्वनाथाय नाथाय कार्यनाथाय ते नमः ।
नमो भैरवनाथाय महानाथाय ते नमः ॥१८८॥
नमो ब्रह्मसनाथाय योगनाथाय ते नमः ।
नमो विश्वविहाराय विश्वभाराय ते नमः ॥१८९॥
नमो रंगसनाथाय रंगनाथाय ते नमः ।
नमो मोक्षसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥१९०॥

नमो गोरक्षनाथाय गोरक्षाय नमो नमः ।
नमो मन्दारनाथाय नन्दनाथाय ते नमः ॥१९१॥

नमो मङ्गलनाथाय चम्पानाथाय ते नमः ।
नमः सन्तोषनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥१९२॥

नमोऽगरागनाथाय सुखनाथाय ते नमः ।
नमः कारुण्यनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥१९३॥

नमो द्रविडनाथाय दरीनाथाय ते नमः ।
नमः संसारनाथाय जगन्नाथाय ते नमः ॥१९४॥

नमो माध्वीकनाथाय मन्त्रनाथाय ते नमः ।
नमो न्यासनाथाय ध्याननाथाय ते नमः ॥१९५॥

नमो गोकर्णनाथाय महानाथाय ते नमः ।
नमः शुभ्रसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥१९६॥

नमो विमलनाथाय मण्डलेशाय ते नमः ।
नमः सरोजनाथाय मत्स्यनाथाय ते नमः ॥१९७॥

नमो भक्तसनाथाय भक्तिनाथाय ते नमः ।
नमो मोहननाथाय वत्सनाथाय ते नमः ॥१९८॥

नमो मातृसनाथाय विश्वनाथाय ते नमः ।
नमो बिन्दुसनाथाय जयनाथाय ते नमः ॥१९९॥

नमो मङ्गलनाथाय धर्मनाथाय ते नमः ।
नमो गङ्गासनाथाय भूमिनाथाय ते नमः ॥२००॥

नमो धीरसनाथाय बिन्दुनाथाय ते नमः ।
नमः कंचुकिनाथाय श्रृंगिनाथाय ते नमः ॥२०१॥

नमः समुद्रनाथाय गिरिनाथाय ते नमः ।
नमो माङ्गल्यनाथाय कुट्टनाथाय ते नमः ॥२०२॥

नमो वेदान्तनाथाय श्रीनाथाय नमो नमः ।
नमो ब्रह्माण्डनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२०३॥

नमो गिरिशनाथाय वामनाथाय ते नमः ।
नमो बीजसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२०४॥

नमो मन्दरनाथाय मन्दनाथाय ते नमः ।
नमो भैरवीनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२०५॥
अम्बानाथाय नाथाय जन्तुनाथाय ते नमः ।
नमः कालिसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२०६॥
नमो मुकुन्दनाथाय कुन्दनाथाय ते नमः ।
नमः कुण्डलनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२०७॥
नमोऽष्टचक्रनाथाय चक्रनाथाय ते नमः ।
नमो विभूतिनाथाय शूलनाथाय ते नमः ॥२०८॥
नमो न्यायसनाथाय न्यायनाथाय ते नमः ।
नमो दयासनाथाय जंगमेशाय ते नमः ॥२०९॥
नमो विशदनाथाय जगन्नाथाय ते नमः ।
नमः कामिकनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२१०॥
नमः क्षेत्रसनाथाय जीवनाथाय ते नमः ।
नमः केवलनाथाय चैलनाथाय ते नमः ॥२११॥
नमो मात्रासनाथाय अमात्राय नमो नमः ।
नमो द्वंद्वसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२१२॥
नमः शूरसनाथाय शूरनाथाय ते नमः ।
नमः सौजन्यनाथाय सौजन्याय नमो नमः ॥२१३॥
नमो दुष्टसनाथाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो भयसनाथाय विंबनाथाय ते नमः ॥२१४॥
नमो मायासनाथाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो विटंकनाथाय टंकनाथाय ते नमः ॥२१५॥
नमश्चर्मसनाथाय खड्गनाथाय ते नमः ।
नमः शक्तिसनाथाय धनुर्नाथाय ते नमः ॥२१६॥
नमो मानसनाथाय शापनाथाय ते नमः ।
नमो यन्त्रसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२१७॥
नमो गंडूषनाथाय गंडूषाय नमो नमः ।
नमो डाकिनिनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥२१८॥

नमो डामरनाथाय डारकाय नमो नमः ।
नमो डंकसनाथाय डंकनाथाय ते नमः ॥२१९॥
नमो मांडव्यनाथाय यज्ञनाथाय ते नमः ।
नमो यजुःसनाथाय क्रीडानाथाय ते नमः ॥२२०॥
नमः सामसनाथायाथर्वनाथाय ते नमः ।
नमः शून्याय नाथाय स्वर्गनाथाय ते नमः ॥२२१॥

॥ फलश्रुति ॥

इदं नामसहस्त्रं मे रुद्रेण परिकीर्तितम् ।
यः पठेत्पाठयेद्वापि स एव म ेसेवकः ॥२२२॥
यं यं चिंतयते कामं कारंकारं प्रियाकृतिम् ।
यः श्रृणोति दुरापं स तं तं प्राप्नोति मामकः ॥२२३॥
राजद्वारे श्मशाने तु पृथिव्यां जलसन्निधौ ।
यः पठेन्मानवो नित्यं स शूरः स्यान्न संशयः ॥२२४॥
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं वा पठेन्नरः ।
स भवेद् बुद्धिमाँल्लोके सत्यमेव न संशयः ॥२२५॥
यः श्रृणोति नरो भक्त्या स एव गुणसागरः ।
यः श्रद्धया रात्रिकाले श्रृणोति पठतेऽपि वा ॥२२६॥
स एव साधकः प्रोक्तः सर्वदुष्टविनाशकः ।
अर्धरात्रे पठेद्यस्तु स एव पुरुषोत्तमः ॥२२७॥
त्रिसंध्ये वै देवगृहे श्मशाने च विशेषतः ।
वने च मार्गगमने बले दुर्जनसन्निधौ ॥२२८॥
यः पठेत्प्रयतो नित्यं स सुखी स्यान्न संशयः ।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ॥२२९॥
शौर्यार्थी लभते शौर्यं पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् ।
एवं विंशतिमन्त्रेण अक्षरेण सहैव मे ॥२३०॥
यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वकाममवाप्नुयात् ।
रसार्थी पाठमात्रेण रसं प्राप्नोति नित्यशः ॥२३१॥

अन्नार्थी लभते चान्नं सुखार्थी सुखमाप्नुयात् ।
रोगी प्रमुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्यते बंधनात् ॥२३२॥
शापार्थी लभते शापं सर्वशत्रुविनाशनम् ।
स्थावरं जङ्गमं वापि विषं सर्वं प्रणश्यति ॥२३३॥
सर्वलोकप्रियः शान्तो मातापितृप्रियंकरः ।
संग्रामे विजयस्तस्य यः पठेद्भक्तिसंयुतः ॥२३४॥
सर्वत्र जयदं देवि स्तोत्रमेतत्प्रकीर्तितम् ।
इदं स्तोत्रं महापुण्यं निन्दकाय न दर्शयेत् ॥२३५॥
असाधकाय दुष्टाय मातापितृविकारिणे ।
अधार्मिकाकुलीनाभ्यां नैतत्स्तोत्रं प्रकाशयेत् ॥२३६॥
साधकाय च भक्ताय योगिने धार्मिकाय च ।
गुरुभक्ताय शान्ताय दर्शयेत्साधकोत्तमः ॥२३७॥
अन्यथा पापलिप्तः स्यात्क्रोधनो भैरवोत्तमे ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गोपनीयं प्रयत्नतः ॥२३८॥
इदं स्तोत्रं च रुद्रेण रामस्यापि मुखेऽर्पितम् ।
तन्मुखान्निःसृतं लोके दरिद्रायापि साधवे ॥२३९॥
रामेण कथितं भ्रात्रे लक्ष्मणाय महात्मने ।
ततो दुर्वाससा प्राप्तं तेनैवोक्तं तु पांडवे ॥२४०॥
पाण्डुरप्यब्रवीत्कृष्णां कृष्णेनेह प्रकीर्तितम् ।
अस्य स्तोत्रस्य माहात्म्यं रामो जानाति तत्त्वतः ॥२४१॥
रामोऽपि राज्यं संप्राप्तो ह्यस्य स्तोत्रस्य पाठतः ।
पाण्डवोऽपि तथा राज्यं संप्राप्तो भैरवस्य च ॥२४२॥
अनेन स्तोत्रपाठेन किमलभ्यं भवेदिति ।
सर्वलोकस्य पूज्यस्तु जायते नात्र संशयः ॥२४३॥

॥इति रुद्रयामलोक्तश्री वटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीवटुकभैरवस्तवराज ॥

(१०८ नामावलि प्रयोगः)

मेरुपृष्ठे सुखासीन देवदेवं त्रिलोचनम् ।
शङ्करं परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम् ॥१॥

॥ पार्वत्युवाच ॥

य एष भैरवो नाम आपदुद्धारको मतः।
त्वया च कथितो देव भैरवः कल्प उत्तमः ।
तस्य नामसहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानि च ॥२॥
सारमुद्धृत्य तेषां वै नामाष्टशतकं वद ।
यानि संकीर्त्तयन्मर्त्यः सर्वदुःखविवर्जितः ।
सर्वान्कामानवाप्नोति साधकः सिद्धिमेव च ॥३॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

श्रृणुदेवि प्रवक्ष्यामि भैरवस्य महात्मनः ।
आपदुद्धारंणस्येह नामाष्टशतमुत्तमम् ॥४॥
सर्वपापहरं पुण्यं सर्वापद्विनिवारणम् ।
सर्वकामार्थदं देवि साधकानां सुखावहम् ॥५॥
सर्वमङ्गलमांगल्यं सर्वोपद्रवनाशनम् ।
आयुष्करं पुष्टिकरं श्रीकरं च यशस्करम् ॥६॥
आद्यन्ते स्तोत्रपाठस्य मूलमन्त्रं जपेन्नरः ।
अष्टोत्तरशतं धीमान् यथासंख्यमथापि वा ।
जपांतेऽप्युत्तरन्यासाः कर्तव्या जपसिद्धये ॥७॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं सिद्धार्थे विनियोजयेत् ।
साधकः सर्वलोकेषु सत्यं सत्यं न संशयः ॥८॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्री वटुकभैरवस्तोत्र मन्त्रस्य वृहदारण्यक ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्री वटुकभैरवो देवता। अष्टबाहुमिति बीजम्। त्रिनयनमिति शक्तिः। प्रणवः कीलकम्। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास - ॐ वृहदारण्यकऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्री वटुकभैरवदेवतायै नमः हृदये। अष्टबाहुमिति बीजाय नमः

गुह्ये। त्रिनयनेति शक्तये नमः पादयोः। ॐ कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ ह्रां वां ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधि पतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्। अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१ ॥ ॐ ह्रीं वीं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। तर्जनीभ्यां नमः ॥२ ॥ ॐ ह्रूं वूं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः। मध्यमाभ्यां नमः ॥३ ॥ ॐ ह्रैं वैं वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। अनामिकाभ्यां नमः ॥४ ॥ ॐ ह्रौं वौं सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः। कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५ ॥ ॐ ह्रः वः पञ्चवक्त्राय महादेवाय नमः। करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६ ॥

हृदयादिषडङ्गन्यासः - ॐ ह्रां वां ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्। हृदयाय नमः ॥१ ॥ ॐ ह्रीं वीं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। शिरसे स्वाहा ॥२ ॥ ॐ ह्रूं वूं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः। शिखायै वषट् ॥३ ॥ ॐ ह्रैं वैं वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। कवचाय हुम् ॥४ ॥ ॐ ह्रौं वौं सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः। नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५ ॥ ॐ ह्रः वः पञ्चवक्त्राय महादेवाय नमः अस्त्राय फट् ॥६ ॥

देहन्यासः - ॐ ह्रीं भैरवाय नमः मूर्ध्नि ॥१ ॥ ॐ ह्रीं भीमदर्शनाय नमः ललाटे ॥२ ॥ ॐ ह्रीं भूताश्रयाय नमः नेत्रयोः ॥३ ॥ ॐ ह्रीं भूतनायकाय नमः कर्णयोः ॥४ ॥ ॐ ह्रीं त्रिशूलाय नमः नासिकायाम् ॥५ ॥ ॐ ह्रीं रक्तपाय नमः जिह्वायाम् ॥६ ॥ ॐ ह्रीं नागहार नागयज्ञोपवीतिकाय नमः कण्ठे ॥७ ॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः करयोः ॥८ ॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः हृदये ॥९ ॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रदाय नमः नाभौ ॥१० ॥ ॐ ह्रीं अबोधनाशनाय नमः कट्याम् ॥११ ॥

ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय नमः ऊर्वोः ॥१२॥ ॐ ह्रीं रक्तपायिने नमः जंघयोः ॥१३॥ॐ ह्रीं देवदेदेशाय नमः सर्वाङ्गें ॥१४॥

करन्यासः - ॐ ह्रीं भैरवाय नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं भीमदर्शनाय नमः तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ॐ ह्रीं भूतश्रेष्ठाय नमः मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ ह्रीं भूतनायकाय नमः अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ ह्रीं क्षत्रियाय नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय दिग्विदिशायाम् ॥७॥ ॐ भैरवाय नमः सर्वाङ्गे ॥

व्यापकन्यास ॐ ह्रीं भैरवाय नमः शिरसि ॥१॥ ॐ ह्रीं भीमदर्शनाय नमः ललाटे ॥२॥ ॐ ह्रीं भूतहननाय नमः नेत्रयोः ॥३॥ ॐ ह्रीं सारमेयानुगाय नमः भ्रुवोः ॥४॥ ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः कर्णयोः ॥५॥ ॐ ह्रीं प्रेतवाहनाथाय नमः कपोलयोः ॥६॥ ॐ ह्रीं भस्मांगाय नमः नासापुटे ॥७॥ ॐ ह्रीं सर्पभूषणाय नमः ओष्ठयोः ॥८॥ ॐ ह्रीं आदिनाथाय नमः मुखे ॥९॥ ॐ ह्रीं शक्तिहस्ताय नमः गले ॥१०॥ ॐ ह्रीं दैत्यशमनाय नमः स्कंधयोः ॥११॥ ॐ ह्रीं अतुलतेजसे नमः बाह्वोः ॥१२॥ ॐ ह्रीं कपालिने नमः करयोः ॥१३॥ ॐ ह्रीं मुण्डमालिने नमः हृदये ॥१४॥ ॐ ह्रीं शान्ताय नमः वक्षःस्थले ॥१५॥ ॐ ह्रीं कामचारिणे नमः स्तनयोः ॥१६॥ ॐ ह्रीं सदातुष्टाय नमः उदरे ॥१७॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रेशाय नमः पार्श्वयोः ॥१८॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः पृष्ठे ॥१९॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः नाभौ ॥२०॥ ॐ ह्रीं पापौघनाशाय नमः कट्याम् ॥२१॥ ॐ ह्रीं वटुकाय नमः लिङ्गे ॥२२॥ ॐ ह्रीं रक्षाकराय नमः गुदे ॥२३॥ ॐ ह्रीं रक्तलोचनाय नमः ऊर्वोः ॥२४॥ ॐ ह्रीं घुर्घुराय नमः जानुनि ॥२५॥ ॐ ह्रीं रक्तपायिने नमः जंघयोः ॥२६॥ ॐ ह्रीं सिद्धपादुकाय नमः गुल्फयोः ॥२७॥ ॐ ह्रीं सुरेश्वराय नमः पादपृष्ठे ॥२८॥ ॐ ह्रीं आपदुद्धारकाय नमः आपादतलमस्तकपर्यन्तं न्यसेत् ॥२९॥ ॐ ह्रीं क्ष्म्रौं ब्लौं ह्रीं ॐ स्वाहा आपदुद्धारणभैरवाय नमः ॥ अनेनं सर्वाङ्गे व्यापकं कुर्यात् ॥३०॥ इति व्यापक न्यासः।

दिङ्न्यासः - ॐ ह्रीं डमरुहस्ताय नमः पूर्वे ॥१॥ ह्रीं दण्डधारिणे नमः दक्षिणे ॥२॥ ॐ ह्रीं खड्गहस्ताय नमः पश्चिमे ॥३॥ ॐ ह्रीं घण्टावादिने नमः उत्तरे ॥४॥ ॐ ह्रीं अग्निवर्णाय नमः अग्नये ॥५॥ ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः नैर्ऋत्ये ॥६॥ ॐ ह्रीं सर्वभूतस्थाय नमः वायव्ये ॥७॥ ॐ ह्रीं अष्टसिद्धिदाय नमः ऐशान्याम् ॥८॥ ॐ ह्रीं खेचारिणे नमः उर्ध्वम् ॥९॥ ॐ ह्रीं रौद्ररूपिणे नमः पाताले ॥१०॥

विलोम करन्यासः - ॐ ह्रीं रुद्राय नमः अङ्गुष्ठयोः ॥१॥ ॐ ह्रीं शिखिसखाय नमः तर्जन्याम् ॥२॥ ॐ ह्रीं शिवाय नमः मध्यमायाम् ॥३॥ ॐ ह्रीं त्रिशूलिने नमः अनामिकायाम् ॥४॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः कनिष्ठिकायाम् ॥५॥ ॐ ह्रीं त्रिपुरांतकाय नमः करतलयोः ॥६॥ ॐ ह्रीं मांसाशिने नमः कराग्रेषु ॥७॥ ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः करपृष्ठयोः ॥८॥

हृदयादिषडङ्गन्यासः - ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं आदिनाथाय नमः शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ ह्रीं आनन्दनाथाय नमः शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ ह्रीं सिद्धशाबरनाथाय नमः कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ ह्रीं सहजानन्दनाथाय नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ ह्रीं श्रीआनन्दनाथाय नमः अस्त्राय फट् ॥६॥

एवं न्यासविधिं समाप्य कामनापरत्वेनोपयोगिरूपं ध्यायेत् ॥

॥ अथ सात्त्विक ध्यानम् ॥

वंदे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिताङ्गं
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किंकिणीनूपुराढ्यैः ॥
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं
हस्ताग्राभ्यां वटुक सदृशं शूलदण्डौ दधानम् ॥१॥

॥ अथ राजस ध्यानम् ॥

उद्यद्भास्क रसन्निभं त्रिनयनं रक्तांगरागस्रजं
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः ॥
नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डोज्ज्वलं
बंधूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावये ॥२॥

॥ अथ तामस ध्यानम् ॥

ध्यायेन्नीलादिकांतं शशिशकलधरं मुण्डमालं
महेशंदिग्वस्त्रंपिंगकेशं डमरुमथ सृणिंखड्गपाशाभयानि।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं
दिव्याकल्पंत्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किंकिणीनूपुराढ्यम् ॥३॥

॥ अथ सकल मनोरथप्राप्त्यर्थमिदं त्रिगुणात्मकं ध्यानम् ॥

शुद्धःस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम् ।
नीलजीमूतसंकाशं नीलांजनसमप्रभम् ॥१॥

अष्टबाहुं त्रिनयनं चतुर्बाहुं द्विबाहुकम् ।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसंकुलम् ॥२॥
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णं शिरोरुहम् ।
दिगंबरं कुमारेशं वटुकाख्यं महाबलम् ॥३॥
खट्वाङ्गमसिपाशं च शूलं दक्षिणभागतः ।
डमरुं च कपालं च वरदं भुजङ्गं तथा ।
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम् ॥४॥

॥ अथ साधारण ध्यानम् ॥

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणि-
स्तरुणतिमिर नीलो व्यालयज्ञोपवीती ।
क्रतुसमयसपर्याविघ्नविच्छेद हेतु-
र्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥१॥
आनीलकुंतलमलक्तक रक्तवर्णं
मौनीकृतं कृत मनोज्ञमुखारविन्दम् ।
कल्याणकीर्ति कमनीय कपालपाणिं
वन्दे महावटुकनाथमभीष्टसिद्धये ॥२॥
आनम्र सर्वगीर्वाणशिरोभृंङ्गागसङ्गिनम् ।
भैरवस्य पदाम्भोजं भूयोऽहं नौमि भूतये ॥३॥

एवं यथारुचि ध्यात्वा भैरवं प्रार्थयेत्॥

तत्रमन्त्रः - ॐ ह्रीं भैरव भैरव भयकर हर मां रक्ष रक्ष हुँ फट् स्वाहा इति मन्त्रेण प्रार्थ्य पटलस्थ यन्त्रपीठे आवाहनादि प्राणं प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैरभ्यर्च्य पुनः कामनापरत्वेन यथा रुचि ध्यात्वा।

इस प्रकार भैरव का ध्यान कर षोड़शोपचार पूजन कर भैरव को दीपदान व बलि प्रदान करें।

मन्त्र की संख्यानुसार तन्तुओं को एक वर्तिका बनाकर दीप जलायें।

दीप जलाकर प्रार्थना करें - **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं वं सर्वज्ञाय महाबलपराक्रमाय वटुकाय नमः इमं दीपं गृहाण सर्व कार्यार्थसाधक, दुष्टान्नाशय नाशय त्रासय त्रासय सर्वतो मम रक्षां कुरु कुरु फट् स्वाहा॥**

तीन बार आचमन करके हस्तप्रक्षालन करें। उसके बाद बलि प्रदान करें।

देवता के आगे त्रिकोण उसके बाहर चतुरस्र मण्डल रक्तचन्दन कुंकुम इत्यादि से बनायें (गणेश, दुर्गा, वटुक की रक्तचन्दन, गंध पुष्पाक्षत से अर्चना करते हैं।) मण्ड़ल पर एक पात्र में बलिद्रव्य रखें।

तीन बार आचमन करें - ॐ ह्रां नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं नमः ॥२॥ ॐ कुं नमः ॥३॥ देशकाल का उच्चारण करते हुये बलिदान हेतु सङ्कल्प करें।

मूलमन्त्र बोलते हुये बलि का पूजन करें - वटुक बलिरूपाय नमः।

ॐ एह्येहि देव वटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा एष बलिर्वटुकाय नमः।

पश्चात् मूलमन्त्र का जपकर स्तोत्र का पाठ करें।

मूलमन्त्र - ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं ॐ॥

विनियोगः - श्रीवटुकभैरव शतनाम स्तोत्र मन्त्रस्य, अनुष्टुप् छन्दः, वृहदारण्य ऋषि, भैरवो देवता, अष्टबाहुत्रिनयन बीजशक्ति, ॐ कीलकं सर्वाभीष्ट सिद्धये जपे पाठे विनियोगः।

॥ अथ नामावलिस्तोत्रम् ॥

ॐ ह्रीं भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रदः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रज्ञः क्षत्रियो विराट् ॥१॥
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशीः स्मरांतकृत्।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धसेवितः ॥२॥
कंकालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिंगललोचनः ॥३॥
शूलपाणिः खड्गपाणिः कंकाली धूम्रलोचनः।
अभीरुर्भैरवो नाथो भूतपो योगिनीपतिः ॥४॥
धनदो धनहारी च धनवान्प्रीतिभावनः।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत् ॥५॥
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनोज्ज्वलन्नेत्रस्त्रिशिखी च त्रिलोकपः ॥६॥

त्रिनेत्रतनयो डिंभ : शांतः शान्तजनप्रियः ।
वटुको वटुवेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः ॥७॥
भूताध्यक्षः पशुपतिर्भिक्षुकः परिचारकः ।
धूर्तो दिगंबरः शूरो हरिणः पाण्डुलोचनः ॥८॥
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करः प्रियबांधवः ।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः ॥९॥
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तशिखी सखः ।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः ॥१०॥
कंकालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतवान् ।
जृंभणो मोहनः स्तंभी मारणः क्षोभणस्तथा ॥११॥
शुद्धनीलाञ्जनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः ।
बलिभुग्बलिभुग्नाथो बालो बालपराक्रमः ॥१२॥
सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः ।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी ॥१३॥
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां भैरवस्य महात्मनः ॥१४॥

॥ फलश्रुति ॥

मया ते कथितं देवि रहस्यं सर्वकामदम् ।
य इदं पठति स्तोत्रं नामाष्टशतमुत्तमम् ॥१५॥
न तस्य दुरितं किंचिन्न च भूतभयं तथा ।
न च मारीभयं तस्य ग्रहराजभयं तथा ॥१६॥
न शत्रुभ्यो भयं क्वापि प्राप्नुयान्मानवः क्वचित् ।
पातकानां भयं चैव पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम् ॥१७॥
मारीभये राजभये तथा चोराग्निजे भये ।
औत्पत्तिके महाघोरे तथा दुःस्वप्नदर्शने ॥१८॥
बंधने च तथा घोरे पठेत्स्तोत्रमनन्यधीः ।
सर्वं प्रशमनं यातिभयं भैरवकर्तिनात् ॥१९॥
एकादशसहस्रं तु पुरश्चरणमुच्यते ।
यस्त्रिसंध्यं पठेद्देवि संवत्सरमतंद्रितः ॥२०॥

स सिद्धिं प्राप्नुयादिष्टां दुर्लभामपि मानवः ।
षण्मासं भूमिकामस्तु जपित्वा प्राप्नुयान्महीम् ॥२१॥
राजशत्रुविनाशार्थं जपेन्मासाष्टकं पुनः ।
रात्रौ वारत्रयं चैव नाशयत्येव शात्रवान् ॥२२॥
जपेन्मासत्रयं मर्त्यो राजानं वशमानयेत् ।
धनार्थी च सुतार्थी च दारार्थी यस्तु मानवः ॥२३॥
जपेन्मासत्रयं देवि वारमेकं तथा निशि ।
धनं पुत्रं तथा दारान्प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥२४॥
रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बंधनात् ।
भीतो भयात्प्रमुच्येत देवी सत्यं न संशयः ॥२५॥
निगडैश्चापि बद्धौ यः कारागेहे निपातितः ।
शृङ्खलाबन्धनं प्राप्तं पठेच्चैव दिवानिशि ॥२६॥
यं यं चिंतयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ।
अप्रकाश्यं परं गुह्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥२७॥
सुकुलीनाय शान्ताय ऋजवे दंभ वर्जिते ।
दद्यात्स्तोत्रमिमं पुण्यं सर्वकामफलप्रदम् ॥२८॥
इात श्रुत्वा ततो देवि नामाष्टशतमुत्तमम् ।
जजाप परया भक्त्या सदा सर्वेश्वरेश्वरी ॥२९॥
भैरवोऽपि प्रहृष्टोऽभूत्सर्वलोकमहेश्वरः ।
वरं ददाति भक्तेभ्यः पठेत्स्तोत्रमनन्यधीः ।
संतोषं परमं प्राप्य भैरवस्य महात्मनः ॥३०॥
वारं वारं भुवनजननि प्रोच्यते साधुवादः सत्यं सत्यं
जगति सकले भैरवो देव एकः ।
यां यां सिद्धिं भुवनजठरे कामयेन्मानवो यस्तांस्तां
सिद्धिं वितरति सदा भैरवः सुप्रसन्नः ॥३१॥
पाणिभ्यां परितः प्रपीड्य सुदृढं निश्चौत्य निश्चोत्य च
ब्रह्माण्डं सकलं प्रचालितरसालोच्चैः फलाभं मुहुः ।
पायं पायमपायय त्रिजगति ह्युन्मत्तवत्तै
रसैर्नृत्यंस्ताण्डवडंबरेण शिरसा पायान्महाभैरवः ॥३२॥

विभ्राणः शुभ्रवर्णं द्विगुणनवभुजं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं
ज्ञाने मुद्रेंद्रशास्त्रं सविषममृतकं शङ्खभैषज्यचापम् ।
शूलं खट्वाङ्गबाणान् डमरुमसिगदा वह्निमारोग्यमाला-
मिष्टाभीतिं च दोर्भिर्जयति खलु महाभैरवः सर्वसिद्ध्यै ॥३३॥

क्वाकाशः क्व समीरणः क्व दहनः क्वापश्च विश्वंभरा
क्व ब्रह्मा क्व जनार्दनः क्व तरणिः क्वेंदुश्च देवासुराः ।
कल्पान्ते दिगिभेशवत्प्रमुदितः श्रीसिद्धयोगीश्वरः
क्रीडानाटकनायको विजयते देवो महाभैरवः ॥३४॥

लिखित्वा परया भक्त्या भैरवस्तोत्रमुत्तमम् ।
अष्टानां ब्राह्मणानां च देयं पुस्तकमादरात् ॥३५॥
यान् यान् समीहते कामांस्तान्प्राप्नोत्यसंशयम् ।
इहलोके सुखं प्राप्य पुस्तकस्य प्रसादतः ॥३६॥
शिवलोकमनुप्राप्य शिवेन सह मोदते ।
लिखित्वा भूर्जपत्रे तु त्रिलोहपरिवेष्टितम् ॥३७॥
सौम्ये च वस्तुवसने कर्पटे च सुशोभने ।
करे बाह्वौ गले कट्यां मूर्ध्नि त्रिलोहगोपितम् ॥
यस्तु धारयते स्तोत्रं सर्वत्र जयमाप्नुयात् ॥३८॥

इस स्तोत्र का विशेष पुरश्चरण ११००० पाठ का है। अधिकांशतः ३-४ हजार आवृति पश्चात् ही भैरव आवाहन के लक्षण प्रकट होने लगते है जैसे - रात्रि में किसी का चलना, घुंघरु की आवाज या नाचने कूदने की ध्वनि या भ्रम पैदा होता है। इसके बाद साधक को समय व क्रिया संपादन के नियमों का विशेष ध्यान रखना चाहिये अन्यथा जिस प्रकार भैरव शीघ्र प्रसन्न होते हैं उसी प्रकार शीघ्र रुष्ट भी होते हैं।

॥ इति रुद्रयामल तंत्रोक्त भैरवाष्टोत्तर शतनाम् स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ वटुकभैरवाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ॥

(कालसंकर्षण तन्त्रे)

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवस्तोत्र मन्त्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः। अनुष्टुप छन्दः। आपदुद्धारक वटुकभैरवो देवता। ह्रीं बीजम्। भैरवीवल्लभः शक्तिः। नीलवर्णो दण्डपाणिरिति कीलकम्। समस्तशत्रुदमने समस्तापन्निवारणे

सर्वाभीष्टप्रदाने च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः – ॐ कालाग्निरुद्रऋषये नमः शिरसि ॥१॥ अनुष्टुपछन्दसे नमः मुखे ॥२॥ आपदुद्धारक वटुकभैरवदेवतायै नमः हृदये ॥३॥ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ भैरवीवल्लभशक्तये नमः पादयोः ॥५॥ नीलवर्णो दण्डपाणिरिति कीलकाय नमः नाभौ ॥६॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥७॥

मूलमन्त्रः – ॐ ह्रीं वां वटुकाय क्ष्रौं क्ष्रौं आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रां वटुकाय स्वाहा।

यह मंत्र प्रेतादि उपद्रव शांति व शत्रुदमन में विशेष काम में आता है

ध्यानम् –

नीलजीमूतसंकाशो जटिलो रक्तलोचनः।
दंष्ट्राकरालवदनः सर्पयज्ञोपवीतवान् ॥१॥
दंष्ट्रायुधालंकृतश्च कपालस्त्रग्विभूषितः॥
हस्तन्यस्तकरोटीको भस्मभूषितविग्रहः ॥२॥
नागराजकटीसूत्रो बालमूर्तिर्दिगंबरः।
मंजुसिंजानमंजरि - पादकंपितभूतलः ॥३॥
भूतप्रेतपिशाचैश्च सर्वतः परिवारितः।
योगिनीचक्रमध्यस्थो मातृमण्डलवेष्टितः ॥४॥
अट्टहासस्फुरद्वक्त्रो भृकुटीभीषणाननः।
भक्तसंरक्षणार्थाय दिक्षु भ्रमणतत्परः।
एवंभूतस्तु वटुको ध्यातव्यो भैरवीश्वरः ॥५॥
एवं ध्यात्वा स्तोत्रं पठेत्।
ॐ ह्रीं वटुको वरदः शूरो भैरवः कालभैरवः।
भैरवीवल्लभो भव्यो दण्डपाणिर्दयानिधिः ॥६॥
वेतालवाहनो रौद्रो रुद्रभ्रुकुटिसंभवः।
कपाललोचनः कांतः कामिनीवशकृद्वशी ॥७॥
आपदुद्धारणो धीरो हरिणांकशिरोमणिः।
दंष्ट्राकरालो दष्टौष्ठो धृष्टो दुष्टनिर्वहणः ॥८॥
सर्पहारः सर्पशिराः सर्पकुण्डलमण्डितः।
कपाली करुणापूर्णः कपालैकशिरोमणिः ॥९॥

श्मशानवासी मांसाशी मधुमत्तोऽट्टहासवान् ।
वाग्मी वामव्रतो वामो वामदेवप्रियंकरः ॥१०॥
वनेचरो रात्रिचरो वसुदो वायुवेगवान् ।
योगी योगव्रतधरो योगिनीवल्लभो युवा ॥११॥
वीरभद्रो विश्वनाथो विजेता वीरवंदितः ।
भूताध्यक्षो भूतिधरो भूतभीतिनिवारणः ॥१२॥
कलंकहीनः कंकाली क्रूरः कुक्कुरवाहनः ।
गाढो गहन गम्भीरो गणनाथसहोदरः ॥१३॥
देवीपुत्रो दिव्यमूर्तिर्दीप्तिमान् दीप्तिलोचनः ।
महासेनप्रियकरो मान्यो माधवमातुलः ॥१४॥
भद्रकालीपतिर्भद्रो भद्रदो भद्रवाहनः ।
पशूपहाररसिकः पाशी पशुपतिः पतिः ॥१५॥
चण्डः प्रचण्डचण्डेशश्चंडीहृदयनन्दनः ।
दक्षो दक्षाध्वरहरो दिग्वासा दीर्घलोचनः ॥१६॥
निरातंको निर्विकल्पः कल्पः कल्पांतभैरवः ।
मदतांण्डवकृन्मत्तो महादेवप्रियो महान् ॥१७॥
खट्वांगपाणिः खातीतः खरशूलः खरांतकृत् ।
ब्रह्माण्डभेदनो ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मणपालकः ॥१८॥
दिक्चरो भूचरो भूष्णुः खचरः खेलनप्रियः ।
सर्वदुष्टप्रहर्ता च सर्वरोगनिषूदनः ॥१९॥
सर्वकामप्रदः शर्वः सर्वपापनिकृंतनः ।
इत्थमष्टोत्तरशतं नाम्नां सर्वसमृद्धिदम् ॥२०॥
आपदुद्धारजनकं वटुकस्य प्रकीर्तितम् ।
एतच्च श्रृणुयान्नित्यं लिखेद्वा स्थापयेद्-गृहे ॥२१॥
धारयेद्वा गले बाहौ तस्य सर्वाः समृद्धयः ।
न तस्य दुरितं किंचिन्न चोरनृपजं भयम् ॥२२॥
न चापस्मृतिरोगेभ्यो डाकिनीभ्यो भयं नहि ।
न कूष्माण्डग्रहादिभ्यो नापमृत्योर्न च ज्वरात् ॥२३॥

मासमेकं त्रिसंध्यं च शुचिर्भूत्वा पठेन्नरः ।
सर्वदारिद्र्यनिर्मुक्तो निधिं पश्यति भूतले ॥२४॥
मासद्वयमधीयानः पादुकासिद्धिमान् भवेत् ।
अञ्जनं गुटिका खड्गं धातुवादरसायनम् ॥२५॥
सारस्वतं च वेतालवाहनं बिलसाधनम् ।
कार्यसिद्धिं महासिद्धिं मन्त्रं चैव समीहितम् ॥२६॥
वर्षमात्रमधीयानः प्राप्नुयात्साधकोत्तमः ।
एतत्ते कथितं देवि गुह्याद्गुह्यतरं परम् ॥२७॥
कालसंकर्षणीतन्त्रे कलिकल्मषनाशनम् ।
नरनारीनृपाणां च वशीकरणमंबिके ॥२८॥

॥ इति कालसंकर्षणतन्त्रोक्तवटुकाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं समाप्तं ॥

॥ वटुकभैरव कवचम् ॥

॥ देव्युवाच ॥

देव देव जगन्नाथ त्रिनाथ श्रीत्रिलोचनः ।
भवत्प्रसादाद्भगवन्भैरवस्य महात्मनः ॥
कवचं श्रोतुमिच्छामित्वत्स्नेहातिशयादहम् ॥

॥ शिवोवाचः ॥

प्राणिनां रक्षणार्थं च ब्रवीमि सुमुखे गुणान् ।
वर्मणो भैरवस्यास्य शिव ब्रह्मा ऋषिः स्मृतः ॥
छन्दोनुष्टुप् तथा देवो भैरवो वटुकात्मजा ।
ऐश्वर्यस्याभिवृद्ध्यर्थमिष्टार्थं च नियुज्यते ॥
शूलखड्ग डमरुलसत्करं सव्यहस्तमपरं करोज्वलम् ।
सन्ततं हृदि भजामि भैरवं स्वाधिरूढमधिकार सिद्धये ।
दिग्वाससं कमलपत्र विशालनेत्रं ।
भस्माङ्गरागमभयं प्रभुमादि देवम् ॥
ध्यायामि तं वटुकनाथमहर्निशं मे ।
सर्वार्थसिद्धिमतुल्नां कृपया दिशन्तम् ॥

एवं ध्यात्त्वा तु देवेशं वटुकाख्यं महाबलम् ।
उच्चरेत कवचं पश्चाद्देवताभीष्ट सिद्धिदम् ॥
शिरो मे भैरवः पातु भालं पुरनिषूदनः ।
दृशौ पातु त्रिनेत्रो मे श्रवणं नीलकण्ठकः ॥
दिग्वासा पातु मे कण्ठं नासिकांममनन्यभाक् ।
ओष्ठौ त्रिपुरघाती मे जिह्वां पातु कपालधृक् ॥
दन्तान्पातु क्रतुध्वंसी चिबुकं भूतवासकः ।
कपाली पातु मे ग्रीवां स्कन्धौ पातु गजान्तकः ॥
भुजौ मे पातु कौमारी हृदयं क्षेत्रपालकः ।
अभीरुर्मे स्तनौ पातु वक्षः पातु महेश्वरः ॥
कुक्षौ मे पातु संहर्ता नाभिं मे षण्मुखप्रियः ।
भूतनाथः कटिं पातु गुह्यं पातु जटाधरः ॥
ऊरू पातु वृषारूढो जानुनी भूतभावनः ।
श्मशानवासी मे पातु पातु सर्वाङ्गमीश्वरः ॥
य इदं कवचं देवि पठेत्प्रयत मानसः ।
तस्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थमिष्टान्नं च ददाम्यहम् ॥
रोगार्त्तो मुच्यते रोगात्पुत्रार्थी लभते सुतम् ।
जपित्वा श्रद्धया कन्या आयुष्मन्तं पतिं लभेत् ॥
विद्या विनय सम्पन्नं सुकुलीनं सुरूपिणम् ।
जपित्वा विधवानारी वैधव्यं नाप्नुयात्क्वचित् ॥
जपित्वा कवचं प्रातर्मुच्यते नात्र संशयः ।
नास्ति तस्यापमृत्युश्चाकालमृत्युः कदाचन ॥
इहलोके सुखं भुक्त्वा पुत्र पौत्रै सबान्धवैः ।
अन्ते कैलाशमाविश्य मम पादतलं व्रजेत् ॥
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन जपेन्नित्यमतंद्रितः ॥
ये भक्ति युक्ताः कवचं पठन्ति
ते वै कुले स्वे कुलिनो वसन्ति ॥

तेजोधिकं विंशतिसंख्यया दिने
कैलासमाप्नोति मम प्रसादात् ॥
एतत्ते कथितं देवि यन्मां त्वं परिपृच्छति ।
तव स्नेहातिशयादुक्तं कवचं भैरवात्मकम् ॥

॥ इति वटुकभैरव कवचम् ॥

॥ श्रीवटुकभैरवपञ्जर कवचम् ॥

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

देव देव महादेव संसार प्रियकारक ।
पञ्जरं वटुकस्यास्य कथनीयं मम प्रभो ॥

॥ श्रीशिवोवाच ॥

पूर्वं भस्मासुर त्रासाद् भयविह्वलतां स्वयम् ।
पठनादेव मे प्राणा रक्षिताः परमेश्वरि ॥
सर्वदुष्ट विनाशाय सर्वरोग निवारणम् ।
दुःख शान्तिकरं देवि ह्यल्पमृत्यु भयापहम् ॥
राज्ञां वश्यकरं चैव त्रैलोक्य विजयप्रदम् ।
सर्वलोकेषु पूज्यश्च लक्ष्मीस्तस्य गृहे स्थिरा ॥
अनुष्ठानं कृतं देवि पूजनं च दिने दिने ।
विना पञ्जरपाठेन तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥

विनियोगः - अस्य श्री वटुकभैरव पञ्जर कवच मन्त्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री वटुकभैरवो देवता, ह्रां बीजं ॐ भैरवीवल्लभ शक्तिः, ॐ दण्डपाणये नमः कीलकम् मम सकल कामना सिद्ध्यर्थे विनियोगः।

॥ कवचम् ॥

ॐ ह्रां प्राच्यां डमरुहस्तो रक्तवर्णो महाबलः ।
प्रत्यक्षमहमीशान वटुकाय नमो नमः ॥
ॐ ह्रीं दण्डधारी दक्षिणे च पश्चिमे खड्गधारिणे ।
ॐ ह्रूं घण्टाकाली [illegible] [illegible] दिशि तथा ॥

ॐ हैं अग्निरूपोह्याग्नेयां नैऋत्यां च दिगम्बरः ।
ॐ ह्रौं सर्वभूतस्थौ वायव्ये भूतानां हितकारकः ॥
ॐ हश्चाष्ट सिद्धिश्च ईशाने सर्वसिद्धिकरः परः ।
प्रत्यक्षमहमीशान वटुकाय नमो नमः ॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्वाहा ऊर्ध्वखेचरिणं न्यसेत् ।
रुद्ररूपस्तु पाताले वटुकाय नमो नमः ॥
ॐ ह्रीं बटुका य मूर्ध्नि ललाटे भीमरूपिणम् ।
आपदुद्धारणं नेत्रे मुखे च वटुकं न्यसेत् ।
कुरु कुरु सर्वसिद्धिर्देहे गेहे व्यवस्थितः ।
वटुकाय ह्रीं सर्वदेहे विश्वस्य सर्वतो दिशि ॥
आपदुद्धारकः पातु ह्यापादतल मस्तकम् ।
ह स क्ष म ल व र यूं पातु पूर्वे दण्ड हस्तस्तु दक्षिणे ।
ह स क्ष म ल व र यूं नैऋत्ये ह स क्ष म ल व र यूं पश्चिमेऽवतु ।
सर्वभूतस्थो वायव्ये ह स क्ष म ल व र यूं घण्टावादिन उत्तरे ॥
हंसः सोहं तु ईशाने चाष्टसिद्धिकरः परः ।
शं क्षेत्रपाल ऊर्ध्वे तु पाताले शिवसन्निभः ॥
एवं दशदिशो रक्षेद्वटुकाय नमो नमः ।
इति ते कथितं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सदावतु ॥
ॐ फ्रें हुं फट् च सर्वत्र त्रैलोक्ये विजयी भवेत् ।
लक्ष्मीं ऐं श्रीं लं पृथिव्यां च आकारोहं ममावतु ॥
स्त्रौं प्रौं ज्रौं ॐ यं वायव्यां रं रं रं तेजोरूपिणम् ।
ॐ कं खं गं घं ङं वटुकं चं छं जं झं ञं कपालिनम् ॥
ॐ टं ठं डं ढं णं क्षेत्रेशं तं थं दं धं नं उमाप्रियम् ।
ॐ पं फं बं भं मं मम रक्ष यं रं लं भैरवोत्तमम् ॥
ॐ वं शं षं सं आदिनाथं लं क्षं वै क्षेत्रपालकम् ।
एवं पञ्जरमाख्यातं सर्वसिद्धिकरं भवेत् ॥
दुःख दारिद्र्य शमनं रक्षकं सर्वतो दिशः ।
अवश्यसर्वतोवश्यं सर्ववीजैश्च संपुटम् ॥

सर्वरोगहरं दिव्यं सर्वत्र सुखमाप्नुयात् ।
एवं रहस्यमाख्यातं देवानामपि दुर्लभम् ॥
वज्रपञ्जरनामेदं ये शृण्वन्ति वरानने ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं कीर्तिलाभः सुखं जयः ॥
लक्ष्मीमनोरमा वृद्धिस्तेषां गेहे व्यवस्थितः ।
सुशीलाय सुदाताय गुरुभक्तिपराय च ॥
तस्य शीघ्रं च दातव्यमन्यथा न कदाचन ।
गोपनीयं प्रयत्नेन सर्वगोप्यमयं भवेत् ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं न दातव्यं कदाचन ।
राज्यंदेयं शिरो देयं न देयं भैरवाक्षरम् ॥
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं पठते नरः ।
सर्वपाप विनिर्मुक्तो शिवेन सह मोदते ॥

॥इति शक्ति रहस्योक्त श्रीवटुकभैरवपञ्जर कवचम्॥

॥ श्रीबटुकभैरव पञ्जरस्तोत्रम्॥

यह स्तोत्र कवच एवं किले के समान रक्षा करता है।

॥श्रीदेव्युवाच॥

देव देव महादेव भक्ताभीष्ट प्रदायक पूर्वं ।
मे सूचितं नाथ ब्रूहि मम कृपयाऽद्य ॥१॥
पञ्जरं बटुकत्यैव सर्वसिद्धि प्रदायकम् साधकानां ।
हितार्थाय प्रकाशं कुरु भैरव ॥२॥

॥श्रीभैरव उवाच॥

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि भैरवस्य पञ्जरम् ।
पञ्जरस्यास्य देवेशि वृहदारण्यको ऋषिः ॥३॥
छन्दश्चानुष्टुप् देवेशि वटुको नाम देवता ।
सर्वार्थ साधने देवि विनियोगः प्रकीर्तितः ॥४॥

॥ स्तोत्रम् ॥

बटुकोऽव्यात् शिरोदेशः ललाटे भैरवेश्वरः ।
कपोले क्षेत्रपालश्च भ्रूभागे चासिताङ्गक ॥१॥
खट्वाङ्गधारी नासायां नेत्रयोर्भूतनायकः ।
ऊर्ध्वोष्ठे रुरुनाथश्च अधरोष्ठे धनेश्वरः ॥२॥
चिबुके कुल नाथोऽव्यात् महेशो मुखमण्डले ।
क्षेत्रेशः कण्ठदेशेऽव्यात् स्कन्धयोर्विशिनी पतिः ॥३॥
हृदये मम नाथोऽव्यात् कामेशो भुजमण्डले ।
पाणौ रक्षेन् महाकालो मार्तण्डो चाङ्गुलीषु तु ॥४॥
उदरे कालकालोऽव्यात् सर्वज्ञो नाभिमण्डले ।
रक्ताक्षो लिङ्गदेशेऽव्यात् अण्डकोशे सुरेश्वरः ॥५॥
कट्यां शूलभृतः पातु-वस्तिदेशे अघान्तकः ।
घोरान्तकोऽव्यात् चोर्वो जघने शत्रुतापनः ॥६॥
पादयोः पातु कन्दर्पो कल्पान्तो चाङ्गुलीषु च ।
आकेशात् पादपर्यन्तं पातु मां भैरवेश्वरः ॥७॥
प्रतीच्यां पातु भूतेशो याम्ये बलिहरोऽवतु ।
प्राच्यां कलानिधिः पातु उदीच्यां मन्मथेश्वरः ॥८॥
आग्नेयां शिखिनो पातु नैर्ऋत्यां प्रतयोऽवतु ।
वायव्यां प्राणदः पातु ऐशान्यामीश्वरोऽवतु ॥९॥

॥ फलश्रुति ॥

इतीदं पञ्जरं देवि सर्वमन्त्र रहस्यकम् ।
पठनात् पाठनाद् देवि स्वयं सिद्धिश्वरो भवेत् ॥१॥
प्रातःकाले पठेद् यस्तु मुच्यते व्याधि बन्धनात् ।
भानुमध्यगतो यस्तु पठनात् धनवान भवेत् ॥२॥
सायंकाले प्रपठनात् मुच्यते नानासिद्धिमवाप्नुयात् ।
अर्धरात्रौ पठेद् यस्तु शुचिः तद्गतमानसः ॥३॥
साक्षाद् भैरवरूपोऽसौ जायते भुवि मानवः ।
पञ्जरं भूर्जपत्रेषु चाष्टगन्धेन लेखयेत् ॥४॥

धारयेत् कण्ठे च बाहौ शिरसि सदा यः पुमान् ।
तस्य सर्वार्थ सिद्धिः स्यात् नात्रकार्या विचारणा ॥५॥
तस्मात् पठेत् सदा भक्त्या पातकान्मुच्यते ध्रुवम् ।
शत्रुश्च स्तम्भनं याति भूतादि भय नाशनम् ॥६॥

॥ श्रीमहाकालभैरव कवचम् ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

देव देव महाबाहो भक्तानां सुखवर्द्धन ।
केन सिद्धिं ददात्याशु कालौ त्रैलोक्यमोहन ॥
तन्मे वद दयाधार! साधकाभीष्ट सिद्धये ।
कृपां कुरु जगन्नाथ! वद देव विदाम्बर ॥

॥ श्रीभैरवोवाच ॥

गोपनीयं प्रयत्नेन तत्वात्तत्वं परात्परम् ।
एष सिद्धिकरः सम्यक् किमथो कथयाम्यहम् ॥
महाकालमहं वन्दे सर्वसिद्धि प्रदायकम् ।
देव दानव गन्धर्व किन्नरैः परिसेवितम् ॥
कवचं तत्वदेवस्य पठनाद् घोर दर्शने ।
सत्यं भवति सान्निध्यं कवचस्तवनान्तरात् ॥
सिद्धिं ददाति सातुष्टा कृत्वा कवचमुत्तमम् ।
साम्राज्यत्वं प्रियं दत्त्वा पुत्रवत् परिपालयेत् ॥
कवचस्य ऋषिर्देवी कालिका दक्षिणा तथा ।
विराट् छन्दः सुविज्ञेयं महाकालस्तु देवता ॥
कालिका साधने चैव (इष्टसाधने) विनियोगः प्रकीर्तितः ।
ॐ श्मशानस्थो महारुद्रो महाकालो दिगम्बरः ॥
कपाल कर्तुका वामे शूलं खट्वाँग दक्षिणे ।
भुजङ्ग भूषिते देवि! भस्मास्थि मणिमण्डित ॥
ज्वलत्पावक मध्यस्थो भस्मशय्या व्यवस्थितः ।
विपरीतरतां तत्र कालिकां हृदयोपरि ॥

पेयं खाद्यं च चोष्यं च तौ कृत्वा तु परस्परम् ।
एवं भक्त्या यजेद्देवं सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥
प्रणवं पूर्वमुच्चार्यं महाकालाय तत्पदम् ।
नमः पातु महामन्त्रः सर्वशास्त्रार्थ पारगः ॥
अष्टाक्षरो महामन्त्रः सर्वाशा परिपूरकः ।
सर्वपाप क्षयं याति ग्रहणं भक्त वत्सले ॥
कूर्च्चं द्वन्द्वं महाकाल प्रसीदेति पदद्वयम् ।
लज्जायुग्मं वह्निजाया स तु राजेश्वरी महान् ॥
मन्त्रग्रहण मात्रेण भवेत्सत्यं महाकविः ।
गद्य पद्यमयी वाणी गङ्गा निर्झरिता तथा ॥
तस्य नामतु देवेशि! देवाः गायन्ति भावुकाः ।
शक्तिबीज द्वयं दत्त्वा कूर्च्चं स्यात्त्तदनन्तरम् ॥
महाकालपदं दत्त्वा मायाबीज युगं तथा ।
कूर्चमेकं समुद्धृत्य महामन्त्रो दशाक्षरः ॥
राजस्थाने दुर्गमे च पातु मां सर्वतो मुदा ।
वेदादि वीजमादाय भगमान्तदनन्तरम् ॥
महाकालाय सम्प्रोच्य कूर्च्चं दत्त्वा च ठद्वयम् ।
ह्रींकार पूर्वमुद्धृत्य वेदादिस्तदनन्तरम् ॥
महाकालस्यान्त भागे स्वाहान्तमनुमुत्तमम् ।
धनं पुत्रं सदा पातु वन्धुदारा निकेतनम् ॥
पिंगलाक्षो मंजु युद्धे युद्धे नित्यं जयप्रदः ।
सम्भाव्यः सर्वदुष्टघ्नः पातु स्वस्थान वल्लभः ॥

॥ फलश्रुति ॥

इति ते कथितं तुभ्यं देवानामपि दुर्लभम् ।
अनेन पठनाद् देवी! विघ्ननाशो यथा भवेत् ॥
सम्पूजकः शुचिस्नातः भक्तियुक्तः समाहितः ।
सर्वव्याधि विनिर्मुक्तः वैरिमध्ये विशेषतः ।
महाभीमः सदापातु सर्वस्थान वल्लभम् ।
काली पार्श्वस्थितो देवः सर्वदा पातु मे मुखे ॥

पठनात् कालिका देवी पटेत् कवचमुत्तमम् ।
शृणुयाद्वा प्रयत्नेन सदानन्दमयो भवेत् ॥
श्रद्धयाऽश्रद्धयावापि पठनात् कवचस्य यत् ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति यद्यन्मनसि वर्तते ॥
बिल्वमूले पठेद्यस्तु पठनाद्कवचस्य यत् ।
त्रिसंध्यं पठनाद् देवि भवेन्नित्यं महाकविः ॥
कुमारीं पूजयित्वा तु यः पठेद् भावतत्परः ।
न किञ्चिद् दुर्लभं तस्य दिवि वा भुवि मोदते ॥
दुर्भिक्षे राजपीड़ायां ग्रामे वा वैरिमध्यके ।
यत्र यत्र भयं प्राप्तः सर्वत्र प्रपठेन्नरः ॥
तत्रतत्राभयं तस्य भवत्येव न संशयः ।
वामपार्श्वे समानीय शोभितांवर कामिनीम् ॥
श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि पठनात्कवचस्य तु ।
प्रयत्नतः पठेद्यस्तु तस्य सिद्धिः करेस्थिता ॥
इदं कवचमज्ञात्वा कालं (कालीं) यो भजते नरः ।
नैव सिद्धिर्भवेत्तस्य विघ्नस्तस्य पदे पदे ॥
आदौ वर्मं पठित्वा तु तस्य सिद्धिर्भविष्यति ॥

इस कवच से पाँच मंत्रों का ज्ञान होता है - (१) ॐ महाकालाय नमः (२) हूं हूं महाकाल प्रसीद प्रसीद ह्रीं ह्रीं स्वाहा (३) ह्रीं ह्रीं हूं महाकाल ह्रीं ह्रीं हूं (४) ॐ भू र्भुवः स्वः ऐं महाकालाय हूं स्वाहा (५) ह्रीं भू र्भुवः स्वः महाकालाय स्वाहा

॥इति रुद्रयामले महातन्त्रे महाकालभैरव कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ महाकालभैरवाष्टकम् ॥

देवराज सेव्यमान पापनांघ्रि पङ्कजं व्याल यज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादि योगिवृन्द वन्दितं दिगम्बरं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥१॥
भानुकोटि भास्वरं भवाब्धि तारकं परं नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
काल कालमंबुजाक्षमक्षशूलमक्षरं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥२॥

शूलटंक पाशदण्ड पाणिमादि कारणं श्यामकायमादिदेवमक्षयं निरामयम् ।
भीमविक्रमप्रभुं विचित्र ताण्डव प्रियं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥३ ॥

भुक्ति मुक्ति दायकं प्रशस्त चारु विग्रह नितान्तभक्तवत्सलं समस्तलोकविग्रहम्।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेम किंकिणीलसत्कटिं काशिकापुराधिनाथ कालभैरव भजे ॥४ ॥

धर्मसेतु पालकं त्वधर्ममार्ग नाशकं कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्ण शेषपाश शोभिताङ्ग मण्डलं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥५ ॥

रत्नपादुकाप्रभाभिराम पादयुग्मकं नित्यमद्वितीयमिष्ट दैवतं निरञ्जनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्र मोक्षणं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥६ ॥

अट्टहास भिन्नपद्मजाण्डकोश सन्ततिं, दृष्टिपात नष्टपापजालमुग्रशाशनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥७ ॥

भूतसंघ-नायकं विशाल कीर्तिदायकं काशिवास लोकपुण्य पापशोधकं विभुम्।
नीतिमार्ग कोविन्दं पुरातनं जगत्पतिं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥८ ॥

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्द्धनम् ।
शोकमोह दैन्यलोभ-कोपतापनाशनं ये प्रयान्ति कालभैरवांघ्रि सन्निधिं ध्रुवम्॥९ ॥

॥इति श्रीमच्छंकराचार्य विरचितं कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ श्री तीक्ष्णदंष्ट्रकालभैरवाष्टकम् ॥

यं यं यं यक्षरूपं दशदिशि विदितं भूमिकम्पायमानं ।
सं सं संहारमूर्ति शिरमुकुटजटा शेखरं चन्द्रबिम्बम् ॥
दं दं दं दीर्घ कायं विकृतनख मुखं त्यूर्ध्वरोमं करालं ।
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥१ ॥
रं रं रं रक्तवर्ण कटकटिततनुं तीक्ष्णदंष्ट्राकरालं ।
घं घं घं घोष घोषं घघघघ घटितं घर्घरं घोरनादम् ॥
कं कं कं कालपाशं धृकधृकधृकितं ज्वालितं कामदाहं ।
तं तं तं दिव्यदेहं प्रणमत सततं भैरवक्षेत्रपालम् ॥२ ॥
लं लं लं लं वदन्तं ललललल ललितं दीर्घजिह्वाकरालं ।
धुं धुं धुं धूम्रवर्ण स्फुट विकट मुखं भास्करं भीमरूपम् ॥
रुं रुं रुं रुण्डमालं रवितम नियतं ताम्रनेत्रं करालं ।

नं नं नं नग्नरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥३॥
वं वं वं वायुवेगं नतजनदमिनं ब्रह्मवारंपरं तं।
खं खं खं खड्गहस्तं त्रिभुवन निलयं भास्करं भीरु रूपम् ॥
चं चं चं चं चलित्वा चलचल चलित च्चालितं भूमिचक्रम्।
मं मं मं मायिरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥४॥
शं शं शं शङ्खहस्तं शशिकरधवलं मोक्ष सम्पूर्णतेजं।
,मं मं मं मं महान्तं कुलमकुलकुलं मन्त्रगुप्तं सुनित्यम् ॥
यं यं यं भूतनाथं किलकिलकिलितं बालकेलिप्रधानं।
अं अं अं अन्तरिक्षं प्रणमेत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥५॥
खं खं खं खड्गभेदं विषममृतमयं कालकालं करालं।
क्षं क्षं क्षं क्षिप्रवेगं दहदहदहनं तप्तसन्दीप्यमानम् ॥
हौं हौं हौंकार नादं प्रकटित गहणं गर्जितैर्भूमिकम्पं।
वं वं वं बाललीलं प्रणयत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥६॥
सं सं सं सिद्धियोगं सकल गुणधनं देव देवं प्रसन्नं।
पं पं पं पद्मनाभं हरिहर नयनं चन्द्रसूर्याग्निनेत्रम् ॥
ऐं ऐं ऐश्वर्यनाथं सततभयहर पूर्वदेव स्वरूपं।
रौं रौं रौं रौद्ररूपं प्रणमत सततं भैरव क्षेत्रपालम् ॥७॥
हं हं हं हंसहासं हसितकलहकं मुक्तयोगाट्टहास।
धं धं धं येत्र रूपं शिरमुकुटजटा बन्ध बन्धागृहस्तम्।
टं टं टङ्कारनादं त्रिदशलटलटं कामगर्वापहारं।
भृं भृं भृं भूतनाथं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥८॥
इत्येवं कामयुक्तं प्रपठति नियतं चाष्टकं भैरवस्य।
निर्विघ्नं दुःखनाशं सुरभयहरणं डाकिनी शाकिनीनाम् ॥
नश्येद्धि व्याघ्रसर्प वहवहसलिलेराज्यशं सस्य शून्यं।
सर्वानश्यन्ति दूरं विपदइति भृशं चिन्तमात्सर्व सिद्धम् ॥९॥
भैरवस्याष्टकमिदं षडमासं यः पठेन्नरः।
स याति परमं स्थानं यत्र देवो महेश्वरः ॥
सिन्दूरारुणगात्रं च सर्वजन्म विनिर्मितम्।
मुकुटाग्रचधरं देवं भैरवं प्रणमाम्यहम् ॥

॥ इति श्री तीक्ष्णदंष्ट्रकालभैरवाष्टकम् समाप्तम् ॥

॥ अथ कालभैरव वटुकभैरव प्रयोगः॥

यह प्रयोग भैरव की प्रसन्नता व शत्रूनाश एवं दिग्बंधन हेतु विशेष है अतः भैरव का पूजन, बलिप्रदान कर्म पूजा पूर्णरूप से विधिवत् करें।

विनियोगः - **अथ वटुकभैरव स्तोत्रस्य सप्तऋषिः मात्रिका छन्दः श्री वटुक -काल भैरवो देवता ममेप्सित सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।**

ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्। शोकदुःख क्षयकरं निरंजनं निराकारं नारायणं भक्तिपूर्ण त्वं महेशं सर्वकाम सिद्धिर्भवेत्। कालभैरव भूषण वाहनं कालहंता रूपं च भैरव गुनी महात्मनः योगीनां महादेव स्वरूपं सर्व सिद्धयेत्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरो महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ त्वं ज्ञानं त्वं ध्यानं त्वं योगं त्वं तत्वं त्वं वीजं महात्मानं त्वं शक्ति शक्तिधारणं त्वं महादेव स्वरूपं सर्वसिद्धिर्भवेत्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरो महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं नागेश्वरं नागहारं च त्वं वन्दे परमेश्वरं, ब्रह्मज्ञानं ब्रह्मध्यानं ब्रह्मयोगं ब्रह्मतत्वं ब्रह्मवीजं महात्मनः। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

त्रिशूलचक्र गदापाणिं शूलपाणि पिनाकधृक्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं विनागन्धं विनाधूपं विनादीपं सर्वशत्रुविनाशनं सर्वसिद्धिर्भवेत्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धर्भवेत्।

विभूति भूति नाशाय दुष्टक्षयकारकं महाभैरवे नमः सर्वदुष्ट विनाशनं सेवक सर्वसिद्धिं कुरु। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं महाज्ञानी महाध्यानी महायोगी महाबली तपेश्वरी देहि मे सिद्धिं सर्वं त्वं भैरवं भीमनादं च नादनम्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अमुकं मारय मारय उच्चाटय उच्चाटय मोहय मोहय वशं कुरु कुरु सर्वार्थकस्य सिद्धिरूपं त्वं महाकाल काल भक्षणं महादेव स्वरूप त्वं सर्व सिद्धियेत्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव

महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं गोविन्द गोकुलानन्द गोपालं गोवर्द्धनम् धारणं त्वं वन्दे परमेश्वरं नारायणं नमस्कृत्य त्वं धामशिवरूपं च साधकं सर्व सिद्धयेत्॥ ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं राम लक्ष्मणं त्वं श्रीपति सुन्दरं त्वं गरुड वाहनं त्वं शत्रुहंता च त्वं यमस्य रूपं सर्वकार्य सिद्धिं कुरु। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं ब्रह्मा विष्णु महेश्वरं त्वं जगत्कारणं सृष्टि स्थिति संहारकारकं रक्तबीज महासैन्यं महाविद्या महाभयविनाशनम्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं आहार मद्य मांसं च सर्व दुष्ट विनाशनं साधकं सर्वसिद्धप्रदा। ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अघोर अघोर महाअघोर सर्वअघोर भैरव काल। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ आं क्लीं क्लीं क्लीं ॐ आं क्रीं क्रीं क्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं रुं रुं रुं क्रूं क्रूं क्रूं मोहन सर्व सिद्धिं कुरु कुरु ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अमुकं उच्चाटय उच्चाटय मारय मारय प्रूं प्रूं प्रें प्रें खं खं दुष्टान् हन हन अमुकं फट् स्वाहा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ वटुक वटुक योगं च वटुकनाथ महेश्वरः वटुकं वटवृक्षै वटुकं प्रत्यक्ष सिद्धियेत्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव श्मशान भैरव कालरूप कालभैरव मेरो वैरी तेरो आहार रे काढि करेजा चखन करो कटकट। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ नमो हंकारी वीर ज्वालामुखी तूं दुष्टन वधकरो विना अपराध जो मोहि सतावे तेकर करेजा छिदिपरै मुखवाट लोहू आवे को जाने चन्द्र सूर्य जाने की आदि पुरुष जाने कामरूप कामाक्षा देवी त्रिवाचा सत्यफुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता

सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं डाकिनी शाकिनी भूत पिशाचश्च सर्वदुष्ट निवारणं कुरु कुरु साधकानां रक्ष रक्ष देहि मे हृदये सर्व सिद्धिं त्वं भैरव भैरवीभ्यो त्वं महाभय विनाशनं कुरु। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं पच्छिम दिशा में सोने का मठ सोने का किवाड सोने का ताला सोने की कुंजी सोने का घण्टा सोने की सांकुली पहिली सांकुली अठारह कुल नाग के बाँधों दूसरी साँकुली अठारह कुल जाति के बौधों तीसरी सांकुली वैरि दुष्टन को बाँधों चौथी साँकुली डाकिनी शाकिनी के बाँधों पाँचवी सांकुली भूतप्रेत को बाँधो जरती अगिन बाँधों जरता मसान बांधों थल जल बांधो बांधो अम्मरताई जहां भेजूं तहां जाई जेहि का वांधि लावो वो तेहि का वांध लावो वाचा चूकै उमा सूखे श्री बावन वीर ले जाय सात समुन्दर तीर त्रिवाचा सत्य मन्त्र फुरो ईश्वरो वाचा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं उत्तर दिशा में रूपे का मठ रूपे का किवार रूपे का ताला रूपे की कुंजी रूपे का घण्टा रूपे की सांकुली पहिली सांकुली अठारह कुल नाग बाँधों दूसरी साँकुली अठारह कुल जाति को बांधूं तीसरी सांकुली वैरि दुश्मन को बाँधों चौथी साँकुली डाकिनी शाकिनी को बाँधों पाँचवी सांकुली भूतप्रेत को बांधो जलत अग्नि बौधों जलत मसान बाँधो जल बाँधो थल बाँधो बाँधो अम्बरताई जहां भेजूं तहां जाई जेहि का वांधि मंगावो तेहि का वांधि लावो वाचा चूकै उमा सूखै श्री बावन वीर ले जाय सात समुन्दर तीर त्रिवाचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं पूरब दिशा में तामे का मठ तामे का किवार तामे का ताला तामे की कुंजी तामे का घण्टा तामे की सांकुली पहिली सांकुली अठारह कुल नाग को बाँधूं दूसरी साँकुली अठारह कुल जाति को बांधू तीसरी सांकुली वैरि दुष्टन को बाँधूं चौथी साँकुली डाकिनी शाकिनी को बाँधूं पाँचवी सांकुली भूतप्रेत को बाँधूं जलत अग्नि बाँधूं जलत मसान बांधूं जल बाँधो थल बाँधो बाँधो अम्बरताई जहां भेजूं तहां जाई जेहि का वांधि मंगावो तेहि वांधि लावो वाचा चूकै उमा सूखै श्री बावन वीर ले जाय सात समुन्दर

तीर त्रिवाचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं दक्षिण दिशा में अस्थि का मठ अस्थि का किवार अस्थि का ताला अस्थि की कुंजी अस्थि का घण्टा अस्थि की सांकुली पहिली सांकुली अठारह कुल नाग को बाँधो दूसरी साँकुली अठारह कुल जाति को बांधो तीसरी सांकुली वैरि दुष्टन को बाँधो चौथी साँकुली डाकिनी शाकिनी को बाँधो पाँचवीं सांकुली भूतप्रेत को बाँधो जलत अग्नि बांधो जलत मसान बांधो जल बाँधो थल बाँधो बाँधो अम्बरताई जहां भेजूं तहां जाई जेहि वांधि मंगावो तेहि का वांधि लावो वाचा चूकै उमा सूखे श्री बावन वीर ले जाय सात समुन्दर तीर त्रिवाचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं आकाशं त्वं पातालं त्वं मृत्युलोकं चतुर्भुजं चतुर्मुखं चतुर्बाहु शत्रुहन्ताश्च त्वं भैरव भक्तिपूर्ण कलेवरम्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं सहस्त्रमुख सहस्त्र-जिह्वा सहस्त्र-वाहनं सहस्त्र-दुष्ट-भक्षितं त्वं सेवकस्य सहस्त्र कामना सिद्धि करोसि। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव तुम जहाँ जाहु जहाँ दुश्मन बैठा होय तो बैठे को मारो चलत होय तो चलते को मारो सोवत होय तो सोते को मारो पूजा करत होय तो पूजा में मारो जहां होय तहां मारो ब्याघ्र लै भैरव दुष्ट को भक्षौ सर्प लै भैरव दुष्ट को डसो खड्ग से मारो भैरव दुष्ट को शिर गिरैबान से मारो दुष्टन करेजा फटै त्रिशूल से मारो शत्रुछिदि परै मुख वाट लोहू आवे को जाने चन्द्र सूरज जाने आदि पुरुष जानै कामरूप कामाक्षा देवी त्रिवाचा सत्य फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं वाचा चूकै उमा सूखै दुश्मन मरै अपने घर में दुहाई कालभैरव की जोह मार वचन झूठा होय तो ब्रह्मा के कपाल टूटै शिवजी के तीनों नेत्र फूटै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं भूतस्य भूतनाथश्च भूतात्म भूत भावनः त्वं भैरव सर्व

सिद्धिं कुरु कुरु। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं ज्ञानी त्वं ध्यानी त्वं योगी त्वं जंगम स्थावरं त्वं सेवित सर्वकाम सिद्धिर्भवेत्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं वन्दे परमेश्वरं ब्रह्मरूपं प्रसन्नो भव गुनि महात्मानां महादेव स्वरूपं सर्वसिद्धिर्भवेत्॥

(ॐ कालभैरव वटुकभैरव योग विख्यातः गोपालेन संकीर्तितम्। गोरखनाथ् स्वयं श्रुतं सर्व कार्येषु कामदम्)॥ इति॥

॥ शत्रुसंहाराष्टक भैरव स्तोत्रम् ॥

यह स्तोत्र प्रबल शत्रुसंहार कारक है। जिस महात्मा ने इसकी रचना अपने शत्रुओं के नाश हेतु की उसका प्रबल प्रभाव आज भी १५० वर्षों से है। शत्रुओं का नाश हुआ एवं आज तक वह गाँव वीरान है। यह स्तोत्र बहुत उग्र है अतः दीपदान, बलिदान प्रयोग करके नित्य शांति पाठ करना चाहियें।

हन-हन दुष्टन को, प्राणनाथ हाथ गहि, पटकि मही-तल मिटाओ सब शोक को।
हमें जो सतावे जन, काम मन-वाक्यन ते , बार बार तिनको पठाओ यमलोक को ।
वाकोघर मसान करौ संसत शृगाल रोवैं, रुधिर कपाल भरो उर शूल चोक को ।
भैरो महाराज! मम काज आज एही करौ, शरण तिहारो वेग माफ करो चूक को ॥१ ॥

भल-भल करे ओ विपक्षी पक्ष, आपनो टरे न टारे, काहू के त्रिशूल दण्ड रावरो ।
घेरि-घेरि छलिन छकाओ, छिति छल माहिं बचै नाहीं, नाती-पूत सहित स पाँवरो।
हेरि-हेरि निन्दक सकल निरमूल करो, चूसि लेहु रुधिर रस धारो शत्रु सागरो ।
झपटि-झपटि झूमि झूमि काल दण्ड मारो, जाहि यमलोक वैरि वृन्द को विदा करो ॥२ ॥

झपटि के सारमेय पीठ पै सवार होहु, दपटि दबाओ तिरशूल, देर ना करो ।
रपटि रपटि रहपट एक मारो, नाथ! नाक से रुधिर गिरै, मुण्ड से व्यथा करो ।
हरषि निरखि यह काम मेरो, जल्दी करो सुनि के कृपानिधान भैरोजी! कृपा करो ।
हरो धन-दार परिवार, मारो पकरिके, बचे सौ बहि जाइ नदी नार जा भरो ॥३ ॥

जाहि जर-मूर से रहे न वाके बंस कोई, रोइ-रोइ छाती पीटै, करै हाइ-हाइ के ।
रोग अरु दोष कर, प्राणी विललाइ, वाके कोई न सहाइ लागै, मरै धाइ धाइ के ।
खलन खधारि, दण्ड देहु दीनानाथ! मैं तो परम अनाथ, दया करो आइ-आइ के ।

जनम-जनम गुन गाइ के बितैहों दिन, भैरो महाराज! वैरी मारो, जाइ-जाइ के ॥४॥
रात-दिन पीरा उठै, लोहू कटि-कटि गिरे, फारि के करेजा ताके बंस में समाइ जा।
रिरिकि-रिरिकि मरे, काहू को उपाय कछू लागै नाहीं एको जुक्ति, हाड़ माँस खाइ जा।
फिरत-फिरत फिरि आवै, चाहे चारों ओर यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र को प्रभाव विनसाइ जा।
भैरो महाराज! मम काज आज एहि करौ, शत्रुन के मारि दुःख दुसह बढ़ाइ जा ॥५॥
झट-झट पेट चीर,चीर के बहाइ देह, भूत औ पिशाच पीवैं रुधिर अघाइ कै।
रटि-रटि कहत सुनत नाहीं, भूतनाथ!, तुम बिनु कवन सहाय करै आइ कै।
भभकि-भभकि रिपु तन से रुधिर गिरे, चभकि-चभकि पिओ कुकुर लिआइ कै।
हहरि-हहरि हिआ फाटै सब शत्रुन को, सुनहु सवाल हाल कासो कहैं जाइ कै।
जरै ज्वर-जाल-काल भृकुटि कराल करो, शत्रुन की सेखि देखि जात नहीं नेक हूँ ॥६॥
तेरो है विश्वास, त्रास एको नहीं काहू केर लागत हमारे, कृपा-दृष्टि कर देख हूँ।
भैरो! उनमत्त ताहि कीजिए, उनमत्त आज गिरै जम-ज्वाल-नदी जल्दी से फेंक हूँ।
यम कर दूत जहाँ भृत-सम दण्ड मारै, फूटे शिर, टूटे हाड़, बचै नाहिं एक हूँ ॥७॥
हवकि-हवकि मांस काटि दाँतन मे, बोटि-बोटि वीरन के, नवो नाथ खाइ जा।
भूत-वेताल ववकारत, पुकार करै, आज नर-रुधिर पर वहै आइ जा।
डाकिनी अनेक डडकारैं, सब शत्रुन के रुधिर कपाल भरि-भरि के पिआइ जा।
भैरो भूतनाथ! मेरो काज आज एहि करो, दुर्जन के तन-धन अबहीं नसाइ जा ॥८॥
शत्रुन संहार आज, अष्टक बनाए आज, षट-जुग ग्रह शशि सम्वत में सजि कै।
फागुन अजोरे पाख, वाण तिथि, सोमवार, पढ़त जो प्रातः काल उठि नींद तजि कै।
शत्रुन संहार होत, आपन सब काज होत, सन्तन सुतार होत, नाती-पूत रजि कै।
कहै गुरुदत्त तीनि मास, तीनि साल महँ, शत्रु जमलोक जैहैं बचिहैं न भजि कै ॥९॥

॥ क्षेत्रपालमन्त्रप्रयोगः॥

नवाक्षर मन्त्र – ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः।

विनियोगः – अस्य क्षेत्रपालमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। क्षेत्रपालो देवता। क्षं बीजम्। लः शक्तिः। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः – ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे। ॐ क्षेत्रपालदेवतायै नमः हृदि। ॐ क्षं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ लः शक्तये नमः पादयोः। ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः – ॐ क्षां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्षीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्षूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ क्षैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्षौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ क्षः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः – ॐ क्षां हृदयाय नमः। ॐ क्षीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्षूं शिखायै वषट्। ॐ क्षैं कवचाय हुम्। ॐ क्षौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ क्षः अस्त्राय फट्।

इस प्रकार ध्यान कर मूर्ति या यन्त्र का दूधधारा व जलधारा से शोधन कर यन्त्र की आवरण पूजा करें।

ध्यानम् –

ॐ नीलांजनादिनिभमूर्द्धापिशंगकेशं
वृत्तोग्रलोचनमुदात्तगदा कपालम्।
आशांबरं भुजगभूषणमुग्रदंष्ट्रं
क्षेत्रेशमद्भुततनुं प्रणमामि देवम् ॥

प्रथमावरणम् – षट्कोण केसरेषु आग्नेय्यादि चतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च – ॐ क्षां हृदयाय नमः हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥१॥ ॐ क्षीं शिरसे स्वाहा। शिरः श्री पा०। ॐ क्षूं शिखायै वषट्। शिखाश्री पा०। ॐ क्षैं कवचाय हुम्। कवचश्री पा०। ॐ क्षौं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रय श्री पा०। ॐ क्षः अस्त्राय फट्। अस्त्रश्री पा०।

तरह षडङ्गों का पूजन करें। तथा पुष्पाञ्जलि प्रदान करें -

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

द्वितीयावरणम् - (अष्टदलेषु) ॐ अग्निलाख्याय नमः। अग्निलाख्यश्री पा०। ॐ अग्निकेशाय नमः। अग्निकेशश्री पा०। ॐ करालाय नमः। करालश्री पा०। ॐ घण्टारवाय नमः। घण्टारवश्री पा०। ॐ महाकोपाय नमः। महाकोपश्री पा०। ॐ पिशिताशनाय नमः। पिशिताशनश्री पा०। ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः। पिङ्गलाक्षश्री पा०। ॐ ऊर्द्धकेशाय नमः। ऊर्द्धकेशश्री पा०।
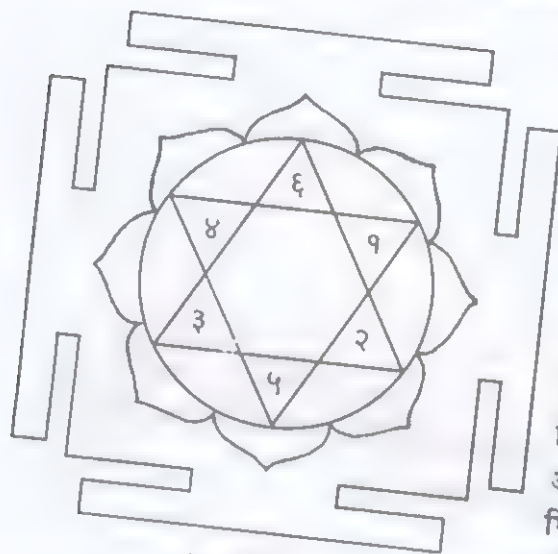
क्षेत्रपाल यन्त्रम्

पुष्पाञ्जलि देवें - अभीष्टसिद्धिं........द्वितीयावरणार्चनम् ॥

तृतीयावरणम् - (परिधि में) इन्द्रादि दशदिक्पालों का एवं चतुर्थावरणम् में उनके वज्रआयुधों का पूजन करें व बलिप्रदान करें।

पुष्पाञ्जलि देवें - अभीष्टसिद्धिं........ तृतीयावरणार्चनम् ॥ ॐ पूजितास्तर्पिता सन्तु से जल छोड़ें।

ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः इस मन्त्र से माष बलि प्रदान करें। अर्धरात्रि में पुनः बलि देवें। इस मन्त्र का पुरश्चरण १ लाख जप का है। तथा दशांश हवन, तर्पण कर ब्राह्मण भोजन करायें। और कहें **क्षेत्रपालः प्रसन्नो भवति।**

तथा च लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं जुहुयात्तद्दशांशतः। चरुणा घृतसिक्तेन ततः क्षेत्रे समर्चयेत्। बलिनानेन संतुष्टः क्षेत्रपालः प्रयच्छति। कान्तिमेधा बलारोग्यतेजः पुष्टियशः श्रियः।

॥इति क्षेत्रपालनवाक्षरमन्त्र प्रयोगः॥

॥ आरती श्री वटुकभैरव की॥

आरती कीजै श्री वटुकभैरव की । विपदा विदारण भक्त हृदय की ॥
हाथ त्रिशूल गले मुण्डमाला । डमरू खड्ग त्रिनेत्र विशाला ॥
राजत चन्द्रकला शिवनीकी । आरती कीजै श्री वटुकभैरव की ॥१॥

क्षेत्रपाल श्मशान के वासी । व्यालो पवीत हाथ यम फांसी ॥
शोभित रूप दिगम्बर नीकी । आरती कीजै श्री वटुकभैरव की ॥२॥

जयशङ्कर प्रियबन्धन हारी । बलिमुकनाथ शत्रुलयकारी ॥
वाहन स्वान जगत के फीकी । आरती कीजै श्री वटुकभैरव की ॥३॥

व्याघ्र चर्म पहिरत योगिनपति । काशी द्वारपाल भैरव पति ॥
पशुपति भिक्षुक मेष बटुक की । आरती कीजै श्री वटुकभैरव की ॥४॥
मूसल दक्षिण अङ्ग बहन्ता । खप्परधारी योगिन कन्ता ॥
अष्टमूर्ति भूधर योगी की । आरती कीजै श्री वटुकभैरव की ॥५॥

दिगम्बर वटुकेश कृपाला । काल शमन कङ्काल कृपाला ॥
नाश करत तुम नित दुष्टन की । आरती कीजै श्री वटुकभैरव की ॥६॥

वटुकभैरव की जो आरती गावै । व्याघ्र चर्म रुद्राक्ष चढ़ावै ॥
रक्षा करत प्रभु ताके घर की । आरती कीजै श्री वटुकभैरव की ॥७॥

ब्रह्मदेव यह आरती ग ावत । बिल्व पत्र फल लै नित ध्यावत ॥
आरती करत कालभैरव की । आरती कीजै श्री वटुकभैरव की ॥८॥

卐 इति श्रीभैरव तन्त्रम् सम्पूर्णम् 卐

❀❀❀

॥ मिश्रतन्त्रम् ॥

॥ पितृस्तोत्रम् ॥

नमस्येऽहं पितृभाद्धे्ये वसन्ताधि देवताः ।
दैवेरपि तर्प्यन्ते ये च भाद्धै स्वधोत्तरै ॥१॥
नमस्येऽहं पितृन्स्वर्गे ये तर्प्यन्ते महर्षिभिः ।
श्राद्धैर्मनोमयैर्भत्क्या भुक्तिमुक्तिमभीप्सुभिः ॥२॥
नमस्येऽहं पितृन्स्वर्गे सिद्धाः संतर्पयन्ति यान् ।
श्राद्धेषु दिव्यैः सकलै-रुपहारैरनुत्तमैः ॥३॥
नमस्येऽहं पितृन्भक्त्यायेऽर्च्यन्ते गुह्यकैरपि ।
तन्मयत्वेन वाञ्छद्धि-र्ऋद्धिमात्यंतिकीं पराम् ॥४॥
नमस्येऽहं पितृन्मर्त्यैरर्च्यन्ते भुवि ये सदा ।
श्राद्धेषु श्रद्धयाभीष्टलोकप्राप्ति प्रदायिनः ॥५॥
नमस्येऽहं पितृन् विप्रैरर्च्यन्ते भुवि ये सदा ।
वाञ्छिताभीष्ट-लाभाय प्राजापत्यप्रदायिनः ॥६॥
नमस्येऽहं पितृन् ये वै तर्प्यतेऽरण्य वासिभिः ।
वन्यैः श्राद्धैर्यताहारै-स्तपोनिर्धूतकिल्विषैः ॥७॥
नमस्येऽहं पितृन् विप्रैर्नैष्टिक ब्रह्मचारिभिः ।
ये संयतात्मभिर्नित्यं संतर्प्यन्ते समाधिभिः ॥८॥
नमस्येऽहं पितृन् श्राद्धै राजन्यास्तर्पयंति यान् ।
कव्यैरशेषैर्विधिवल्लोकत्रय फल प्रदान् ॥९॥
नमस्येऽहं पितृन्वैश्यैरर्च्यन्ते भुवि ये सदा ।
स्वकर्माभिरतैर्नित्यं पुष्पधूपान्नवारिभिः ॥१०॥
नमस्येऽहं पितृन् श्राद्धैर्ये शूद्रैरपि भक्तितः ।
संतृप्यन्ते जगत्यत्र नाम्ना ज्ञाताः सुकालिनः ॥११॥
नमस्येऽहं पितृन् श्राद्धैः पाताले ये महासुरैः ।
संतर्प्यन्ते स्वधाहारैस्त्यक्तदंभमदैः सदा ॥१२॥

नमस्येऽहं पितृन् श्राद्धैरर्च्यन्ते ये रसातले ।
भोगैरशेषैर्विधिवन्नागैः कामानभीप्सुभिः ॥१३॥

नमस्येऽहं पितृन् श्राद्धैः सर्पैः संतर्पितान् सदा ।
तत्रैव विधिवन्मंत्र भोगसंपत्समन्वितैः ॥१४॥

पितृन्नमस्ये निवसन्ति साक्षाद्ये देवलोके च तथांतरिक्षे ।
महीतले ये च सुरादिपूज्यास्ते मे प्रयच्छंतु मयोपनीतम् ॥१५॥

पितृन्नमस्ये परमात्मभूता ये वै विमाने निवसंतिमूर्ताः ।
यजन्ति यानस्तमलै र्मनोभिर्योगीश्वराः क्लेशविमुक्ति हेतून् ॥१६॥

पितृन्नमस्ये दिवि ये च मूर्ताः स्वधाभुजः काम्यफलाभिसंधौ ।
प्रदानसक्ताः सकलेप्सिताना विमुक्तिदा येऽनभिसंहितेषु ॥१७॥

तृप्यंतु तेऽस्मिन् पितरः समस्ता इच्छावतां ये प्रदिशंति कामान् ।
सुरत्वमिन्द्रत्व मतोऽधिकं वा सुतान् पशून् स्वानि बलं गृहाणि ॥१८॥

सोमस्य ये रश्मिषु येऽर्कबिम्बे शुक्ले विमाने च सदा वसंति ।
तृप्यन्तु तेऽस्मिन् पितरोऽन्नतोयैर्गधादिना पुष्टिमितो व्रजंतु ॥१९॥

येषां हुतेऽग्नौ हविषा च तृप्तिर्ये भुञ्जते विप्रशरीरभाजः ।
ये पिण्डदानेन मुदं प्रयांति तृप्यन्तु तेऽस्मिन् पितरोऽन्नतोयैः ॥२०॥

ये खड्गिमांसेन सुरैरभीष्टैः कृष्णैस्तिलैर्दिव्यमनोहरैश्च ।
कालेन साकेन महर्षिवर्यैः संप्रीणितास्ते मुदमत्र यान्तु ॥२१॥

कव्यान्यशेषाणि च यान्यभीष्टान्यतीव तेषाममरार्चितानाम् ।
तेषां तु सान्निध्यमिहास्तु पुष्पगंधान्नभोज्येषु मया कृतेषु ॥२२॥

दिने दिने ये प्रतिगृह्णतेऽर्च्चां मासान्तपूज्या भुवि येऽष्टकासु ।
ये वत्सरान्तेऽभ्युदये च पूज्याः प्रयान्तु ते मे पितरोऽत्र तृप्तिम् ॥२३॥

पूज्या द्विजानां कुमुदेंदुभासो ये क्षत्रियाणां च नवार्कवर्णाः ।
तथा विशां ये कनकावदाता नीलीनिभाः शूद्रजनस्य ये च ॥२४॥

तेऽस्मिन् समस्ता मम पुष्पगंधधूपान्नतोयादिनिवेदनेन ।
तथाग्निहोमेन च यांतु तृप्तिं सदा पितृभ्यः प्रणतोऽस्मि तेभ्यः ॥२५॥

ये देवपूर्वाण्यतितृप्ति हेतोरश्नंति कव्यानि शुभाहुतानि ।
तृप्ताश्च ये भूतिसृजो भवंति तृप्यन्तु तेऽस्मिन् प्रणतोऽस्मि तेभ्यः ॥२६॥

रक्षांसि भूतान्यसुरांस्तथोग्रान्निर्णाशयन्तस्त्वशिवं प्रजानाम् ।
आद्याः सुराणाममरेश पूज्यास्तृप्यन्तु तेऽस्मिन्प्रणतोऽस्मि तेभ्यः ॥२७॥
अग्निष्वात्ता बर्हिषदा आज्यपाः सोमपास्तथा ।
व्रजन्तु तृप्तिं श्राद्धेऽस्मिन् पितरस्तर्पितामयां ॥२८॥
अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्राचीं रक्षन्तु मेदिशम् ।
तथा बर्हिषदः पान्तु याम्यायां पितरस्तथा ॥२९॥
प्रतीचीमाज्यपास्तद्वदुदीचीमपि सोमपाः ।
रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोषतः ॥३०॥
सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमो रक्षां करोतु मे ।
विश्वो विश्वभुगाराध्यो धर्म्यो धन्यः शुभाननः ॥३१॥
भूतिदो भूतिकृद्भूतिः पितृणां ये गणा नव ।
कल्याणः कल्पतां कर्त्ता कल्पः कल्पतराश्रयः ॥३२॥
कल्पताहेतुरनघः षडिमे ते गणाः स्मृताः ।
वरो वरेण्यो वरदः पुष्टिदस्तुष्टिदस्तथा ॥३३॥
विश्वपाता तथा धाता सप्तैवैते गणास्तथा ।
महान् महात्मा महितो महिमा वान्महाबलः ॥३४॥
गणाः पंच तथैवेते पितृणां पापनाशनाः ।
सुखदो धनदश्चान्यो धर्मदोऽन्यश्च भूतिदः ॥३५॥
पितृणां कथ्यते चैतत्तथा गणचतुष्टयम् ॥
एकविंशत्पितृ गणा यैर्व्याप्तमखिलं जगत् ॥३६॥
ते मेऽनुतृप्तास्तुष्यं तु यच्छन्तु च सदा हितम् ॥

(सप्तार्चिस्तवम्)

अमूर्त्तानां च मूर्त्तानां पितृणां दीप्ततेजसाम् ॥३७॥
नमस्यामि सदा तेषां ध्यानिनां दिव्यचक्षुषाम् ।
इन्द्रादीनां च नेतारो दक्षमारी चयोस्तथा ॥३८॥
सप्तर्षीणां तथान्येषां तान्नमस्यामि कामदान् ।
मन्वादीनां मुनींद्राणां सूर्य्याचन्द्रमसोस्तथा ॥३९॥
तान्नमस्याम्यहं सर्व्वान् पितरश्चार्णवेषु ये ।
नक्षत्राणां ग्रहाणां च वाय्वग्न्योर्नभ सस्तथा ॥४०॥

द्यावापृथिव्योश्च तथा नमस्यामि कृतांजलिः ।
देवर्षीणां ग्रहाणां च सर्वलोकनमस्कृतान् ॥४१॥
अभयस्य सदा दातृन्नमस्येऽहं कृतांजलिः ।
नमो गणेभ्यः सप्तभ्यस्तथा लोकेषु सप्तसु ॥४२॥
स्वयंभुवे नमस्यामि ब्रह्मणे योग चक्षुषे ।
सोमाधारान् पितृगणान् योगमूर्तिधरांस्तथा ॥४३॥
नमस्यामि तथा सोमं पितरं जगतामहम् ।
अग्निरूपांस्तथैवान्यान्नमस्यामि पितृनहम् ॥४४॥
अग्नीसोममयं विश्वं यत एतदशेषतः ।
ये तु तेजसि ये चैते सोमसूर्य्याग्निमूर्त्तयः ॥४५॥
जगत्स्वरूपिणश्चैव तथा ब्रह्मस्वरूपिणः ।
तेभ्योऽखिलेभ्यो योगिभ्यः पितृभ्यो यतमानसाः ।
नमो नमो नमस्ते मे प्रसीदन्तु स्वधाभुजः ॥४६॥

॥ पितर ऊचुः ॥

स्तोत्रेणानेन च नरो यो मां स्तोष्यति भक्तितः ।
तस्य तुष्टा वयं भोगानात्मज्ञानं तथोत्तमम् ॥४७॥
शरीरारोग्यमर्थं च पुत्रपौत्रादिकं तथा ।
प्रदास्यामो न संदेहो यच्चान्यदभिवांछितम् ॥४८॥
तस्मात्पुण्यफलं लोके वाञ्छद्भिः सततं नरैः ।
पितृणां चाक्षयां तृप्तिं स्तव्यां स्तोत्रेण मानवैः ॥४९॥
वाञ्छद्भिः सततं स्तव्याः स्तोत्रेणानेन वै यतः ।
श्राद्धे च य इमं भक्त्या अस्मत्प्रीतिकरं स्तवम् ॥५०॥
पठिष्यंति द्विजाग्र्याणां भुञ्जतां पुरतः स्थिताः ।
स्तोत्रश्रवणसंप्रीत्या सन्निधाने परे कृते ॥५१॥
अस्माकमक्षयं श्राद्धं तद्भविष्यत्यसंशयम् ।
यद्यप्यश्रोत्रियं श्राद्धं यद्यप्युपहतं भवेत् ॥५२॥
अन्यायोपात्तवित्तेन यदि वा कृतमन्यथा ।
अश्राद्धार्हैरुपहतैस्तथा कृतम् ॥५३॥

अकालेऽप्यथवाऽदेशे विधिहीनमथापि वा ।
अश्रद्धया वा पुरुषैर्दंभमाश्रित्य वा कृतम् ॥५४॥
अस्माकं तृप्तये श्राद्धं तथाप्येतदुदीरणात् ।
यत्रैतत्पठ्यते श्राद्धे स्तोत्रमस्मत्सुखावहम् ॥५५॥
अस्माकं जायते तृप्तिस्तत्र द्वादशवार्षिकी ।
हेमंते द्वादशाब्दानि तृप्तिमेतत्प्रयच्छति ॥५६॥
शिशिरे द्विगुणाब्दांश्च तृप्तिस्तोत्रमिदं शुभम् ।
वसंते षोडश समास्तृप्तये श्राद्धकर्मणि ।
ग्रीष्मे च षोडशे वैतत्पठितं तृप्तिकारकम् ।
विकलेऽपि कृते श्राद्धे स्तोत्रेणानेन साधिते ॥५८॥
वर्षासु तृप्तिरस्माकमक्षया जायते रुचे ।
शरत्काले पिपठितं श्राद्धकाले प्रयच्छति ॥५९॥
अस्माकमेतत्पुरुषैस्तृप्तिं पंचदशाब्दिकाम् ।
यस्मिन् गृहे च लिखितमेततिष्ठति नित्यदा ॥६०॥
सन्निधानं कृते श्राद्धे तत्रास्माकं भविष्यति ।
तस्मादेतत्त्वया श्राद्धे विप्राणांभुंजतां पुरः ॥६१॥
श्रावणीयं महाभाग अस्माकं पुष्टिहेतुकम् ।
इत्युक्त्वा पितरस्तस्य स्वर्गता मुनिसत्तम ॥६२॥

॥ इति मार्कण्डेयपुराणे रुचिमनुना कृतं रुचिस्तवं सप्तार्चिस्तवं च पितृस्तोत्रम् ॥

॥ पितरादि बाह्यशान्ति स्तोत्रम् ॥

(पितर शान्ति, देवदोष शमन, इष्टसिद्धि हेतु)

इस सूक्त का पाठ करने से मनोवांछित कार्यो में सफलता प्राप्त होती है। घर परिवार में सुख शान्ति रहती है। मनोकामना पूर्ण होती है। पितर प्रसन्न होते है उन्हें शान्ति मिलती है। यह दुर्लभ स्तोत्र है। इससे अन्य देवदोष भी शान्त होकर इष्ट सिद्धि होती है।

सूक्त पाठ करने की विधि:–

(१) उक्त सूक्त के २४ श्लोकों में से २२ वें, २३ वें, २४ वें श्लोक का पाठ दो

बार करें। अर्थात् पहले १ से २४ श्लोक तक पाठ कर लेवें तदुपरान्त २२ २३ २४ श्लोकों का पाठ दो बार करें। इस प्रकार २२-२३-२४ श्लोकों का पाठ तीन बार होगा। तब इस पितृ सूक्त का पाठ पूर्ण होगा। (२) श्लोक २२ २३-२४ के पाठ में अधिक ध्यान देवें। (३) काले तिल व शुद्ध घी से हवन करें। हवन में भी २२-२३-२४ श्लोक से तीन-तीन आहुतियाँ दी जावेगी। (४) १, १२, २३, २४ श्लोक में स्वाहा की जगह होम समय स्वधा कहें। (५)दक्षिण दिशा की ओर मुख करके ही पाठ एवं हवन करें। (६) केवल एक आवृति पाठ और एक ही आवृति से हवन करें। (७) नित्य पाठ एवं हवन आवश्यक है।

नमो वः पितरो, यच्छिव तस्मै नमो वः पितरो यतृस्योन तस्मै ।
नमो वः पितरः, स्वधा वः पितरः ॥१ ॥

नमोऽस्तु ते निर्ऋर्तु, तिग्मतेजोऽयस्यमयान विचृता बन्धपाशान्।
यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति। तस्मै यमाय नमोऽस्तु मृत्यवे ॥२ ॥

नमोऽस्त्वसिताय, नमस्तिरश्चिराजये।
स्वजाय वभ्रवे नमो, नमो देवजनेभ्यः ॥३ ॥

नमः शीताय, तक्मने नमो, रूराय शोचिषे कृणोमि।
यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति, तृतीय कायं नमोऽस्तु तक्मने ॥४ ॥

नमस्ते अधिवाकाय, परावाकाय ते नमः।
सु-मत्यै मृत्यो ते नमो, दुर्मत्यै त इदं नमः ॥५ ॥

नमस्ते यातुधानेभ्यो, नमस्ते भेषजेभ्यः।
नमस्ते मृत्यो मूलेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इदं मम ॥६ ॥

नमो देववद्येभ्यो, नमो राज-वद्येभ्यः।
अथो ये विश्वानां वद्यास्तेभ्यो मृत्यो नमोऽस्तु ते ॥७ ॥

नमस्तेऽस्तु नारदा नुष्ठ विदुषे वशा।
कसमासां भीमतमा याम दत्वा पराभवेत् ॥८ ॥

नमस्तेऽस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे।
नमस्तेऽस्तु वश्मने येना दूड़ाशे अस्यसि ॥९ ॥

नमस्तेऽस्त्वायते नमोऽस्तु पराय ते।
नमस्ते प्राण तिष्ठत, आसीनायोत ते नमः ॥१० ॥

नमस्तेऽस्त्वायते, नमोऽस्तु पराय ते।

नमस्ते रुद्र तिष्ठत, आसीनायोत ते नमः ॥११॥
नमस्ते जायमानायै, जाताय उत ते नमः ।
वालेभ्यः शफेभ्यो रूपायाध्न्ये ते नमः ॥१२॥
नमस्ते प्राणक्रन्दाय नमस्ते स्तनयित्नवे ।
नमस्ते प्राणविद्युते नमस्ते प्राणवर्षते ॥१३॥
नमस्ते प्राण-प्राणते, नमोऽस्त्वपान ते ।
परा चीनाय ते नमः, प्रतीचीनाय ते नमः, सर्वस्मै न इदं नमः ॥१४॥
नमस्ते राजन्! वरुणास्तु मन्यवे विश्व ह्युग्र निचिकेषि दुग्धम् ।
सहस्त्रमन्यान् प्रसुवामि, साकं शतं जीवाति शरदस्तवायं ॥१५॥
नमस्ते रुद्रास्य ते, नमः प्रतिहितायै ।
नमो विसृज्यमानायै, नमो निपतितायै ॥१६॥
नमस्ते लाङ्गलेभ्यो नमः ईषायुगेभ्यः ।
वीरुत् क्षेत्रिय-नाशन्यप क्षैत्रियमुच्छतु ॥१७॥
नमो गंधर्वस्य नमस्ते नमो भामाय चक्षुषे च कृण्मः ।
विश्वावसो ब्रह्मणा ते नमोऽभि जाया अप्सरसः परेहि ॥१८॥
नमो यमाय, नमोऽस्तु मृत्यवे, नमः पितृभ्य उतये नयन्ति ।
उत्पारणस्य यो वेद, तमग्निं पुरो दद्येऽस्याः अरिष्टतातये ॥१९॥
नमो रुद्राय, नमोऽस्तु तक्मने, नमो राज्ञ वरुणायं त्विणीमते ।
नमो दिवे, नमः पृथिव्ये, नमः ओषधीभ्यः ॥२०॥
नमो रुराय च्यवनाय रोदनाय, घृष्णवे ।
नमः शीताय पूर्वकामकृत्वने ॥२१॥
नमो वः पितर उर्जे, नमः वः पितरो रसाय ॥२२॥
नमो वः पितरो भामाय, नमो वः पितरो मन्धवे ॥२३॥
नमो वः पितरां पदघोरं, तस्मै नमो वः पितरो, यत क्रूरं तस्मै ॥२४॥

॥ गोरक्ष चालीसा ॥

॥श्रीगुरु शरणम् ॥

जय जय जय गोरक्ष अविनाशी । कृपा करो गुरुदेव प्रकाशी ॥१ ॥
जय जय जय गोरक्ष गुणखानी । इच्छा रूप योगी वरदानी ॥२ ॥
अलख निरंजन तुम्हरो नामा । सदा करो भक्तन हित कामा ॥३ ॥
नाम तुम्हारो जो कोई गावे । जन्म जन्म के दुःख नसावे ॥४ ॥
जो कोई गोरक्ष नाम सुनावे । भूत पिशाच निकट नहीं आवे ॥५ ॥
ज्ञान तुम्हारा योग से पावे । रूप तुम्हारा लखा न जावे ॥६ ।
निराकार तुम हो निर्वाणी । महिमा तुम्हारी वेद बखानी ॥७ ॥
घट घट के तुम अन्तरयामी । सिद्ध चौरासी करे प्रणामी ॥८ ॥
भस्म अंग गले नाद विराजे । जटा शीश अति सुन्दर साजे ॥९ ॥
तुमबिन देव और नहिं दूजा । देव मुनी जन करते पूजा ॥१० ॥
चिदानन्द भक्तन हितकारी । मंगल करो अमंगल हारी ॥११ ॥
पूर्ण ब्रह्म सकल घट वासी । गोरक्षनाथ सकल प्रकाशी ॥१२ ॥
गोरक्ष गोरक्ष जो कोई गावे । ब्रह्मस्वरूप का दर्शन पावे ॥१३ ॥
शंकर रूप धर डमरू बाजे । कानन कुण्डल सुन्दर साजे ॥१४ ॥
नित्यानन्द है नाम तुम्हारा । असुर मार भक्तन रखवारा ॥१५ ॥
अति विशाल है रूप तुम्हारा । सुर नर मुनि पखें नहिं पारा ॥१६ ॥
दीन बन्धु दीनन हितकारी । हरो पाप हम शरण तुम्हारी ॥१७ ॥
योग युक्त तुम हो प्रकाशा । सदा करो संतन तन वाशा ॥१८ ॥
प्रातः काल ले नाम तुम्हारा । सिद्धि बढ़े अरु योग प्रचारा ॥१९ ॥
जय जय जय गोरक्ष अविनाशी । अपने जन की हरो चौरासी ॥२० ॥
अचल अगम है गोरक्ष योगी । सिद्धि देवो हरो रस भोगी ॥२१ ॥
काटो राह यम की तुम आई । तुम बिन मेरा कौन सहाई ॥२२ ॥
कृपा सिन्धु तुम हो सुख सागर । पूर्ण मनोरथ करो कृपा कर ॥२३ ॥
योगी सिद्ध विचरे जग माहीं । आवागमन तुम्हारा नाहीं ॥२४ ॥
अजर अमर तुम हो अविनाशी । काटो जन की लख चौरासी ॥२५ ॥
तप कठोर है रोज तुम्हारा । को जन जाने पार अपारा ॥२६ ॥
योगी लखै तुम्हारी माया । परंब्रह्म से ध्यान लगाया ॥२७ ॥

ध्यान तुम्हारा जो कोई लावै । अष्ट सिद्धि नव निधि घर पावे ॥२८॥
शिव गोरक्ष है नाम तुम्हारा । पापी अधम दुष्ट को तारा ॥२९॥
अगम अगोचर निर्भय नाथा । योगी तपस्वी नवावै माथा ॥३०॥
शंकर रूप अवतार तुम्हारा । गोपी चंद भरतरी तारा ॥३१॥
सुन लीज्यो गुरु अर्ज हमारी । कृपा सिन्धु योगी ब्रह्मचारी ॥३२॥
पूर्ण आस दास की कीजै । सेवक जान ज्ञान मोहि दीजै ॥३३॥
पतित पावन अधम उदारा । तिन के हित अवतार तुम्हारा ॥३४॥
अलख निरंजन नाम तुम्हारा । अगम पंथ जिन योग प्रचारा ॥३५॥
जय जय जय गोरक्ष अविनाशी । सेवा करे सिद्ध चौरासी ॥३६॥
सदा करो भक्तन कल्याण । निज स्वरूप पावे निर्वाण ॥३७॥
जो नित पढे गोरक्ष चालीसा । होय सिद्ध योगी जगदीशा ॥३८॥
बारह पाठ पढे नित जोई । मनोकामना पूरण होई ॥३९॥
धूप दीप से रोट चढावे । हाथ जोड़ कर ध्यान लगावे ॥४०॥

॥ दोहा ॥

अगम अगोचर नाथ तुम, पारब्रह्म अवतार ।
कानन कुण्डल सिर जटा, अंग विभूति अपार ॥
सिद्ध पुरुष योगेश्वर, दो मुझको उपदेश ।
हर समय सेवा करूं, सुबह शाम आदेश ॥
सुने सुनावे प्रेम वश, पूजे अपने हाथ ।
मन इच्छा सब कामना, पूरे श्रीगोरक्षनाथ ॥

ॐ शान्ति प्रेम आनन्द।

॥ श्रीकार्तवीर्यअर्जुन प्रयोगः॥

कार्तवीर्याऽर्जुन को सुदर्शनचक्र का अवतार माना गया है। यथा

अथेष्टदान् मनून् वक्ष्ये कार्तवीर्यस्य गोपितान्।
यः सुदर्शनचक्रस्यावतारः क्षितिमण्डले ॥

मन्त्र - फ्रों व्रीं क्लीं भ्रूं आं ह्रीं फ्रों श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय नमः ॥

यह १९ अक्षर का मन्त्र है एवं इसके आदि में 'ॐ' लगाने से २० अक्षर का मन्त्र हो जाता है। (मन्त्रमहार्णव में फ्रों के बाद व्रीं है।)

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीकार्तवीर्यार्जुन मन्त्रस्य दत्तात्रेय ऋषिः। कार्तवीर्यार्जुनो देवता:। ॐ बीजं नमः शक्तिं मम सर्वशत्रुक्षयार्थे गतं नष्टं च लभ्यार्थे अमुकव्याधि निवारणार्थ सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - शिरसि दत्तात्रेय ऋषये नमः। मुखे गायत्री छन्दसे नमः। हृदि कार्तवीर्यार्जुन देवतायै नमः। अभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

पञ्चाङ्गन्यास - ॐ आं फ्रों व्रीं हृदयाय नमः, ई क्लीं भ्रूं शिरसेस्वाहा, हुँ शिखायै वषट्, क्रैं श्रैं कवचाय हुँ, हुं फट् अस्त्रायफट्।

कार्तवीर्यार्जुनाय नमः से सर्वाङ्गन्यास करें।

वर्णन्यास - ॐ फ्रों ॐ हृदये। ॐ व्रीं ॐ जठरे। ॐ क्लीं ॐ नाभौ। ॐ भ्रूं ॐ गुह्ये। ॐ आं ॐ दक्षपादे। ॐ ह्रीं ॐ वामपादे। ॐ फ्रों ॐ सक्थनी। ॐ श्रीं ॐ उर्वो। ॐ हुं ॐ जानुनी। ॐ फट् ॐ जंघयो। ॐ कां ॐ मस्तके। ॐ र्त्त ॐ ललाटे। ॐ वी ॐ भ्रुवोः। ॐ र्या ॐ कर्णयोः। ॐ र्जु ॐ नेत्रयोः। ॐ नां ॐ नासिकायाम्। ॐ यं ॐ मुखे। ॐ नं ॐ गले। ॐ मः ॐ स्कन्धे।

अङ्गन्यास विशेषः (प्राणतोषणी तन्त्रे) –

ॐ नमो भगवते भोः भोः कार्तवीर्यार्जुन। (ॐ फ्रों ॐ हृदये) दुष्टं दारय दुरितं हन हन पापं मथ मथ आरोग्यं कुरु कुरु हां हुं हुं फट् फट् द्विषः।

ॐ नमो भगवते भोः भोः कार्त्तवीर्यार्जुन ।(ॐ फ्रों ॐ शिरसे स्वाहा)दुष्टं दारय दुरितं हन हन पापं मथ मथ आरोग्यं कुरु कुरु हां हां हुं हुं फट् फट् द्विषः।

ॐ नमो भगवते भोः भोः कार्तवीर्यार्जुन।(ॐ फ्रों ॐ शिखायै वषट्) दुष्टं दारय दुरितं हन हन पापं मथ मथ आरोग्यं कुरु कुरु हां हुं हुं फट् फट् द्विषः।

ॐ नमो भगवते भोः भोः कार्तवीर्यार्जुन।(ॐ फ्रों ॐ कवचाय हुं) दुष्टं दारय दुरितं हन हन पापं मथ मथ आरोग्यं कुरु कुरु हां हुं हुं फट् फट् द्विषः।

ॐ नमो भगवते भोः भोः कार्तवीर्यार्जुन।(ॐ फ्रों ॐ अस्त्राय फट्) दुष्टं दारय दुरितं हन हन पापं मथ मथ आरोग्यं कुरु कुरु हां हुं हुं फट् फट् द्विषः।

ध्यानम् –

उद्यत्सूर्य सहस्त्रकान्तिरखिलक्षोणीधवैर्वन्दितो ।
हस्तानां शतपञ्चकेन च दद्यच्चापानिषूस्तावता ॥
कण्ठे हाटकमालया परिवृतश्चक्रावतारो हरेः ।
पायात् स्यन्दनगोरुणाभवसनः श्रीकार्तवीर्यो नृपः ॥

॥ कार्तवीर्यार्जुन यंत्रार्चनम् ॥
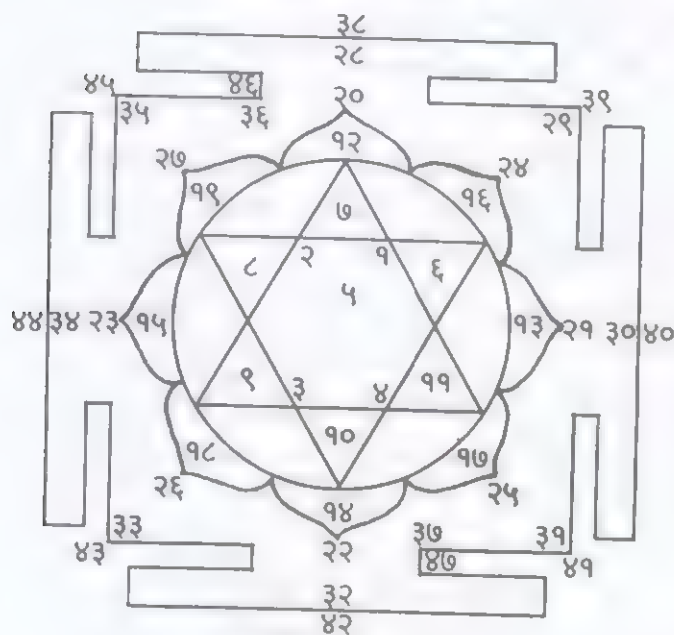
कार्तवीयार्जुन यन्त्रम्

षट्कोण अष्टदल भूपूर युक्त बनायें कहीं कहीं दशदल का उल्लेख है। दशदल एवं अष्टदल युक्त भी बनाया जा सकता है । दशदल में दशबीजाक्षरों (**फ्रों व्रीं**

क्लीं भ्रूं आं ह्रीं फ्रों श्रीं हुं फट्) को लिखें। वृत्त में **अं आं ..... अं अः** स्वरों को लिखें दशदलों के बाहर **कं खं ....हं लं क्षं** व्यंजनों को लिखे ।

यंत्र की पीठ शक्तियों का आह्वान करें - पूर्वादि क्रमेण - **ॐ विमलायै नमः, ॐ उत्कर्षिण्यै नमः, ॐ ज्ञानायै नमः,ॐ क्रियायै नमः, ॐ योगायै नमः, ॐ पुह्वयै नमः, ॐ सत्यायै नमः, ॐ ईशानायै नमः। मध्ये अनुग्रहायै नमः।**

इसके बाद ढाल और तलवार लिये हुये चन्द्रमा की आभा वाले षडङ्गमूर्तियां का ध्यान करते हुये षडङ्ग पूजा करें।

प्रथमावरणम्- षडङ्ग पूजा - आग्नेय, ईशान, नैऋत्य, एवं वायव्य कोणों के बाद एवं सर्वाङ्गे - (**अमुक शक्तिं पूजयामि** साथ में बोले)

ॐ फ्रों वीं हृदयाय नमः हृदय शक्तिं पूजयामि । ॐ क्लीं भ्रूं शिरसे स्वाहा, शिर शक्तिं पूजयामि (इति सर्वत्र) **ॐ हुं शिखायै वषट्। ॐ क्रैं श्रैं कवचाय हुं। हुं फट् अस्त्राय फट्। ॐ कार्तवीर्यार्जुनाय नमः।**

षट्कोण में षड्मूर्ति की पूजा करें - **राजन्य चक्रवर्तिने नमः। वीराय नमः। शूराय नमः। माहिष्मतीपतये नमः। रेवांबुपरितृप्ताय नमः। कारागेह प्रबाधितदशास्याय नमः।**

द्वितीयावरणम्- (अष्टदले-पूर्वादि चतुर्दिक्षु) - **ॐ चोर विभंजनाय नमः पूर्वे। मारीमदविभंजनाय नमः** दक्षिणे। **अरिमद विभंजनाय नमः** पश्चिमे। **दैत्यमदविभंजनाय नमः** उत्तरे।

(कोणेषु) - **ॐ दुःखनाशाय नमः** आग्नेये। **ॐ दुष्टनाशाय नमः** नैऋत्ये। **ॐ दुरित नाशाय नमः** वायव्ये। **ॐ रोगनाशाय नमः** ऐशान्ये।

तृतीयावरणम्- अष्टदलाग्रे (श्वेत वर्णा) पूर्वादि क्रमेण - **ॐ क्षेमकर्यै नमः, ॐ वश्यकर्यै नमः, ॐ श्री कर्यै नमः, ॐ यशकर्यै नमः, ॐ आयुकर्यै नमः, ॐ प्रज्ञाकर्यै नमः, ॐ विद्याकर्यै नमः, ॐ धनकर्यै नमः।**

चतुर्थावरणम्- भूपूरे - भूपूर (परिधि) में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि लोकपालों का पूजन करें- **ॐ इन्द्राय नमः पूर्वे, ॐ अग्नये नमः आग्नेये, ॐ यमाय नमः दक्षिणे, ॐ नैर्ऋतये नमः नैऋत्ये, ॐ वरुणाय नमः पश्चिमे, ॐ वायवे नमः वायव्ये, ॐ सोमाय नमः उत्तरे, ॐ ईशानाय नमः ऐशान्ये। ॐ ब्रह्मणे नमः ईशानपूर्वयोर्मध्ये। ॐ अनन्ताय नमः पश्चिमनैऋत्यर्मध्ये।**

इनके पास ही इनके आयुधों का पूजन पूर्वादि क्रम से करें

पंचमावरणम् - ॐ वज्राय नमः, ॐ शक्तये नमः, दण्डाय नमः, खड्गाय नमः, पाशाय नमः, अंकुशाय नमः, गदायै नमः, त्रिशूलाय नमः, पद्माय नमः, चक्राय नमः।

इस प्रकार आवरण पूजा कर यंत्रार्चन कर नैवेद्यादि अर्पण कर मूल मंत्र का जप करें। एक लक्ष जप का पुरश्चरण करें ।

॥ कार्तवीर्यार्जुन के अन्य दश मंत्र ॥

१. फ्रों कार्तवीर्यार्जुनाय नमः २. फ्रों वीं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः ३. फ्रों क्लीं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः ४. फ्रों भ्रूं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः ५. फ्रों आं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः ६. फ्रों ह्रीं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः ७. फ्रों क्रों कार्तवीर्यार्जुनाय नमः ८. फ्रों श्रीं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः ९. फ्रों ऐं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः १०. हुं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः फट्।

इनमें प्रथम मंत्र (दशाक्षर) विनियोगः - ॐ अस्य श्री कार्तवीर्यार्जुन मंत्रस्य दत्तात्रेय ऋषि विराट छन्दः कार्तवीर्यार्जुनो देवतात्मनोऽभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अन्य शेष मंत्रों का त्रिष्टुप् छन्द है।

यदि पूर्वोक्त मंत्रों में प्रथम मंत्र के पहिले "ॐ" लगाये तो मंत्र एकादशाक्षर हो जायेगा एवं त्रिष्टुप् छन्द होगा। शेष मंत्र भी ॐ लगाने से जगती छन्द हो जायेगें।

इनके न्यास - फ्रां, फ्रीं, फ्रूं, फ्रें, फ्रौं, फ्रः से षडङ्गन्यास करें।

चतुर्दशाक्षर मंत्र- ॐ नमः कार्तवीर्यार्जुनाय हुं फट् स्वाहा।

पञ्चाङ्ग न्यास करते समय अक्षरों का विभाजन इस प्रकार है- १,२,७,२,२ विभाजित शब्दाक्षर है।

अष्टादशाक्षर मंत्र - ॐ नमो भगवते श्रीकार्तवीर्यार्जुनाय हुं फट् स्वाहा। इसके पञ्चाङ्ग न्यास विभाग इस प्रकार है - शब्दाक्षर संख्या - ३ (ॐ नमो) ४ (भगवते) ७ (कार्तवीर्यार्जुनाय) २ (हुं फट्) २ (स्वाहा) ।

त्रिषट्दशाक्षर मंत्र - ॐ नमो भगवते श्रीकार्तवीर्यार्जुनाय सर्वदुष्टांतकाय तपोबल पराक्रमाय परिपालित सप्तदीपाय सर्वराजन्यचूडामणये महाशक्तिमते सहस्त्रबाहवे हुं फट् ।

न्यास - राजन्यचक्रवर्तिने हृदयाय नमः। वीराय शिरसे स्वाहा। शूराय

शिखायै वषट्। महिष्मतीपतये कवचाय हुं। रेवाम्बुपरितृप्ताय नेत्रत्रयाय वौषट् कारागेहप्रबाधित दशास्याय अस्त्राय फट्।

ध्यानम् –

सिंच्यमानं युवतिभिः क्रीडन्तं नर्मदाजले ।
हस्तैर्जलोघं रुंधन्तं ध्यायेन्मत्तं नृपोत्तमम् ॥

इस प्रकार ध्यान कर कम से कम १०००० जप करें।

होम एवं अभिषेक विधि – (सभी मंत्रों के लिये)

लक्षमेकं जपेन्मंत्रं दशांश जुहुयात्तिलैः ।
सतंडुलैः पायसेन विष्णुपीठे जेत्तुतम् ॥१॥
एवं संसाधितो मंत्रः प्रयोगार्हः प्रजायते ।
शुद्धभूमावष्टगंधैर्लिखित्वा यंत्रमादशत् ॥२॥
तत्र कुम्भंप्रतिष्ठाप्य तत्रावाह्यार्चयेन्नृपम् ।
स्पष्ट्वा कुम्भं जपेन्मंत्रं सहस्त्रं विजितेन्द्रियः ॥३॥
अभिषिंचेत्तदंभोभिः प्रियं सर्वेष्टसिद्धये ।
पुत्रान् यशो रोगनाशमायुः स्वजनरंजनम् ॥४॥
वाक्सिद्धिं सुदृशः कुम्भाषिक्तो लभते नरः ।
शत्रूपद्रवमापन्ने ग्रामे वा पुटभेदने ॥५॥
संस्थापयेदिदं यंत्रमरिभीतिनिवृत्तये ।

होमविषये –

सर्षपारिष्टलशुन कार्पासैर्मार्यते रिपुः ।
धत्तूरैः स्तंभ्यते निम्बैर्द्वेष्यते वश्यतेऽम्बुजैः ॥
उच्चाट्यते विभीतस्य समिद्भिः खदिरष्य च ।
कटुतैलमहिष्याज्यैर्होमद्रव्याञ्जनं स्मृत् ॥

सरसों, रीठा, लहसुन, एवं कपास के होम से शत्रु का मारण, धत्तूरे के होम से शत्रु का स्तंभन, नीम के होम से विद्वेषण, कमल के होम से वशीकरण, बहेड़ा एवं खदिर की समिधा होम से शत्रु का उच्चाटन होवे। जौ.(इन्द्र जौ) के होम से लक्ष्मी प्राप्ति, तिल एवं घी के होम से पापक्षय, तिल, तण्डुल सिद्धार्थ (सफेद सरसों) एवं लाजा (पक्वान चावलों की खीलें) के होम से राज का वशीकरण होवें।

अपामार्ग आक एवं दूर्वा होम पापनाशक, आयुवृद्धि कारक एवं लक्ष्मीप्रद होता है।

प्रियंगु के होम से बाधानिवारण एवं स्त्रीवश्य, गुग्गुल होम से प्रेतोपद्रव शान्त होवे। पीपल, गूलर, पाकड़, बरगद एवं बेल की समिधाओं से होम करने से पुत्र, धन आयु, सुख-समृद्धि प्राप्त करें।

साँप की केंचुली, धत्तूरा, सिद्धार्थ (सफेदसरसों) एवं लवण के होम से शत्रु एवं चोरों का नाश होता है। गोरोचन एवं गोबरके होम से स्तंभन तथा शालि (धान) के होम से भूमि संबंधी चिंता दूर होकर लाभ होवे।

॥ नष्टद्रव्य की प्राप्ति एवं गये हुये को बुलाने का प्रयोग ॥

नष्टधन की प्राप्ति हेतु मन्त्र -

ॐ कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्त्रवान् ।
तस्य संस्मरणा देव हृतं नष्टं च लभ्यते ॥

मतान्तरे -

ॐ कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा सहस्त्रबाहुकम् ।
यस्य स्मरण मात्रेण हृतं नष्टं च लभ्यते ॥

गये हुये को बुलाने के लिये -

ॐ कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा सहस्त्रबाहुकम् ।
यस्य स्मरण मात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते ॥

इस प्रयोग को करने के लिये गये हुये व्यक्ति का वस्त्र लेकर उस पर मन्त्र लिखें, यस्य स्मरण मात्रेण के बाद गये हुये व्यक्ति का नाम लिखें पश्चात् गतं नष्टं च लभ्यते लिखें। किसी सूतकातने वाले चरखे के इस को बाँध दिया जाये एवं उसे उल्टी दिशा में घुमाया जाये तो गये हुये व्यक्ति की बुद्धि परिवर्तन होवे एवं वापस आये। एवं मन्त्र के १० हजार जाप भी करने चाहिये।

आजकल चरखे घरों में होते नहीं है, अतः एक बार एक प्रयोग के समय वस्त्र को पंखे पर बाँध दिया एवं उसे पंखे की घूर्णन दिशा के विपरीत घुमाया गया तो कार्य में सफलता मिली। परन्तु एक बड़ी चोरी के मामले में इसी प्रयोग को करने पर सफलता प्राप्त नहीं हुई कारण मन्त्र का जाप विधान पूरा नहीं हो सका।

॥ कार्तवीर्यार्जुन दीपदान विधानम् ॥

कार्तवीर्यार्जुन को दीप अत्यन्त प्रिय है, गणेश को तर्पण, शिव को अभिषेक, जगदम्बा को अर्चन तथा सूर्य को नमस्कार प्रिय है। दीप प्रयोग से रोग एवं शत्रुनाश तथा चोरभय नष्ट होता है, नष्ट द्रव्य की प्राप्ति होती है।

मास - वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, आश्विन (शुक्लपक्ष) पोष, माघ एवं फाल्गुन मास दीपदान हेतु शुभ मास कहे गये हैं।

तिथी-वार - (चौथ) चतुर्थी, नवमी एवं चतुर्दशी को छोड़कर तथा मंगलवार, शनिवार के अलावा शुभवारों में सिद्धियोगों में हस्त, तीनों उत्तरा, अश्वनी, आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, स्वाति, विशाखा एवं रोहिणी नक्षत्रों में दीपदान श्रेष्ठ कहा गया है।

योग - वैधृति, व्यतिपात, धृति, वृद्धि, सुकर्मन, प्रीति, हर्षण, सौभाग्य, शोभन एवं आयुष्मान योग में भद्रारहित दिन में दीपारम्भ करना चाहिये।

नित्य दीप में ३ तोले भार वाले पात्र में १ पल घी जलाना चाहिये। पात्र का परिमाप ४, ५, ६, ८, १० या १२ अङ्गुल होना चाहिये। जितना घृत जलाना हो उस प्रमाण व भार का दीपक काम में लेवें। ३ तोला भार वाले पात्र में ५० तोला घी, ५२ तोला भार के पात्र में १०० ग्राम घी, १०० पल (ग्राम) भार वाले पात्र में १६ हजार तोला घी, ११५ पल वाले पात्र में २ हजार पल घी, १२५ पल वाले पात्र में ३ किलो घी, ५०० पल वाले पात्र में १० किलो घी, जलाना चाहिये। (प्राचीन ग्रन्थों में पल शब्द का प्रयोग है, वर्तमान समय में तोला या १० ग्राम का वजन मान सकते हैं।)

काँसी, ताँबा, चाँदी एवं स्वर्ण के पात्र उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं। किन्तु लोहे एवं मिट्टी केपात्र को अधम माना गया है।

पौष्टिक एवं शांति कार्य में मूंग के आटे का तथा किसी को मिलाने के लिये गेहूँ के आटे का दीपपात्र बनाये, परन्तु ध्यान रहें कि निचले भाग एवं ऊपरी भाग आकृति में समान होने चाहिये।

वर्त्ति संख्या - बत्तियाँ विषम संख्या में होनी चाहिये। १, ३, ५, ७, १५, २१ या १ हजार सूतों की बनी बत्तियाँ डालनी चाहिये। जितना घी जलाना हो उसी के अनुसार दिन प्रमाण, संख्या, पात्र का भार व बत्तियों की संख्या लेनी चाहिये। दीप जलाने हेतु गोघृत उत्तम है, भैंस का घी मध्यम, तिल का तेल भी मध्यम है, तथा बकरी का घी अधम कहा गया है।

दीप प्रयोग – कार्त्तिक शुक्ला सप्तमी को निशीथ काल में दीपारंभ करना श्रेष्ठ है। यदि उस दिन रविवार एवं श्रवण नक्षत्र का संयोग हो तो अति उत्तम है।

साधक दीपदान से एक दिन पूर्व उपवास करें, पृथ्वी पर शयन करें। दूसरे दिन गोमय से शुद्ध भूमि का लेपन करें एवं रंगीन चावलों या रंगोली से दीप यंत्र बनायें। पहले षट्कोण बनायें, उसके ऊपर अधोमुख त्रिकोण बनायें।

षट्कोण में ॐ फ्रों व्रीं भ्रूं आं ह्रीं लिखे, मध्य में क्लीं लिखें। षट्कोण के आगे चारों दिशाओं में **क्रीं श्रीं हुँ फँट्** लिखें। पश्चात् उसके चारों ओर कार्तवीर्यार्जुनाय नमः लिखें। यंत्र ताम्र पात्र का ही हो सकता है, बीजाक्षरों का लेखन यदि नहीं हो सके तो उनकी कल्पना करें उनके न्यास अवश्य उस यंत्र में करें।

सुवर्णादि निर्मित पात्र में एक सुन्दर शलाका जिसका अग्रभाग पतला हो (४, ८ या १६ अङ्गुल लंबी होवें) लेवें एवं दीप के अग्रभाग में दाहिनी ओर रखें। दीपपात्र से दक्षिण दिशा में एक चाकू या छुरी को अधोमुख भूमि में गाड़ देना चाहिये। यदि फर्श पक्का है तो मिट्टी के किसी गमले या पात्र में गाड़ देवें।

गणपति स्मरणपूर्वक दीप प्रज्वलित करें। दीप को यंत्र पर रखें। दीपक से पूर्व दिशा में एक अष्टदल बनायें उस पर घट रखकर कार्तवीर्यार्जुन का पूजन करना चाहियें।

संकल्प, दिग्रक्षण एवं गणपत्यादि पूजन करें। दीपक का पूजन करें, दीपक यंत्र का "**ॐ कार्तवीर्यार्जुन दीपाधार यंत्राय नमः**" से पूजन करें, उसमें लिखे बीजाक्षरों का यंत्र में न्यास करें। घट में कार्तवीर्यार्जुन का पूजन पहले बताई गयी विधि से करें ।

दीप मन्त्र का संकल्प ...... **ॐ अद्य दिने .... अमुक कामना सिद्ध्यर्थे .... दीप दान मंत्र** पूरा बोल कर विनियोग छोड़ें ।

दीपदान माला मंत्र (१५२ अक्षरात्मक)

ॐ आं ह्रीं वषट् कार्तवीर्यार्जुनाय माहिष्मतीनाथाय सहस्त्र बाहवे सहस्त्रक्रतु दीक्षित हस्ताय दत्तात्रेय प्रियाय आत्रेयानुसूयागर्भरत्नाय हुं आं इमं दीपं गृहाण अमुकं रक्ष रक्ष दुष्टान्नाशय नाशय पातय पातय घातय घातय शत्रून जहि जहि ह्रीं ॐ फ्रों क्लीं स्वाहा अनेन दीपवर्येण पश्चिमाभिमुखेन अमुकं रक्ष अमुक वर प्रदानाय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ क्लीं व्रीं स्वाहा तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं ॐ स्वाहा।

विनियोगः – **अस्य श्री कार्तवीर्यार्जुनमाला मंत्रस्य दत्तात्रेय ऋर्षिः अमित छन्दः कार्तवीर्यार्जुनो देवता मनोभीष्ट सिद्धयर्थे दीपदाने च जपे विनियोगः ।**

षडङ्गन्यास – **ॐ व्रां हृदयाय नमः, व्रीं शिर से स्वाहा, व्रूं शिखायै वषट्, वैं कवचाय हुं, व्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, व्रः अस्त्राय फट् ।**

दीप संकल्प के पहले कार्तवीर्यार्जुन का ध्यान करें पश्चात् मंत्र संकल्प बोलकर जल भूमि पर छोड़े ।

इसके बाद नवाक्षर मंत्र के एक हजार जप करें।

विनियोगः – **अस्य नवाक्षरकार्तवीर्यर्जुन मंत्रस्य दत्तात्रेय ऋर्षिः अनुष्टुप् छन्दः कार्तवीर्यार्जुनो देवतात्मनोऽभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।**

मंत्र – **ॐ आं ह्रीं फ्रीं वीं स्वाहा क्रों ॐ।**

डामर तंत्र में इसे हूं के साथ दिया गया है अर्थात् ॐ की जगह हुं का भी प्रयोग किया जा सकता है।

न्यास – **पहले की तरह व्रां, व्रीं, व्रूं, वैं, व्रौं, व्रः, से अङ्गन्यास करें।**

दीपदान करते समय अमाङ्गलिक शब्दों का प्रयोग नहीं करे। गौ, ब्राह्मण, अश्व के दर्शन शुभ है। चूहा, बिल्ली, मलेच्छ के दर्शन अशुभ, शूद्र के दर्शन मध्यम फलदायक है।

दीपज्वाला ठीक सीधी होतो सिद्धिप्रद, टेढी मेढी विद्याप्रद होती है। ज्वाला में चट चट का शब्द भयकारक होता है। ज्योति काली होवे एवं नीचे की ओर झुकती हो तो पशुहानि होवे, ज्योति भग्न अहितकर यदि दीपदान करने के बाद पात्र भग्न हो जावे तो १५ दिन के भीतर महा अनिष्ट होवें ।

दीपक में दूसरी बत्ती बदलनी पड़े तो कार्य में विलम्ब होता है दीप से दीप जलाने पर नेत्र पीड़ा होवे, अशुचि व अशुद्ध अवस्था में दीप स्पर्श करे तो व्याधि उत्पन्न होवे।

चूहे, बिल्ली, कुत्तों के स्पर्श से दीप भग्न होवे तो राज भय देता है। निशीथ काल में एक पैर पर खड़ा होकर जप करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होवे।

दीपदान दिनों में ब्रह्मचर्य नियमों का पालन करें। दीप प्रारम्भ के पहिले एवं बाद में गुरु का अभिनन्दन करें एवं दक्षिणा देवें। उत्तरार्ध होम कर ब्राह्मण को भोजन करायें। यदि प्रयत्न के बाद भी इष्टसिद्धि में बाधा होतो तीन दीपक जलाने चाहियें।

॥ श्रीकार्तवीर्यार्जुन मालामन्त्रम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीकार्तवीर्यार्जुन माला मन्त्रस्य दत्तात्रेय ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीकार्तवीर्यार्जुन देवता। अभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - शिरसि दत्तात्रेय ऋषये नमः। मुखे गायत्रीछन्दसे नमः। हृदि श्रीकार्तवीर्यार्जुन देवतायै नमः। अभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

पञ्चांगन्यास :- दत्तात्रेय प्रियतमाय हृदयाय नमः। महिष्मती नाथाय शिरसे स्वाहा। रेवानदी जलक्रीडा तृप्ताय शिखायै वषट्। हैहयाधिपतये कवचाय हुम्। सहस्र बाहवे अस्त्राय फट्।

ध्यानम् :– (१)

दोर्दण्डेषु सहस्त्र सम्मित तरेष्वेतेष्वजस्त्रं लसत्
कोदण्डैश्च शरैरुदग्र निशितैरुद्यद् विवस्वत् प्रभः।
ब्रह्माण्डं परिपूरयन् स्व निनादैर्गण्ड द्वयान्दोलित
द्योतत् कुण्डल मण्डितो विजयतो श्रीकार्तवीर्यो विभुः ॥

ध्यानम् :– (२)

उदग्र बाणाँश्चापानि दधतं सूर्य सन्निभम्।
प्रपूरयन्तं ब्रह्माण्डं धनुर्ज्या निस्स्वनैस्तथा ॥
कार्तवीर्यं नृपं ध्यायेद् गण्डशोभित कुण्डलम् ॥

॥ माला मन्त्र ॥

ॐ नमो भगवते कार्तवीर्यार्जुनाय हैहयाधिपतये सहस्त्र कवचाय, सहस्त्रकर सदृशाय सर्वदुष्टान्तकाय सर्व शिष्टेष्टाय सर्वत्रोदधेरागन्तुकान् अस्मद् वसुविलुम्पकान् चौर समूहान् स्वकरसहस्त्रैः निवारय निवारय रोधय रोधय पाश सहस्त्रैः बन्धय बन्धय अंकुश सहस्त्रैः आकर्षय आकर्षय स्वचापोद्भूत बाण सहस्त्रैः भिन्दि भिन्दि स्वहस्तोद्गत खड्ग सहस्त्रैः छिन्धि छिन्धि स्वहस्तोद्गत मुसल बाण सहस्त्रैः मर्दय मर्दय स्वशङ्खोद्धुतनाद सहस्त्रैः भीषय भीषय स्वहस्तोद्गत चक्र सहस्त्रैः निकृन्तय निकृन्तय पर कृत्यां त्रासय त्रासय गर्जय गर्जय आकर्षण आकर्षय भ्रामय भ्रामय मोहय मोहय मारय मारय उद्वासय उद्वासय उन्मादय उन्मादय तापय तापय विनाशय विनाशय विदारय विदारय स्तम्भय स्तम्भय जृम्भय जृम्भय मारय मारय वशीकुरु वशीकुरु

उच्चाटय उच्चाटय विनाशय विनाशय दत्तात्रेय श्रीपाद प्रियतम! कार्तवीर्यार्जुन! सर्वत्रोदधेरागन्तुकान् अस्मद्वसु विलुम्पकान् चौर समूहान् समग्रं उन्मूलय उन्मूलय हुं फट् स्वाहा॥

पुरश्चरण :- माला मन्त्र का पुरश्चरण ३००० आवृत्तियों से होता है। पुरश्चरण करने के पश्चात् ही प्रयोग करना चाहिए।

॥ कार्तवीर्यार्जुन कवच प्रयोगः ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

देवाधि देव! सर्वज्ञ! सर्व लोकहिते रत! केन रक्षा भवेनृणां भीतानां विविधापदि। राज चौरादि पीड़ासु शस्त्राग्नि विष पातने। मारी दुःस्वप्न-पीड़ासु ग्रह रोग भयेऽपि च। ज्वरापस्मार पीड़ासु सिंह-व्याघ्रनिपातने। राक्षसासुर पिशाच वेताल-प्रेत-पातने। महाभये महानाशे महाकारागारगतेऽर्णवे। महामृत्युभये घोरे महाकलहपातने। केनोपायेन शान्तिः स्यात् साधकानां महेश्वर! अनष्टद्रव्यता चैव नष्टस्य पुनरागम। सर्वाकर्षणसक्षोभः सर्वसंहननं तथा। भवत्यभीष्टं जन्तूनां केवलं वद मे शिव!

॥ ईश्वर उवाच ॥

श्रृणु गुह्यतमं देवि! गोपनीयं प्रयत्नतः अवाच्यमपि वक्ष्यामि तव लोकहिताय वै। कवचं कार्तवीर्यस्यसाङ्गावरणकं क्रमात्। स्वमूर्तिशक्तिमंत्रौघं स-जपध्यानपूर्वकं सहस्त्रादित्यसङ्काशे नानारत्नसमुज्ज्वले। भास्वद् ध्वजपताकाढ्ये तुरगायुधभूषणे। महासंवर्त्तकाम्भोज भीमरावविराविणि। समुद्धृतमहाच्छत्र वितानितवियत्पथे। निर्माणकिङ्किणीजाल चलच्चामर शोभिते। महारथवरे दीप्तेनानायुधविराजिते। सुस्थितं विपुलोदार सहस्त्रभुज मण्डितं। वामोरुकुण्डकोदण्डान् दधानमपरैः शरान्। किरीटहारमुकुटकेयूर वलयाङ्गदैः। मुद्रिकोदर गन्धाढ्यैमौञ्जी नूपुरकादिभिः। भूषितं विविधाकल्पैर्भास्वरैःसुमहाधनैः। आबद्धकवचं वीरं सुप्रसन्नाननाम्बुजं। धनुर्ज्यासिंहनादेन कम्पयन्तं जगत्त्रयं। सर्वशत्रुक्षयकरं सर्वव्याधिविनाशनं। सर्वसम्पत्प्रदातारं विजयश्रीनिषेवितं। सर्वसौभाग्यदं भद्रं भक्तानां भयनाशनं। दिव्यमालानुलेपाढ्यं सर्वलक्षणसंयुतं। रथनागाश्वपादाति वृन्दमध्यगमीश्वरं। वरदं चक्रवर्त्तीनां महीलोकैकपालकं। समानोदितसाहस्त्रं दिवाकरसमत्विषं। महायोगबलैश्वर्य कीर्त्याक्रान्तजगत्त्रयं। श्रीमच्चक्रहरेरंशादवतीर्णं महाबलं। सम्यगात्मविभेदेन

ध्यात्वारक्षामुदीरयेत्।

दत्तात्रेयऋषिः प्रोक्तोऽनुष्टुप् छन्दः प्रकीर्तितं। कार्तवीर्यार्जुनो विष्णुश्चक्रवर्ती च देवता। विनियोगश्च रक्षार्थे सर्वतः परिकीर्तितः।

सर्वदुष्टविनाशाय सर्वार्थस्य च सिद्धये। अस्याङ्गमूर्त्तयः पञ्चपांतु मां स्फाटिकोज्ज्वलाः। अग्नीशासुर वायव्यकोणेषु हृदयादिकाः। सर्ववस्तूज्ज्वल रूपवीर चर्मासिपाणयः। अव्याहतबलैश्वर्य शक्तिसामर्थ्यविग्रहः। क्षेमङ्करीशक्ति-युतश्चौराणां मद भञ्जनः। प्राचीदिशं रक्षतु मे वाणवाणाशयायुधः। श्रीकराशक्ति सहितो मारीमदविभञ्जनः। शरचापधरः श्रीमान् दिशं मे पातु दक्षिणां। महावश्यकरीयुक्तः शत्रूणां मदभञ्जनः। कोदण्डेषु धरः सौर्यां दिशं मे परिरक्षतु। प्रजाकरीयुतश्चापवाण दुष्टप्रणाशनः। परिरक्षतु मे सम्यक् विदिशं चैत्र भानवीं। विद्याकरीसमायुक्तः सुमहान् दुष्टनाशनः। पातु मे नैऋतीं चापवाणवान् दिशमीश्वरः। धनकर्या समायुक्तो महादुरितनाशनः। इष्वासनेषुधृक् मम पातु विदिशं मम वायवीं। आयुष्कर्या समायुक्तः श्रीमान् भय विनाशनः। चापेषुधारी शैवीं मे विदिशं परिरक्षतु। विजय श्रीयुतः साक्षात् सहस्त्रारधरो विभुः। दिशमूर्ध्वामवतु मे महाभयविनाशनः। शङ्खभृत् सुमहाशक्तिसंयुतोऽप्यधरां दिशं। परिरक्षतु मे दुःखध्वान्त संभेदभास्करः। महायोगसमायुक्तः सर्वदिक् चक्रमण्डलं। महायोगीश्वरः पातु सर्वतो मम पद्मभृत्।

एता दिङ्-मूर्त्तयो रक्ता रक्त-माल्यांशुकैर्वृताः। प्रधान देवता रूपाः पृथक् रथवरे स्थिताः। शक्तयः पद्महस्ताश्च नीलेन्दीवर सन्निभाः। सुशुक्ल माल्यवसनाः सुलिप्त तिलकोज्ज्वलाः। तत्पार्श्व देवताः स्व स्व वाहनायुध भूषणाः। स्व स्व दिक्षु स्थिताः पान्तु मामिन्द्राद्या महाबलाः। एतास्तस्य समाख्याताः सर्वावरण देवताः।

सर्वतो मां सदा पान्तु सर्वशक्ति समन्विताः। हृदये चोदरे नाभौ जठरे गुह्य मण्ड़ले। उरुयुग्-जानु पादेषु भ्रूयुगलेषु च। कर्णाक्षि नासिका जिह्वा कण्ठ बाहु युगेषु च। दश वीजात्मका मंत्राः सम्यक् सम्पत्तिदायकाः। तेजोरूपाः स्थिताः पान्तु वांछा सुरद्रुमाः सदा। दश चान्ये महावर्णा मंत्ररूपा महोज्ज्वलाः। व्यापकत्वेन पान्त्वस्मानापादतल मस्तकं। कार्त्तवीर्यः शिरः पातु ललाटं हैहयेश्वरः। सुमुखो मे मुखं पातु कर्णौ व्याप्तजगत्-त्रयः। सुकुमारो हनू पातु भ्रूयुगं मे धनुर्धरः। नयने पुण्डरीकाक्षो नासिकां मे गुणाकरः। अधरोष्ठौ सदा पातु ब्रह्मगेयो द्विजान् कविः। सर्वशास्त्र कलाधारो जिह्वां चिबुकमव्ययः।

दत्तात्रेय प्रियः कण्ठं स्कंधौ राजकुलेश्वरः। भुजौ दशास्य दर्पघ्नो हृदयं मे महाबलः। करौ सर्वार्थदः पातु कराग्राणि जगत्प्रियः। कुक्षिं रक्षतु मे विद्वान् वक्षः परपुरञ्जयः। रेवाम्बुलीला सन्तृप्तो जठरं परि रक्षतु। वीर शूरस्तु मे नाभिं पार्श्वौ मे सर्वदुष्टहा। सहस्त्रभुजभृत् पृष्ठं सप्तद्वीपाधिपः कटिं। उरू माहिष्मतीनाथो जानुनी वल्लभो विभुः। जङ्घे वीराधिपः पातु पातु पादौ मनोजवः। पातु सर्वायुधधरः सर्वाङ्गं सर्व-मर्मसु। सर्वदुष्टान्तकः पातु धात्वष्टक कलेवरं। प्राणादि दश जीवेशान् सर्वशिष्टेष्टदोऽवतु। वशीकृतेन्द्रिय ग्रामः पातु सर्वेन्द्रियाणि मे। अनुक्तमपि यत्-स्थानं शरीरेऽन्तर्बहिश्च यत्। तत् सर्वं पातु मे सर्वलोक नाथेश्वरेश्वरः। वज्रात् सारतरं चेदं शरीरं कवचावृतं। बाधाशत विनिर्मुक्तमस्ति मे भयवर्जितं। बध्वेदं कवचं दिव्यं न भेद्यं हैहयेशितुः। विचरामि दिवा रात्रौ निर्भयेणान्तरात्मना।

राजमार्गे महादुर्गे मार्गे चौरादि संकुले। विषमे विपिने घोरे दावाग्नौ गिरिकन्दरे। संग्रामे शस्त्रसङ्घाते सिंहव्याघ्र निषेविते! गह्वरे सर्प संकीर्णे संध्याकाले नृपालये। विवादे विपुलावर्त्ते समुद्रे च नदीतटे। परिपन्थि जनाकीर्णे देशे। दस्युगणैर्वृते। सर्वस्व हरणे प्राप्ते प्राप्ते प्राणस्य संकटे। नाना-रोग-जरावेशे विषाद प्राप्त भूतले। मारी-दुःस्वप्न-पीड़ासु क्लिष्टे विश्वास-घातकैः। शरीरे च महादुःखैर्मानसे च महाज्वरे। आधि व्याधिभये विघ्ने ज्वालोपद्रवकेऽपि च। न भवेत् तु भयं किञ्चित् कवचेनावृतस्य मे। आगन्तु कामानखिलान् सुरदस्यु-विलुम्पकान्। विनाशयेत् तद्दोर्दण्ड सहस्त्रेण महारथः। स्वकरोद्धृत निर्भिन्नान् सहस्त्रशर-खण्डितान्। राजचूड़ामणिः क्षिप्रं करोत्वस्मद् विरोधकान्। खड्गसाहस्त्र दलितान् सहस्त्र-मूषलार्दितान्। चौरादि दुष्ट सत्वौघान् सहस्त्रारः सहस्त्रभृत्। कृत-वीर्यसुतो राजा सहस्त्रभुजमण्डितः।

अवतारो हरेः साक्षात् पालयेत् सकलं मम। कार्त्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्त्रवान्। तस्य स्मरण मात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते। यो भवेल्लोक-रक्षार्थमंशाच्चक्रं हरेर्भुवि। तं नमामि महावीर्यमर्जुनं कृत वीर्यकं। सहस्त्रबाहुं स-शरं स-चापं रक्ताम्बरं रत्नकिरीट कुण्डलं। चौरादि दुष्टभयनाशनमिष्टदं तं वन्दे महाबल विजृम्भित कार्त्तवीर्यं। कार्त्तवीर्य! महावीर्य! सर्वदुष्टविनाशन! सर्वत्र सर्वदा तिष्ठ दुष्टान्-नाशय पाहि माम्। दक्षे पञ्चशतं वाणा वामे पंचशतं धनुः। यो बिभर्त्ति स पात्वस्मान् विषव्याल शताकुलान्। उत्तिष्ठ दुष्ट दमन! सप्तद्वीपैक पालक! त्वमेव शरणं प्राप्तं सर्वतो रक्ष माम्। उत्तिष्ठ किं त्वं स्वपिषि किं तिष्ठसि चिराय हि। पाहि नः सर्वदा सर्व भयेभ्यः स्व-सुतानिव।

ये चौरा वसुहर्तारो विद्विषो ये च हिंसकाः। अन्तराय-करा दुष्टाः पापका ये दुराशयाः। दुर्हृदो दुष्टभूपाला दुष्टामान्याश्च पापकाः। ये च कार्यविलोमारो ये खलाः परिपन्थिनः। सर्वस्व हारिणो ये च ये च मायाविनोऽपरे। महाक्लेश-करा म्लेच्छा दस्यवो वृषलाश्च ये। ये महाशर दातारो वञ्चकाः शस्त्रपाणयः। ये पापा दुष्ट कर्माणो दुःखदा दुष्टबुद्धयः। व्याजकाः कुपथासक्ता ये च नानाभयप्रदाः। छिद्रान्वेष रता नित्यं येऽस्मान् बाधितुमुद्यताः। ते सर्वे कार्त्तवीर्यस्य महाशंख वराहताः। सहसा विलयं यान्तु दूरादेव विमोहिताः।

ये दानवा महादैत्या ये यक्षा ये च राक्षसाः। पिशाचा ये महासत्वा ये भूता ब्रह्मराक्षसाः। अपस्मार ग्रहा ये च ये ग्रहाः पिशताशनाः। महालोहित भोक्तारो वेताला ये च गुह्यकाः। मनोबुद्धीन्द्रिय जवाः स्फोटकाश्च महाज्वराः। महाशना बलिभुजो महाकुणप भोजनाः। गन्धर्वाप्सरसः सिद्धा ये च देवादि योनयः। डाकिन्यो घोनसाः प्रेताः क्षेत्रपाला विनायकाः। महाव्याघ्र महामेष महातुरगरूपकाः। महापूजा महासिंहा महामहिष सन्निभाः। ऋक्षवाराह शुनकरूपा वोलुकमूर्त्तयः। महोष्ट्रखर-मार्जार-सर्पाणां विषमस्तकाः। नानारूपा महासत्वा नाना क्लेशसहस्रदाः। नानारोग-कराः क्षुद्रा महावीर्या महाबलाः। वातिकाः पैतिका घोराः श्लैष्मिकाः सान्निपातिकाः। माहेश्वरा वैष्णवाश्च वैरिंचया महाग्रहाः। स्कान्दा वैनायकाः क्रूरा ये च प्रमथसम्भवाः। महाशत्रुग्रहा रौद्रा महामारी-मसूरिकाः। ऐकाहिका द्व्याहिका त्र्याहिकाश्च महाज्वराः। चातुर्थिकाः पाक्षिकाश्च मासाः षाण्मासिकाश्च ये। सांवत्सरा दुर्निवार्या ज्वराः परम दारुणाः। स्वाप्निकाश्च महोत्पाता ये च दुःस्वप्निका ग्रहाः। कूष्माण्डा जृम्भका भीमा घोनासा निधिवञ्चकाः। भ्रामकाः प्राणहर्त्तारो ये च बालग्रहादयः। दिवाचरा रात्रिचरा ये च संध्यासु दारुणाः। प्रमत्ता अप्रमत्ता वा येऽस्मान् बाधितुमुद्यताः। ते सर्वे हैहयेशस्य धनुर्मुक्त-शरार्दिताः। सहस्रधा प्रणश्यन्तु भग्नसत्व बलोद्यमाः।

ये सर्पा ये महानागा महागिरि गुहाशयाः। कालव्याला महादंष्ट्रा महाजगर-संज्ञकाः। अनन्त कुलिकाद्याश्च दंष्ट्राविष महाभयाः। अनेन शतशीर्षाश्च खण्डपुच्छाश्च दारुणाः। महाविष जलौकाश्च वृश्चिका रक्तपुच्छकाः। आशीविषाः कालकूटा महा-हालाहलाह्वयाः। जलसर्पा जलव्याला जलग्रहाश्च कच्छपाः। मासिका विष पुच्छाश्च ये चान्ये जलवासिनः। जलजाः स्थलजाश्चैव नानाभेद शतोद्भवाः। ये च षड्विन्दवो लूता भ्रामराः शुकपुच्छिकाः। स्थावरा जङ्गमाश्चैव कृत्रिमाश्च महाविषाः। गुप्तरूपा गुप्तविषा मूषिका गृहगोधिकाः। अपस्मारविषा घोरा महोग्रविषसंज्ञकाः। येऽस्मान् बाधितुमिच्छन्ति शरीर

प्राणनाशनाः। ते सर्वे कार्त्तवीर्यस्य खड्गसाहस्त्रखण्डिताः। दूरादेव विनश्यन्तु प्रनष्टेन्द्रिय साहसाः।

मनुष्याः पशवो वृक्षा वानरा वनगोचराः। सिंहव्याघ्र वराहाश्च महिषा ये महामृगाः। गजास्तुरङ्गा गवया रासभाः शरभा वृकाः। शुनकाः पिशुनाः शूद्रा मार्जारा विल-योनयः। शृगालाः शशकाः श्येना गरुत्मन्तो विहङ्गमाः। भेरुण्डा वायसा गृध्रा हंसाद्याः पक्षिजातयः। उद्भिज्जाश्चाण्डजाश्चैव स्वेदजाश्च जरायुजाः। नाना भेदकुले जाता नानाभाव पृथग्-विधाः। येऽस्मान् बाधितुमिच्छन्ति संध्यासु च दिवा निशि। ते क्षिप्रं कार्त्तवीर्यस्य गदासाहस्त्र चूर्णिताः। दूरादेव विनश्यन्तु विनष्टगति-पौरुषाः। ये चाक्षेप प्रदातारो द्वेष्टारो ये विदूषकाः। कार्त्यंयंत्र प्रकर्तारः कूटा मायाविनोऽपरे।

मारणोच्चाटनोन्मूल द्वेष मोहनकारकाः। विश्वास-घातका दुष्टा ये च स्वामिद्रुहो नराः। ये चाततायिनो दुष्टा ये पापा गोप्रहारिणः। दाहोपघात-गरलशस्त्र-पातादि दुःखदाः। क्षेत्रवित्तापहरण बन्धनादि भयप्रदाः। एते ये विविधाकारा ये चान्ये दुष्टजातयः। पीड़ाकराश्च सततं छिद्रमिच्छन्ति बाधितुं। ते सर्वे कार्त्तवीर्यस्य चक्र -साहस्त्रदारिताः। दूरादेव विनश्यन्तु क्षयं यान्तु सहस्त्रधा।

ये मेघा ये महावर्षा ये वाता याश्च विद्युताः। ये महाऽशनयो दीप्ता निर्घाताद्याश्च दारुणाः। उल्कापाताश्च ये घोरा ये महेन्द्रायुधादयः। सूर्येन्दुकुज-सौम्याश्च गुरुकाव्य शनैश्चराः। राहुश्च केतवो घोरा नक्षत्राणि च राशयः। तिथयः संक्रमा मास हायना युगनायकाः। मन्वन्तराधिपाः सिद्धाऋषयो योगसिद्धयः। श्रुतय ऋग्-यजु-सामाथर्वणाद्याश्च वह्नयः। ऋतवो लोकपालाश्च पितरो देवसंहतिः। विद्याश्चैव चतुःषष्टि भेदोत्था भुवनत्रये। एते वै कीर्तिताः सर्वे ये चान्ये नानुकीर्तिताः। ते सन्तु नः सदा सौम्याः सर्वकालं सुखावहाः। आज्ञया कार्त्तवीर्यस्य योगीन्द्रस्यामित-द्युतेः।

कार्त्तवीर्यार्जुनो धन्वी राजेन्द्रो हैहयेश्वरः। दत्तात्रेय प्रियतमः सहस्त्रभुजमण्डितः। चापी खड्गी रथी वाणी तृणी चर्मी महाबलः। सुभगः सुमुखः शान्तश्चक्रवर्ती गुणाकरः। दशास्यदर्पहारो वा लीलातृप्तः सुदुर्जयः। दुष्टहा चौरदमनो राजराजेश्वरः प्रभुः। सर्वज्ञः सर्वदः श्रीमान् सर्वशिष्टेष्टदः कृती। राजचूडामणिर्योगी सप्तद्वीपाधिनायकः। विजयी विश्वतो राज्ञां महामतिरलोलुपः। देवविप्र-प्रियो विद्वान् ब्रह्मगेयः सनातनः। माहिष्मती पतिर्योद्धा महाकीर्तिर्महाभुजः। सुकुमारो महावीरो मारीघ्नो मदिरेक्षणः। शत्रुघ्नः

शाश्वतः शूरः शङ्खभृद् गोपिवल्लभः। महाभागवतो धीमान् महाभयविनाशनः। असाध्य विग्रहो दिव्यभावो व्याप्तजगत्त्रयः। सर्वशास्त्र कलाधारो विरजो लोकवन्दितः। वीरो विमल सत्वाढ्यो महाबलपराक्रमः। विजयश्रीमयो नान्यो जितारिर्मन्त्रनायकः। चक्रभृत् कामदः कान्तः कामघ्नः कमलेक्षणः। भद्रवादप्रियो वैद्यो विबुधो वरदो वशी। जितेन्द्रियो जितारातिः महान् योऽनन्तविक्रमः। चक्रभृत् परचक्रघ्नः संग्रामविधिपूजितः। महाधनो निधिपतिर्महायोगी गुरुप्रियः। योगाढ्यः सर्वरोगघ्नो राजिताखिल भूतलः। दिव्यास्त्र भृदमेयात्मा सर्वगोप्ता महोज्ज्वलः। सर्वायुध-धरोऽभीष्टप्रदः परपुरञ्जयः। योगसिद्धो महाकायो महावृन्द शताधिपः। सर्वज्ञाननिधिः सर्वसिद्धदान कृतोद्यमः।

इत्यष्टशतनामोत्था मूर्त्तयो श-दिक्पतेः। सम्यक् दशदिशो पालयन्तु च मां सदा। महासौख्यमसम्बाधमारोग्यमपराजयः। दुःखहानिररिघ्नश्च प्रजावृद्धिः सुखोदयः। वाञ्छाप्तिरिति कल्याणमवैषम्यमनामयं। अनालस्यमभीष्टं च मृत्युहानिर्बलोन्नतिः। भयहानिर्यशः कान्तिर्विद्या बुद्धिमहोच्छ्रितः। अनष्ट-द्रव्यता चैव नष्टस्य पुनरागमः। दीर्घायुष्ट्वं मनोलाभः सौकुमार्यमभीप्सितं। अप्रधृष्टमनल्पत्वं महासामर्थ्यमेव च। सन्तु मे कार्त्तवीर्यस्य हैहयेन्द्रस्य कीर्त्तनात्।

य इदं कार्त्तवीर्यस्य कवचपुण्यवर्द्धनं। सर्वपापप्रशमनं सर्वोपद्रवनाशनं। सर्वशान्तिकरं गुह्यं समस्तभयनाशनं। विजयार्थप्रदं नृणां सर्वसम्पत्प्रदं शुभं। शृणुयाद् वा पठेद्वापि पूजयेद्वापि पुस्तकं। नित्यं शिरसि यो धत्ते सर्वान् कामानवाप्नुयात्। मुच्यते सर्वदुःखैस्तु सर्वत्र विजयी भवेत्। मारी चौरादि-पीड़ाद्यैर्न कदाचित् प्रबाध्यते। पठतः प्रातरुत्थाय दुःस्वप्नादि विनश्यति। लभते वाञ्छितानर्थान् पूज्यते त्रिदशैरपि। शय्यातलगतो रात्रौ य इदं कवचं पठेत्। न तस्य तस्कराराति-दुःस्वप्नादिकृतं भयं। चौरैर्यदा हृतं पश्येत् पश्वादि-धनमात्मनः। सप्तवारं तदा जप्त्वा निशि पश्चिम-दिङ्मुखः। सप्तरात्रेण लभते नष्टद्रव्यं न संशयः। सप्तविंशतिधा जप्यात् प्राचीदिग्-वदनो यदि। तदा देवासुरनिभं परचक्रं निवारयेत्। विवादे कलहे घोरे पंचधाः य पठेदिदम्। विजयी जायते तस्य न कदाचित् पराजयः। सम्यक् द्वादशधा रात्रौ प्रजपेद् बन्धमुक्तये। त्रिदिनान्निगड़ ग्रस्तो मुच्यते नात्र संशयः। अनेनैव विधानेन सर्व साधन कर्मणि। असाध्यमपि सप्ताहात् साधयेन्मंत्र वित्तमः। यात्राकाले पठित्वेदं मार्गे गच्छति यः पुमान्। न तस्य चौरव्याघ्राद्यैर्भयं स्यात् परिपन्थिभिः। नित्यं गृहगतो जप्त्वा कल्याणैः परिपूर्यते।

न भयं जायते तस्य दुष्टसत्वादिभिः क्वचित्। सर्वरोग प्रपीड़ासु त्रिधा वा पंचधा पठेत्। स-रोगमृत्युवेताल-भूतप्रेतैर्न बाध्यते। जगन्नासेचनं कुर्याज्जलेनाञ्जलिना तनौ। न चासौ विषकृत्यादिरोग-स्फोटैः प्रबाध्यते। त्रिसन्ध्यं यः पठेदेतत् षणमासं विजितेन्द्रियः। कालमृत्युमपि प्राप्तं जीयान्नास्त्यत्र संशयः। पठतः कवचं चेदं विषं नाक्रमते तनौ। न जाड्यान्धत्व मूकत्वं नोपसर्ग भयं क्वचित्। विंशत्या चोक्त विधिना ध्यात्वा देवं तदात्मकं। मंत्री गुरु प्रसादाप्तं मंत्रराजं जपेत् पुनः। कवचेनावृतो भूयो मंत्र ध्यानं समाचरेत्।

आदौ सम्बोधनं कुर्यात् तन्नाम ध्यान पूर्वकं। चतुरश्चक्र मंत्राणामुच्चरेद् वीज पूर्वकान्। कृत्वान्ते चैव मन्त्राणामुच्चरेद् वीज पूर्वकान्। शरीरे न्यासमेवं हि यः करोति समाहितः। स यथोक्तं लभेत् सद्यः फलं वज्रतनुर्भवेत्। यथा तथेदं कवचं कस्यचिन्न प्रकाशयेत्। गोपनीयं प्रत्यनेन शिवस्य वचनं यथा। सुभक्ताय सुशिष्याय दद्यात् सर्वस्व दायिने। साधकानां हितार्थाय यदुक्तं चन्द्रमौलिना। कार्त्तवीर्यस्य कवचं यदुक्तं वै मया तव। तेन संवीक्षितो देवि! कालेनापि न जीर्यते। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन कवचं धारयेत् सुधीः।

कार्त्तवीर्यः खल-द्वेषी कृत-वीर्यसुतो बली। सहस्त्रबाहुः शत्रुघ्नो रक्तवासा धनुर्धरः। रक्तगंधो रक्तमाल्यो राजास्मर्तुरभीष्टदः। द्वादशैतानि नामानि कार्त्तवीर्यस्य यः पठेत्। सम्पदस्तस्य जायन्ते जनास्तस्य वशे सदा।

॥ इति श्रीउड्डामरेश्वर तन्त्रे कार्त्तवीर्यार्जुन कल्पे उमा महेश्वर संवादे कार्त्तवीर्यार्जुन कवचं नामाष्टाशीति पटलः समाप्तः।

॥ श्री कार्त्तवीर्यार्जुन दर्पण प्रयोग ॥

घर से भागे हुए व्यक्ति के बारे में यदि पता नहीं चल रहा हो तो उस स्थिति में उसकी स्थिति व परिस्थिति जानने के लिए यह प्रयोग किया जा सकता है। वैसे तो इस प्रयोग के द्वारा चोरी गई वस्तुओं तथा उनके चोरो का भी ज्ञान पाया जा सकता है, परन्तु क्योकि यह प्रयोग मँहगा तथा श्रम-साध्य है अतः अत्यन्त जटिल परिस्थिति में ही, जब और कोई उपाय काम में नहीं आए तभी इस दर्पण प्रयोग को करना चाहिए।

([illegible] शुभ मुहूर्त्त में, शुद्ध स्थान (शुभ स्थान) में शुद्ध होकर बैठ जाए (प्रयोग का स्था[illegible] निर्वात, पर्याप्त खुला, हवादार, रोशन-दान, झरोखा आदि से युक्त होना चाहिए, ताकि दीपक बुझे नहीं तथा दीपको का धुँआ बाहर निकलता रहे।)

विधि-पूर्वक इच्छित कार्य की सफलता हेतु संकल्प एवं श्रीगणपत्यादि पूजन करें।

(२) साधक स्वयं मध्य भाग में बैठे। अपने सामने काँसे/ ताँबे की थाली/ कटोरे में तैल भरकर रखे। दूसरा सहायक व्यक्ति, साधक के चारो और गोल घेरे की आकृति में, एक हजार मिट्टी के बने दीपक. इस प्रकार रखे कि सभी दीपकों के मुख साधक की तरफ रहें। साधक का स्वयं का मुख, उत्तर-दिशा की तरफ होगा तथा उसके दाहिने हाथ प्रधान दीपक रहेगा- जिससे प्रधान दीपक का मुख पश्चिम की तरफ रहे।

(३) साधक के वस्त्र, सहायक के वस्त्र, पूजा-सामग्री सभी लाल होनी चाहिए। लाल-चन्दन या गहरे लाल रंग की मूँगे की माला, सरसों के तेल में रोली मिली हुयी बत्तियो की रुई या तो लाल रंगी या मौली निर्मित होनी चाहिए। कमरे की दीवार या परदे लाल रंग के हो तो अच्छा रहेगा। सहायोगी व्यक्ति तथा सहायक का यज्ञोपवीत भी लाल रंग का होना चाहिए। दीपक मिट्टि के तथा लाल रंग के अतिरिक्त अन्य किसी रंग का दाग-धब्बा नहीं होना चाहिए। दीपकों को दूर दूर रखें ताकि यदि किसी दीपक में तेल कम हो जाए, तो उसमें तेल डालने के लिए या बत्ती उपर करने के लिए सहयोगी व्यक्ति के आन-जाने के लिए पर्याप्त स्थान रहे। बत्तियाँ बड़ी प्रयोग करें। क्योकि दूसरी बत्ती प्रयोग नहीं की जा सकती है।

(४) सभी दीपक जलाकर साधक निम्न मन्त्र का दस सहस्र जप करें-

''ॐ नमो भगवते श्रीकार्त्तवीर्यार्जुनाय सर्वदुष्टान्तकाय तपोबल पराक्रम-परिपालित सप्तद्वीपाय, सर्वराजन्य चूडामणये, सर्वशक्तिमते, सहस्त्रबाहवे हुं फट् (मम) अभिलषितं दर्शय-दर्शय स्वाहा''।

(५) जब तक दस सहस्त्र जप पूरे नहीं हो जाए, तब तक आसन से नही उठें एवं न कोई दीपक बुझने देवें। मन व सभी इन्द्रिीया जप काल में एकाग्र रखें।

विशेष - (१) **यदि भागे** हुए व्यक्ति का चित्र प्रयोग **के स्थान** पर रख सके तो अच्छा रहेगा।

(२) यदि साधक को लगे की मंत्र बड़ा है तथा एकासन पर पूरा जप सम्भव नहीं है, तो सहयोगी रखे जा सकते है। सहयोगी एक या कई हो परन्तु सच्चरित्र व शुद्ध उच्चारण करने वाले होने चाहिए। सहयोगियों के वस्त्रादि का विधान साधक की तरह ही रहेगा।

(३) जप पूरा होने पर, अभिलषित व्यक्ति की हालत व स्थान आदि सामने रखे हुए तैल में प्रत्यक्ष चित्र के समान स्पष्ट हो जाते है।

॥ अथ कार्तवीर्यस्तोत्रम् ॥

विनियोगः - अस्य श्रीकार्तवीर्यार्जुनस्तोत्रमंत्रस्य दत्तात्रेय ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकार्तवीर्यार्जुन देवता, फ्रों बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं यजमानाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यासः - कार्तवीर्यार्जुनाय नमः हृदयाय नमः। कार्त० शिरसे स्वाहा। कार्त० शिखायै वषट्। कार्त० कवचाय हुम्। कार्त० नेत्रत्रयाय वौषट्। कार्त० अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

सहस्रबाहुं सशरं सचापं रक्ताम्बरं रक्तकिरीटकुण्डलम् ।
चौरादिदुष्टनाशनमिष्टदं तं ध्यायेन्महाबलविजृम्भितकार्तवीर्यम् ॥

मन्त्र - ॐ ह्रीं कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजाबाहुसहस्रवान् । तस्य स्मरणमात्रेण हृतं नष्टं च लभ्यते। इति जपः कार्यः। जपान्ते पुनर्न्यासं कृत्वा जपं निवेदयेत्।

॥ अथपाठः ॥

कार्तवीर्यः खलद्वेषी कृतवीर्यसुतो बली ।
सहस्रबाहुः शत्रुघ्नो रक्तवासा धनुर्धरः ॥१॥

रक्तगन्धो रक्तमाल्यो राजास्मर्तुरभीष्टदः ।
द्वादशैतानि नामानि कार्तवीर्यस्य यः पठेत् ॥२॥

सम्पदस्तस्य जायन्ते जनाः सर्वे वशं गताः ।
राजानो दासतां यान्ति रिपवो वश्यतां तथा ॥३॥

आनयत्याशु दूरस्थं क्षेमलाभयुतं प्रियं ।
सर्वसिद्धिकरं स्तोत्रं जप्तृणां सर्वकामदम् ॥४॥

कार्तवीर्य महावीर्य सर्वशत्रुविनाशन ।
सर्वत्र सर्वदा तिष्ठ दुष्टान्नाशय पाहि माम् ॥५॥

उत्तिष्ठ दुष्टदमन सप्तद्वीपकपालक ।
त्वामेव शरणं प्राप्तं सर्वतो रक्ष रक्ष माम् ॥६॥

दुष्टघ्न किं त्वं स्वपिषि किं तिष्ठसि चिरायसि ।
पाहि नः सर्वदा सर्वभयेभ्यः स्वसुतानिव ॥७॥
मतिभङ्गः स्वरो हीनः शत्रूणां मुखभञ्जनम् ।
रिपूणां च सभामध्ये सर्वत्र विजयं कुरु ॥८॥
यस्य स्मरण मात्रेण सर्वदुःखक्षयो भवेत् ।
तं नमामि महावीरमर्जुनं कृतवीर्यजम् ॥९॥
हैहयाधिपतेः स्तोत्रं सहस्त्रावृत्तिकं कृतम् ॥
वाञ्छितार्थप्रदं नृणां शूद्राद्यैर्न श्रुतं यदि ॥१०॥

'प्रणम्य क्षमस्व' इति विसर्जयेत्। प्रतिदिनमेवं जपो यावद्दीपसमाप्तिः कार्यः। शुभदिने समाप्य ब्राह्मणं सम्पूज्य दक्षिणां दत्त्वा भोजयित्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्।

॥ श्रीदत्तात्रेय मालामन्त्र–साधना ॥

विनियोगः-ॐ **अस्य श्रीदत्तात्रेय मालामन्त्रस्य शबराख्य महारुद्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदत्तात्रेयो देवता, ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, दत्तात्रेयेति कीलकं, सर्वार्थसाधने जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिः- **न्यास श्रीमहारुद्र-ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे, श्रीदत्तात्रेयो देवतायै नमः हृदि, ह्रां बीजाय नमः गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः नाभौ, दत्तात्रेयेति कीलकाय नमः पादयोः, सर्वार्थसाधने जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।**

षडङ्गन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
दत्तात्रेयाय हरये स्वाहा	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
कृष्णोन्मत्ताय स्वाहा	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
आनन्दाय दिगम्बराय स्वाहा	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
मुनये [illegible]ाय स्वाहा	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुँ

पिशाचाय ज्ञानसागराय स्वाहा	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
दत्तात्रयाय स्वाहा	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यानम् -

दिगम्बरं भस्मविलेपिताङ्गं, बोधात्मकं मुक्तिकरं प्रसन्नम् ।
निर्मानसं श्यामतनुं भजेऽहं, दत्तात्रेयं ब्रह्मसमाधि-युक्तम् ॥

॥ श्रीदत्त षट्चक्र स्तोत्रम् ॥

मूलाधारे वारिजपत्रे सचतुष्के, वं-शं-षं-सं-वर्ण-विशालैः सु विशालैः ।
रक्तं वर्णं श्रीगण-नाथं भगवन्तं,दत्तात्रेयं श्रीगुरुमूर्तिं प्रणतोऽस्मि ॥१॥
स्वाधिष्ठाने षड्दलपत्रे तनुलिङ्गे, बालां तावद् वर्णविशालैः सुविशालैः ।
पीतं वर्णं वाक्पतिरूपं ग्रहणातं, दत्तात्रेयं श्रीगुरुमूर्तिं प्रणतोऽस्मि ॥२॥
नाभिपत्रे पद्मदशान्ते ठ-प-वर्णे, लक्ष्मीकान्तं गरुड़ारूढं नरवीरम् ।
नीलं वर्णं निर्गुणरूपं निगमाख्यं, दत्तात्रेयं श्रीगुरु-मूर्तिं प्रणतो प्रणतोऽस्मि ॥३॥
हृत् पद्मान्ते द्वादश पत्रे क-ठ- वर्णे, शम्भुं शेषं हंसविशेषं समयं तम् ।
सर्गस्थित्यं तान् कुर्वन्तं शिवकान्तिं, दत्तात्रेयं श्रीगुरुमूर्तिं प्रणतो प्रणतोऽस्मि ॥४॥
चक्रस्थाने चक्रविशुद्धे कुसुमान्ते, चन्द्रकारे षोडश पत्रे स्वर वर्णे ।
मायाधीशं जीवशिवं तं निजमूर्तिं, दत्तात्रेयं श्रीगुरुमूर्तिं प्रणतोऽस्मि ॥५॥
आज्ञाचक्रे भ्रुकुटिस्थाने द्वि-दलान्ते, हं-क्षं-बीजं ज्ञाननिधिं तं गुरुमूर्तिम् ।
विद्युद्-वर्णं ज्ञान-मयं तं निटिलाक्षं, दत्तात्रेयं श्रीगुरु-मूर्तिं प्रणतोऽस्मि ॥६॥
शान्ताकारं शेषशयनं सुरवन्द्यं, कान्तानाथं कोमलगात्रं कमलाक्षम्।
चिन्तारत्ने चिद्घनरूपं द्विजराजं, दत्तात्रेयं श्रीगुरुमूर्तिं प्रणतोऽस्मि ॥७॥
ब्रह्मानन्दं ब्रह्मामुकुन्दं भगवन्तं, सत्यं ज्ञानं सत्यमनन्तं भगरूपम् ।
पूर्णब्रह्मानन्दमयं तं गुरुमूर्तिं, दत्तात्रेयं श्रीगुरुमूर्तिं प्रणतोऽस्मि ॥८॥

मानस पूजन- ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीदत्तात्रेयप्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाशतत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीदत्तात्रेय प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायुतत्त्वात्मकं धूपं श्रीदत्तात्रेय प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नितत्त्वात्मकं दीपं श्रीदत्तात्रेय प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जलतत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीदत्तात्रेय प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्वतत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीदत्तात्रेय प्रीतये समर्पयामि नमः।

उक्त प्रकार से "मानस पूजा" कर श्रीदत्तात्रेय माला-महा-मंत्र का जप करे। यथा-

ॐ नमो भगवते दत्तात्रेयाय धूत मम परमगुरवे कोटिसूर्य प्रकाशाय प्रदीप्त कोटिब्रह्माण्ड तेजसे दिव्यरूपाय स्वर्णकाषाय चैलाय स्वर्णयज्ञोपवीताय योगमुद्राज्ञान मुद्राक्षमाला धराय स्फटिकाभ माणिक्यवज्र वैडूर्य रुद्राक्ष मालालंकृताय स्वर्णकंचुक भूषणाय भस्मोद् धूलितविग्रहाय बालचन्द्रशेखराय सदा योगानन्दचिन्मय स्वरूपाय मम हृदय चिन्मय स्वरूपाय माहुरीं भक्ष्य भोक्ष्य निलयाय ॐ ह्रौं द्रौं योगनिद्रा मोक्षलक्ष्मी समेताय श्रीदत्तात्रेयाय परब्रह्मस्वरूपाय चक्रशङ्खडमरु गदापाशांकुश-कुण्ड-खड्ग-शार्ङ्ग-पिनाक-वाणाक्षय तूणीरादि सर्वायुधधराय असाध्यसाधनाय ब्रह्मपौरुषे आत्मपौरुषे परमानन्दस्वरूपाय द्रां-द्रीं-द्रूं-द्रैं-द्रौं-द्रः भूतप्रेतपिशाच-शाकिनी-डाकिनी-राक्षस-ब्रह्मराक्षस-भैरव-गणनायक-कूष्माण्ड-बाधा सहस्त्रोच्चाटनोच्चाटय क्षुद्रमपि क्षुद्रापस्मार स्फोटक व्रण ज्वरोच्चाटयोच्चाटय देव ग्रह नाग ग्रह सामान्य ग्रह मृकग्रह पंगुग्रह स्त्रीग्रह पुरुषग्रह दानवग्रह सर्वग्रहादीनुच्चाटय उच्चाटय परमंत्र परयन्त्र परतंत्रान् कोटि-कोटि छेदनाय आत्ममंत्र आत्मयंत्र आत्मतंत्रान् कोटि कोटि स्फूर्जनाय मां रक्ष-रक्ष आयुर्देहि श्रियं देहि प्रजां देहि ॐ श्रीं क्लीं ग्लौं द्रौं दत्तात्रेय प्रसादेन हुं फट् स्वाहा।

॥ वाञ्छाकल्पलता: स्तोत्र प्रयोगम् ॥

यह वाञ्छाकल्पलता स्तोत्र प्रयोग पारिजात के बीजाक्षर युक्त प्रयोग से भिन्न व सरल है। गृह कलह,चिन्ता व अरिष्ट के शमन हेतु यह प्रयोग सरल एवं शीघ्र फलदायी है। इसका प्रयोग प्रात:काल सूर्योदय के समय ब्रह्ममुहूर्त्त में करना चाहिये। श्रीत्रिपुरसुन्दरी व कामेश्वरशिव की स्तुति ब्रह्म रूप में की गई है एवं उनके प्रकृतिपुरुषात्मक मिलन से प्राप्त अमृत द्वारा कष्टनिवारण हेतु अमृतरुद्र से प्रार्थना की गई है। यह प्रयोग लक्ष्मीप्रद एवं सभी कामनाओं की सिद्धि करता है।

॥ श्री वाञ्छाकल्पलता प्रयोग:॥

विनियोग: - ॐ अस्य श्रीवाञ्छाकल्पलता मंत्रस्य नलदमयन्त्यौ ऋषि:, गायत्री छन्द:, श्री परमेश्वर- परमेश्वरी प्रीत्यर्थं जपे विनियोग:।

ध्यायेद्देवमनन्त-रूपमखिलं तेजात्मकं ज्योतिषम् ।
चिच्छक्तिं शिवमीश्वरीं च सहितमात्मा अचिन्त्यं प्रभो ॥

निर्गुण गुणवान् देव जगदाधार त्वमीश्वर ।
सत्य-ज्ञान-चिदात्मकं तव वपुः वन्दे शिवा-शंकर ॥
ॐ आदिरूपं दिव्यरूपं गुरुरूपं निरामयम् ।
तेजोरूपं सर्वसाक्षी विश्वरूपं जनार्दनम् ॥
अ-रूपं उ-रूपं म-रूपं तम-रूपकम् ।
रज-रूपं सत्व-रूपं सत्य-रूपं परं पदम् ॥
आत्मा शिव सदा साक्षी जीवाभावं च चिन्मयम् ।
निरञ्जनं निराकारं सर्व-व्यापी चराचरम् ॥
परमं परमात्मानं परं धाम परात्परम् ।
अजिरं अपरं हंसः अपरं देहचालकम् ॥
आकाशमवकाशं च खग-बिन्दुश्च नादजम् ।
अनादि सिद्धमात्मानं परं ज्योतिः शिवात्मकम् ॥
सर्वतेजोमयं राम दिव्य-तेजोमयं सदा ।
शाश्वतं दण्डरहितं शान्तं शुद्धं सुनिर्मलम् ॥
अजं अव्ययं चिद्रूपं आनन्दानन्द-वर्द्धनम् ।
अक्षयं नित्यसन्तुष्टं शास्ताशासन-वर्जितम् ॥
अजात-अजितयोर्देव भूत-भव्य-भवत्प्रभा ।
विकृत-विश्वसाक्षी च विश्वं विश्वसनातनम् ॥
ज्ञान विज्ञानं त्वं विभुः ब्रह्मा ब्रह्म-प्रकाशकम् ।
चिन्मयं च चिदाकाशभास्करं दिव्यरूपके ॥
त्वं शून्यं पञ्चशून्यं निर्गुणं गुणवर्द्धनम् ।
त्वमेकं केवलं ब्रह्म नित्यतृप्तं निरामयम् ॥
शिवलिङ्गं ज्योतिरूपं शिवाकारं सुदिव्यकम् ।
सदसद्-व्यापिनो सूक्ष्मं विराट् मङ्गलं हरिः ॥
त्वमसत्य-द्वन्द्वरहितं सच्चिदानन्द-विग्रहम् ।
नित्याऽनित्य शाश्वताय आत्म-लिङ्गायते नमः ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं हस्सौः सौः गुं गुं गुं ग्लौं ग्लौं ग्लौं अमृत-कुम्भाय गं गं गं ऐं ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं वं वं वं भं भं भं क्षं क्षं क्षं हस्ख्फ्रें क्षिप्र-भैरवाय प्रसीद।

ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रौं प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय स्वाहा।

दमयन्ती-नलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम् ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोष-प्रशान्तिदः ॥
एकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथक्-धियां ।
निर्वैरिता प्रजायन्ते सम्वादाग्ने प्रसीद मे ॥

(इति प्रथम पर्यायः)

॥ द्वितीय पर्यायः ॥

खं बालार्कप्रभमिन्द्रनीलस्फटिकं श्वेताभ्रविद्युज्ज्वलम् ।
शान्तं नादविलीनचित्तपवनं चक्राब्जचिह्नं भृशम् ॥
ब्रह्माद्या सनकादिभिः परिवृतं सिद्धैर्महायोगिनाम् ।
एवं ध्यानमुपासितं हृदि मुदा ध्येयं महायोगिभिः ॥
त्वमात्मा सर्वभूतेषु साक्षीरूपेण संस्थिता ।
केवलं ज्ञानरूपाय तस्मै ब्रह्मणे ते नमः ॥
अनङ्गरूपरूपाय त्रिगुणं रहितं तनुम् ।
पञ्च तत्वादि-रहितं तस्मै ब्रह्मणे ते नमः ॥
अतीतं सर्वभावेभ्यो बालार्कदृशं तनुम् ।
एवं सर्वमयं पूर्णं तस्मै ब्रह्मणे ते नमः ॥
इन्द्रियाणामधिष्ठाय भूतानामखिलेषु च ।
भूतेषु सततं व्याप्तं तस्मै ब्रह्मणे ते नमः ॥
आब्रह्म-स्तम्भपर्यन्तं सर्वव्यापी चराचरम् ।
परमानन्दं च यद्रूपं तस्मै ब्रह्मणे नमः ॥
निर्द्वन्द्वं नित्यसन्तुष्टं निर्लोपं निर्मलं खलु ।
उपाधि रहितं शान्तं तस्मै ब्रह्मणे ते नमः ॥
एकायानन्त रूपाय चिन्मयाय चिदात्मने ।
भूताय भूतनाथाय तस्मै ब्रह्मणे ते नमः ॥
लोकाय लोकनाथाय अखिलाय जगत्पते ।
केवलं शुद्धशान्ताय तस्मै ब्रह्मणे ते नमः ॥

आदि-मध्यान्त-हीनाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
समस्त-जगदाधार तस्मै ब्रह्मणे ते नमः ॥

प्रणम्य श्रीगुरु-नाथाय स्वात्मा-रामेण योगिनः ।
केवलं शुद्ध-शान्ताय तस्मै ब्रह्मणे ते नमः ॥

ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं श्रीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं क्लीं, ह् स् क्ष् म् ल् व् र् यूं आनन्दभैरवाय भैरवी सहिताय वं अमृतं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रौं प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय स्वाहा।

दमयन्ती-नलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम् ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोष-प्रशान्तिदः ॥

एकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्-धियाम् ।
निर्वैरिता प्रजायन्ते सम्वादाग्ने प्रसीद मे ॥

(इति द्वितीय पर्यायः)

॥ तृतीय पर्यायः ॥

गं ध्यायेद्देवीं पराम्बां सकलजगमयीं प्रकृति-चित्स्वरूपाम् ।
व्याप्तां त्रैलोक्यनादां निखिलभयहरां धारिणीं कालचक्रम् ॥

ब्रह्मा विष्णु महेशां स्थितिप्रलय करामुत्पत्ति रूपमेकाम् ।
विश्वाधारामरूपामभय वर करामीश्वरीं त्वां नमामि ॥

आदिमाया आदिशक्तिरीश्वरी आत्मरूपिणी ।
कृपायुक्ता कृपाचित्ता कालरूपा कृपाश्रया ॥

स्वरूपा ख-रूपा च ख-शक्तिः खगपालिनी ।
आत्मविद्या इडा शक्तिरनाद्यनुरूपिणी ॥

गुरु रूपा गुणाधीशा निर्गुणा च गुणाश्रया ॥

घनरूपा घनशाया घातिनी घातनाशिनी ।
चिन्मया चित्कला चित्ता चिद्रूपा च चराचरा ॥

चिच्छक्तिश्च चिदाकाशा चिदम्बा चेतना तथा ।
चित्ताकर्षा चिदानन्दा त्वचिन्त्या चित्त-चालका ॥

जगदम्बा जगमाया जगरूपा जगाश्रया ॥

जगकर्त्री जगहन्त्री जननी जगमोहिनी ।
तत्त्वरूपा तत्त्ववेता तारिणी तत्त्वबोधिका ॥
त्रिगुणा तमरूपा च तान्त्रिका तीर्थरूपिणी ।
धर्माधीशा धर्म-कीर्तिर्धारिणी धर्मरूपिणी ॥
धरारूपा धराधीशा धनदा धनवर्द्धिनी ।
निरामया निराभासा निर्मला च निराकृती ॥
निर्लोभा निरहङ्कारा निश्चित्ता च निरञ्जना ।
परामाया परावाचा प्रकृतिः परमेश्वरी ॥
पिङ्गला प्रणवरूपा च पराविद्या प्रबोधिनी ।
बहुकान्ता बहुशुद्धा बोधिनी बुद्धि दायिनी ॥
भक्तिप्रिया भक्तिदात्री भ्रामरी भक्तवत्सला ।
भामिनी भवरूपा च भयकृद्-भयनाशिनी ॥
महामाया महाशक्तिः मोहिनी मंत्ररूपिणी ॥
लक्ष्मी लक्ष्यरूपा च विश्वा च विश्वमोहिनी ।
शान्ता सुषुम्णा सत्वा च सोहं हंसः नमो नमः ॥

ऐं ठं ठं ठं, कं ठं ठं ठं, एं ठं ठं ठं, ईं ठं ठं ठं, ह्रीं ठं ठं ठं, क्लीं ठं ठं ठं, सं ठं ठं ठं, कं ठं ठं ठं, हं ठं ठं ठं, लं ठं ठं ठं, ह्रीं ठं ठं ठं, ह्रीं ठं ठं ठं, सौः ठं ठं ठं,सं ठं ठं ठं, कं ठं ठं ठं, लं ठं ठं ठं, ह्रीं ठं ठं ठं।

ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रौं प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय स्वाहा।

दमयन्ती-नलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम् ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोष-प्रशान्तिदः ॥
एकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग् -धियां ।
निर्वैरिता प्रजायन्ते सम्वादाग्रे प्रसीद मे ॥

(इति तृतीय पर्यायः)

॥ चतुर्थ पर्यायः ॥

लं त्रिभुवन-वपुरेकं योगिभिर्दृष्टमुच्चै-
स्त्रिगुणमपि गुणेभ्यो मत्परं प्राहुराख्यः ॥

तदहमहमन्त्रश्च ज्ञानमोक्ष-स्वरूपम् ।
दिशि दिशि बहुशक्तिर्ब्रह्म सम्पादयामि ॥
प्रकृतिपुरुषभिन्नं नास्ति नास्ति कदाचन ।
परा-पराणां प्रसादं सच्चिदानन्दलक्षणम् ॥
नोदेति नास्ति मध्येति न वृद्धिं नास्ति तत्क्षयम् ।
परमा परमेशानं प्रकृतिः परमेश्वर ॥
कर-पादौ दशाक्षादि-रहितं-चिन्मयं कुरु ।
कामेश्वरी महाशक्तिः कामेश्वर-सदाशिवां ॥
अनन्तमितभारूपं सत्तामात्रेण गोचरम् ।
ज्ञान-विज्ञान-सम्पन्नं ज्ञानरूपं च ज्ञानदम् ॥
श्रीविद्या ब्रह्मविद्या च व्याप्तं ये सचराचरं ।
निर्द्वन्द्वा नित्यसन्तुष्टा निर्मोहा निरुपाधिका ॥
कामेश्वरी मनोऽभीष्टकामेश्वर-स्वरूपिणी ।
नमस्तेऽनन्तरूपायै प्रसीद सुप्रसीद मे ॥

श्रीं श्रीं श्रीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं क्लीं, ऐं ऐं ऐं, सौं सौं सौं, ॐ ॐ ॐ, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं श्रीं, कं कं कं, एं एं एं, ईं ईं ईं, लं लं लं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, हं हं हं, सं सं सं, कं कं कं, हं हं हं, लं लं लं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, सं सं सं, कं कं कं, लं लं लं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, सौं सौं सौं, ऐं ऐं ऐं, क्लीं क्लीं क्लीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं श्रीं, प्रसीद प्रसीद, मम मनो ईप्सितं कुरु कुरु ।

ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रौं प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय स्वाहा।

दमयन्ती-नलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम् ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोष-प्रशान्तिदः ॥
एकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्-धियां ।
निर्वैरिता प्रजायन्ते सम्वादाग्ने प्रसीद मे ॥

(इति चतुर्थ पर्यायः)

॥ फलश्रुतिः ॥

वाञ्छा-कल्पलतायास्तु न च होमो न च तर्पणम् ।
एकवारं जगद्वश्यं द्विरावृत्या महाश्रया ॥

त्रिरावृत्या कविर्भूत्वा तूर्यावृति स्वयं शिवा ।
पञ्चावृत्या भवेत्सिद्धो नात्र त्वन्य विचारणा ॥
निशान्ते यः प्रतिदिनं दशवारं पठेद्यदि ।
सर्वान् कामानवाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः ॥
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात् महेश्वरि ।

परमेश्वरी–

परमेश्वर-परमेश्वरी प्रीत्यर्थं वाञ्छा-कल्पलताया दशावृति पठनाख्येन कर्मणाख्येन श्री भगवान् परमेश्वरः प्रीयतामस्तु॥

॥ कामदेव (मन्मथ) ॥

अभीष्ट सिद्धि एवं जन सम्मोहन हेतु कामदेव का स्मरण करना चाहियें। मन के उच्चाटन के निवारण हेतु भी इसका स्मरण करें। विवाह कार्यकी सिद्धि एवं पौरुष बल की प्राप्ति के लिये कामदेव की उपासना करें।

मंत्र- क्लीं कामदेवाय नमः

विनियोग:- अस्य मंत्रस्य संमोहन ऋषिः, गायत्री छन्दः, सर्वमोहनकरध्वजो देवता, सर्वसंमोहने विनियोगः।

षडंगन्यास हेतु क्लीं, का, मं, दें, वां, यं से हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्रों का न्यास करके नमः से अस्त्राय फट् कहते हुये अस्त्र न्यास करें ।

कामदेव गायत्री – कामदेवाय विद्महे पुष्पवाणाय धीमहि। तन्नोऽनंग प्रचोदयात्

कामदेव ध्यानम्–

जपारुणं रक्तविभूषणाढ्यं मीनध्वजं चारुकृतांगरागम् ।
कराम्बुजैरंकुशमिक्षुचापपुष्पास्त्रपाशौ दधतं भजामि ॥

कामदेव यंत्र पर " ॐ " मूंडकादि परतत्वांत पीठदेवताभ्यो नमः से पूजन कर नव पीठ शक्तियों का पूजन करें -(पूर्वादि क्रमेण)

ॐ मोहिन्यै नमः ॐ क्षोभिण्यै नमः ॐ त्रास्यै नमः ॐ स्तंभिन्यै नमः ॐ कर्षिण्यै नमः ॐ द्राविण्यै नमः ॐ आह्लादिन्यै नमः ॐ क्लिन्नायै नमः। मध्ये – ॐ क्लेदिन्यै नमः ।

''ॐ क्लीं मकरध्वाज सर्व सम्मोहन शक्ताय पद्मासनाय नमः'' से पुष्पाञ्जलि प्रदान कर आवरण पूजन की आज्ञा मांगे।

ॐ सविन्मय परोदेवः परामृत रसप्रियः ।
अनुज्ञां देहि मे काम परिवारार्चनाय मे ॥
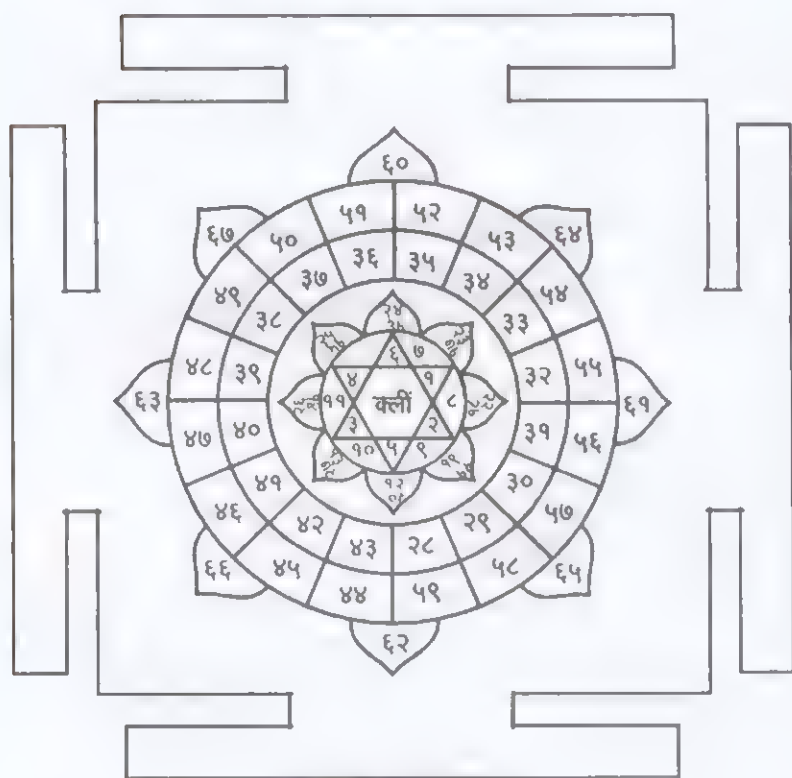
कामदेव यन्त्रम्

प्रथमावरणम् - षट्कोणों में - (१) **ॐ क्लां हृदयाय नमः** आग्नेये, (२) **क्लीं शिरसे स्वाहा** नैऋत्ये, (३) **क्लूं शिखायै वषट्** वायवे,(४) **क्लैं कवचाय हुं** ऐशान्ये (५) **क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्** मध्ये (६) **ॐ क्लः अस्त्राय फट्** दिक्षु।

द्वितीयावरणम्- (षट्कोण के बाहर ईशान को छोड़कर) पञ्चबाणों का पूजन करें (७) **ॐ द्रां शोषणाय नमः** (८) **ॐ ह्रीं मोहनाय नमः** (९) **ॐ सन्दीपनाख्य क्रीडाय नमः** (१०) **ॐ ब्लूं तापनाय नमः** (११) **ॐ**

मादनाय नमः।

तृतीयावरणम् - (अष्टदले) (१२) ॐ कामाय नमः (१३) ॐ भस्मशरीराय नमः (१४) ॐ अनंगाय नमः (१५) ॐ मन्मथाय नमः (१६) ॐ बसन्त सखाय नमः (१७) ॐ स्मराय नमः (१८) ॐ इक्षुधनुर्धराय नमः (१९) ॐ पुष्पबाणाय नमः ।

इस तरह १२ से १९ नं० तक आठ काम मूर्तियों का पूजन करें ।

चतुर्थावरणम् - दलाग्रे (२० से २७ नं० वामावर्तेन) (२०) ॐ अनंग रूपायै नमः (२१) ॐ अनंग मदनायै नमः (२२) ॐ अनंग मन्थायै नमः (२३) ॐ अनंग कुसुमायै नमः (२४) ॐ अनंग कुसुमातुरायै नमः (२५) ॐ अनंग शिशिरायै नमः (२६) ॐ अनंग मेखलायै नमः (२७) ॐ अनंग दीपाकायै नमः।

पञ्चमावरणम् - षोडशदले (२८ से ४३ नं० तक वामावर्तेन) (२८) ॐ युवत्यै नमः (२९) ॐ विपुल लंभायै नमः (३०) ॐ ज्योत्स्नायै नमः (३१) ॐ सुभ्रुवे नमः (३२) ॐ मदद्रवायै नमः (३३) ॐ सुरतायै नमः (३४) ॐ वारुण्यै नमः (३५) ॐ लोलायै नमः (३६) ॐ कान्त्यै नमः (३७) ॐ सौदामिन्यै नमः (३८) ॐ कामच्छत्रायै नमः (३९) ॐ चन्द्रलेखायै नमः (४०) ॐ शुक्त्यै नमः (४१) ॐ मदनायै नमः (४२) ॐ योन्यै नमः (४३) ॐ मायावत्यै नमः।

षष्ठमावरणम्- (षोडश दलाग्रे -४४ से ५९ तक दक्षिणावर्तेन) ॐ (४४) शोकाय नमः (४५) ॐ मोहाय नमः (४६) ॐ विलासाय नमः (४७) ॐ विभ्रमाय नमः। (४८) ॐ मदनातुराय नमः (४९) ॐ अपजयाय नमः (५०) ॐ युवाकामाय नमः (५१) ॐ चूतपुष्पायै नमः (५२) ॐ रति प्रियाय नमः (५३) ॐ ग्रीष्मांतकराय नमः (५४) ॐ उज्जायिने नमः (५५) ॐ हेमन्ते शिशिरोन्मदाय नमः। (५६) ॐ इक्षुचापधराय नमः (५७) ॐ पुष्पबाण हस्ताय नमः (५८) ॐ रक्त भूषाय नमः(५९)ॐ वनितासक्तमानसाय नमः ।

सप्तमावरणम् - तदवाह्ये अष्टदले (६०) ॐ हावाय नमः पूर्वे (६१) ॐ भावाय नमः दक्षिणे (६२) ॐ कटाक्षाय नमः पश्चिमे (६३) ॐ भ्रूविलासाय नमः उत्तरे (६४) ॐ माधव्यै नमः आग्नेये (६५) ॐ मालत्यै नमः नैऋत्यै (६६) ॐ हरिणाक्ष्यै नमः वायव्यै (६७) ॐ मदोत्कटायै

नमः ईशाने।

अष्टमावरणम् – भूपूर में इन्द्रादि दश दिक्पालों का व उनके आयुधों का पूजन करें ।

ॐ इन्द्राय नमः, ॐ आग्नेये नमः, यमाय नमः, नैऋत्ये नमः, वरुणाय नमः, वायवे नमः, कुबेराय नमः, ईशानाय नमः, ब्रह्मणे नमः, अनंताय नमः।

नवमावरणम्– पुनः पूर्वादि क्रमेण – **ॐ वज्राय नमः, शक्तये नमः, दण्डाय नमः, खड्गाय नमः, पाशाय नमः, अंकुशाय नमः, गदायै नमः, त्रिशूलाय नमः, पद्माय नमः, चक्राय नमः।**

पुनः पूजन करके पुष्पाञ्जलि प्रदान करें ।

ॐ नमोस्तु पुष्पबाणाय जगदानंदकारिणे ।
मन्मथाय जगन्नैत्रे रतिप्रीति प्रदायिने ॥

प्रार्थना करें –

ॐ देवदेव जगन्नाथ वांछितार्थ प्रदायक ।
कृत्स्नान्पूरय मे त्वर्थान्कामान्कामेश्वरी प्रिय ॥

एकाक्षरी मंत्र के ३ लाख जप करके मधुत्रय से होम करें ।

किंशुक पुष्प, फलों से, सुंगंधित पुष्पों से होम करें धन एवं सौभाग्य को प्राप्त करें। अशोक पुष्प व गौघृत से १८००० होम करें तो अविवाहित वांछितार्थ कन्या को प्राप्त करें ।

रति मंत्र – ह्रीं रत्यै नमः

परम सुन्दर दिव्य स्वरूप अलंकारों से विभूषित एवं कामदेव के साथ नृत्य मुद्रा में एवं आलिङ्गनमुद्रा में रति का ध्यान करने से सुख सौभाग्य की वृद्धि होती है।

॥ कामदेव मंत्रप्रयोगः॥

कामदेव के सन्दीपन, सम्मोहन, संतापन, वसा (पुष्टि) एवं वश्यबाण प्रमुख है। पंचबाणों के द्वारा कामदेव संसार के प्राणियों को साम, दाम, दण्ड, भेद से सम्पूर्ण रूप से वशीभूत करते है। अतः प्रतिकूल धारणा व्यक्तियों को अनुकूल करने के लिये निम्न मंत्रों का प्रयोग किये जा सकते हैं।

कामदेव मंत्र–

१. ॐ नमो भगवते कामदेवाय इन्द्राय वसाबाणाय इन्द्रसन्दीपन बाणाय क्लीं क्लीं सम्मोहनबाणाय ब्लूँ ब्लूँ संतापनबाणाय सः सः वशीकरणबाणाय कंपित कंपित हुं फट् स्वाहा ।

२. क्लीं नमो भगवते कामदेवाय श्रीं सर्वजन प्रियाय सर्वजन संमोहनाय ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल हन-हन वद-वद तप-तप संमोहय-संमोहय सर्वजनं मे वशं कुरु-कुरु स्वाहा ।

विधान - मंत्र पूजन दमन पूजा विधि में दिया गया है। २१००० जप करने पर मंत्र सिद्ध होता है ।

सिद्धे मंत्रे मंत्री पत्रं पुष्पं फलं वाभिमंत्रितं यस्मै ददाति स वश्यो भवति।

इसके प्रयोग से ७ दिन में पूर्ण वशीकरण हो जाता है एवं शत्रु भावना नष्ट हो जाती है। **दुष्टा जनैर्दुष्टजनाः सर्वे मोहवशंगताः।**

वशीकरण हेतु भ्रामरी एवं काम मेखलादेवी के प्रयोग इस प्रकार है

भ्रामरी मंत्र- ॐ आं ह्रीं सौः ऐं क्लीं हूं सौः ग्लौं श्रीं क्रौं एहि एहि भ्रमरांबा हि सकल जगन्मोहनाय मोहनाय सकल अंडज पिंडजान् भ्रामय - २ राजाप्रजा वशंकरि संमोहय२ महामाये अष्टादशपीठरूपिणि अमलवरयूं स्फुर-२ प्रस्फुर-२ कोटिसूर्यप्रभाभासुरिं चन्द्रजटी मां रक्ष-रक्ष मम शत्रून भस्मी कुरु कुरु विश्व मोहिनि हुं क्लीं हुं हुं फट् स्वाहा ।

एक लक्ष जपने पर जगत का वशीकरण होवे शत्रु दमन होवें।

अथ वशीकरणार्थे काममेखला मंत्र - (उडड़ीश तंत्रे) ॐ ह्रीं कामातुरे काममेखले विघोषणी नीललोचने अमुकं वश्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

इस मंत्र से साधक भक्ष्य पदार्थ को अभिमंत्रित स्वयं गृहण करे तो ७ या १२ दिन में स्त्री पुरुष का वशीकरण होवें । सर्वप्रथम एक लक्ष या कम से कम ६१००० जप करें इसके बाद प्रयोग करें ।

॥ दमनक पूजा ॥

संवत्सर के प्रारंभ में दमन से सभी देवताओं का पूजन करना लिखा हैं। चैत्र मास में शुक्ला चतुर्थी को गणेश का, सप्तमी को सूर्य का, अष्टमी को गौरी का द्वादशी को नारायण का, तथा चतुर्दशी को दमनक से पूजा करनी चाहिये।

दमनक एकलता (द्रोण लता) है जिसका प्रादुर्भाव रति के विलाप मे गिरे अश्रु कणों से हुआ था ।

रतिः पतिवियोगार्ता प्रीतिः शोकाद् रुरोद च ।
तदश्रुपातादुद्भूता दमनस्य लता शुभा ॥

मंत्र महोदधि में इसके आह्वान मंत्र में "**अशोकाय नमस्तुभ्यं**" शब्द आया है, अतः अशोक वृक्ष की भ्रांति बनती है, पुनः पूजन में लिखा है दमनक मँजरी व पुष्प माला से अर्चन करें अतः द्रोण लता से ही यथार्थ बनता है । अमरकोष में भी अशोक का पर्यायवाची शब्द दमनक नहीं लिखा है, कैथ (कपित्थ) का पर्यायवाची जरुर "**मन्मथ** " है। शोक निवारण वाली इस लता को प्रार्थना में अशोक नाम से सम्बोधित किया है।

विधानम् - दमनक पूजा से एक दिन पहले अपने इष्टदेव की पूजन करके बगीचे में जाकर माली से दमन का क्रय करना चाहिये। फिर शुद्ध स्थान पर बैठकर पूजन करें ।

लता के पास बैठकर प्रार्थना करें -

अशोकाय नमस्तुभ्यं कामस्त्रीशोकनाशन ।
शोकार्तिहर मे नित्यमानन्दं जनयस्व मे ॥

लता में कामदेव व रति का नाम मंत्रों से पूजन करें ।

यथा **क्लीं कामदेवाय नमः, ह्रीं रत्यै नमः ।**

तत् पश्चात् "**इष्टदेवस्य पूजार्थं त्वा नेष्यामि**" कहकर उखाड़ें (अस्त्र से छेदन नहीं करें) पंचगव्य से अभिषिक्त कर जल से प्रक्षालित करें, श्रीसूक्त देविसूक्त का पाठ करें गंधार्चन करें, पीले कपड़े से ढक कर बाँस की टोकरी में रखकर अपने इष्टदेव का स्मरण करते हुये गाजे बाजे के साथ घर पर पूजा स्थान में स्थापित करें।

दमनक पिटारी को पूजन के लिये सर्वतोभद्र मण्डल पर रखे या कामदेव यंत्र (भद्रमण्डल) पर रखें ।

अधिवासन - भद्रमण्डल पर सर्वप्रथम श्वेत, काले, रक्त एवं पीत वर्ण से युक्त अष्टदल बनायें। अष्टदल के बाहर पीले रंग का भुपूर बनायें, भूपूर के बाहर सफेद, लाल एवं पीले रंग के तीन वृत बनायें। वृतों के बाहर चतुरस्त्र बनाकर लाल रंग से भर देवें ।

सायं काल समय यंत्र एवं दमनक की पृजा करें।

फिर अष्टदल में कामदेव के आठ नामों से (यथा **ॐ क्लीं कामदेवाय नमः**) से पूजन करें। नाम के पहिले ॐ तथा अन्त में **नमः** का प्रयोग करें।

१. कामदेवाय २. भस्मशरीराय ३. अनङ्गाय ४. मन्मथाय ५. बसन्त-सखाय ६. स्मराय ७. इक्षुधनुर्धराय ८. ॐ पुष्पबाणाय नमः।

कामदेव के इन आठ शरीरों का क्रमशः कर्पूर, गोरोचन, कस्तूरी, अगर, कुंकुम, आँवला, चन्दन एवं पुष्पों से विशेपार्चन करें।

भूपूर में इन्द्रादि दश दिक्पालों का आह्वान करें यंत्र के देवों का एवं दमन का गंधार्चन का पूजन करें ।

पश्चात् **कामदेव गायत्री से १०८ बार अभिमंत्रित करें**। यथा -

ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि । तन्नोऽनंग प्रचोदयात्॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान कर प्रर्थना करें -

नमोऽस्तु पुष्पबाणाय जगदान्दकारिणे ।
मन्मथाय जगन्नेत्ररतिप्रीतिप्रदायिने ॥
आमंत्रितोऽसि देवेश प्रातः काले मया प्रभो ।
कर्त्तव्यं तु यथा लाभं पूर्णं स्यात्तु तवाज्ञया ॥

फिर पुष्पाञ्जलि प्रदान कर, दण्डवत प्रणाम कर, पीले वस्त्र से आच्छादित करें । वर्म (**हुं**) मंत्र से अवगुंठन, अस्त्र (**फट्**) मंत्र से संरक्षण चुटकी एवं ताली बजाते हुये करें ।

पश्चात् रात्रि समय इष्टदेव की प्राप्ति हेतु नृत्य जागरण करना चाहिये।

इष्टदेव की दमनक पृजा प्रातः काल में नित्यार्चन करने के बाद संकल्प करें **''वर्षपूजा साङ्गत्याय दमनार्चा करिष्ये ''**

कामदेव व रति मंत्रों से भद्रमण्डल एवं दमनक के गंधार्चन करें, दमनक की मँजरी लेकर इष्टदेव के शिर पर चढ़ावे, घण्टा एवं जय घोष के साथ दमनक की माला भी इष्टदेव के चढ़ावें।

मँजरी अर्पण -

सर्वरत्न मयीं दिव्यां सर्वगंधमयीं शुभाम् ।
गृहाण मँजरीं देव नमस्तेऽस्तु कृपानिधे ॥

माला मंत्र -

सर्वरत्नमयीं नाथ दामनीं वनमालिकाम् ।
गृहाण देवपूजार्थं सर्वगन्धमयी विभो ॥

इसके बाद देव परिवार का भी दमनक से अर्चन करें। नैवेद्यादि अर्पण कर प्रार्थना करें -

देव-देव जगन्नाथ वाञ्छितार्थ प्रदायक ।
कृत्स्नान् पूरय मेत्वर्थ कामान् कामेश्वरी प्रिय ॥

पश्चात् कामदेव व रतिमन्त्र व इष्टमन्त्र से हवनादि करें। गुरु का भी दमनक से पूजन करें, ब्राह्मण को भोजन करायें।

॥ वर–वधू प्राप्ति प्रयोगः॥

मन्त्र :- ह्रीं क्लीं इन्द्राणि, सौभाग्य देवते, मघवत् प्रिये!। सौभाग्यं देहि मे स्वाहा ॥

विनियोगः ॐ अस्य श्रीइन्द्राणी मन्त्रस्य बृहस्पति ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीइन्द्राणी देवता, सर्व सौभाग्य प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- शिरसि बृहस्पति ऋषये नमः। मुखे गायत्री छन्दसे नमः। हृदि श्रीइन्द्राणी देवतायै नमः। सर्व सौभाग्य प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

मन्त्रः	करन्यास	षडङ्गन्यास
ह्रीं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः
इन्द्राणि	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा
सौभाग्य देवते	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्
मघवत् प्रिये	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्
सौभाग्यं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्
देहि मे स्वाहा	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यानम् :–

कल्पद्रुमोद्यान मध्ये विविधमणि विलसन्मण्डपान्तर्विराजन्
मातङ्गाराति पीठ प्रविलसित सरोज संस्थां प्रसन्नाम् ।

पीनोत्तुङ्ग स्तनार्तां पृथुजघन भरां पद्म पत्रायताक्षीं
इन्द्राणीमिन्द्र नीलोत्पल शकल निभां हृद्य भूषां नमामि ॥

यन्त्रपूजन :- पहले षट्कोण, पश्चात् अष्टदल तथा भूपूर।

पीठपूजा :- आधार शक्तये नमः से परमात्मने नमः तक पीठ पूजन करें। आठों दिशाओं में आठ तथा मध्य में नवमी पीठशक्ति का पूजन करें। नाम के आदि में ॐ तथा अन्त में नमः का प्रयोग सर्वत्र करें।

यथा - **ॐ कान्त्यै नमः, रमायै, प्रभायै, रमायै, विद्यायै, मदनायै, मदनातुरायै, रम्भायै, मनोज्ञायै।**

आसनपूजन मन्त्र : **ह्रीं सर्व शक्ति कमलासनाय नमः।**

आवाहन मन्त्र :-

आगच्छ वरदे देवि! परिवार समन्विते ।
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव ॥

प्रथम आवरण :- (षट्कोण में) मूलमन्त्र के हृदयादि षडङ्गन्यास मन्त्रों से पूजन करें।
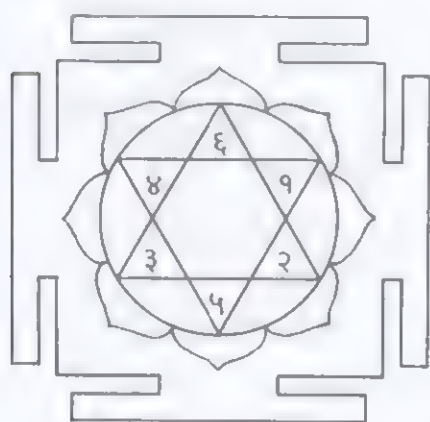
द्वितीय आवरण:- (अष्टदल कमल में) **ॐ उर्वश्यै नमः, मेनकायै, रम्भायै, प्रम्लोचायै, पुञ्जिक स्थलायै, तिलोत्तमायै, घृताच्यै, सुरूपायै॥**

तृतीय आवरण:- (भूपूर में) **ॐ इन्द्राय नमः, अग्नये, यमाय, निऋतये, वरुणाय, वायवे, सोमाय, ईशानाय, ब्रह्मणे, अनन्ताय।**

चतुर्थ आवरण:- (भूपूर में दिक्पालों के पास) **ॐ वज्राय नमः, शक्त्यै, दण्डाय, खड्गाय, पाशाय, अंकुशाय, गदाय, शूलायै, पद्माय, चक्राय नमः।**

चंपा के फूलों के होम से सबका वशीकरण होवें। वासन्ती, नेवारी, सेउती, पलाश के फूलों को मधुत्रय के साथ होम से वर वधू की प्राप्ति होवें।

॥ विश्वावसु गन्धर्वराज कवच स्तोत्रम् ॥

यह कवच अविवाहहार्थि के विवाह हेतु, कामोत्तेजना व बलपुष्टिकारक है। विवाह कामना हेतु २ मंत्र है एवं कवच के १९ वे श्लोक के जप करने से भी विवाह हेतु कन्या की प्राप्ति होवें।

प्रणाममन्त्राः - ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ ३ ॐ श्रीसप्त शृङ्गनिवासिन्यै नमः ॥ ३ ॐ श्रीविश्वावसु गन्धर्वराजाय कन्याभिः परिवारिताय नमः ॥३

पूर्व पीठिका :- ॐ नमस्कृत्य महादेवं सर्वज्ञं परमेश्वरम् ॥

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

भगवन् देव देवेश शङ्कर परमेश्वर !
कथ्यतां मे परं स्तोत्रं कवचं कामिनां प्रियम् ॥
जपमात्रेण यद्वश्यं कामिनी कुल भृत्यवत् ।
कन्यादि वश्यमाप्नोति विवाहाभीष्ट सिद्धिदम् ॥
भग दुःखैर्न बाध्येत सर्वैश्वर्यमवाप्नुयात् ॥

॥ श्रीईश्वरोवाच ॥

अधुना शृणु देवेशि! कवचं सर्वसिद्धिदं ।
विश्वावसुश्च गन्धर्वो भक्तानां भग भाग्यदः ॥
कवचं तस्य परमं कन्यार्थिणां विवाहदं ।
जपेद् वश्यं जगत् सर्वं स्त्रीवश्यदं क्षणात् ॥
भगदुःखं न तं याति भोगे रोग भयं नहि ।
लिङ्गोत्कृष्ट-बलप्राप्ति वीर्यवृद्धिकरं परम् ॥
महदैश्वर्यमवाप्नोति भग भाग्यादि सम्पदाम् ।
नूतन सुभगंभुक्त्वा विश्वावसु प्रसादतः ॥

विनियोग :- ॐ अस्यं श्रीविश्वावसु गन्धर्वराज कवच स्तोत्र मन्त्रस्य विश्व सम्मोहन वामदेव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीविश्वावसु गन्धर्वराज देवता। ऐं क्लीं बीजं। क्लीं श्रीं शक्तिः। सौः हंसः ब्लूं ग्लौं कीलकं श्रीविश्वावसु गन्धर्व राजप्रसादात् भगभाग्यादि सिद्धिपूर्वक यथोक्त फल प्राप्त्यर्थे जपे पाठे विनियोगः॥

ऋष्यादिन्यास :- ॐ शिरसि विश्वसम्मोहन वामदेवऋषये नमः। ॐ

मुखे अनुष्टुप्छन्दसे नमः। ॐ हृदि श्रीविश्वावसु गन्धर्वराज देवतायै नमः। ॐ गुह्ये ऐं क्लीं बीजाय नमः। ॐ पादयोः क्लीं श्रीं शक्तये नमः । ॐ नाभौ सौः हंसः ब्लूं ग्लौं कीलकाय नमः। ॐ सर्वाङ्गे श्रीविश्वावसुगन्धर्वराज प्रसादात् भगभाग्यादि सिद्धिपूर्वक यथोक्त फल प्राप्त्यर्थे जपे पाठे विनियोगाय नमः॥

षडङ्गन्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ क्लीं ऐं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ क्लीं श्रीं गंधर्वराजाय क्लीं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा
ॐ क्लीं कन्यादान रतोद्यमाय क्लीं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्
ॐ क्लीं धृतकह्लार मालाय क्लीं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ
ॐ क्लीं भक्तानां भगभाग्यादि वर प्रदानाय क्लीं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ क्लीं सौः हंसः ब्लूं ग्लौं क्लीं	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

मन्त्र :- (१) क्लीं ऐं श्रीं गंधर्वराजाय कन्यादान रतोद्यमाय धृतकह्लारमालाय भक्तानां भगभाग्यादि वर प्रदानाय सौं हंसः ब्लूं क्लीं नमः।

(२) ॐ क्लीं विश्वावसु गन्धर्वराजाय नमः ॐ ऐं क्लीं सौः हंसः सोहं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं सौः ब्लूं ग्लौं क्लीं विश्वावसु गन्धर्व राजाय कन्याभिः परिवारिताय कन्यादानरतोद्यमाय धृत कह्लारमालाय भक्तानां भग-भाग्यादि वर प्रदानाय सालङ्कारां सुरूपां दिव्यकन्या रत्नं मे देहि देहि मद् विवाहाभीष्टं कुरु कुरु सर्व स्त्रीवशमानय मे लिङ्गोत्कृष्टबलं प्रदापय मत्स्तोकं विवर्धय विवर्धय भगलिङ्गानन्दं कुरु कुरु भगलिङ्गरोगान् अपहर, मे भगभाग्यादि महदैश्वर्य देहि देहि प्रसन्नो मे वरदो भव ऐं क्लीं सौः हंसः सोहं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं सौः ब्लूं ग्लौं क्लीं नमः स्वाहा॥ २०० अक्षर, १२ बार जाप करें॥

गायत्री मंत्र :- ॐ क्लीं गन्धर्व राजाय विद्महे कन्याभिः परिवारिताय धीमहि तन्नो विश्वावसु प्रचोदयात् क्लीं (१० बार जाप करें) ॥

ध्यानम् :–

क्लीं कन्याभिः परिवारितं सुविलसत् कह्लार मालाधृतन्
स्तुष्ट्याभरणं विभूषितं सुनयनं कन्या प्रदानोद्यमम् ।
भक्तानन्द करं सुरेश्वर प्रियं मिथुनासने संस्थितम्
स्त्रातुं मे मदनारविन्द सुमदं विश्वावसुं मे गुरुम् क्लीं

ध्यान के बाद उक्त मन्त्र को १२ बार और गायत्री मन्त्र को १०

॥ कवच मूलपाठ ॥

क्लीं कन्याभिः परिवारितं सुविलसत् माला धृतन्
स्तुष्ट्याभरण विभूषितं सुनयनं कन्याप्रदानोद्यमम् ।
भक्तानन्द करं सुरेश्वर प्रियं मिथुनासने संस्थितं
स्त्रातुं मे मदनारविन्द सुमदं विश्वावसुं मे गुरुम् क्लीं ॥ १ ॥

क्लीं विश्वावसु शिरः पातु ललाटे कन्यकाऽधिपः ।
नेत्रौ मे खेचरो रक्षेद् मुखे विद्या धरं न्यसेत् क्लीं ॥२॥

क्लीं नासिकां मे सुगन्धाङ्गो कपोलौ कामिनी प्रियः ।
हनुं हंसासनः पातु कटौ सिंह कटि प्रियः क्लीं ॥३॥

क्लीं स्कन्धौ महाबलो रक्षेद् बाहू मे पद्मिनी प्रियः ।
करौ कामाग्रजो रक्षेत् कराग्रे कुचमर्दनः क्लीं ॥४॥

क्लीं हृदि कामेश्वरो रक्षेत् स्तनौ सर्वस्त्री कामजित् ।
कुक्षौ द्वौ रक्षेद् गन्धर्वः ओष्ठाग्रे मघवार्चितः क्लीं ॥५॥

क्लीं अमृताहार सन्तुष्टो उदरं मे नुदं न्यसेत् ।
नाभिं मे सततं पातु रम्भाद्यप्सरसः प्रियः क्लीं ॥६॥

क्लीं कटिं कामप्रियो रक्षेद् गुदं मे गन्धर्वनायकः ।
लिङ्गमूले महालिङ्गी लिङ्गाग्रे भगभाग्यवान् क्लीं ॥७॥

क्लीं रेतः रेताचलः पातु लिङ्गोत्कृष्टबलप्रदः ।
दीर्घलिङ्गी च मे लिङ्गं भोगकाले विवर्धय क्लीं ॥८॥

क्लीं लिङ्गमध्ये च मे पातु स्थूललिङ्गी च वीर्यवान् ।
सदोत्तिष्ठश्च मे लिङ्गो भगलिङ्गार्चन प्रियः क्लीं ॥९॥

क्लीं वृषणं सततं पातु भगास्ये वृषणस्थितः ।
वृषणे मे बलं रक्षेद् बाला जङ्घाधः स्थितः क्लीं ॥१०॥

क्लीं जङ्घमध्ये च मे पातु रम्भादि जघन स्थितः ।
जानू मे रक्ष कन्दर्पो कन्याभिः परिवारितः क्लीं ॥११॥

क्लीं ज़ानुमध्ये च मे रक्षेन्नारी जानु शिर स्थितः ।
पादौ मे शिविकारूढ़ः कन्यकादि प्रपूजितः क्लीं ॥१२॥

क्लीं आपाद मस्तकं पातु, धृत कह्लारमालिका ।
भार्यां मे सततं पातु सर्वस्त्रीणां सुभोगदः क्लीं ॥१३॥

क्लीं पुत्रान् कामेश्वरो पातु कन्या: मे कन्यकाऽधिप: ।
धनं गेहं च धान्यं च दास दासी कुलं तथा क्लीं ॥१४॥
क्लीं विद्याऽऽयु: सबलं रक्षेद् गन्धर्वाणां शिरोमणि: ।
यश: कीर्तिश्च कान्तिश्च गजाश्वादि पशून् तथा क्लीं ॥१५॥
क्लीं क्षेमारोग्यं च मानं च पथिषु च बालालये ।
वाते मंघे तडित्-पति: रक्षेच्चित्राङ्गदाग्रज: क्लीं ॥१६॥
क्लीं पञ्चप्राणादि देहं च मनादि सकलेन्द्रियान् ।
धर्म कामार्थ मोक्षं च रक्षां देहि सुरेश्वर! क्लीं ॥१७॥
क्लीं रक्ष मे जगतस्सर्वं द्वीपादि-नव-खण्डकम् ।
दशदिक्षु च मे रक्षेद् विश्वावसु: जगत: प्रभु: क्लीं ॥१८॥
क्लीं सालङ्कारां सुरूपां च कन्यारत्नं च देहि मे ।
विवाहं च प्रद क्षिप्रं भगभाग्यादि सिद्धिद: क्लीं ॥१९॥
क्लीं रम्भादि कामिनी वारस्त्रियो जाति कुलाङ्गना: ।
वश्यं देहि त्वं मे सिद्धिं गन्धर्वाणां गुरूत्तम: क्लीं ॥२०॥
क्लीं भगभाग्यादि सिद्धिं मे देहि सर्वसुखोत्सव: ।
धर्मकामार्थ मोक्षं च देहि विश्वावसु प्रभो! क्लीं ॥२१॥

॥ फलश्रुति ॥

इत्येतत् कवचं दिव्यं साक्षाद् वज्रोपमं परम् ।
भक्त्या पठति यो नित्यं तस्य कश्चिद्भयं नहि ॥१॥
एक विंशति श्लोकांश्च कामराज पुटं जपेत् ।
वश्यं तस्य जगत् सर्वं सर्वस्त्री भुवनत्रयम् ॥२॥
सालङ्कारां सुरूपां च कन्यां दिव्यां लभेन्नर: ।
विवाहं च भवेत् तस्य दु:ख दारिद्र्यं तं नहि ॥३॥
पुत्र पौत्रादि युक्तश्च स गण्य: श्रीमतां भवेत् ।
भार्या प्रीतिर्विवर्धन्ति वर्धनं सर्वसम्पदाम् ॥४॥
गजाश्वादि धनं धान्यं शिबिकां च बलं तथा ।
महाऽऽनन्दमवाप्नोति कवचस्य पाठाद् ध्रुवम् ॥५॥
देशं पुरं च दुर्गं च भूषादि छत्रचामरम् ।
यश: कीर्तिश्च कान्तिश्च लभेद् गन्धर्वसेवनात् ॥६॥

राजमान्यादि सम्मानं बुद्धि विद्या विवर्धनम् ।
हेम रत्नादि वस्त्रं च कोश वृद्धिस्तु जायताम् ॥७॥
यस्य गन्धर्व सेवा वै दैत्य दानव-राक्षसैः ।
विद्याधरैः किंपुरुषैः चण्डिकाद्या भयं नहि ॥८॥
महामारी च कृत्यादि वेतालैश्चैव भैरवैः ।
डाकिनी शाकिनी भूतैर्न भयं कवचं पठेत् ॥९॥
प्रयोगादि महामन्त्र सम्पदो क्रूर योगिनाम् ।
राजद्वारे श्मशाने च साधकस्य भयं नहि ॥१०॥
पथि दुर्गे जलेऽरण्ये विवादे नृपदर्शने ।
दिवारात्रौ गिरौ मेघे भयं नास्ति जगत् त्रये ॥११॥
भोजने शयने भोगे सभायां तस्करेषु च ।
दुःस्वप्ने च भयं नास्ति विश्वावसु प्रसादतः ॥१२॥
गजोष्ट्रादि नखि शृङ्गि व्याघ्रादि वन देवताः ।
खेचरा भूचरादीनां न भयं कवचं पठेत् ॥१३॥
रणे रोगाः न तं यान्ति अस्त्र शस्त्र समाकुले ।
साधकस्य भयं नास्ति सदेदं कवचं पठेत् ॥१४॥
रक्त द्रव्याणि सर्वाणि लिखितं यस्तु धारयेत् ।
सभाराजपतिर्वश्यं वश्याः सर्व कुलाङ्गनाः ॥१५॥
रंभादि कामिनीः सर्वाः वश्याः तस्य न संशयः ।
मदनपुटितं जप्त्वा जप्त्वा च भगमालिनीं ॥१६॥
भग भाग्यादि सिद्धिश्च वृद्धिः तस्य सदा भवेत् ।
बाला त्रिपुरसुन्दर्या पुटितं च पठेन्नरः ॥१७॥
सालङ्कारा सुरूपा च कन्या भार्यास्तु जायतां ।
बाला प्रौढ़ा च या भार्या सर्वास्त्री च पतिव्रता ॥१८॥
गणिका नृप-भार्यादि जपाद्वश्यं च जायताम् ।
शतद्वयोः वर्णकानां मन्त्रं तु प्रजपेन्नरः ॥१९॥
वश्यं तस्य जगत्सर्वं नरनारी स्वभृत्यवत् ।
ध्यानादौ च जपेद्भानुं ध्यानान्ते द्वादशंजपेत् ॥२०॥

गायत्री दशवारं च जपेद् वा कवचं पठेत् ।
युग्म स्तोत्रं पठेन्नित्यं बालात्रिपुरा सुन्दरीम् ॥२१॥
कामजं वंश गोपालं सन्तानार्थे सदा जपेत् ।
गणेशस्यालये जप्त्वा शिवाले भैरवालये ॥२२॥
तड़ागे वा सरित्तीरे पर्वते वा महावने ।
जप्त्वा पुष्पवटीदिव्ये कदली कयलालये ॥२३॥
गुरोरभिमुखं जप्त्वा न जपेत् कण्टकानने ।
मांसोच्छिष्ट मुखे जप्त्वा मदिरा नाग वल्लिका ॥२४॥
जप्त्वा सिद्धिमवाप्नोति भग-भाग्यादि-सम्पदाम् ।
देहान्ते स्वर्गमाप्नोति भुक्त्वा स्वगङ्गिनासदा ॥२५॥
कल्पान्ते मोक्षमाप्नोति कैवलं पदवीं न्यसेत् ।
न देयं यस्य कस्यापि कवचं दिव्यं पार्वति ॥२६॥
गुरुभक्ताय दातव्यं काममार्ग-रताय च ।
देयं कौल कुले देवि! सर्व सिद्धिस्तु जायताम् ॥२७॥
भग भाग्यादि सिद्धि च सन्तानौ सम्पदोत्सवः ।
विश्वावसु प्रसन्नो च सिद्धि-वृद्धिर्दिनेदिने ॥२८॥

यह कवच क्लीं बीज मंत्र से संमुपटित होता है। इससे त्रिपुर सुन्दरी के त्र्यक्षर (ऐं क्लीं सौः) या षोडशाक्षर मंत्र से संपुटित करनेसे सभी कामनायें सिद्ध होवें। क्लीं या संतानगोपाल मंत्रसे संपुटित करने से संतान की प्राप्ति होवें।

॥ इति श्रीरुद्रयामले महातन्त्रराजे श्रीपार्वतीश्वर सम्वादे श्रीविश्वावसु गन्धर्व राज कवच स्तोत्रम् ॥

॥ पत्नि प्राप्ति के लिये विश्वावसु गंधर्वराज मन्त्र ॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीगंधर्वराज विश्वावसु गंधर्व मन्त्रस्य संमोहन ऋषि गायत्री छन्दः श्रीगंधर्व विश्वावसुदेवता भार्या लाभार्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम् -

हेमाभ्योरुहभूषिते रथवरे पुंड्रेक्षुमि कल्पिते
कल्हार स्थित रक्तपाणि कमलै कन्याजनै सेवितम्

गंधवर्गाधिपतिं प्रसन्न हृदयं विश्वावसु यः पुमान
मंत्रं तस्य जपेल्लभेत कन्या मस्ये कांक्षितम्

मन्त्र - ॐ विश्वावसुनामि गंधर्वः कन्यानामधिपति सुरूपां सालंकारां कन्यां देहि मे नमस्तस्मै विश्वावसये स्वाहा।

विधानम् - यदि सवा लाख जप नहीं हो सके तो प्रतिदिन सातबार मन्त्र से तर्पण करने से भी कुछ काल में सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

॥ पति–पत्नि विरहपीड़ा विनाशक स्तोत्रम् ॥

पति-पत्नि में क्लेश, वाद-विवाद या पत्नि के रुठकर पीहर चले जाने, आदि कारणों से उत्पन्न विरह-पीड़ा इस स्तोत्र का पाठ करने से दूर होती है एवं दोनो में प्रेम-भाव बना रहता है।

ब्राह्मी ब्रह्मस्वरूपे त्वं मां प्रसीद सनातनि! ।
परमात्मस्वरूपे च परमानन्दरूपिणि! ॥१॥
ॐ प्रकृत्यै नमो भद्रे मां प्रसीद भवार्णवे ।
सर्वमङ्गलरूपे च प्रसीद सर्वमङ्गले! ॥२॥
विजये शिवदे देवी! मां प्रसीद जयप्रदे ।
वेदवेदाङ्गरूपे च वेदमातः! प्रसीद मे ॥३॥
शोकघ्ने ज्ञानरूपे च प्रसीद भक्तवत्सले ।
सर्वसम्पत्प्रदे माये प्रसीद जगदम्बिके! ॥४॥
लक्ष्मीर्नारायण क्रोडे स्त्रष्टुर्वक्षसि भारती ।
मम क्रोडे महामाया विष्णुमाये प्रसीद मे ॥५॥
कालरूपे कार्यरूपे प्रसीद दीन वत्सले ।
कृष्णस्य राधिके भद्रे प्रसीद कृष्णपूजिते! ॥६॥
समस्तकामिनीरूपे कलांशेन प्रसीद मे ।
सर्वसम्पत्स्वरूपे त्वं प्रसीद सम्पदां प्रदे! ॥७॥
यशस्विभिः पूजिते त्वं प्रसीद यशसां निधेः ।
चराचरस्वरूपे च प्रसीद मम मा चिरम् ॥८॥
मम योगप्रदेदेवी। प्रसीद सिद्धयोगिनि ।

सर्वसिद्धिस्वरूपे च प्रसीद सिद्धिदायिनि! ॥९॥
अधुना रक्ष मामीशे प्रदग्धं विरहाग्निना ।
स्वात्मदर्शनपुण्येन क्रीणीहि परमेश्वरि! ॥१०॥

॥ फलश्रुति ॥

एतत् पठेच्छृणुयाच्चन वियोगज्वरो भवेत् ।
न भवेत् कामिनीभेदस्तस्य जन्मनि जन्मनि ॥

इस स्तोत्र का पाठ करने अथवा सुनने वाले को वियोग-पीड़ा नहीं होती है और जन्म-जन्मान्तर तक कामिनी भेद नहीं होता है। अर्थात् वह अभीष्ट कामिनी जन्म-जन्मान्तर तक साथ रहती है।

विधानम् - पारिवारिक कलह, रोग या अकाल-मृत्यु आदि की संभावना होने पर इसका पाठ करना चाहिए। प्रणय संबधों में बाधाऐ आने पर भी इसका पाठ अभीष्ट फल-दायक होगा। अपने इष्ट देवता या सती (भगवती गौरी) का विविध उपचारो से पूजन करके उक्त स्तोत्र का पाठ करे। अभीष्ट प्राप्ति के लिये कातरता, समर्पण आवश्यक है।

॥ अथ संतानोपाय:॥

आचार्य यजमान की जन्मपत्रिका के अनुसार संतान व सन्तानसुख प्रतिबंधित ग्रह व दोषों को देखकर उनका शान्ति उपाय बतायें। ग्रह का उपाय कराये। प्रेतदोष या पितरश्राप, सर्पदोष शाप, मातृपितृ शाप आदि दोषों के हेतु उपाय व शान्ति प्रयोग **कराकर रुद्र, चण्डी, हरिवंश कथा, सन्तान गोपाल प्रयोग** कराना चाहिये।

॥ अरुणोवाचः ॥

वृथा धनं गृहं धान्यमपुत्रजन्म निष्फलम् ।
ममोपरि दयां कृत्वा प्रायश्चित्तं वदस्व मे ॥

॥ श्रीसूर्योवाचः ॥

विप्रद्रव्यापहारी यः सोऽनपत्यः प्रजायते ।
तेनकार्यं विशुद्ध्यर्थं महारुद्र जपादिकम् ॥
तीर्थयात्रा प्रकर्तव्या रेवतापीसमुद्भवा ।
एकेनापि हि वस्त्रेण दंपतीस्नानमुत्तमम् ॥

श्रवणं हरिवंशस्य ब्राह्मणोद्वाहनं खग ।
अष्टोत्तरशतान् विप्रान् मिष्टान्नेन तु तर्पयेत् ॥

१. **ॐ ईशानाय नमः** इस मन्त्र के एक लक्ष जप करके दशांश होम करें। एक लक्ष पुष्पों से शिवार्चन करें। सवत्सधेनु या स्वर्णधेनु प्रदान करें। घृतपात्र का दान करें।

पार्थिव शिवलिङ्ग पूजन - इस का विधान पूर्व में दिया जा चुका है।

पार्थिव गणेश पूजन - पार्थिव शिवलिङ्ग की तरह मिट्टी के गणेश बनाकर गणेश मन्त्र का जप कर हवनादि कर्म करें। गणेश तंत्र में अवलोकन करें।

(गारुडेऽपि-)

हरिवंश कथां श्रुत्वा शतचण्डी विधानतः ।
भक्त्या श्रीशिवमाराध्य पुत्रमुत्पादयेत्सुधीः ॥

(महार्णवेऽपि)

सौवर्णं बालकं कृत्वा दद्याद्दोला समन्वितम् ।
अथवा वृषभं दद्याद्विप्रोद्वाहनमेव वा ॥
महारुद्र जपो वापि लक्षपद्मैः शिवार्चनम् ॥
श्रवणं हरिवंशस्य कर्तव्यं च यथाविधि ।
महारुद्रजपं चैव कारयेच्च यथाविधि ॥
जुहुयाच्च शतांशेन दूर्वा आज्यपरिप्लुताः ।
एकादश स्वर्णनिष्काः प्रदातव्या च दक्षिणा ॥
एकादश पशूंश्चैव दद्याद्वित्तानुसारतः ।
अन्येभ्योऽपि यथाशक्ति द्विजेभ्यो दक्षिणां दिशेत् ॥
स्नापयेद्दम्पती पश्चान्मंत्रैर्वरुण दैवतैः ।
आचार्याय प्रदेयानि वस्त्रालंकरणानि च ॥

॥ इति सन्तानोपायः ॥

॥ हरिवंश श्रवण विधानम् ॥

पूर्वदिन यजमान दंपती का आचार्य पापघट दान कराकर दशविधि स्नान करायें प्रायश्चित होम करावें। क्रूरग्रहों का उपाय करायें।

दंपत्योरनुकूले सुदिने कृतनित्य क्रियः देवालयादि पुण्यस्थले स्वगृहे वा स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य। आचम्य प्राणानायम्य। देशकालौस्मृत्वा-अनेक जन्मार्जितानपत्य मृतापत्यत्वादि-निदान पूर्वकं सर्पशाप-पितरदोषशाप-मातृपितृशाप दोष विमुक्तार्थं भूतप्रेत पिशाच बालघातनिक्षेपहरण विप्ररत्नापहरणादि-दुरित-समूलनाश द्वारा दीर्घायुर्बहु पुत्रादि संतति प्राप्ति कामो हरिवंश श्रोष्यामि। तदंगत्वेन गणपति पूजनं पुण्याहवाचनं मातृका पूजनं नान्दीश्राद्धं च करिष्ये।

गणपति पूजन नान्दीश्राद्ध करके उत्तराभिमुख ब्राह्मणों का पादप्रक्षालन, वरण। यजमान पूर्वाभिमुख होकर करें।

ततो विभवानुसारेण श्रुताध्ययन संपन्नं ब्राह्मणमासने उदङ्मुखमुपवेश्य स्वयं प्राङ्मुख उपविश्य पादप्रक्षालनं कृत्वा गंधादिभिः संपूजयेत्। ततो वरण द्रव्याणि गृहीत्वा देशकालौ संकीर्त्य दीर्घायुष्ट्वत्पुत्र कामनयाऽमुक गोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्गंध पुष्प स्वर्णमुद्रिकासन कमण्डलु तांबूल वासोभिः हरिवंश श्रवणार्थं श्रावथितारं त्वामहं वृणे। इति वृत्वा। ॐ वृतोऽस्मि इति प्रतिवचनानन्तरं वस्त्रालंकारैः संपूज्य पुस्तकं दद्यात्।

आचार्य नित्य पुस्तक पूजन करायें। अष्टाक्षर मन्त्र का जप करें। नारायण को नमस्कार करें। दंपती प्रतिदिन संतानगोपाल मन्त्र का जप करें ब्राह्मणों से भी करायें।

मंत्रोयथा -

ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

एक दंपती के संतान का अभाव था सभी प्रकार के उपचार कराने के पश्चात् प्रभु की शरण का सहारा लिया। उक्त प्रयोग कराने पर उनके कन्या की उत्पत्ती हुयी। अनुसंधान करने पर पाया कि यजमान द्वारा 'तनयं' की जगह 'तनयि' का उच्चारण किया जाता था।

संतानगोपाल मन्त्र प्रयोग पूर्व विष्णु तंत्र में दिया जा चुका है।

॥ अथ पुत्रप्रदाभिलाषाष्टकम् ॥

॥ विश्वानर उवाच ॥

एकं ब्रह्मैवाद्वितीयं समस्तं सत्यं सत्यं नेह नानास्ति किंचित् ।
एको रुद्रो न द्वितीयोऽवतस्थे तस्मादेकं त्वां प्रपद्ये महेशम् ॥१॥
एकः कर्ता त्वं हि विश्वस्य शंभो नानारूपेष्वेकरूपोऽस्यरूपः ।
यद्वत्तपत्यर्क एकोऽप्यनेकस्तस्मान्नान्यं त्वां विनेशं प्रपद्ये ॥२॥
रज्जौ सर्पः शुक्तिकायां च रौप्यं वारां पूरस्तन्मृगाख्ये मरीचौ ।
यद्वत्तद्वद्विष्वगेव प्रपंचो यस्मिञ्ज्ञाते तं प्रपद्ये महेशम् ॥३॥
तोये शैत्यं दाहकत्वं च वह्नौ तापो भानौ शीतभानौ प्रसादः ।
पुष्पे गंधो दुग्धमध्ये च सर्पिर्यद्वच्छंभो त्वं ततस्त्वां प्रपद्ये ॥४॥
शब्दं गृह्णास्यश्रवास्त्वं हि जिघ्रेरघ्राणस्त्वं व्यंघ्रिरायासि दूरात् ।
व्यक्षः पश्येस्त्वं रसज्ञोऽप्यजिह्वः कस्त्वां सभ्यग्वेत्त्यतस्त्वां प्रपद्ये ॥५॥
नो वेदस्त्वामीश साक्षाद्धि वेद नो वा विष्णुर्नो विधाताऽखिलस्य ।
नो योगीन्द्रानेन्द्रमुख्याश्च देवा भक्तो वेद त्वामतस्त्वां प्रपद्ये ॥६॥
नो ते गोत्रं नाऽपी जन्मापि नाख्या नो वा रूपं नैव शीलं न देशः ।
इत्थं भूतोऽपिश्वरस्त्वं त्रिलोक्याः सर्वान् कामान् पूरयेस्तद्भजे त्वाम् ॥७॥
त्वत्तः सर्वं त्वं हि सर्वं स्मरारे त्वं गौरीशस्त्वं च नग्नोऽतिशांतः ।
त्वं वै वृद्धस्त्वं युवा त्वं च बालस्तत्किं यत्त्वं नास्यतस्त्वां नतोऽस्मि ॥८॥
स्तुत्वेति भूमौ निपपात विप्रः स दण्डवद्यावदतीव हृष्टः ।
तावत्स बालोऽखिलवृद्धवृद्धः प्रोवाच भूदेव वरं वृणीहि ॥९॥
तत उत्थाय हृष्टात्मा मुनिर्विश्वानरः कृती ।
प्रत्यब्रवीत्किमज्ञातं सर्वज्ञस्य तव प्रभो ॥१०॥
सर्वांतरात्मा भगवाञ्छर्वः सर्वप्रदो भवान् ।
याञ्चां प्रति नियुङ्क्ते मां किमीशो दैन्यकारिणीम् ॥११॥
इति श्रुत्वा वचस्तस्य देवो विश्वानरस्य ह ।
शुचेः शुचिव्रतस्याथ शुचि स्मित्वाऽब्रवीच्छिशुः ॥१२॥

॥ बालउवाचः ॥

त्वया शुचे शुचिष्मत्यां योऽभिलाषः कृतो हृदि ।
अचिरेणैव कालेन स भविष्यत्यसंशयः ॥१३॥

तव पुत्रत्वमेष्यामि शुचिष्मत्यां महामते ।
ख्यातो गृहपतिर्नाम्ना शुचिः सर्वामरप्रियः ॥१४॥
अभिलाषाष्टकं पुण्यं स्तोत्रमेतत्त्वयेरितम् ।
अब्दं त्रिकालपठनात्कामदं शिवसन्निधौ ॥१५॥
एतत्स्तोत्रस्य पठनं पुत्रपौत्रधनप्रदम् ।
सर्वशान्तिकरं वापि सर्वापत्परिणाशनम् ॥१६॥
स्वर्गापवर्गसंपत्तिकारकं नात्र संशयः ।
प्रातरुत्थाय सुस्नातो लिङ्गमभ्यर्च्य शांभवम् ॥१७॥
वर्षं जपन्निदं स्तोत्रमपुत्रः पुत्रवान्भवेत् ।
वैशाखे कार्तिके माघे विशेषनियमैर्युतः ॥१८॥
यः पठेत्स्नानसमये लभते सकलं फलम् ।
कार्तिकस्य तु मासस्य प्रसादादहमव्ययः ॥१९॥
तव पुत्रत्वमेष्यामि यस्त्वन्यस्तत्पठिष्यति ।
अभिलाषाष्टकमिदं न देयं यस्य कस्यचित् ॥२०॥
गोपनीयं प्रयत्नेन महावंध्याप्रसूतिकृत् ।
स्त्रिया वा पुरुषेणापि नियमाल्लिङ्गसन्निधौ ॥२१॥
अब्दं जप्तमिदं स्तोत्रं पुत्रदं नात्र संशयः ।
इत्युक्त्वां तर्दधे बालः सोऽपि विप्रो गृहं गतः ॥२२॥

॥ इति श्रीस्कंदपुराणे काशीखण्डे विश्वेश्वरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ पुत्रकामेष्टिप्रयोगः॥

तत्रादौ – पुत्रेष्टिहोमविधानात्प्राक् सप्तम पञ्चम तृतीयमासैकपर्यन्तं वा, प्रदोष व्रतं वा भौमव्रतमाचरन्तौ अखण्डब्रह्मचर्यपालनं कुरुतां पुत्रेच्छू पतिपत्न्याविति शास्त्राचारः।

अस्यैव व्रतकालस्यान्तर्गताः जन्माङ्गतः प्रश्नाङ्गतो वा अनपत्यत्वमृतापत्यत्व कन्याप्रजननत्वादिदुःखप्रदं ग्रहयोगाः स्युस्तर्हि शास्त्रोक्तविधिना श्रीरुद्रस्नान पूर्वकं साङ्गोपाङ्गसन्तानगोपालादिपुरश्चरणद्वारा विश्वासपूर्वकं शास्त्रकृत्यं सुसंविधाय दूरीकरणीयास्ते ते दोषाः।

यदि चेत्पुरुषो धातुरोगग्रस्तो भवेदथवा वाजीकरणशक्त्यभावः स्यात् तथा स्त्रियः ऋतुदोषो गर्भदोषश्च प्रतीयेत तर्हि-आदौ हि पुत्रकामेष्टिं होमात् सुचिकित्सा विधेया।

जन्मलग्न या प्रश्नद्वारा संतान प्रतिबन्धित ग्रहों का उपाय करें। रुद्रस्नान कर संतानगोपाल मन्त्र प्रयोग करें। औषधोपाय करें

॥ अथादौ रुद्रस्नानविधानम् ॥

गुरुशुक्रास्तादिरहिते शुभे मासि- अष्टम्यां चतुर्दश्यां वा शुक्लपक्षे ऋतुस्नाना च्चतुर्थेऽह्नि रविवासरे चन्द्रताराद्यानुकूल्ये सति कर्ता सभार्यः अशोष्य नदीसंगमं गत्वा तदभावे सिद्धपीठशिवालयादिकमुपेत्य पुण्याहं वाचयित्वा आहिताग्न्यादिगुणविशिष्टं द्विजमाचार्यत्वेन वृत्वा सऋत्विकब्राह्मणञ्च वृणुयात्। ततो दीर्घायुःसुपुत्राद्युत्पत्तिप्रतिबन्धकदुरितनिरासार्थं यथाशक्ति प्रार्यश्चित्तमनुतापयुक्तः कुर्यात् तच्च फलतारतम्यावगतदुरिततारतम्येन षडब्द-त्र्यब्द-सार्द्धाब्द रूपं चान्द्रायणकृच्छ्रातिकृच्छ्ररूपं वा द्रव्यजप्य होम तीर्थ ब्रह्मभोजनादि प्रत्याम्नायैः कार्यं सभ्योपदिष्टम्। ततः श्रीरुद्रप्रीत्यर्थं कृष्णामेकां धेनुं शक्त्योपस्करयुतां दद्यात्। तदशक्तौ पलं पलार्धमात्रं सुवर्णं वा दद्यात्। एवं कृते रुद्रस्नानेऽधिकारी भवति। ततः सभार्यो यजमानः आचम्य प्राणानायम्य।

संकल्प - ॐ अद्येत्यादि० मम सभार्यस्य दीर्घायुः सुपुत्रादिसन्तति प्रतिबन्धकेन इह जन्मन्यन्यजन्मनि वा कृतेनाष्टकापर्वादिपैतृक नैमित्तिकाकरणेन वा परद्वेषेण वा गुरुद्वेषेण वा मृगशावभक्षणेन वा बालघातेन वा रत्नापहरणेन वा वत्सवियोजनेन वा पितृमातृभ्रातृद्वेषेण वान्येन वा कर्मणोत्पन्न चतुर्विध वन्ध्यात्वान्यतर वन्ध्यात्व दोषनिरासेन तथा स्त्रियाः कुक्षिदोष ज्ञाताज्ञातान्यदुष्टस्त्री चैलाञ्चलस्पर्श दोषतदेकांशेन शयनादिजनित दोषादि सर्वसन्ततिप्रतिबन्धक निरासेन च दीर्घायुःसुपुत्रादि सन्तत्यवाप्तिद्वारा श्रीउमासहित श्रीरुद्रप्रीत्यर्थं बौधायनोक्तविधिना श्रीरुद्रकलश स्नान इत्याख्यं [illegible]। तदङ्गत्वेनादौ श्रीगणपत्यादिपूजनं नान्दीश्राद्धञ्च करिष्ये। इति संकल्प्य श्रीगणपतिपूजन वरुणकलशादिनान्दी श्राद्धान्तं सर्वं सम्पादयेत्।

ततः श्रीरुद्रं ध्यात्वा, आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धैर्देवासुरादिभिः। आराधयामि भक्त्या त्वां मां गृहाण महेश्वर! इति प्रार्थयेत्। अथाचार्योऽष्टहस्तं मण्डपं कृत्वा पञ्चगव्येनाभ्युक्ष्य तन्मध्ये श्वेतरजसा अष्टदलपद्ममालिख्य ब्रह्मादीन् मण्डल

देवांस्तत्रावाह्य। पूजयित्वा मध्ये कर्णिकायां रुद्रकलशं कलश स्थापन विधिना स्थापयित्वा दध्यक्षतादिभिः शोधयित्वा।

तत्र निष्कं तदर्धं (वा यथा शक्ति) सुवर्ण निर्मित श्रीरुद्र प्रतिमाग्न्युतारण पूर्वकं संस्थाप्य त्र्यम्बक-मिति श्रीमहादेवमा वाहयेत्।

ततः पूर्वादिचतुर्षु दलेषु नन्दिनं, भृङ्गिरिटिं, कालं , महाकालं च क्रमेण आवाह्य तेष्वेवाष्टदलेषु इन्द्रादीनष्टदिक्पालांश्चावाह्य, महादेवस्य वामभागे पार्वतीदक्षिणभागे विनायकं चावाह्य षोडशोपचारैः पूजयित्वा।

पद्मचतुष्कोणेषु कुम्भचतुष्टयं यथाविधि स्थापयित्वा उदकमासिच्य अश्वत्थपल्लवादीनि निक्षिप्य वरुणमावाह्य कलशं प्रार्थ्य।

ततो मण्डपस्य अष्टदिक्षु कुम्भाष्टकं स्थापयित्वा इन्द्राद्यष्टदिक्पालान्सम्पूज्य अन्नादिबलिमुपहृत्य प्रार्थयेत्।

ॐ इन्द्राद्याश्च सुराः सर्वे लोकपालास्तथैव च ।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः ।
ते सर्वे पूजिताः शान्ति प्रयच्छन्तु यथेप्सिताम् ।

ततः कुम्भान् संस्पृशन्नक्षतांश्चाक्षिपन्नेकादशावृत्त्या रुद्रान् जपेत्। तस्मिन् ब्रह्मपद्मादाग्नेय्यां दिशि स्थण्डिलेऽग्निमुपसमाधाय तूष्णीं निर्वापादिना चरुं पक्त्वाऽऽज्यभागान्तं कृत्वा समित्तिलचर्वाज्यैः ॐ मानस्तोके० इति मन्त्रेण अष्टोत्तरशतवारं नवग्रहहोमपूर्वकं जुहुयात्। ततः स्विष्टकृदादिपूर्णाहुतिप्राक्तन होमशेषं समाप्याचार्यो गन्धाधुपचारैः रुद्रस्योत्तरपूजां कृत्वाऽभिषेकार्थं मण्डपादग्रेरुत्तरतश्चतुरस्रं स्वस्तिकोपेतं मण्डलं कृत्वा तत्रोदुम्बरकाष्ठपीठद्वये परिहिताऽहतश्वेतवस्त्रे दम्पती प्राङ्मुखमुपवेश्य स्वयमुदङ्मुखः पूर्वादि कलशोदकेन रुद्राध्यायस्यैकैकेन मन्त्रेण एकैकेनार्कपत्रेणाभिषिच्य त्यजेत्। अत्र माध्यन्दिनीयशाखायां रुद्राध्यायगतानां चतुःषष्टिमन्त्राणामेकादशिन्यां चतुरधिक सप्तशतसंख्या भवति।

पल्लवों के द्वारा आशुः शिशान सूक्त, आपोहिष्ठा ऋचा तथा सुरस्त्वाभिषिंचतु पौराणिक मन्त्रों से अभिषेक करें।

ततः पल्लवैराशुः शिशान इति सूक्तेन आपोहिष्ठेत्यादिभिः सुरास्त्वामित्यादि पौराणिकैश्चाभिषिच्य शिवं शिवमिति वदेयुः। तत्र सर्वौषधीभिः सप्तमृद्भिर्नद्या उभयकूलमृदा च सर्वाङ्गेऽनुलिप्तौ दम्पती विशेषतः कुक्षिदेशे अनुलिप्तस्त्रियं शिष्टोद्धृतेन श्रीरुद्रकलशोदकेन प्रक्षालिताङ्गौ शुद्धोदकेन स्नापयेयुः।

प्रार्थना करें।

ततस्तौ - ॐ शरीरस्थाश्च ये दोषाः ये दोषा गर्भवीजयोः। ते सर्वे नाशमायान्तु करणानेन भो द्विजाः।

स्नात्वा स्नानवस्त्रं परित्यज्य शुद्धवस्त्रान्तरं परिधाय कुंकुममालाद्यलंकृतौ भवेताम्। **तत आचार्यो यजमानान्वारब्धः पूर्णाहुतिं हुत्वा वसोर्धारां जुहुयात्, ततो यजमानः सपत्नीकः कृतत्र्यायुष करणः।** पूजापूर्वकमाचार्याय पयस्विनीं सदक्षिण धेनुं सुवर्णञ्च यथा शक्ति दत्वा ब्रह्मणे पूर्णपात्रमृत्विग्भ्यो यथाशक्ति दक्षिणां दत्त्वा क्षमाप्य श्रीरुद्राधावाहितदेवता विसृज्य **श्रीरुद्रप्रीत्यर्थं शतं तदर्धं तदर्धं वा ब्राह्मणान्भोजयित्वा तैः सम्पूर्णतां वाचयित्वा जीवत्पतिपुत्रादिभिर्वर्धापनादि कृतमङ्गलो ब्राह्मणाशिषो गृह्णीयात् ततः पुत्रेष्टिविधानम्।**

अथ गोचर वशात् गर्भप्रदगुरु भ्रमणं ज्ञात्वा ऋतुकालात्पञ्चदिनोत्तरं सप्तदश दिनादर्वाक् शुभे समेऽह्नि भार्यया सह प्रार्याश्चनस्नानपूर्वक कृतमङ्गलस्नानाभ्यङ्गो यजमानोऽलङ्कृतः पूजाहोमकर्म प्रकरणोक्तस्वस्त्यनादिकं पठित्वा दम्पत्योरुत्तरीय वस्त्रम्यान्ते **ॐ शुक्लाम्बरधरेति मन्त्रेण सफलाक्षतग्रन्थिबन्धनं कुर्यात्ततः।**

ॐ अद्येत्यादिदेशकालौ सङ्कीर्त्य- अमुकगोत्रोऽमुकशर्म्माहं (वर्म्माहं गुप्तोऽहं) झटिति चिरञ्जीविपुत्रकामः पुत्रकामेष्टिं करिष्ये। तदङ्गत्वेन श्रीगणपत्यादि पूजनं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणञ्च करिष्ये। इति सङ्कल्प्य।

श्रीगणपत्याद्यावाहनपूर्वक पूजनम्-आचार्यादिवरणं नान्दीश्राद्धञ्च कृत्वा स्थण्डिलाद्यग्निप्रतिष्ठान्तं विधाय श्वेतवत्सगोक्षीरेण पायसचरुं पक्त्वा ततः - आघारादारभ्य पञ्चवारुणनवग्रहाधिदेवता प्रत्यधिदेवनादीनाञ्च होमं कृत्वा भार्ययाऽन्वारब्धः प्रधानाऽहुतीर्जुहुयात्।

॥ अथ प्रधानदेवताज्यहोमः॥

विनियोगः - **ॐ प्रधानाज्यहोममन्त्राणां याज्ञवल्क्य बृहदारण्यकावृषी अनुष्टुप्छन्दः सन्तानदाता परमात्मा देवता प्रधानाज्यहोमे विनियोगः।**

ॐ यावन्तो देवास्त्वयि जातवेदस्तिर्यञ्चो घ्नन्ति पुरुषस्य कामान्। तेभ्योऽहं भागधेयं जुहोमि ते मा तृप्ताः सर्वकामैस्तर्पयन्तु स्वाहा। इदमग्नये ॥१ ॥ ॐ या तिरश्चीनि पद्यतेऽहं विधरणी इति तां त्वा घृतस्य धारया यजे संराधनीमहं स्वाहा। इदमग्नये ॥२॥ ॐ ज्येष्ठाय स्वाहा। इदं ज्येष्ठाय ॥३॥ ॐ श्रेष्ठाय स्वाहा। इदं श्रेष्ठाय ॥४॥ ॐ प्राणाय स्वाहा। इदं प्राणाय ॥५ ॥ ॐ अवशिष्टाय स्वाहा। इदमवशिष्टाय ॥६ ॥ ॐ चक्षुषे स्वाहा। इदं चक्षुषे ॥७॥ ॐ सम्पदे

स्वाहा। इदं सम्पदे ॥८॥ ॐ श्रोत्राय स्वाहा। इदं श्रोत्राय ॥९॥ ॐ यतनाय स्वाहा। इदं यतनाय ॥१०॥ ॐ मनसे स्वाहा। इदं मनसे ॥११॥ ॐ प्रजायै स्वाहा। इदं प्रजायै ॥१२॥ ॐ रेतसे स्वाहा। इदं रेतसे ॥१३॥ ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये ॥१४॥ ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय ॥१५॥ ॐ भूः स्वाहा। इदं भूः ॥१६॥ ॐ भुवः स्वाहा। इदं भुवः ॥१७॥ ॐ स्वः स्वाहा। इदं स्वः ॥१८॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। इदं भूर्भुवः स्वः ॥१९॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे ॥२०॥ ॐ क्षत्राय स्वाहा। इदं क्षत्राय ॥२१॥ ॐ भूताय स्वाहा। इदं भूताय ॥२२॥ ॐ भविष्यते स्वाहा। इदं भविष्यते ॥२३॥ ॐ विश्वाय। स्वाहा इदं विश्वाय ॥२४॥ ॐ सर्वाय स्वाहा। इदं सर्वाय ॥२५॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये ॥२६॥

अथ स्थालीपाकाहुतयः - ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये ॥१॥ ॐ अनुमतये स्वाहा। इदमनुमतये ॥२॥ ॐ देवाय स्वाहा। इदं देवाय ॥३॥ ॐ सवित्रे स्वाहा। इदं सवित्रे ॥४॥ ॐ सत्यप्रसवाय स्वाहा। इदं सत्यप्रसवाय ॥५॥

विनियोगः - ॐ अग्नीषोमाविति सूक्तस्य राहूगणो गौतमऋषिः, अग्निषोमौ देवते अनुष्टुप्त्रिष्टुब्जगती छन्दांसि पायसचरुहोमे विनियोगः।

ॐ अग्नीषोमाविमं सु मे शृणुतं हवम्। प्रतिसूक्तानि हर्यतं भवतं दाशुषे मयः स्वाहा ॥१॥ ॐ अग्नीषोमा यो अद्य वामिदं वचः सपर्यति तस्मै धत्तं सुवीर्यं गवां पोषं स्वश्व्यं स्वाहा ॥२॥ ॐ अग्नीषोमा य आहुतिं यो वां दाशाद्धविष्कृतिम्। स प्रजया सुवीर्यं विश्वमायुर्व्यशनवत् स्वाहा ॥३॥ ॐ अग्नीषोमा चेति तद्वीर्यं वां यदमुष्णीतमवसं पणिगाः। अवातिरतं बृसयस्य शेषोऽविन्दतं ज्योतिरेकं बहुभ्यः स्वाहा ॥४॥ ॐ युवमेतानि दिवि रोचनान्यग्नि[illegible] सोमसक्रतू अधत्तम्। युवं सिन्धूँरभिशस्तर वद्यादग्नीषोमावमुञ्चतं गृभी[illegible] स्वाहा ॥५॥ ॐ आन्यं दिवो मातरिश्वा जभारामथ्न्यादन्यं परिश्येनो अ[illegible] अग्नीषोमा ब्रह्मणा वावृधानोरुं यज्ञाय चक्रथुरुलोकं स्वाहा ॥६॥ ॐ अग्नीषो[illegible] हविषः प्रस्थितस्य वीतं हर्यतं वृषणाजुषेथाम्। सुशर्माणा स्ववसा [illegible] भूतमथाधत्तं यजमानाय शं योः स्वाहा ॥७॥ ॐ अग्निषोमा हविषा सपर्याद्देवद्रीचा मनसा यो घृतेन। तस्य व्रतं रक्षतं पातमंहसो विशे जनाय महि शर्म यच्छतम् स्वाहा ॥८॥ ॐ अग्नीषोमा सवेदसा सहूती वनतं गिरः। सं देवत्रा बभूवथुः स्वाहा ॥९॥ ॐ अग्नीषोमावनेन वां यो वां घृतेन दाशति। तस्मै दीदयतं बृहत् स्वाहा ॥१०॥ ॐ अग्नीषोमाविमानि नो युवं हव्या

जुजोषतम्। आयातमुप नः सचा स्वाहा ॥११॥ ॐ अग्नीषोमा पिपृतमर्वतो न आप्यायन्तामुस्त्रिया हव्यसूदः। अस्मे बलानि मघवत्सु धत्तं कृणुतं नो अध्वरं श्रुष्टिमन्तं स्वाहा॥१२॥

विनियोगः - ॐ आ ते गर्भ इति पञ्चर्चसूक्तस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः, अग्निर्देवता, अनुष्टुप्छन्दः, पायसचरु होमे विनियोगः। (गर्भकामना हेतु)

ॐ आ ते गर्भो योनिमैतु पुमान् बाणइवेषुधिम्। आवीरोऽत्र जायतां पुत्रस्ते दशमास्यः स्वाहा। अग्नये इदम् ॥१॥ ॐ करोमि ते प्राजापत्यैषा गर्भो योनिमैतु ते। अनूनः पूर्णो जायतामश्लोणो पिशाचधीतः स्वाहा। अग्नये इदम्॥२॥ ॐ पुमांस्ते पुत्रो नारितं पुमाननुजायताम्। यानि भद्राणि बीजान्यृषभा जनयन्तु नौ स्वाहा। अग्नये इदम् ॥३॥ ॐ यानि भद्राणि बीजान्यृषभा जनयन्तु नौ स्वाहा। अग्नये इदम्॥४॥ ॐ यानि भद्राणि बीजान्यृषमा जनयन्ति नः तैस्त्वं पुत्रान् विन्दस्व सा प्रसूर्धेनुकाभव स्वाहा अग्नये इदम् ॐ कामः समृद्धयतां मह्यमपराजित मेव मे कामये देव तं मे वायो समर्धय स्वाहा अग्नये इदम्॥५॥

विनियोगः ॐ अग्निरिति पञ्चर्चसूक्तस्य हिरण्यगर्भऋषिर्वरुणो देवता जगतीछन्दः पायसचरु होमे विनियोगः। (संतान की दीर्घायु हेतु)

ॐ अग्निरेतु प्रथमो देवतानां सोऽस्यै प्रजा मुञ्चतु मृत्युपाशात्। तदयं राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेयं स्त्रीपौत्रमघं न रोदात् स्वाहा॥१॥ वरुणायेदम्। ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः। अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दमभिबुध्यतामियम् स्वाहा॥२॥ वरुणायेदम्। ॐ मा ते गृहे निशिघोष उत्थादन्यत्रत्यद्रवत्यः संविशन्तु। मा त्वं विकेश्युर आवधिष्ठाजीवत्पत्नी पतिलोके विराज। पश्यन्ति प्रजां सुमनस्यमानां स्वाहा॥३॥ वरुणायेदम्। ॐ अप्रजस्तां पौत्रमृत्युं पाप्मानमुत वाऽधम शीर्ष्णस्त्रजमिवोन्मुच्य द्विषद्भ्यः प्रतिमुञ्चामि पापं स्वाहा॥४॥ वरुणायेदम्॥ ॐ देवकृतं ब्राह्मण कल्पमानं तेन हन्मि यो निषदः पिशाचान्। क्रव्यादो मृत्यूनधरान्पातयामि दीर्घमायुस्तव जीवन्तु पुत्राः स्वाहा॥५॥ वरुणायेदम्।

विनियोगः - ॐ नेजमेषेति तिसृणां विष्णुस्त्वष्टा गर्भकर्त्तर्षिः विष्णुपृथिवी विष्णवो यथासंख्यं देवता। अनुष्टुप् छन्दः पायसहोमे विनियोगः। (पुत्र कामना हेतु)

ॐ नेजमेष परापतः सुपुत्रः पुनरापत अस्यै मे पुत्रकामायै गर्भमाधेहि यः पुमान् स्वाहा। विष्णवे इदम्॥१॥ ॐ यथेमं पृथिवीमह्युत्ताना गर्भमादवे

एवन्तं गर्भमाधेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा। पृथिव्यै इदम् ॥२॥ ॐ विष्णो श्रेष्ठेन रूपेणास्यां नार्यां गर्भिण्यां पुमासं पुत्रमाधेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा। विष्णवे इदम् ॥३॥

विनियोगः - ॐ सोमो धेनुमिति राहूगणो गौतम ऋषिः सोमो देवता त्रिष्टुप्छन्दः पुत्रकामसिद्ध्ये पायसहोमे विनियोगः।

ॐ सोमो धेनु ठँ सोमो अवन्तमाशु ठँ सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदत्थ्य ठँ सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै स्वाहा। सोमायेदम् ॥१॥ ॐ इहैव स्तम्मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्रुतम्। क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे स्वाहा। सूर्यासावित्र्यै इदं ॥२॥

विनियोगः - ॐ इमात्वमित्यस्य सूर्यासावित्री ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः पायसहोमे विनियोगः।

ॐ इमां त्वमिन्द्रमीढ्वः सुपुगां सुभगां कृणु दशास्यां पुत्रानाधेहि पतिमेकादशं कृधि स्वाहा। सूर्यासावित्र्यै इदम् ॥१॥

विनियोगः - ॐ तां पूषन्निति सूर्यासावित्री ऋषिः सूर्या देवता त्रिष्टुप्छन्दः पायसहोमे विनियोगः।

ॐ तां पूषञ्छिवतमामेरयस्व यस्यां बीजं मनुष्या उवपन्ति। या न ऊरू उशती विश्रयाते यस्यामुशन्तः प्रहराम शेपं स्वाहा। इदं सूर्यासावित्र्यै ॥२॥

आते योनिं गर्भ एतु पुमान् बाण इवेषुधिम्। आवीरोऽत्र जायतां पुत्रस्ते दशमास्यः स्वाहा ॥१॥ ॐ पुमांसं पुत्रं जनयतं पुमाननुजायताम्। भवासि पुत्राणां माता जातानां जनयाश्च यान् स्वाहा ॥२॥ ॐ यानि भद्राणिबीजान्यृषभा जनयन्ति च तैस्त्वं पुत्रं विन्दस्व सा प्रसूर्धेनुका भव स्वाहा। अग्नये इदं ॥३॥ ॐ कृणोमि ते प्राजापत्यमायोनिं गर्भ एतु ते विन्दस्व त्वं पुत्रनारि। यस्तुभ्यं शमसच्छमु तस्मै त्वं भव स्वाहा ॥४॥ ॐ यासां द्यौः पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरुधां बभूव। तास्त्वा पुत्रविद्यायै दैवीः प्रावन्त्वोषधयः स्वाहा ॥५॥ ॐ पर्वताद्दिवो योनेरङ्गादङ्गात्समा भृतम्। शेपो गर्भस्य रेतोधाः सरो पर्णमिवादधत् स्वाहा ॥१॥ ॐ यथेयं पृथिवी महीभूतानां गर्भमादधे। एवादधामि ते गर्भस्तस्मै त्वामवसे हुवे स्वाहा ॥२॥ ॐ गर्भ धेहिसिनीवालि! गर्भं धेहि सरस्वति! गर्भ ते अश्विनोभावाधत्तां पुष्करस्त्रजा स्वाहा ॥३॥ गर्भन्ते मित्रावरुणौ गर्भं देवो बृहस्पतिः। गर्भ त इन्द्रश्चाग्निश्च गर्भ धाता दधातु ते स्वाह ॥४॥ ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु। आसिञ्चतु

प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते स्वाहा ॥५ ॥

ॐ यद्वेद राजा वरुणो यद्वा देवी सरस्वती। यदिन्द्रो वृत्रहा वेद तद्गर्भकरणं पिव स्वाहा ॥६ ॥ ॐ गर्भो अस्यौषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम्। गर्भो विश्वस्य भूतस्य सो अग्रे गर्भमेहधाः स्वाहा ॥७ ॥ ॐ अधिस्कन्द वीरयस्व गर्भमाधेहि योन्याम्। वृषाऽसि वृष्णयावन्। प्रजायै त्वा नयामसि स्वाहा ॥८ ॥ ॐ विजिहीष्व वार्हत्सामे गर्भस्ते योनिमाशयाम्। अदुष्टे देवा पुत्रं सोमया उभया विनम् स्वाहा ॥९ ॥ ॐ धातः श्रेष्ठेन रूपेणास्यां नार्या गवीन्योः। पुमांसं पुत्रामाधेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा। धात्रे इदम् ॥१० ॥ ॐ त्वष्टः! श्रेष्ठेन रूपेणास्यां भार्यां गवीन्योः। पुमांसं पुत्रमाधेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा। त्वष्ट्रे इदम् ॥११ ॥ ॐ सवितः श्रेष्ठेन रूपेणास्यां नार्यां गवीन्योः। पुत्रमाधेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा ॥ इदं सवितायै ॥१२ ॥ ॐ प्रजापते! श्रेष्ठेन रूपेणास्यां नार्यां गवीन्योः पुमांसं पुत्रं जनयतं पुमाननु जायतां भवासि पुत्राणां माता जातानां जयनांश्च यान्त्स्वाहा। यज्ञेश्वरायेदम् ॥१३ ॥ ॐ यज्ञपुरुषाय स्वाहा। इदं यज्ञपुरुषाय ॥१४॥ ओं यदस्य कर्मणो त्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धयः स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते ॥१५ ॥ इति स्विष्टकृद्धोमं कृत्वा -

विनियोगः ॐ अपश्यन्त्वेति द्वयोः प्रजावान्प्राजापत्य ऋषिः, प्रजापतिर्देवता, त्रिष्टुप्छन्दः, हुतशेषपायस चरुप्राशने विनियोगः।

आचार्यः शेषहविष्यांशं गृहीत्वा - ॐ अपश्यं त्वा मनसा चेकितानं तपसो जातं तपसो विभूतम्। इह प्रजामिह रयिंरराणः प्रजायस्व प्रजया पुत्रकाम ॥१ ॥ इति पठित्वा यजमानं भोजयेत्। हविष्यांशस्यार्धेन ॐ अपश्यं त्वा मनसा दीध्यानां स्वायां तनू ऋत्व्ये नाधमानाम्। उपमामुच्चा युवतिर्बभूयाः प्रजायस्व प्रजया पुत्रकामे ॥२ ॥ इति पठित्वा यजमानपत्नीं भोजयेत्।

ततः हस्तौ प्रक्षाल्याचामेत्। ॐ पिशंगभृष्टिमित्यस्य दैवोदासिः परुच्छेपमृषिः, इन्द्रोः देवता, गायत्रीछन्दः, नाभ्यालम्भने विनियोगः।

ॐ पिशङ्गभृष्टि सम्भृणं पिशाचिमिन्द्र सम्भृण सर्वं रक्षो निबर्हय। इति मन्त्रेण पतिपत्नि स्वस्वनाभ्यालम्भनं कुर्याताम्। (इस मन्त्र से पति पत्नि एक दूसरे को ग्रास देवें)

आज्याहुतिः ॐ ब्रह्मणाग्निः साम्विदानो रक्षोहा बाधबामितः। अमीवा

यस्ते गर्भं दुर्णामायोनिमाशये स्वाहा ॥१ ॥ ॐ यस्ते गर्भममीवा दुर्णामायोनि माशये। अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत् स्वाहा ॥२ ॥ ॐ यस्ते हन्ति पतयन्तं निपत्सुं यः सरीसृपम्। जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि स्वाहा ॥३ ॥ ॐ यस्त ऊरूविहरन्त्यन्तरा दम्पतीशये! योनिं यो अन्तरारेदि तमितो नाशयामसि स्वाहा ॥४ ॥ ॐ यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते। प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि स्वाहा ॥५ ॥ ॐ यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मीहयित्वा निपद्यते! प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि स्वाहा ॥६ ॥ ॐ अग्ने! प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्या अपुत्र्यास्तनूस्तामस्या अपजहि स्वाहा ॥७ ॥ ॐ वायो! प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्या अपुत्र्यास्तनूस्तामस्या अपजहि स्वाहा ॥८ ॥ ॐ चन्द्र! प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्या अपुत्र्यास्तनूस्तामस्या अपजहि स्वाहा ॥९ ॥ ॐ सूर्य! प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्या अपुत्र्यास्तनूस्तामस्या अपजहि स्वाहा ॥१० ॥ ॐ अग्निवायुचन्द्रसूर्याः! प्रायश्चित्तयोयूयं देवानां प्रायश्चित्तयःस्थ ब्राह्मणो वो नाथकाम उपधावामि यास्या अपुत्र्यास्तनूस्तामस्या अपहत स्वाहा ॥११ ॥ ॐ मा नो महान्तमुतमानो अर्भकं मा न उक्षन्तमुतमा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरम्मोतमातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र! रीरिषः स्वाहा ॥१२ ॥

आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्रीधेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षोमो न कल्पतां स्वाहा ॥१ ॥ ॐ अहो मुचे प्रभरे मनीषामसुत्राव्णे सुमतिमावृणानः। इदमिन्द्रं प्रतिहव्यं गृभाय सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः स्वाहा ॥२ ॥ ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रावसवः समिन्धता, पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ! यज्ञः घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः स्वाहा ॥२ ॥ ततो भूराद्या नवाहुतयः। (इमे नव मंत्राः पूजा होम प्रकरणे द्रष्टव्याः)

पश्चात् प्रायश्चित होम करके नवाहुति देकर पूर्णाहुति देवें।

एवं प्रायश्चित्तहोमान्तं कृत्वोक्तक्रमेण विधिवत्सर्वं समाप्य विप्रेभ्योगां सुवर्णादि दक्षिणाञ्च दत्वा अत्यम्लं तिक्तादिकं विहाय केशरादिसंयुक्तं पायसादिवृष्यान्नं भक्षयेत् स्त्री तु लघ्वाहारं तैलपकवटकादीन्सह खादयेत् ।

तस्यामेव निशायां दम्पती दर्भास्तरणे प्राक्शिरसौ शयीयातां पश्चाद् गर्भाधानं कुर्यात्,

गर्भाधान मन्त्रः - **ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणिपि ठँ शतु। आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते।**

॥ इति कर्मठगुरौ पुत्रकामेष्टिविधिः ॥

॥ पुत्रप्राप्ति के अन्यप्रयोगः ॥

द्वादशाक्षरमन्त्रोः - ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा।

चूतवृक्षसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः।
अपुत्रो लभते पुत्रं नान्यथा शंकरोदितम्।

॥ पुत्रोत्पत्तिकारकयन्त्रम् ॥

शंकरमातुशंकरपितु

४०	४२	४	५
१	३	४८	४३
४६	४७	५	४
२	७	४७	४४

कौरवरनलक्ष्मीपति

शंकरराह्वैं चारों दीप

इस यन्त्र को अच्छे नक्षत्र और शुभ दिन में गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर, गूगल की धूप देकर सोना या चाँदी से मढा कर वंध्या स्त्री के कण्ठ में बाँधे तो जिस स्त्री के लड़का न होता हो अथवा होकर मर जाता हो उसके निश्चय पूर्वक पुत्र उत्पन्न होकर जीता है। इस में संदेह नहीं है।

॥ अथशीघ्रप्रसवोपायः ॥ (संस्कार भास्करे)

हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शवरी नाम यक्षिणी।
तस्या नूपुरशब्देन विशल्या स्यात्तु गर्भिणी स्वाहा ॥१॥

इति मंत्रेणैकविंशतिदूर्वांकुरैरेकपलं तिलतैलं प्रदक्षिणमावर्तयन्नष्टशतं मन्त्रयित्वा तत्तैलं किञ्चित्पाययेच्छेषमुदरे लेपयेदिति।

८	३	४
१	५	९
६	७	२

यन्त्रप्रकारः - पहले ८, ३, ४। १,५,९। ६,७,२। इस क्रम से यन्त्र लिखें। **गजाग्निवेदा उडुराट्शरांकार सर्पिपक्षा इति हि क्रमेण। लिखेत्प्रसूतेः समये गृहे वै सुखेन नार्यः सुवते हि शीघ्रमिति।**

॥ अथ मृत्वत्सा हेतु प्रयोगः॥

मृत्वत्सा वह कहलाती है जिसके पुत्र पैदा होकर एक पक्ष, मास, या एक दो वर्ष में मर जाते है।

लक्षणं यत्रेश्च -

अत्र योगः प्रकर्तव्यः यथाशंकरभाषितम् ।
मार्गशीर्षेऽथवा ज्येष्ठे पूर्णायां लेपिते गृहे ॥
नूतनं कलशं पूर्णं गन्धतोयेन कारयेत् ।
शाखाफलसमायुक्तं नवरत्नसमन्वितम् ॥
सुवर्णमुद्रिकायुक्तं षट्कोणमण्डलस्थितम् ।
तन्मध्ये पूजयेद्देवीमेकांतीं नाम विश्रुताम् ॥
गंधपुष्पाक्षतैर्धूपैर्दीपैर्नैवेद्य संयुतैः ।
अर्चयेद्भक्तिभावेन मधुना दुग्धमाषकैः ॥
वाराही च तथाचान्द्री ब्राह्मी माहेश्वरी तथा ।
कौमारी वैष्णवी देवी षट्सु पत्रेषु मातरः ॥
पूजयेन्मन्त्रभावेन दधिपिंडानि कारयेत् ।
सप्तसंख्याप्रमाणानि षट्संख्या मातृषट्कतः ॥
सप्तमं तुपृथग्धृत्वा शुचिस्थाने विशेषतः ।
तद्भुक्त्वा गृहमागच्छेत् कन्या वा वटुकस्त्रियः ॥
भोजयेद्दक्षिणां दत्त्वा प्रमाणं कारयेत्ततः ।
विसृज्य देवतां चाथ नद्यां तत्कलशोदकम् ॥
सुकुलं वीक्षयेद्धीमाञ्शुभेन शुभमादिशेत् ।
विपरीतं पुनः कुर्याद्यागं तावत्सुसिद्धिदम् ॥
प्रतिवर्षमिदं कुर्याद्दीर्घजीवी सुतो भवेत् ।
सिद्धियोगमिदं ज्ञानं नान्यथा शंकरोदितम् ॥

अस्य मन्त्रः - ॐ नमः परब्रह्मपरमात्मने अमुके गृहे गर्भजीवितं सुतान् कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति मन्त्रमयुतं जपेत् सिद्धिः॥

षट्कोण मध्य में कांतीदेवी का पूजन करें। षट्कोणों में वाराही, ऐन्द्री, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी एवं वैष्णवी का पूजन करें। इनको दधिपिण्ड प्रदान करें।

सातवाँ पिण्ड शुचि स्थान पर रखें। कन्या वटुक भोजन करायें।

॥ काकवन्ध्या हेतु प्रयोगः॥

अथ काकवन्ध्या लक्षणम् -

पूर्वं पुत्रवती या सा क्वचिद्वन्ध्या भवेद्यदि ।
काकवन्ध्या तु सा ज्ञेया चिकित्सा तत्र कथ्यते ॥
विष्णुक्रांतां समूलां तु पिट्वा महिषिदुग्धके ।
महिषी नवनीतेन ऋतुकाले तु भोजयेत् ॥
एवं सप्तदिनं कुर्यात् पुनर्गर्भश्च लभ्यते ।

तत्रमन्त्रः - ॐ नमः शक्तिरूपाय अमुकगृहे पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा। अष्टोत्तरशतं जपेत् सिद्धिः॥

औषधीप्रयोगो यथा - तत्रादौ वन्ध्याशुद्धि प्रयोगः। (तन्त्रसारे) एकविंशत्यहं यावद्दुग्धेन सह मेथिकाम्। मेथीतोलकमेकं च खंडकं तोलकद्वयम् । घृतं तोलकमेकं च पिवेद्दुग्धेन मिश्रितम्। मृतवत्सा मृतगर्भा काकवंध्या तथैव च ॥ पुत्रहीना च वन्ध्या च पंच चैव प्रकीर्तिताः । संहरेत्सर्व-दोषांश्च मेथीभक्षणमुत्तमम॥ नाडीशुद्धायां स्त्रियामुपरि ऋतुकालमिदमौषधं देयम् ।पलाशपत्रयोगः (दत्तात्रेयतन्त्रे) - पत्रमेकं पलाशस्य गर्भिणीपयसान्वितम्। ऋत्वंते तानि पीतानि वंध्या भवति गर्भिणी ॥

तत्रमन्त्रः - ॐ नमः सिद्धिरूपाय अमुकी पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा॥ अष्टोत्तरशतं जपेत् सिद्धिः॥

॥ गर्भ स्तम्भन मन्त्र॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वं वटुकाय आपदुद्धारणाय श्रीमते वीर वटुकाय ते नमः। कष्टं नाशय गर्भ-पक्षात् सौख्यं वितर सर्वान् कामान् पूरय पूरय वं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ।

यह मंत्र १००० जप करने से सिद्धि प्रदान करता है।

अथानेकयोगाः (चिकित्साशास्त्रे)

समूलपत्रां सर्पाक्षीं रविवारे समुद्धरेत्। एकवर्णगवां क्षीरैः कन्याहस्तेन पेषयेत्॥ ऋतुकाले पिबेद्वंध्या पलार्द्ध तद्दिने दिने। क्षीरशाल्यन्नमुद्गांश्च लध्वाहारं

प्रदापयेत्॥ एवं सप्तदिनं कुर्याद्वंध्याऽपि लभते सुतम्॥ श्वेतायाः कंटकार्याश्च मूलं तद्वच्च गर्भकृत्। न कर्म कारयेत् किंचिद्वर्जयेच्छीतमातपम्॥ शिफावहि-शिखायास्तु क्षीरेण परितोषितम्। पिबेदृतुमती नारीगर्भधारणहेतवे॥ अश्वगंधाकषायेण सिद्धं दुग्धं घृतान्वितम्। ऋतुस्नातांगना प्रातः पीत्वा गर्भं दधाति॥

॥ सर्वरोगप्रशमनोपायः ॥

कर्मदोष के उद्भव के कारण रोग शोक महाव्याधि की प्राप्ति होती है। जहाँ कर्मदोष का प्रभाव विशेष है वहाँ औषधी से व्याधि शमन नहीं होती

पूर्वजन्मकृतं पापं व्याधिरूपेण बाधते।
महारुद्रविधानेनासाध्यो रोगोऽपि शाम्यति॥
अपामार्जनसंज्ञेन मालामन्त्रेण मार्जयेत्।
मार्जनाद्रोगिणः सर्वे रोगा नश्यंत्यसंशयम्॥१॥
अच्युतानन्तगोविन्देत्येवं नामत्रयं हरेः।
सर्वरोगोपशात्यर्थं सततं व्याधिमान् जपेत्।
सर्वेषु ज्ञातरोगेषु प्रदद्यात्सततं नरः॥२॥
पानीयं पायसं मुद्गाः शकरां घृतसंयुताम्।
प्रतिकूलग्रहाणां च जपं होमं च पूजनम्॥३॥
प्रायश्चित्तं तु तत्कृत्वा चिकित्सामारभेत्ततः।
प्रदद्यात्सर्वरोगघ्नं छायापात्रं विधानतः॥४॥

रुद्रार्चन अभिषेक मृत्युञ्जय मन्त्र जाप अपामार्ज़न स्तोत्र मन्त्र के मार्जन से व्याधिदूर होवें। '**अच्युतानन्तगोविन्दम्**' इन तीन नामों का स्मरण करें। छाया पात्र का दान व ग्रहों की शान्ति करायें। काँसी का छायापात्र होवे उसे घृत से पूर्ण करे, स्वर्ण उसमें रखें। संकल्प पूर्वक दान करें।

॥ दानमन्त्रः ॥

आयुर्बलं यशो वर्च्च आज्य स्वर्ण तथाऽमृतम्।
आधारं तेजसा यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥
मन्त्रेणानेन विप्राय सर्वरोगोपशान्तये।
पात्रं सुवर्णसहितं दद्यात्संकल्पपूर्वकम्॥

॥ अथकुष्ठरोगोपशमनविधानम् ॥

तत्र जन्तुघातकः कुष्ठरोगी वस्त्रहारी श्वेतकुष्ठी भवति सांतपनं कुर्य्यात्। तदुक्तम् (महार्णवे)-

''यो नरो हन्ति वै जन्तून्कुष्ठरोगी भवतु सः। स च सांतपनं कुर्याद्भगवानाह शंकरः''। इति॥

अन्यायदंण्डकारी च मुखकृष्णो भवति। असौ कृच्छ्रातिकृच्छ्रचांद्रायणं कुर्य्यात्। क्षुद्रप्राणिहिंसको विवर्णमुखः स चांद्रायणमतिकृच्छ्रं च कृत्वा राजतवृषभदानं कुर्य्यात्। ब्रह्महा नरकस्यांते पाण्डुकुष्ठी प्रजायते। प्रायश्चित्तं प्रकुर्वीत यथोक्तमृषिभाषितम्।

(महाभारते) हिरण्यं रक्तवासांसि पञ्चाशद्विप्रभोजनम्। सहस्त्रकलशस्नानं तस्य रोगोपशांतये। इति अत्र सहस्त्रकलशस्नानं शालग्रामोपरिकार्यम्। पुरुषसूक्तं सहस्त्रनामस्तोत्रम्। उद्यन्नद्येत्यृचो जपेत्प्रत्यष्टोत्तरायुतं चरुघृताभ्यां जुहुयात्। अथवा सूर्याराधनम्। आदित्य हृदयजपं महाभारतश्रवणं च कुर्य्यात्।

॥ ग्रहबाधा, ज्वर नाशक विघ्नेश मंत्र ॥

ॐ नमो गणपतये महावीर! दशभुज! मदनकाल विनाशन! मृत्युं हन हन धम धम मथ मथ कालं संहर संहर, सर्वग्रहांश्चूर्णय चूर्णय नागान् मोटय मोटय रुद्ररूप त्रिभुवनेश्वर सर्वतोमुख! हुँ फट् स्वाहा॥

॥ अथ ज्वरशमन प्रयोगाः ॥

ज्वर के कई प्रकार पौराणिक ग्रन्थों में आये हैं। ज्वर, महाज्वर, तृतीयाहिक ज्वर, चातुर्थिकज्वर, ब्रह्मज्वर, विष्णुज्वर, रुद्रज्वर, माहेश्वरज्वर, शीतज्वर, तीक्ष्णज्वर, दारुणज्वर, इत्यादि के प्रकोप शमन हेतु शिवरुद्रानुष्ठान, अपामार्जन प्रयोग, जातवेद दुर्गा मन्त्र प्रयोग प्रचलित है। बाणासुर वध के अन्तर्गत शिव कृष्ण युद्ध में ज्वर शान्ति स्तोत्र है उसका पाठ करना भी ठीक है।

जातवेद दुर्गामन्त्र-

ॐ जातवेदसे सुनवा सोममरातीयतो निदहातिवेदः ।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेवसिंधुं दुरितात्यग्निः ॥

विनियोगः - ॐ जातवेदसः इति मन्त्रस्य मारीचः काश्यप ऋषिः।

त्रिष्टुप्छन्दः। जातवेदोग्निदुर्गा देवता। रोगशमने विनियोगः।

ऋषिन्यासः - ॐ मारीचकाश्यपऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। ॐ जातवेदोग्निदुर्गादेवताभ्यां नमः हृदये। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ जातवेदसेसुनवाम अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ सोममरातीयतो तर्जनीभ्यां नमः। निदहाति वेदः मध्यमाभ्यां नमः। सनः पर्षदति अनामिकाभ्यां नमः। दुर्गाणिविश्वानावेव कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सिन्धुं दुरितात्यग्निः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

इसी तरह हृदयादि षडङ्गन्यास करें।

मंत्रवर्णसहस्राणि (४४०००) जपेन्मन्त्रं विशालधीः।

तदंते तिलसिद्धार्थ चित्रमूलेः समिद्वैः।
क्षीरद्रुमाणामाज्येन हविषान्नैघृतान्वितै॥

ज्वरशमन मन्त्रः -

त्रिपाद्भस्म प्रहरणस्त्रिशिराश्च त्रिलोचनः।
स मे प्रीतः सुखं दद्यात्यसर्वामयपतिर्ज्वरः॥

विनियोगः - अस्य श्री ज्वर मन्त्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। महादेवो देवता। सकलज्वर शान्त्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - कालाग्निरुद्र ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। महादेवो देवता हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ज्वरगायत्री - ॐ भस्मायुधाय विद्महे ऐं क्रीं एकदंष्ट्राय धीमहि। तन्नो ज्वरः प्रचोदयात्।

॥ अथ ज्वरहरण अपामार्जन स्तोत्रम् ॥

(सर्वरोगप्रशमनार्थे)

पद्मपुराण में उत्तरखण्ड में शिव पार्वती संवाद अन्तर्गत दालभ्य द्वारा पुलस्त्य ऋषि से पूछने पर बताये गये विष्णु अपामार्जन स्तोत्र का वर्णन है।

स्तोत्र में श्लोक १ से १६ तक ज्ञानखण्ड है। श्लोक १७ से श्लोक २९ तक विष्णुन्यास है मन्त्र बोलते हुये उक्त अंगों में न्यास करें।

नमः श्री परमार्थाय से वामनं च सुखप्रदम् इन नामों का स्मरण कर ॐ

विष्णवे नमः से सर्वाङ्ग न्यास करें। ३५ वें श्लोक में **ॐ निष्कल्मषाय** से स्तोत्र प्रारंभ होगा जो ८८ श्लोक तक है। बार बार पाठ करने पर ३५ से ८८ श्लोक की ही आवृत्तियाँ करनी चाहिये। ८९ से १०७ श्लोक महात्म्य खण्ड के है इन्हें उत्तरार्ध में पढ़ें।

पाठ करते समय कुशा के द्वारा जल अभिमन्त्रित करते रहे उत्तरार्ध में स्तोत्र मन्त्रों से रोगी का मार्जन करें।

॥ महादेव उवाच ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि अपामार्जनमुत्तमम् ।
पुलस्त्येन यथोक्तं तु दालभ्याय महात्मने ॥१॥
सर्वेषां रोगदोषाणां नाशनं मङ्गलप्रदम् ।
तत्तेहं तु प्रवक्ष्यामि शृणु त्वं नगनंदिनि ॥२॥

॥ श्रीदालभ्यउवाच ॥

भगवन्प्राणिनः सर्वे विषरोगाद्युपद्रवैः ।
कुष्ठग्रहाभिभूताश्च सर्वकाले ह्युपद्रुताः ॥३॥
अभिचारिक कृत्याद्या बहुरोगाश्च दारुणाः ।
न भवंति मुनिश्रेष्ठ तन्मे त्वं वक्तुमर्हसि ॥४॥

॥ पुलस्त्य उवाच ॥

व्रतोपवासनियमैर्विष्णुर्वै तोषितस्तु यैः ।
ते नरा नैव रोगार्ता जायन्ते मुनिसत्तम ॥५॥
यैर्न कृतं व्रतं पुण्यं न दानं न तपस्तदा ।
न तीर्थे देवपूजा च नान्नं दत्तं तु भूरिशः ॥६॥
ते वै लोकास्तदा ज्ञेया रोगदोषैः प्रपीड़िताः ।
आरोग्यं परमामृद्धिं मनसा यद्यदिच्छति ॥७॥
तत्तदाप्नोत्य संदिग्धं विष्णोः सेवी विशेषतः ।
नाधिं प्राप्नोति न व्याधिं न विषग्रहबन्धनम् ॥८॥
कृत्यास्पर्शभयं नापि तोषिते मधुसूदने ।
समस्तदोषनाशश्च सर्वदा च शुभा ग्रहाः ॥९॥
देवानामप्यधृष्योऽसो तोषिते च जनार्दने ।
यः सर्वेषु च भूतेषु यथात्मनि तथा परे ॥१०॥

उपवासादिना तेन तोषितो मधुसूदनः ।
तोषिते तत्र जायन्ते नराः पूर्णमनोरथाः ॥११॥
अरोगाः सुखिनो भोग भोक्तारो मुनिसत्तम ।
तेषां च शत्रवो नैव न च रोगाभिचारिकम् ॥१२॥
ग्रहरोगादिकं चैव पापकार्यं न जायते ।
अव्याहतानि कृष्णस्य चक्रादीन्यायुधानि वै ॥१३॥
रक्षंति सकलापद्भ्यो येन विष्णुरुपासितः ।

॥ श्रीदालभ्यउवाच ॥

अनाराधितगोविन्दा ये नरा दुःखभागिनः ।
तेषां दुखाभिभूतानां यत्कर्तव्यं दयालुभिः ॥१४॥
पश्यद्भिः सर्वभूतस्थं वासुदेवं सनातनम् ।
समदृष्टिभिरप्यत्र तन्मे ब्रूहि विशेषतः ॥१५॥

॥ श्रीपुलस्त्य उवाच ॥

तद्वक्ष्यामि मुनिश्रेष्ठ समाहितमनाः शृणु ।
रोगदोषाशुभ हरं विज्वरादिविनाशनम् ॥१६॥

॥ अथविष्णुन्यासः ॥

शिखायां श्रीधरं न्यस्य शखाधः श्रीकरं तथा ।
हृषीकेशं तु केशेषु मूर्ध्नि नारायणं परम् ॥१७॥
ऊर्ध्वश्रोत्रे न्यसेद्विष्णुं ललाटे जलशायिनम् ।
विभुं वै भ्रूयुगे न्यस्य भ्रूमध्ये हरिमेव च ॥१८॥
नरसिंहं नासिकाग्रे कर्णयोरर्णवेशयम् ।
चक्षुषोः पुण्डरीकाक्षं तदधो भूधरं न्यसेत् ॥१९॥
कपोलयोः कल्किनाथं वामनं कर्णमूलयोः ।
शङ्खिनं शङ्खयोर्न्यस्य गोविन्दं वदने तथा ॥२०॥
मुकुन्दं दन्तपङ्क्तौ तु जिह्वायां वाक्पतिं तथा ।
रामं हनौ तु विन्यस्य कंठे वैकुण्ठमेव च ॥२१॥
बलघ्नं बाहुमूलाधश्चांसयोः कंसघातिनम् ।
अजं भुजद्वये न्यस्य शार्ङ्गपाणिं करद्वये ॥२२॥

संकर्षणं कराङ्गुष्ठे गोपमंगुलिपंक्तिषु ।
वक्षस्यधोक्षजं न्यस्य श्रीवत्सं तस्य मध्यतः ॥२३॥
स्तनयोस्त्वनिरुद्धं च दामोदरमथोदरे ।
पद्मनाभं तथा नाभौ नाभ्यधश्चापि केशवम् ॥२४॥
मेढ्रे धराधरं देवं गुदे चैव गदाग्रजम् ।
पीताम्बरधरं कट्यामूरुयुग्मे मधोर्द्विषम् ॥२५॥
मुरद्विषं पिण्डिकयोर्जानुयुग्मे जनार्दनम् ।
फणीशं गुल्फयोर्न्यस्य पादयोश्च त्रिविक्रमम् ॥२६॥
पादांगुष्ठे श्रीपतिं च पादाधो धरणीधरम् ।
रोमकूपेषु सर्वेषु विष्वक्सेनं न्यसेद्बुधः ॥२७॥
मत्स्यं मांसे तु विन्यस्य कूर्मं मेदसि विन्यसेत् ।
वाराहं तु वसामध्ये सर्वास्थिषु तथाच्युतम् ॥२८॥
द्विजप्रियं तु मज्जायां शुक्रे श्वेतपतिं तथा ।
सर्वाङ्गे यज्ञपुरुषं परमात्मानमात्मनि ॥२९॥

॥ मार्जन प्रयोग विधानम् ॥

एवं न्यासविधिं कृत्वा साक्षान्नारायणो भवेत् ।
यावन्न व्याहरेत्किंचित्तावद्विष्णुमयः स्थितः ॥३०॥
गृहीत्वा तु समूलाग्रान्कुशाञ्शुद्धान्समाहितः ।
मार्जयेत्सर्वगात्राणि कुशाग्रैरिह शान्तिकृत् ॥३१॥
विष्णुभक्तो विशेषेण रोगग्रहविषार्दिते ।
विषार्तानां रोगिणां च कुर्याच्छांतिमिमां शुभाम् ।
जायते तेन भो विप्र सर्वरोगप्रणाशनम् ॥३२॥

निम्न नामों का स्मरण कर ॐ विष्णवे नमः से सर्वाङ्ग न्यास करें -

नमः श्री परमार्थाय पुरुषाय महात्मने ।
अरूप बहुरूपाय व्यापिने परमात्मने ॥३३॥
वाराहं नारसिंहं च वामनं च सुखप्रदम् ।
ध्यात्वा कृत्वा नमो विष्णोर्नामान्यंगेषु विन्यसेत् ॥३४॥

॥ अथ स्तोत्रम् ॥

ॐ निष्कल्मषाय शुद्धाय व्याधिपापहराय वै ।
गोविन्दपद्मनाभाय वासुदेवाय भूभृते ॥३५॥
नमस्कृत्वा प्रवक्ष्यामि यत्तत्सिध्यतु मे वचः ।
त्रिविक्रमाय रामाय वैकुण्ठाय नराय च ॥३६॥
श्रीवाराहनृसिंहाय वामनाय महात्मने ।
हयग्रीवाय शुभ्राय हृषीकेश हराशुभम् ॥३७॥
परोपतामहितं प्रमुक्तं चाभिचारिकम् ।
गरस्पर्शमहारोगप्रयोगं जरया जर ॥३८॥
नमोस्तु वासुदेवाय नमः कृष्णाय खड्गिने ।
नमः पुष्करनेत्राय केशवायादिचक्रिणे ॥३९॥
नमः किंजल्कवर्णाग्रयपीतनिर्मलवाससे ।
महादेववपुष्कंधधृतचक्राय चक्रिणे ॥४०॥
दंष्ट्रोदधृतक्षितितल त्रिमूर्तिपतये नमः ।
महायज्ञवराहाय श्रीवल्लभ नमोस्तु ते ॥४१॥
तप्तहाटक केशांत ज्वलत्पावकलोचन ।
वज्राधिक नखस्पर्शदिव्यसिंह नमोस्तु ते ॥४२॥
कश्यपायातिह्लस्वाय ऋग्यजुःसामलक्षणः ।
तुभ्यं वामनरूपाय क्रमते गां नमोनमः ॥४३॥
वाराहाशेषदुःखानि सर्वपापफलानि च ।
मर्दमर्द महादंष्ट्र मर्दमर्द च तत्फलम् ॥४४॥
नृसिंह कुलिशस्पर्शदंतप्रांत नखोज्ज्वल ।
भंजभंज निनादेन दुःखान्यस्यार्त्तिनाशन ॥४५॥
ऋग्यजुः सामभिर्वाग्भिः कामरूपधराद्रिधृक् ।
प्रशमं सर्वदुखानि नय त्वस्य जनार्दन ॥४६॥
ऐकाहिकं द्वाहिकं च तथा त्रिदिवसज्वरम् ।
चातुर्थिकं तथात्युग्रं तथा वै सततज्वरम् ॥४७॥
दोषोत्थं सन्निपातोत्थ तथैवाङ्गतुकज्वरम् ।
शमं नयत गोविन्दो भित्त्वा छित्त्वास्य वेदनाम् ॥४८॥

नेत्रदुःखं शिरोदुःखं दुःखं तूदरसंभवम् ।
अनुच्छ्वासं महाश्वासं परितापं सवेपथुम् ॥४९॥
गुदघ्राणांघ्रिरोगांश्च कुष्ठरोगं तथा क्षयम् ।
कामलादींस्तथा रोगान्प्रमेहादींश्च दारुणान् ॥५०॥
ये वातप्रभवा रोगा लूताविस्फोटकादयः ।
ते सर्वे विलयं यान्तु वासुदेवापमार्जिताः ॥५१॥
विलयं यांति ते सर्वे विष्णोरुच्चारणेन वा ।
क्षयं गच्छंतु चाशेषास्ते चक्राभिहता हरेः ॥५२॥
अच्युतानंतगोविन्दनामोचारण - भेषजात् ।
नश्यति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥५३॥
स्थावरं जंगमं यच्च कृत्रिमं चापि यद्विषम् ।
दंतोद्भवं नखोद्भूतमाकाशप्रभव च यत् ॥५४॥
भूतादिप्रभवं यच्च विषमत्यंतदुःसहम् ।
शमंमयतु तत्सर्वे कीर्तितोस्य जनार्दनः ॥५५॥
ग्रहान्प्रेतग्रहांश्चैव तथान्याञ्छाकिनीग्रहान् ।
मुखमण्डलिकान् क्रूरान् रेवतीं वृद्धिरेवतीम् ॥५६॥
वृद्धिकाख्यान्ग्रहांश्चोग्रांस्तथा मातृग्रहानपि ।
बालस्य विष्णोश्चरितं हंतुं बालग्रहानपि ॥५७॥
वृद्धानां ये ग्रहा केचिद्-बालानां चापि ये ग्रहाः ।
नृसिंहदर्शनादेव नश्यंते तत्क्षणादपि ॥५८॥
दंष्ट्राकरालवदनो नृसिंहो दैत्यभीषणः ।
तं दृष्ट्वा ते ग्रहाः सर्वे दूरं यांति विशेषतः ॥५९॥
श्रीनृसिंह महासिंह ज्वालामालोज्ज्वलानन ।
ग्रहानशेषान्सर्वेश नुद स्वास्यविलोचन ॥६०॥
ये रोगा ये महोत्पाता ये द्विषो ये महाग्रहाः ।
यानि च क्रूरभूतानि ग्रहपीडाश्च दारुणाः ॥६१॥
शस्त्रक्षतेषु ये रोगा ज्वालगर्दभिकादयः ।
विस्फोटकादयो ये च ग्रहा गात्रेषु संस्थिताः ॥६२॥

त्रैलोक्यरक्षाकर्त्तस्त्वं दुष्टदानववारण ।
सुदर्शनमहातेजश्छिंधि छिंधि महाज्वरम् ॥६३॥
छिन्धि वातं च लूतां च छिंधि घोरं महाविषम् ।
उद्दंडामरशूलं च विषज्वालासगर्दभम् ॥६४॥
ॐ ह्लां ह्लां ह्लूं ह्लूं प्रधारेण कुठारेण हन द्विषः ।
ॐ नमो भगवते सुदर्शनाय दुःखदारण विग्रह ॥६५॥
यानि चान्यानि दुष्टानि प्राणिपीडाकराणि वै ।
तानि सर्वाणि सर्वात्मा परमात्मा जनार्दनः ॥६६॥
किंचिद्रूपं समास्थाय वासुदेव नमोस्तु ते ।
क्षिप्त्वा सुदर्शनं चक्रं ज्वालामालाविभीषणम् ॥६७॥
सर्वदुष्टो पशमनं कुरु देववराच्युत ।
सुदर्शन महाचक्र गोविन्दस्य वरायुध ॥६८॥
तीक्ष्णधार महावेग सूर्यकोटिसमद्युते ।
सुदर्शन महाज्वाल छिंधि छिंधि महारव ॥६९॥
सर्वदुःखानि रक्षांसि पापानि च विभीषण ।
दुरितं हन चारोग्यं कुरु त्वं भो सुदर्शन ॥७०॥
प्राच्यां चैव प्रतीच्यां च दक्षिणोत्तरतस्तथा ।
रक्षां करोतु विश्वात्मा नरसिंहः स्वगर्जितैः ॥७१॥
भूम्यंतरिक्षे च तथा पृष्ठतः पार्श्वतोग्रतः ।
रक्षां करोतु भगवान् बहुरूपी जनार्दनः ॥७२॥
यथा विष्णु मयं सर्वं सदेवासुरमानुषम् ।
तेन सत्येन सकलं दुःखमस्य प्रणश्यतु ॥७३॥
यथा योगेश्वरो विष्णुः सर्ववेदेषु गीयते ।
तेन सत्येन सकलं दुःखमस्य प्रणश्यतु ॥७४॥
परमात्मा यथा विष्णुर्वेदांगेषु च गीयते ।
तेन सत्येन विश्वात्मा सुखदोऽस्त्वस्य केशवः ॥७५॥
शान्तिरस्तु शिवं चास्तु प्रणाशं यातु चासुखम् ।
वासुदेवशरीरोत्थैः कुशैः संमार्जितं मया ॥७६॥

अपामार्जित गोविन्द नमो नारायणस्तथा ।
तथापि सर्वदुःखानां प्रशमो वचनाद्धरेः ॥७७॥
शान्ताः समस्तदोषास्ते ग्रहाः सर्वे विषाणि च ।
भूतानि च प्रशाम्यंति संस्मृते मधुसूदने ॥७८॥
एते कुशा विष्णुशरीरसंभवा जनार्दनोऽहं स्वयमेव चाग्रतः ।
हतं मया दुःखमशेषमस्य वै स्वस्थो भवत्वेष वचो यथा हरेः ॥७९॥
शांतिरस्तु शिवं चास्तु दुःखं च यत् प्रणश्यतु ।
यदस्य दुरितं किंचित्क्षिप्तं तल्लवणांभसि ॥८०॥
स्वास्थ्यमस्य सदैवास्तु हृषीकेशस्य कीर्त्तनात् ।
यद्योतोत्रागतं पापं तत्तु तत्र प्रगच्छतु ॥८१॥
एतद्रोगेषु पीडासु जंतूनां हितमिच्छुभिः ।
विष्णुभक्तैश्च कर्तव्यमपामार्जनकं परम् ॥८२॥
अनेक सर्वदुःखानि विलयं यांत्यशेषतः ।
सर्वपापविशुद्ध्यर्थं विष्णोश्चैवापमार्जनम् ॥८३॥
आर्द्रेशुष्कं लघु स्थूलं ब्रह्महत्यादिकं तु यत् ।
तत्सर्वे नश्यते तूर्णं तमोवद्र विदर्शनात् ॥८४॥
नश्यंति रोगदोषाश्च सिंहात्क्षुद्रमृगा यथा ।
ग्रहभूतपिशाचादिः श्रवणादेव नश्यतु ॥८५॥
द्रव्यार्थं लोभपरमैर्न कर्तव्यं कदाचन ।
कृतेऽपामार्जने किंचिन्न ग्राह्यं हितकाम्यया ॥८६॥
निरपेक्षैः प्रकर्तव्यमादिमध्यांतबोधकैः ।
विष्णुभक्तैः सदाशांतैरन्यथा सिद्धिदं भवेत् ॥८७॥
अतुलेयं नृणां सिद्धिरियं रक्षा परा नृणाम् ।
भेषजं परमं ह्येतद्विष्णोर्यदपमार्जनम् ॥८८॥

॥ महात्स्य ॥

उक्तं हि ब्रह्मणा पूर्वं पुलस्त्याय सुताय वै ।
एतत्पुलस्त्यो हि मुनिर्दालभ्यायोक्तवान्स्वयम् ॥८९॥
सर्वभूतहितार्थाय दालभ्येन प्रकाशितम् ।
त्रैलोक्ये तदिदं विष्णोः समास्तं चापमार्जनम् ॥९०॥

तवाग्रे कथितं देवि यतो भक्तासि मे सदा ।
श्रुत्वा तुसर्वे भक्त्या च रोगान्दोषान्व्यपोहति ॥९१॥

॥ महादेव उवाच ॥

अपामार्जनकं दिव्यं परमाद्भुतमेव च ।
पठितव्यं विशेषेण पुत्रकामार्थसिद्धये ॥९२॥
एतत्स्तोत्रं पठेत्प्राज्ञः सर्वकामार्थ सिद्धये ।
एककालं द्विकालं वा ये पठंति द्विजातयः ॥९३॥
आयुश्च श्रीर्बलं तस्य वर्द्धयंति दिने दिने ।
ब्राह्मणो लभते विद्यां क्षत्रियो राज्यमेव वा ॥९४॥
वैश्यो धनसमृद्धिं च शूद्रो भक्तिं च विन्दति ।
अन्यैश्च लभ्यते भक्तिः पठनाच्छ्रवणाज्जपात् ॥९५॥
सामवेदफलं तस्य जायते नगनन्दिनि ।
अखिलं पापसंघातं तत्क्षणादेव नश्यति ॥९६॥
इति ज्ञात्वा तु भो देवि पठितव्यं समाहितैः ।
पुत्राश्चैव तथा लक्ष्मीः संपूर्णा भवति ध्रुवम् ॥९७॥
लिखित्वा भूर्जपत्रे तु यो धारयति वैष्णवः ।
इहलोके सुखं भुक्त्वा याति विष्णोः परं पदम् ॥९८॥
पठित्वा श्लोकमेकं तु तुलसीं यः समर्पयेत् ।
सर्व तीर्थं कृतं तेन तुलस्या पूजने कृते ॥९९॥
एतत्स्तोत्रं तु परमं वैष्णवं मुक्तिदायकम् ।
पृथ्वीदानसमं पाठाद्विष्णुलोकं तु गच्छति ॥१००॥
जपेत्स्तोत्रं विशेषेण विष्णुलोकस्य वांछया ।
बालानां जीवनार्थाय पठितव्यं समाहितैः ॥१०१॥
रोगग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम् ।
भूतग्रहविषं चैव पठनादेव नश्यति ॥१०२॥
कंठे तुलसिजां मालां धृत्वा विप्रो हि यः पठेत् ।
स च वै वैष्णवो ज्ञेयो विष्णुलोकं स गच्छति ॥१०३॥
कंठे माला धृता येन शङ्खचक्रादि [illegible]ह्नितः ।
[illegible]: प्रोच्यते विप्रः स्तोत्रं चैतत्[illegible]न्सदा ॥१०४॥

इमं लोकं परित्यज्य विष्णुलोकं स गच्छति ।
मोहमायापरित्यक्तो दम्भ तृष्णाविवर्जितः ॥१०५॥
एतत्स्तोत्रं पठेद्दिव्यं परं निर्वाणमाप्नुयात् ।
ते धन्याः संति भूर्लोके ये विप्रा वैष्णवाः स्मृताः ॥१०६॥
स्वात्मा वै तारितस्तैस्तु सकुलो नात्र संशयः ।
ते वै धन्यतमा लोके नारायणपरायणाः ॥१०७॥
तैर्भक्तिश्च सदा कार्या ते वै भागवता नराः ।

इति श्रीपाद्मे महापुराणे उत्तरखण्डे शिवपार्वती संवादे अपामार्जनस्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

॥ रोगी बचेगा या नहीं ॥

किसी रोगी के बचने या न बचने की परीक्षा करनी हो तो उड़द की दाल की पिठीका चौकोना बड़ा भल्ला बनाकर सरसों के तेल में तलकर उस पर स्याही से ॐ ह्रीं लिखकर रोगी के सिरहाने रात्रि में रख देवें तो प्रातः उस बड़े को देखे यदि मन्त्र लिखा बड़ा हो तो रोगी बचेगा और मन्त्र मिटा मिले तो रोगी नहीं बचेगा ऐसा निश्चय जाने।

॥ रक्षा मन्त्र ॥

ॐ तारा तारा गारुड मन्त्र विस्से खाय ब्राह्मण कंपन नागे डोल, चल विस्से हमारा बोल॥

किसी ने जादू टोना अभिचार चलाया हो तो इस मन्त्र से उस व्यक्ति को मोर पंख या लोहे के चीमटे से झाड़े तो आराम होगा। यह पहाड़ी गद्दी लोगों का सिद्ध मन्त्र है।

॥ सर्व कष्टहर मन्त्र ॥

जब संकट के समय विवेक काम नहीं दे तो मुक्ति के लिये इस मन्त्र का जप करें। सिद्ध के लिये सूर्य, चन्द्र ग्रहण के समय गायत्री मन्त्र से संपुटित कर कम से कम एक माला जप करें।

मन्त्र –

ॐ महेशाय त्रिनेत्राय नमस्ते शूलपाणये ।
प्रणतः क्लेशनाशाय महादेवाय ते नमः ॥

वैष्णवों के लिये -

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

॥ अथ व्याधिप्रतिरूप दान विधानम् ॥

(काल एवं मृत्यु के मंत्र शरभ तंत्र में देखें)

दुर्गासप्तशति में रहस्य त्रय में लिखा है कि - **कालमृत्यु तौ संपूज्यौ सर्वारिष्टप्रशांतये।**

परन्तु कालमृत्यु का आवाहन पूजन के बाद उनका विसर्जन करें या विसर्जन की भावना करें कि कालमृत्यु प्रसन्न होकर हमारे समस्त रोग व्याधि अनिष्टों को लेकर हमारे घर से विदा हो गये हैं। कालमृत्यु की स्वर्ण की प्रतिमा बनाकर चावलों पर रखें उनकी पूजा करें।

ॐ कालाय नमः, ॐ मृतवे नमः, ॐ रोगाय नमः, ॐ व्याधवे नमः।

गंधादि से पूजन कर वस्त्र अलंकार समर्पण कर उन्हे विप्र को दान करें - रोगी पुनः उसका मुँह नहीं देखे।

मन्त्रः –

ये मां रोगाः प्रबाधन्ते देहस्थाः सततं मम ।
गृह्णीष्व प्रतिरूपेण तान्-रोगान्द्विजसत्तम ॥१॥
बाढमित्येव तद्रूपं गृह्णीयाद्-ब्राह्मणस्तदा ।
ततो रोगप्रदातासौ दीर्घमायुः प्रपद्यते ॥२॥
तण्डुलानां तु यत्पात्रं मुख्यं तत्कांस्य संभवम् ।
दत्त्वा दानं तु तत्काले द्विजास्यं नावलोकयेत् ॥३॥

॥ सर्वारिष्टनिवारण स्तोत्रम् ॥

ॐ गं गणपतये नमः। सर्व-विघ्न विनाशनाय, सर्वारिष्टनिवारणाय, सर्वसौख्यप्रदाय, बालानां बुद्धिप्रदाय, नानाप्रकार धन वाहन भूमिप्रदाय, मनोवाञ्छित फलप्रदाय रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ गुरवे नमः, ॐ श्रीकृष्णाय नमः, ॐबलभद्राय नमः, ॐ श्रीरामाय नमः, ॐ हनुमते नमः, ॐ शिवाय नमः, ॐ जगन्नाथाय नमः, ॐ

बदरीनारायणाय नमः, ॐ श्रीदुर्गादेव्यै नमः ॥

ॐ सूर्याय नमः, ॐ चन्द्राय नमः, ॐभौमाय नमः, ॐ बुधाय नमः, ॐ गुरवे नमः, ॐ भृगवे नमः, ॐ शनिश्चराय नमः, ॐ राहवे नमः, ॐ पुच्छानयकाय नमः, ॐ नवग्रह! रक्षां कुरु कुरु नमः ॥

ॐ मन्येवरं हरिहरादय एव दृष्ट्वा द्रष्टेषु येषु हृदयस्थं त्वयं तोषमेति विविक्षते न भवता भुवि येन नान्य कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि। ॐ नमो मणिभद्रे! जयविजयपराजिते! भद्रे! लभ्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्-सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्। सर्वविघ्नं शान्तं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीबटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय महान्श्याम-स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय मम (यजमानस्य वा) सर्वारिष्टं हन हन, पच पच, हर हर, कच कच, राज-द्वारे जयं कुरु कुरु, व्यवहारे लाभं वृद्धिं वृद्धिं, रणे शत्रून् विनाशय विनाशय, पूर्णां आयुः कुरु कुरु, स्त्री-प्राप्तिं कुरु कुरु, हुम् फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः। ॐ नमो भगवते, विश्व-मूर्तये , नारायणाय, श्रीपुरुषोत्तमाय। रक्ष रक्ष, युग्मदधिकं प्रत्यक्षं परोक्षं वा अजीर्णं पच पच, विश्वमूर्तिकान् हन् हन्, ऐकाह्निकं द्वाह्निकं त्राह्निकं चतुरह्निकं ज्वरं नाशय नाशय, चतुरग्निवातान् अष्टादशक्षयान् रोगान्, अष्टादशकुष्ठान् हन् हन्, सर्वदोषं भञ्जय-भञ्जय, तत्सर्व नाशय-नाशय, शोषय-शोषय, आकर्षय-आकर्षय, मम शत्रुं मारय-मारय, उच्चाटय-उच्चाटय, विद्वेषय-विद्वेषय, स्तंभय-स्तंभय, निवारय-निवारय, विघ्नं हन-हन, दह-दह, पच-पच, मथ-मथ, विध्वंसय-विध्वंसय, विद्रावय-विद्रावय, चक्रं गृहीत्वा शीघ्रमागच्छागच्छ, चक्रेण हन हन, पर-विद्यां छेदय-छेदय, चौरासी-चेटकान् विस्फोटान् नाशय नाशय, वात-शुष्क-दृष्टि-सर्प-सिंह-व्याघ्र-द्विपद-चतुष्पद अपरे बाह्यं ताराभिः भव्यन्तरिक्षं अन्यान्य-व्यापि-केचिद् देश-काल-स्थान सर्वान् हन हन, विद्युन्मेघ-नदी-पर्वत, अष्टव्याधि, सर्वस्थानानि, रात्रि-दिनं, चौरान् वशय-वशय, सर्वोपद्रव-नाशनाय, पर-सैन्यं विदारय-विदारय, पर-चक्रं निवारय-निवारय, दह-दह, रक्षां कुरु-कुरु, ॐ नमो भगवते, ॐ नमो नारायणाय, हुं फट् स्वाहा।

ठः ठः ॐ ह्रीं ह्रीं। ॐ ह्रीं क्लीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐभैरवाय नमः। हरि ॐ

उच्छिष्ट-देव्यै नमः। डाकिनी-सुमुखी-देव्यै, महा-पिशाचिनी ॐ ऐं ठः ठः। ॐ चक्रिण्या अहं रक्षां कुरु कुरु, सर्वव्याधिहरणीदेव्यै नमो नमः। सर्वप्रकारबाधा शमनमरिष्ट निवारणं कुरु कुरु फट्। श्रीं ॐ कुब्जिका, देव्यै ह्रीं ठः स्वाहा।

शीघ्रमरिष्ट निवारणं कुरु कुरु देवी शाम्बरी क्रीं ठः स्वाहा।

शारिकाभेदा महामाया पूर्ण आयुः कुरु। हेमवती मूलं रक्षा कुरु। चामुण्डायै देव्यै शीघ्रं विघ्नं सर्वं वायु कफ पित्त रक्षां कुरु। मंत्र तंत्र यंत्र कवच ग्रहपीड़ा नडतर, पूर्वजन्मदोष नडतर, यस्य जन्मदोष नडतर, मातृदोष नडतर, पितृदोष नडतर, मारण-मोहन-उच्चाटन-वशीकरण-स्तंभन-उन्मूलनं भूत-प्रेत-पिशाच-जात-जादू-टोना-शमनं कुरु। सन्ति सरस्वत्यै कण्ठिका-देव्यै-गल-विस्फोटकायै विक्षिप्त-शमनं महान्-ज्वर-क्षयं कुरु स्वाहा ।

सर्वसामग्री भोगं सप्तदिवसं देहि-देहि, रक्षां कुरु, क्षण-क्षण, अरिष्ट निवारणं, दिवस-प्रति-दिवस दुःखहरणं मङ्गलकरणं कार्यसिद्धिं कुरु कुरु। हरि ॐ श्रीरामचन्द्राय नमः हरि ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र-तारा-नवग्रह-शेष-नाग-पृथ्वी-देव्यै आकाशस्य सर्वारिष्ट निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

१.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय सर्वविघ्न निवारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

२. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीवासुदेवाय नमः, बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

३. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीविष्णु भगवान् मम अपराधक्षमा कुरु कुरु,सर्वविघ्नं विनाशाय मम कामना पूर्ण कुरु कुरु स्वाहा।

४. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीबटुक-भैरवाय आपदुद्धारणाय सर्वविघ्न निवारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

५. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ श्रीदुर्गादेवी रुद्राणीसहिता, रुद्रदेवता कालभैरव सह, बटुकभैरवाय, हनुमान सह मकरध्वजाय,आपदुद्धारणाय मम सर्वदोष क्षमाय कुरु कुरु सकल विघ्न-विनाशाय मम शुभमांगलिक कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

एष विद्यामाहात्म्यं च, पुरा मया प्रोक्तं ध्रुवं।
शतक्रतो तु हन्त्येतान् , सर्वांश्च बलिदानवाः ॥१ ॥

य पुमान् पठते नित्यं, एतत् स्तोत्रं नित्यात्मना ।
तस्य सर्वान् हि सन्ति, यत्र दृष्टिगतंविषं ॥२॥
अन्य दृष्टि-विषं चैव, न देयं संक्रमे ध्रुवम् ।
संग्रामे धारयेत्यम्बे, उत्पाता च विसंशयः ॥३॥
सौभाग्यं जायते तस्य, परमं नात्र संशयः ।
द्रुतं सद्यं जयस्तस्य, विघ्नस्तस्य न जायते ॥४॥
किमत्र बहुनोक्तेन, सर्वसौभाग्य सम्पदा ।
लभते नात्र सन्देहो, नान्यथा वचनं भवेत् ॥५॥
ग्रहीतो यदि वा यत्नं, बालानां विविधैरपि ।
शीतं समुष्णतां याति, उष्णः शीतमयो भवेत् ॥६॥
नान्यथा श्रुतये विद्या, पठति कथितं मया ।
भोज-पत्रे लिखेद् यंत्र, गोरोचनमयेन च ॥७॥
इमां विद्यां शिरो बध्वा, सर्वरक्षाकरोतु मे ।
पुरुषस्याथवा नारी, हस्ते बध्वा विचक्षणः ॥८॥
विद्रवन्ति प्रणश्यन्ति, धर्मस्तिष्ठति नित्यशः ।
सर्वशत्रुरधो यान्ति, शीघ्रं ते च पलायनम् ॥९॥

''**श्रीभृगु-संहिता**'' के ''**सर्वाष्टि-निवारण-खण्ड** '' में इस अनुभृत स्तोत्र के ४० पाठ करने की विधि बताई गई है। इस पाठ के फल स्वरूप पुत्रहीन को पुत्र की प्राप्ति होती है और जिसका विवाह नही होता है उसका विवाह हो जाता है। इसके अतिरिक्त इस स्तोत्र के पाठ के प्रभाव से सभी प्रकार के दोषों- ज्वर, क्षय, कुष्ठ, वात-पित्त-कफ की पीड़ाओं और भूतादिक सभी बाधाओं का निवारण होता है ।

इस स्तोत्र का पाठ यदि स्वयं अपने लिए करना हो तो '**मम**' या '**मम स-कुटुम्बस्य**' शब्द का उच्चारण करे और यदि किसी **अन्य (यजमान)** के लिए पाठ करना हो तो स्तोत्र में जहाँ **यजमान** शब्द लिखा है वहाँ उसके **नाम, गोत्रादि** का उच्चारण करना चाहिये।

किसी भी देवता या देवी की **प्रतिमा या यंत्र** के सामने बैठकर धूप दीपादि से उसका पूजन कर इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। विशेष लाभ की इच्छा हो तो **स्वाहा और नमः** का उच्चारण करते हुये **घृत-मिश्रित गुग्गुल** से आहुतियाँ दे

सकते हैं। ऐसा करने से अभीष्ट कामना की पूर्ति शीघ्र और अवश्य होती है। इसके पाठ से निर्धन को धन और बेरोजगार को जीविका का साधन-नौकरी, व्यापार आदि की सुविधा प्राप्त होती है। यह अनुभूत प्रयोग है।

॥ सर्वग्रह पीड़ा निवारण तांन्त्रिक प्रयोगः॥

आक, धतूरा, अपामार्ग, दूर्वा, वट इन सब की जड़ें, खेजड़ी, आम, गूलर के पत्ते इन सबको एक मिट्टि के बर्तन में रखकर दूध, घृत, चावल, चना, मूंग, गेंहू, तिल, गौमूत्र, सरसों, चन्दन, शहद और छाछ उसी पात्र में एकत्र कर शनिवार को सायंकाल के समय पीपल के वृक्ष की जड़ में गड्ढा खोदकर गाड़ देवें और उसी समय पीपल के वृक्ष के नीचे या देवालय में जाकर निम्न मन्त्र का सहस्त्र जप करें-

ॐ नमो भगवते भास्कराय अस्माकं सर्व ग्रहाणां पीड़ा नाशनं कुरु कुरु स्वाहा॥

इस मंत्र का दश सहस्त्र जप करे तो ग्रहों का उपद्रव नष्ट हो जाते हैं और महादरिद्रीयोग भी मिट जाते हैं। दत्तात्रेय तंत्र में इस प्रयोग का मूल पाठ लिखा है।

॥ बन्दीमोचन मंत्रप्रयोगः॥

विनियोगः- **ॐ अस्य श्री बन्दीमोचन स्तोत्रमंत्रस्य श्रीकण्व ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीबन्दी देवीदेवता, ह्रीं बीजं, हूं कीलकं, मम बन्दीमोचनार्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **श्रीकण्व ऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे, श्रीबन्दी देवीदेवतायै नमः हृदि, ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये, हूं कीलकाय नमः पादयोः, मम बन्दीमोचनार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

मंत्र- **ॐ ह्रीं हूं बन्दीदेव्यै नमः। अष्टोत्तरशतं जपः।**

बन्दी देव्यै नमस्कृत्य वरदाभय-शोभिनीम् ।
तदाज्ञां शरणं गच्छत् शीघ्रं मोचं ददातु मे ॥
बन्दी कमल-पत्राक्षी लौहशृङ्खला-भञ्जिनीम् ।
प्रसादं कुरु मे देवि! शीघ्रं मोचं ददातु मे ॥
त्वं बन्दी त्वं महामाया त्वं दुर्गा त्वं सरस्वती ।
त्वं देवी रजनी चैव शीघ्रं मोचं ददातु मे ॥

संसार-तारिणी बन्दी सर्वकामप्रदायिनी ।
सर्वलोकेश्वरी देवि शीघ्रं मोचं ददातु मे ॥
त्वं ह्रीं त्वमीश्वरी देवि ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ।
त्वं वै कल्पक्षयं कर्त्री शीघ्रं मोचं ददातु मे ॥
देवी धात्री धरित्री च धर्म शास्त्रार्थ-भाषिणी,
दुःश्वासाम्ब-रागिणी देवी शीघ्रं मोचं ददातु मे ॥
नमोऽस्तुते महालक्ष्मी रत्नकुण्डलभूषिता ।
शिवस्यार्धाङ्गिनी चैव शीघ्रं मोचं ददातु मे ॥
नमस्कृत्य महादुर्गा भयात्तु तारिणीं शिवां ।
महादुःखहरां चैव शीघ्रं मोचं ददातु मे ॥
इदं स्तोत्रं महापुण्यं यः पठेन्नित्यमेव च ।
सर्वबन्धविनिर्मुक्तो मोक्षं च लभते क्षणात् ॥

हवन विधि : कमल-गट्टा, गाय का घी, शुद्ध शहद, मिश्री, हल्दी एवं लाल चन्दन के चूर्ण को मिश्रित कर उससे जप संख्या का दशांश हवन करना चाहिए।

॥ सर्पभयनाशक मनसा स्तोत्रम् ॥

जिस स्थान में सर्पभय अधिक रहता है वहाँ पर इस स्तोत्र का पाठ करके निवास करना चाहिये।

ध्यानम्–

चारु-चम्पकवर्णाभां सर्वाङ्गसुमनोहराम् ।
नागेन्द्रवाहिनीं देवीं सर्वविद्याविशारदाम् ॥

॥ श्रीनारायण उवाच ॥

नमः सिद्धिस्वरूपायै वरदायै नमो नमः ।
नमः कश्यपकन्यायै शङ्करायै नमो नमः ।
बालानां रक्षणकर्त्र्यै नागदेव्यै नमो नमः ।
नमः आस्तीकमात्रे ते जरत्कार्व्यै नमो नमः ।
तपस्विन्यै च योगिन्यै नागस्वस्त्रे नमो नमः ।
साध्व्यै तपस्यारूपायै शम्भुशिष्ये च ते नमः ॥

॥ फलश्रुति ॥

इति ते कथितं लक्ष्मी! मनसाया स्तवं महत् ।
यः पठति नित्यमिदं, श्रावयेद् वापि भक्तितः ।
न तस्य सर्पभीतिर्वै विषोऽप्यमृतं भवति ।
वंशजानां नागभयं नास्ति श्रवणमात्रतः ॥

॥ सर्प भयनिवारण मन्त्र ॥

ॐ जरले नृसिंह करले दूत कालू कालू नृसिंह बैरी खैंरदारी तुकमाही नहीं बांधे छः बांधे छः हाकूवाल डाकूवाल बड़ेलबडियाल सांप चोर कांटा गज्जा वाघमूल तुकमाही नहीं बांधे छः राम लक्ष्मण सीतामाता हनुमान नृसिंह से परे हंकार।

यह मन्त्र जहाँ सर्प हो या सर्प का भय हो वहाँ तीन-चार बार ऊँचे स्वर में पढ़ने पर सर्प नहीं आ सकेगा। जहाँ तक मंत्र का स्वर जायेगा वहाँ तक उस सीमा में सर्प नहीं आयेगा। यदि कोई सर्प आवाज की सीमा के अन्दर रह जायेगा तो वह अन्धा हो जायेगा। जब वह स्थान छोड़ देवें तो '**बांधे छः बांधे छः**' के स्थान पर '**खोले छः खोले छः**' लगाकर उसी प्रकार तीन बार मन्त्र उच्चारण करें तो सर्पों के आवागमन का मार्ग खुल जायेगा। यह अनुभूत प्रयोग है।

॥ दुःस्वप्न–नाशक प्रयोग ॥

१. विष्णुं नारायणं कृष्णं रामं च श्रीहरिं शिवम् ।
श्रियं लक्ष्मीं राधिकां जानकीं प्रभां च पार्वतीम् ॥
जपन् द्वादश दुःस्वप्नः सत्फलदः प्रजायते ॥

विधि– दुःस्वप्न दिखने पर उक्त बारह नामों का १२ बार स्मरण करने से दुःस्वप्न शुभ फलदायक हो जाता है।

२. **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुःख-हन्त्यै दुर्गायै ते नमः स्वाहा।**

विधि– उक्त श्रीदुर्गा मंत्र का दस बार जप करने से दुःस्वप्न भी शुभ फल देते है।

॥ शत्रुनाशक हनुमत् शाबरमन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरु को अंजनी बृहमानी तेजवन्ती वृजवन्ती हीया मोड़ संखला तोड़ आओ हनुमन्त वीर बाजंता गाजंता घडघडता अंजनी का पुत्र श्रीराम का बाण सीता सति का जण छेली पलराम की इठ्यासी कालया की

चोसठ जोगणी की हुँकार बाजे मारकर रार दुश्मन गले लगे गीत फांस नारसिंह कालका काल रावण को लागे मेरा हूंकारिया काल सदा फिरे नहीं फिरे तो माता अंजनी का दूध पिया हराम करे, सीता माता की सेज पर पाँव धरे राम के सिर गाम घाले मेरी भक्ति गुरु की शक्ति चलो मन्त्र ईश्वरो वाच:।

रविवार, मंगलवार, शुक्रवार, शनिवार, हनुमानजी के सामने बैठकर साधना करें, खासकर नवरात्रि में त्रिकाल साधना करनी चाहिये। १२१ गोली गुग्गल की होमे। अगर तीन दिन में हनुमानजी दर्शन नहीं देवें तो सिन्दुर मालीपन्ना का होम करना चाहिये। किन्तु स्मरण रहे मालीपन्ना हनुमानजी के वस्त्र हैं अत: इससे वे क्रोधित हो सकते हैं, इस हेतु जप शुरु करने से पहले और पश्चात् चोला चढ़ाना चाहिये। हनुमानजी जब उग्र होते हैं तो श्रीराम का कीर्त्तन करने से शांत हो जाते हैं।

॥ ऋणमुक्ति और लक्ष्मी प्राप्ती प्रयोग ॥

मन्त्र: - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चिरचिर गणपतिवर वरदेयं मम वांछितार्थ कुरु कुरु स्वाहा।

अंगार की चतुर्थी के दिन नित्यकर्म से निवृत्त हो विधिवत् श्रीगणपति का पूजन कर उपर्युक्त मन्त्र का दश सहस्र जप करें,पश्चात् हवन करें। हवन में गुग्गल डालें १०१ रक्त करबीर पुष्प १०१ लड्डू (चूरमा) ये तीनों वस्तुयें एकत्रित कर उपर्युक्त मन्त्र से १०८ आहुति देवें। पूर्णाहुति सुपारी से देवें। पुन: श्रीगणपति का विधिवत गन्ध पुष्पादि द्वारा पूजन करें और २१ लड्डूओं का नैवेद्य करें। पश्चात् दक्षिणा आरती मन्त्र पुष्पांजलि की प्रणामादि करके लड्डूओं का भोजन करें और शुद्ध आचमन करके उपर्युक्त मन्त्र का पुन: १०८ बार जप करके आसन से उठें। जपारंभ से लेकर अंतिम १०८ बार जप करने तक एक ही आसन पर बैठे रहें तो विशेष लाभप्रद है। हवन में केवल पलाश की समिधा लेना, कार्यारम्भ से अन्त तक घृत दीप प्रज्जवलित रहना चाहियें। इस प्रकार तीन पुरश्चरण करने पर लक्ष्मी प्राप्ति, इष्ट सिद्धि धन धान्य वृद्धि अवश्य होती है। ऋणग्रस्त हो तो ऋणमुक्त होवें।

॥ व्यापार व धनप्राप्ति का मन्त्र ॥

ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं क्लीं क्लीं श्रीं लक्ष्मी मम गृहे धनचिंता दूर करोति स्वाहा।

विधानम् - प्रात:काल बिना किसी से बोले मुँह धोकर १०८ मंत्र बार जप करें तो धनधान्य की वृद्धि हो।

॥ अभिष्ट धनप्राप्ति के लिये ॥

ॐ ह्रीं श्रीं त्रिभुवन स्वामिनि महादेवि महालक्ष्मी ल ल ल ल हं हः महाप्रभुत्वमर्थ कुरु कुरु ह्रीं नमः।

विधानम् - प्रतिदिन पंचोपचार से लक्ष्मी का पूजन कर १०८ बार जप करने से अभीष्ट लाभ होगा। शुभमुहुर्त्त में जप करें अर्द्धरात्रि में जप करें तो ३ मास में इसका चमत्कार प्रत्यक्ष दिखाई देगा।

॥ भाग्योदय यंत्र ॥

इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर अनार की कलम से लिखकर धूपदीप नैवेद्य लगाकर ताबीज में भर लें दाहिनी भुजा में बांधें।

ऐसे व्यक्ति जिनका भाग्य सो गया हो जो कार्य करे उसी में असफलता मिलती हो तथा जीवन निराशामय हो गया हो उन्हें यह यन्त्र अवश्य धारण करना चाहिये। इससे सभी कार्यो में सफलता मिलेगी इसमें संदेह नहीं है।

इस यंत्र को सिद्ध करने के लिये दीपावली, होली की रात्रि तथा ग्रहण समय भोजपत्र पर अष्टगंध से १०८ बार लिखें। वैसे एक बार ही लिखकर बाँधने से फल मिलता है पर न्यून।

॥ लक्ष्मीदाता सिद्ध मन्त्र ॥

यह प्रयोग भगवान शंकर का है। श्रावण कृष्णा प्रतिप्रदा से प्रारंभ करें। भृशय्या एवं नक्त भोजनादि पुरश्चरण नियमों के पालन कर पूर्णिमा पर्यन्त शिवलिङ्ग मन्दिर में ११, २१, ४१, ५१, १०१, १११ आदि निश्चित संख्या में अर्क पुष्पों से पंचाक्षरी मन्त्र (नमः शिवाय) द्वारा अर्चन करें पुनः अखण्ड १०८ विल्वपत्रों पर तीनों पर अलग अलग रक्त चंदन से मालती पर दाड़िम की लेखनी से निम्नांकित यंत्र अंकित कर प्रत्येक विल्व पत्र को उसी पंचाक्षरी मंत्र द्वारा शिवलिङ्ग पर अर्पित करें। तीसदिन के प्रयोग से निश्चय धनागमन होना पुनः प्रारंभ होगा। इसमें संदेह नहीं आज तक यह प्रयोग असफल

वं	वं	वं	वं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

नहीं हुआ है। परन्तु ध्यान रखें कि अर्क पुष्पों की संख्या व विल्वपत्रों की संख्या में व समय में मास पर्यन्त कोई परिवर्तन नहीं हो।

॥ धनप्राप्ती हेतु हनुमत् प्रयोगः॥

मन्त्र - **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं अंजनी सुताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि तन्नो हनुमत् प्रचोदयात्॥**

विधानम् - साधक मंगल या शनिवार को अपना चन्द्र बल शुभ मुहुर्त में देखकर इस प्रयोग को प्रारंभ करें। इस मन्त्र का २१ दिन में सवा लाख जप करें। साधक पूर्वाभिमुख होकर ६० माला प्रतिदिन करें। मालपूवे का भोग लगावें उसी भोग का स्वयं पावे और कुछ नहीं खावें। एक समय भोजन करें। जपारंभ में मूर्ति पर चोला चढ़ावें, ब्रह्मचर्य से रहें। शुद्ध आचरण से जप करने पर एक नाग के दर्शन होंगे जो कार्य संपन्न होने का प्रतीक है। दर्शन होने के बाद साधक को धन का अभाव नहीं रहता, इस में संदेह नहीं है।

॥ ऋणमोचन प्रयोगः॥

खेर (कत्था) की लकड़ी के कोयले से तीन आड़ी रेखायें भूमि पर खीचें। फिर नीचे लिखें मन्त्रों को पढ़ते हुये बायें पैर की एडी से मिटा दें।

मन्त्र -

दुःखदौर्भाग्यनाशाय पुत्रसंतान हेतवे ।
कृतरेखात्रयं वामपादेनैतत्प्रमाज्मर्यहम् ॥१॥
ऋण दुख विनाशाय मनोभीष्टार्थ सिद्धये ।
मार्जयाम्या सिता रेखातिस्त्रो जन्मत्रयोदयभवा ॥२॥

इतना कर लेने के बाद मंगल के चरण कमलों का ध्यान करते हुये स्तुति करें-

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्तेजः समप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगल प्रणमाम्यहम् ॥१॥
ऋणहर्त्रे नमस्तुभ्यं दुःखदारिद्र्यनाशिने ।
नमामि द्योतमानाय सर्वकल्याणकारिणे ॥२॥
देव दानव गंधर्व यक्ष राक्षसपन्नगा ।
सुखं यान्ति यतस्तस्मै नमो धरणिसूनवे ॥३॥

यो वक्रगति मायन्त्रो नृणां विघ्नं प्रयच्छति ।
पूजितः सुखसौभाग्य तस्मै क्ष्मासूनवे नमः ॥४॥
प्रसादं कुरु मे नाथ मंगलप्रद ।
मंगल मेषवाहन रुद्रात्मन। पुत्रान् देहि धनं यश ॥५॥

विधानम् - प्रतिदिन या केवल मंगलवार को ही यह विधान करने से शीघ्र ऋण मुक्ति होवें।

॥ ऋणहर–धनप्रद मंगल स्तोत्रम्॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्री भौम-स्तोत्रस्य श्रीगर्ग ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। मंगलो देवता। ऋण-हरणे धन-प्राप्त्यर्थे च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - ॐ श्रीगर्ग-ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। मंगल देवतायै नमः हृदि। ऋण-हरणे धन-प्राप्त्यर्थे च विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

ध्यानम्–

रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगदो गदाभृत् ।
धराम्,ः शक्तिधरश्च शूली सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः ।

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्त्ता धनप्रदः ।
स्थिरात्मजो महाकायः सर्वकामार्थसाधकः ॥१॥
लोहितो लोहिताङ्गश्च सामगानां कृपाकरः ।
धरात्मजः कुजो भौमो भूमिदो भूमिनन्दनः ॥२॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः ।
वृष्टिकर्त्ताऽपहर्त्ता च सर्वकाम फलप्रदः ॥३॥

॥ फलश्रुति ॥

एतानि कुजनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
ऋणं न जायते तस्य धनं प्राप्नोति असंशयः ॥४॥
अङ्गारकोऽति बलवानपि यो ग्रहाणां
स्वेदोद्भवः त्रि-नयनस्य पिनाकपाणेः ।

आरक्त-चन्दन-सुशीतलवारिणा यः ।
अभ्यर्चितोऽथ विपुलां प्रददाति सिद्धिम् ॥५॥

॥ पुष्पाञ्जलि ॥

ॐ धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥१॥
ऋणहर्त्रे नमस्तुभ्यं दुःखदारिद्र्यनाशिने ।
नभसि द्योतमानाय सर्वकल्याणकारिणे ॥२॥
देव-दानव-गंधर्व यक्ष-राक्षस-पन्नगाः ।
सुखं यान्ति यतस्तस्मै नमः धरणिसूनवे ॥३॥
यो वक्रगतिमापन्नो नृणां दुःखं प्रयच्छति ।
पूजितः सुखसौभाग्यं तस्मै क्ष्मासूनवे नमः ॥४॥
प्रसादं कुरु मे नाथ! मङ्गलप्रद मङ्गल !
मेषवाहन रुद्रात्मन्! सुखं देहि धनं यशः ॥५॥
स्तोत्रमङ्गारक स्येतत्पठनीयं सदा नृभिः ।
न तेषां भौमजा पीड़ा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित् ॥६॥
अङ्गारक महाभाग भगवन्भक्त वत्सलं ।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय ॥७॥
ऋणरोगादि दारिद्रयं ये चान्ये ह्यल्पमृत्यु
भयक्लेश-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥८॥
अतिवक्रदुराध्य भोगमुक्तजितात्मनः ।
दुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥९॥
विरिञ्च शक्र विष्णुनां मनुष्याणां तु स्त्रिस्तथा ।
तेन सर्वसहजेन ग्रहराजो महाबलः ॥१०॥
पुत्रान् देहि धनं देहि त्वमामि शरणं गतः ।
ऋणदारिद्रय दुःखश्च शत्रुणां तु व्यपोहतो ॥११॥

॥ अभिषेक के २१ मंत्र ॥

१.ॐ मङ्गलाय नमः। २.ॐ भूमिपुत्राय नमः। ३.ॐ ऋणहर्त्रे नमः। ४.ॐ धनप्रदाय नमः। ५.ॐ स्थिरात्मजाय नमः। ६.ॐ महाकायाय नमः। ७.ॐ सर्वकामार्थ साधकाय नमः। ८.ॐ लोहिताङ्गाय नमः। ९.ॐ लोहिताक्षाय

नमः। १०. ॐ सामगानां कृपाकराय नमः। ११.ॐ धरात्मजाय नमः। १२.ॐ कुजाय नमः। १३.ॐभौमाय नमः। १४.ॐ भूमिदाय नमः। १५.ॐ भूमिनन्दनाय नमः। १६.ॐ अङ्गारकाय नमः। १७.ॐ यमाय नमः। १८.ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः। १९.ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः। २०.ॐ वृष्ट्यपहर्त्रे नमः। २१.ॐ सर्वकाम-फलप्रदाय नमः।

॥ भण्डारवृद्धि मंत्र ॥

मन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं आं ऐं लक्ष्मी स्वाहा

इस मन्त्र से सर्वधान्य २१ बार अभिमन्त्रित कर पोटली बाँधकर अन्न भण्डार कोठार या बड़े बर्त्तन में रख दें तो वह अपना फल दिखायेगा।

॥ वैभवायुर्दाता मंत्रम् ॥

ॐ सं मा सिञ्जन्त्वादित्याः सं मा सिञ्जन्त्वग्न्यः ।
इन्द्रः समस्यान् सिञ्चतु प्रजया च धनेन च ।
दीर्घमायुः कृणोतु मे ॥ (अथर्व० पैप्प० ६ १८ २)

सर्वप्रथम इस मंत्र का २१ सहस्त्र जप कर सिद्ध कर लेवे इसके उपरान्त

'' **ॐ सं मा सिञ्चन्तु मरुतः सं पूषा सं वृहस्पतिः । सं मा यमाग्निः सिंचन्तु प्रजया च धनेन च। दीर्घमायुः कृणोतु मे**''। (अथर्व० पैप्प० ६ १८ १) इस मंत्र को तामपत्र पर लिखकर विधिपूर्वक षोडशोपचार पूजन कर प्रतिष्ठा कर लेवें। इससे ऐश्वर्य सुख की वृद्धि होती है। आयुवृद्धि के लिये अनुष्ठान करें तो इसके यंत्र की पूजा करनी चाहियें। गुरु , सोम, बुध के दिन इसका अनुष्ठान प्रारंभ करें। मांगलिक पदार्थों एवं इस यंत्र की पूजा कर लकड़ी या ऊन के आसन पर बैठकर रूद्राक्ष की माला पर ३ सहस्त्र जाप सात दिन तक नियमित रूप से करें। सातवे दिन २१०० मंत्रों से शुद्ध घी एवं अष्टगंधादि से हवन करने से निश्चय हि आयु की वृद्धि होती है अर्थात् वह जातक मृत्यु भय से मुक्ति को प्राप्त होता है। वाणिज्य (व्यापार) में लाभ प्राप्त करने के लिये उपरोक्त विधि से अनुष्ठान कर २१०० आहूतियों से हवन करना चाहिये। संतान सुख के लिये भी २१०० [illegible] से हवन करें। उपरोक्त मंत्र धन धान्य, आयु, एवं सन्तान सुख का [illegible] वाले है।

॥ वरुणमन्त्र प्रयोगः॥

(ऋण नाश एवं वृष्टिकामना हेतु)

त्रिचत्वारिंशदक्षरोमन्त्रः - ॐ ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु क्षियंतो व्य ᳚ स्मत्पाशं वरुणो मुमोचत्। अवो वन्वाना अदितेरुपस्थाद्यूयंपात स्वस्तिभिः सदा नः स्वः।

विनियोगः - अस्य वरुणमन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः। त्रिष्टुप्छंदः। वरुणो देवता। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - ॐ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। वरुण देवतायै नमः हृदि। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - ॐ ध्रुवासुत्वासुक्षितिषु इत्यंगुष्ठाभ्यां नमः। क्षियंतो व्यस्मत्पाशम् इतितर्जनीभ्यां नमः। वरुणो मुमोचदिति मध्यमाभ्यां नमः। अवो वन्वाना अदितेरिति अनामिकाभ्यां नमः। उपस्थाद्यूयंपात इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वस्तिभिः सदा नः स्वः इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः - ॐ ध्रुवासुत्वासुक्षितिषु हृदयाय नमः। क्षियंतो व्यस्मत्पाशं शिरसे स्वाहा। वरुणो मुमोचत् शिखायै वषट्। अवो वन्वाना अदितेः कवचाय हुम्। उपस्थाद्यूयंपात नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वस्तिभिः सदाः नः स्वः अस्त्राय फट्।

॥ मन्त्रवर्णन्यासः ॥

ॐ ध्रं नमः ध्रुं। दक्षपादाङ्गुल्यग्रे ॥१॥ ॐ वां नमः। दक्षपादांगुलिमूले ॥२॥ ॐ सुं नमः। दक्षगुल्फे ॥३॥ ॐ त्वां नमः। दक्षजानुनि ॥४॥ ॐ सुं नमः। दक्षपादमूले ॥४॥ ॐ क्षिं नमः। वामपादांगुल्यग्रे ॥६॥ ॐ तिं नमः। वामपादांगुलिमूले ॥७॥ ॐ षुं नमः। वामगुल्फे ॥८॥ ॐ क्षिं नमः। वामजानुनि ॥९॥ ॐ यं नमः। वामपादमूले ॥१०॥ ॐ तों नमः। गुदे ॥११॥ ॐ व्यं नमः। लिङ्गे ॥१२॥ ॐ स्मं नमः। आधारे ॥१३॥ ॐ त्पां नमः। नाभौ ॥१४॥ ॐ शं नमः। दक्षिणकुक्षौ ॥१५॥ ॐ वं नमः। वामकुक्षौ ॥१६॥ ॐ रुं नमः। पृष्ठे ॥१७॥ ॐ णों नमः। हृदि ॥१८॥ ॐ मुं नमः। दक्षिणस्तने ॥१९॥ ॐ मों नमः। वामस्तने ॥२०॥ ॐ चं नमः। गले ॥२१॥ ॐ अं नमः। दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे ॥२२॥ ॐ वों नमः। दक्षिणहस्तांगुलिमूले ॥२३॥ ॐ त्रं नमः। दक्षिणमणिबन्धे ॥२४॥ ॐ न्वां नमः। दक्षिणकूर्परे ॥२५॥ ॐ

नां नमः। दक्षबाहुमूले ॥२६॥ ॐ अं नमः। वामहस्तांगुल्यग्रे ॥२७॥ ॐ दिं नमः। वामहस्तांगुलिमूले ॥२८॥ ॐ तें नमः। वाममणिबन्धे ॥२९॥ ॐ रुं नमः। वामकूर्परे ॥३०॥ ॐ पं नमः। वामबाहुमूले ॥३१॥ ॐ स्थां नमः। वक्रे ॥३२॥ ॐ द्यूं नमः। दक्षकपोले ॥३३॥ ॐ यं नमः। वामकपोले ॥३४॥ ॐ पां नमः। दक्षिणनासापुटे ॥३५॥ ॐ तं नमः। वामनासापुटे ॥३६॥ ॐ स्वं नमः। दक्षिणनेत्रे ॥३७॥ ॐ स्तिं नमः। वामनेत्रे ॥३८॥ ॐ भिं नमः। दक्षिणकर्णे ॥३९॥ ॐ सं नमः। वामकर्णे ॥४०॥ ॐ दां नमः। भ्रूमध्ये ॥४१॥ ॐ नं नमः। मस्तके ॥४२॥ ॐ स्वं नमः। शिरसि ॥४३॥

ध्यानम्

ॐ चन्द्रप्रभं पङ्कजसन्निषण्णं पाशाङ्कुशाभीतिवरं दधानम्।
मुक्ताविभूषांचितसर्वगात्रं ध्यायेत्प्रसन्नं वरुणं विभूत्यै ॥

इस प्रकार मानसिक पूजन करें। सर्वतोभद्रमण्डल पर मण्डूक आदि पीठ देवताओं की स्थापना करें ॐ मं मण्डूकादिपरतत्वांतपीठदेवताभ्यो नमः।

उसके बाद सोने या ताम्र से निर्मित मूर्ति का घृत से अभ्यजन करें। पश्चात् दुग्धधारा, जलधारा से अभिषेक कर स्वच्छ वस्त्र से पौंछें और पुष्पों के आसन पर यन्त्र के मध्य में स्थापना करें। देवता से आवरण पूजा की आज्ञा माँगे।

वरुण यन्त्रम्

प्रथमावरणम् - षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षुमध्ये दिक्षुच - ॐ हृदयाय नमः। हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥१॥ ॐ शिरसे स्वाहा। शिरः श्री पा०। ॐ शिखायै वषट्। शिखाश्री पा०। ॐ कवचाय हुम्। कवचश्री पा०। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रयश्री पा०। ॐ अस्त्राय फट्। अस्त्रश्री पा०।
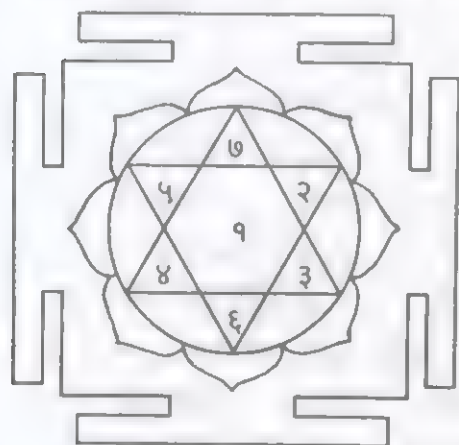
पुष्पाञ्जलि मादाय -

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

द्वितीयावरणम् – ततोऽष्टदलेषु पूज्यपूजक योरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण **ॐ शेषाय नमः। शेषश्री पा०। ॐ वासुकये नमः। वासुकिश्री पा०। ॐ तक्षकाय नमः। तक्षकश्री पा०। ॐ कर्कोटकाय नमः। कर्कोटकश्री पा०। ॐ पद्माय नमः। पद्मश्री पा०। ॐ महापद्माय नमः। महापद्मश्री पा०। ॐ शङ्खपालाय नमः। शङ्खपालश्री पा०। ॐ कुलिकाय नमः। कुलिकश्री पा०।**

पुष्पाञ्जलि देवें – अभीष्टसिद्धिं........द्वितीयावरणाचर्नम्॥

तृतीयावरणम् – **भूपूरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च सम्पूज्य।**

पुष्पाञ्जलि देवें – अभीष्टसिद्धिं........ तृतीयावरण चर्नम्॥ ॐ पूजितास्तर्पिता सन्तु से जल छोड़ें।

इस मन्त्र का पुरश्चरण १ लाख जप का है। तथा दशांश हवन, तर्पण कर ब्राह्मण भोजन करायें।

॥ फलश्रुति ॥

सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् ।
तथा च लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं पायसेन दशांशतः ।
सर्पिःसिक्तेन जुहुयान्मन्त्री मन्त्रस्य सिद्धये ॥१॥
ऋणमुक्त्यै जपेन्मन्त्रं प्रत्यहं साष्टकं शतम् ।
जपेनानेन लभते महतीमव्ययां श्रियम् ॥२॥
सितेक्षुशकलैर्मंत्री जुहुयाद्धृतसंप्लुतैः ॥
चतुर्दिनं दशशतमृणमुक्त्यै महाश्रियै ॥३॥
समिद्भिर्वेतसोत्थाभिः क्षीराक्ताभिर्दिनत्रयम् ।
जुहुयाद्वृष्टिसंसिद्ध्यै मन्त्रविद्विजितेन्द्रियः ॥४॥
अनेन विधिना मन्त्री सूर्ये शतभिषं गते ।
चतुःशतं घृतयुतं पायसं जुहुयाद्वशी ॥५॥
ऋणनाशाय संपत्त्यै वश्यारोग्याभिवृद्धये ।
भृगुवारे कृतो होमः पायसेन ससर्पिषा ।
महतीं संपदं कुर्यान्नाशयेत्सकलापदः ।
शालिभिघृतसंसिक्तैः सरिदंतरितः सुधीः ॥७॥
त्र्यहं चतुःशतं हुत्वा स्तंभयेत्परसैन्यकम् ।

सायं प्रत्यङ्मुखो वह्निमाराध्य प्रजपेन्मनुम् ॥८॥
चतुःशतं विमुच्येत मन्त्री सर्वैरुपद्रवैः ।
मन्त्री प्रत्यङ्मुखो भूत्वा तर्पयेद्विमलैजलैः ॥९॥
सर्वोपद्रवनाशाय समस्ताभ्युदयाप्तये ।
बहुना किमिहोक्तेन मन्त्रेणानेन साधकः ।
साधयेत्सकलान् कामाञ्जपहोमादितत्परः ॥१०॥

॥ इति वरुणत्रिचत्वारिंशदक्षरमन्त्र प्रयोगः ॥

१.॥ अनावृष्टिशमन प्रयोगः॥

(वरुण यन्त्र प्रयोगः २)

अकाल पड़ने पर इन्द्र को प्रसन्न करने के लिये वरुण मण्डल बनाकर ४९ मेघों का पूजन, इन्द्र का पूजन मन्त्रजप, वरुणमन्त्र जाप किया जाता है।

वरुण मन्त्र जप नाभि पर्यन्त जल में अथवा गीले वस्त्रों सहित करने पर शीघ्र फल देता है।

॥ वारुणसूक्तम् ॥

ॐ हिरण्यवर्णाः शुचय पावकाया सुजातः कश्यपो या स्विन्द्रः ।
अग्निं या गर्भदधिरे विरूपास्तान आपः श ठं स्योना भंवतु ॥१॥
ॐ या सा ठं राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृत अवपश्यं जनानाम् ।
मधुश्युतः शुचयोयाः पावकास्तान आप श ठं श्योना भवंतु ॥२॥
या सां देवादिवि कृण्वंति भक्षं या अंतरिक्षे बहुधा भवंति ।
याः पृथिवीं पयसो दंति शुक्रास्तान आपः श ठं स्योनाभवंतु ॥३॥
ॐ शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तनुवो पस्पृशत्व चं मे ।
सर्वा ठं अग्निं ठं रप्सुषदो हुवेवो मयि वर्चो बल्माजो निधत ॥४॥

वरुणमन्त्रपुरश्चरणम् (शारदातिलके) ॐ ध्रुवासुत्वासक्षितिषुक्षियंतो व्यस्मत्याशंवरुणोमुमोचत्। अवोवन्वानाआदिते रुपस्थाद्यूयं पातस्वस्तिभिः सदानः॥ द्विचत्वारिंशद्वर्णात्मक ऋग्वेदोक्तो मन्त्रः॥ इति॥

विनियोगः – अस्य वरुणमन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। वरुणो देवता। अनावृष्टिशमनार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः – ॐ वसिष्ठ ऋषये नमः शिरसि। ॐ त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। ॐ वरुणदेवतायै नमः हृदये। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

अथ षडङ्गन्यासः – ध्रुवात्वासक्षितिषु हृदयाय नमः। ॐ क्षियंतोव्यस्मत्पाशं शिरसे स्वाहा। ॐ वरुणो मुमोचत शिखायै वषट्। ॐ अवोवन्वाना अदिते कवचाय हुं। ॐ रुपस्थाद्यूयंपात नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ स्वस्तिभिः सदान इत्यस्त्राय फट्।

॥ मन्त्रवर्णन्यासः॥

ॐ ध्रुं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे। ॐ वां नमः दक्षिण पादांगुलिमूले। ॐ सुं नमः दक्षिणगुल्फे। ॐ त्वां नमः दक्षिणजानुनि। ॐ सं नमः दक्षपादमूले। ॐ क्षिं नमः वामपादांगुल्यग्रे। ॐ तिं नमः वामपादांगुलिमूले। ॐ षुं नमः वामगुल्फे। ॐ क्षिं नमः वामजानुनि। ॐ यं नमः वामपादमूले। ॐ तों नमः गुदे। ॐ ष्यं नमः लिङ्गे। ॐ स्मं नमः नाभौ। ॐ त्यां नमः कुक्षौ। ॐ शं नमः पृष्ठे। ॐ वं नमः हृदये। ॐ रुं नमः दक्षिण स्तने। ॐ णों नमः वामस्तने। ॐ मुं नमः गले। ॐ मों नमः दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे। ॐ चं नमः दक्षिणहस्तांगुलिमूले। ॐ अं नमः दक्षिणमणिबन्धे। ॐ वों नमः दक्षिणकूर्परे। ॐ वं नमः दक्षिणबाहुमूले। ॐ न्वां नमः वामहस्तांगुल्यग्रे। ॐ नां नमः वामहस्तांगुलिमूले। ॐ अं नमः वाममणिबन्धे। ॐ दिं नमः वामकूर्परे। ॐ तें नमः वामबाहुमूले। ॐ रुं नमः वक्त्रे। ॐ पं नमः दक्षकपोले। ॐ स्थां नमः वामकपोले। ॐ द्यूं नमः दक्षिणनासिकायाम्। ॐ यं नमः वामनासिकायाम्। ॐ पां नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ तं नमः वामनेत्रे। ॐ स्वं नमः दक्षिणकर्णे। ॐ स्तिं नमः वामकर्णे। ॐ भिं नमः भ्रूमध्ये। ॐ सं नमः मस्तके। ॐ दां नमः शिरसि। ॐ नं नमः सर्वाङ्गे।

ध्यानम् –

चन्द्रप्रभं पङ्कजसन्निषण्णं पाशाङ्कुशाभीतिवरं दधानम्।
मुक्ताविभूषांचितसर्वगात्रं ध्यायेत्प्रसन्नं वरुणं विभूत्यै ॥१॥

इस मन्त्र से ध्यान कर मानसोपचार से पूजन करें। धर्मादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः पूर्ववत्संपूज्य। मध्ये। मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य। आवहनादिपुष्पांतैरुपचारैर्भगवन्तं वरुणं संपूज्य। यन्त्र की आवरण पूजा करें।

प्रथमावरणम् - तद्यथा (षट्कोणे) प्राचीक्रमेण आग्नेयादिकोणकेसरेषु मध्ये दिक्षु च - ॐ ध्रुवासुत्वासक्षितिषु हृदयाय नमः। ॐ क्षियन्तोव्यस्मत्याशं शिरसे स्वाहा। ॐ वरुणो मुमोचत् शिखायै वषट्। ॐ अवोवन्नवानाअदिते कवचाय हुम्। ॐ रुपस्थाद्यूयम्पात नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ स्वस्तिभिः सदान इत्यस्त्राय फट्। इति षडंगानि पूजयेत्।
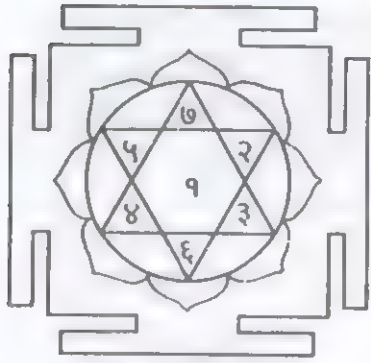
वरुण यन्त्रम्

द्वितीयावरणम् - (ततोऽष्टदलेषु प्राचीक्रमेण) - ॐ शेषाय नमः। ॐ वासुकये नमः। ॐ तक्षकाय नमः। ॐ कर्कोटकाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ महापद्माय नमः। ॐ शंखपालाय नमः। ॐ कुलिकाय नमः। इति पूजयेत्।

तृतीयावरणम् - (तस्माद्बाह्ये चतुरस्रे भूपुरे पूर्वादिदशदिक्षु) - ॐ लं इन्द्राय नमः। ॐ रं अग्नये नमः। ॐ मं यमाय नमः। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः। ॐ वं वरुणाय नमः। ॐ यं वरुणाय नमः। ॐ सं सोमाय नमः। ॐ हं ईशानाय नमः। ॐ ईशानपूर्वयोर्मध्ये - ॐ आं ब्रह्मणे नमः। निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये - ॐ अं अनन्ताय नमः। इति पूजयेत्।

चतुर्थावरणम् - (तद्बहिस्तत्तत्समीपे) - ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अङ्कुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः। इत्यादि आयुधों का पूजन करें।

एवमावरणपूजां कृत्वा - धूपदीप नैवेद्यतांबूलदक्षिणानीराजन प्रदक्षिणा नमस्कारैः पूजां समाप्य। यथाविधि वाग्यतो जपं कुर्य्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। जपान्ते वृष्टिकामनया वेतेसोत्थाभिः क्षीराक्ताभिः समिद्भिः पायसान्नेन सर्पिः सिक्तेन च दशांश होमं कृत्वा तद्दशांशेन तर्पणं तद्दशांशेन मार्ज्जनं तद्दशांशतः यथाशक्ति वा पायसान्नेन ब्राह्मणभोजनं च कार्यम् (शारदातिलके) लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं पायसेन दशांशतः। सर्पिः सिक्तेन जुहुयान्मंत्री मन्त्रस्य सिद्धये॥१॥ ऋणमुक्त्यै जपेन्मन्त्रं प्रत्यहं साष्टकं शतम्। जपेनानेन लभते महतीमव्ययां श्रियम्॥२॥ शितेक्षुशकलैर्मंत्री जुहुयाद्घृतसंप्लुतैः। चतुर्दिनं

दशशतमृणमुक्त्यै महाश्रियै ॥३ ॥ समिद्भिर्वेतसोत्थाभिः क्षीराक्ताभिर्दिनत्रयम्। जुहुयाद्वृष्टिसंसिद्ध्यै मन्त्रविद्विजितेन्द्रियः ॥४ ॥ अनेन विधिना मन्त्री सूर्ये शतभिषं गते। चतुःशतं घृतयुतं पायसं जुहुयाद्वशी ॥५ ॥ ऋणनाशाय संपत्यै वश्यारोग्याभिवृद्धये। भृगुवारे कृतो होमः पायसेन च सर्पिषा ॥६ ॥ महती संपद कुर्यान्नाशयेत्सकलापदः। शालिभिर्घृत संसिक्तैः सरिदंतरितः सुधीः ॥७ ॥ त्र्यहं चतुःशतं हुत्वा स्तंभयेत्परसैन्यकम्। सायं प्रत्यङ्मुखो वह्निमाराध्य प्रजपेन्मनुम् ॥८ ॥ चतुःशतं विमुच्येत मन्त्री सर्वैरुपद्रवैः। मन्त्री प्रत्यङ्मुखो भूत्वा तर्पयेद्विमलैर्जलैः ॥९ ॥ सर्वोपद्रवनाशाय समस्ताभ्युदयाप्तये। बहुनाकिमिहोक्तेन मन्त्रेणानेन साधकः ॥१० ॥ साधयेत्सकलान्कामान्जपहोमादितत्परः ॥

२. ॥ अथवृष्टिप्रदविधानं द्वितीयम् ॥

(बृहदृग्विधाने शौनकः)

अच्छावदेति सूक्तं तु वृष्टिकामः प्रयोजयेत् ।
निराहारः क्लिन्नवासा अचिरेण प्रवर्षति ॥१ ॥
हुत्वायुतं वैतसीनां क्षीराक्तानां हुताशने ।
महद्वर्षमवाप्नोति सूक्तेनाच्छावदेन हि ॥२ ॥

अनेन सूक्तेन प्रत्यृचं वा दिश उपस्थेया इति ''सायणभाष्ये''। अथ अच्छावदेति सूक्तं ऋ० अ०४, अ० ४, वर्ग २७।

ॐ अच्छावदतवसंगीर्भिराभिः स्तुहिपर्जन्यं नमसाविवास ।
कनिक्रदद्वृषभोजीरदानूरे - तोदधात्योषधीषुगर्भम् ॥१ ॥
विवृक्षान्हतन्त्युतहन्ति रक्षसोविश्वविभायभुवनं महावधात् ।
उतानागाईषवृष्ण्यावतोयत्पर्जन्यः स्तनयन्हन्तिदुष्कृतः ॥२ ॥
रथीवकशयाश्वां अभिक्षिपन्नाविर्दतान्कृणुतेवर्ष्यां३ अह ।
दूरात्सिंहस्यस्तनथाउदीरतेयत्पर्जन्यः कृणुतेवर्स्यं नमः ॥३ ॥
प्रवातावान्तिपतयन्तिविद्युतउदोषधीर्जिहतेपिन्वतेस्वः ।
इराविश्वस्मैभुवनायजायतेयत्पर्जन्यः पृथिवींरेतसावति ॥४ ॥
यस्यव्रतेपृथिवीनन्नमीतियस्यमीतियस्य व्रतेशफवजर्भुरीति ।
यस्यव्रतओषधीर्विश्वरूपाः सनः पर्जन्यमहिशर्मयच्छ ॥५ ॥

दिवोनोवृष्टिंमरुतोररीध्वं प्रपिन्वतवृष्णोअश्वस्यधाराः ।
अर्वाङ्तेनस्तनयित्नुनेह्यपोनिषिञ्चन्नसुर पितानः ॥६ ॥
अभिक्रंदस्तनय गर्भमाधाउदन्वता परिदीयारथेन ।
दृतिंसुकर्षबिषितन्यञ्चसमा भवन्तूद्वतोनिपादाः ॥७ ॥
महान्तंकोशमुदचानिषिञ्चस्यन्दन्तांकुल्या विर्षिताः पुरस्तात् ।
घृतेनद्यावापृथिवीव्युन्धिसुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यः ॥८ ॥
यत्पर्जन्य कनिक्रदत्स्तनयन्हंसिदुष्कृतः ।
प्रतीदंविश्वं मोदतेयत्किं च पृथिव्यामधि ॥९ ॥
अबषीर्वर्षमुदुषूगृभाया कर्धन्वान्यत्येतवाउ ।
अजीजनओषधीर्भोजनाय कमुतप्रजाभ्योविमोदनीषाम् ॥१० ॥

इति दशर्चं सूक्तम्। अनेन सूक्तेन प्रत्यृचं वा अयुतवेतसीनां क्षीराक्तानां होमाच्छीघ्रं वर्षति। होमान्ते इदपर्जन्याय इति त्यागं कुर्यादितिपर्जन्यविधानम्।

३. ॥ अथ तिस्रोवाच इत्यादिसूक्तद्वयविधानम् ॥

(वृष्टिप्रद)

ऋग्विधाने - (शौनकः) - आस्यदघ्नं विगाह्यापः प्राङ्मुखः प्रयतः शुचिः सूक्ताभ्यां तिस्र आदिभ्यामुपतिष्ठेत भास्करम्। अनश्नतैतज्जप्तव्यं वृष्टिकामेन यत्नतः। पञ्चरात्रेऽप्यतिक्रांते महतीं वृष्टिमाप्नुयात्।

विनियोगः - ॐ तिस्रो वाच इत्यादिसूक्तस्य अग्निपुत्रः कुमार ऋषिः वसिष्ठो वा। त्रिष्टुप्छंदः। पर्जन्यो देवता। वृष्टिप्राप्त्यर्थे विनियोगः।

ॐ तिस्रो वाचः प्रवदज्योतिरग्राया एतद्दुह्रेमधुदोघमुधः ।
सवत्संकृण्वन् गर्भमोषधीनां सद्योजातो वृषभो रोरवीति ॥१ ॥
योवर्धनओषधीनां यो अपांयोविश्वस्यजगतोदेवईशे ।
सत्रिधातुशरणं शर्मयंसत्रिवर्तुज्योतिः स्वभिष्ट्य१ स्मे ॥२ ॥
स्तरीरुत्वद्भवति सूतउत्वद्यथावशं तन्वंचक्र एषः ।
पितुः पयः प्रतिगृभ्णातिमातातेन पितावर्धते तेनपुत्रः ॥३ ॥
यस्मिन्विश्वानिभुवनानित स्थुस्तिस्त्रोधावस्त्रेधाससंस्त्रुरापः ।
त्रयः कोशामउपसेचनासोमध्वश्चोतन्त्यभितोविरप्शम् ॥४ ॥

इदं वचः पर्जन्याय स्वराजेत्हृदोअस्त्वन्तरंतज्जुजोषत् ।
मयोभुवोवृष्टयः सन्त्वस्मेसुपिप्पलाओषधीर्देवगोपाः ॥५॥
पुरेतोधावृषभः शश्वतीनांतस्मिन्नात्मा जगतस्तस्थुषश्च ।
तन्मऋतं पातु शतशारदाय यूयंपातस्वस्तिभिः सदानः ॥६॥

॥ इति प्रथमसूक्तम् ॥

विनियोगः – ॐ पर्जन्यायेति सूक्तस्य अग्निपुत्रः कुमार ऋषिः वसिष्ठो वा। गायत्री छन्दः। पर्जन्योदेवता। वृष्टिप्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ पर्जन्यायप्रगायतदिवस्पुत्रायमीडुषे। सनोयवसमिच्छतु॥१॥
योगर्भमोषधीनांगवांकृणोत्पर्वताम् । पर्जन्यः पुरुषीणाम् ॥२॥
तस्माइदास्येहविर्जुहोतामधुमत्तमम्। इलांनः संयतं करत् ॥३॥

॥ इति वृष्टिप्राप्तिकर विधानम् ॥

४. ॥ अन्यप्रयोगः ॥

नाभिपर्यन्त जल में शंकर का ध्यान करके मृत्युञ्जय जप करें। अथवा दुर्गा के मन्त्र का जप करें। संपुट पाठ करें तो गीलेवस्त्र पहन कर पाठ करें।

ॐ वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत् ।

५.॥ अनावृष्टि –निवारक प्रयोगः॥

अच्छी वर्षा हेतु पंचदेवताओं गणेश, सूर्य, शक्ति, शिव और विष्णु के पूजन सहित भगवान् वरुण के पूजन हेतु संङ्कल्प करे। पंचब्रह्मदेवताओं के पूजन के बाद भगवान् श्रीवरुणदेव का ध्यान करे।

ध्यानम्–

ॐ पुष्करावर्तकैर्मेघैः प्लावयन्तं वसुन्धराम् ।
विद्युत् गर्जित-सन्नद्ध-तोयात्मने नमाम्यहम् ॥
यस्य केशेषु जीमूतो नद्यः सर्वांग-सन्धिषु ।
कुक्षौ समुद्राश्चत्वारस्तस्मै तोयात्मने नमः ॥

इस ध्यान को पढ़कर, अपने शिर पर पुष्प चढ़ाकर मानसोपचारों से पूजा करें। फिर अर्घ्य-स्थापन कर, पुनः भगवान् श्रीवरुण का ध्यान करते हुए उनका आवाहन करे तथा यथा-शक्ति उनका पूजन करें।

इसके बाद एकाग्रचित्त होकर, अच्छी वर्षा के लिये, दृढ़ निश्चय होकर, किसी नदी या उसके अभाव में किसी जलाशय (तालाब) के पास जाकर, ''हुं श्रीं हूं'' इस मंत्र का जप करते हुए उसमें प्रवेश करें। नाभि तक गहरे जल में खड़े होकर निम्न विनियोग पढ़े-

विनियोग: - **ॐ अस्य मंत्रस्य प्रजापतिः ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्रीवरुणः देवता एतद् राज्यमभिवाप्य सु-वृष्ट्यर्थं जपे विनियोगः।**

इसके बाद **ॐ वं** मंत्र का आठ हजार जप करें।

१. ॐ हूँ ह्रीं क्षं क्षां, क्षिं क्षीं, क्षुं क्षूं, क्षें क्षैं, क्षों क्षौं, क्षं क्षः, हुं फट् ठं ठः।

२. ॐ ह्रीं क्षें क्षिं क्षीं, क्षुं क्षूं, क्षें क्षैं, क्षों क्षौं, क्षं क्षः, हूं।

उक्त दोनो मंत्रो में से किसी एक मंत्र को जलाशय के मध्य में पूर्वमुख खड़े होकर जपे।

॥ अतिवृष्टि स्तंभन ॥

कोयले या भस्म से एक शिला पर षट्कोण बनाकर उसके मध्य में मेघ लिखकर खड्डा खोदकर उल्टा गाड़ देवें।

वृष्टिस्तंभन यन्त्रम्

उसके बाद मेघों की तरफ देखकर त्राटक करते हुये **मन्त्र जप करें।**
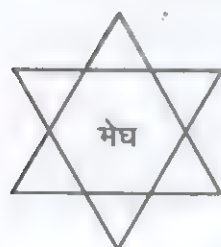
प्रयोग की सफलता आपकी इष्टशक्ति पर निर्भर है तथा आजमाइस किया हुया सफल प्रयोग है।

कार्य संपन्न होने पर शिला को बाहर निकालें दूध की धारा देवें, पञ्चामृत से धोयें शान्ति स्तोत्र पढ़ें। कई बार उपद्रव अधिक होने पर देखा गया है कि शिला के टुकड़े हो जाते हैं।

गायों को चारा, कबूतरों को अन्न डालें, ब्राह्मणभोजन, कन्याभोजन करायें।

मन्त्र - ॐ ह्लीं बगलामुखी मेघानां (इन्द्रस्य) वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

॥ अथ चोरनिवारणम् ॥

जलेरक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः ।
अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातुः केशवः ॥१॥
जले रक्षतु नन्दीशः स्थले रक्षतु भैरवः ।
अटव्यां वीरभद्रश्च सर्वतः पातुः शङ्करः ॥२॥
अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः ।
बीभत्सुर्विजयः कृष्णः सव्यसाची धनञ्जयः ॥३॥
तिस्त्रो भार्याः कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती ।
तासां स्मरणमात्रेण चोरो गच्छति निष्फलः ॥४॥
कफल्लकः कफल्लकः कफल्लकः ।
इति पठित्वा शयनं कार्यं तेन चोरो निष्फलो गच्छेत् ॥५॥

॥ अथ भूतोपद्रवनाशका उड्डीशमन्त्राः ॥

मन्त्रः - ॐ नमो भगवते नारसिंहाय घोररौद्रमहिषासुररूपाय त्रैलोक्या-डंबराय रौद्रक्षेत्रपालाय ह्रों ह्रों क्रीं क्रीं क्रीमिति ताडय ताडय मोहय मोहय द्रंभि २ क्षोभय २ आभि २ साधय २ ह्रीं हृदये आं शक्तये प्रीति ललाटे बंधय २ ह्रीं हृदये स्तंभय २ किलि २ ईं ह्रीं डाकिनि प्रच्छादय २ शाकिनीं प्रच्छादय २ भूतं प्रच्छादय २ प्रभूतं प्रच्छादय २ स्वाहा राक्षसं प्रच्छादय २ ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय २ सिंहिनीपुत्रं प्रच्छादय २ डाकिनीग्रहं साधनाय २ शाकिनीग्रहं साधय २ अनेन मन्त्रेण डाकिनीशाकिनी भूतप्रेतपिशाचाद्यैकाहिक - द्व्याहिक त्र्याहिकचातुर्थिक पञ्चवातिकपैत्तिकश्लैष्मिक सन्निपात केसरि डाकिनी ग्रहादीन्मुंच मुंच स्वाहा। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

॥ इति मन्त्रः॥

विधानम् - लोहे की सेल से २१ बार झाड़ दें अथवा छप्पर के तीले से झाड़ दें तो उन्मादादिक भूतबाधा दूर हो।

॥ अथडाकिनी से बालक छुडाने का मन्त्र ॥

ॐ कालाभैरव कपिली जटा रात दिन खेले चौपटा कालाभैरव भस्म मुसाण जेहि मांगू सो पकड़ी आन। डंकिनी संखिनी पटसिहारी जरख चढति गोरखमारी छोडिछोडिरे पापिनी बालक पराया गोरखनाथका परवाना आया॥ इति मन्त्रः॥

विधानम् - तीर से झाड़ दे और पानी अभिमन्त्रित करके पिलावें तो बालक डाकिनी से छुटे।

॥ प्रेतादि रोगादि झाड़ने का मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरु को घोर घोर इन घोर काजीकी किताब घोर मुल्लाकी बाँग घोर रैगर की कुण्ड घोर धोबीका कुण्ड घोर पीपलका पान घोर देवकी दिवाल घोर आपकी घोर बिखेरता चल परकी घोर बैठता चल वज्रका किवाड़ तोड़ता चल सारका किवाड़ तोडता चल कुनकुन सो बन्द करता चल भूत को पलीत को देव को दानव को दुष्ट को मुष्ट को चोट को फेट को मेलेको घरेलेको उलकेको बुलके को हिडके को भिडके को ओपरी को पराई को भूतनी को पलीतनी को डंकिनी को स्यारी को भूचरी को खेचरी को कलुए को मलबे को उनको मथ बायके तापको तिजारीको माथाकी मथबायको मगरांकीपीडाको पेटकी पीडाको सांस को कांसको मरे को मुसाण को कुणकुणसा मुसाण कचिया मुसाण भुकिया मुसाण कीटिया मुसाण चीडीचौपाटा का मुसाण नुह्या मुसाण इन्हो को बंदकरि एडी की एडी बंध करि पीड़ाकी पीडीबंधकरि जांघकी जाडी बंधकरि कट्यांकी कडीबंधकरि पेटकी पीडा बंधकरि छातीकी शूल बंधकरि सरिकी सीस बंधकरि चोटीकी चोटीबंध करि नौनाडी बहतर कोठा रोमरोममें घर पिण्ड में दखलकर दश बंगालका मनसारा मसेबडा आकर मेरा कारज सिद्ध न करे तो गुरु उस्ताद से लाजे शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा ॥

विधानम् - मद्य, मांस चढ़ावें, छडछडीला की धूप देवें, अतर, तैल दीपक, सभी प्रत्येक रविवार को देय। भांग सुलफा चाढ़ाना चाहि सिद्ध होने पर मन्त्र सात बार पढ़कर झाड़ दे तो सर्वोपद्रव दूर हो कर सुखी हो इसमें संदेह नहीं हैं।

॥ नजर झाड़ने का मन्त्र ॥

ॐ नमो सत्य नाम आदेश गुरु को ॐ नमो नजर जहाँ परपीर न जानी बोले छलसों अमृतवानी कहो नजर कहां ते आई यहां की ठौर तोहि कौन बनाई कौन जात तेरो कहा ठाम किसकी बेटी कहा तेरो नाम कहांसे उड़ी कहां को जाया अबही बसकर ले तेरी माया मेरी जात सुनो चित लाय जैसी होय सुनाऊं आय तेलन तमोलन चूहडी चमारी कायथनी खतरानी कुम्हारी महतरानी राजाकी रानी जाको दोष ताही के शिर पड़े जाहर पीर नजर से रक्षा करे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा ॥

अस्यविधानम् - इस मंत्र द्वारा मोरपंख से झाड़ दें तो आराम हो।

पलीता यंत्रम्

द	मृ	सि	ज	जं	त्र	०	०	०
अ	च	जा	पै	नि.	स्थै	०	०	०

इसयन्त्र को कागज पर लिखकर पलीता सुलगाकर सुंघावे तो प्रेत वकुरे बात करे जो पूछे उसका जवाब दे।

॥ अथडाकिनी के चोट मारने का मन्त्र ॥

ॐ नमो महाकाली जोगनी जोगनी पारशाकिनी कल्पवृक्षीय दृष्टि जोगनी सिद्धरुद्राय कालदंडेन साधय २ मारय २ चूरय २ अपहर शाकिनी सपरिवारं नमः ॐ हूं हूँ हैं ह्रौं फट् स्वाहा॥

अस्यविधानम् - इस मन्त्र से सात बार गूगल को पढ़कर ओखली में डाल मूसल से कूटे तो वह मूसल की चोट डाकिनी को लगेगी, अगर इस मन्त्र से अपना घोंटू मूंडे तो डाकिनी का सिर मुंड जायेगा, किसी चीज पर मन्त्र पढ़कर जिसके घर में डाले उसके घर में जाके डाकिनी बोलेगी। इस मन्त्र को पढ़कर आँखों में जल मारे तो खेल उठें।

॥ अथडाकन भक्षित का मन्त्र ॥

ॐ डाकन शाकन और सिहारी भैरो यतीके चक्र मारी अन्नपान खाय पराया तके तिस पापनका भण्डारा फूटे नरसा टूटे पाप न घूटे गुरु की शक्ति चेले की भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा॥

विधानम् - सात बार झाड़ दें तो डाकिनी के खाये हुये को आराम होवें।

डाकिनी दूर करने का मन्त्र - **ॐ नमो आदेश गुरुका डाकिनी सिहारी किन्ने मारी जती हनुमन्त ने मारी कहां जाय दब की किन देखी जती हनुमन्त ने देखी सातवें पाताल गई सातवें पाताल से कौन पकड़ लाया जती हनुमन्त पकड़ लाया एक ताल दे एक कोठा तोड़ा दो ताल दे दो कोठा तोड़ा तीन ताल दे तीन कोठा तोड़ा चार ताले दे चार कोठा तोड़ा पांच ताल दे पांच कोठा तोड़ा छः ताल दे छः कोठा तोड़ा सात ताल दे सातवां कोठा खोल देखे तो कौन खड़ी है डाकिनी सिहारी भूतप्रेत चले जती हनुमन्त रे झाडे सूं चले ॐ नमो आदेश गुरु का गुरु की शक्ति मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा॥**

विधानम् - मोर की पंख अथवा लोहे से झाड़ दें तो सर्वोपद्रव दूर हो।

अन्यत् - **ॐ नमो आदेश गुरु का गिरह बाज नटनीका जाया चलती बेर कबूतर खाया पीवे दारू खाय जो मांस रोगदोष को लावे फांस कहां कहां से लावेगा गुदगुद में सुवावेगा बोटी बोटी में से लावेगा चामचाम में से लावेगा नौ नाड़ी बहत्तर कोठा में से लावेगा मारमार बन्दी करकर लावेगा न लावेगा तो अपनी माता की सेज पर पग धरेगा मेरा भाई मेरा दिखा दिखलाय तो मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा॥**

विधानम् - मोरपंख से झाड़ें तो भूतप्रेत डाकिनी शाकिनी सब भाग जायें।

डाकिनी के बकुराने का मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरु का ॐ नमो जय नरसिंह तीन लोक चौदह भुवन में हाथ चाबी और होठ चाबी नयन लाल लाल सर्व वैरी पछाड मार भगतन को प्राण राखि आदेश आदि पुरुषको।

विधानम् - इस मन्त्र से पानी पढ़कर पिलावे फिर पूछे तो डाकिनी शाकिनी बोले।

॥ भूतप्रेत उपद्रव दबाने हेतु ॥

भित्वा पाताल मूलं चल चालि चलतं व्याल लील कराले विद्युद्दण्डं प्रचण्डं प्रहरण सहिते सद्भुजैस्तर्जयन्ती दैत्येन्द्रं क्रूर दंष्ट्रा कटकट घटिते स्पष्ट भीमाट्टहासे माया जीमूत माला कुहरित गगने रक्ष मां देवि पद्मे

विधानम् - मास के दूसरे शनिवार से प्रारंभ कर प्रथम अयुत जप करले। और इस श्लोक से जल अभिमन्त्रित कर प्रोक्षण करने से भूतप्रेत पिशाचादि उपद्रव दूर होते हैं। किन्नर यक्षादि के उपद्रव स्वरूप अग्नि, अस्थि आदि की वर्षा होती हो तो बन्द हो जाती है।

॥ रामायण के कुछ सिद्ध मन्त्र॥

जीविका प्राप्ती के लिये -

विश्वभरन पोषनकर जोई। ताकर नाम भरत अस होई॥

खोई वस्तु पुन: प्राप्त करने के लिये -

गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजु ॥

लक्ष्मीप्राप्ति के लिये -

जिमि सरिता सागर महि जाहि। जद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥
तिमि सुख संपत्ति बिनही बौलाऐ। धरम शील पहिं जाहिं सुभाए॥

पुत्रप्राप्ति के लिये -

प्रेम मगन कौसल्या निसिदिन जातन जान।
सुखत सनेह बस मात बाल चरित का गान ॥

विवाह के लिये -

तब जनक पाई बसिष्ठ आयसु ब्याह साज संवारिकै।
मांडवी श्रुत कीरति उरमिला कुँअरि लई हैकारिकै।

संकट नाश के लिये -

जो प्रभु दीन दयालु कहावा। आरति हरन वेदजनु गावा।
जपहि नामु जन आरतभारी। मिटहि कुसंकट होई सुखारी।
दीन दयालु विरिषु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।

मुकद्दमा जीतने के लिये -

पवनतनय बल पवन समाना। बुद्धि विवेक विज्ञान निधाना।

विद्याप्राप्ति के लिये -

गुरु गृहे गय पढन रघुराई। अल्पकाल विद्यासब पाई।

बिक्री बढाने का मन्त्र — ....

भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहाकर मेरा
उठे जो डंडी बिके जो माल, भँवर वीर सोखे नहीं जाय।

विधान - रविवार के दिन काले उड़द लेकर उन पर २१ बार यह मन्त्र पढ़कर दुकान में डाल दें तो तीन रविवार में बिक्री तीन-चार गुनी बढ़ जायेगी।

शिघ्र मन्त्र सिद्ध करने की विधि -

शुभ मुहूर्त्त में रात्रि के उपरान्त पवित्र स्थान में काशी की ओर मुँह करके अष्टांग हवन सामग्री से एक माला या १०८ मन्त्र से आहुति देवे अर्थात् एक बार चौपाई पढ़कर एक आहुति देवे। इस प्रकार एक सौ आठ बार मन्त्र उच्चारण के साथ १०८ आहुतियाँ देने पर एक रात्रि में ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर जब जिस कार्य के लिए आवश्यकता हो इसका श्रद्धापूर्वक जबतक कार्यसिद्ध न हो नित्य जप करते रहना चाहिये।

अष्टांग हवन सामग्री इस प्रकार है चन्दन का बुरादा, तिल, शुद्ध गौघृत, शक्कर, अगर, तगर, कर्पूर, केशर, नागरमोथा, पंचमेवा, जौं और चांवल।

रक्षा रेखा -

मन्त्रसिद्धि करने के लिए या किसी संकट पूर्ण स्थान पर रात्रि व्यतीत करने के लिए अपने चारों ओर रक्षा की रेखा खींच लेनी चाहिए श्री लक्ष्मणजी ने सीताजी की कुटिया के पास जो रक्षारेखा खींची थी उसी लक्ष्य पर यह रक्षामन्त्र है। इस की १०८ आहुतियां देकर सिद्ध कर लेना चाहिये।

मामभिरक्षय रघुकुल नायक । घृतवर चाप रुचिकर सायक ॥

॥ घण्टाकर्ण मणिभद्र यक्षराज साधन विधि ॥

यह सिद्ध मंत्र है साधक को सदाचारी होना चाहिये। सदाचार व तन्मनस्कता यदि हो तो इनकी काम्य साधना यश वृद्धि के साथ भोग मोक्ष दोनों देने वाली होती है। प्रेतादि उपद्रव शीघ्र नष्ट होते हैं।

घण्टाकर्ण के मंत्र इस प्रकार है-

(१)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घण्टाकर्ण महावीर सर्व व्याधिविनाशक ।
आधिं व्याधिं विपत्तिं च महाभीत्तिं विनाशय ॥
नाममंत्रोऽस्ति ते सिद्धः सर्व-मंगलकारकः ।
इष्टसिद्धिं महासिद्धिं जयं लक्ष्मीं विवर्धय ॥
त्वच्छ्रद्धाभक्तियोगेन भवन्तु सर्वशक्तयः ।
पराभवन्तु दुष्टाश्च शत्रवो वैरि-दुर्जनाः ॥
आपत्-कालेषु मां रक्ष मम बुद्धिं प्रकाशय ।
सर्वोपद्रवतो रक्ष घोररोगान् विनाशय ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घण्टाकर्ण महावीर ! धन समृद्धिं-प्रवर्द्धय।
राज्यं च राज्यमानं च बलं बुद्धिं प्रवर्द्धय ॥
ॐ क्रों ह्रीं श्रीं घण्टाकर्ण महावीर ! सर्वव्याधि विनाशक
महारोगान् भयान् घोरान् नाशय नाशय द्रुतम् ॥
दर्शनं देहि प्रत्यक्षं संरक्ष सर्व सङ्कटात् ।
रणे वने समुद्रे च रक्ष संरक्ष मे द्रुतम् ॥

अग्निचौरादितो रक्ष त्वन्नाममंत्रजापतः ।
ह्रीं घण्टाकर्ण! नमोऽस्तु ते ठः ठः स्वाहा ॥

(२)

ॐ घण्टाकर्ण महावीर सर्वव्याधि विनाशकः ।
विस्फोटकभयं-घोरं रक्ष रक्ष महाबल ॥

इस मंत्र के जप करने से समस्त विघ्न, उपद्रव दूर होते है।

(३)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नवपद मणिभद्राय नमः ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं मणिभद्र स्वाहा ॥
ॐ ह्रीं श्रीं भगवते श्रीमणिभद्राय ह्रीं श्रीं कण कण क्लीं फण फट् फट् स्वाहा ॥ ॐ क्लीं क्लीं क्लीं मणिभद्र-चेटकाय सर्व-सिद्धि-कराय मम स्वप्ने अमुक कार्यं दर्शय दर्शय स्वाहा ।
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।

लाल कनेर पुष्प पर मणिभद्र मंत्र का जप कर सिरहाने रखकर सोवें तो स्वप्न में वार्ता कहे। जैन ग्रंथों के अनुसार मणिभद्र व्यापार वृद्धिकारक है। सात सूंड के हाथी पर सवार है एवं व्यापार में कुशल है। कोई क्षेत्रपाल मानते हैं तो कोई यक्षराज मानते हैं।

नारियल की गिरी, छोहारा, दाख, घी, शक्कर, मधु इनसे १२००० बार **आहुतियाँ** देने से सर्व उपद्रवों की शान्ति होती है। प्रातः **जल** के ऊपर हाथ रखकर २१ बार मंत्र पढ़कर तीन अञ्जलि उस **जल** का पान करने से **विद्यावृद्धि** होती है। अपने ओढ़ने के वस्त्र को उक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर ओढ़ने से सभी प्रकार के भयों की निवृति होती है। **लक्ष्मी प्राप्ति** के लिये भोजन करने के बाद श्वेत वस्त्र धारण कर पूर्वाभिमुख होकर बैठे। ७२ दिनों तक श्वेत आसन पर बैठकर सवा लाख जप करे। जप पूरा होने पर मेवो से होम करे। ६ महिने के भीतर धन की वृद्धि होती है।

मंत्र से सात बार फूँक देने से दाढ़ का दन्त क्लेश दूर होता है। कन्या द्वारा काते गये सूत के नौ तागों को सिर से पैर तक नाप कर, उसमें सात गाँठें देकर २१ बार अभिमंत्रण और गुग्गल की धूप देकर स्त्री की कमर में बाँधने से **गर्भस्तंभन** होता है। चन्दन को घिसकर उस जल को मंत्र से अभिमंत्रित कर भूत ग्रह से पीड़ित व्यक्ति को पिलाने से भूत भय दूर [illegible] बार [illegible] को ओढ़ने से

सिर का दर्द दूर होता है। शीतज्वर मासिकज्वर, मोतीझरा आदि २१ बार झाड़ने से दूर होते है।

बिक्री की जाने वाली वस्तुऐं यदि विक्रय न हो तो सात बार उन पर हाथ रखकर मंत्र पढ़ना चाहिये। इससे बिक्री में वृद्धि होगी। हिंगुल से घर के भीतर दीवार पर मंत्र लिखने से आधि व्याधि, महा-मारी आदि नहीं होती। मंत्र को १०८ बार **चित्त लेटकर** जप करे और धूप दे, नाभि पर घी का **दीपक** सुरक्षित रूप से जलाए, सात दिनो में चोरी गई वस्तु की प्राप्ति होती है।

॥ अथ प्रज्ञावर्द्धन स्तोत्रम् ॥

विनियोग: - **ॐ अस्य श्रीविवर्द्ध स्तोत्रमन्त्रस्य भगवानशिवः ऋषि अनुष्टुप् छन्दः स्कन्दकुमारो देवता प्रज्ञा सिद्धयर्थ जपे विनियोगः।**

योगेश्वरो महासेनः कार्तिकेयोऽग्निनन्दनः ।
स्कंदः कुमार सेनानी स्वामी शंकर सम्भवः ॥
गांगेयस्ताम्र चूडश्च ब्रह्मचारी शिखिध्वजः ।
तारकारिरुमापुत्रः क्रौंचारिश्च षडाननः ।
शब्द ब्रह्म समूहश्च सिद्धः सारस्वतो गुहः ।
सनत्कुमारो भगवान भोगमोक्षप्रदः प्रभुः ॥
शरजन्मा गणाधीशः पूर्वजो मुक्तिमार्गकृत् ।
सर्वागमप्रणेता च वाञ्छितार्थप्रदर्शकः ॥
अष्टाविंशति नामानि मदीयानीतियः पठेत् ।
प्रत्यूषे श्रद्धयायुक्तो मूको वाचस्पतिर्भवेत् ॥
महामन्त्र मयानीति मम नामानि कीर्तयेत् ।
महाप्रज्ञामवाप्नोति नात्रकार्याविचारणः ॥
पुष्यनक्षत्रमारभ्य पुनः पुष्ये समाप्य च ।
अश्वत्थमूले प्रतिदिनं दशवारं तु संपठेत् ॥
सप्तविंशादिनैरेकं पुरश्चरणकं भवेत्

संपुटमन्त्र -

या देवी स्तूयते नित्यं विबुधैः वेदपारगैः ।
सा मे [illegible] जिह्वाग्रे [illegible]

प्रतिदिन प्रात:काल ब्रह्ममुहुर्त्त में मयूर वाहिनी श्री सरस्वती की मूर्ति या चित्र के सामने घृतदीपक रखकर पंचोपचार से पूजा करके प्रथम उपर्युक्त संपुट मन्त्र की एक माला फिर स्तोत्र और अन्त में एक माला संपुट मन्त्र का जप करें।

पुष्य नक्षत्र के दिन से अगले पुष्य तक २७ दिन प्रतिदिन १० पाठ करें। अश्वत्थ (पीपल) वृक्ष के नीचे बैठकर २७ दिन में ही सिद्धि होती है। (शालिहासः)

॥ प्रस्थानसिद्धिप्रद मन्त्रः॥

ॐ क्लीं गच्छ गौतम्। शीघ्रं त्वं ग्रामेषु नगरेषु च द्रव्याच्छादन मिष्टान्नां कल्पयस्व महामुने! क्लीं ॐ ॥ श्रीगौतमाय नमः (५ बार जपें)

इस मन्त्र का गायत्री मन्त्र संपुटित कर ग्रहण में १०८ बार जप लेवें। फिर जब कभी यात्रा में जाना होतो गणपति स्मरण के पश्चात् ५ बार इस मन्त्र का स्मरण कर प्रस्थान करें। अवश्य ही यात्रा आनन्दपूर्वक निवृत्ति होगी। बहुधाः इसका अनुभव किया गया है। गौतम ऋषि का यह मन्त्र जावद के कर्मनिष्ठ महापुरुष के द्वारा प्राप्त हुआ।

॥ अथ शत्रुघ्नकवचम्॥

ध्यानम् –

शत्रुघ्नं धृतकार्मुकं धृतमहातूणीरबाणोत्तमं
पार्श्वे श्रीरघुनन्दनस्य विनयाद्वामे स्थितं सुन्दरम्।
रामं स्वीयकरेण तालदलजं धृत्वाऽतिचित्रं वरं
सूर्याभं व्यजनं सभास्थितमहंतं वीजयंतं भजे ॥

विनियोगः – **अस्य श्रीशत्रुघ्नकवचमन्त्रस्य अगस्त ऋषिः। श्रीशत्रुघ्नो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। सुदर्शन इति बीजम्। कैकेयीनन्दन इति शक्तिः। श्रीभरतानुज इति कीलकम्। भरतमन्त्रीत्यस्त्रम्। श्रीरामदास इति कवचम्। लक्ष्मणांशज इति मन्त्रः। श्रीशत्रुघ्नप्रीत्यर्थं सकलमनः कामनासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।**

करन्यासः – **ॐ शत्रुघ्नाय अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ सुदर्शनाय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ कैकेयी नन्दनाय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ भरतानुजाय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ भरतमंत्रिणे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ रामदासाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

हृदयादिषडंगन्यासः – ॐ शत्रुघ्नाय हृदयाय नमः। ॐ सुदर्शनाय शिरसे स्वाहा। ॐ कैकेयीनन्दनाय शिखायै वषट्। ॐ भरतानुजाय कवचाय हुम्। ॐ भरतमंत्रिणे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ रामदासाय अस्त्राय फट्।

ध्यानम् –

रामस्य संस्थितं वामे पार्श्वे विनयपूर्वकम्।
कैकेयीनन्दनं सौम्यं मुकुटेनातिरंजितम् ॥१॥
रत्नकंकणकेयूर वनमालाविराजितम्।
रशनाकुण्डलधरं रत्नहारसनूपुरम् ॥२॥
व्यजनेन वीजयंतं जानकीकांतमादरात्।
रामन्यस्तेक्षणं वीरं कैकेयीतोषवर्द्धनम् ॥३॥
द्विभुजं कंजनयनं दिव्यपीतांबरान्वितम्।
सुभुजं सुन्दरं मेघश्यामलं सुन्दराननम् ॥४॥
रामवाक्ये दत्तकर्णं रक्षोघ्नं खड्गधारिणम्।
धनुर्बाणधरं श्रेष्ठं धृततूणोरमुत्तमम् ॥५॥
सभायां संस्थितं रम्यं कस्तूरीतिलकांकितम्।
मुकुटस्थावतंसेन शोभितं च स्मिताननम् ॥६॥
रविवंशोद्भवं दिव्यरूपं दशरथात्मजम्।
मथुरावासिनं देवं लवणासुरमर्दनम् ॥७॥
इति ध्यात्वा तु शत्रुघ्नं रामपादेक्षणं हृदि।
पठनीयं वरं चेदं कवचं तस्य पावनम् ॥८॥

॥ स्तोत्रम् ॥

पूर्वे त्ववतु शत्रुघ्नः पातु याम्ये सुदर्शनः।
कैकेयीनन्दनः पातु प्रतीच्यां सर्वदा मम ॥९॥
पातूदीच्यां रामबन्धुः पात्वधो भरतानुजः।
रविवंशोद्भवश्चोर्ध्वं मध्ये दशरथात्मजः ॥१०॥
सर्वत पातु मामत्र कैकेयीतोषवर्द्धनः।
श्यामलाङ्गः शिरः पातु भालं श्रीलक्ष्मणांशजः ॥११॥
भ्रुवोर्मध्ये सदा पातु सुमुखोऽत्रावनीतले।
श्रुतकीर्तिपतिर्नेत्रे कपोले पातु राघवः ॥१२॥

कर्णौ कुण्डलकर्णोऽव्यान्नासाग्रं नृपवंशजः ।
मुखं मम युवा पातु पातु वाणीं स्फुटाक्षरः ॥१३॥
जिह्वां सुबाहुतातोऽव्याद्यूपकेतुपिता द्विजान् ।
चुबुकं रम्यचुबुकः कंठं पातु सुभाषणः ॥१४॥
स्कंधौ पातु महातेजा भुजौ राघववाक्यकृत् ।
करौ मे कंकणधरः पातु खड्गी नखान्मम ॥१५॥
कुक्षी रामप्रियः पातु पातु वक्षो रघूत्तमः ।
पार्श्वे सुरार्चितः पातु पातु पृष्ठं वराननः ॥१६॥
जठरं पातु रक्षोघ्नः पातु नाभिं सुलोचनः ।
कटी भरतमन्त्री मे गुह्यं श्रीरामसेवकः ॥१७॥
रामार्पितमनाः पातु लिङ्गमूरू स्मिताननः ।
कोदंडधारी पात्वत्र जानुनी मम सर्वदा ॥१८॥
राममित्रं पातु जंघे गुल्फौ पातु सुनूपुरः ।
पादौ नृपतिपूज्योऽव्याच्छ्रीमान्पादांगुलीर्मम ॥१९॥
पात्वंगानि समस्तानि ह्युदरांगः सदा मम ।
रोमाणि रमणीयोऽव्याद्रात्रौ पातु सुधार्मिकः ॥२०॥
दिवा मे सत्यसंधोऽव्याद्भोजने शरसत्करः ।
गमने कलकण्ठोऽव्यात्सर्वदा लवणांतकः ॥२१॥
एवं शत्रुघ्नकवचं मया ते समुदीरितम् ।
ये पठंति नरास्त्वेतत्ते नराः सौख्यभागिनः ॥२२॥
शत्रुघ्नस्य वरं चेदं कवचं मंगलप्रदम् ।
पठनीयं नरैर्भक्त्या पुत्रपौत्रप्रवर्द्धनम् ॥२३॥
अस्य स्तोत्रस्य पाठेन यं यं कामं नरोऽर्थयेत् ।
तं तं लभेन्निश्चयेन सत्यमेतद्वचो मम ॥२४॥
पुत्रार्थी प्राप्नुयात्पुत्रं धनार्थी धनमाप्नुयात् ।
इच्छाकामं तु कामार्थी प्राप्नुयात्पठनादिना ॥२५॥
कवचस्यास्य भूम्यां हि शत्रुघ्नस्य विनिश्चयात् ।
तस्मादेतत्सदा भक्त्या पठनीयं नरैः शुभम् ॥२६॥

॥ इति आनंदरामायणे सुतीक्ष्णागस्त्य संवादे शत्रुघ्नकवचं संपूर्णम् ॥

॥ श्रीमद्भागवतानुष्ठानचक्रम् ॥

एकाहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	३३५	१२	१३

एकाहपारायणं शुक्राचार्य्यमतात् श्रावणकृष्णपक्षे कुर्यात्

द्व्यहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	१९०	९	१३
२	१४५	१२	१३

त्र्यारुणिमतात् द्व्यहपारायणं श्रावण शुक्लपक्षे कुर्यात्

त्र्यहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	१५३	७	१५
२	१३८	१०	९०
३	४४	१२	१३

त्र्यहपारायणं हारीतमतात् मुक्तिकाम आश्विनशुक्लपक्षे कुर्यात्

चतुरहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	८१	४	२३
२	८९	८	१७
३	८३	१०	५२
४	८२	१२	१३

चतुरहपारायणं सर्वकामना प्राप्तौ शौनकमतात् भाद्रपद शुक्लपक्षे कुर्यात् ॥

पञ्चाहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	६९	४	७
२	६९	६	१९
३	६३	९	२४
४	६९	१०	६९
५	६५	१२	१३

पंचाहपारायणं अकृतव्रणम–तात सर्वकामनाप्राप्त्यर्थे भाद्रपदशुक्लपक्षे कुर्यात् ॥

षडहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	६१	३	३२
२	४६	५	१४
३	७०	८	२४
४	६३	१०	३९
५	७०	११	३९
६	२५	१२	१३

षडहपारायणं शांशपायनम–तात् धनप्राप्तिकामो भाद्रपद कृष्णपक्षे कुर्यात् ॥

सप्ताहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	७१	४	९
२	६१	६	१३
३	५२	९	७
४	५१	१०	३४
५	३९	१०	७३
६	१७	१०	९०
७	४४	१२	१३

सप्ताहपारायणं शांशपायन मताद्धनप्राप्तिकामो भाद्रपद कृष्णपक्षे कुर्यात् ॥

सप्ताहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	५३	३	२४
२	४३	५	३
३	५०	७	८
४	५९	१०	४
५	५१	१०	५५
६	४१	११	६
७	३८	१२	१३

सप्ताहपारायणं वशिष्ठ मतान्पुत्रप्राप्तिकामो वैशाखे कुर्यात् ॥

सप्ताहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
[illegible]	४९	३	१०
२	६७	५	२३
३	३७	७	१५
४	४८	९	२४
५	४२	१०	४२
६	४८	११	९
७	४४	१२	१३

सप्ताहपारायणं सूतमतात्रिष्काम: कार्तिकशुक्लपक्षे कुर्यात् ॥

सप्ताहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	२९	२	१०
२	६४	४	३१

सप्ताहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	४८	३	१९
२	५१	५	६

सप्ताहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	६१	३	३६
२	५७	५	२६

३	४५	६	१९
४	३९	८	२४
५	७३	१०	४९
६	७२	११	३१
७	१३	१२	१३

सप्ताहपारायणं विश्वामित्रमतात् संकटमोचनार्थं मार्गशीर्षे कुर्यात् ॥

३	४९	७	१०
४	५३	९	२४
५	४९	१०	४९
६	४१	१०	९०
७	४४	१२	१३

सप्ताहपारायणं जमदाग्निमतात्दिपनाशनकाम : पौषे : कुर्यात् ॥

३	३४	७	१५
४	४८	९	२४
५	९०	१०	९०
६	३२	११	३१
७	१३	१२	१३

सप्ताहपारायणं भारद्वाजमतात् बंधमोक्षकामो माघे कुर्यात् ॥

सप्ताहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	४८	३	१९
२	६०	५	१५
३	४५	७	१५
४	६०	१०	१२
५	७२	१०	८४
६	३७	११	३१
७	१३	१२	१३

सप्ताहपारायणं गौतममतात् शत्रुपराजयकाम : फाल्गुने कुर्यात् ॥

सप्ताहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	४९	३	२०
२	५०	५	६
३	३९	६	१९
४	५९	९	२०
५	३९	१०	३५
६	६१	११	६
७	३८	१२	१३

सप्ताहपारायणं अत्रिमता द्रोगमुक्तिकामश्चैवे कुर्यात् ॥ कुर्यात् ॥

दशाहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	३५	३	६
२	३४	४	७
३	३३	५	९
४	३६	६	१९
५	३९	८	२४
६	३५	१०	११
७	३४	१०	४५
८	३४	१०	७९
९	३४	११	२३
१०	२१	१२	१३

दशाहपारायणं कश्यपमता द्राज्यप्राप्तिकाम आषाढे शुक्लपक्षे कुर्यात् ॥

पञ्चदशाहपारायणम्

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	२१	२	२
२	२३	३	१५
३	२२	४	४
४	२३	४	२७
५	२२	५	१८
६	२३	६	१५
७	२४	८	५
८	२५	९	६
९	२२	१०	४
१०	२२	१०	२६
११	२३	१०	४९
१२	२१	१०	७०

मासपारायणम्

कृष्णपक्षे

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	११	१	११
२	१०	२	२
३	१०	३	२
४	१०	३	१२
५	११	३	२३
६	११	४	१
७	९	४	१०
८	१२	४	२२
९	१०	५	१
१०	९	५	१०
११	१०	५	२०
१२	११	६	५

शुक्लपक्षे

दिन	अध्याय	स्कंध	अध्याय
१	१४	८	१५
२	१३	९	४
३	१४	९	१८
४	१२	१०	६
५	११	१०	१७
६	१३	१०	३०
७	१२	१०	४२
८	१२	१०	५४
९	११	१०	६५
१०	१३	१०	७८
११	९	१०	९७
१२	१२	११	९

१३	२२	११	२	१३	११	६	१६	१३	१२	११	२१
१४	२३	११	२५	१४	१०	७	७	१४	१२	१२	२
१५	१९	१२	१३	१५	९	८	१	१५	११	१२	१३

वृहस्पतिमतात्सर्वकामासिकामी ज्येष्ठशुक्लपक्षे आषाढे वा कुर्यात् ॥

मासपारायणं यदाकृष्णादि तदा शुक्लांतं यदा शुक्लादि तदा कृष्णांतम्। एवं प्रजापालनादिसर्वकामनाप्राप्तिम् लकं वृहस्पतिमत-मिदम्। एवं द्विमासिकषाण्मासिक सांवत्सरिकादिकमपि पारायणे ज्ञेयम्। वृहस्पति मतस्पष्टिः समाप्ता॥ मतान्तरे वैशाखशुक्ल पञ्चमीमारभ्य ज्येष्ठशुक्ल पञ्चमीं यावत्॥

॥ अथ महाभारतश्रवण विधानम् ॥

(महाभारते)

अतः परं प्रवक्ष्यामि यानि देयानि भारते।
वाच्यमाने तु विप्रेभ्यो राजन्पर्वणिपर्वणि ॥१॥
स्वस्ति वाच्य द्विजानादौ ततः कार्ये प्रवर्तिते।
समाप्ते पर्वणि ततः स्वशक्त्या पूजयेद्द्विजान् ॥२॥
आदौ तु वाचकं चैव वस्त्रगंधसमन्वितम्।
विधिवद्भोजयेद्राजन्मधुपायसमुत्तमम् ॥३॥
ततो मूलफलप्रायं पायसं मधुसर्पिषा।
आस्तिकं भोजयेद्राजन्दद्याच्चैव गुडौदनम् ॥४॥
अपूपैश्चैव पूपैश्च मोदकैश्च समन्वितम्।
सभापर्वणि राजेन्द्र हविष्यं भोजयेद्द्विजान् ॥५॥
आरण्यके मूलफलैस्तर्पयेत्तु द्विजोत्तमान्।
अरणीपर्व चासाद्य जल कुंभान्प्रदापयेत् ॥६॥
तर्पणानि च मुख्यानि वन्यमूलफलानि च।
सर्वकामगुणोपेतं विप्रेभ्योऽन्नं प्रदापयेत् ॥७॥
विराट्पर्वणि तथा वासांसि विविधानि च।
उद्योगे भरतश्रेष्ठ सर्वकामगुणान्वितम् ॥८॥
भोजनं भोजयेद्विप्रान् गन्धमाल्यैरलंकृतान्।
भीष्मपर्वणि राजेन्द्र दत्त्वा यानमनुत्तमम् ॥९॥

ततः सर्वगुणोपेतं मन्नं दद्यात्सुसंस्कृतम् ।
द्रोणपर्वणि विप्रेभ्यो भोजनं परमार्चितम् ॥१०॥
शराश्च देया राजेन्द्र चापान्यसिवरास्तथा ।
कर्णपर्वण्यपि तथा भोजनं सर्वकामिकम् ॥११॥
विप्रेभ्यः संस्कृतं सम्यग्दद्यात्संयतमानसः ।
शल्यपर्वणि राजेन्द्र मोदकैः सगुडौदनैः ॥१२॥
अपूपैस्तर्पणैश्चैव सर्वमन्नं प्रदापयेत् ।
गदापर्वण्यपि तथा मुद्गमिश्रं प्रदापयेत् ॥१३॥
स्त्रीपर्वणि तथा रत्नैस्तर्पयेत्तु द्विजोत्तमान् ।
घृतौदनं पुरस्ताच्च ऐषीके दापयेत्पुनः ॥१४॥
ततः सर्वगुणोपेतमन्नं दद्यात्सुसंस्कृतम् ।
शान्तिपर्वणि च तथा हविष्यं भोजयेद्द्विजान् ॥१५॥
आश्विमेधिकमासाद्य भोजनं सर्व कामिकम् ।
तथाश्रमनिवासे तु हविष्यं भोजयेद्द्विजान् ॥१६॥
मौसले सार्वगुणितं गंधमाल्यानुलेपनम् ।
महाप्रस्थानिके तद्वत्सर्वकामगुणान्वितम् ॥१७॥
स्वर्गपर्वण्यपि तथा हविष्यं भोजयेद्द्विजान् ।
हरिवंश्रसमाप्तौ तु महस्त्रं भोजयेद्द्विजान् ॥१८॥
गामेकां निष्कसंयुक्तां ब्राह्मणाय निवेदयेत् ।
तदर्धेनापि दातव्या दरिद्रेणापि पार्थिव ॥१९॥
प्रतिपर्वसमाप्तौ तु पुस्तकं वै विचक्षणः ।
सुवर्णेन च संयुक्तं वाचकाय निवेदयेत् ॥२०॥
हरिवंशे पर्वणि च पायसं तत्र भोजयेत् ।
पारणे पारणे राजन्यथावद्भरतर्षभ ॥२१॥
समाप्य सर्वाः प्रयतः संहिताः शास्त्रकोविदः ।
शुभे देशे निवेश्याथ क्षौमवस्त्राभिसंवृताः ॥२२॥
अर्चयेत यथान्यायं गंधमाल्यैः पृथक्पृथक् ।
हिरण्यं च सुवर्णं च दक्षिणामथ दापयेत् ॥२३॥

सर्वथा तोषयेद्भक्त्या वाचकं गुरुमात्मनः ।
वाचके परितुष्टे तु शुभा प्रीतिरनुत्तमा ॥२४॥
ब्राह्मणेषु तु तुष्टेषु प्रसन्नाः सर्वदेवताः ।
अष्टादशपुराणानां श्रवणाद्यत्फलं भवेत् ॥२५॥
तत्फलं समवाप्नोति वैष्णवो नात्र संशयः ।
स्त्रियश्च पुरुषाश्चैव वैष्णवं पदमाप्नुयुः ॥२६॥
स्त्रिभिश्च पुत्रकामाभिः श्रोतव्यं वैष्णवं यशः ।
दक्षिणा चात्र देया वै निष्कपंचसुवर्णकम् ॥२७॥
वाचकाय यथाशक्त्या यथोक्तं फलमिच्छता ।
स्वर्णशृंगीं च कपिलां सवत्सां वस्त्रसंवृताम् ॥२८॥
वाचकाय च दद्याद्धि आत्मनः श्रेय इच्छता ।
अलंकारं प्रदद्याच्च पाण्योर्वै भरतर्षभ ॥२९॥
कर्णस्याभरणं दद्याद्धनं चैव विशेषतः ।
भूमिदानं समादद्याद्वाचकाय नराधिप ॥३०॥
शृणोति श्रावयेद्वापि सततं चैव यो नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो वैष्णवं पदमाप्नुयात् ॥३१॥
पितृनुद्धरते सर्वानेकादशसमुद्भवान् ।
आत्मानं ससुतं चैव स्त्रियं च भरतर्षभ ॥३२॥
दशांशश्चैव होमोऽपि कर्त्तव्योत्र नराधिप ।
इदं मया तवाग्रे च प्रोक्तं सर्वे नरर्षभ ॥३३॥

॥ इति महाभारतश्रवणविधानं समाप्तम् ॥

अथ श्रीवाल्मीकिमुनिकृतस्यादिकाव्यस्य श्रीमद्रामायणाख्यस्य नवाहपाठ विधानम्

(रामसेवाग्रन्थे)

माघकार्तिकवैशाखे चैत्र वान्यतमेपि च ।
यथावकाशः श्रद्धा च तथैव शृणुयान्नरः ॥१॥
चैत्रे माघे कार्तिके च सिते पक्षे च वाचयेत् ।

नवाहे सुमहापुण्यं श्रोतव्यं च प्रयत्नतः ॥२॥
पञ्चम्या दिनमारभ्य रामायणकथामृतम् ।
नवाहश्रवणेनैव सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥३॥
तिथिः सैव महापुण्या स कालः सर्वपुण्यदः ।
यस्मिन्रमायणकथाश्रवणे जायते मतिः ॥४॥
पुण्यक्षेत्रे पुण्यतीर्थे तुलसीविष्णुसन्निधौ ।
स्वगृहे वा पठेद्यस्तु स देवैः परिपूज्यते ॥५॥
पूर्वोत्तरमुखो वक्ता श्रोतारस्तत्पुरः स्थिताः ।
एकाग्रतरचित्तेन पठेद्वा शृणुयान्नरः ॥६॥
व्यासासनं समास्तीर्य तदग्रे पुस्तकासनम् ।
वितानपल्लवो-पेतं कदलीस्तंभमण्डितम् ॥७॥
श्रोतृणामासनं स्थाप्यं विशालं तत्पुरः पुनः ।
श्रोतृभिश्च तथा वक्तुर्व्यासाद्ग्रंथस्य चोच्चता ॥८॥
पुराणं पूजयेन्नित्यं नित्यं व्यासस्य पूजनम् ।
मध्याह्ने घटिकायुग्मं विश्रामं कारयेत्तथा ॥९॥
कथान्ते भगवन्नामस्मरणं संप्रकीर्तितम् ।
समाप्तौ वस्त्रभूषाद्यैर्द्रव्यैर्व्यासस्य तोषणम् ॥१०॥

॥ अथ नवदिनपर्यन्तं कथाविश्रामस्थलकथनम् ॥

प्रथमे तु अयोध्यायाः षट्सर्गांते शुभा स्थितिः ।
तस्यैवाऽशीतिसर्गान्ते द्वितीये दिवसे स्थितिः ॥१॥
तथा विंशतिसर्गान्ते चारण्यस्य तृतीयके ।
दिने चतुर्थे षट्चत्वारिंशत्सर्गे कथास्थितिः ॥२॥
किष्किंधाख्यस्य कांडस्य पाठविद्भिरुदाहृता ।
सुसप्त चत्वारिंशत्के सर्गान्ते सुन्दरे स्थितिः ॥३॥
पञ्चमे दिवसे कुर्य्यादथ षष्ठे तथोच्यते ।
युद्धकाण्डस्य पञ्चाशत्सर्गान्ते विमला स्थितिः ॥४॥
एकोनशतसंख्याके सर्गान्ते सप्तमे दिने ।
युद्धस्यैव तु काण्डस्य विश्रामः संप्रकीर्तितः ॥५॥

तथा चोत्तरकाण्डस्य षट्त्रिंशत्सर्गपूरणे ।
अष्टमे दिवसे कृत्वा स्थितिश्च नवमे दिने ॥६॥
शेषं समाप्य युद्धस्य चान्त्यं सर्गं पुनः पठेत् ।
रामराज्यकथा यस्मिन्सर्ववांछितदायिनी ॥७॥
एवं पाठक्रमः पूर्वैराचार्यैश्च विनिर्मितः ।
यः करोति नरश्रेष्ठः शृणुयाद्वा समाहितः ॥८॥
धर्म्मार्थकाममोक्षाणां फलं त्वविकलं लभेत् ।
कथान्ते मण्डपं कृत्वा सर्वतोभद्रसंयुतम् ॥९॥
सस्थंडिलं सकुण्डं वा पताकाकदलीयुतम् ।
पूजयेद्गणराजं च ब्राह्मणैः स्वस्ति वाचयेत् ॥१०॥
मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धं भूसुरवर्णनम् ।
मण्डले सर्वतोभद्रे हैमं रामं प्रपूजयेत् ॥११॥
जानकीसहितं वस्त्रभूषास्त्रक् चन्दनादिभिः ।
पार्श्वे भरतशत्रुघ्नौ हनुमन्तं पुरः स्थितम् ॥१२॥
पृष्ठे विभीषणं भक्तं सुग्रीवं तु समर्चयेत् ।
लक्ष्मणं पादपीठस्य सन्निधौ विधिनार्चयेत् ॥१३॥
चतुःशतोत्तरं चैव द्विसहस्रं तिलैस्तदा ।
हवनं मंत्रतः कुर्याद्द्वादशाक्षरविद्यया ॥१४॥
अष्टाक्षरेण वा रामषडक्षरत आचरेत् ।
तर्पणं तद्दशांशेन मार्ज्जनं तद्दशांशतः ॥१५॥
ब्राह्मणान्वैष्णवांश्चैव सदन्नेन तु भोजयेत् ।
एकपारायणस्यैषा संख्या होमे प्रकीर्तिता ॥१६॥
पाठवृद्ध्या तु होमस्य संख्यावृद्धिः प्रजायते ।
गोप्रदानादिकं सर्वं दानं शक्त्या प्रदापयेत् ॥१७॥
व्यासाय पुस्तकं दद्याद्धेमसिंहासने स्थितम् ।
सांगतासिद्धये तस्य स्वर्णमुद्रां समर्पयेत् ॥१८॥
भूयसीं दक्षिणां दत्त्वा दीनानाथान् समर्चयेत् ।
एवं कृते मनुष्याणां दुर्लभोऽपि मनोरथः ॥१९॥

श्रीरामस्य प्रसादेन सुलभः स्यान्न संशयः ।
प्रतिमां कलशोपेतां मण्डलेन समन्विताम् ॥२०॥
विसर्जयित्वाऽऽचार्याय दद्यात्कर्म्मांगसिद्धये ।
कृतकृत्यं भावयित्वा चात्मानं तु हरिं स्मरेत् ॥२१॥

॥ इति श्रीवाल्मीकि रामायण नवाहपारायणविधानम् ॥

॥ अथ पञ्चदशीकाम्य प्रयोगः ॥

विनियोगः – अस्य श्रीपञ्चदशीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिऋषिः पंक्तिश्छन्दः त्रिपुरा देवता मम इह जन्मनि सकल दुरितोपशमनार्थं अमुककामनासिद्धये एतावत्संख्याक यन्त्रपूजनपूर्वक जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – दक्षिणामूर्ति ऋषिये नमः शिरसे। पंक्ति छन्दसे नमः मुखे। त्रिपुरा० देवतायै नमः हृदये। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ध्यानम् –

ॐ बालार्कद्युतितेजसां त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं
नानाभूषणभूषितां सुविमलां रत्नासने संस्थिताम्।
हस्तैः पाशधनुः श्रृणिं सुरुचिरं पद्मं मुदा बिभ्रतीं
श्रीचक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां भजे ॥१॥

इतिध्यात्वा यथामिलितोपचारैः प्राणप्रतिष्ठापूर्वकं यन्त्रस्य पूजनं विधाय यथासंख्याकमन्त्रैर्यन्त्रपूजनं कुर्य्यात्॥

यंत्र में अंकित अंकों के देवताओं का उनके कोष्ठक में पूजन करें।

मन्त्राः – ॐ एकपरमात्माने नमः, द्वाभ्यामश्विनीकुमाराभ्यां० त्रिभ्यो ब्रह्मविष्णुरुद्रेभ्यो० चतुर्भ्यो वेदेभ्यो० पञ्चभ्यः पृथिव्यादिभूतेभ्यो० षड्भ्यः ऋतुभ्यो० सप्तभ्यो मुनिभ्यो० अष्टभ्यो वसुभ्यो० नवभ्यो निधिभ्यो० एवं संपूज्य पुनः सम्पूज्य बलिं दद्यात्।

बलिं संस्थाप्य संप्रोक्ष्य मन्त्रः – ॐ श्रीं ऐं ह्रीं पञ्चदश्यै स्वाहा। इति॥

आरम्भादिसमाप्तिपर्यन्तं यन्त्रसंख्यां च कुर्यात्। दक्षिणां ब्राह्मणभोजनं च दत्त्वा विसर्जनं कुर्यात्। एवं कृते यन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मन्त्रे प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्ट सिद्धये। इति पञ्चदशीयन्त्रपूर्णप्रयोगः समाप्त

वस्त्र, आसन, गंध एवं लेखनी का उल्लेख अलग-अलग कामना हेतु इस प्रकार है-

॥ अथ पञ्चदशीप्रयोगविधिः ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि सुन्दरीयन्त्रमुत्तमम्। यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्य-विजयी भवेत्॥१॥ तद्यन्त्रं सम्प्रवक्ष्यामि शृणु यत्नेन साम्प्रतम्। नवधा कृतभूभागे नव कोष्ठानि चालयेत्॥२॥

तत्र सूत्रक्रमेणैव स्थाप्या अङ्का महेश्वरि। नव यन्त्राणि देवेशि प्रस्तारक्रम योगतः ॥३॥ तत्राश्वगतियोगेन हयमारुह्य पार्वती। तानि मार्गक्रमेणैव नव यन्त्राणि कारयेत् ॥४॥ एकादिरन्ध्रपर्य्यन्तं तत्रांकांस्तु प्रवेशयेत्। एतस्य फलबाहुल्यं शृणु यत्नेन साम्प्रतम्॥५॥ दशवारं तु सततं लोकसंमोहनं भवेत्। वारविंशतिकं कृत्वा सर्वाकर्षणकृद्भवेत्॥६॥ त्रिंशद्वारं नरः कृत्वा पृथिव्यां जयमाप्नुयात्। चत्वारिंशत्समारभ्य शतान्तं परमेश्वरि॥७॥ यः करोति महेशानि पुरश्चर्यायुतो नरः। अयुतन्तु पुरश्चर्य यन्त्रमात्रं समाचरेत्॥८॥ पुरश्चर्यां समाप्यैवं प्रयोगांश्च प्रकारयेत्। पुरश्चरणविहीनस्य नेदमुक्तं महेश्वरि॥९॥ जीवहीनो यथा देही सर्वकर्मसु न क्षमः। पुरश्चरणहीनन्तु तथा यन्त्रं प्रकीर्तितम्॥१०॥ अलक्त केन विलिखेन्मोहनार्थं महेश्वरि। गोरोचनेन विलिखेद्वशीकरणसिद्धये॥११॥ कस्तूर्य्या विलिखेद्देवि सर्वाकर्षणसिद्धये। हरिद्रया तु विलिखेत्सर्वेषां स्तंभकर्म[illegible]॥१२॥ केशरेण लिखेद्देवि देवतादर्शनाय वै। धुस्तूरस्य रसेनैव मारणार्थं लिखेत्सुधीः॥१३॥ शवाङ्गारेण विलिखेच्छत्रूच्चाटन कर्मणि। विद्वेषणे तु विलिखेद्विभीतकरसेन वै॥१४॥ चन्दनेन लिखेच्छान्तौ विशेषः कथ्यते शृणु। ब्राह्मणो विलिखेत् भूर्जे ताडपत्रे तु भूभुजः॥१५॥ वैश्यस्तु विलिखेद्देवि कार्पासे सर्वसिद्धये। शूद्रो हि विलिखेद्देवि भूमिभागे प्रयत्नतः॥१६॥ यवनस्याविकं प्रोक्तं कालिके सर्वकर्मसु। एवमेव लिखेन् मस्या ह्यनेषां पूर्व ईरितम् ॥१७॥ दूर्वया विलिखेच्छांतो वैश्ये जातभवामतः। स्वर्णेन विलिखेद्देवि मोहनार्थं स्वसिद्धये॥१८॥ रौप्येण विलिखेद्यत्नात् सर्वाकर्षणसिद्धये। काकपक्षोत्थलेखिन्या मारणार्थं लिखेच्छिवे॥१९॥ स्तम्भनार्थं तु विलिखेल्लेखिन्या सारसोत्थया। उच्चाटन द्वेषेणे तु लोहेन संलिखेत्सुधीः॥२०॥ लेखिन्या लक्षणं देवि प्रोक्तमष्टांगुलं ततः। पञ्चतत्त्व क्रमेणैव पञ्चकार्य प्रसिद्धये॥२१॥ अष्टांगादि दशांगादि तथा पञ्चदशप्रिये। अंकयंत्रेण कथितं किन्तु बीजे प्रकीर्नितम्॥[illegible]॥ रक्तांबरो रक्तमाल्यो रक्तवस्त्रानुभूषितः। रक्तासने विशेद्देवि [illegible] वा [illegible] ॥२३॥ स्त्रियं

न गच्छेत् नियतो ब्रह्मचारी भवेत्तदा। ब्रह्मचर्यरतो यस्तु तस्य सिद्धिर्न संशयः ॥२४॥ तदांकयन्त्रं कुर्वीत फलभागी तदा भवेत्। अंकत्रयं विहायाशु यः कश्चित्सिद्धिमिच्छति ॥२५॥ स चक्षुषा विना रूपं दर्पणे द्रष्टुमिच्छति। अयुतं विलिखेद्देवि वन्दीमोचन कर्म्मणि ॥२६॥ अयुतं द्वितीयं कृत्वा गतराज्यमवाप्नुयात्। अयुतं त्रितयं कृत्वा भूविजयी विजायते ॥२७॥ शापानुग्रहसामर्थ्यं भवेद्वेदायुते शिवे। वाणायुतप्रयोगेण वाक्सिद्धिश्च भवेद्ध्रुवम् ॥२८॥ रसायुतं लिखित्वा वै जलमध्ये विनिक्षिपेत्। जलक्षेपेण मार्गेण पृथ्वीशं तु वशं नयेत् ॥२९॥ सप्तायुतं लिखेद्धीमान् साक्षाल्लक्ष्मीपतिर्भवेत्। अष्टायुतं लिखेद्यो वै इष्टसिद्धिमवाप्नुयात् ॥३०॥ नंदायुतं लिखित्वा तु नवनाथसमो भवेत्। लक्षमात्रं लिखेद्यो हि शिवतुल्यो भवेत्क्षणात् ॥३१॥ प्रत्यहं विलिखेद्देवि शतं वा तु तदर्धकम्। त्रिशतं वा लिखेद्देवि सहस्रं वा तदर्धकम् ॥३२॥ एवं क्रमेण कथितः पुरश्चर्या-विधिस्तव। एवं यः कुरुते मर्त्यस्तस्य सिद्धिर्भविष्यति ॥३३॥

॥ इति श्री शिव ताण्डव प्रत्यक्ष सिद्धि पञ्चदशी यंत्र विधि समाप्तः ॥

॥ अथ प्रयोगविधिः ॥

करन्यासः - ॐ ऐं ऐं लं क्षं रं स्वाहा आचमनं सर्वशुद्धितया कर्तव्यं। ॐ ह्रां वां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं वीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं वूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं वैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं वौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः - ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं वूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रै वैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट्।

अथमन्त्रः - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं महात्रिपुरसुन्दरी स्वाहा।

पूर्वं पञ्चदशीविद्यामन्त्रस्य सपादलक्षजपं कुर्य्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मन्त्रे प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये। प्रथमं मन्त्रस्य पुरश्चरणं कुर्यात् पश्चाद् यन्त्रं साधयेत् ॥

पहले मन्त्र का पुरश्चरण करें पश्चात् यंत्र साधना करें।

अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं महदद्भुतम्। रवौ वारेऽर्कदुग्धेन श्मशान भस्मना लिखेत् ॥१॥ साध्यवर्णस्य नामानि चितामध्ये विनिक्षिपेत्। विक्षिप्तो जायते मर्त्यः, अष्टोत्तरशतं तपेत्। पञ्चदशी विलोमं तु सन्ध्याकाले विशेषतः ॥२॥

चन्द्रवारे गृहीत्वा तु श्वेतदूर्वां च केशरम्। श्वेतगुञ्जासमायुक्तं कपिलापयमध्यतः ॥३॥ भौमवारे गृहीत्वा तु काकरक्तं सपक्षकम्। नामाक्षरं लिखेद्यन्त्रे मौनभावयुतो नरः ॥४॥ तस्य द्वारे लिखेद् भूमावुल्लंघ्योच्चाटनं भवेत्। कुटुम्बानां च सर्वेषां यदि शक्रसमो रिपुः ॥५॥ बुधवारे गृहीत्वा तु नागकेशररोचनम्। सर्षपा तैलयुक्तेन लिखेद्यन्त्रं तदुत्तमम् ॥६॥ कृत्वा तु वर्तिकां तस्य चालयेन्मन्त्रभाविताम्। नृकपाले कज्जलं तु तज्जपेन्मोहनं जगत् ॥७॥ गुरुवारे हरिद्रे द्वे रोचनागुरुसघृतम्। यन्त्रराजं समालिख्य तस्य मध्ये तु नामकम् ॥८॥ आसनान्ते खनित्वा तु यन्त्रं स्थाप्यं शुभानने। कर्षणं जायते देवि नान्या श्रेष्ठा क्रिया स्मृता ॥९॥

प्रयोगान्तरम् – अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं महदद्भुतम्। भृगुवारे सकर्पूरं व चकुष्टमधुसमम् ॥१०॥ लिखित्वा यन्त्रराजं तु भूर्जपत्रे सुशोभनम्। दृष्ट्वा स्त्रीवशमायाति प्राणैरपि धनैरपि ॥११॥ शनिवारे चिताकाष्ठे पंचदश्या विलोमकम्। लिखित्वा यस्य नामानि श्मशाने निखनेद् बुधः। कुक्कुटस्य तु रक्तेन म्रियते नात्र संशयः ॥१२॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि यन्त्रराजविधिस्तथा। यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपनीयं च यत्नतः ॥१३॥ वटवृक्षतले यन्त्रं भूमिमध्ये ततो लिखेत्। कृष्णपक्षत्रयोदश्यां लेखिनीं वटवृक्षजाम् ॥१४॥ नीत्वारम्भं विधातव्यमेकचित्तेन मानवैः। अयुतं प्रजपेद्देवि धर्मकामार्थमोक्षदम् ॥१५॥ दाडिमीवृक्षलेखिन्या भूमौ यन्त्रसहस्त्रकम्। लिखित्वा जायते मोक्षो वन्दिनस्तु वरानने ॥१६॥ ब्रह्मवृक्षस्य लेखिन्या यन्त्रं पञ्चशतं लिखेत्। भूमिमध्ये दरिद्रस्य नाशनं भवति ध्रुवम् ॥१७॥ गोमूत्रं च शिलां चैव कर्पूरागरुमिश्रितम्। एकीकृत्याश्वत्थमूले लिखेद्यन्त्रं तु भूर्जके ॥१८॥ चिन्तितं चाचिरेणैव जायते निश्चितम्। प्रतापाल्लभते भोगानिन्द्रतुल्यपराक्रमान् ॥१९॥ बिल्वपत्ररसं ग्राह्यं हरिता लमनःशिले। बिल्वशाखजलेखिन्या सहस्त्रद्वितयं लिखेत् ॥२०॥ एकान्ते च शुभस्थाने भूमिमध्ये तथैव च। विलिख्यात्र शुभं यन्त्रं वाचां सिद्धिः प्रजायते ॥२१॥ अर्कपत्ररसेनैव अर्कपत्रे समालिखेत्। अष्टोत्तरशतं चैव रिपुवंशविनाशकृत् ॥२२॥ किंकरीवृक्षबन्धाद्वै ज्वरादिशूलकं तनौ। जायते नात्र संदेहो यदि शक्रसमो रिपुः ॥२३॥ पाषाणस्तंभनं देवि शत्रुद्वारे च भूमिके। हरिद्रालिखितं यन्त्रं स्थाप्यं तत्र सुशोभनम् ॥२४। एवं कृते तु देवेशि पितृपुत्रादिकैः सह. शत्रोः प्रजायते द्वेषो सत्यं सत्यं ब्रवीमि ते ॥२५॥ अपामार्गरसेनैव लिखितं [illegible] ऐकाहिकं तृतीयं च चतुर्थ[illegible] ॥२६॥ भृङ्गराजरसेनैव

यन्त्रं लेख्यं तु भूर्जके। धारयेद्वापि हृदये विवादविजयो भवेत्॥२७॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यन्त्रराजस्य सिद्धिदम्। लक्षयन्त्रं समालिख्य सिद्धपीठे शुभे दिने॥२८॥ भूमिमध्ये शुद्धचित्तो भूमिशायी जितेन्द्रियः। हवनादिकं तु कुर्याच्च सर्पिषा घृततण्डुलैः। शर्करामिश्रितैश्चैव यन्त्रसिद्धिः प्रजायते॥२९॥ यानि यानि च कर्माणि एकयन्त्रैः समालिखेत्। क्षणमात्रेण सिद्धिःस्यात् सत्यं सत्यं पुनः पुनः। देवरूपो भवेद्देवि नरः शीघ्रक्रियाकरः॥३०॥ भूर्जपत्रे लिखेद्यन्त्रं रोचनागुरुकुङ्कुमैः। कृत्वा च धूपदीपादि जलमध्ये विनिक्षिपेत्॥३१॥ रात्र्यन्ते स्वप्नमध्ये तु वरं देवि ददाम्यहम्। जीवन्मुक्तः सुभागी च सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥३२॥ देवदत्तं महावीरं पञ्चदश्यास्तु यन्त्रकम्। वश्यं करोतु मे देवि जलमध्ये प्रवाहितम्॥३३॥ दुग्धमाषतिलांश्चैव शर्कराघृतवीरकान्। एकीकृत्य बलि दद्यात् कृष्णपक्षाष्टमीतिथौ॥३४॥ वश्यो भवति वीरोऽयं प्राणैरपि धनैरपि। सर्वकर्माणि सिद्धिं च यान्ति नात्र विचारणा॥३५॥

यंत्र-मंत्र साधना में देवदत्त कहीं लिखा हो तो उसका अर्थ साध्य शत्रु या मित्र का नाम लिखना चाहिये।

पूजायन्त्रम्

सुन्दरी ८	ॐ १	महा ६
ह्रीं ३	क्लीं ५	त्रिपुर ७
श्रीं ४	स्वाहा ९	ऐं २

प्रयोगयन्त्रम्

८	१	६
३	५	७
४	९	२

देवदर्शनयन्त्रम्

८	१	६
३	५	७
४	९	२

द्रव्यप्राप्तियन्त्रम्

२	९	४
७	५	३
६	१	८

वशीकरणयन्त्रम्

६	७	२
१	५	९
८	३	४

मारणोच्चाटनयन्त्रम्

२	७	६
९	५	१
४	३	८

इति मिश्रतन्त्रम् सम्पूर्णम्

परिशिष्ट

पेज नं० ३४३ का प्रयोग विधि के अन्तर्गत विभिन्न सूक्त-

(केतुंकृण्वन्न, अभिव्यये, बलंधेहि, वय सुपर्णा, विजिहोर्ष-वृहत्सा)

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥१ ॥

अभिव्ययस्व खदिरस्य सारमोजो धेहि स्पन्दने शिशपायाम् ।
अक्षवीलो वीलित वीलयस्व मा यामादस्मादव जीहियो नः ॥२ ॥

बलंधेहि तनूषु नो बलमिन्द्रानलुत्सु नः ।
बलं तोकाय तनयाय जीवसे त्वं हि बलदा असि ॥३ ॥

वय सुपर्णा उपसेदरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः ।
अपध्वान्तमूर्णहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान् निधनयेव बद्धान् ॥४ ॥

विजिहीष्व वनस्पते योनिः सूष्यन्त्या इव ।
श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवध्रिं च मुञ्चताम् ॥५ ॥

वृहत्साम सूक्तम्-

त्वामिद्धि हवामहे सा तौ वाजस्व कारवः ।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्ततः ॥ १ ॥

सत्वं वज्रहस्त धुष्णुयाम हस्तवा नो अद्रिवः ।
गोमश्व रथ्यमिन्द्र संकिरसत्रावजंन जिग्युषे ॥२ ॥

॥ अथ शिव पञ्चावरण देवानां स्तुतिः॥

इस स्तोत्र में रुद्र यन्त्र में वर्णित पूजा का वृहत् कर्म है जो व्यक्ति नित्य रुद्र यन्त्र का अर्चन करने में असमर्थ हैं वे यदि इस स्तोत्र का पाठ करें तो उसे यन्त्रार्चन का पूर्ण फल मिलता है।

स्तोत्रं वक्षामि ते कृष्ण पंचावरणमार्गतः ।
योगेश्वरमिदं पुण्यं कर्म येन समाप्यते ॥१॥

जय जय जगदेकनाथ शम्भो, प्रकृतिमनोहर नित्यचित्स्वभाव ।
अतिगतकलुष प्रपञ्चवाचामपि, मनसां पदवीमतीततत्त्वम् ॥२॥

स्वभाव निर्मलाभोग जय सुन्दरचेष्टित ।
स्वात्मतुल्य महाशक्ते जय शुद्ध गुणार्णव ॥३॥

अनन्तकान्ति सम्पन्न जयासदृश विग्रह ।
अतर्क्य महिमाधार जयानाकुलमंगल ॥४॥

निरञ्जन निराधार जय निष्कारणोदय ।
निरन्तरपरानन्द जय निर्वृत्तिकारण ॥५॥

जयति परमैश्वर्य जयति करुणास्पद ।
जय स्वतन्त्र सर्वस्व जयासदृशवैभव ॥६॥

जयावृतमहाविश्व जयानावृत केनचित् ।
जयोत्तर समस्तस्य जयात्यन्तनिरुत्तर ॥७॥

जयाऽद्भुत जयाक्षुद्र जयाऽक्षत जयाऽव्यय ।
जयाऽमेय जयाऽमाय जयाऽभव जयाऽमल ॥८॥

महाभुज महासार महागुण महाकथ ।
महाबल महामाय महारस महारथ ॥९॥

नमः परमदेवाय नमः परमहेतवे ।
नमः शिवाय शान्ताय नमः शिवतराय ते ॥१०॥

त्वदधीनमिदं कृत्स्नं जगद्धि ससुराऽसुरम् ।
अतस्त्वद्विहितामाऽऽज्ञां क्षमतं कोऽतिवर्तितुम् ॥११॥
अयं पुनर्जनो नित्य भवदेकसमाश्रयः ।
भवानतोऽनुगृह्यस्मै प्रार्थितं सम्प्रयच्छतु ॥१२॥
जयाऽम्बिके जगन्मार्तजय सर्वजगन्मयि ।
जयाऽनवधिकैश्वर्ये जयाऽनुपम विग्रहे ॥१३॥
जय वाङ्मनसाऽतीते जयाचिद्ध्वान्तभाजके ।
जय जन्मजराहीने जय कालोत्तरोत्तरे ॥१४॥
जयाऽनेकविधानस्थे जय विश्वेश्वरप्रिये ।
जय विश्वसुराऽराध्ये जय विश्वविजृम्भिणि ॥१५॥
जयमङ्गल दिव्याङ्गे जय मङ्गल दीपिके ।
जय मङ्गल चारित्रे जय मङ्गल दायिनि ॥१६॥
नमः परमकल्याण गुण संचय मूर्तये ।
त्वतः खलु समुत्पन्नं जगत्त्वय्येव लीयते ॥१७॥
ज्वद्विनातः फलं दातुमीश्वरोऽपि न शक्नुयात् ।
जन्मप्रभृति देवेशि जनोऽयं त्वदुपाश्रितः ॥१८॥
पञ्चवक्त्रो दशभुजः शुद्धस्फटिक सन्निभः ।
वर्णब्रह्मकलादेहो देवः सकल निष्कल ॥१९॥
शिवमूर्तिसमारूढः शान्त्यतीतः सदाशिवः ।
भक्त्या मयार्चितो मह्यं प्रार्थितं शं प्रयच्छतु ॥२०॥
सदाशिवाङ्कमाऽऽरूढ़ा शक्तिरिच्छा शिवाह्वया ।
जननी सर्वलोकानां प्रयच्छतु मनोरथम् ॥२१॥
शिवयोर्दयितौ पुत्रौ देवौ हेरम्ब षण्मुखौ ।
शिवाऽनुभावौ पुत्रौ देवौ हेरम्ब षण्मुखौ ॥२२॥
शिवाऽनुभावौ सर्वज्ञौ शिवाभ्यां नित्यसत्कृतौ ।
सत्कृतौ च सदा देवौ ब्रह्माद्यैस्त्रिदशैरपि ॥२३॥
सर्वलोकपरित्राणं कर्तुमभ्युदितौ सदा ।
स्वेच्छावतारं कुर्वन्तौ स्वांशभेदैरनेकशः ॥२४॥

तາविमौ शिवयोः पार्श्वे नित्यमित्थं मयार्चितौ ।
तयोराज्ञां पुरस्कृत्य पार्थितं मे प्रयच्छताम् ॥२५॥
शुद्धस्फटिक संकाशमीशानाख्यां सदाशिवम् ।
मृर्द्धाभिमानिनी मूर्तिः शिवस्य परमात्मनः ॥२६॥
शिवार्चरतं शान्तं शान्त्यतीतं खमास्थितम् ।
पञ्चाक्षरान्तिमं बीजं कलाभिः पञ्चभिर्युतम् ॥२७॥
प्रथमावरणे पूर्वं शक्त्या सह समर्चितम् ।
पवित्रं परमं ब्रह्म प्रार्थितं ते प्रयच्छतु ॥२८॥
बालसूर्य प्रतिकाशं पुरुषाख्यं पुरातनम् ।
पूर्ववक्त्राभिमानं च शिवस्य परमेष्ठिनः ॥२९॥
शान्त्यात्मकं मरुत्संस्थं शम्भोः पादार्चने रतम् ।
प्रथमं शिवबीजेषु कलासु च चतुश्कलम् ॥३०॥
पूर्वभागे मया भक्त्या शक्त्या सहसमर्चितम् ।
पवित्रं परमं ब्रह्म प्रार्थितं मे प्रयच्छतु ॥३१॥
अञ्जनादि प्रतीकाशमघोरं घोरविग्रहम् ।
देवस्य दक्षिणं वक्त्रं देवदेवपदार्चकम् ॥३२॥
विद्यापदं समारूढं वह्निमण्डल मध्यगम् ।
द्वितीयं शिवबीजेषु कलास्वष्टकलान्वितम् ॥३३॥
शम्भोर्दक्षिणदिग्भागे शक्त्या सह समर्चितम् ।
पवित्रं परमं ब्रह्म प्रार्थितं मे प्रयच्छतु ॥३४॥
कुंकुमक्षोदसंकाशं वामाख्यं वरवेशधृक् ।
वक्त्रमुत्तरमीशस्य प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठतम् ॥३५॥
वारिमण्डलमध्यस्थं महादेवार्चने रतम् ।
तुरीयं शिवबीजेषु त्रयोदशकलान्वितम् ॥३६॥
देवस्योत्तरदिग्भागे शक्त्या सह समर्चितम् ।
पवित्रं परमं ब्रह्म प्रार्थितं मे प्रयच्छतु ॥३७॥
शङ्खकुन्देन्दु धवलं सद्याख्यं सौम्यलक्षणम् ।
शिवस्य पश्चिमं वक्त्रं शिवपादार्चने रतम् ॥३८॥

निवृत्तिपद निष्ठं च पृथिव्यां समवस्थितम् ।
तृतीयं शिवबीजेषु कलाभिश्चाष्टभिर्युतम् ॥३९॥
देवस्य पश्चिमे भागे शक्त्या सह समर्चितम् ।
पवित्रं परमं ब्रह्म प्रार्थितं मे प्रयच्छतु ॥४०॥
शिवस्य तु शिवायाश्च हृन्मूर्ति शिवभाविते ।
तयोराज्ञां पुरस्कृत्य ते मे कामं प्रयच्छताम् ॥४१॥
शिवस्य तु शिवायाश्च शिखामूर्त्ति शिवाश्रिते ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं प्रयच्छताम् ॥४२॥
शिवस्य च शिवायाश्च वर्मणा शिवभाविते ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं प्रयच्छताम् ॥४३॥
शिवस्य च शिवायाश्च नेत्रमूर्त्ती शिवाश्रिते ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं प्रयच्छताम् ॥४४॥
अस्त्रमूर्ती च शिवयोर्नित्यम र्चनतत्परे ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं प्रयच्छताम् ॥४५॥
वामो ज्येष्ठास्तथा रुद्रः कालो विकरणस्तथा ।
बलो विकरणश्चैव बलप्रमथनः परः ॥४६॥
सर्वभूतमस्य दमन - स्तादृशाश्चाष्टशक्तयः ।
प्रार्थितं मे प्रयच्छन्तु शिवयोरेव शासनात् ॥४७॥
अथानन्तश्च सूक्ष्मश्च शिवाश्चेष्कनेत्रकः ।
एकरुद्रस्त्रिमूर्तिश्च श्रीकण्ठश्च शिखण्डिकः ॥४८॥
तथाष्टौ शक्तयस्तेषां द्वितीयावरणेबर्चिताः ।
ते मे कामं प्रयच्छतु शिवयोरेव शासनात् ॥४९॥
भवाद्या मूर्तयश्चाष्टौ तासामपि च शक्तयः ।
महादेवादयश्चान्ये तथैकादशमूर्तयः ॥५०॥
शक्तिभिः सहिताः सर्वे तृतीयावरणे स्थिताः ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां दिशन्तु फलमीप्सितम् ॥५१॥
वृषराजो महातेजो महामेघसमस्वनः ।
मेरुमन्दरकैलास हिमाद्रिशिखरोपमः ॥५२॥

सिताभ्रशिखराकारककुदा परिशोभितः ।
महाभोगिन्द्रकल्पेन वालेन च विराजितः ॥५३॥
रक्तास्यशृंगाचरणो रक्तप्रायविलोचनः ।
पीवरोन्नतसर्वाङ्गः सुचारुगमनोज्ज्वलः ॥५४॥
प्रशस्तलक्षणः श्रीमान् प्रज्वलन्मणिभूषणः ।
शिवप्रियः शिवसक्तः शिवयोर्ध्वजवाहनः ॥५५॥
तथा तच्चरणन्यासपविता परविग्रह ।
गोराजपुरुषः श्रीमान् श्रीमच्छूलवरायुधः ।
तयोराज्ञां पुरस्कृत्य स मे कामं प्रयच्छतु ॥५६॥
नन्दीश्वरो महातेजा नगेन्द्रतनयात्मजः ।
सनारायणकैर्देवैर्नित्यमभ्यर्च्य वन्दितः ॥५७॥
शर्वस्यान्तमुद्वारि सार्द्धं परिजनैः स्थितः ।
सर्वेश्वरसमप्रख्यः सर्वासुरविमर्दनः ॥५८॥
सर्वेशां शिवधर्माणामध्यक्षत्वेऽभिषेचितः ।
शिवप्रियः शिवसक्तः श्रीमच्छूलवरायुधः ॥५९॥
शिवाश्रितेषु संसक्तस्त्वनुरक्तश्च तैरपि ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे कामं प्रयच्छतु ॥६०॥
महाकालो महाबाहुर्महादेव इवापरः ।
महादेवाश्रितानां तु नित्यमेवाभिरक्षतु ॥६१॥
शिवप्रियः शिवासक्तः शिवयोरर्चकः सदा ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु कांक्षितम् ॥६२॥
सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः शास्ता विष्णोः परा तनुः ।
महामोहात्मतनयो मधुमांसासर्वप्रियः ।
तयोराज्ञां पुरस्कृत्य स मे कामं प्रयच्छतु ॥६३॥
ब्राह्मणी चैव माहेशी कौमारी वैष्णवी तथा ।
वाराही चैव माहेन्द्री चामुण्डा चण्डविक्रमा ॥६४॥
एता वै मातरः सप्त सर्वलोकस्य मातरः ।
प्रार्थितं मे प्रयच्छन्तु परमेश्वरशासनात् ॥६५॥

मत्तमातङ्ग वदनो गङ्गोमाशङ्करात्मजः ।
आकाश देहो दिग्बाहुः सोम सूर्याऽग्नि लोचनः ॥६६॥
ऐरावतादिभि र्दिव्यैर्दिग्गजै र्नित्यमर्चितः ।
शिवज्ञानमदोद्भिन्न स्त्रिदशानामविघ्नकृत् ॥६७॥
विघ्नकृच्चासुरादीनां विघ्नेशः शिवभावितः ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु कांक्षितम् ॥६८॥
षड्मुखः शिवसम्भूतः शक्तिवज्रधरः प्रभुः ।
अग्नेश्च तनयो देवो ह्यपर्णातनयः पुनः ॥६९॥
गङ्गायाश्च गणाम्बायाः कृत्तिकानां तथैव च ।
विशाखेन च शाखेन नैगमेयेन चावृतः ॥७०॥
इन्द्रजिच्चेन्द्र सेनानीस्तारकासुर जित्तथा ।
शैलानां मेरुमुख्यानां वेधकश्च स्वतेजसा ॥७१॥
तप्तचामीकरप्रख्यः शतपत्रदलेक्षणः ।
कुमारः सुकुमाराणां रूपोदाहरणं महत् ॥७२॥
शिवप्रियः शिवासक्तः शिवपादार्चकः सदा ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु कांक्षितम् ॥७३॥
ज्येष्ठा वरिष्ठ वरदा शिवयोर्यजने रता ।
तयोराज्ञां पुरस्कृत्य सा मे दिशतु कांक्षितम् ॥७४॥
त्रैलोक्य वन्दिता साक्षादुल्काकारा गणाम्बिकाः ।
जगत्सृष्टि विवृद्धर्थं ब्रह्मणाभ्यार्थिता शिवात् ॥७५॥
शिवाया प्रविभक्ताया भ्रुवोरन्तर निस्सृता ।
दाक्षायणी सती मेना तथा हैमवती ह्युमा ॥७६॥
कौशिक्याश्चैव जननी भद्रकाल्यास्तथैव च ।
अपर्णायाश्च जननीपाटलायास्तथैव च ॥७७॥
शिवाऽर्चनरता नित्यं रुद्राणी रुद्रवल्लभा ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां सा मे दिशतु कांक्षितम् ॥७८॥
चण्डः सर्वगणेशान्तः `दिशतु कांक्षितम् ॥७९॥
पिङ्गलो गणपः श्रीमान् शिवासक्तः शिवप्रियः ।
आज्ञया शिवयोरेव स मे कामं प्रयच्छतु ॥८०॥

भृङ्गीशो नाम गणपः शिवाराधनतत्परः ।
प्रयच्छतु स मे कामं पत्युराज्ञापुरस्सरम् ॥८१॥
वीरभद्रो महातेजा हिमकुन्देन्दुसन्निभः ।
भक्तकालिप्रियो नित्यं मातृणां चाभिरक्षिता ॥८२॥
यज्ञस्य च शिरोहर्ता दक्षस्य च दुरात्मनः ।
उपेन्द्रन्द्रेयमादीनां देवानामंगतक्षकः ॥८३॥
शिवास्यानुचरः श्रीमान् शिवशासन पालकः ।
शिवयो शासनादेव स मे दिशतु कांक्षितम् ॥८४॥
विष्णोर्वक्षः स्थिता लक्ष्मीः शिवयोः पूजने रता ।
शिवयो शासनादेव स मे दिशतु कांक्षितम् ॥८५॥
महामोदी महादेव्याः पादपूजापरायणा ।
तस्या एव नियोगेन सा मे दिशतु कांक्षितम् ॥८६॥
कौशिकी सिंहमारूढ़ा पार्वत्याः परमा सुता ।
विष्णोर्निद्रा महामाया महामहिषमर्दिनी ॥८७॥
निशुम्भशुम्भसंहत्री मधुमांसासवप्रिया ।
सत्कृत्य शासनं मातुः सा मे दिशतु कांक्षितम् ॥८८॥
रुद्रा रुद्रसमप्रख्याः प्रमथाः प्रमथितौजसः ।
भृतसख्या महावीर्या महादेवसमप्रभाः ॥८९॥
नित्यमुक्ता निरुपमा निर्द्वन्द्वा निरुपपल्लवाः ।
सशक्तयः सानुचरा सर्वलोकनमस्कृताः ॥९०॥
सर्वेषामेव लोकानां सृष्टिसंहरणक्षमा ।
परस्परानुरक्तश्च परस्परमनुव्रता ॥९१॥
परस्परमतिस्त्रग्धाः परस्परनमस्कृताः ।
शिवप्रियतमा नित्यं शिवलक्षणलक्षिताः ॥९२॥
सौम्या घोरस्तथा मिश्राश्चान्तरालद्वयात्मिका ।
विरूपाश्च सुरूपाश्च नानारूप धरास्तथा ॥९३॥
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं दिशन्तु वै ।
देव्याः प्रियसखीवर्गो देवीलक्षणलक्षितः ॥९४॥

सहितो रुद्रकन्याभि शक्तिभिश्चाप्यनेकशः ।
तृतीयावरणे शम्भोर्भक्त्या नित्यं समर्चितः ॥९५॥
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु मङ्गलम् ।
दिवाकरो महेशस्य मूर्तिर्दीप्तसुमण्डलः ॥९६॥
निर्गुणो गुणसंकीर्णस्तथैव गुणकेवलः ।
अविकारात्मकश्चाद्यः एकः सामान्यविक्रियः ॥९७॥
असाधारणकर्मा च सृष्टिस्थिति लयक्रमात् ।
एवं त्रिधा चतुर्द्धा च विभक्तः पञ्चधा पुनः ॥९८॥
चतुर्थावरणो शम्भोः पुजितश्चानुगैः सह ।
शिवप्रियः शिवासक्तः शिवपादार्चने रतः ॥९९॥
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु मङ्गलम् ।
दिवाकर षडङ्गानि दीप्ताद्याश्चाष्टशक्तयः ॥१००॥
आदित्यो भास्करो भानू रविश्चेत्य नुपूर्वशः ।
अर्को ब्रह्मा तथा रुद्रो विष्णुश्चादित्यमूर्तयः ॥१०१॥
विस्तरा सुतरा बोधिन्याप्यान्यपराः पुनः ।
उषा प्रभा तथा प्राज्ञा सन्ध्या चेत्यपि शक्तयः ॥१०२॥
सोमादिकेतु पर्यन्ता ग्रहाश्च शिवभाविताः ।
शिवयोराज्ञया नूना मङ्गलं प्रदिशन्तु मे ॥१०३॥
अथ वा द्वादशादित्या स्तथा द्वादश शक्तयः ।
ऋषयो देवगन्धर्वा पन्नगाप्सरा गणाः ॥१०४॥
ग्रामण्यश्च तथा यक्षाः राक्षसाश्च सुरास्तथा ।
सप्त सप्तगणाश्चैते सप्तछन्दोमया हयाः ॥१०५॥
वालखिल्यादयश्चैव सर्वे शिवपदार्चकाः ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु मङ्गलम् ॥१०६॥
ब्रह्माथ देवदेवस्य मूर्तिर्भूमण्डलाधिपः ।
चतुःषष्टिगुणैश्वर्यो बुद्धितत्त्वे प्रतिष्ठितः ॥१०७॥
निर्गुणो गुणसंकीर्णस्तथैव गुणकेवलः ।
अविकारात्मको देवस्ततः साधारणः पुरः ॥१०८॥

असाधरणकर्मा च सृष्टिस्थितिलयक्रमात् ।
एवं त्रिधा चतुर्द्धा च विभक्तः पञ्चधा पुनः ॥१०९॥
चतुर्थावरणे शम्भोः पूजितश्च महानुगैः ।
शिवप्रियः शिवसक्तः शिवपादार्चने रतः ॥११०॥
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु मङ्गलम् ।
हिरण्यगर्भो लोकेशो विराटेश्वर सनातनः ॥१११॥
सनत्कुमारः सनकः सनन्दश्च सनातनः ।
प्रजानां पतयश्चैव दक्षाद्या ब्रह्मसूनवः ॥११२॥
एकादश सपत्निका धर्मः सङ्कल्प एव च ।
शिवार्चनरताश्चैते शिवभक्ति परायणाः ॥११३॥
शिवाज्ञावशगाः सर्वे दिशन्तु मम मङ्गलम् ।
चत्वारश्च तथा वेदाः सेतिहासपुराणकाः ॥११४॥
धर्मशास्त्राणि विद्याभिर्वैदिकीभिः समन्विताः ।
परस्पराविरुद्धर्था शिवप्रकृतिपादकाः ॥११५॥
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां मङ्गलम् प्रदिशन्तु मे ।
अथ रुद्रो महादेव शम्भोर्मूर्तिर्गरीयसी ॥११६॥
वाह्नेयमण्डलाधीशः पौरुषैश्वर्यवान् प्रभुः ।
शिवाभिमानसम्पन्नो निर्गुणस्त्रिगुणात्मकः ॥११७॥
केवलं सात्त्विकाश्चापि राजसश्चैव तामसः ।
अविकाररतः पूर्वं ततस्तु समविक्रयः ॥११८॥
असाधारणकर्मा च सृष्ट्यादिकरणात्पृथक् ।
ब्रह्मणोऽपि शिरश्छेत्ता जनकस्तस्य तत्सुतः ॥११९॥
जनकस्तनयश्चापि विष्णोरपि नियामकः ।
बोधकश्च तयोर्नित्यमनुग्रहकरः प्रभुः ॥१२०॥
अण्डस्यान्तर्बहिर्वर्ती रुद्रो लोकद्वयाधिपः ।
शिवप्रियः शिवासक्तः शिवपादार्चने रतः ॥१२१॥
शिवस्याज्ञां पुरस्कृत्य स मे दिशतु मङ्गलम् ।
तस्य ब्रह्म षडङ्गानि विद्येशानां तथाष्टकम् ॥१२२॥

चत्वारो मूर्तिभेदाश्च शिवपूर्वाः शिवार्चकाः ।
शिवो भवो हरश्चैव मृडश्चैव तथापरः ।
शिवस्याज्ञां पुरस्कृत्य मङ्गलं प्रदिशन्तु मे ॥१२३॥
अथ विष्णुर्म महेशस्य शिवस्यैव परा तनुः ।
वारितत्त्वाधिपः साक्षादव्यक्तपदसंस्थितः ॥१२४॥
निर्गुणः सत्त्वबहुलस्थैव गुणकेवलः ।
अविकाराभिमानी च त्रिसाधारण विक्रयः ॥१२५॥
असाधारणकर्मा च सृष्ट्यादिकरणात्पृथक् ।
दक्षिणाङ्गभवेनापि स्पर्धमानः स्वयम्भुवाः ॥१२६॥
आद्येन ब्रह्मणा साक्षात्सृष्टः स्रष्टा च तस्य तु ।
अण्डस्यान्तर्बहिर्वती विष्णुर्लोकद्वयाधिपः ॥१२७॥
असुरान्तकरश्चक्री शक्रस्यापि तथानुजः ।
प्रादुर्भुश्च दशधा भृगशापच्छलादिह ॥१२८॥
भूभारनिग्रहार्थाय स्वेच्छयावतरत् क्षितौ ।
अप्रमेयबलौ मायी मायया मोहयंजगत् ॥१२९॥
मूर्ति कृत्वा महाविष्णुं सदाविष्णुमथापि वा ।
वैष्णवैः पूजितो नित्यं मूर्तित्रयमयासने ॥१३०॥
शिवप्रियः शिवासक्तः शिवापादार्चने रतः ।
शिवस्याज्ञां पुरस्कृत्य स मे दिशतु मङ्गलम् ॥१३१॥
वासुदेवोऽनिरुद्धश्च प्रद्युम्नश्च ततः परः ।
सङ्कर्षणः समाख्याताश्चस्त्रो मूर्तयो हरे ॥१३२॥
मत्स्यः कूर्मो वाराहश्च नारसिंहोऽथ वामनः ।
रामत्रयं तथा कृष्णोः विष्णुस्तुरगवक्त्रकः: ॥१३३॥
चक्रं नारायणस्यास्त्रं पाञ्चजन्यं च श्राङ्गकम् ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां मङ्गलं प्रदिशतु मे ॥१३४॥
प्रभा सरस्वती गौरी लक्ष्मीश्च शिवभाविता ।
शिवयोः शासनादेव मङ्गलं प्रदिशन्तु मे ॥१३५॥
इन्द्रोऽग्निश्च यमश्चैव निर्ऋतिर्वरुणस्तथा ।
वायुः सोमः कुबेरस्य नथेशानस्त्रिशूलधृक् ॥१३६॥

सर्वे शिवार्चनरताः शिवसद्भावभाविताः ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां मङ्गलं प्रदिशन्तु मे ॥१३७॥
त्रिशूलमथ वज्रं च तथा परशुसायकौ ।
खड्गपाशाङ्कुशाश्चैव पिनाकश्चायुधोत्तमः ॥१३८॥
दिव्यायुधानि देवस्य देव्याश्चैतानि नित्यशः ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां रक्षां कुर्वन्तु मे सदा ॥१३९॥
वृषभ रूप धरो देवः सौरभेयो महाबलः ।
वडवाख्यानलस्पर्द्धी पञ्चगोमातृभिर्वृतः ॥१४०॥
वाहनत्वमनुप्राप्तस्तपसा परमेशयोः ।
तयोराज्ञां पुरस्कृत्य स मे कामं प्रयच्छतु ॥१४१॥
नन्दा सुनन्दा सुरभिः सुशीला सुमनास्तथा ।
पञ्च गोमातरस्त्वेताः शिवलोके व्यवस्थिताः ॥१४२॥
शिवभक्ति परा नित्यं शिवार्चनपरायणाः ।
शिवयोः शासनादेव दिशन्तु मम वाञ्छितम् ॥१४३॥
क्षेत्रपालो महातेजा नीलजीमूतसन्निभः ।
दंष्ट्राकराल वदनः स्फुरद्रक्ताधरोज्ज्वलम् ॥१४४॥
रक्तोर्ध्वमूर्द्धजः श्रीमान् भृकुटिकुटिलेक्षणः ।
रक्तवृत्त त्रिनयनः शशिपन्नगभूषणः ॥१४५॥
नग्नस्त्रिशूल पाशासि कपालोद्यत पाणिकः ।
भैरवो भैरवैः सिद्धैर्योगिनीभिश्च संवृतः ॥१४६॥
क्षेत्रे क्षेत्रसमासीनः स्थितो यो रक्षकः सताम् ।
शिवप्रणामपरमः शिव सद्भाव भावितः ॥१४७॥
शिवाश्रितान् विशेषेण रक्षन् पुत्रानिवौरसान् ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु मङ्गलं ॥१४८॥
तालजंघादयस्तस्य प्रथमावरणेऽर्चिताः ।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां चत्वारः समवन्तुमाम् ॥१४९॥
भैरवाद्याश्च ये चान्ये समन्तात्तस्य वेष्टिताः ।
तेऽपि मामनुगृह्णन्तु शिवशासन गौरवात् ॥१५०॥

नारदाद्यश्च मुनयो दिव्या देवैश्च पूजिताः ।
साध्या नागाश्च ये देवा जनलोकनिवासिनः ॥१५१॥
विनिर्वृत्ताधिकारश्च महर्लोकनिवासिनः ।
सप्तर्षयस्तथान्ये वै वैमानिकगणैः सह ॥१५२॥
सर्वे शिवार्चनरताः शिवाज्ञावशवर्तिनः ।
शिवयोराज्ञया मह्यं दिशन्तु समकांक्षितम् ॥१५३॥
गन्धर्वाद्या पिशाचान्ताश्चतस्त्रो देवयोनयः ।
सिद्धा विद्याधराद्यश्च येऽपि चान्ये नभश्चराः ॥१५४॥
असुरा राक्षसाश्चैव पाताल तलवासिनः ।
अनन्ताद्यश्च नागेन्द्रा वैनतेयादयो द्विजा ॥१५५॥
कूष्माण्डाः प्रेत वेताला ग्रहा भूतगणाः परे ।
डाकिन्यश्चापि योगिन्यः शाकिन्यश्चापि तादृशाः ॥१५६॥
क्षेत्रारामगृहादीनि तीर्थान्यायतनानि च ।
द्वीपाः समुद्रा नद्यश्च नदाश्चान्ये सरांसि च ॥१५७॥
गिरयश्च सुमेर्वाद्याः काननानि समन्ततः ।
पशवः पक्षिणो वृक्षाः कृमिकीटादयो मृगाः ॥१५८॥
भुवनान्यपि सर्वाणि भुवनानामधीश्वराः ।
अण्डान्यावरणैः सार्द्धं मासाश्च दश दिग्गजा ॥१५९॥
वर्णाः पदानि मन्त्राश्च तत्त्वान्यपि सहाधिपैः ।
ब्रह्माण्डधारका रुद्रारुक्ताश्चान्ये सशक्तिकाः ॥१६०॥
यच्च किञ्चिज्जगत्यस्मिन्दृष्टं चानुमितं श्रुतम् ।
सर्वे कामं प्रयच्छतु शिवयोरेव शासनात् ॥१६१॥
अथ विद्या परा शैवी पशुपाशविमोचिनी ।
पञ्चार्थसंहिता दिप्या पशुविद्याबहिष्कृता ॥१६२॥
शास्त्रं च शिवधर्माख्यं धर्माख्यं च तदुत्तरम् ।
शैवाख्यं शिवधार्माख्यं पुराणं श्रुतिसम्मतम् ॥१६३॥
शैवाऽगमाश्च ये चान्ये कामिकाद्याश्चतुर्विधाः ।
शिवाभ्यामविशरेषेण उत्कृत्येह समर्चिताः ॥१६४॥

ताभ्यामेव समाज्ञाता ममाभिप्रेतसिद्धये ।
कर्मेदमनुमन्यन्तां सफलं साध्वनुष्ठितम् ॥१६५॥
श्वेताद्या नकुलीशान्ताः सशिष्याश्चापि देशिकाः ।
तत्संततीया गुरुवो विशेषाद् गुरवो मम ॥१६६॥
शैवा माहेश्वराश्चैव ज्ञानकर्मपरायणाः ।
कर्मेदमेमनुमन्यन्तां सफलं साध्वनुष्ठितम् ॥१६७॥
लौकिका ब्राह्मणाः सर्वे क्षत्रियाश्चविशःक्रमात् ।
वेदवेदाङ्गतत्त्वाज्ञाः सर्वशास्त्रविशारदाः ॥१६८॥
सांख्या वैशेषिकाश्चैव यौगा नैयायिका नराः ।
सौरा ब्राह्मास्तथा रौक्ता वैष्णवाश्चपरे नराः ॥१६९॥
शिष्टाः सर्वे विशिष्टाश्च शिवशासन यन्त्रिताः ।
कर्मेदमेमनुमन्यन्तां ममभिप्रेतसाधकम् ॥१७०॥
शैवाः सिद्धान्तमार्गस्थाः शैवाः पशुपतास्तथा ।
शैवाः महाव्रतधरा शैवाः कापालिकाः परे ॥१७१॥
शिवाऽज्ञापालकाः पूज्या ममापि शिवशासनात् ।
सर्वे मामनुगृहणन्तु शंसन्तु सफलक्रियाम् ॥१७२॥
दक्षिणज्ञाननिष्ठाश्च दक्षिणोत्तर मार्गगाः ।
अविरोधेन वर्तन्ता मन्त्रं श्रेयोऽर्थिनो मम ॥१७३॥
नास्तिकाश्च शठाश्चैव कृतघ्नश्चैव तामसाः ।
पाष[illegible]तिपापाश्च वर्तन्ता दूरतो मम ॥१७४॥
बहुभिः किं स्तुतैरत्र येऽपि केऽपि चिदास्तिकाः ।
सर्वे मानुगृहणन्तु सन्तः शंसन्तु मङ्गलम् ॥१७५॥
नमः शिवाय साम्बाय ससुतायादि हेतवे ।
पञ्चावरणरूपेण प्रपञ्चेनावृताय ते ॥१७६॥
इत्युक्त्वा दण्डवद्भूमौ प्रणिपत्य शिवं शिवाम् ।
जपेत्पञ्चाक्षरसीं विषमष्टोत्तर शतावराम् ॥१७७॥
तथैव शक्ति विद्यां च जपित्वा तत्सम र्पणम् ।
कूत्वा तं क्षमयित्वेशं पूजा शेषं समापयेत् ॥१७८॥

एतत्पुण्यतमं स्तोत्रं शिवयोर्हृदयंगमम् ।
सर्वाभीष्टप्रदं साक्षाद् भक्तिमुक्त्येकसाधनम् ॥१७९॥
य इदं कीर्तये न्नित्यं शृणुयाद्वा समाहितः ।
स विधूयाशु पापानि शिवसायुज्यमाप्नुयात् ॥१८०॥
गोघ्नश्चैव कृतघ्नश्च वीरहा भ्रूणहापि वा ।
शरणागतघाती च मित्रविश्रम्भ घातकः ॥१८१॥
दुष्टपापसमाचारो मातृहा पितृहापि वा ।
स्तवेनानेन जप्तेन तत्तत्पापात् प्रमुच्यते ॥१८२॥
दुःस्वप्नादि महाऽनर्थ सूचकेषु भयेषु च ।
यदि संकीर्तयेदेतन्न ततोऽनर्थभाग्भवेत् ॥१८३॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं यच्चान्यदपि वाञ्छितम् ।
स्तोत्रस्यास्य जपे तिष्ठंस्तत्सर्वं लभते नरः ॥१८४॥
असम्पूज्य शिवं स्तोत्र जपात्फल मुदाहृतम् ।
सम्पूज्य च जपे तस्य फलं वक्तुं न शक्यते ॥१८५॥
आस्तामियं फलावाप्तिरस्मिन् संकीर्तिते सति ।
सार्धमम्बिकया देवः श्रुत्वैव दिवि तिष्ठति ॥१८६॥
तस्मान्नभसि सम्पूज्य देवदेवं सहोमया ।
कृताञ्जलिपुटस्तिष्ठन् स्तोत्रमेतदुदीरयेत् ॥१८७॥

॥ इति शिव पञ्चावरण देवानां स्तुतिम्॥

॥ गणपति तर्पण प्रयोगः॥

जिस प्रकार रुद्राभिषेक का विशेष फल है उसी तरह से गणपति तर्पण का भी विशेष फल प्राप्त होता है। अभिष्ट कामना की सिद्धि होती है। अलग अलग कामना हेतु भी कुछ प्रयोग दिये गये हैं।

श्रीविद्यार्णव तन्त्रम्, श्रीविद्यारत्नाकर, शारदातिलक इत्यादि ग्रन्थों में गणपति तर्पण प्रयोग दिया गया है। कहीं कहीं क्लिष्टता है या स्पष्टीकरण पूर्ण नहीं है, अतः सरल विधि तर्पण प्रयोग की दी जा रही है।

अष्टाविंशाक्षरी मन्त्र – ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥

यह महागणपति मन्त्र है। इस मन्त्र का प्रयोग सभी दशमहाविद्याओं के साथ किया जा सकता है।

वैसे देवता के यन्त्रार्चन में भी तदङ्ग आवरण देवता का पूजन व तर्पण किया जा सकता है।

देवता के यन्त्रार्चन में तर्पण नाम के साथ एक बार ही करते हैं। वैदिक विधि में देव तर्पण एक बार, ऋषितर्पण २ बार, तथा मनुष्य तर्पण ३ बार करते हैं।

गणपति विशेष तर्पण में नाम के साथ ४ बार तर्पण उत्तम बताया है।

गणपति तर्पण प्रयोग हेतु दो तरह के तर्पण है।

१. यन्त्रार्चन के प्रयोग में आवरण पूजन में दिये गये देवताओं का नाम सहित तर्पण।

२. महागणपति के मन्त्र का तर्पण मन्त्र विधान।

विनियोग – अस्य श्री महागणपति मन्त्रस्य गणकः ऋषिः, निचृद् गायत्री छन्दः, महागणपति देवता महागणपति तर्पणे विनियोगः।

॥ षडङ्गन्यास ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं	ॐ गां	हृदयाय नमः।
श्रीं ह्रीं क्लीं	श्रीं गीं	शिरसे स्वाहा।
श्रीं ह्रीं क्लीं	ह्रीं गूं	शिखायै वषट्।

श्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं गैं कवचाय हुं।
श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गों नेत्रत्रयाय वौषट्।
श्रीं ह्रीं क्लीं गं गः अस्त्राय फट्।

इसी तरह से करन्यास करें।

॥ ध्यानम् ॥

ध्याये हृदब्जे शोणाङ्गं वामोत्सङ्गविभूषया ।
सिद्धलक्ष्म्या समाश्लिष्ट पार्श्वमर्धेन्दु शेखरम् ॥
वामाधः करतो दक्षाधः करान्तेषु पुष्करे ।
परिष्कृतं मातुलिङ्ग गदा पुण्ड्रेक्षुकार्मुकैः ॥
शूलेन शङ्खचक्राभ्यां पाशोत्पल युगेन च ।
शालिमञ्जरिका स्वीयदन्ताञ्चलमणीघटैः ॥
स्रवन्मदञ्च सानन्दं श्रीश्रीपत्यादि सम्वृतम् ।
अशेषविघ्न विध्वंसनिघ्न विघ्नेश्वरं भजे ॥

१. महागणपति पूजन यन्त्र के आवरण देवताओं का तर्पण प्रयोग -

श्री महागणपति यन्त्र प्रयोग पृष्ठ सं ७२ पर दिया गया है। यन्त्रार्चन में गुरुमण्डलार्चन पद्धति का अभाव रह गया अतः दिव्यौघादि गुरुवों का अर्चन इस प्रकार करें, तथा यन्त्रार्चन में इन्हीं गुरुवों का पूजन करें।

सर्वप्रथम - **श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ॥ श्री सिद्धलक्ष्मी सहित महागणपति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

इस मन्त्र से देवता का १० बार तर्पण करें। तर्पण विधि हेतु गणपति यन्त्र या प्रतिमा को थाली में स्थापित करें। एक अर्घपात्र लेवें जल में चंदन, गंध, केसर, सुगधित द्रव्य, दूर्वा, अक्षत, पुष्पादि ड़ालें फिर अर्घ देकर तर्पण करते जायें।

॥ गुरुमण्डल देवता ॥

दिव्यौघ गुरु - १, ३ या ४ बार तर्पण करें।

श्रीं ह्रीं क्लीं विनायक सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं कवीश्वर सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं विरूपाक्ष सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

श्रीं ह्रीं क्लीं विश्व सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं ब्रह्मण्य सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं निधीश सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

॥ सिद्धौघ गुरु ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं गजाधिराज सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं वरप्रद सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

॥ मानवौघ गुरु ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं विजय सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं दुर्जय सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं जय सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं दुःखारि सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं सुखावह सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं परमात्म सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं सर्वभूतात्म सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं महानन्द सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं फालचन्द्र सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं सद्योजात सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं बुद्ध सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
श्रीं ह्रीं क्लीं शूर सिद्धाचार्य श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

॥ स्वगुरु क्रम ॥

पश्चात् स्वगुरु, परम गुरु, परात्परगुरु, परमेष्ठि गुरु का नाम स्मरण कर पूजन तर्पण करें।

शेष क्रम हेतु पृष्ठ ७२ पर जो आवरण देवता है उन सभी का पूजन तर्पण करें।

२. महागणपति के मन्त्र का तर्पण मन्त्र विधान।

अलग अलग कामना हेतु तर्पण प्रयोग विधि निम्न प्रकार से है -

विद्यार्णव तन्त्रे -

शण्डाकराग्रे गणपं जलेन प्रतर्पयेन्मुक्ति फलाय मन्त्री ।

तथेन्दिराकामनय गणेशं प्रतर्पयेन्मूर्ध्नि पयोभिस्त्र ॥१॥
गुह्यप्रदेशे मधुना गणेशं प्रतर्पयेत् कामफलाय विद्वान् ।
आकृष्टि वश्यादिनिमित्तमत्र प्रतर्पयेत्तं मधुभिश्च नेत्रे ॥२॥
भूपालवश्याय महागणेशं प्रतर्पयेच्चारु घृतेन पृष्ठे ।
ऊरुस्थले तैलसु-तर्पणं च महागणेश प्रियमेतदुक्तम् ॥३॥
एरण्डतैलेन तथास्य रण्डावश्याय नाभौ तिलतर्पणं स्यात् ।
स्कन्दप्रदेशेऽस्य पयः पयोभिः प्रतर्पणं प्रीतिविवर्धनाय ॥४॥
क्षीरेण दध्ना मधुनास्य तुण्डे प्रतर्पण धर्मविवृद्धिकृत स्यात् ।
एवं परिज्ञाय समस्तमेतत् कुर्यात् प्रयोगान् विधिना मनुजः ॥५॥
एवं मन्त्री य एवं गणपमनुवरं ह्यर्चना तर्पणाद्यै होमैर्जापैश्च -
सम्यक् प्रभजति विधिना प्राप्नुयात्मोऽत्रलोके ।
नानार्था भूपो भवति च वशगो मोहयेत् सर्वलोकान् ।
भुक्त्वा भोगान् यथेष्टं व्रजति स विमलां मुक्तिमन्ते दुरापाम् ॥६॥

गणपति के तर्पण पात्र में दूध, क्षीर, मधु, घृत, तैल, एरण्ड, सुगन्ति द्रव्यों को डाल कर कौन कौन से अंग पर तर्पण का क्या फल प्राप्त होता है यह विधि ऊपर समझाई गई है।

शारदातिलके -

हवनक्रम में भी अलग अलग द्रव्यों का महत्व है। चतुर्थी के दिन नारिकेल होम से श्रीवृद्धि होवे। शुक्लपक्ष की प्रतिप्रदा से लेकर प्रतिदिन चतुर्थी पर्यन्त नारिकेल, सत्तू, लाजा और तिल इनसे एक एक दिन के क्रम से एक एक द्रव्य का ४०० संख्या में होम करने से सबको वश में करने वाला होवे।

शुद्ध तिल से युक्त तण्डुल का होम लक्ष्मी प्रदा है।

त्रिमधु (घी, मधु, दूध, या शर्करा) से मिश्रित लाजा होम से उत्तम कन्या प्राप्त होवे।

यदि कन्या त्रिमधु युक्त लाजा होम करे तो उत्तम पति को प्राप्त करे। यदि प्रतिप्रदा से चतुर्थी पर्यन्त ४ रात्रि मे लवण मिश्रित दधि का होम करें तो साध्य व्यक्ति का वशीकरण होवे।

सफेद अर्क की जड़ अथवा रक्त चन्दन की लकड़ी अथवा हाथी के दांत से चबाने के बाद शेष बची लकड़ी को चन्द्रग्रहण काल में उसका स्पर्श कर गणेश

जी की अर्चना कर उक्त मन्त्र का जप कर भुजा में धारण करें तो विजय प्राप्त होवे।

॥ अथ तर्पण प्रयोग:॥

प्रतिदिन गणेशजी के निमित्त **गं गणेशं तर्पयामि**॥ इस मन्त्र से ४४४ बार तर्पण करे तथा प्रतिप्रदा से चतुर्थी पर्यन्त तक अलग अलग ४ द्रव्यों से पूर्वोक्त विधि से होम करे। ४९ दिन के भीतर साधक अपने अभीष्ट को प्राप्त करता है।

तर्पण प्रयोग प्रतिदिन करें। तर्पण संख्या के आधार पर तीन तरह का क्रम है -

१. सामान्य क्रम २. मध्यम क्रम ३. उत्तम क्रम

तर्पण प्रयोग में **विद्यार्णव तन्त्रम्** व **शारदा तिलक** में **तर्पयामि स्वाहा** लिखा है। जबकि श्री विद्या रत्नाकर में श्री करपात्रजी ने हवन पद्धति के अनुसार पहले होम फिर तर्पण के आधार पर नाम मन्त्र के बाद **स्वाहा** फिर **तर्पयामि** लिखा है। हमें यही उपयुक्त लगता है यह जरुरी नही है कि हवन करने पर ही स्वाहा लगता है, भावना से भी फल प्राप्त होता है।

१. सामान्य क्रम

इस क्रम के अनुसार १२४ तर्पण संख्या बनती है। प्रत्येक देवता के नाम का ४-४ बार तर्पण करें। प्रयोग के आदि और अन्त मे भी ४-४ बार गणेशजी के मूल मन्त्र का जप करे। देवता के नाम मन्त्र के साथ भी गणेशजी के मूल मन्त्र से ४ बार तर्पण करें। अत: जहां मूलम् लिखा हो वहां मूल मन्त्र समझना चाहिये।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥ महागणपतिं तर्पयामि। १२ बार तर्पण करें।

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ पुष्टि स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मी नारायणौ स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं हरगौरी स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं रतिकन्दर्पो स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं महीवराहौ स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]

मूल मन्त्रेण	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं लक्ष्मीगणनायकौ स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं आमोद सिद्धीं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं प्रमोद सिद्धीं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं सुमुख कान्तीं स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं दुर्मुख मदनावत्यौ स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं विघ्नमदद्रवे स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं विघ्नकर्तृद्राविण्यौ स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं शं शंखनिधिवसुधारे स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं पं पद्मनिधिवसुमत्यै स्वाहा	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण	महागणपतिं तर्पयामि	[४ बार]

इस प्रकार यह कुल १२ + (२८ × ४) = १२४ बार तर्पण हुआ।

२. मध्यम क्रम

इस क्रम में २१६ बार गणपति का तर्पण होता है। प्रत्येक का ४-४ बार तर्पण होता है। इस क्रम में २६ प्रधान देवता है अतः २६×४ = १०४ बार तर्पण हुआ। २६ देवताओं के साथ-साथ मूल मन्त्र से भी २६×४ = १०४ बार तर्पण हुआ। अतः १०४+१०४ = २०८ बार नाम देवताओं के साथ तर्पण हुआ।

आदि में मूल मन्त्र से ४ बार तर्पण तथा अन्त में पुनः ४ बार तर्पण करने से २०८+४+४ = २१६ बार तर्पण प्रयोग हुआ।

अर्थात् आदि में ४ बार व अन्त में ८ बार तर्पण होता है।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥ महागणपतिं तर्पयामि। ४ बार तर्पण करें।

श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं नारायण सहितां लक्ष्मीं (श्रियं) स्वाहा महा.तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण महा.तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीसहितं नारायणं (श्रीपतिं) स्वाहा महा.तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण महा.तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं हर सहितां गौरी (गिरिजा) स्वाहा महा.तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण महा.तर्प.[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं गौरी सहितं हर (गिरिजापतिं) स्वाहा महा.तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण महा.तर्प.[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं कामसहितां रतिं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं रतिं सहितं कामं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं वराह सहितां महीं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं मही सहितं वराहं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं महागणपति सहितं लक्ष्मीं स्वाहा महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं लक्ष्मी सहितं महागणपतिं स्वाहा महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं आमोद सहितां सिद्धिं(ऋद्धिं) स्वाहा महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं सिद्धि (ऋद्धि) सहितं आमोदं स्वाहा महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं प्रमोद सहितां समृद्धिं स्वाहा महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं समृद्धि सहितं प्रमोदं स्वाहा महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं सुमुख सहितां कान्तिं स्वाहा महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं कान्ति सहितं सुमुखं स्वाहा महा. तर्प. [४ बार]

मूल मन्त्रेण	महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं दुर्मुख सहितां मदनावतीं स्वाहा	महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण	महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं मदनावती सहितं दुर्मुखं स्वाहा	महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण	महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं विघ्न (अविघ्न) सहितां मदद्रवां स्वाहा	महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण	महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं मदद्रवा सहित विघ्नं (अविघ्नं) स्वाहा	महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण	महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं विघ्नकर्तृ सहितां द्राविणीं स्वाहा	महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण	महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं द्राविणी सहितं विघ्नकर्तारं स्वाहा	महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण	महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं शं शंखनिधि सहितां वसुधारां स्वाहा	महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण	महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं शं वसुधारा सहित शंखनिधिं स्वाहा	महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण	महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं पं पद्मनिधि सहितां वसुमतीं स्वाहा	महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण	महा. तर्प. [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं पं वसुमती सहितं पद्मनिधिं स्वाहा	महा. तर्प. [४ बार]
मूल मन्त्रेण	महा. तर्प. [४ बार]
पुनः मूल मन्त्रेण	महा. तर्प. [४ बार]

कुल २१६ बार तर्पण हुआ।

३. उत्तम क्रम

इस क्रम में ४४४ बार तर्पण होता है।

मूल मन्त्र २८ वर्ण का है अत: २८ वर्ण में एक एक वर्ण का ४ बार तर्पण होने से २८×४ = ११२ तर्पण हुआ। प्रत्येक वर्णाक्षर के बाद मूल मन्त्र से तर्पण २८×४ = ११२ बार तर्पण हुआ। मध्यम क्रम में २६ देवता बताये गये है, उनका २६×४ = १०४ तर्पण हुआ। २६ देवताओं के साथ मूल मन्त्र से तर्पण २६×४ = १०४ तर्पण हुआ।

कुल ११२+११२+१०४+१०४ = ४३२ तर्पण प्रयोग हुआ। आदि में मूल मन्त्र से १२ बार तर्पण करने पर ४३२+१२ = ४४४ तर्पण संख्या हुई।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥ महागणपतिं तर्पयामि। १२ बार तर्पण करें।

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं गं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं णं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं पं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं तं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं ये स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं वं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं रं स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]
मूल मन्त्रेण महागणपतिं तर्पयामि [४ बार]

श्रीं ह्रीं क्लीं	वं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	रं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	दं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	सं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	वं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	जं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	नं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	मे स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	वं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	शं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	मां स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	नं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	यं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	स्वां स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	हां स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	श्रियं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]

मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	श्रीपतिं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	गिरिजां स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	गिरिजापतिं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	रतिं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	रतिपतिं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	महीं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	महीपतिं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	महालक्ष्मीं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	महागणपतिं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	ऋद्धिं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	आमोदं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	समृद्धिं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	प्रमोदं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	कान्तिं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	सुमुखं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]

श्रीं ह्रीं क्लीं	मदनावतीं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	दुर्मुखं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	मदद्रवां स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	अविघ्नं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	द्राविर्णीं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	विघ्नकर्तारं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	वसुधारां स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	शङ्खनिधिं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	वसुमतीं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
श्रीं ह्रीं क्लीं	पद्मनिधिं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]
मूल मन्त्रेण		महागणपतिं	तर्पयामि	[४ बार]

कुल ४४४ तर्पण संख्या।

पश्चात् गणपति का पंचोचार से पूजन कर जप करें एवं देवता को समर्पण करे।

गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाण कृततर्पणम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादन्मयि स्थिरा ॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं बलं पुष्टिर्महद्यशः ।
कवित्वं भुक्तिमुक्ती च चतुरावृत्ति तर्पणात् ॥

अनेन कृतेन तर्पणन् भगवान श्री सिद्धलक्ष्मी सहितः श्री महागणपतिः प्रीयताम्॥

॥ अन्य कामना विशेषे तर्पण प्रयोगः॥

सभी प्रयोगों को शुक्लपक्ष से प्रारंभ करें तो उत्तम फल प्राप्त होता है।

१. सर्वाऽपद निवारणार्थे –

मन्त्र – ॐ गं गणपतिं तर्पयामि॥

चतुर्थी तिथि से २१ दिन तक प्रतिदिन ४४४ बार दुर्वाङ्कुरों द्वारा शुद्ध सुगन्धित जल से तर्पण करें।

इस प्रयोग से स्त्री पुरुष के दुर्व्यसन भी कम हो जाते है।

२. राज्ये शत्रु स्तंभनम् –

मन्त्र – ॐ वं वक्रतुडाय नमः।

विलोम मन्त्र – नमो (अथवा मः न) यण्डातुक्रव वं ॐ।

प्रतिप्रदा से ७ दिन दुर्वाङ्कुरों से गोरोचनादि सुगंधित द्रव्यों से प्रतिदिन ५१२ बार तर्पण करें।

मन्त्र पढ़कर **महागणपतिं तर्पयामि कहें।**

यदि प्रति विलोम अक्षर से तर्पण करें तो **मः महागणपतिं तर्पयामि** इस तरह प्रत्येक वर्ण से ४-४ बार तर्पण करें।

३. आयुवृद्धि व विद्या प्राप्ति हेतु हरगौरी गणेश तर्पणम्–

मन्त्र – ॐ गं गणपतिं पुष्टिसहितं तर्पयामि [४ बार]

ॐ गं तर्पयामि।

ॐ ह्रां ह्रीं	**हरसहितां गौरीं तर्पयामि**	**[४ बार]**
ॐ क्लीं	**श्रीं मनोभव सहितां रतिं तर्पयामि**	**[४ बार]**
ॐ ग्लौं	**वराह सहितां भुवं तर्पयामि**	**[४ बार]**
ॐ गं	**सिद्धि सहितं सुमुखं तर्पयामि**	**[४ बार]**
ॐ गं	**दुष्टदलन सहितं दुर्मुखं तर्पयामि**	**[४ बार]**
ॐ गं	**क्षेम सहितं विघ्नराजं तर्पयामि**	**[४ बार]**
ॐ गं	**अभया सहितं विद्याकर्तारं तर्पयामि**	**[४ बार]**
ॐ शं	**शङ्खनिधिं तर्पयामि**	**[४ बार]**
ॐ पं	**पद्मनिधिं सहितं तर्पयामि**	**[४ बार]**

शुक्ल प्रतिप्रदा से २१ दिन तक दुग्ध मिश्रित द्रव्य से तर्पण करने पर आयु वृद्धि

होवे। चतुर्दशी से कृष्णा एकादशी तक नदी के जल में पुष्पों सहित द्रव्य से तर्पणकरें तो विद्या प्राप्ति होवे।

यदि नदी के जल में खड़े होकर सूर्यमण्डल में गणेशजी का ध्यान करते हुए तर्पण करें तो श्रेष्ठ लाभ होवे।

४. वर प्राप्ति हेतु –

मन्त्र – ॐ श्रीं रति सहितं कामराजं तर्पयामि।

शुक्ला चतुर्थी से चतुर्दशी पर्यन्त ११ दिन तक यह प्रयोग १४४ बार प्रतिदिन करें।

५. कन्या प्राप्ति हेतु –

मन्त्र – ॐ श्री कामराज सहितं रतिं तर्पयामि।

प्रयोग विधि उपरोक्त।

६. वर कन्या हेतु महागणपति तर्पणम् –

मन्त्र – ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥

शुद्ध स्नान कर, सुप्रसन्न होकर, गंधादि का शरीर पर लेपन कर गणपति की प्रसन्नता हेतु शुक्ला प्रतिप्रदा व द्वितीया को ४४४ बार प्रत्येक माह में करते हुये १२ मास तक करें।

७. क्लेश व रोग शान्ति हेतु –

मन्त्र –

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

ॐ गिरिजेशं तर्पयामि।

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से चतुर्दशी तक मालती पुष्पों या दुर्वाङ्कुरों से प्रतिदिन २३५ बार तर्पण करें। विशेष कष्ट में २३५×४ = ९४० बार तर्पण करें।

८. कल्याण कामना हेतु तर्पण प्रयोग –

मन्त्र –ॐ ऋद्धि सहितं आमोदं तर्पयामि।

परोपकार व कल्याण कामना हेतु शुभदिन या प्रतिपदा ये ७ दिन बिल्व पत्र या

दुर्वाङ्कुरों से प्रतिदिन ४४४० बार तर्पण करें।

९. कीट उपद्रव शान्ति प्रयोग –

चतुर्थी तिथी से २१ दिन या जब तक मूषक कीट का उपद्रव शान्त नहीं हो तब तक २८ अक्षर वाले मूल मन्त्र से प्रतिदिन ५२१ बार तर्पण करें।

१०. पुत्र प्राप्ति हेतु गणेश तर्पणम् –

मन्त्र – ॐ उमापुत्रं तर्पयामि।

कृष्ण पक्ष की चतृर्थी से ३० दिन तक आम्र वृक्ष की मंजरी से या दुर्वाङ्कुरों से सुगन्धित जल द्वारा प्रतिदिन ४४४ बार तर्पण करें। उस जल से स्त्री व गर्भवती का अभिषिञ्चन कर पुत्र की कामना करें। १० ब्राह्मणों को भोजन करायें।

विशेष तर्पण में ४४४×४ – १७७६ बार तर्पण करें।

११. तेजवृद्धि हेतु प्रयोग –

मन्त्र – ॐ गं मदद्राविर्णी तर्पयामि।

शुक्ला चतुर्थी से कृष्णा चतुर्थी तक अपराजिता गिरिकर्णिका के फूल अथवा दुर्वाङ्कुरों को विलोम ग्रहण करते हुये शुद्ध जल से ४२१ बार तर्पण करें। विशेष प्रयोजन में १६८४ बार तर्पण करें।

१२. खोये हुये व्यक्ति व पशु हेतु तर्पण प्रयोग –

मन्त्र – ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः सोहं पद्मनिधिं तर्पयामि।

शुक्ला चतुर्थी से कृष्णा चतुर्थी तक रक्त या नीलकमल अथवा दुर्वाङ्कुरों से प्रतिदिन ४४४४ बार तर्पण करने से व्यक्ति व पशु घर लौट कर आता है।

१३. नष्ट द्रव्य प्राप्ति हेतु प्रयोग –

मन्त्र – ॐ शं शंखनिधिं तर्पयामि।

शुक्ला चतुर्थी से ४५ दिन श्वेतार्क पुष्पों या दुर्वाङ्कुरों द्वारा सुगन्धित जल से प्रतिदिन ४४४ बार तर्पण करने से नष्ट वस्तु प्राप्त होवे।

१४. बंधन मुक्ति हेतु तर्पण प्रयोग –

मन्त्र – ॐ अभया सहितं विघ्नकर्तारं तर्पयामि।

चतुर्थी से प्रारंभ कर ३० दिन तक दुर्वाङ्कुरों से प्रतिदिन ४२१ बार तर्पण करें तो

संकट नाश होता है।

१५. शुभ व कल्याण प्राप्ति हेतु प्रयोग –

मन्त्र – ॐ क्षेमदायिनी सहितं विघ्नराजं तर्पयमि।

शुक्ला चतुर्थी से पूर्णिमा तक दुग्ध व दुर्वाङ्कुरों से शुद्ध जल द्वारा प्रतिदिन २४४ बार तर्पण करें।

१६. शत्रु उच्चाटन हेतु प्रयोग –

मन्त्र – ॐ सिद्धि सहितं आमोदं तर्पयामि।

प्रतिपदा से अमावस्या तक बिल्व पत्र या दुर्वाङ्कुरों द्वारा शुद्ध जल से प्रतिदिन ४४४ बार तर्पण करने से शत्रु के दुष्विचार नष्ट हो जाते हैं या अन्यत्र पलायन कर जाता है।

१७. शत्रु स्तम्भन हेतु प्रयोग –

मन्त्र – ॐ क्लीं श्रीं विष्णु सहितां श्रियं तर्पयामि।

प्रतिपदा से द्वादशी तक बिल्व पत्र या दुर्वाङ्कुरों द्वारा शुद्ध जल से प्रतिदिन ४४६६ बार तर्पण करने से दुष्ट मनुष्यों व दुष्ट पशुओं का स्तम्भन होता है।

१८. वशीकरण प्रयोग –

मन्त्र – क्लीं ग्लौं गणपतये सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

शुक्ला चतुर्थी से पुनः शुक्ला चतुर्थी तक प्रतिदिन ४४४ बार तर्पण करने से राजा भी वश में होवे।

१९. वर्षा प्रयोजन हेतु प्रयोग –

मन्त्र – ॐ गजेन्द्र सहितं मेघं तर्पयामि।

आर्द्रा नक्षत्र के दिन से प्रारम्भ कर विशाखा नक्षत्र के दिन तक (१२ दिन) नाभि प्रदेश तक जल में स्थित होकर १००८ बार जप कर प्रतिदिन कर्पूर सुगन्धित जल से १४४ या ११४ बार तर्पण करें।

॥ इति श्री गणपति तर्पण विधानं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ गणपत्यथर्वशीर्षम् ॥

श्रीगणेशाय नमः । ॐ भद्रंकर्णेभि शृणुयामदेवाः॥ भद्रं पश्येमाक्ष भिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ठं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः। स्वति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वति नस्ताक्ष्योंअरिष्टनेमि। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ अथ गणपत्यथर्वशीर्षम् ॥

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्ष्यं तत्त्वमसि। त्वमेवकेवलं कर्त्तासि। त्वमेवकेवलं धर्तासि। त्वमेवकेवलं हर्तासि। त्वमेवसर्वं खल्विदंब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यं। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अवत्वं मां। अववक्तारं। अवश्रोतारं। अवदातारं। अवधातारं। अवानूचानमवशिष्यं। अवपश्चात्तात्। अवपुरस्तात्। अवोत्तरातात्। अवदक्षिणात्तात्। अवचोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्द द्वितीयोसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोसि। सर्वजगदिदं त्वत्तोजायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयिलयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयिप्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनिलो ऽनलोनभः। त्वं चत्वारि वाक् पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वमवस्था त्रयातीत। त्वं कालत्रयातीत। त्वं देहत्रयातीत। त्वं मूलाधार स्थितोऽसिनित्यं। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वांयोगिनोध्यायन्तिनित्यं। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्व रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वंवायुस्त्वं सूर्यस्त्वंचन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। गणादीन्। पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरं। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितं। तारेणरुद्धं। एतत्तवमनुस्वरूपं। गकारः पूर्वरूपः। अकारोमध्यरूपं। अनुस्वार श्चांत्यरूपं बिन्दुरुत्तररूपं। नादः सन्धानं। सःहितासन्धिः। सैषागणेशविद्या। गणकऋषिः। निचद् गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः।

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि।

तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥

एकदन्तञ्चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम् ।
रदं च वरदं हस्तैर्विभ्राणं मूषकध्वजम् ॥

रक्तं लम्बोदरं शूपकर्णकं रक्तवाससं ।
रक्तगंधानुप्लिताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् ॥
भक्तानुकंपिनं देवं जगत्कारणमच्युतं ।
आविर्भूतञ्चसृष्ट्यादौप्रकृतः पुरुषात्परम् ॥

एवं ध्यायंति यो नित्यं स योगीयोगिनाम्वरः। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः। एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। सब्रह्मभूतेयकल्पते। स सर्वतः विघ्नैर्न बाध्यते या। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापापात् प्रमुच्यते। सायधीमानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाश्यति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापोभवति।

सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नोभवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्व शीर्षमशिष्याय न देयं। योयदिमोहाद्दास्यति। सपापीयान् भवति। सहस्त्रावर्तनाद्यं यं काममधीते। तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति। सवाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति। सविद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यं। ब्रह्माद्याचरणं विद्यात्। न विभेति कदाचनेति। यो दूर्वांकुरैर्यजति। सवैश्रणोपमोभवति। यो लाजैर्यजति। स यशोवान् भवति। समेधावान् भवति। यो मोदक सहस्त्रेण यजति। स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्धिर्यजति। स सर्वं लभते। स सर्वं लभते अष्टौ ब्राह्माणान् सम्यग्ग्राहियत्वा। सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यान् प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा। सिद्धमन्त्रो भवति॥ महाविघ्नात्प्रमुच्यते। महादोषा त्प्रमुच्यते। महापापात्प्रमुच्यते। स सर्वं विद्धवति स सर्व विद्धवति। य एवं वेद। इत्युनिषत्। ॐ भद्रंकर्णेभि० ॥ ॐ स्वति न इन्द्रो० ॥

॥ इति गणपत्यथर्वशीर्षम् समाप्तम् ॥

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (२) 'देवखण्ड'

'तन्त्रोक्त देव पूजा रहस्य'

देवखण्ड में गणेश, हनुमान, विष्णु, शिव, भैरव, रुद्रादि देवों के विविधप्रयोग दिये हैं। मृत्युञ्जय प्रयोग शरभ शालुव पक्षिराज, आशुगरुड़ प्रयोग, गंधर्वराज, कार्त्तवीर्यअर्जुन, परशुरामादि के विविध प्रयोग है। वांछाकल्पलता प्रयोग एवं अन्य कई प्रयोगों का वर्णन किया गया है। मूल्य २६०/-

सर्वकर्म-अनुष्ठानप्रकाशः भाग (३) 'देवीखण्ड पूर्वार्द्ध'

नवदुर्गा दशमहाविद्या रहस्य

उत्तर भारतीय व दक्षिण भारतीय पद्धति द्वारा सभी नवरात्र के कर्म का सम्पूर्ण विधान है। भगवती दुर्गा के नवदुर्गा स्वरूपों के प्रयोगों का वर्णन। काली, तारा, षोडशी, त्रिपुरभैरवी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, बगुलामुखी, मातंगी, धूमावती, एवं कमलादि देवियों के यंत्रार्चन का सरल विधान स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम एवं विविध काम्य प्रयोगों का वर्णन। मूल्य ५००/-

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (४) 'देवीखण्ड उत्तरार्ध

'उपमहाविद्या रहस्य - प्रथम भाग'

सभी देवियों की मातृकायें, भगवती त्रिपुर सुन्दरी की १५ नित्याओं का अर्चन, नवदुर्गा, ब्राह्मयादि अष्टमातृकाओं का यंत्रार्चन, कौशिकी, अंबिका, शिवदूति गायत्रीब्रह्मास्त्र, श्यामा, बगला, प्रत्यङ्गिरा, गुह्यकाली प्रयोग, वाराही का यन्त्रार्चन आदि देवियों के प्रयोग दिये गये हैं। मूल्य ४००/-

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (४) 'देवीखण्ड उत्तरार्ध

'उपमहाविद्या रहस्य - द्वितीय भाग'

त्रिपुरसुन्दरी के मन्त्र से गर्भस्थ कई प्रयोग, कालिक्रम की १५ नित्याओं के प्रयोग, कामकला काली, महामाया वैष्णवी (पञ्चमुखी चण्डिका), भद्रा, स्वाहा, स्वधा, षष्ठीदेवी, मंगलचण्डी विधान, पार्श्वनाथ, पद्मावति, पञ्चांगुलि, ज्वाला मालिनि गंगादि देवियों प्रयोग, ज्वालादेवी, सारिका महाराज्ञि यन्त्रार्चन, कवच, सहस्रनाम, शब्दकोष, व अन्य कई दुर्लभ प्रयोग दिये गये हैं।

लेखक :
पं. रमेश चन्द्र शर्मा (मिश्र)
विशेषज्ञ :
ज्योतिष, तंत्रशास्त्र, वास्तुशास्त्र एवं कर्मकाण्ड
(डिप्लो. मैकेनिकल इंजि.)